

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 270

ISBN 978-93-82071-15-0

श्री नेमिचन्द्र सैद्धान्तिकदेव द्वारा रचित

प्रतिष्ठा तिलक

— भावानुवादकर्त्री —

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका
गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित “प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष” के अन्तर्गत प्रकाशित



-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org

E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

द्वितीय संस्करण
500 प्रतियाँ

वीर नि. सं. 2538, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा
2 अगस्त 2012, रक्षाबंधन पर्व

मूल्य
300/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं बृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

—: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :—

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

—: मार्गदर्शन :—

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

—: निर्देशक एवं सम्पादक :—

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

—: प्रबंध सम्पादक :—

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण सन् 2006—500 प्रतियाँ

— सर्वधिकार प्रकाशकाधीन —

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

विषयानुक्रमणिका

1. सम्पादकीय	7	23. गणधर पूजा	27
2. आभार	8	24. पीठयंत्राराधना	28
3. प्रस्तावना	9	25. पंचदशतिथिदेवता पूजा	32
4. दो शब्द	16	26. अष्ट द्वारपाल पूजा	34
5. श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय	18	25. गणधरवल्लय मंत्र	36
6. संस्थान का परिचय	23	27. श्रीबलि विधान	38
7. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की सूची	27		
8. पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सामग्री	31	द्वितीय परिच्छेद	
9. पंचकल्याणक के बाह्य दृश्य	36	अंकुरार्पण विधान	44
10. आद्य वक्तव्य	65	1. सर्वार्णहयक्ष पूजा	45
11. मंगलाष्टक	66	2. दिक्पालक पूजा	47
		3. भवनवासी इंद्रों की पूजा	50
प्रथम परिच्छेद		4. पंचकुमार पूजा	57
नांदीमंगल विधि		5. क्षेत्रपाल पूजा	57
1. मंगलाचरण	1	6. पुण्याहमंत्र	60
2. प्रतिष्ठा के भेद	2	तृतीय परिच्छेद	
3. इन्द्र प्रतिष्ठा	4	शांति हवन विधि	62
4. पूजा के भेद	5	1. पुण्याहवाचन	63
5. प्रतिष्ठाचार्य का लक्षण	6	2. शांतिमंत्र	63
6. प्रतिष्ठाचार्य स्थापना मंत्र	7	चतुर्थ परिच्छेद	
7. यजमान का लक्षण	7	वेदिका निर्माण विधि	77
8. यजमान प्रतिष्ठा मंत्र	8	1. यज्ञशाला विधि	77
9. नांदीमंगलविधि प्रारंभ	9	2. अग्निहोम विधान	79
10. मंत्रस्नान-संध्यावंदन विधि	10	3. मूलवेदिका निर्माण विधि	81
11. प्राणायाम विधि	11	पंचम परिच्छेद	
12. पूजामुख विधि	12	ध्वजारोहण विधि	83
13. ईर्यापथ शुद्धि	13	1. नवकलश स्थापना विधि	85
14. सकलीकरणविधि	13	2. नेत्रोन्मीलन विधि	86
15. अंगन्यास विधि	14	3. महाध्वज का मंगल जुलूस	87
16. दिशाबंधन मंत्र	15	4. भेरीताड़न विधि	93
17. सामायिक विधि	16	5. दशदिक्पाल पूजा	94
18. पंचामृत अभिषेक पाठ	18	6. आठ दिक्कन्यका पूजा	96
19. दिक्पाल पूजा	20	7. ध्वजा पूजा	98
20. अभिषेक विधि	23	8. द्वाविंशत्याशीषः	99
21. अष्टद्रव्य से पूजा	25		
22. श्रुतपूजा	26		

षष्ठ परिच्छेद

घटयात्रा विधि

1. उपवासग्रहण विधि 106

सप्तम परिच्छेद

महायागमंडलाराधना

1. स्वस्तिपाठ 112
2. यज्ञदीक्षा विधान 113
3. भूमिशोधन विधि 114
4. दर्भस्थापन विधि 115
5. मण्डपप्रतिष्ठा विधान 116
6. वेदी प्रतिष्ठा विधि 117
7. यागमंडलवर्तन विधान 118
8. यागमंडलोल्लेखन विधि 119
9. यागमंडल पूजा विधान 122
10. अष्टदलकमल में आठ देवियों की पूजा 129
11. सोलह विद्यादेवताओं की पूजा 131
12. चौबीस जिनमाता की पूजा 134
13. बत्तीस इन्द्रों की पूजा 139
14. पन्द्रह तिथिदेवता की पूजा 145
15. द्वितीय चौकोन मंडल में नवग्रह की पूजा 148
16. तृतीय मंडल में 24 यक्षों की पूजा 152
17. चतुर्थ मंडल में 24 यक्षियों की पूजा 156
18. पांचवें मंडल में स्थापित दिक्कन्याओं की पूजा 160
19. पांचवें मंडल में दिक्पालों की पूजा 163
20. द्वारपालानुकूलन 165
21. चार महादिशाओं में 4 यक्षों की पूजा 166
22. शिलास्थापना 170
23. आनन्दस्तव 170

अष्टम परिच्छेद

गर्भावतारकल्याणक

1. सकलीकरण विधि 173
2. भूमिशोधन विधि 175
3. भद्रकुंभ के सामने जिनमाता की पूजा 176
4. विधिनायक भगवान की माता की पूजा 177
5. श्री आदि देवी पूजा विधि 178

6. दिक्कन्या द्वारा गर्भशोधन विधि 181
7. अष्टकुमारियों द्वारा माता की सेवा 182
8. माता के सोलह स्वप्न 183
9. प्रतिष्ठेय प्रतिमा की जलाधिवासन विधि 185
10. दिक्पालार्चन विधान 185
11. जलहोम विधि 187
12. दशदिक्पाल मंत्र 187
13. धाम संप्रोक्षण 188
14. शांतिशुद्धि होमविधि 190
15. दर्भशयन विधि 191
16. दर्भहोम विधि 193
17. जिनमातृस्तवन 194
18. गर्भकल्याणक क्रिया में भक्तिपाठ विधि 194

नवम परिच्छेद

जन्माभिषेक कल्याणक

1. कलशस्थापन विधान 198
2. चूर्णपंचक स्थापना 199
3. जन्मस्थान को अर्घ्य 201
4. जन्म के दस अतिशय की स्थापना 201
5. विजयादि देवतोपासन विधि 202
6. जातकर्म स्थापन 203
7. आकारशुद्धि 203
8. पांडुकशिला पर पुष्पांजलि 206
9. अभिषेकोपकरण सज्जीकरण 208
10. जन्माभिषेक कुंभ रचना 209
11. प्रथम आवरण (चाट) 4 कलश 210
12. द्वितीय आवरण (20 कलश) 211
13. तृतीय आवरण (36 कलश) 212
14. चतुर्थ आवरण (52 कलश) 213
15. आठ कलशों से अभिषेक विधि 214
16. बीस कुंभों से अभिषेक 215
17. अष्टविधनीराजना विधि 216
18. छत्तीस कलशों से अभिषेक 221
19. बावन कलशों द्वारा अभिषेक 223
20. चतुष्कोणकुंभाभिषेक 224
21. मध्यकुंभाभिषेक 225
22. कर्णवेधन 227
23. चंदनचर्चन 227
24. कंकण बंधन 227

25. नामकरण विधान	227
26. आनन्दस्तव	228
27. जन्मकल्याणकक्रिया में भक्तिपाठ विधि	228
28. आनन्दनर्तन	229
29. जिनमातृस्तवन	230
30. कुमारक्रीड़ा	232
31. भोग्यवस्तु स्थापना	232
32. पट्टाभिषेक	232
33. राज्यलीला	232
34. चक्रवर्ति राज्याभिषेक	233
35. भोगोपभोग स्थापना	233

14. अनंतचतुष्टय के 4 मंत्र	261
15. केवलज्ञान के 10 मंत्र	261
16. चौदह अतिशय के 14 मंत्र	262
17. अष्ट महाप्रातिहार्य स्थापन	263
18. लांछन स्थापन	264
19. यक्षयक्षी स्थापन	264
20. पंचकल्याणक स्थापन	264
21. कंकणमोक्षण	265
22. अर्हदेवसाक्षात्करण विधान	265
23. केवलज्ञानकल्याणक क्रिया में भक्तिपाठ	267
24. श्रीविहार की घोषणा	269

दशम परिच्छेद

निष्क्रमणकल्याणक विधि	234
1. लौकांतिक देवों द्वारा स्तुति	235
2. दीक्षावृक्ष स्थापन	235
3. 24 तीर्थकरों के दीक्षा एवं केवलज्ञान वृक्षों के नाम	236
4. राज्यत्याग स्थापना	236
5. 108 कलशों से अभिषेक	236
6. वर्णपूर अवतरणविधि	237
7. तीर्थकरकृत महादान स्थापना	237
8. केशों पर पुष्पांजलि	241
9. तपकल्याणक में भक्तिपाठ विधि	242

एकादश परिच्छेद

केवलज्ञानकल्याणक विधि	244
1. स्वर्णशलाका स्थापन विधि	245
2. कल्याणमालारोपणम्	246
3. संस्कारमालारोपण	247
4. 48 लवंग से संस्कार	248
5. मंत्रन्यास विधान	250
6. प्रतिष्ठाहोम	254
7. प्रतिष्ठातिलक विधान	255
8. अधिवासन विधान	256
9. स्वस्त्ययन विधान	259
10. आशीर्वाद विधि	259
11. केवलज्ञानवृक्ष स्थापन	260
12. नयनोन्मीलन	260
13. गुणाध्यारोपणम्	261

द्वादश परिच्छेद

निर्वाणकल्याणक	273
1. चूर्णार्चन	274
2. सिद्धगुण पूजा	277
3. गुणारोपण	280
4. निर्वाणकल्याणक क्रिया में भक्तिपाठ	282
5. प्रतिष्ठानिष्ठापन क्रिया	285

त्रयोदश परिच्छेद

महाभिषेक विधि	286
1. सिद्धार्चन विधान	287
2. महर्षिपर्युपासन विधान	289
3. स्वस्त्ययन विधान	290
4. यज्ञदीक्षा विधान	290
5. भूमिशोधन	291
6. दर्भन्यास विधान	293
7. मंडप प्रतिष्ठा विधान	294
8. कुमुदादिद्वारपालानुकूलन	294
9. वेदी प्रतिष्ठा विधान	294
10. कलशस्थापन विधान	295
11. शांतिक विधान	296
12. अष्टपत्रस्थापितजयार्चन विधान	297
13. दिक्पालानुकूलन	298
14. आनन्दस्तव	301
15. पंचगुरुमुद्राबंधन	302
16. एकादशविधि अवतरणविधि	302
17. जलहोम कुंड में आहुति	307
18. अथाभिषेक	307

19. अष्टदलकमल में नवदेवता पूजा	312	23. सरस्वती प्रतिष्ठा विधि	338
20. अभिषेक में भक्तिपाठ विधि	317	24. श्रुतस्कंध यंत्र आदि प्रतिष्ठा विधि	339
21. द्वारपालबलि:	318	25. यक्ष-यक्षी प्रतिष्ठा विधान	340
22. श्रीबलि:	318	अष्टादश परिच्छेद	342
चतुर्दश परिच्छेद		कविवंश वर्णन	351
एकादशविधकुंभन्यास विधि	319	ग्रंथकर्ता की प्रशस्ति	354
पंचदश परिच्छेद		भावानुवादिका की प्रशस्ति	355
मध्यमप्रतिष्ठा विधि	321	परिशिष्ट	
षोडश परिच्छेद		1. विशेष श्लोक व मंत्र-प्राण प्रतिष्ठा मंत्र, सूरिमंत्र, वेदी में भगवान विराजमान करने का श्लोक व मंत्र, भगवान के पास पिच्छी-कमण्डलु स्थापित करने के मंत्र, ग्यारह प्रकारी पूजा	357
संक्षेप प्रतिष्ठाविधि	324	2. रथचालन विधि, अर्घ्य का श्लोक (भिन्न-भिन्न प्रकार से)	358
सप्तदश परिच्छेद		3. वास्तुबलि विधान	359
सिद्ध, आचार्यादि प्रतिष्ठा विधि	326	4. जलहोम विधान	365
1. सिद्धप्रतिमा प्रतिष्ठा – तिलकदानादि मंत्र	327	5. लघु यागमण्डल विधान	371
2. पंचामृत अभिषेक	327	6. गृहचैत्यालय की प्रतिमा के माप का प्रमाण	375
3. आचार्यप्रतिष्ठा विधान	328	7. कुलांगनासती को भगवान की माता बनाने का प्रमाण	375
4. गणधरवल्लय यंत्र बनाने की विधि	329	8. प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ में वर्णित वनस्पति, धान्य, फूल आदि के नाम	377
5. अड़तालिस पूजामंत्र	329	9. तीर्थकर, गणधर, यक्ष-यक्षी, क्षेत्रपाल आदि के नाम	379
6. धूलिकलशाभिषेक	331	10. वर्तमानकालीन तीर्थकरों की पंचकल्याणक तिथि	380
7. आचार्य बिंब के गुणारोपण मंत्र	332	11. नवग्रह शांतिकारक नौ बृहद् मंत्र	381
8. उपाध्याय बिंब के गुणारोपण मंत्र	332	12. शांतिधारा	382
9. साधुबिंब के गुणारोपण मंत्र	332	13. विद्यमान 20 तीर्थकरों के नाम व चिन्ह	383
10. आह्वानन के मंत्र (आचार्य, उपाध्याय, साधु)	333	14. सर्वाणहयक्ष, अंकुरारोपण, अष्टआयुध, महायागमण्डल, बृहच्छांतिकयंत्र आदि यंत्रों के चित्र	384
11. तिलकदान विधि	333	15. 9 से लेकर 1008 तक कलश मांडने के चित्र	397
12. आचार्य बिंब का तिलकदान मंत्र	333	16. मृत्युंजय, सिद्धचक्र, नवग्रहशांति, कलिकुण्ड आदि यंत्रों के चित्र	405-414
13. उपाध्याय परमेष्ठी का तिलकदान मंत्र	334		
14. साधु परमेष्ठी का तिलकदान मंत्र	334		
15. मुखवस्त्र प्रदान मंत्र	334		
16. आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी पूजा	334		
17. आचार्य, उपाध्याय, साधु का नयनोन्मीलन मंत्र	334		
18. मुखवस्त्रोद्घाटन मंत्र	334		
19. आचार्य, उपाध्याय, साधु प्रतिमा की अभिषेक विधि	335		
20. आचार्य भक्ति	336		
21. श्रुतदेवता प्रतिष्ठा विधान	336		
22. आकारशुद्धि मंत्र	337		

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जैन साहित्य जगत में जहाँ पूर्वाचार्यों ने हमें ग्रंथों का भण्डार प्रदान किया है, वहीं वर्तमान में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने आर्षमार्गीय साहित्य रचकर जैन समाज पर महान उपकार किया है। इनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आगम परम्परा का अनुसरण करते हुए ही इन्होंने सदैव लेखनी चलाई है, आगम से विपरीत एक शब्द भी अपना व्यक्तिगत नहीं होता है। यही कारण है कि कोई भी संस्कृतज्ञ या विषयमर्मज्ञ विद्वान् इनके ग्रंथों में कोई त्रुटि नहीं निकाल सका है।

“प्रतिष्ठातिलक” यह ग्रंथ एक प्राचीनकालीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। श्री नेमिचन्द्र सैद्धान्तिकदेव ने पाषाण से भगवान बनाने की सम्पूर्ण विधि इसमें स्वयं समाविष्ट कर दी है अतः कुछ भी पाठ अलग से इसमें जोड़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। काफी दिनों से पूज्य माताजी की इच्छा थी कि दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित “वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला” से इस प्रतिष्ठा ग्रंथ का प्रकाशन हो, अतः इस ग्रंथ का प्रथम संस्करण सन् 2006 में संस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया। इस ग्रंथ के प्रकाशन पर पूज्य माताजी के प्रति अत्यंत विनम्र भाव प्रगट करते हुए हम उनके उपकारों का स्मरण करते हैं, जिनके कारण विधि-विधान के क्षेत्र में प्रतिष्ठा तिलक जैसा आगमोक्त, बहुमूल्य एवं प्रामाणिक ग्रंथ समाज को प्राप्त हुआ है। इस ग्रंथ के प्रकाशन हेतु आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं संघस्थ बहनों ने जो परिश्रम किया है, उनके प्रति भी विनम्र भावों के साथ हम साधुवाद अभिव्यक्त करते हैं।

अंत में सभी प्रतिष्ठाचार्य, विद्वत्त्वर्ग एवं साधर्मि बंधुओं के लिए यह कृति मार्गदर्शक बने तथा हमारे आगमनिष्ठ प्रतिष्ठाचार्यों के लिए उपयोगी एवं सहयोगी रहे, यही मंगल भावना है।

आभार

जैनधर्म में बतलाये गये श्रावकों के षट्कर्तव्यों में एक मूल कर्तव्य “दान” का अपने जीवन में परिपालन करते हुए श्री प्रमोद कुमार काला-श्रीमती सुधा काला, कोलकाता (प. बंगाल) ने इस ग्रंथ के प्रकाशन में ज्ञानदान स्वरूप अपना सौजन्य प्रदान करके महान पुण्य अर्जित किया है, एतदर्थ आपकी इन पुण्य भावनाओं का सम्मान करते हुए हम दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की ओर से आपके प्रति विशेष आभार प्रगट करते हैं तथा इसी प्रकार आगे भी आप अपने मनुष्य जीवन को देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप व विशेषरूप से दानरूपी षट्कर्तव्यों के पालन के साथ सार्थक करते रहें, यही जिनेन्द्र प्रभु से मंगल कामना है।

—सम्पादक

प्रस्तावना

—आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

सम्यग्दर्शन के प्रभावना अंग का वर्णन करते हुए स्वामी श्री समन्तभद्राचार्य ने कहा है—

अज्ञानतिमिरव्याप्ति-मपाकृत्ययथायथम्।

जिनशासनमाहात्म्य-प्रकाशः स्यात्प्रभावना॥

अर्थात् संसार में अज्ञानरूपी अंधकारसमूह को दूर करके यथासंभव जैन शासन की महिमा को प्रकाशित करना—जैनधर्म का प्रचार-प्रसार करना प्रभावना अंग का लक्षण है।

इस प्रभावना अंग का पालन करने में श्रावक और साधु दोनों का महत्वपूर्ण योगदान देखा जाता है। चतुर्थकाल में भी मुनिजन तीर्थयात्रा करके एवं रथोत्सव, पंचकल्याणक महापूजा आदि में अपना संघसानिध्य प्रदान करके जिनधर्म की प्रभावना करते थे और पंचमकाल में भी मुनियों के लिए श्री कुन्दकुन्दाचार्य देव ने प्रवचनसार में बताया है—

दंसण णाणुवदेसो, सिस्सगहणं च पोसणं तेसिं।

चरिया हि सरागाणां, जिणिन्दपूजोवदेसो य।।

अर्थात् पंचमकाल के छठे-सातवें गुणस्थानवर्ती भावलिंगी सरागी मुनि जो वीतरागनिर्विकल्प ध्यान में जब तक स्थित नहीं हो सकते हैं, तब तक वे सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि का उपदेश देते हुए शिष्यों का संग्रह और उनका पोषण करें तथा जिनेन्द्र पूजा का उपदेश देकर भव्यात्माओं को मोक्षमार्ग में अग्रसर करें।

इसका तात्पर्य यह निकलता है कि निर्ग्रन्थ मुनि एवं आर्यिका आदि गुरुजन समाज के पथप्रदर्शक होते हैं अतः उन्हें शास्त्रानुकूल चर्यापालन के साथ-साथ सदैव जैनशासन के संरक्षण-संवर्धन हेतु पुण्यबंध कराने वाले सच्चे धर्म का उपदेश करना चाहिए। इसका साक्षात् प्रमाण श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने स्वयं गिरनार यात्रा करके, विपुलसाहित्यसृजन आदि करके प्रस्तुत किया। आचार्यश्री अकलंकदेव, समन्तभद्र ने अपने ज्ञान के द्वारा अनेकांत का ध्वज लहराया तथा आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली की प्रतिमा के पंचकल्याणक महोत्सव में सानिध्य प्रदान कर एक इतिहास बना दिया।

इन्हीं पूर्वाचार्यों के मार्ग का अनुसरण करते हुए बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी मुनि महाराज ने भी कुंथलगिरि, कुम्भोज, दहिगाँव आदि स्थानों पर जिनप्रतिमा विराजमान करने की प्रेरणा देकर पुनीत कार्य किया है। इसीलिए उनके प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर महाराज कहा करते थे कि “आचार्य शांतिसागर महाराज का दर्शन जिसने किया उसने अपने जीवन को सफल कर लिया”। पुनः आचार्यश्री वीरसागर महाराज के शिष्य द्वितीय पट्टाधीश आचार्य श्री शिवसागर महाराज की प्रेरणा से श्री महावीर जी अतिशयक्षेत्र पर “शान्तिवीरनगर” तीर्थ की स्थापना हुई जहाँ विशाल खड्गासन भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा एवं अनेक जिनमंदिरों के निर्माण हुए हैं। ये सभी धर्मायतन भव्यात्माओं की पुण्यवृद्धि एवं मोक्षप्राप्ति के माध्यम बने हुए हैं।

मंदिर-मूर्तियों के निर्माण के पश्चात् उनकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, वेदीशुद्धि एवं शिखर पर कलशारोहण करना महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान माने जाते हैं। इन अनुष्ठानों को विधिपूर्वक सम्पन्न करने हेतु प्राचीनकाल से हमारे आचार्यों, मुनियों एवं विद्वानों ने पूर्व परम्परा से चले आए मंत्र आदि का आश्रय लेकर विधि-विधान के ग्रंथ लिखकर हमें प्रदान किये हैं।

बंधुओं! पूजा-विधान-पंचकल्याणक आदि महान पुण्यकार्यों में मंत्र संस्कारों का ही सर्वाधिक महत्त्व होता है, क्योंकि उनसे ही पाषाण-धातु या रत्नप्रतिमाओं में भगवान जिनेन्द्र की स्थापना होती है और तभी वे पूज्य मानी जाती हैं। लघु चैत्यालय या विशाल मंदिर के निर्माण से लेकर उसमें भगवान विराजमान करके पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-कलशारोहण करने तक की सम्पूर्ण लघु एवं बृहत्विधि का वर्णन करने वाला यह “प्रतिष्ठातिलक” ग्रंथ आपके हाथों में आ रहा है, जो श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक देव की अद्भुत सङ्गीतिकृति है।

वर्तमान में यद्यपि अनेक विद्वानों के द्वारा संग्रहीत किये गये कई प्रतिष्ठाग्रंथ प्रकाश में आये हैं किन्तु पूज्य माताजी की मान्यता है कि यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ एक अति प्राचीन होने के साथ-साथ अपने आप में परिपूर्ण है। इसमें प्रारंभिक सकलीकरण विधि से लेकर यज्ञदीक्षा, यागमण्डल विधान, ध्वजारोहण, अंकुरारोपण, पंचकल्याणक आदि समस्त विधियों का 18 अध्यायों में विस्तृत वर्णन है तथा इसमें प्रतिष्ठा की विस्तार सहित बृहत्, मध्यम एवं संक्षिप्त विधि भी बताई गई है।

इस ग्रंथ में जिनबिंबों की प्रतिष्ठा के साथ-साथ आचार्य-उपाध्याय-साधु की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाविधि, श्रुतदेवता (सरस्वतीदेवी), श्रुतस्कंध, जिनशासन यक्ष-यक्षी आदि की प्रतिष्ठाविधि भी अलग से वर्णित है। इससे सिद्ध होता है कि इनकी मान्यताएँ भी प्राचीन काल से थीं। आज कुछ लोग आचार्यादि की प्रतिमा का विरोध करते हैं किन्तु जहाँ इस ग्रंथ में इनकी प्रतिष्ठा विधि बताई है, वहीं देवगढ़, खजुराहो, मांगीतुंगी पर्वत आदि तीर्थों पर उत्कीर्ण इनकी प्राचीन मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। अतः यदि आचार्य धरसेन, कुंदकुंद आदि प्राचीन आचार्य एवं चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर, आचार्यश्री वीरसागर आदि मुनि महाराजों की प्रतिमाएँ बनाकर उनकी विधिवत् प्रतिष्ठा करके पूज्य बनाया जाता है तो कोई दोष नहीं प्रतीत होता है। इसी प्रकार शासन देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा भी प्राचीन पद्धति के अनुसार शास्त्रोक्त है और लगभग सभी प्राचीन मंदिरों में क्षेत्रपाल, धरणेन्द्र-पद्मावती, अम्बिका, ज्वालामालिनी आदि देव-देवियों की प्रतिमाएँ देखी जाती हैं। वर्तमान में दिगम्बर जैन समाज में बीसपंथ और तेरहपंथ के नाम से दो परम्पराएँ प्रचलित हैं। उनमें से प्राचीन परम्परानुसार पंचामृत अभिषेक, स्त्रियों द्वारा अभिषेक, पूजन में फल-फूल-नैवेद्य-दीप-धूप आदि चढ़ाने वालों को एवं शासन देव-देवी का अस्तित्व मानने वालों को बीसपंथी आमनाय की मान्यता वाला कहा जाता है तथा लगभग 350 वर्षों से उत्तरभारत के कतिपय विद्वान् पण्डितों द्वारा बनाए गए 13 नियमों का पालन करने वालों को तेरहपंथी कह दिया गया है। किन्तु प्राचीन आगम ग्रंथों में तेरह पंथ-बीसपंथ का कोई नामोनिशान भी नहीं है एवं वर्तमान में भी तेरहपंथी मंदिरों में से प्रायः अधिक मंदिरों में अंबिका देवी, पद्मावती-क्षेत्रपाल आदि की प्रतिमाएँ आज भी विराजमान हैं। जो भी हो, यहाँ यह विशेष ध्यान देने योग्य यह है कि यह भेद-भिन्नता मात्र श्रावकों की पूजा पद्धति में तो है किन्तु पूरे दिगम्बर जैन समाज में अन्य कोई सैद्धान्तिक मतभेद नहीं है। इसीलिए दोनों परम्परा के लोग मिल-जुलकर दक्षिण-उत्तर का सेतुबंध बनाये रखकर बड़े-बड़े उत्सव-महोत्सवों को सम्पन्न करते रहते हैं। वर्तमान के उदारमना मस्तिष्क वाले युग में सभी को पक्षदुराग्रह की संकीर्ण मान्यताएँ छोड़कर जहाँ जैसी परम्परा पुरातन से चली आ रही है उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए। विशेषरूप से दि. जैन तीर्थों पर बीसपंथ और तेरहपंथ दोनों परम्पराओं का समन्वय रखना चाहिए क्योंकि तीर्थ किसी की अधिकृत सम्पत्ति न होकर वे प्रत्येक दिगम्बर जैन की श्रद्धा के केन्द्र होते हैं।

पूजा विधि-मंत्र अनुष्ठान आदि के संबंध में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रतिष्ठाचार्य एवं यजमान की पिण्ड शुद्धि, मंत्रशुद्धि, अनुष्ठान पद्धति, अनुशासनबद्धता, अणुव्रत पालन की क्षमता आदि जितनी प्रबल होगी उतना ही अधिक चमत्कार प्रतिमाओं में आता है, पूजा-विधान का फल भी उसी प्रकार

से भौतिक सुख की प्राप्ति आदि रूप प्राप्त होता है तथा क्रम से आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति करते हुए मोक्ष की परम्परा भी साकार होती है। इस “प्रतिष्ठातिलक” ग्रंथ में इन सभी शास्त्रीय विधियों का समावेश है इसीलिए इसमें वर्णित पूरी विधि के अनुसार भगवन्तों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करने से प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं में विशेष चमत्कार प्रगट होता है।

इसमें कुल अठारह परिच्छेद हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

1. प्रथम परिच्छेद में नांदीमंगल विधानरूप प्रारंभिक विधि का वर्णन है। उसके अंतर्गत प्रतिष्ठा के प्रकार, प्रतिष्ठाचार्य का लक्षण, पूजामुखविधि, सकलीकरण, अभिषेकविधि आदि के वर्णन के साथ-साथ धर्माचार्य की अर्चना, श्रीबलि आदि को बताया है। यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य यह है कि “प्रतिष्ठाचार्य” को “इन्द्र” शब्द से तथा यजमान को “प्रतीन्द्र” संज्ञा से इंगित किया गया है किन्तु वर्तमान में प्रतिष्ठाचार्य, यज्ञनायक, सौधर्मादि 12 इन्द्रों की प्रमुखता प्रतिष्ठाओं में रहती है।

2. द्वितीय परिच्छेद में अंकुरारोपण विधि का वर्णन है जो प्रत्येक विधि-विधान एवं पंचकल्याणकों के प्रारंभ में की जाती है। इस ग्रंथानुसार यद्यपि अंकुरारोपण करने का निर्देश प्रारंभ में ही कर दिया है किन्तु वर्तमान में प्रायः सभी जगह झण्डारोहण के बाद अंकुरारोपण करने की परम्परा है।

3. तृतीय परिच्छेद में शांतिहोम विधान है, इसके अन्तर्गत होम का मण्डप एवं हवन कुण्डों के लक्षण आदि का विस्तृत वर्णन है।

4. चतुर्थ परिच्छेद में मण्डप विधान, वेदी निर्माण, यज्ञशाला आदि का वर्णन करते हुए नवग्रह पूजा विधि बताई है कि कौन से ग्रह की शांति हेतु किस प्रकार की समिधा (लकड़ी) से आहुति देनी चाहिए।

5. पंचम परिच्छेद में ध्वजारोहण विधि को विस्तार से प्रयोगात्मकरूप में बताया है। इसमें सर्वाण्ह यक्ष का स्वरूप बताकर उन्हें ध्वजदेवता के रूप में माना गया है और इसमें दश दिक्पाल पूजन, अष्ट दिक्कन्यका पूजन एवं दश प्रकार की ध्वजाओं की पूजा का वर्णन है। इस विधि का पूर्ण परिपालन करने से धर्म की ध्वजा तो आकाश की ऊँचाईयों का स्पर्श करती ही है, साथ ही ध्वजारोहण करने वाले यजमान की कीर्तिध्वजा भी संसार में लहराने लगती है। पुनः इसी में भेरी ताड़न विधि का वर्णन है। इसका रहस्य यह है कि पंचकल्याणक जैसा महान विश्वशांति महायज्ञ करने से पहले पूरे नगर में विधिपूर्वक सभी सहधर्मियों को भेरी आदि बजाते हुए सूचित करना कि आप सभी इस यज्ञ में भाग लेकर जीवन सार्थक कीजिए। समाज को सूचित करने के साथ-साथ इस विधि द्वारा देवी-देवताओं को मंत्रपूर्वक बुलाकर उन्हें यज्ञ पर्यन्त सर्वतोमुखी रक्षा का कार्यभार सौंपा जाता है जिससे कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होता है।

6. छठे परिच्छेद में घटयात्रा विधि से जल लाकर मंत्रित करना एवं उपवास ग्रहण विधि आदि हैं जो कि अनुष्ठानपर्यंत एक बार भोजन आदि नियम होते हैं।

7. सातवें परिच्छेद में “यागमण्डल विधान” विस्तृतरूप में है। प्रत्येक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में गर्भकल्याणक से पहले एक या दो दिन में इस “यागमण्डल विधान” को यज्ञनायक आदि के द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। इस यागमण्डल विधान को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चूँकि हिन्दी में बना दिया है और वह जंबूद्वीप-हस्तिनापुर से प्रकाशित भी हो चुका है, अतः प्रायः प्रतिष्ठाचार्य लोग उसी हिन्दी पुस्तक से यागमण्डल कराते हैं।

वर्तमान में कुछ तेरहपंथी पंडित इस यागमण्डल में से सभी देवी-देवताओं की अर्चना हटाकर इसे बिल्कुल सारहीन बना देते हैं। इसीलिए प्रतिष्ठा के कार्यों में निर्विघ्नता एवं अतिशय का संदेह बना रहता है। प्रतिष्ठाचार्यों को इस विषय में निष्पक्षरूप से सम्पूर्ण विधि सम्पन्न करानी चाहिए। क्योंकि प्रतिष्ठा में चमत्कार

तो प्रतिष्ठाविधि से ही आता है। अतः इन प्रकरणों में अपनी व्यक्तिगत एवं प्रान्तीय मान्यता को छोड़कर प्राचीन आगम परम्परा का निर्वाह करना ही विद्वज्जनों के लिए श्रेष्ठ प्रतीत होता है। पूज्य माताजी कई बार बताती हैं कि मेरे दीक्षागुरु आचार्यश्री वीरसागर महाराज कहा करते थे कि “मेरा सो खरा” नहीं बल्कि “खरा सो मेरा” की नीति हमें अपनानी चाहिए अर्थात् अपनी निजी मान्यता मिथ्या भी हो सकती है किन्तु जो शास्त्रीय सम्यक् मान्यता है वह कभी मिथ्या नहीं हो सकती है। वे आचार्यश्री इस प्रतिष्ठातिलक को अत्यधिक प्रामाणिक मानते थे।

8. आगे के आठवें परिच्छेद से पंचकल्याणक की सम्पूर्ण विधि प्रारंभ हो जाती है सो उसमें से सर्वप्रथम गर्भकल्याणक की पूरी विधि इस अध्याय में कही गई है। इसमें सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी, कुबेर आदि पदों को ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को प्रतिष्ठाचार्य जी सकलीकरण, यज्ञदीक्षा विधि से शुद्ध करके स्थापना निक्षेप से वास्तविक इन्द्र-इन्द्राणी बना देते हैं, पुनः उन्हें प्रतिष्ठाकाल तक सूतक-पातक आदि नहीं लगता है।

इस गर्भकल्याणक महोत्सव को अंतरिम विधि और बाह्य नाटक मंचन विधि इन दो रूपों में सम्पन्न किया जाता है। वर्तमान में प्रायः परम्परा है कि तीर्थकर माता के सोलह स्वप्न आदि के अनन्तर देर रात्रि में प्रतिष्ठाचार्य विद्वान् संक्षेप में अंतरिम विधि को सम्पन्न कर देते हैं। किन्तु पूज्य माताजी इसी विधि को सर्वाधिक महत्त्व देती हैं इसीलिए उनका कहना है कि एक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में कम से कम दो-तीन विद्वान् प्रतिष्ठाचार्य अवश्य होना चाहिए, उनमें से ही एक प्रतिष्ठाचार्य सभी यजमानों को दिन में बुलाकर उनसे गर्भकल्याणक की पूरी शास्त्रीय विधि सम्पन्न करावें।

इस विधि में एक बड़े मटके को रखकर उसकी सजावट आदि करके उसमें जिनमाता की स्थापनापूर्वक संपूर्ण विधि उनमें और उनके समक्ष करने का विधान है। इसे सम्पन्न करने में लगभग 3-4 घंटे का समय तो लगता है किन्तु विधि करने वाले यज्ञनायक और सौधर्म इन्द्रादिक का मन गद्गद हो जाता है, वे ऐसा अनुभव करने लगते हैं कि हमने मानों साक्षात् ही भगवान् जिनेन्द्र के गर्भकल्याणक का उत्सव मना लिया है। प्रतिष्ठा में जो माता-पिता, कुबेर, अष्टदिक्कुमारी आदि की भूमिका निभाने वाले पात्र हों, उन्हें भी इस विधि में सम्मिलित करके इन्द्र के द्वारा सम्मानित कराया जाना चाहिए।

कोई प्रतिष्ठाचार्य माता-पिता बनाने का निषेध करते हुए मात्र अंतरिम विधि के अनुसार मटके में स्थापित माता में ही पूरी विधि करते हैं किन्तु वसुविन्दु आदि कतिपय प्रतिष्ठापाठों में वर्णन आया है कि पतिव्रता कुलांगना में भी माता की स्थापना करना चाहिए। जैसा कि वसुविन्दु प्रतिष्ठा पाठ में स्पष्ट उल्लेख है कि—

अंबा सर्वाः सवित्र्यस्त्रिजगदधिपतिप्राप्तपूजाधिकारा।

अत्रागत्याध्वरोर्व्या यजनकृतमिह स्वादरेण वृणन्तु॥

अध्वरूपत्निका वा धृततनुकुलयोर्दोषहीनां प्रकल्प्य।

वादित्रोद्घोषपूर्वं विहितयमदमां भूषयेत्पुण्यमूर्तिम्॥178॥

कदाचिदेषा न भवेद्गुणाद्या मंजूषिकां कल्पतु मातृकार्ये।

एवं चतुर्विंशतिजिनप्रसूनां नामानि पुण्यानि कृती बहेत्॥179॥

इन्द्रों से जिन्होंने पूजा का अधिकार-पात्रता प्राप्त की है, ऐसी तीर्थकरों की जननी सभी अंबा-माताओं! यहाँ आकर इस प्रतिष्ठायज्ञ की भूमि में आदरपूर्वक पूजा को स्वीकार करो।

जो शरीर से, कुल से दोषहीन हैं—सर्वांगपरिपूर्ण एवं कुल से शुद्ध हैं तथा जो यम और दम—इंद्रिय

निग्रह से परिपूर्ण हैं, पुण्य की मूर्तिस्वरूप हैं ऐसी कुलांगना में वाद्य बजाते हुए घोषणापूर्वक उनमें तीर्थकर माता की कल्पना करो।

कदाचित् ऐसी गुणों से समन्वित महिला नहीं मिलें तो माता के कार्य-विधि को करने के लिए मंजूषा-पेटी में माता की कल्पना करो। इस प्रकार 24 तीर्थकरों की माताओं के नामों का उच्चारण करके विद्वान् पूजा करें।

इससे विपरीत कुछ दिन पूर्व एक प्रतिष्ठा में देखा गया कि पांडाल के मंच पर प्रसूतिगृह के बाजू में एक स्थान बनाकर उसमें माता-पिता बनने वाले दम्पति को 2-4 दिन शयन कराया गया। इस विषय में प्रश्न करने पर उत्तर मिला कि दाम्पत्य जीवन बिताये बिना संतान की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? किन्तु ये सब बातें शास्त्रीय दृष्टि से निराधार हैं। इसमें पारम्परिक समाधान यही है कि मटके में माता का संकल्प करके सम्पूर्ण विधि सम्पन्न करें और मंच के बाह्य दृश्यों के प्रदर्शन हेतु जाति-कुल की शुद्धि वाले अणुव्रती दम्पति को माता-पिता बनावें। इससे उनके भावों में तीर्थकर पुत्र उत्पन्न करने जैसी ही पवित्र भावनाएँ उत्पन्न होती हैं एवं इस निमित्त से वे अगले भव में भगवान के साक्षात् माता-पिता बनने का सौभाग्य भी प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु प्रतिष्ठा मंच पर उनके शयन का स्थान बनाना शोभास्पद नहीं लगता है क्योंकि संयमीजीवन के अभिलाषी को राग के नये बंधन में नहीं बांधना चाहिए। इन विषयों में सभी प्रतिष्ठाचार्यों को सम्मेलन करके एकमत होना चाहिए अन्यथा समाज में जितने प्रतिष्ठाचार्य, उतने मत और उतने प्रकार की विधि को देखकर जनता गुमराह हो जाती है।

इसी प्रकार प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न करने वाले इन्द्र-इन्द्राणियों के यज्ञदीक्षा में कंकण बंधन की विधि में भी आजकल काफी भिन्नता देखी जा रही है कि कुछ प्रतिष्ठाचार्य विद्वान् स्त्री-पुरुष दोनों के दाहिने हाथ में कंकण बांधते हैं और कुछ स्त्रियों के बाएँ हाथ में कंकण बांधते हैं। इस विषय में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार महिलाओं के बाएँ हाथ में ही कंकण बांधने की प्राचीन परम्परा है अतः उसे ही अपनाना चाहिए।

इस आठवें परिच्छेद के अन्दर गर्भावतार कल्याणक की जलाधिवासन आदि विधि से विधिनायक प्रतिमा एवं अन्य प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की शुद्धि करने का प्रयोगात्मक वर्णन है।

9. नवमें परिच्छेद में जन्मकल्याणक की विधि करके जिनेन्द्र शिशु का पांडुकशिला पर जन्माभिषेक एवं शृंगार करके पालना झुलाने आदि की तो बाह्य विधि है ही, साथ ही 117 कलशों से जो आकार शुद्धि करने की विधि है वह विशेष दृष्टव्य है। क्योंकि अनेक प्रकार के पत्ते, भस्म आदि केचूर्ण जल में डालकर अलग-अलग कलशों से जो प्रतिमाओं की आकार शुद्धि की जाती है उससे प्रतिमाओं में पवित्रता एवं पूज्यता आती है।

10. दशवें परिच्छेद में दीक्षाकल्याणक के अंतर्गत लौकांतिक देवों द्वारा स्तुति, भगवान का वनगमन, केशलोच, दीक्षा ग्रहण करके योगलीन होते ही चार ज्ञानधारी बन जाने आदि का वर्णन है।

इसमें यह विशेष जानना चाहिए कि भगवान चूँकि स्वयं “नमः सिद्धं” कहकर दीक्षा ग्रहण करते हैं अतः उन्हें कोई आचार्य, मुनि आदि दीक्षा तो दे ही नहीं सकते। केवल प्रतिष्ठाविधि में वर्णित दीक्षाकल्याणक मंत्रों द्वारा उनके दायें हाथ की ओर पिच्छी और बाएँ हाथ के पास कमंडलु स्थापित करना चाहिए।

इस दीक्षा विधि के बाद तीर्थकर भगवान के नाम के साथ ‘सागर’ (जैसे-आदिनाथ को आदिसागर या शांतिनाथ को शांतिसागर) शब्द न लगाकर केवल तीर्थकर महामुनि आदिनाथ तथा शंतिनाथ आदि बोलकर ही जयकारा लगाना चाहिए। इसी प्रकार बाल्यावस्था में भी भगवान को ऋषभ कुमार कहकर संबोधित नहीं करना चाहिए क्योंकि तीर्थकर प्रकृति का बंधकर जन्म लेने वाले महापुरुष प्रत्येक अवस्था में भगवान ही कहलाते हैं।

11. ग्यारहवें परिच्छेद में केवलज्ञान कल्याणक के अंतर्गत प्रतिमाओं पर केशर से अंकन्यास, तिलकदान, प्राणप्रतिष्ठा का वर्णन है। प्रतिष्ठातिलक में इस कल्याणक को “प्रतिष्ठादिवस” संज्ञा दी है क्योंकि इसी दिन सब प्रतिमाएँ प्राणप्रतिष्ठापूर्वक प्रतिष्ठित हो जाती हैं। इसमें वर्णित तिलकदान विधि का कहीं-कहीं बड़ा विकृतरूप देखा गया है कि यजमान श्रावकगण प्रतिष्ठाचार्य को तिलक करके उन्हें भेंट देने लगते हैं जबकि घिसी हुई मंत्रित केशर आदि को प्रतिमाओं की नाभि में स्वर्ण शलाका से मंत्रपूर्वक रखकर जो तिलकदान विधि होती है उसी से प्रतिमा में प्राणों की स्थापना होती है। इस प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ में कहीं भी सूरि मंत्र का कोई निर्देश नहीं है, फिर भी वर्तमान में पारम्परिक प्रतिष्ठाचार्यों से प्राप्त सूरिमंत्र और प्राण प्रतिष्ठा मंत्र परिशिष्ट में दे दिये गये हैं।

12. बारहवें परिच्छेद में निर्वाणकल्याण की पूरी विधि है। पुनः प्रतिमाओं को यथास्थान विराजमान करके मंदिर के शिखर पर कलशारोहण, ध्वजस्थापन किया जाता है।

13. आगे क्रम प्राप्त तेरहवें परिच्छेद में महोत्सव सम्पन्न होने के बाद सभी प्रतिमाओं के 1008 कलशों से महाभिषेक करने की विधि है।

14. चौदहवें परिच्छेद में 11 प्रकार की कुंभन्यास विधि है।

15-16. पन्द्रहवें एवं सोलहवें परिच्छेद में मध्यम प्रतिष्ठाविधि एवं संक्षेप प्रतिष्ठाविधि दी गई है।

17. सत्रहवें परिच्छेद में सिद्धप्रतिमा प्रतिष्ठाविधि के साथ-साथ आचार्य-उपाध्याय-साधु प्रतिमाओं की पृथक् प्रतिष्ठाविधि, श्रुतदेवता (सरस्वती प्रतिमा) की प्रतिष्ठा विधि, श्रुतस्कंध यंत्र, सिद्धचक्र यंत्र आदि की प्रतिष्ठा विधि तथा यक्ष-यक्षी प्रतिमाओं की भी प्रतिष्ठाविधि इसमें वर्णित है। इससे इन सबकी प्रामाणिकता को अवश्यमेव स्वीकार करना चाहिए।

18. अंत में अठारहवें परिच्छेद में उत्सवों का वर्णन करते हुए कवि के वंश का परिचय तथा ग्रंथकर्ता का परिचय दिया है। इस प्रकार अठारह अध्यायों में निबद्ध यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ सभी पूर्वाचार्यों द्वारा मान्य है।

यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ श्रीनेमिचंद्र सैद्धान्तिक देव की संग्रहीत रचना है। जैसा कि उन्होंने स्वयं इसमें कहा है—

इदं प्रतिष्ठा शास्त्रौघप्रधानमिति युज्यते। तत्सारसंग्रहात्मत्वाद्गन्धानां गंधयोगवत्॥ अर्थात् जैसे सभी सुगंधित पदार्थों को एकत्रित करके उनमें से निकाला गया अर्क अतिसुगंधित होता है, वैसे ही यह प्रतिष्ठापाठ भी सर्व प्रतिष्ठापाठों में प्रधानता को प्राप्त होता है। इतना ही नहीं, इसमें तो यह भी कहा है कि “प्रतिष्ठानां प्रधानत्वात् प्रतिष्ठातिलकं मतम्” अर्थात् यह सर्व प्रतिष्ठापाठों में प्रधान है, क्योंकि इसमें सभी प्रतिष्ठाओं का विस्तार से विवेचन किया गया है। इसीलिए इसका ‘प्रतिष्ठातिलक’ नाम सार्थक है।

इन नेमिचंद्र सैद्धान्तिक देव के बारे में कुछ विद्वानों का मत है कि आप मुनि थे। उनके अनुसार नेमिचंद्र नाम के तीन आचार्य मुनिराज हुए हैं उनमें से प्रथम नेमिचंद्राचार्य ईसवी सन् 556-565 के मध्य हुए, जो श्रीमद्प्रभाचन्द्राचार्य के शिष्य व श्रीमद् भानुचंद्राचार्य के गुरु थे।

द्वितीय नेमिचंद्र आचार्य ईसवी सन् 981 के लगभग माने गये हैं, ये श्री अभयचंद्राचार्य के शिष्य एवं चामुण्डराय मंत्री के गुरु थे। ये “सिद्धान्तचक्रवर्ती” की पदवी से समन्वित थे। इन्होंने गोम्मटसार जीवकांड, कर्मकांड, लब्धिसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार आदि करणानुयोग ग्रंथों की रचना करके सिद्धान्तचक्रवर्ती का पद सार्थक किया था। इनके सानिध्य में सम्पन्न हुई श्रवणबेलगोला की भगवान बाहुबली प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का प्रमुख उल्लेख प्राप्त होता है।

इसके पश्चात् तृतीय आचार्य इस ग्रंथ के रचयिता नेमिचंद्र सैद्धांतिक देव के नाम से माने गये हैं। इनका समय ईसवी सन् 1050-68 का माना गया है। आप महान तार्किक तथा दिग्गज तो थे ही, इसके साथ ही इसी प्रतिष्ठातिलक के अंत में ग्रंथकर्ता की प्रशस्ति में लिखा है—

पलायध्वं पलायध्वं, रे रे तार्किकदिग्गजाः।

नेमिचन्द्रः समायातः, स्याद्वादवनकेसरी॥

अर्थात् आप स्याद्वादरूपी वन के केसरी (सिंह) थे तथा आपकी कीर्ति जगत् में चहुँओर व्याप्त थी। आपके नाम मात्र से ही एकांतवादी पलायमान कर जाते थे—भाग जाते थे।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1954-55 तथा 1965 में दक्षिण भारत के प्रवास में सभी स्थानों पर इसी ग्रंथ के आधार से प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न होती देखी हैं। दक्षिण के प्रतिष्ठाचार्य इस ग्रंथ के संस्कृत श्लोकों का उच्चारण बहुत ही शुद्ध और सौष्ठवपूर्ण भाषा में करते हैं इसलिए प्रतिष्ठा की गरिमा में चार चाँद लगते हैं, श्रोतागण उन कर्णप्रिय छन्दों को सुनते हुए मंत्रमुग्ध होकर असीम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

पूज्य माताजी ने आचार्यश्री वीरसागर महाराज के संघ में आने के बाद वरिष्ठ प्रतिष्ठाचार्य ब्र. सूरजमल जैन को भी सदैव इसी प्रतिष्ठाग्रंथ से पंचकल्याणक सम्पन्न कराते देखा है। उन्हें यह “प्रतिष्ठातिलक” ग्रंथ अत्यंत प्रिय है। लगभग 20 वर्ष पूर्व पूज्य माताजी ने हम लोगों को भी इसका अध्ययन कराया, उस समय उन्हें यह अनुभव हुआ कि इसमें जो प्रयोगात्मक विधि का वर्णन मराठी भाषा में है, सो उसका वर्णन हिन्दी में अवश्य होना चाहिए। पुनः समय मिलते ही हस्तिनापुर में पौष शु. 15 को उन्होंने सन् 1993 में उसका हिन्दी अनुवाद करना शुरू कर दिया। उनके लिए तो यह कार्य कोई जटिल नहीं था, अतः अयोध्या में ही सन् 1994 में शीघ्र कार्य पूर्ण करके उन्होंने तो प्रदान कर दिया किन्तु इसके प्रकाशन का संयोग अब बन पाया है। बीच में 10 वर्ष तक तो पूरा मैटर कम्प्यूटर से कम्पोज होकर सी.डी. में पड़ा रहा, पुनः उसकी सी.डी. हस्तिनापुर मंगाकर कार्य पूरा करने का निर्णय लिया गया सो अब सन् 2006 के चातुर्मास में पूज्य माताजी ने परिश्रमपूर्वक इसकी सेटिंग की। पूरे ग्रंथ की प्रूफ रीडिंग में पूज्य माताजी के निर्देशानुसार संघस्थ ब्रह्मचारिणी कु. सारिका ने अथक परिश्रम किया है। पुनः संशोधन की अंतिम श्रृंखला तक संघस्थ ब्र. कु. बीना, आस्था, इन्दू, चन्द्रिका आदि लगभग सभी बहनों ने प्रूफ रीडिंग में सहयोग प्रदान किया एतदर्थ उन सभी के लिए ज्ञानवृद्धि का आशीर्वाद है। इसके साथ ही त्रिलोक शोध संस्थान की समस्त शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न चि. जीवन प्रकाश जैन को भी इसके संशोधन में सहयोग देने हेतु आशीर्वाद है।

इस “प्रतिष्ठातिलक” ग्रंथ को प्रतिष्ठाचार्य विद्वान् निर्मत्सर भाव से पढ़कर प्रयोग में लावें, यही इसके प्रकाशन का अभिप्राय है। अंत में जिन्होंने अपने करकमलों से इसका सरल अनुवाद करके हम सभी को यह ग्रंथ प्रदान किया है, उन जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, वाग्देवी, वात्सल्यमूर्ति, जम्बूद्वीप की पावन प्रेरिका 250 ग्रंथों की लेखिका परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में शत-शत वंदामि करते हुए मैं जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि सन्त समाज की यह अमूल्य निधि चिरायु एवं स्वस्थ रहते हुए हम सभी को अपने जीवन के कम से कम सौ वर्ष तक ज्ञानलाभ प्रदान करती रहें।



दो शब्द

—ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

हमारा यह भारतदेश हमेशा से ही ऋषि-मुनियों की तपस्या से पवित्र रहा है। यही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ हर धर्म, हर मान्यता, हर सम्प्रदाय, हर जाति के मनुष्यों को अपने-अपने धर्म आदि के पालन की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। कई धर्मों के विभिन्न पर्वों के कारण यहाँ हमेशा ही उत्सव-महोत्सव का माहौल बना रहता है। दीपावली के दिन भगवान महावीर का निर्वाणलाडू चढ़ाकर दीपोत्सव करना, रक्षाबंधन के दिन धर्म एवं धर्मायतनों की रक्षा का संकल्प करते हुए परस्पर में रक्षासूत्र बांधना, चैत्र कृष्णा नवमी को भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती मनाना, चैत्र शु. 13 को भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाना, श्रुतपंचमी के दिन शास्त्रों की पूजा करना आदि अनेकानेक परम्पराएँ काफी समय से चली आ रही हैं, इन्हीं उत्सव-महोत्सवों की श्रृंखला में एक और नाम आता है—‘पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव’ का। अन्य पर्वों की भाँति इस महोत्सव की कोई निश्चित तिथि नहीं है, कभी भी शुभमुहूर्त देखकर इस महोत्सव का आयोजन किया जाता है। देशभर में मनाये जाने वाले अनेकानेक महोत्सवों की अपेक्षा यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि इसमें पाषाण को विधिपूर्वक भगवान का रूप प्रदान किया जाता है तथा पंचकल्याणक महोत्सव को देखकर न जाने कितने भव्यप्राणी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कर लेते हैं।

अनादिनिधन जैनधर्म में “सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः” इस सूत्र के अनुसार सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों की एकता को मोक्ष का मार्ग बताया है तथा इसमें यह भी बताया गया है कि मोक्षरूपी महल की प्रथम सीढ़ी जो सम्यग्दर्शन है, यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है इसके बिना कदापि मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

सोलहकारण भावनाओं में भी सर्वप्रथम दर्शनविशुद्धि भावना को लिया गया है। शेष पन्द्रह भावनाओं के नहीं भाने पर तो कदाचित् तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सकता है परन्तु बिना दर्शनविशुद्धि भावना के कथमपि तीर्थंकर प्रकृति नहीं बंध सकती। अब जानना यह है कि सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कैसे होती है? सच्चे देव अर्थात् वीतराग भगवान के दर्शन करने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। तो ऐसे सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में प्रबल निमित्त उन प्रतिमाओं के दर्शन करने से अनन्त पुण्य संचित होता है तथा उन प्रतिमाओं के बनवाने में तो अनन्तानन्त पुण्य का बंध होता है। शास्त्रों में जिनबिम्ब एवं जिनमंदिर निर्माण का बहुत ही सुन्दर वर्णन है कि सरसों बराबर प्रतिमा और धनिया बराबर मंदिर बनाने में जितना पुण्य है उसकी बराबरी किसी अन्य पुण्य से नहीं की जा सकती है। इन्हीं भावों को आचार्यश्री उमास्वामी जी ने ‘उमास्वामी श्रावकाचार’ में इस प्रकार संजोया है—

अंगुष्ठमात्रं बिम्बं यत् यः कृत्वा नित्यमर्चयेत्।

तत्फलं न च वक्तुं हि शक्यतेऽसंख्यपुण्ययुक्॥११४॥

अर्थ—जो भव्य जीव एक अंगुल प्रमाण प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य पूजा करता है वह असंख्य पुण्य कर्मों का संचय करता है। उस प्रतिमा के विराजमान करने और उसकी पूजा करने के फल को इस संसार में कोई कह भी नहीं सकता है।

बिम्बादलसमे चैत्ये यवमानं तु बिम्बकम्।

यः करोति हि तस्यैव मुक्तिर्भवति सन्निधिः॥११५॥

अर्थ—जो पुरुष बिम्बाफल के पत्ते के समान बहुत छोटा चैत्यालय बनाता है तथा उसमें जौ के समान छोटी-सी प्रतिमा विराजमान करता है। इस प्रकार जो भगवान की पूजा करता है समझना चाहिए कि मुक्ति उसके अत्यन्त समीप ही आ चुकी है।

भावार्थ—जो गृहस्थ विशेष धनवान नहीं हैं उनको भी अपनी शक्ति के अनुसार जौ के समान छोटी सी प्रतिमा बनाकर प्रतिदिन उसकी पूजा करनी चाहिए तथा जिनालय भी अपनी शक्ति अनुसार छोटे से छोटा बनवाना चाहिए। जिनप्रतिमा और जिनमंदिर बनवाने के समान इस संसार में अन्य कोई दूसरा पुण्य नहीं है। एक प्रतिमा बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा कराने से अनन्त पुण्य का बंध होता है। संसार में ऐसे मनुष्य अत्यन्त धन्य माने जाते हैं।

इस प्रकार जिनबिम्बदर्शन की महिमा को जानकर सभी श्रावकों को प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान के दर्शन की प्रतिज्ञा अवश्य करनी चाहिए तथा अपने जीवनकाल में कम से कम एक प्रतिमा निर्मित करवाकर उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा अवश्य करनी चाहिए।

प्रस्तुत ग्रंथ जो आपके हाथ में है इसका नाम है—प्रतिष्ठातिलक। इसमें पाषाण को भगवान कैसे बनाया जाए, इसकी सम्पूर्ण विधि प्रकाशित है। पूजा ग्रंथों के अनुसार तो प्रत्येक कार्य मंत्रपूर्वक ही किया जाता है जैसे—हाथ धोने के लिए भी मंत्र है “ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा” इत्यादि। इस ग्रंथ में झण्डारोहण से लेकर गर्भ-जन्म आदि पाँचों कल्याणकों की सम्पूर्ण विधि, यागमण्डल विधान, महाभिषेक विधि आदि वर्णित हैं। ग्रंथ के प्रारंभ में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा को करने वाले यजमान एवं प्रतिष्ठा को मंत्रोच्चारणपूर्वक निर्विघ्न सम्पन्न कराने वाले प्रतिष्ठाचार्य का भी लक्षण बताया गया है कि यजमान और प्रतिष्ठाचार्य किन-किन लक्षणों से युक्त हों। ऐसा नहीं है कि चाहे जो कोई यजमान या प्रतिष्ठाचार्य बनकर प्रतिष्ठा को सम्पन्न कर या करा सकता है। पंचकल्याणक के बाह्य दृश्यों को भी इसमें आकर्षक ढंग से दर्शाया गया है तथा ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट के अन्तर्गत वास्तु विधान, जलहोम विधान, लघु यागमण्डल विधान, विभिन्न यंत्रों के चित्र, कलश रचना के चित्र, अनेक महत्त्वपूर्ण श्लोक आदि प्रकाशित हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक इसका भावानुवाद करके इस ग्रंथ को बहुत ही सरल बना दिया है। विभिन्न साहित्य सृजन की शृंखला में पूज्य माताजी द्वारा किया गया यह कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय एवं समसामयिक है। आज विभिन्न प्रकार के प्रतिष्ठाशास्त्रों के कारण कई प्रतिष्ठाचार्य दिग्भ्रमित हो रहे हैं, वे समझ नहीं पा रहे हैं कि उन्हें किसको आधार बनाकर प्रतिष्ठाविधि सम्पन्न करानी चाहिए? उनके लिए यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

जहाँ तक मैंने अपनी अल्पबुद्धि से समझा है तो मुझे तो यही लगता है कि जिनको विधि-विधान कराने में थोड़ी सी भी रुचि है, उनको प्रतिष्ठाचार्य बनने में यह ग्रंथ सहायक सिद्ध होगा।

पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत उनके 73वें जन्मदिवस—शरदपूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रकाशित इस ग्रंथ के माध्यम से विद्वान्गण अधिकाधिक लाभ प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।



ग्रंथ की रचयित्री, राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

कुन्दकुन्दान्वयो जीयात्, जीयात् श्री शांतिसागरः।

जीयात् पट्टाधिपस्तस्य, सूरिः श्री वीरसागरः॥

श्री ब्राह्मी गणिनी जीयात्, जीयादन्तिमचन्दना।

जीयात् ज्ञानमती माता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ॥

जैनशासन के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में दैदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रहीं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उठी लेखनी की अपूर्णता यद्यपि अवश्यंभावी है, तथापि आत्मकल्याण की भावना से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में उनके दीर्घकालीन त्यागमयी जीवन के प्रति विनम्र विनयांजलिरूप मेरा यह विनीत प्रयास है।

1. **जन्म, वैराग्य और दीक्षा**—22 अक्टूबर सन् 1934, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में “मैना” का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त ‘पद्मनदिपंचविंशतिका’ ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र 18 वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् 1952 में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के नियमों को धारण कर लिया। उसी दिन से इस कन्या के जीवन में 24 घंटे में एक बार भोजन करने के नियम का भी प्रारंभीकरण हो गया।

नारी जीवन की चरमोत्कर्ष अवस्था आर्यिका दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में ‘क्षुल्लिका वीरमती’ के रूप में दीक्षित हो गई। सन् 1955 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा ‘क्षुल्लिका वीरमती’ ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में ‘वैशाख कृष्णा दूज’ को माधोराजपुरा (जयपुर-राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके “आर्यिका ज्ञानमती” नाम प्राप्त किया।

2. **अध्ययन और अध्यापन**—ज्ञानप्राप्ति की पिपासा माता ज्ञानमती जी के रोम-रोम में प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरी थी। दीक्षा लेते ही स्वाध्याय-मनन-चिंतन की धारा में ही उन्होंने स्वयं को निबद्ध कर लिया। ज्ञान प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्रोत बना-संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को जैनागम का तलस्पर्शी अध्यापन। ‘कातंत्र रूपमाला’ रूपी बीज से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधना रूप वृक्ष प्रस्फुटित हुआ, जिस पर जो पत्ते, फूल-फल इत्यादि लगे, उन्होंने समस्त संसार को सुवासित कर दिया। गोम्मटसार, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड, अष्टसहस्री, तत्त्वार्थराजवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, अनगारधर्माभूत, मूलाचार, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों को अपनी शिष्याओं और संघस्थ साधुओं को पढ़ा-पढ़ाकर आपने अल्प समय में ही विस्तृत ज्ञानार्जन कर लिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार हो गया।

3. **लेखनी का प्रारंभीकरण संस्कृत भाषा से**—भगवान महावीर के पश्चात् 2600 वर्ष के जिस इतिहास में जैन साध्वियों के द्वारा शास्त्र लेखन की कोई मिसाल दृष्टिगोचर नहीं होती थी, वह इतिहास जागृत हो उठा जब क्षुल्लिका वीरमती जी ने सन् 1954 में सहस्रनाम के 1008 मंत्रों से अपनी लेखनी का प्रारंभ किया। यही मंत्र सरस्वती माता का वरदहस्त बनकर पूज्य माताजी की लेखनी को ऊँचाइयों की सीमा तक ले गये। सन् 1969-70 में न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ ‘अष्टसहस्री’ के हिन्दी अनुवाद ने उनकी अद्वितीय विद्वत्ता को संसार के सामने उजागर कर

दिया। कितने ही ग्रंथों की संस्कृत टीका, कितनी ही टीकाओं के हिंदी अनुवाद, संस्कृत एवं हिन्दी में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना मिलकर आज लगभग 250 से भी अधिक संख्या हो चुकी है। पूज्य माताजी द्वारा लिखित समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह-रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास, बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

अध्यात्म, व्याकरण, न्याय, सिद्धांत, बाल साहित्य, उपन्यास, चारों अनुयोगोंरूप विविध विधाओं के अतिरिक्त पूज्य माताजी की लेखनी से विपुल भक्ति साहित्य उद्भूत हुआ है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान इत्यादि अनेकानेक भक्ति विधानों ने देश के कोने-कोने में जिनेन्द्र भक्ति की जो धारा प्रवाहित की है, वह अतुलनीय है। पूज्य माताजी का चिंतन एवं लेखन पूर्णतया जैन आगम से संबद्ध है, यह उनकी महान विशेषता है।

धन्य हैं ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

4. **सिद्धांत चक्रेश्वरी**-पूज्य माताजी ने जैनशासन के सर्वप्रथम सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' की सोलहों पुस्तकों के सूत्रों की संस्कृत टीका 'सिद्धांत चिंतामणि' का लेखन करके महान कीर्तिमान स्थापित किया है। क्रम-क्रम से हिन्दी टीका सहित इन पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य चल रहा है। आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने जिस प्रकार छह खण्डरूप द्वादशांगरूप जिनवाणी को परिपूर्ण आत्मसात करके साररूप में द्रव्य संग्रह, गोमटसार, लब्धिसार इत्यादि ग्रंथ अपनी लेखनी से प्रसवित किये थे, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी की माता ज्ञानमती जी ने समस्त उपलब्ध जैनागम का गहन अध्ययन-मनन-चिंतन करके इस सिद्धांतचिंतामणिरूप संस्कृत टीका लेखन के महत्तम कार्य से 'सिद्धांत चक्रेश्वरी' के पद को साकार कर दिया है। आचार्य श्री वीरसेन स्वामी द्वारा 1000 वर्ष पूर्व लिखित 'धवलाटीका' के पश्चात् इस महान ग्रंथ की सरल टीका लेखन का कार्य प्रथम बार हुआ है।

5. **शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर**-जैन सिद्धांतों का मर्म विद्वत् वर्ग समझ सके, इस भावना से कितने ही शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणास्वरूप किया गया। सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास के मध्य 'जैन ज्योतिर्लोक' पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी द्वारा 'जैन भूगोल एवं खगोल' का विशेष ज्ञान विद्वत् वर्ग को कराया गया। अक्टूबर सन् 1978 में हस्तिनापुर में पं. मखनलाल जी शास्त्री, पं. मोतीचंद जी कोठारी, डा. लाल बहादुर शास्त्री सहित जैन समाज के उच्चकोटि के लगभग 100 विद्वानों का विद्वत् प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने विद्वत्समुदाय को यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया। समय-समय पर आज तक यह शृंखला चल रही है।

6. **राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार**-सन् 1985 में 'जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ, पुनः अनेक संगोष्ठियाँ सम्पन्न होती रहीं और सन् 1998 में 'भगवान् ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के भव्य आयोजन द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों से पथारे कुलपतियों को भगवान् ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेता पुरुष के रूप में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। 11 जून 2000 को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए विशेष दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) तक पहुँचाये गये। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य सेमिनार भी समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं, जिनके प्रतिफल में देश के समक्ष समय-समय पर साहित्यिक कृतियाँ (Proceedings) प्रस्तुत हो चुकी हैं।

7. **दिगम्बर समाज की साध्वी को प्रथम बार डी.लिट्. की उपाधि प्रदान कर विश्वविद्यालय भी गौरवान्वित हुआ**-किसी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में पारम्परिक डिग्रियों को प्राप्त किये बिना मात्र स्वयं के धार्मिक अध्ययन के बल पर विदुषी माताजी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वत्ता के सम्मान हेतु डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा 5 फरवरी 1995 को डी.लिट्.

की मानद उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया तथा दिगम्बर जैन साधु-साध्वी परम्परा में पूज्य माताजी यह उपाधि प्राप्त करने वाली प्रथम व्यक्तित्व बन गई। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2012 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

इसी प्रकार से समय-समय पर विभिन्न आचार्यों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी को न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख, वात्सल्यमूर्ति, तीर्थोद्धारिका, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है, किन्तु पूज्य माताजी इन सभी उपाधियों से निस्पृह होकर अपनी आत्मसाधना को प्रमुखता देते हुए निर्दोष आर्यिका चर्या में निमग्न रहने का ही अपना मुख्य लक्ष्य रखती हैं।

8. पूज्य माताजी की प्रेरणा से त्याग में बढ़े कदमत्यागमार्ग में अग्रेसर सम्यग्दृष्टी जीव की यह विशेषता रहती है कि वह संसार परिभ्रमण से आक्रान्त अन्य भव्यजीवों को भी मोक्षमार्ग का पथिक बनाने हेतु विशेषरूप से प्रयासरत रहता है। इसी भावना की परिपुष्टि करते हुए पूज्य माताजी ने अनेकानेक शिष्यशिष्याओं का सुजन किया।

संघस्थ साधुओं-मुनिजनों एवं आर्यिकाओं को अध्ययन कराते हुए सन् 1956-57 में ब्र. राजमल जी को राजवार्तिक आदि अनेक ग्रंथों का अध्ययन कराकर पूज्य माताजी ने उन्हें मुनिदीक्षा लेने की प्रेरणा प्रदान की। पुनश्च ब्र. राजमल जी कालांतर में आचार्य अजितसागर जी महाराज के रूप में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में चतुर्थ पट्टाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

सन् 1967 में सनावद चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने ब्र. मोतीचंद एवं युवक यशवंत कुमार को घर से निकाला, उन्हें खूब विद्याध्ययन कराया तथा यशवंत कुमार को मुनिदीक्षा दिलवायी, जो वर्तमान में आचार्यश्री वर्धमानसागर के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। ब्र. मोतीचंद जी भी क्षुल्लक मोतीसागर बनकर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के प्रथम पीठाधीश के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

वर्तमान पट्टाचार्यश्री अभिनंदनसागर जी महाराज ने भी पूज्य माताजी से राजवार्तिक, गोमटसार आदि ग्रंथों का अध्ययन किया था। मुनि श्री भव्यसागर जी महाराज, मुनि श्री संभवसागर जी महाराज इत्यादि ने भी पूज्य माताजी से विद्याध्ययन किया तथा उनकी प्रेरणा से ही मुनि दीक्षा प्राप्त की। वर्तमान में पूज्य माताजी के अनन्य शिष्य स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी अत्यंत कर्मठ व्यक्तित्व के रूप में समस्त समाज में प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

आर्यिका माताओं की शृंखला में आर्यिका श्री पद्मावती माताजी, आर्यिका श्री जिनमती माताजी, आर्यिका श्री आदिमती माताजी, आर्यिका श्री श्रेष्ठमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री श्रुतमती माताजी, मैं स्वयं (आर्यिका चन्दनामती) तथा आर्यिका श्री सम्पेदशिखरमती माताजी, आर्यिका श्री कैलाशमती माताजी आदि अन्य कई माताजी पूज्य माताजी से प्राप्त वैराग्यमयी संस्कारों एवं अध्यापन का ही प्रतिफल हैं। पूज्य माताजी से सर्वांगीण ग्रंथों का अध्ययन करके पूज्य जिनमती माताजी ने प्रमेयकमलमार्तण्ड, पूज्य आदिमती माताजी ने गोमटसार कर्मकाण्ड का हिन्दी अनुवाद किया है। मुझे भी षट्खण्डागम एवं अन्य महान ग्रंथों की हिन्दी टीका लिखने का सुअवसर पूज्य माताजी की अनुकम्पा से प्राप्त हो रहा है।

60 वर्षों की सुदीर्घ अवधि में कितने ही भव्य जीवों ने पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत, पंच अणुव्रत, शक्ति अनुसार प्रतिमाँ इत्यादि ग्रहण करके संयम के मार्ग को आत्मसात किया है। वर्तमान में पूज्य माताजी के साक्षात् सानिध्य में रहकर अनेक ब्रह्मचारिणी बहनें त्यागमार्ग में संलग्न हैं।

9. तीर्थ विकास की भावना-तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों एवं विशेष रूप से जन्मभूमियों के विकास की ओर पूज्य माताजी की विशेष आंतरिक रुचि सदा से रही है। पूज्य माताजी का कहना है कि हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये कल्याणक भूमियाँ हमारी संस्कृति की महान धरोहर हैं अतः इनका संरक्षण-संवर्धन-विकास अत्यंत आवश्यक है।

सर्वप्रथम **भगवान शांतिनाथ, कुन्धुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि 'हस्तिनापुर'** में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' आज विश्व के मानस पटल पर अंकित हो गयी है, उ.प्र. सरकार

के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए उसे एक अतुलनीय 'मानव निर्मित स्वर्ग' (A Man Made Heaven of Unparallel Superlatives And Natural Wonders) की संज्ञा प्रदान की है। सन् 1993 से 1995 तक शाश्वत जन्मभूमि 'अयोध्या' में 'समवसरण मंदिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मंदिर' का निर्माण करवाकर उसका विश्वव्यापी प्रचार, अकलूज (महाराष्ट्र) में नवदेवता मंदिर निर्माण की प्रेरणा, सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम, प्रीत विहार-दिल्ली में कमलमंदिर, मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में सहस्रकूट कमल मंदिर, अहिच्छत्र में ग्यारह शिखर वाला तीस चौबीसी मंदिर और भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की ही प्रेरणा के प्रतिफल हैं।

कितने ही अन्य स्थानों पर भी जैसे-**खैरवाड़ा** में कैलाशपर्वत निर्माण की प्रेरणा, **पिड़ावा** में समवसरण रचना की प्रेरणा, **सोलापुर (महा.)** में भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा की स्थापना, **श्री महावीर जी के शांतिवीर नगर** में मंदारवृक्ष की स्थापना, **अतिशयक्षेत्र श्री त्रिलोकपुर** में पारिजातवृक्ष की स्थापना, **केकड़ी (राज.)** में सम्मेशिखर की रचना आदि अनेकानेक निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशन द्वारा सम्पन्न हुए और हो रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी की **जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)** के विकास हेतु भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ, भगवान महावीर की विशाल खड्गासन प्रतिमा सहित विश्वशांति महावीर मंदिर, नवग्रह शांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर एवं नंदावर्त महल आदि अनेक निर्माण आपकी प्रेरणा से इस क्षेत्र पर हुए हैं तथा कुण्डलपुर तीर्थ विश्वभर के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि '**राजगृही**' में 'मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर' एवं विपुलाचल पर्वत की तलहटी में मानस्तंभ रचना, भगवान महावीर की निर्वाणस्थली **पावापुरी** में जलमंदिर के समक्ष पाण्डुकशिला परिसर में भगवान की खड्गासन प्रतिमा सहित 'भगवान महावीर जिनमंदिर', गौतम गणधर स्वामी की निर्वाणस्थली **गुणावां जी** में गौतम स्वामी की खड्गासन प्रतिमा सहित जिनमंदिर, **श्री सम्मेशिखर जी** में भगवान ऋषभदेव मंदिर इत्यादि समस्त निर्माण भी पूज्य माताजी की संप्रेरणा से ही सम्पन्न हुए हैं।

वर्तमान में तीर्थकर जन्मभूमि विकास की शृंखला में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि **काकंदी** में 'श्री पुष्पदंतनाथ जिनमंदिर' का निर्माणकार्य पूर्ण होकर उसमें भगवान पुष्पदंतनाथ की विशाल सवा 9 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान हो चुकी हैं, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जून 2010 में सम्पन्न हुई और अब इस उपेक्षित जन्मभूमि का परिचय सभी भक्तों को प्राप्त हो रहा है।

तीर्थकरों की शाश्वत जन्मभूमि **अयोध्या** में वर्तमानकालीन वहाँ जन्में पाँच तीर्थकरों की जन्मभूमि की टोकों पर जिनमंदिर निर्माण की प्रेरणा प्रदान कर आपने संस्कृति को जीवन्त करने का अभूतपूर्व प्रयास किया है। उस शृंखला में प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव की टोंक पर सुन्दर कलात्मक मंदिर बनकर उसमें सवा चार फुट पद्मासन श्वेत प्रतिमा विराजमान हुई हैं तथा सरयू नदी के तट पर भगवान अनन्तनाथ के मंदिर का शिलान्यास होकर निर्माणकार्य चल रहा है। इसी प्रकार क्रमशः अन्य टोकों पर भी मंदिरों के निर्माण की योजना भी चल रही है।

उल्लेखनीय है कि पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षास्थल-**माधोराजपुरा (राज.)** में भी 'गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ' के विकास का कार्य सम्पन्न किया जा चुका है। यहाँ सुन्दर कृत्रिम पर्वत का निर्माण करके 15 फुट उत्तुंग काले पाषाण वाली भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा एवं चौबीसी विराजमान की गई हैं। इस तीर्थ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 21 नवम्बर से 26 नवम्बर 2010 तक पीठाधीश्वर क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के निर्देशन में विशेष महोत्सवपूर्वक सम्पन्न हुई है।

इसी शृंखला में अतिशय क्षेत्र **श्री महावीर जी (राज.)** में पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से शांतिवीर नगर के निकट स्थित महावीर धाम परिसर में **पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर** का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। यहाँ पर पाँचों बालयति भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करके पृथक् वेदियों में पद्मावती, क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी विराजमान की गई हैं। संस्थान द्वारा उक्त जिनमंदिर का पंचकल्याणक दिनांक 29 जनवरी से 2 फरवरी 2012 तक सानंद सम्पन्न किया गया।

विशेष : तेरहद्वीप रचना, तीर्थकरत्रय प्रतिमा एवं तीनलोक रचना-

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थ के विकास की अद्वितीयता को अमरता प्रदान करने वाली इन रचनाओं का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से इतिहास में प्रथम बार हुआ। अप्रैल सन् 2007 में स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। विश्व में प्रथम बार निर्मित इस रचना में विराजमान 2127 जिनप्रतिमाओं के दर्शन करके लोग इच्छित फल की प्राप्ति करते हैं। इसके अतिरिक्त हस्तिनापुर में जन्मे भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमाओं एवं 56 फुट उत्तुंग निर्मित तीनलोक रचना की जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फरवरी सन् 2010 में हुई जो हस्तिनापुर के अतिशय में चार चाँद लगा रही हैं।

10. विश्व में अनोखी 108 फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा-विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के रूप में 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का कार्य मांगीतुंगी (महा.) के पर्वत पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से द्रुतगति से चल रहा है। युगों-युगों तक जिनशासन की महिमा को विकसित करने वाली यह प्रतिमा जैन संस्कृति के विशाल व्यक्तित्व का परिचय भी जनमानस को प्रदान करेगी।

11. शिरडी (महाराष्ट्र) में ज्ञानतीर्थ-शिरडी (महाराष्ट्र) को जैन संस्कृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु वहाँ पर 'ज्ञानतीर्थ' के निर्माण की योजना मूर्त रूप ले रही है, जिसमें पूज्य माताजी के निर्देशानुसार भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा विराजमान करके विशेष निर्माण सम्पन्न किया जा रहा है।

12. जृम्भिका तीर्थ विकास की प्रेरणा-भगवान महावीर स्वामी की कैवल्य भूमि जृम्भिका जो आज बिहार प्रान्त में जमुई के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ एक नूतन भूमि पर जृम्भिका तीर्थ का निर्माण प्रस्तावित है, जो शीघ्र ही भक्तों के तीर्थयात्रा की श्रेणी में आएगा।

13. धर्मप्रभावना के विविध आयाम-जम्बूद्वीप रचना के निर्माण का प्रमुख लक्ष्य लेकर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' नामक संस्था का राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में गठन किया गया। इसी संस्थान ने विविध धर्मप्रभावना के कार्यों का निष्पादन किया है। संस्थान स्थित 'वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला' द्वारा लाखों की संख्या में ग्रंथ प्रकाशन, चारों अनुयोगों के ज्ञान से समन्वित 'सम्यग्ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन, णमोकार महामंत्र बैंक इत्यादि कितनी ही कार्ययोजनाएँ जिनशासन की कीर्ति को निरंतर प्रसारित कर रही हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राजधानी दिल्ली से उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति' ने तीन वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया और अंत में यह ज्योति अखण्डरूप से तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री-श्री पी.वी. नरसिंंहाराव द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित कर दी गयी। इसी प्रकार अप्रैल सन् 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन किया, जो समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ पर निर्मित 'समवसरण मंदिर' में स्थापित होकर युगों-युगों तक के लिए भगवान ऋषभदेव के वास्तविक समवसरण की याद दिला रहा है। भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) से सन् 2003 में 'भगवान महावीर ज्योति रथ' का विविध प्रांतों में सफल प्रवर्तन भी इसी शृंखला की विशिष्ट कड़ी है।

जैनधर्म की प्राचीनता तथा भगवान ऋषभदेव के नाम एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य माताजी ने सन् 1997 में राजधानी दिल्ली में विशाल 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' आयोजित कराया, जिसका झण्डारोहण पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने किया एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह तथा श्रीमती सुषमा स्वराज आदि अनेक कैबिनेट मंत्रियों ने उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया। साथ ही 'भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती वर्ष' (सन् 1997-1998 में) तथा 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' (सन् 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित) भी पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा विविध धर्मप्रभावना के कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुए। विभिन्न टी.वी. चैनलों द्वारा पूज्य माताजी के 'तीर्थंकर जीवन दर्शन (सचित्र)' एवं अन्य विषयों पर प्रभावक प्रवचन लम्बे समय तक प्रसारित हुए एवं हो रहे हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन' अपनी सैकड़ों ईकाइयों द्वारा दिगम्बर जैन समाज की नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों हेतु संगठित कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य धर्मप्रभावना के कार्य पूज्य माताजी ने सम्पन्न किये हैं जिनका यहाँ लेखन तो संभव

नहीं है, किन्तु आज पूरा समाज उनके कार्यकलापों से परिचित होकर उन्हें कर्मठता की मूर्ति के रूप में पहचानता है।

14. संघर्ष विजेत्री-पूज्य माताजी ने प्रारंभ से अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया- प्रत्येक कार्य आगमानुकूल ही करना। पुनः उन कार्यों के निष्पादन में जो भी विघ्न आते हैं, उन्हें बहुत ही शांतिपूर्वक झेलकर पूरी तन्मयता के साथ उस कार्य को परिपूर्ण करना उनकी विशेषता रही है। उनका पूरा जीवन आर्ष परम्परा का संरक्षण करते हुए अपने मूलगुणों में बाधा न आने देकर जिनधर्म की अधिकाधिक प्रभावना के साथ व्यतीत हुआ है।

15. भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का आयोजन-23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में 6 जनवरी 2005 को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का उद्घाटन किया गया। भगवान की वेवलज्ञान कल्याणक भूमि 'अहिच्छत्र', निर्वाणभूमि 'श्री सम्मदेशिखर जी' इत्यादि अनेकानेक तीर्थों पर विविध आयेछनों के साथ यह वर्ष मनाया गया। वर्ष 2006 को "सम्मदेशिखर वर्ष" के रूप में मनाने की प्रेरणा पूज्य माताजी ने प्रदान की, ताकि तन-मन-धन से दिगम्बर जैन समाज अपने महान तीर्थराज 'श्री सम्मदेशिखर जी' के प्रति समर्पित हो सेवा पुनः दिसम्बर 2007 में अहिच्छत्र में आयोजित 'सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक' के साथ इस त्रिवर्षीय महोत्सव का समापन किया गया।

16. शताब्दी का अभूतपूर्व अवसर : दीक्षा स्वर्ण जयंती वैशाख कृष्ण दूज, वी.नि.सं. 2532 अर्थात् 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण करने वाली पूज्य माताजी वर्तमानदिगम्बर जैन साधु परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित होने के गौरव से युक्त होकर हम सभी के लिए अतिशयकारी प्राचीनान्निमा के सदृश बन गई। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 14 से 16 अप्रैल 2006 तक 'गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'का भव्य आयोजन करके समस्त समाज ने पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित की।

17. अमृतमय हों वर्ष तुम्हारे : हीरक जयंती महोत्सव-जिनकी दीर्घकालिक तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है उससे अधिक तो पूज्य माताजी की दीक्षा आयु है, अर्थात् 18 वर्ष की उम्र से त्याग मार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि-शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर उस त्यागमयी जीवन के 59 वर्ष भी उन्होंने निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण किये हैं। इसीलिए इनके 75वें जन्मदिवस पर 12 से 14 अक्टूबर 2008 को राष्ट्रीय स्तर पर हीरक जयंती महोत्सव मनाया गया।

18. विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया राष्ट्रपति जी ने-21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ। पुनः सन् 2009 "शांति वर्ष" में पूरे देश में विश्व की शांति के लिए धार्मिक अनुष्ठान एवं संगोष्ठियों के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

19. 'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष' मनाने की प्रेरणा-बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के महान उपकारों से जन-जन को परिचित कराने के उद्देश्य से पूज्य माताजी ने वर्ष 2010 को "प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष" के रूप में मनाने की प्रेरणा समस्त समाज को प्रदान की। इस वर्ष का उद्घाटन ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में भगवान शांतिनाथ जन्म-दीक्षा एवं निर्वाणकल्याणक के शुभ दिवस किया गया तथा ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 31 मई 2011 तक यह वर्ष पूरे देश के विभिन्न अंचलों में अनेक धर्मप्रभावनात्मक कार्यक्रमों के साथ विभिन्न आयोजनोंपूर्वक मनाया गया है।

20. प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष मनाने की प्रेरणा-वर्तमान में शरदपूर्णिमा-2011 के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, जो पूज्य माताजी के दीक्षा गुरु भी हैं, का वर्ष मनाने की घोषणा की है अतः यह वर्ष समाज द्वारा विभिन्न आयोजन पूर्वक सानंद मनाया जा रहा है, जो शरदपूर्णिमा-2012 तक मनाया जायेगा।

ऐसी महान चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में भावभीना कोटिशः नमन है तथा भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें शताब्दी महोत्सव भी मनाने का लाभ प्राप्त हो तथा आपके द्वारा नया-नया साहित्य जनता को प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना है।

एक अद्वितीय जैन केन्द्र दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी (अध्यक्ष)

राजधानी दिल्ली से 110 किमी. दूर उत्तरप्रदेश के जिला मेरठ स्थित पौराणिक तीर्थ हस्तिनापुर में सन् 1974 से 'जम्बूद्वीप' नाम से एक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र अवस्थित है। 200 फुट के व्यास में निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' के अन्दर हल्के गुलाबी संगमरमर से निर्मित 101 फुट ऊँचे **सुमेरु पर्वत** की शोभा आज प्रत्येक व्यक्ति के मन को आकर्षित करती है।

प्राचीन जैन साहित्य एवं भूगोल के परिचायक, वैज्ञानिकों के लिए शोध केन्द्र, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए पवित्र स्थान, मानसिक शांति एवं जिनेन्द्र भगवान की पूजन-भक्ति के सम्पूर्ण साधनों तथा समस्त आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सहित इस अनुपम तीर्थ की जनक संस्था का नाम है-**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान (रजि.)**। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से 1972 में इस संस्थान की स्थापना हुई। दिगम्बर जैन इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्मोग्राफिक रिसर्च (**Digambar Jain Institute of Cosmographic Research**) के नाम से प्रसिद्ध इस संस्थान का आधारभूत लक्ष्य था-जम्बूद्वीप का निर्माण और यह जम्बूद्वीप ही अंततः संस्थान का मुख्य कार्यालय बन गया।

जंबूद्वीप की 30 एकड़ पवित्र भूमि पर संस्थान के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/रचनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है-

1. **जंबूद्वीप रचना**-जिनेन्द्र भगवान की 207 प्रतिमाओं से पावन भारतीय शिल्प और जैन भूगोल का अद्वितीय उदाहरण, आधुनिक आकर्षणों-बिजली के फौवारे, नौका-विहार इत्यादि सहित।

2. **कमल मंदिर**-भगवान महावीर की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं।

3. **ध्यान मंदिर**-24 तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं सहित 'हीं' रचना इस मंदिर में विराजमान हैं, जो कि 'ध्यान' (Meditation) करने हेतु उत्तमोत्तम माध्यम हैं।

4. **त्रिमूर्ति मंदिर**-भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की खड्गासन प्रतिमाओं से इस मंदिर का नाम सार्थक है। कमल पर विराजमान भगवान नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ से इस मंदिर की शोभा द्विगुणित हो गयी है।

5. **वासुपूज्य मंदिर**-इस मंदिर में 12वें तीर्थंकर-वासुपूज्य स्वामी की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं।

6. **शांतिनाथ मंदिर**-जिन भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकों से हस्तिनापुर की भूमि परम-पावन हुई है, उन शांति-कुंथु और अरहनाथ भगवन्तों की खड्गासन प्रतिमाएँ इस मंदिर में विराजमान हैं।

7. **ॐ मंदिर**-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेश्वरों की प्रतिमाओं सहित ॐ (ओम) रचना इस मंदिर में विराजित है।

8. **विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर**-इस मंदिर में विदेह क्षेत्र के विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बीस कमलों पर विराजमान हैं।

9. **सहस्रकूट मंदिर**-जिनेन्द्र भगवान की 1008 प्रतिमाओं सहित।

10. **भगवान ऋषभदेव मंदिर**-धातु निर्मित भगवान ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमा एवं अन्य जिन प्रतिमाओं सहित।

11. **भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ**-'भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' में निर्मित, भगवान के जीवन चरित्र को प्रदर्शित करने वाला, 8 प्रतिमाओं से समन्वित 31 फुट ऊँचा कीर्तिस्तंभ।

12. **तेरहद्वीप जिनालय**-इस मंदिर के अंदर मध्यलोक के तेरहद्वीपों की अकृत्रिम रचना का अति सुन्दरता के साथ दिग्दर्शन कराया गया है, जिसमें पंचमेरु पर्वतों के साथ-साथ कुल 2127 प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

13. **अष्टापद दिगम्बर जैन मंदिर**-इस मंदिर के अंदर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि अष्टापद-कैलाशपर्वत की आकर्षक प्रतिकृति विराजमान है। कैलाशपर्वत का ही दूसरा नाम अष्टापद है। 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इस प्रतिकृति के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाकर इसका उद्घाटन किया गया।

14. **नवग्रह शान्ति जिनमंदिर**-पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से उत्तर भारत में प्रथम बार निर्मित इस नवग्रहशान्ति जिनमंदिर में नवग्रह अरिष्ट निवारक नव तीर्थंकरों की धातु निर्मित सुन्दर प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जिनके दर्शन-पूजन करके भक्तगण अपने ग्रहों

की शांति करते हुए देखे जाते हैं।

15. **तीर्थकरत्रय की विशाल प्रतिमाएँ**—हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थकर श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ भगवान की 31-अ फुट की खड्गासन प्रतिमाएँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान हुई हैं, जिनका विशाल मंदिर भी प्रस्तावित है।

16. **तीनलोक की भव्य रचना**—त्रिलोकसार, तिलोयपण्णति आदि करणानुयोग ग्रंथों के अनुसार तीन लोक की सुन्दर रचना का निर्माण भी पूज्य माताजी की प्रेरणा का ही सुफल है। इसमें अत्याधुनिक सुविधा के लिए लिफ्ट लगाई गई है, जिससे सभी भक्तगण सिद्धशिला तक के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

17. **जम्बूद्वीप पुस्तकालय**—प्राचीन हस्तलिखित एवं प्रकाशित लगभग 15000 ग्रंथों एवं पुस्तकों के संग्रह सहित।

18. **जम्बूद्वीप औषधालय**

19. **ज्ञानमती कला मंदिरम्**—हस्तिनापुर के पौराणिक इतिहास को प्रदर्शित करने वाली झांकियों सहित।

20. **ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस**—विशेष कृत्रिम रेल, जिसमें चौबीसों तीर्थकरों की 16 जन्मभूमियों का विविध झांकियों एवं चित्रावली के माध्यम से मनमोहक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

21. **वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला**—1972 में संस्थापित इस ग्रंथमाला द्वारा अब तक लाखों की संख्या में लगभग 300 ग्रंथों एवं पुस्तकों के संस्करणों का प्रकाशन हो चुका है।

22. **सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका**—यह पत्रिका सन् 1974 से लगातार प्रकाशित हो रही है, जिसमें जैन शास्त्रों के सारस्व लेखों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संकलन एक स्थान पर प्राप्त होता है।

23. **राजा श्रेयांस भोजनशाला**—आने वाले दर्शनार्थियों को प्रतिदिन शुद्ध (जैनचर्या के अनुरूप) भोजन उपलब्ध कराने वाला यह दिगम्बर जैन समाज का प्रथम भोजनालय है, जहाँ एक साथ 500 लोग बैठकर भोजन कर सकते हैं।

24. **धर्मशालाएँ**—200 से अधिक फ्लैट, बंगले इत्यादि, जिनमें ठहरने संबंधी सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

25. **मनोरंजन के साधन**—तरह-तरह के झूले, बच्चों की रेल, हँसी के गोलगप्पे, नौका विहार, फौव्वारे, हरे-भरे लॉन, पूरे कैम्पस में घूमने के लिए ऐरावत हाथी (मोटर से संचालित), बिजली की आकर्षक व्यवस्था, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य इत्यादि बरबस ही दर्शनार्थियों को इस भव्य रचना की तुलना 'स्वर्ग' से करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा आयोजित सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम

अक्टूबर 1981-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर 'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार'।

31 अक्टूबर 1982-फिक्की ऑडिटोरियम-दिल्ली में 'जम्बूद्वीप सेमिनार' जिसका उद्घाटन श्री राजीव गांधी, तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा किया गया।

अप्रैल 1985-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, जिसका उद्घाटन उ.प्र. के तत्कालीन मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह द्वारा किया गया।

जून 1982 से अप्रैल 1985-लालकिला मैदान, दिल्ली से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा 4 जून, 1982 को पूरे देश में भ्रमण करने हेतु 'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति' रथ का उद्घाटन किया गया। जनसाधारण में अहिंसा, चारित्र-निर्माण तथा विश्व बन्धुत्व के संदेश का प्रचार-प्रसार करते हुए 1045 दिन तक देश भर में भ्रमण करने के पश्चात् यह ज्ञान ज्योति तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव (भूतपूर्व प्रधानमंत्री) द्वारा जम्बूद्वीप के मुख्य द्वार के समक्ष सदैव के लिए स्थापित कर दी गई।

1992-'अंतर्राष्ट्रीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी' का जंबूद्वीप स्थल पर श्री नेमीचंद जैन, विधायक (मध्यप्रदेश) की अध्यक्षता में आयोजन किया गया।

'जैन गणित' एवं 'चारित्र निर्माण' आदि विषयों पर हुई संगोष्ठियाँ मेरठ विश्वविद्यालय एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गईं।

1993-अयोध्या में अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता भगवान ऋषभदेव' विषय पर संगोष्ठी।

अक्टूबर 1995-मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय 'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी-95'।

मार्च-अप्रैल 1998-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 9 अप्रैल 1998 को तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली से देश भर में भ्रमण करने हेतु 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ' का उद्घाटन। 3 वर्ष तक देशभर में तीर्थकर भगवन्तों के

सर्वोदयी सिद्धांतों एवं जैनधर्म की प्राचीनता का प्रचार-प्रसार करने के पश्चात् यह समवसरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ (इलाहाबाद) में स्थापित कर दिया गया।

अक्टूबर 1998-जम्बूद्वीप स्थल पर 'राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन', जिसका उद्घाटन किया गया-स्वर्गीय श्री राजेश पायलट (तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा)।

फरवरी 2000-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में एक वर्ष तक चलने वाले 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' का उद्घाटन किया गया।

इस युग में जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव पर 1008 संगोष्ठियों की श्रृंखला, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभों का निर्माण तथा अन्य अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष के अंतर्गत आयोजित किये गये।

टोरण्टो, कनाडा, न्यूजर्सी आदि विदेश की भूमियों पर भी इन्हीं प्रेरणाओं के माध्यम से 4 फरवरी 2000 को निर्वाण महामहोत्सव मनाया गया।

जून 2000-जम्बूद्वीप स्थल पर 11 जून 2000 को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

फरवरी 2001-भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का नवनिर्माण। इस तीर्थ पर भगवान के दीक्षा कल्याणक के प्रतीकस्वरूप धातु के वटवृक्ष के नीचे ध्यान में लीन महायोगी ऋषभदेव की सवा पांच फुट उत्तुंग पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक के प्रतीकस्वरूप भगवान की चतुर्मुखी प्रतिमा सहित दिव्य समवसरण रचना तथा निर्वाण कल्याणक के प्रतीक स्वरूप 51 फुट उत्तुंग 'कैलाशपर्वत' की भव्य रचना पर भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग अत्यंत मनोहारी लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा तथा तीन चौबीसी के प्रतीक स्वरूप 72 जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। 'ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' भी स्थापित है। 4 से 8 फरवरी 2001 तक 'भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा' एवं 1008 महाकुंभों से कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित भगवान ऋषभदेव का 'महाकुंभमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम।

सन् 2003-2004-भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में 'नंदावर्त महल तीर्थ' का निर्माण। भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर और नंदावर्त महल (भगवान महावीर का जन्म महल) एवं उसमें स्थापित भगवान शांतिनाथ जिनालय इस तीर्थ के मुख्य आकर्षण हैं। महावीर की जन्मभूमि के प्रचार-प्रसार हेतु **भगवान महावीर ज्योति रथ** सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रवर्तन कर चुका है।

सन् 2005-2007-भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव-6 जनवरी 2005 को जन्मभूमि वाराणसी से इसका भव्य उद्घाटन होकर पूरे एक वर्ष तक (27 दिसम्बर 2005 तक) इसे विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया।

पुनः सन् 2006 में पूज्य माताजी ने भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि "सम्मेदशिखर वर्ष" घोषित किया तथा दिसम्बर 2007 में केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ सहस्राब्दि महोत्सव का राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करके 4 जनवरी 2008 को भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का समापन किया।

विशेषरूप से इस संस्थान द्वारा 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ससंध के सानिध्य में भारत गणतंत्र की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रपति जी अपने पति डॉ. देवीसिंह शेखावत के साथ सम्मेलन में पधारीं। कार्यक्रम में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री टी.वी. राजेश्वर तथा स्वास्थ्य मंत्री श्री अनंत कुमार मिश्रा भी पधारे। इसी अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा वर्ष 2009 को "शांति वर्ष" के रूप में मनाने की घोषणा की गई। यह 'शांति वर्ष-2009' वर्तमान में समस्त जैन समाज द्वारा भारत के विभिन्न प्रान्तों में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया गया।

सन् 2010 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से गठित "अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी" द्वारा भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकासकार्य सम्पन्न किया गया है। तीर्थ पर भगवान पुष्पदंतनाथ की सवा 9 फुट पद्मासन प्रतिमा सुन्दर जिनमंदिर में विराजमान होकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित हो चुकी हैं तथा भगवान पुष्पदंतनाथ कीर्तिस्तंभ तीर्थ की कीर्ति को दिग् दिगन्तव्यापी ख्याति प्राप्त कराने में निमित्तभूत है।

सन् 2012 में अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (राज.) में पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से शांतिवीर नगर के निकट स्थित महावीर धाम परिसर में पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। यहाँ पर पाँचों बालयति भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करके पृथक् वेदियों में पद्मावती, क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी विराजमान की गई हैं। संस्थान द्वारा उक्त जिनमंदिर का पंचकल्याणक दिनाँक 29 जनवरी से 2 फरवरी 2012 तक सानंद सम्पन्न किया गया है तथा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध

संस्थान के अन्तर्गत इस जैन मंदिर का संचालन सुचारु रूप से किया जा रहा है।

इस संस्थान के द्वारा समय-समय पर विविध पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते हैं। संस्थान के अद्भुत कार्यकलाप की श्रेणी में है-**णमोकार महामंत्र बैंक**, जहाँ प्रतिवर्ष श्रद्धालु भक्तों द्वारा लाखों की संख्या में णमोकार मंत्र लिखकर जमा कराए जाते हैं, तुमकूर (कर्नाटक) से एक करोड़ मंत्र एवं उदयपुर (राज.) से एक करोड़ मंत्र सन् 2006 में इस बैंक में जमा हुए अतः उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। करोड़ों महामंत्र विश्वशांति की किरणें प्रसारित करने में अतिशय धरोहरस्वरूप हैं।

संस्थान द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-सन् 1995 से प्रत्येक पाँच वर्ष में यह पुरस्कार जैन धर्म पर उच्चस्तरीय शोध तथा संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग हेतु किसी भी जैन विद्वान या समर्पित कार्यकर्ता को 1,00,000/- (एक लाख) रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति-पत्र इत्यादि के साथ प्रदान किया जाता था। अप्रैल 2006 में “गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव” के अवसर पर संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष इस पुरस्कार को देने का निर्णय लिया गया अतः अब यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी वरिष्ठ विद्वान अथवा विशिष्ट समाजसेवी को प्रदान किया जाता है।

आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-सन् 1999 में स्थापित 11,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप पुरस्कार-सन् 2000 में स्थापित 25,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

श्री छोटेलाल जैन पुरस्कार-सन् 2003 में स्थापित 11,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

नंदावर्त महल पुरस्कार-सन् 2004 से प्रारंभ 25000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप बाल प्रतिभा पुरस्कार-सन् 2010 से प्रारंभ 11000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त ‘भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष’ के अवसर पर घोषित ‘भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड’, ‘ब्राह्मी पुरस्कार’, ‘भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर पुरस्कार’, ‘गणिनी ज्ञानमती दीक्षा स्वर्ण जयंती पुरस्कार’ एवं ‘हीरक जयंती पुरस्कार’ भी संस्थान द्वारा प्रदान किये जा चुके हैं।

इस प्रकार यह संस्थान अपनी विभिन्न समर्पित कार्य योजनाओं द्वारा समाज की सेवा में प्रतिक्षण संलग्न है। मानसिक शांति, आध्यात्मिक विकास, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं अन्य अनेक लाभ एक साथ प्राप्त करने हेतु यह संस्थान जंबूद्वीप दर्शन के लिए आपको सादर आमंत्रित करता है।



वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत “वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला” की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारुहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)।
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.।
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली।
11. श्री बी.डी. मटनाइक, मुम्बई।
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.।
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कर्नाट प्लेस, नई दिल्ली।

परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकडियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरभ वाले), गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।

15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली।
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री जितेन्द्र कुमार सुनीता कोटड़िया, फ्लोरिडा (यू.एस.ए.)
20. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमर चंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)।
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की स्मृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापाबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्ला, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नलाल रामलाल जैन झुंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. स्व श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।

34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहतौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटारा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गौधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरण एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।

75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाइ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन "विमल" ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)



पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सामग्री

सामान	मात्रा	सामान	मात्रा
किराना सामग्री			
१. श्रीफल नारियल	१५०० नग	२८. जायफल	२० ग्राम
२. चावल	१०० किलो	२९. बुरादा सफेद चन्दन	१ किलो
३. गोला	१० किलो	३०. बुरादा लाल चंदन	१ किलो
४. गोला चिटक	७ किलो	३१. हवन सामग्री	३ किलो
५. बादाम	५ किलो	३२. धानी (चावल की खील)	२ किलो
६. किशमिश	२ किलो	३३. बतासा	३ किलो
७. छुआरा	१ किलो	३४. सिंदूर हनुमान जी वाला	५० ग्राम
८. चिरौंजी	१ किलो	३५. जनेऊ	५० नग
९. पिस्ता	५०० ग्राम	३६. बादाम रोगन तेल	१०० ग्राम
१०. अखरोट	२ किलो	३७. नमक डली	२५० ग्राम
११. छोटी इलायची	५०० ग्राम	३८. तिल तेल	५० ग्राम
१२. बड़ी इलायची	२ किलो	३९. सुपारी कटी	१०० ग्राम
१३. लौंग	२ किलो	४०. सौंफ बारीक	१०० ग्राम
१४. केसर	३० ग्राम	४१. मिश्री दाना	२०० ग्राम
१५. हरसिंगार फूल	२०० ग्राम	४२. कलावा गिट्टी (कानपुरी)	२० नग
१६. देशी घी	१० किलो	४३. माचिस	३ दर्जन
१७. बादाम गिरी	१ किलो	धान सामग्री	
१८. कपूर देशी	१ किलो	१. गेहूँ, चना, जौ, धान, मूंग, उड़द	५००-५०० ग्राम
१९. मखाना	२ किलो	२. तिल सफेद, तिल काले	२५०-२५० ग्राम
२०. काजू	१ किलो	जनरल सामग्री	
२१. हल्दी साबुत (छोटी)	१ किलो	१. रुई धुनी या पट्टी वाली	२ किलो
२२. सुपारी साबुत (छोटी)	२ किलो	२. रुई बत्ती	५ पैकेट
२३. धनिया साबुत	५०० ग्राम	३. मोटा सफेद कच्चा धागा	१ गिट्टी
२४. पीली सरसों	२ किलो	४. सफेद धागा पेचक	२ नग
२५. पीसी हल्दी	२५० ग्राम	५. सुई छोटी	१ पैकेट
२६. गुड़	५०० ग्राम	६. सुई बड़ी	२ नग
२७. जावित्री	२० ग्राम	७. सूजा	१ नग

सामान	मात्रा	सामान	मात्रा
८. १ रु. के सिक्के	२०१ नग	३८. सेफटी पिन	२५ पत्ते
९. २५ पैसे के सिक्के	२०१ नग	३९. कील छोटी, बड़ी	५० ग्राम
१०. डाब के आसन	५० नग	४०. खाली कैसेट	५ नग
११. चटाई	५० नग	४१. ताले	६ नग
१२. काँच के टुकड़, गोल, त्रिकोण, चौकोण आदि १० पैसे वाले साईज के	१० डिब्बे	४२. मोमबत्ती (५०० ग्राम)	१ पैकेट
१३. चमकी किरकरी	२५० ग्राम	४३. चँवर (लकड़ी वाले)	२० नग
१४. सजावट का सामान कण्डील आदि	५० पीस	सजावट आदि सामग्री	
१५. पैन कॉपी	६ सेट	१. डोरी सूत की (नाड़ा)	५०० ग्राम
१६. लेटर पैड	३ नग	२. कैंची बड़ी	१ नग
१७. जाप कार्ड	२०० नग	३. प्लास्टिक चाय छन्नी	७ नग
१८. मुकुट बड़े	२५ नग	४. स्टील की छन्नी	२ नग
१९. माला बड़ी	२५ नग	५. बच्चों के खिलौने गेंद आदि	२५ नग
२०. मुकुट छोटे	१५० नग	६. गुड्डा एक फुट वाला	१ नग
२१. माला (हार)	१५० नग	७. काँच का दर्पण १.५'x२'	१ नग
२२. सफेद मुकुट	८ नग	८. रंग गुलाल वाले सूखे लाल, नीला, पीला, हरा, गुलाबी	२-२ किलो
२३. सफेद माला	८ नग	९. सफेद मार्बल डस्ट, चूना पिसा	३-३ किलो
२४. चिमटी	२ नग	१०. रंग पानी वाले काला, हरा, लाल, पीला	५-५ ग्राम
२५. दर्पण छोटे	८ नग	११. चोक डिब्बा	१ नग
२६. चिमनी छोटी	२० नग	१२. ब्लेड	१ पैकेट
२७. गोटा सफेद	२० मीटर	१३. ध्वजा डोरी (७० फुट)	१ नग
२८. रंगीन पन्नियाँ	२५ नग	१४. गुलाब जल (२५० ग्राम)	१ शीशी
३०. रत्न	५०० ग्राम	१५. इत्र (स्प्रे वाला)	१ शीशी
३१. सितारे	१ किलो	१६. ट्रे बढ़िया	१ नग
३२. अंजन डिब्बी (काजल)	१ डिब्बी	१७. गुलदस्ता बड़े	२ नग
३३. अष्ट गंध	५० ग्राम	१८. प्लास्टिक बेल पत्ती पौधे	१० नग
३४. कार्ड शीट	१० नग	१९. श्रृंगारदान सामान सहित	१ नग
३५. ड्राईंग पिन	१ डिब्बी	२०. गोंद की डिब्बी	१०० ग्राम
३६. हथौड़ी	१ नग	२१. चुनरी प्रिंट कागज	१० सीट
३७. सफेद सीमेंट	२ किलो		

सामान	मात्रा	सामान	मात्रा
कपड़े का सामान			
१. बड़ी ध्वजा त्रिकोण (२.५ मी.)	२ नग	६. बड़े दीपक	५० नग
२. केसरिया रंग की छोटी ध्वजा (१ मीटर वाली)	५ नग	७. कुल्हड़	१२ नग
३. ध्वजा डेढ़ फुट वाली-काली, लाल, सफेद, पीली, हरी, नीली	३-३ नग	८. मिट्टी नर्सरी से	१ कट्टा
४. ध्वजा डेढ़ फुट वाली पंचरंगी	६ नग	धातु का सामान	
५. केसरिया ध्वजा २ फुट वाली	२५ नग	१. स्वर्ण सलाई एवं कटोरी	१-१ नग
६. चौकोर कपड़ा ८'x८'	१ नग	२. चाँदी डिब्बी मीडियम साइज	१ नग
७. मण्डल के चारों ओर का १८ इंच चौड़ा, कपड़ा लगभग ३३ फुट	१ नग	३. चाँदी का थाल	१ नग
८. केसरिया साटन	२ मीटर	४. चाँदी का कटोरा (१०० ग्राम जल)	१ नग
९. लाल साटन	२ मीटर	५. चाँदी के फूल (हल्के)	३० ग्राम
१०. मलमल कपड़ा	३ मीटर	६. चाँदी के सिक्के	७ नग
११. सफेद खादी	१ थान	७. असली रत्न	१२ नग
१२. लाल तूल	१ मीटर	८. नवरत्न पुड़िया	७ नग
१३. सनील कपड़ा	२ मीटर	९. भगवान के आभूषण-स्वर्ण की माला, मुकुट, कुण्डल, कंगना, भुजबंध, तगड़ी, अंगूठी	१-१ नग
१४. सफेद धोती-दुपट्टा	१० नग	१०. प्रतिमा विधिनायक ६" की	१ नग
१५. सफेद बनियान	१० नग	११. अष्टआयुध चाँदी के	१ सेट
१६. रुमाल	३५ नग	१२. सभी प्रतिमाओं के वस्त्र धोती, दुपट्टा, पगड़ी, मुकुट माला	१-१ सेट
१७. वंदनवार	२ नग	१३. इन्द्रों के वस्त्र-पूजन, धोती, दुपट्टा, बनियान आदि	१-१ सेट
१८. चंदोवा बड़ा ६'x६'	१ नग	१४. तीर्थंकर बालक वास्ते-छोटा गद्दा (सनिल के)	१ नग
१९. चंदोवा बड़ा ८'x८'	१ नग	१५. गोल तकिया (सनिल के)	३ नग
२०. चंदोवा छोटे ३'x३'	२ नग	आचार्य निमंत्रण का सामान	
२१. सर्वाण्ह देव 'कपड़े पर'	१ नग	१. धोती जोड़ा, कुर्ता, बनियान, अण्डरवियर, तौलिया, श्रीफल, पंचमेवा, नगद राशि, चाँदी की जपमाला	३-३ सेट
२२. भगवान के वस्त्र, धोती, कुर्ता, साफ़, पगड़ी ६" की प्रतिमा वास्ते ३ सेट		२. पुजारियों वास्ते-धोती, दुपट्टा, बनियान	६-६ सेट
मिट्टी का सामान			
१. कुण्डे बड़े (दही वाले)	१५ नग		
२. कलशी (१०० ग्राम जल वाली)	१३० नग		
३. भद्र कुंभ (बड़ा घड़ा) ६ इंच मुख वाला	१ नग		
४. छोटे घड़े (७ ली. जल वाले)	३ नग		
५. छोटे दीपक	१०० नग		

सामान	मात्रा	सामान	मात्रा
यंत्र सामग्री			
१. विनायक यंत्र	३ नग	७. बड़े डण्डे (१० फुट वाले)	५ नग
२. सिद्धचक्र यंत्र	३ नग	८. लकड़ी कोयला	१० किलो
३. सिद्धयंत्र, शातियंत्र, जलयंत्र, गंधयंत्र, सर्वसम्पत्तिकरयंत्र, निर्वाणयंत्र, गणधरवल्लय यंत्र, चौसठऋद्धि यंत्र, नयनोन्मीलन यंत्र, बोधिसमाधि यंत्र, सुरेन्द्र यंत्र, वर्धमान यंत्र, मोक्षमार्ग यंत्र, सर्वाणहदेव यंत्र	१-१ नग	९. चौकी नई २'x२'x१'६" (ऊँचाई)	१ नग
४. पूजन यंत्र, श्रुतस्कंध यंत्र	२-२ नग	१०. चौकी नई १'६"x१'६"x१'३"	१ नग
५. रक्षायंत्र	२० नग	११. पाटे छोटे	२५ नग
६. मातृकायंत्र	१० नग	१२. सिल बट्टा (नया)	१ सैट
७. सर्वसिद्धियंत्र	२ नग	१३. अष्टकोण शिला १३"	१ नग
८. पिच्छी (मयूर पंख)	१ नग	१४. षट्कोण शिला १३"	१ नग
९. कमण्डलु	१ नग	१५. अर्धचन्द्राकार शिला १३"	१ नग
१०. डाभ की कूची एवं माला	२-२ नग	१६. बाँस की डलिया छोटी	५ नग
११. डाभ के टुकड़े	१०० नग	१७. बाँस की डलिया बड़ी	३ नग
१२. अनार की कलम	१० नग	ताम्बे पीतल का सामान	
घर का शुद्ध सामान		१. कलश नारियल	१००८ नग
१. देशी घी	१०० ग्राम	२. कलश (वेदी शुद्धि, घटयात्रा वास्ते)	१०८ नग
२. बूरा (शुद्ध)	२०० ग्राम	३. कलश बड़े मण्डल वास्ते	६ नग
३. गेहूँ का सत्तू	१०० ग्राम	४. कलश मीडियम	१५ नग
४. नैवेद्य	५०० ग्राम	५. ध्वजा पाईप ३१' वाला	१ नग
५. गन्ने पत्ते सहित	५ नग	६. फावड़ा, हथौड़ी, सब्बल	१-१ लग
६. समुद्र, नदी, तीर्थ, पर्वत, शिखर जी, गिरनार जी आदि की मिट्टी	५०० ग्राम	७. दानपेटी (गोलक)	३ नग
लकड़ी, पत्थर का सामान		८. स्टील अलमारी सेफ	३ नग
१. चन्दन लकड़ी	२५० ग्राम	९. भगोना ३ किलो पानी वाला	१ नग
२. आम, पलास, खैर की लकड़ी	१० किलो	माता के श्रृंगार का सामान	
३. देवदार, पीपल, लकड़ी की पेटी	१० किलो	१. साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, माला, चैन, अंगूठी, बिछुआ, बिंदी, सिंदूर, मेंहदी, नथ, कुण्डल, चूड़ी, मंगलसूत्र, मांग बिंदी	२-२ नग
४. लकड़ी के चम्मच	३ नग	२. पलंग, गद्दा, तकिया, चादर, रजाई, बैडशीट	१ सेट
५. छोटे डण्डे (४ फुट वाले)	३ नग	मंदिर से प्राप्त	
६. बड़े डण्डे (७ फुट वाले)	१० नग	१. छत्र	३ नग
		२. चंवर	१० नग
		३. पूजन बर्तन सेट	५० सेट
		४. दीपक बड़े	२ नग
		५. दीप मंजूषा (पेटी)	२ नग

सामान	मात्रा	सामान	मात्रा
६. झारी (टोंटीदार)	२ नग	५. सहदेवी, गिलोय, शमी, शताबरी, माला, प्रियंगू, विष्णुकांता, इनका चूर्ण	५० ग्राम
७. घण्टा हाथ वाला	१ सेट	६. बेल, भिलावा, आम, लोंग, जायफल इन सबका चूर्ण	५० ग्राम
८. परात बड़ी	३ नग	७. पलास, बड़, पीपल, उंबर, आम, जामुन, खजूर इनकी छाल का चूर्ण	५० ग्राम
९. जल वास्ते घड़े	५ नग	८. कुमारी, सहदेवी, दूब, गिलोय, उडूसा, व्याघ्री, बला इनकी जड़ का चूर्ण	५० ग्राम
१०. जलोट अभिषेक वास्ते	१ नग	९. सफेद चंदन, वच कंकोल, इलायची, खस खस, लोंग जायफल, कपूर, दूब, इनका चूर्ण	५० ग्राम
११. चाँदी के कलश (अभिषेक वास्ते)	६ नग	१०. जामुन, आम, कुंदपुष्प, शमी, इनकी छाल का चूर्ण	५० ग्राम
१२. गैस भट्टी सिलेण्डर	१ सेट	११. पलाश, खादिर, आम, सहदेवी, हल्दी, दूब, बड़, बेल, कुंदपुष्प (महुआ) अहिनेत्र पाषाणभित शमी, बबूल, उंबर इनकी छाल का चूर्ण	५० ग्राम
१३. सिंहासन बड़े	२ नग	१२. इन्द्र वल्लिक, अपामार्ग, बड़, पलाश, लोंग, तिल, प्रियंगू, मूंग, सरसों, जौ, पद्म इनका चूर्ण	५० ग्राम
१४. सिंहासन छोटे	३ नग	१३. केसर, सफेद व लाल चंदन, हल्दी, जावित्री, लोंग, छोटी इलायची, कपूर, अगर-तगर का चूर्ण	५० ग्राम
१५. टेबल	२ नग	१४. केसर, अगर कपूर, हल्दी, चंदन, बालछड़ का चूर्ण	५० ग्राम
१६. बैच	२५ नग	१५. भस्म असली लोहा, पीतल, पारा, शीशा	१-१ ग्राम
१७. चौकी	१० नग	१६. सोना, चाँदी प्रत्येक भस्म	१-१ ग्राम
१८. चौकी पलासना	८ नग	१७. मुक्ता पिष्टी	१ ग्राम
१९. अष्टप्रातिहार्य	१ सेट		
२०. तखत	१० नग		
२१. टंकी स्टील की	३ नग		
२२. अष्टमंगल द्रव्य	१ सेट		
२३. पालना (झूला)	१ नग		
२४. गंधकुटी	१ नग		
२५. पालकी	१ नग		
२६. रस्सी बाल्टी	१ सेट		
२७. पाटे बड़े	१० सेट		
२८. सिगड़ी	१ नग		
२९. धोती, दुपट्टे (जन्माभिषेक वास्ते)	१०० सेट		
३०. गमले, पौध सहित	१० नग		
३१. टेबल लैम्प	१ नग		
औषधी सामग्री		पुस्तकें	
१. अष्टगंध	५० ग्राम	१. यागमण्डल विधान	१०० नग
२. सर्वौषधि	२०० ग्राम	२. पंचकल्याणक विधान	१०० नग
३. चम्पा, अशोक, पीपल, बकुल, बड़, कदेव, उदम्बर, आम, बेल, अर्जुन, इनके पत्तों का चूर्ण	५० ग्राम	३. वास्तुशान्ति विधान	५० नग
४. अगरू, दूब, सरसों, कुंद, मालती, पुष्प, तिल, जौ, तंदुल, समुद्र, फेन इन सबका चूर्ण	५० ग्राम	४. जिनवाणी	१०० नग

पंचकल्याणक के बाह्य दृश्य

प्रस्तुति—आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

(यहाँ पंचकल्याणक के सभी बाह्य दृश्य भगवान ऋषभदेव के आधार से हैं, जहाँ जिन तीर्थंकर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो रही हो, वहाँ उन तीर्थंकर का नाम, नगरी, माता-पिता आदि के नामों में परिवर्तन करके दृश्यों को प्रस्तुत करें।)

—सूत्रधार—

शुरू हुआ भाई शुरू हुआ, पंचकल्याणक शुरू हुआ।

आज गर्भ कल्याणक, कल जन्मकल्याणक, दीक्षा ले त्रिभुवन गुरु हुआ॥ शुरू हुआ॥

शुरू हुआ भाई शुरू हुआ.....॥

सुनो! सुनो! सुनो! मेरे प्यारे भाइयों, बहनों, माताओं, दोस्तों, बुजुर्गों, नन्हे-मुन्नों! सब सुनो!

जखूर आप सब यही सोच रहे होंगे ये नटखट राम आज क्या संदेशा लाए हैं? तो सुनो! आप सब जिस पवित्र धरती पर बैठे मेरी बातें सुन रहे हैं ना, उसका नाम है-अयोध्या यानी जिसे कोई योद्धा आज तक जीत न सका वह है अयोध्या।

अरे भाई! वैसे तो हम सब अपने नगर के पांडाल में बैठे हैं लेकिन चूँकि अयोध्या का दृश्य यहाँ दिखाया जा रहा है सो कह दिया अयोध्या, जानते हो, शाश्वत जन्मभूमि है यह अयोध्या। यहाँ पर आज से इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का पंचकल्याणक महोत्सव होने जा रहा है।

अब तक आप लोग यह जान ही गए होंगे कि पंचकल्याणक महोत्सव में क्या-क्या होता है? क्या कहा आपने? भगवान की मूर्ति की प्रतिष्ठा होती है! बिल्कुल ठीक कहा आपने! ये महोत्सव एक-दो दिन में नहीं समाप्त होगा, पूरे पाँच दिन चलेगा। हाँ! कहीं-कहीं तो यह महोत्सव ७-८ दिन तक भी चलता है।

एक बात बताऊँ भैया! यह प्रतिष्ठा महोत्सव एक बहुत ही पवित्र कार्य है इसमें पण्डित जी खूब सारे मंत्र पढ़-पढ़कर पत्थर की मूर्ति को भगवान बना देते हैं। जितनी ज्यादा विधि से प्रतिष्ठा की जाती है उतनी ही अधिक मूर्ति चमत्कारी हो जाती हैं, हाँ!

सुनो! सुनो! आज गर्भकल्याणक है ना! अभी थोड़ी देर में इन्द्र सभा, माता के सोलह सपने आदि सुन्दर-सुन्दर दृश्य दिखाए जाएँगे, आप लोग आराम से बैठ जाओ। अगर कहीं इधर-उधर जाओगे न, तो आपकी जगह चली जाएगी, फिर मुझसे कुछ मत कहना। अभी स्वर्ग से देवियाँ आकर माता की सेवा करेंगी, उनसे खूब अच्छे-अच्छे प्रश्न पूछेंगी और माता उनका उत्तर देंगी। भैया! मैं तो जखूर सुनूँगा, क्योंकि मुझे कुछ भी तो मालूम नहीं है आज माता के मुँह से सुनकर मेरा भी कुछ ज्ञान बढ़ जाएगा। और हाँ सुनो! कल सुबह खूब जल्दी आ जाना, कल तीर्थंकर भगवान का जन्मकल्याणक है, राजा के दरबार में खूब नृत्य-गीत होंगे, बड़ा मजा आएगा। और हाँ! राजा सबको रत्न बाटेंगे, सब लोग जखूर आना।

अच्छा तो अब मैं जाता हूँ, अब आप गर्भकल्याणक के अच्छे-अच्छे दृश्य देखो।

शुरू हुआ भाई.....(सूत्रधार चला जाता है, पर्दा गिरा दें)

१. गर्भकल्याणक

(मंच पर सामूहिक प्रार्थना का दृश्य)

पुरुदेव की वाणी अखिल विश्व में, अमृतकण बरसाये।

पुरुदेव की वाणी.....।टेक.।।

युग की आदी में ऋषभदेव ने, यहाँ पुण्य अवतार लिया।

माता मरुदेवी के आँगन में, उत्सव अपरम्पार हुआ।।

आये हैं इन्द्र सभी मिलकर, भक्ती से अति हरषाये।

पुरुदेव की वाणी.....।१।।

इस जम्बूद्वीप के मध्य सुदर्शन-मेरु सुवर्णमयी सुन्दर।

है एक लाख योजन ऊँचे पर, पांडुकशिला बनी मनहर।।

जिन शिशु को सुरपति ले जाकर, वहाँ पर अभिषेक रचाएँ।

पुरुदेव की वाणी.....।२।।

जो चन्द्रकिरण चंदन गंगाजल से भी है शीतल वाणी।

यह अनेकांतमय सत्य अहिंसा, धर्मरूप है जिनवाणी।।

तुम कर्णपुटों से पियो इसे, सब जन्म रोग नश जाये।।

पुरुदेव की वाणी.....।३।।

घट-घट का अज्ञान अंधेरा, उसको दूर भगाती है।

जन-जन के मानस मंदिर में, यह ज्ञान की ज्योति जलाती है।

तुम पूर्ण 'ज्ञानमती' प्रगट करो, जिससे अशेष दुःख जाये।

पुरुदेव की वाणी.....।४।।

(द्वितीय दृश्य)

स्वर्ग में सौधर्म इन्द्र की सुधर्मा सभा का दृश्य

(इन्द्र का आसन कम्पायमान)

(एक नृत्य)

स्थान—इन्द्रसभा

(सौधर्म इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठे हुए हैं। पास में अनेक देवगण बैठे हुए हैं। इन्द्रसभा लगी हुई है।)

इन्द्र—(प्रसन्न मुद्रा में) जय हो! तीर्थंकर भगवान की जय हो। हे इन्द्रों! हमें आज मध्यलोक चलना है।

शचि इन्द्राणी—स्वामिन! किसलिए?

इन्द्र—देवी! इसलिए कि जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में आज से छह महीने बाद तीर्थंकर भगवान स्वर्ग से मध्यलोक में अवतार लेने वाले हैं। अतः हे धनकुबेर! सुनो, आप वहाँ जाकर उस आर्यखण्ड की अयोध्या नगरी को इतनी सुन्दर सजा दो कि वह सुवर्णमयी दिखने लगे।

कुबेर—अहो हा! हमारे बहुत पुण्य का उदय आया है जो आज ऐसा पुण्य अवसर मिला है।

इन्द्र—हाँ! तीर्थकर प्रभु के कल्याणक मनाने का अवसर मिलना महान पुण्य का सुयोग है। हे धनपते! आप आज से ही वहाँ माता मरुदेवी के आँगन में उत्तम-उत्तम रत्नों की वर्षा शुरू कर दो।

कुबेर—(हाथ जोड़कर) जो आज्ञा आपकी।

(कुबेर द्वारा रत्नवृष्टि हेतु जाना)

(पर्दा गिरता है)

(तृतीय दृश्य)

(राजमहल में रत्नों की वृष्टि हो रही है, स्वर्ग से धनकुबेर अयोध्या नगरी में आकर उत्तम-उत्तम रत्नों की वर्षा कर रहा है। चारों ओर खुशी का वातावरण है। सभी लोग आपस में चर्चा कर रहे हैं।)

एक आदमी—देखो, देखो! चारों ओर कैसे रत्न बाँटे जा रहे हैं, हमारी अयोध्या नगरी कितनी सुन्दर लग रही है।

दूसरा—हाँ सो तो है! लेकिन भाई! यह तो बताओ कि ये रत्नवृष्टि क्यों हो रही है?

पहला—अरे भाई! कमाल है! तुम्हें यह भी नहीं मालूम! अपने महाराज नाभिराय हैं न! उनकी रानी मरुदेवी के तीर्थकरपुत्र उत्पन्न होने वाला है।

दूसरा—क्या कहा? पुत्र उत्पन्न होने वाला है! लेकिन इस व्यक्ति को कैसे मालूम हुआ? (धनकुबेर की ओर इशारा करते हुए)

पहला—ये कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। ये स्वर्ग से आए धनकुबेर हैं।

दूसरा—धनकुबेर! मुझे ठीक से बताओ।

पहला—सुनो! सौधर्मइन्द्र ने अपने अवधिज्ञान से सब कुछ जानकर इन कुबेर जी को यहाँ रत्नवृष्टि करने भेजा है।

दूसरा—अच्छा, तो ये बात है! हाँ भाई, आखिर भगवान जी जन्म लेने वाले हैं।

पहला—हाँ, अब से पन्द्रह महीने बाद हम भी तीर्थकर बालक को गोद में खिलायेंगे। (वहीं खड़ी एक स्त्री, जो कि अब तक सब सुन रही थी, चौंक पड़ी और बोली)

स्त्री—क्या कहा? पन्द्रह महीने बाद?

पुरुष—हाँ, अब से छह महीने बाद प्रभु गर्भ में आयेंगे पुनः नव महीने बाद जन्म लेंगे।

दूसरा पुरुष—तो क्या पन्द्रह महीने तक रोज ही ऐसे रत्नों की वर्षा होती रहेगी?

पहला पुरुष—हाँ भाई! यही तो तीर्थकर प्रभु की महिमा है।

तीसरा पुरुष—देखो! जन्म लेने से पहले ही जब इतना अतिशय है तो जन्म लेने के बाद तो कितना मजा आएगा।

(चतुर्थ दृश्य)

(महाराज नाभिराज का ८१ खन ऊँचा महल, रात्रि का पिछला प्रहर है। महारानी मरुदेवी शयनकक्ष में निद्रामग्न हैं। तभी पिछले प्रहर में रानी एक, दो नहीं पूरे सोलह स्वप्न देखती हैं मंच पर सोलह स्वप्नों को पेन्टिंग के चित्रों में दिखाया जाता है। यहीं पर प्रतिष्ठाचार्य पृष्ठ ४८ से माता के १६ स्वप्नों को पद्य में प्रस्तुत करें। देवियाँ उन्हें मधुर संगीत के साथ जगाती हैं।)

प्रातः प्रसन्नमुद्रा में उठकर हाथ जोड़कर प्रभु को नमस्कार करती हैं—

रानी मरुदेवी—ऊँ नमः सिद्धेभ्यः। णमो अरिहंताणं.....(आस-पास चारों ओर अष्ट दिक्कुमारियाँ खड़ी हुई हैं, रानी को प्रसन्नचित्त देखकर पूछती हैं।)

देवी—महारानी की जय हो! रानी जी! आज आप बहुत खुश लग रही हैं, क्या बात है?

महारानी—हाँ देवी! बात ही कुछ ऐसी है।

दूसरी देवी—(उत्सुकता से) जल्दी कहिए, महारानी जी!

महारानी—सुनो! आज रात्रि में मैंने सोलह स्वप्न देखे हैं।

देवियाँ—(चौककर एक साथ) क्या महारानी जी! सोलह स्वप्न देखे हैं आपने!

महारानी मरुदेवी—(हँसती हुई) हाँ, हाँ मैंने ठीक से गिने थे, पूरे सोलह सपने थे।

देवी—(हाथ जोड़कर) रानी जी, अब जल्दी से उन स्वप्नों के बारे में बता दीजिए।

महारानी मरुदेवी—इतनी आतुर मत होओ, सुमंगला! अभी स्नान वगैरह करके महाराज के पास चलते हैं, वहीं तुम भी सुन लेना।

(देवियाँ रानी को हंसी-खुशी स्नानादि करवाती हैं पुनः तैयार होकर महारानी दरबार में प्रवेश करती हैं)

(दरबार का दृश्य, राजा सिंहासन पर बैठे हैं प्रजाजन यथास्थान बैठे हैं, महारानी सखियों सहित प्रवेश करती हैं प्रजा के लोग अपने स्थान पर खड़े होकर महारानी का सम्मान करते हैं।)

सामूहिक स्वर—महारानी की जय हो! रानी मरुदेवी की जय हो!

(रानी अपने आसन पर बैठ जाती हैं, प्रजा के लोग भी यथास्थान बैठ जाते हैं)

महाराजा नाभिराय—कहिए महारानी जी! आप ठीक हैं न!

मरुदेवी—हाँ स्वामिन्! मैं बिल्कुल ठीक हूँ और आपकी कुशलता की कामना करती हूँ।

नाभिराय—आज कोई खास बात है क्या? आज सुबह-सुबह राजदरबार में आपका पधारना कैसे हुआ है?

मरुदेवी—हाँ स्वामी! बात ही कुछ ऐसी थी कि मुझे राजदरबार में सुबह-सुबह आना पड़ा।

नाभिराय—कहिय प्राणप्रिये! आप क्या कहना चाहती हैं?

मरुदेवी—(प्रसन्न मुद्रा में) प्राणनाथ! आज रात्रि में मैंने सपने देखे हैं।

नाभिराय—तो क्या हुआ देवी! सपने तो रोज सभी देखते हैं।

एक देवी—(बीच में ही) यही तो आपको बताने आई हैं ये। इन्होंने एक नहीं, दो नहीं पूरे सोलह सपने देखे हैं।

नाभिराय—(आश्चर्य से) सोलह सपने! जरा मैं भी तो सुनूँ उन सोलह स्वप्नों की कहानी!

मरुदेवी—हाँ महाराज! सुनिये! पहले स्वप्न में मैंने बहुत बड़ा सफेद ऐरावत हाथी देखा है, जो कि सुन्दर गर्जना कर रहा है।

नाभिराय—देवि! तुमने जो ऐरावत हाथी देखा है उसका फल यह है कि 'तुम त्रिभुवन के गुरु ऐसे तीर्थंकर पुत्र को जन्म दोगी।'

मरुदेवी—दूसरे स्वप्न में मैंने उत्तम बैल देखा है, जो कि अपने पदप्रहार से पृथ्वी को कँपा रहा है।

नाभिराय—स्वप्न में बैल के देखने से तुम्हारा पुत्र समस्त विश्व में श्रेष्ठ होगा।

मरुदेवी—तीसरे स्वप्न में मैंने पीली-पीली अयाल वाला उत्तम सिंह देखा है।

नाभिराय—देवि! स्वप्न में सिंह के देखने से तुम्हारा पुत्र अनंत बल से सहित होगा।

मरुदेवी—हे स्वामिन्! मैंने चौथे स्वप्न में लक्ष्मी को देखा है, जो कमल के आसन पर बैठी हैं और देवों के हाथी सुवर्ण कलशों से उसका अभिषेक कर रहे हैं।

नाभिराय—देवि! अभिषेक को प्राप्त होती हुई लक्ष्मी को देखने से वह पुत्र सुमेरु पर्वत के मस्तक पर देवों के द्वारा अभिषेक को प्राप्त होगा।

मरुदेवी—पाँचवें स्वप्न में सुन्दर और सुगंधित फूलों की दो मालाएँ देखी हैं।

नाभिराय—हे देवि! स्वप्न में मालाओं के देखने से तुम्हारा पुत्र सच्चे धर्मतीर्थ का चलाने वाला होगा।

मरुदेवी—छठे स्वप्न में पूर्ण चन्द्रमा देखा है, जिसको चारों तरफ से तारा मंडल घेरे हुए हैं और जिसकी पूर्ण

चाँदनी छिटक रही है।

नाभिराय—पूर्ण चन्द्रमा देखने से वह समस्त लोगों को परम आनंद देने वाला होगा।

मरुदेवी—सातवें स्वप्न में उगता हुआ सूर्य देखा है।

नाभिराय—देवि! तुम्हारा पुत्र भी सूर्य के समान देदीप्यमान प्रभा का धारक होगा।

मरुदेवी—स्वामिन्! आठवें स्वप्न में मैंने सुवर्ण के दो कलश देखे हैं जिन पर कमल रखे हुए हैं।

नाभिराय—प्रिये! दो कलशों के देखने से वह पुण्यरूप अनेक निधियों का स्वामी होगा।

मरुदेवी—नाथ! नवमें स्वप्न में मैंने कुमुद और कमलों से शोभायमान ऐसे तालाब में क्रीड़ा करती हुई दो मछलियाँ देखी हैं।

नाभिराय—देवि! मछलियों के देखने से सुख सरोवर में अवगाहन करने वाला होगा।

मरुदेवी—दशवें स्वप्न में सरोवर देखा है, जिसके पानी के ऊपर कमलों की केसर फैल जाने से ऐसा लगता था मानों पिघला हुआ सुवर्ण ही चमक रहा हो।

नाभिराय—इस तालाब के देखने से वह महापुरुष अनेक लक्षणों से शोभित होगा।

मरुदेवी—ग्यारहवें स्वप्न में मुझे ऐसा विशाल समुद्र दिखा है कि जो उठती हुई लहरों से मानों अट्टाहस कर रहा ह

नाभिराय—समुद्र के देखने से वह पुत्र अपने ज्ञान को पूर्ण कर केवलज्ञानी बनेगा।

मरुदेवी—बारहवें स्वप्न में मुझे ऐसा स्वर्णमयी सिंहासन दिखा है कि जिसमें अनेक प्रकार के चमकीले मणि जड़े हुए हैं।

नाभिराय—इस दिव्य सिंहासन के देखने से वह जगत् का गुरु होकर साम्राज्य को प्राप्त करेगा।

मरुदेवी—तेरहवें स्वप्न में मैंने स्वर्ण का विमान देखा है जो कि बहुमूल्य श्रेष्ठ रत्नों से देदीप्यमान हो रहा है।

नाभिराय—देवविमान देखने से वह स्वर्ग से अवतीर्ण होगा।

मरुदेवी—चौदहवें स्वप्न में मुझे पृथ्वी को भेदन कर आता हुआ नागेन्द्र भवन दिखा है।

नाभिराय—हे सुमुखि! नागेन्द्र भवन के देखने से वह पुत्र अवधिज्ञानरूपी लोचनों से सहित होगा।

मरुदेवी—पंद्रहवें स्वप्न में मैंने रत्नों की राशि देखी है, जिसकी किरणों से आकाश में इन्द्रधनुष की शोभा—सी बन गई थी।

नाभिराय—देवि! इन चमकते हुए रत्नों के ढेर के देखने से वह पुत्र अनेक गुणरत्नों की खान होगा।

मरुदेवी—हे देव! सोलहवें स्वप्न में मैंने जलती हुई प्रकाशमान धूमरहित अग्नि देखी।

नाभिराय—प्रिये! इस निर्धूम अग्नि के देखने से तुम्हारा पुत्र कर्मरूपी ईंधन को जलाने वाला होगा।

(इस प्रकार महारानी, महाराज को सोलह स्वप्नों के बारे में बताती हैं पुनः कहती हैं)

मरुदेवी—हे नाथ! स्वप्नों के अंत में मैंने देखा कि एक सुन्दर सा बैल मेरे मुख में प्रवेश कर रहा है।

नाभिराय—इसका अर्थ यह है कि तुम्हारे पवित्र गर्भ में तीर्थंकर का जीव अवतीर्ण हो चुका है। (इस प्रकार सभी प्रजाजन भी हर्ष से पुलकित हो उठते हैं, देवियाँ भी हर्ष से रोमांचित हो जाती हैं तथा महारानी मरुदेवी के साथ अठखेलियाँ करते हुए उन्हें अन्तःपुर में ले जाती हैं)

स्वर्ग से देवतागण आकर गर्भकल्याणक महोत्सव मनाते हैं। श्री, ह्री, धृति आदि देवियाँ माता की सेवा कर रही हैं, उनसे अनेक-अनेक प्रश्न करके माता का मनोरंजन कर रही हैं। (माता और देवियों के पद्यमय संवादों को पृष्ठ ५० से प्रस्तुत करें)

पुनः गर्भ कल्याणक के सामूहिक गीत-नृत्य के साथ (पृष्ठ ५८ पर है) प्रथम दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न करें।

२. जन्मकल्याणक

भगवान का जन्मकल्याणक दिखाने से पूर्व इस दृश्य को मंच पर दिखाएँ

(पंचम दृश्य)

(चैत्र वदी नवमी का शुभ दिवस है। माता मरुदेवी ने तीर्थंकर बालक को जन्म दिया है। सम्पूर्ण अयोध्या नगरी इन्द्रों ने स्वर्ग जैसी सजाई है। सब तरफ मुंह-मांगा धन बँट रहा है। सब तरफ ढोल, नगाड़े बज रहे हैं।)

स्वर्ग का दृश्य—स्वर्ग में सौधर्म इन्द्र अपने अवधिज्ञान से तीर्थंकर का जन्म हुआ जानकर अपने सिंहासन से उतरकर सात पैर आगे बढ़कर परोक्ष में प्रभु को नमस्कार करते हैं पुनः आदेश देते हैं—

सौधर्म इन्द्र—स्वर्ग में रहने वाले मेरे सभी देव भाइयों! सुनो! चलो ऐरावत हाथी को खूब सुन्दर सजा दो, हम सब मध्यलोक चलेंगे।

देव—जो आज्ञा सौधर्मन्द्र!

(सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी पर बैठकर अपने विशाल देवपरिकर के साथ नाचते-झूमते मध्यलोक पहुँचते हैं)

—अयोध्या नगरी में नाभिराय के महल का दृश्य—

देवों का सामूहिक स्वर—तीर्थंकर ऋषभदेव की जय हो! अयोध्या तीर्थ की जय हो! महाराजा नाभिराय की जय हो! महारानी मरुदेवी की जय हो!

सौधर्म इन्द्र—(पिता नाभिराय से) महाराज! हमें भी प्रभु का जन्मोत्सव मनाने की आज्ञा प्रदान कीजिए।

पिता नाभिराय—(खुशी से) हाँ हाँ क्यों नहीं! देवराज! हमारे लिए इससे ज्यादा खुशी की और क्या बात है!

सौधर्म इन्द्र—(शची इन्द्राणी से) हे देवि! आप प्रसूतिगृह में जाकर जिनशिशु का प्रथम दर्शन करो और अपनी स्त्रीलिंग का छेद करके अपने जन्म को सफल करो। और हाँ! जल्दी ही शिशु को लेकर आना, मैं भी दर्शन करके अपने नेत्रों को सफल करूँगा और प्रभु को सुमेरु पर्वत पर ले जाकर जन्माभिषेक करूँगा।

(शची इन्द्राणी बहुत धीरे-धीरे (संगीत ध्वनि के साथ) अंदर जाती हैं और सो रही माता मरुदेवी को मायामयी निद्रा में सुला देती हैं और उनके पास एक मायामयी बालक को सुलाकर जिनशिशु को गोद में उठा लेती हैं और खूब जी भरकर प्रभु को देखती हैं और फिर बाहर आती हैं, इन्द्र देखते ही आगे बढ़ते हैं)

सौधर्म इन्द्र—लाओ, लाओ देवी!, जल्दी से मैं प्रभु का दर्शन करूँ।

शची इन्द्राणी—हाँ हाँ अभी देती हूँ, अभी मेरा जी नहीं भर रहा है।

सौधर्म इन्द्र—(मनुहार करते हुए) हे देवी! अब मेरी आकुलता बढ़ती जा रही है, जल्दी से मुझे जिन बालक को दे दो।

(शची से बालक लेकर इन्द्र झूम उठता है और नाच-नाचकर गाने लगता है)

नाम तिहारा तारनहारा, कब तेरा दर्शन होगा।

तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।

जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्मे हैं।

पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।

पूर्व दिशा में सूर्यदेव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।

तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।

(इस प्रकार नाचते-गाते इन्द्र तीर्थंकर शिशु को लेकर ऐरावत हाथी पर बैठकर सुमेरु पर्वत की ओर चल पड़ते)

हैं, अनेक देव, देवियाँ चंवर दुराते जा रहे हैं। ऐसा सुन्दर दृश्य! जो कि पहले किसी ने नहीं देखा।)

इस प्रकार विशाल वैभव के साथ सभी लोग सुमेरु पर्वत के पास पहुँचते हैं। सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी से उतरकर शिशु को सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर बैठा देते हैं, सभी देवगण ऊपर से नीचे तक पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। सभी के हाथों में बड़े-बड़े कलशों में क्षीरोदधि का प्रासुक जल है। जयजयकार की ध्वनि के साथ ही क्रम-क्रम से १००८ कलशों से अभिषेक सम्पन्न हो रहा है।

(अभिषेक के पश्चात् शची इन्द्राणी शिशु को सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण पहनाती है जो कि वो स्वर्ग से लाई थी पुनः सब लोग गाते-बजाते वापस अयोध्या नगरी आ जाते हैं। बालक को शची इन्द्राणी माता मरुदेवी के हाथों में सौंप देती हैं, माता मरुदेवी बालक को लेकर बार-बार चूमती हैं। बालक को कहीं नजर न लग जाए, इस डर से काला टीका लगा देती हैं। पुनः पलने में झुलाती हैं बालक को। (यह पालने का दृश्य प्रायः रात्रि में दिखाया जाता है)

पालना गीत—आदीश्वर झूले पालना, मरुदेवी लोरी गावें.....(पृष्ठ ५६ से पढ़ें)

(धीरे-धीरे समय बीतता गया, प्रभु बड़े होने लगे, पहले धरती पर सरकना शुरू किया, पुनः चलना शुरू किया और अपनी तोतली भाषा में सबका मन बहलाने लगे। (यहाँ पर भगवान महावीर की बाल सभा एवं सर्प क्रीड़ा का दृश्य पृष्ठ ५४ से दिखावें)

(पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में विधिनायक से अतिरिक्त चूंकि अन्य तीर्थंकरों की प्रतिष्ठेय प्रतिमाएं भी रहती हैं अतः महावीर की बाल सभा एवं सर्प क्रीड़ा भी दिखाई जा सकती है।)

युवराज ऋषभदेव का राजदरबार

दीक्षाकल्याणक के दिन प्रातः इस दृश्य को मंच पर प्रस्तुत करावें

इस प्रकार प्रभु जब युवावस्था को प्राप्त हुए, तब स्वयं ही सभी विद्याओं और कलाओं में निष्णात हो गये। एक बार की बात है, प्रजा घबराई-घबराई सी राजा नाभिराय के दरबार में पहुँचती है)

सामूहिक स्वर—महाराज की जय हो! महाराज की जय हो!

महाराजा नाभिराय—क्या बात है भाइयों! आप लोग इतने परेशान क्यों हैं? सब कुशल तो है?

प्रजा—महाराज! कल्पवृक्षों ने फल देना बंद कर दिया है, अब आप ही बताइए कि हम क्या करें, क्या खाएँ?

नाभिराय—ठीक है प्रजा जनो! अब आप लोग युवराज ऋषभदेव के पास जाइए, वे ही इसका समाधान करेंगे।

(प्रजा युवराज ऋषभ कुमार के पास जाती है और कहती है)

प्रजा—तीर्थंकर युवराज की जय हो! स्वामी! आप बताएं कि हम अब क्या करें, कैसे जिएँ?

भगवान ऋषभदेव—(अपने अवधिज्ञान से जानकर) हाँ हाँ भाइयों! मैं तुम लोगों की समस्या को समझ गया हूँ। अब तुम लोग चिंता मत करो। कल्पवृक्ष चले गये तो क्या हुआ? वृक्ष तो हैं ही! अब इन्हीं से जीवनयापन करना मैं सिखाऊँगा।

प्रजा—लेकिन भगवन्! इन वृक्षों के पास खड़े होकर मांगने से कुछ मिलता ही नहीं है।

ऋषभदेव—प्रजाजनो! अब आप लोगों को भोगभूमि से कर्मभूमि की ओर आना है। अब मैं तुम्हें खेती आदि करना बताता हूँ।

प्रजा—(सामूहिक स्वर में) ठीक है प्रभु! हम सब तैयार हैं।

(बस, यहाँ से मानव अपने पुरुषार्थपूर्वक जीवन का संचालन करने लगा। भगवान ऋषभदेव ने स्वयं ही उन्हें असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन छह क्रियाओं को करना सिखाया, जो आज तक भी चल रही हैं, धीरे-धीरे समय बीतता गया.....)

(एक बार महाराजा नाभिराय ने अपने मन में चिन्तन किया कि ऋषभदेव चूँकि विषयों के प्रति उदासीन हैं फिर भी इनके विवाह हेतु किसी योग्य कन्या का विचार करना चाहिए, ऐसा चिन्तन करके वे मंत्रियों से कहते हैं) —

महाराजा नाभिराय—मंत्रियों! हमें ऋषभदेव के पास चलना है।

मंत्री—चलिए महाराज!

(महाराज नाभिराय ऋषभदेव के निकट पहुँचते हैं। वे आसन पर बैठे थे, उठकर खड़े हो जाते हैं पुनः दोनों यथायोग्य आसन पर बैठ जाते हैं। सिंहासन आजू-बाजू एक समान रखे हैं।)

महाराजा नाभिराय—हे देव! मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।

ऋषभदेव—कहिए पिताजी!

महाराजा नाभिराय—देव! अब आप इस संसार की सृष्टि की ओर अपनी बुद्धि लगाइए और किसी इष्ट कन्या के साथ विवाह कीजिए। यह विवाह कार्य गृहस्थों का एक धर्म है। यदि आप मुझे किसी भी तरह से बड़ा मानते हैं तो आपको मेरे वचन उल्लंघन नहीं करने चाहिए।

(इतना कहकर महाराजा नाभिराय चुप हो गये, तब ऋषभदेव बोले)

ऋषभदेव—(मुस्कुराते हुए) ओम्।

(उसी समय सौधर्म इन्द्र आदि आ जाते हैं और भगवान ऋषभदेव द्वारा विवाह की स्वीकृति पाकर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं।)

सभी तरफ विवाह की जोरदार तैयारियाँ चल रही हैं। शुभ दिन में युवराज ऋषभदेव का विवाह कच्छ, महाकच्छ राजाओं की बहनें यशस्वती और सुनन्दा नाम की दो सुन्दर कन्याओं से हो जाता है। धीरे-धीरे समय बीतता गया.....रानी यशस्वती ने भरत आदि सौ पुत्र एवं एक पुत्री ब्राह्मी को तथा रानी सुनन्दा ने एक पुत्र बाहुबलि और एक पुत्री सुन्दरी को जन्म दिया। पिता नाभिराय भी पुत्र-पौत्रों के साथ सुख में मग्न हैं) (यहाँ ब्राह्मि-सुन्दरी के रूप में किन्हीं दो कुमारी कन्याओं को ऋषभदेव के द्वारा अक्षर और अंक लिपि का ज्ञान कराते हुए दिखावें तथा भरत-बाहुबली आदि पुत्रों को धनुष विद्या आदि सिखाते हुए दिखा सकते हैं)

३. दीक्षाकल्याणक

(छठा दृश्य)

राजदरबार में सामूहिक नृत्य के पश्चात् ३२ मुकुटबद्ध राजाओं का आगमन आदि दिखावें—

एक दिन नाभिराय विचार करते हैं कि अब मुझे राजमुकुट त्याग करके ऋषभदेव का राज्यतिलक करना चाहिए। ऐसा सोचते ही उन्होंने घोषणा कर दी—

नाभिराय—सभासदों! अब मैंने निश्चय किया है कि मैं अपना राजमुकुट उतारकर पुत्र ऋषभदेव को दे रहा हूँ मुझे आशा है कि आप सब सहमत होंगे।

प्रजा ने जयजयकार के द्वारा सहमति प्रदान की और शुभ मुहूर्त में ऋषभदेव का राज्याभिषेक हुआ। प्रजा खुशी से गीत गा रही है—(यहाँ पृष्ठ ५६ से सामूहिक गीत-नृत्य प्रस्तुत करें)

(राजदरबार का दृश्य-पुनः किसी दिन ऋषभदेव सिंहासन पर आरूढ़ हैं, सभी लोग प्रसन्न हैं तभी इन्द्र ने नृत्य के लिए ऐसी नीलांजना नर्तकी को प्रस्तुत किया जिसकी आयु बहुत थोड़ी है। नृत्य करते-करते वह नीलांजना नर्तकी आयु पूर्ण होने पर अदृश्य हो गई और उसकी जगह वैसी ही दूसरी देवांगना उपस्थित हो गई, नृत्य बराबर चलता रहा, कोई भी इस रहस्य को नहीं जान सका लेकिन प्रभु को सब पता लग गया और उनके

हृदय में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हो गए)

ऋषभदेव—बस, बस, बंद कर दो ये नृत्य और संगीत। ओह! मैं समझ गया। ये वैभव, ये राज्यलक्ष्मी सब क्षणभंगुर हैं। अब मैं दीक्षा धारण करके अपना जन्म सफल करूँगा।

(उनके मन में वैराग्य भाव उत्पन्न होते ही स्वर्ग से ब्रह्मर्षि के रूप में लौकांतिक देव प्रभु के वैराग्य की अनुमोदना करने हेतु राजसभा में प्रगट हो जाते हैं।)

लौकान्तिक देवों के पाठ

आठ बालकों को सफेद धोती-दुपट्टा पहनाकर लौकांतिक देव के रूप में राजसभा में प्रस्तुत करें, वे लौकांतिकदेव दोनों हाथों से भगवान के समक्ष पीले चावल की पुष्पांजलि डालते हुए हाथ जोड़कर निम्न प्रकार से अपने-अपने अभिमत प्रस्तुत करें—

१. सारस्वतदेव —हे युगादिपुरुष! आपने जो दीक्षा का विचार बनाया है, सो बहुत ही उत्तम है। अठारह कोड़ाकोड़ी सागर के बाद इस भरतक्षेत्र में अब आप मोक्षमार्ग को खुला करेंगे। इसलिए आप ही मुक्तिपथ के विधाता-निर्माता हैं।
२. आदित्यदेव —हे युगस्रष्टा! विश्व के सभी प्राणी मोहरूपी अंधकार में सोये हुए हैं, उन्हें ज्ञानप्रकाश देकर मुक्तिमार्ग में ले चलने वाले उनके नेता आप ही हैं अतः आपको मेरा शत-शत नमन है।
३. बन्धिदेव —युग के प्रथम अवतार ऋषभदेव भगवान्! अब आप तपरूपी अलंकारों से सुसज्जित होकर मुक्तिकन्या के स्वयंवर मण्डप में प्रवेश करने जा रहे हैं सो हम आपके वैराग्य की अनुशंसा करते हैं।
४. अरुणकुमार देव —हे प्रभो! आप स्वयं ज्ञानवान् होने से स्वयंबुद्ध कहलाते हैं। आप भगवान हैं फिर भी हम लोग जो आपके वैराग्य की अनुमोदना कर रहे हैं सो यह हम लोगों का नियोगमात्र है।
५. गर्दतयदेव —भगवन्! हम लोग तो केवल आपकी प्रशंसा और स्तुति ही कर सकते हैं न कि आपको सम्बोधन! हम लोग तो आपसे सम्बोधन प्राप्त करने की प्रतीक्षा ही कर रहे हैं।
६. तुषितदेव —पुरुदेव! आज हम लोग आपके दीक्षा कल्याणक में भाग लेकर धन्य हो गये हैं।
७. अव्याबाधदेव —हे युगस्रष्टा! आप जिस प्रकार से राज्य अवस्था में सबसे श्रेष्ठ और ज्येष्ठ हैं उसी प्रकार से मोक्षमार्ग में प्रवर्तन करने से आप सर्वश्रेष्ठ महापुरुष के रूप में जाने जायेंगे।
८. अरिष्टदेव —भगवन्! आपके वैराग्य से अब न जाने कितने भव्य प्राणियों का उद्धार होने वाला है। प्रभु! आपकी जय हो! जय हो! जय हो!

भगवान की आहारचर्या

(केवलज्ञान कल्याणक के दिन प्रातः भगवान की आहारचर्या से कुछ क्षण पूर्व मंच पर यह दृश्य सहप्रतिष्ठाचार्य प्रस्तुत करावें—

(सूत्रधार द्वारा)

बंधुओं!

कल्पना कीजिए उस युग की, जब आज से कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष पूर्व भारत देश की इस पुण्य धरा पर देवाधिदेव १००८ भगवान ऋषभदेव ने जन्मावतार लिया था। भगवान ऋषभदेव के समय इस धरती से कल्पवृक्ष लुप्तप्राय हो गये, तब भगवान ऋषभदेव ने प्रजा को असि, मसि, कृषि आदि शिक्षाएं प्रदान कीं, जिससे वह सुख

से अपना जीवनयापन कर सकें। एक दिन राजदरबार में नीलांजना का नृत्य हो रहा था। महाराजा ऋषभदेव के साथ अन्य दरबारीगण भी बैठे उस नृत्य को देख रहे थे तभी बीच में ही नीलांजना की आयु समाप्त हो जाती है। सौधर्म इन्द्र अपनी विक्रिया से बिल्कुल वैसी ही दूसरी नीलांजना उसी क्षण उपस्थित कर देता है। कोई कुछ नहीं जान पाता परन्तु भगवान ऋषभदेव उस संपूर्ण क्रिया को जान लेते हैं और उन्हें जीवन की क्षणभंगुरता का अहसास हो जाता है, उन्हें वैराग्य हो जाता है और भगवान ऋषभदेव तपस्या करने के लिए प्रयाग नाम के वन की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। अपने सारे वस्त्राभूषण का त्यागकर, पंचमुष्टि केशलोच कर वटवृक्ष के नीचे छः माह का योग धारण करके खड़े हो जाते हैं, ध्यान मग्न हो जाते हैं।

छः माह के योग धारण करने के पश्चात्, जब भगवान आहार के लिए निकले तो पुनः उन्हें ६ माह ३६ दिनों तक कहीं आहार नहीं मिला, इस प्रकार उनका १ वर्ष ३६ दिन तक निर्जल उपवास हो गया। किन्तु उनके शरीर में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आई क्योंकि वे तो तीर्थंकर प्रभु के अवतार थे न। बंधुओं! उस समय भी ऐसा नहीं था कि कोई उन्हें आहार नहीं देना चाहता था अपितु किसी को आहारदान की विधि ही नहीं मालूम थी और आपको तो मालूम ही है कि जैन साधु बिना नवधाभक्ति के आहार नहीं ग्रहण करते।

सभी लोग अपने घरों से बाहर निकल-निकलकर भगवान को तरह-तरह से वस्त्राभूषण आदि भेंट करना चाहते हैं—

एक व्यक्ति—आओ प्रभु! आज हमारे यहाँ बहुत अच्छा भोजन बना है।

महिला—प्रभु! आपको सर्दी लगती होगी, ये अच्छे-अच्छे कपड़े हैं, ले लो।

दूसरा व्यक्ति—भगवन्! आप हमारी इस कन्या के साथ विवाह कर लीजिए।

(भगवान ऋषभदेव का समय बताने के लिए यहाँ पर कुछ श्रावकों को भगवान के आवाहन आदि के लिए अपने-अपने घरों के आगे खड़े रहने का निर्देश दें तथा विधिनायक दीक्षाकल्याणक वाले भगवान को मस्तक पर धारण करके प्रतिष्ठाचार्य भगवान की आहारचर्या प्रदर्शित करने के लिए कुछ देर श्रावकों की बस्ती में भ्रमण करें)

(इस प्रकार से लोग कहते रहे, पर प्रभु आगे बढ़ते गए। चलते-चलते छह माह के भ्रमण के पश्चात् भगवान ऋषभदेव हस्तिनापुर पहुँचते हैं। प्रभु के पहुँचने के एक दिन पूर्व वहाँ के राजा श्रेयांस ने रात्रि के पिछले प्रहर में सुमेरु पर्वत आदि सात स्वप्न देखे। प्रातःकाल पुरोहित से उनका फल पूछा)

राजमहल का दृश्य

(राजा श्रेयांस सुख की निद्रा से उठते हैं)

श्रेयांस—ॐ नमः सिद्धेभ्यः। आ हा! आज रात्रि में मैंने कितने सुन्दर-सुन्दर स्वप्न देखे, एक नहीं, दो नहीं, पूरे सात, सात स्वप्न देखे हैं मैंने! मुझे तुरंत ज्योतिषी से इसका फल पूछना चाहिए।

(आज्ञा देते हैं) द्वारपाल!

द्वारपाल—महाराज की जय हो! आज्ञा करें।

श्रेयांस—जाओ और इसी समय राजज्योतिषी को बुलाकर लाओ।

द्वारपाल—जो आज्ञा महाराज (चला जाता है)

(ज्योतिषी का प्रवेश) (पन्ना वगैरह लिए हुए)

ज्योतिषी—प्रणाम महाराज! आज सुबह-सुबह मुझे कैसे याद किया।

श्रेयांस—ज्योतिषी जी, आज रात्रि के पिछले प्रहर में मैंने सात स्वप्न देखे हैं, मैं आपसे उन प्रश्नों का फल जानना चाहता हूँ।

ज्योतिषी—वे स्वप्न क्या हैं, महाराज! मुझे बताइये।

श्रेयाँस—हे विप्रवर! आज स्वप्न में मैंने सर्वप्रथम सुदर्शन मेरु का दर्शन किया है उसके पश्चात् क्रमशः कल्पवृक्ष, सिंह, बैल, सूर्य, चन्द्र, रत्नों से भरा समुद्र और व्यंतर देवों की मूर्तियाँ देखी हैं।

ज्योतिषी—हे राजन्! सुदर्शन मेरु के दर्शन से आज आपको किसी ऐसे महापुरुष के दर्शन होंगे, जिनका कि सुमेरु पर्वत पर अभिषेक हुआ हो और अन्य शेष स्वप्न भी शुभ फल को ही कहने वाले हैं।

(तभी द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल—महाराज की जय हो! महाराज! हमारे नगर में महामुनि आदिनाथ पधारे हैं, सम्पूर्ण प्रजा उनकी जयजयकार कर रही है।

(राजा श्रेयाँस परोक्ष में भगवान ऋषभदेव को नमस्कार करते हैं)

(राजा श्रेयाँस तुरंत महल से बाहर आते हैं और भगवान ऋषभदेव के दर्शनमात्र से उन्हें दशभुव पूर्व का जातिस्मरण हो जाता है कि किस प्रकार से उन्होंने वज्रजंघ और रानी श्रीमती के रूप में जंगल में एक मुनिराज को आहार दिया था। ये वज्रजंघ का जीव ही तो हैं जो महामुनि ऋषभदेव बन गये हैं और मैं ही वह रानी श्रीमती का जीव हूँ। अहो! कितने महान पुण्य का उदय आया है! अब मैं महामुनि ऋषभदेव को उसी प्रकर नवधाभक्तिपूर्वक आहार दूँगा। अपने बड़े भाई राजा सोमप्रभ और भाभी लक्ष्मी को आवाज देते हैं।)

श्रेयाँस—अरे भैया, भाभी! जल्दी आओ। हम महामुनि ऋषभदेव को आहार देंगे। अरे! जल्दी से पड़गाहन करो। हे स्वामी! नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु, अत्र तिष्ठ तिष्ठ, आहार जल शुद्ध है।

अरे यह क्या! मुनिराज तो खड़े हो गये, आज पूरे १ वर्ष और ३६ दिनों के पश्चात् आहार ग्रहण करेंगे।

राजा श्रेयाँस अपने भैया-भाभी सहित तीन बार मुनिराज की परिक्रमा करते हैं। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु!

श्रेयाँस—मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि, आहार जल शुद्ध है, स्वामी! भोजनशाला में प्रवेश कीजिए।

(भगवान ऋषभदेव का राजा श्रेयाँस ने पड़गाहन कर लिया है, भगवान का आहार होता है, पंचाश्चर्य की वृष्टि होती है, जब अयोध्या के राजा चक्रवर्ती सम्राट् भरत को यह शुभ समाचार प्राप्त होता है तो वह स्वयं हस्तिनापुर आते हैं और राजा श्रेयाँस को दानतीर्थप्रवर्तक की उपाधि प्रदान कर सम्मानित करते हैं। जिस दिन महामुनि ऋषभदेव ने आहार ग्रहण किया, वह दिन आज भी अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध है, इस दिन को देशभर में श्रद्धा और भक्ति के साथ उत्सव के रूप में मनाया जाता है।)

आहार-संबंधी भजन (आहार के बीच में ही पृष्ठ ६१ से पढ़ें)

(अयोध्या नरेश भरत ने जब यह समाचार सुना तो उनके हर्ष का पार नहीं रहा। वे तुरंत ही वहाँ से चलकर हस्तिनापुर आ गये। महामुनिराज के दर्शन किए और राजा श्रेयाँस का बहुत ही सम्मान करके उन्हें “दान तीर्थ प्रवर्तक” की उपाधि से अलंकृत किया, तभी से धरती पर सम्मान की परम्परा का शुभारंभ हुआ)

४. केवलज्ञान एवं मोक्षकल्याणक

(सातवाँ दृश्य)

(पुनः भगवान ऋषभदेव चलते-चलते पुरिमतालपुर के प्रयाग नाम के उद्यान में पहुँचे और तपस्या करते-करते जब एक हजार वर्ष बीत गए, तब भगवान को दिव्य केवलज्ञान प्रगट हो गया, उस समय सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने अर्द्धनिमिष मात्र में आकाश में अधर समवसरण की रचना कर दी। उसमें बारह कोठों में देव, मनुष्य, विद्याधर, पशु-पक्षी आदि सभी उपस्थित हुए, भगवान की दिव्यध्वनि सुनने के लिए भारी जनसमूह उमड़ पड़ा, सभी ने प्रभु की दिव्यवाणी को अपनी-अपनी भाषा में समझ लिया।) (यहाँ समवसरण की रचना दिखावें तथा उपस्थित

आचार्य या मुनि गणधर के रूप में जनता को दिव्यध्वनि के प्रतीक में सम्बोधित करें।)

(जब भगवान श्रीविहार करते हैं, तब समवसरण तो विघटित हो जाता है और प्रभु आकाश में अधर गमन करते हैं। इन्द्र प्रभु के चरणकमल के नीचे सुगंधित स्वर्णकमलों की रचना करता है, चारों ओर सुभिक्ष हो जाता है।) (यहाँ चांदी के कमलों को बनवाकर भगवान के समीप रखकर अनन्तर लोगों को वितरित किया जा सकता है।)

इस प्रकार प्रभु ने एक दिन जान लिया कि मेरी आयु मात्र चौदह दिन शेष है, वे विहार करके कैलाशगिरि पहुँच गए। एकाग्र ध्यान में लीन प्रभु को चौदह दिन बाद शिवलक्ष्मी ने वरण कर लिया।

तब इन्द्रों ने खूब दीपावली मनाई। भगवान के निर्वाणकल्याणक की खूब धूमधाम से पूजा की। उस समय भरत को बहुत दुखी देखकर श्री वृषभसेन गणधर सम्बोधित करते हैं।

वृषभसेन—हे भव्य प्राणी! तुम अफसोस मत करो। तुमने तो प्रभु बहुत कुछ सीखा है। अतः अब उनके उपदेशों को धारण करके सभी को सिखाना है। (इस प्रकार के वचन सुनकर भरत को संतुष्टि हुई। प्रभु ऋषभदेव के मोक्षगमन के पश्चात् क्रम-क्रम से चौदह लाख राजाओं ने दीक्षा लेकर इस परम्परा का निर्वाह किया।) (पृष्ठ ६४ से निर्वाणकल्याणक का भजन प्रस्तुत करें)

अंत में सूत्रधार—हे भगवान्! अब मुझे भी परम्परा से मुक्ति धाम प्राप्त हो, यही प्रार्थना है। भगवान ऋषभदेव की जय! आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की जय!

समवसरण गीत

तर्ज—ऐ मेरे वतन.....

जिनधर्म के प्यारे भक्तों! सुनो समवसरण की कहानी।

इस समवसरण में विराजे, तीर्थकर केवलज्ञानी॥१॥

तीर्थकर जब तप करके, केवलज्ञानी बनते हैं।

तब इन्द्राज्ञा से धनपति, ये समवसरण रचते हैं॥

रत्नों की राशि लुटाकर, देते वे दिव्य निशानी।

इस समवसरण में विराजे, तीर्थकर केवलज्ञानी॥१॥

श्री ऋषभदेव का पहला, बना समवसरण वसुधा पर।

महावीर प्रभू का अंतिम, बना विपुलाचल पर्वत पर॥

संदेश विश्व को देकर, वरने को चले शिवरानी।

इस समवसरण में विराजे, तीर्थकर केवलज्ञानी॥२॥

वही रूप दिखाने हेतू, यह समवसरण है बनता।

सौधर्म इन्द्र ऐरावत, पर आकर दर्शन करता।

प्रभु समवसरण की यह कृति, “चन्दनामती” है सुहानी।

इस समवसरण में विराजे, तीर्थ कर केवलज्ञानी॥३॥

सोलह स्वप्न दर्शन

गर्भकल्याणक के बाह्य दृश्य में माता के सोलह स्वप्न देखने के समय प्रतिष्ठाचार्य इन पद्यों को पढ़ें—

पहले स्वप्न में माता गज देख रही हैं।

सुन्दर सफेद हाथी गर्जन से युक्त है॥

त्रैलोक्य पूज्य पुत्र को वह प्राप्त करेगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१॥

उत्तुंग वृषभ देखतीं द्वितीय स्वप्न में।

अति रुन्दतर ध्वनी से युक्त शुभ गजेन्द्र है॥

त्रयज्ञानधारि श्रेष्ठ श्रुत को प्राप्त करेगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥२॥

माँ देख रहीं सिंह को तृतीय स्वप्न में।

पर्वत समान गज का भी मद नाश करे है॥

आनंत शक्ति युक्त पुत्र प्राप्त करेगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥३॥

चौथे स्वप्न में देखतीं कमलासनी लक्ष्मी।

जो स्वर्णकुंभ से स्नान प्राप्त कर रहीं॥

जन्माभिषेक युक्त सुत को प्राप्त करेगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥४॥

मंदार की माला युगल ये देख रही हैं।

सुन्दर खिलीं पंचम स्वप्न में देख रही हैं॥

सद्धर्म प्रचारक सुपुत्र प्राप्त करेगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥५॥

छट्टे स्वप्न में श्वेत दुग्ध सम है चन्द्रमा।

माता को मानो दे रहा अमृत सुखोपमा॥

त्रैलोक्य आल्हादक सुपुत्र प्राप्त करेंगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥६॥

सप्तम स्वप्न में सूर्य बिम्ब देख रही माँ।

जग का तिमिर विनाश वह प्रकाश भर रहा॥

इस फल में माँ तेजस्वी पुत्र प्राप्त करेंगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥७॥

मछली युगल को देख रहीं मात नींद में।

अष्टम स्वप्न में क्रीड़ा करती हुई मीन है॥

अतिशय प्रसन्न पुत्र को वे प्राप्त करेंगी।

जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥८॥

दो स्वर्ण कुंभ देखती माँ नवम स्वप्न में।
 सुन्दर सजे अमृत से वे आकण्ठ भरे हैं॥
 निधियों की प्राप्ति वाले सुत को मात लहेंगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥६॥

दसवें में प्रफुल्लित कमल से युक्त सरोवर।
 माँ देख रहीं स्वप्न में सुन्दर सा सरोवर।
 वे पुत्र सहस्र लक्षणों युत प्राप्त करेंगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१०॥

रत्नों से युक्त सागर लहराता हुआ है।
 माता को ग्यारहवें स्वप्न में दीख रहा है॥
 कैवल्यज्ञानी पुत्र को ये प्राप्त करेंगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥११॥

रत्नों की कांति युक्त सिंहपीठ देखतीं।
 माँ बारहवें स्वप्न में सिंहासन को देखतीं॥
 त्रैलोक्यपती पुत्र को वह प्राप्त करेगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१२॥

मणियों से बना देव का विमान दिख रहा।
 अब तेरवें स्वप्न में माँ को पूर्ण सुख कहा॥
 स्वर्गावतीर्ण पुत्र को वह प्राप्त करेगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१३॥

देखा स्वप्न में चौदवें शुभ नाग विमान।
 माता को वह विमान मानो सूर्य समाना॥
 वह अवधिज्ञान युक्त पुत्र प्राप्त करेगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१४॥

पन्द्रहवें स्वप्न में रतन की राशि देखतीं।
 जो अपनी चमक से दिशाओं को प्रकाशतीं॥
 माता अनन्तगुणी पुत्र प्राप्त करेगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१५॥

निर्धूम अग्नि देखतीं सोलहवें स्वप्न में।
 सदीं व अंधेरे को दूर जो करे क्षण में॥
 पापों से रहित पुत्र को वे प्राप्त करेंगी।
 जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी॥१६॥

शंभु छंद — ये स्वप्न देखकर माता प्रातः सुखद नींद से जगती है।
 बाजों व प्रभाती के मंगल स्वर सुनकर निद्रा तजती है॥
 उन स्वप्नों का फल पति से फिर सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुईं।
 मानों मैंने तीर्थकर सुत को पा ही लिया वे तृप्त हुईं॥१७॥

देवियों और माता मरुदेवी के गूढ़ प्रश्न एवं उत्तर

१. 'श्रीदेवी' का प्रश्न—

तर्ज—एक परदेशी..... /

तेरे दर पे आके माता पूछूँ प्रश्न मैं, तेरे ज्ञान से भी बनूँ ज्ञानवान मैं।

हे माता तेरे, गर्भ बसे प्रभु हैं, तीन ज्ञानधारी तीर्थकर प्रभु हैं॥

कौन सा प्राणी पिंजड़े में रहता, कौन कठोर शब्द करता है-शब्द करता है?

जीवों का आधार कौन है, अक्षर च्युत क्या पढ़ना भला है-पढ़ना भला है?

बता दे तू उत्तर माता मेरे प्रश्न के, तेरे ज्ञान से भी बनूँ ज्ञानवान मैं॥

१. 'श्रीदेवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—एक परदेशी..... /

देवी तेरे प्रश्नों का मैं उत्तर दूँ भला, तीर्थकर के ज्ञान की जो मुझमें है कला।

तू भी अपने ज्ञान की ज्योति को जला, ज्ञान की जला सम्यग्ज्ञान की जला॥

तोता पिंजड़े में रहता है, कौआ कठोर शब्द करता है-शब्द करता है।

जीवों का आधार लोक है, अक्षर च्युत श्लोक भला है-श्लोक भला है॥

देवी मैंने उत्तर जो भी दिया है भला, तीर्थकर के ज्ञान की जो मुझमें है भला॥

२. 'ही देवी' का प्रश्न—

तर्ज—झुमका गिरा रे..... /

उत्तर दे दे रे,

हे माता मेरे प्रश्नों का तू उत्तर दे दे रे।

माता तव शरीर में क्या गंभीर चीज है बतलाओ।

नाभिराय की भुजा कहाँ तक लम्बी है माँ समझाओ॥

कैसी और किस वस्तु में अवगाहन करना श्रेयस्कर।

हे अन्धे! तुम अधिक प्रशंसापात्र बनीं क्यों पृथ्वी पर॥...पात्र बनीं क्यों पृथ्वी पर॥

उत्तर दे दे रे,

हे माता मेरे प्रश्नों का तू उत्तर दे दे रे॥

२. 'हीदेवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—झुमका गिरा रे..... /

उत्तर ले ले रे,

हे देवी अपने प्रश्नों का तू उत्तर ले ले रे॥

मम शरीर में नाभिमात्र गंभीर वस्तु कहलाती है।

आजानू घुटनों तक लम्बी पति की भुजाएं आती हैं॥

कुछ गहरे जल में अवगाहन करना ही है श्रेयस्कर।

नाभिराय पत्नी होने से पूज्य हुई मैं पृथ्वी पर॥...पूज्य हुई मैं पृथ्वी पर॥

उत्तर ले ले रे,

हे देवी अपने प्रश्नों का तू उत्तर ले ले रे॥

३. 'धृति देवी' का प्रश्न—

तर्ज—साजन मेरा उस.....।

हे माता तुझ को नमस्कार है, प्रभु जी की महिमा अपरम्पार है।

प्रश्न पूछूँ माँ तेरे द्वार है, तेरे उत्तर का इंतजार है।

इस जग में है उपादेय क्या? किसको छोड़ूँ मैं माता हेय क्या?

कौन गुरु हैं मोक्षमार्ग क्या? समझा दे माता इसका सार क्या?

नगरी में छाई क्या बहार है? तेरे उत्तर का इंतजार है।

३. 'धृतिदेवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—साजन मेरा उस.....।

देवी तू कितनी समझदार है, मुझको तेरा ही इंतजार है।

प्रभु जी का कैसा चमत्कार है, प्रश्नों का उत्तर भी तैयार है॥

गुरुओं के वचन उपादेय हैं, पापादि निंद्यकार्य हेय हैं।

तत्त्वों के ज्ञाता जग में पूज्य हैं, संसार से जो हुए दूर हैं॥

बतलाते जो मुक्ती का द्वार हैं, मेरे उत्तर का यही सार है।

४. 'कीर्तिदेवी' का प्रश्न—

तर्ज—मिलो न तुम तो.....।

प्रश्न करूँ तो मन घबराए, उत्तर मगर न आए,

मुझे क्या हो गया है-२॥

पथ के लिए पथ्य क्या है? संसार में शुद्ध कौन है? हो ओ.....।

संसार में विष क्या है? और माता बोलो पंडित कौन है? हो ओ.....।

तू ही माता उत्तर बता दे, शंका मेरी मिटा दे,

मुझे क्या हो गया है-२॥

४. 'कीर्तिदेवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—मिलो न तुम तो.....।

उत्तर सुन लो मन हर्षाए, देवी क्यों घबराए,

तुझे क्या हो गया है-२॥

पथ के लिए पथ्य धरम है, मन पवित्र वाला मानव शुद्ध है॥ हो ओ.....

गुरु तिरस्कार विष है, हिताहित विवेकी पंडित बुद्ध है॥ हो ओ.....

सार यहाँ सुन मन हरषाए, देवी क्यों घबराए,

तुझे क्या हो गया है-२॥

५. 'बुद्धिदेवी' का प्रश्न—

तर्ज—इक प्यार का नगमा है.....।

हे मरुदेवी माता, तू कैसी सुहानी है,

प्रश्नों की उत्तरदाता, तेरी अमर कहानी है॥

हे मात-दान क्या है, है मित्र कौन जग में,

वाणी का भूषण क्या, क्या अलंकार मुझमें?

कर समाधान माता, यही तेरी निशानी है।

प्रश्नों की उत्तरदाता, तेरी अमर कहानी है॥

५. 'बुद्धिदेवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—इक प्यार का नगमा है..... /

देवी तेरे प्रश्नों में, कुछ ऐसी निशानी है।

हर मानव के मन की, और जग की कहानी है॥

है दान वही जग में, जिसके बदले में चाह नहीं।

है मित्र वही सच में, पापों से हटावे सही॥

सत्य वाणी का भूषण है, शील तेरी निशानी है।

हर मानव के मन की, और जग की कहानी है॥

६. 'लक्ष्मी देवी' का प्रश्न—

तर्ज—भगवान तेरी नैया..... /

माता मेरे प्रश्नों का, उत्तर तो बता देना।

मेरे मन की शंका का, समाधान करा देना॥

माँ जग में कौन अंधा, है बहरा कौन प्राणी?

मैं नहीं जानूँ गूंगा, किसे कहते हैं ज्ञानी॥

उत्तर देकर माता, संदेह मिटा देना।

मेरे मन की शंका का, समाधान करा देना॥

६. 'लक्ष्मी देवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—भगवान मेरी नैया..... /

देवी इन उत्तर में, तुम ध्यान लगा लेना।

बड़ा सार भरा इनमें, इसे दिल में बसा लेना॥

पाप कार्यों में रत अंधा, हित वच न सुने वो बहरा।

नहिं मधुर वचन बोले, वह गूंगा ही ठहरा॥

प्रभु की इस वाणी में, विश्वास जमा लेना।

बड़ा सार भरा इनमें, इसे दिल में बसा लेना॥

७. 'शान्ति देवी' का प्रश्न—

तर्ज—तन डोले..... /

हे जगमाता, मरुदेवी माता, तेरे द्वार खड़ी हूँ आज मैं,

कुछ प्रश्न संजो कर लायी हूँ॥

कौन पूज्य है इस पृथ्वी पर, निर्धन किसको कहते।

जग को किसने जीत लिया है, बोलो उसे क्या कहते? माता बोलो.....

मरुदेवी माता, जग बतलाता, तेरी महिमा अपरम्पार है।

मैं उत्तर पाने आई हूँ॥

७. 'शान्ति देवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—तन डोले..... /

वृषभेश भज ले, तीर्थेश भज ले, जिसे पाकर हुई निहाल मैं,

तेरा उत्तर देने आई हूँ॥

चरितवान नर पूज्य धरा पर, चरित पतित निर्धन है।
 जग को जीता सत्पुरुषों ने, सहनशील उन्हें कहते॥ देवी सहनशील.....॥
 यह ज्ञान कर ले, बात ध्यान कर ले, तेरे प्रश्नों का यही सार है,
 मैं उत्तर देने आई हूँ॥

८. 'पुष्टि देवी' का प्रश्न—

तर्ज—झिलमिल सितारों का.....।

खुशियों से भरा तेरा आंगन होगा, आदि प्रभू का आवन होगा।
 प्रश्नों का उत्तर पाकर, मन पावन होगा। खुशियों से भरा.....
 चिन्तन किसका करें रात-दिन, माता जरा बता देना?
 और प्रेमिका किसे बनायें? यह जग को समझा देना॥
 तभी दूर मिथ्यातम होगा, आदि प्रभू का आवन होगा॥
 खुशियों से भरा.....॥

८. 'पुष्टि देवी' के प्रश्न का उत्तर—

तर्ज—झिलमिल सितारों का.....।

खुशियों से भरा मेरा आंगन होगा, आदिप्रभू का आवन होगा।
 प्रश्नों का उत्तर देकर मन पावन होगा॥ खुशियों से भरा.....॥
 जग की नश्वरता का चिन्तन सब प्राणी को हितकर है।
 करुणा मैत्रीभाव चतुरता यही प्रेमिका सुखकर है॥
 इनसे दूर मिथ्यातम होगा, आदिप्रभू का आवन होगा॥
 खुशियों से भरा.....॥

भजन

तर्ज—फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
 ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है॥टेक॥
 महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
 कोई भी नारी न ऐसी हुई।
 साहित्य लेखन करने की शक्ति,
 तुझमें न जाने कैसे हुई॥
 शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-२
 कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
 ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है॥
 इस युग.....॥१॥

महावीर की बाल सभा एवं सर्प क्रीड़ा

(जन्मकल्याणक के दिन रात्रि में पालना एवं बालक्रीड़ा के पश्चात् मंच पर भगवान महावीर की यह बाल सभा बच्चों से प्रस्तुत कराएँ)

राजमहल का दृश्य है, बीचों बीच में लगभग ८ वर्ष के बालक को महावीर के रूप में सुसज्जित करके सिंहासन पर बिठावें और बगल की कुर्सी पर महावीर के प्रियसखा के रूप में ८ वर्ष के एक बालक को उनके प्रिय देवसखा के प्रतीक में दिखावें। आजू-बाजू में ७-७ बालक और भी (लगभग ५ से ७ वर्ष की उम्र वाले) सुन्दर वेशभूषा में बिठाकर बालसभा का कार्यक्रम आरंभ करें—(एक देव का कथक नृत्य दिखावें) पुनः—

देवसखा—हे तीर्थंकर सखा वर्धमान! इस धरती पर सबसे बहुमूल्य पर्याय कौन सी होती है?

बालक वर्धमान—मित्रवर! धरती पर मनुष्य पर्याय सबसे अधिक बहुमूल्य मानी जाती है।

देवसखा—ऐसा क्यों? मेरे वीर मित्र!

वर्धमान—इसलिए कि मनुष्य पर्याय से ही सबसे ऊँचा पद मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी पर्याय से मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

देवबालक नं. १—हे वीर! देव लोग मनुष्य पर्याय कैसे पा सकते हैं? यह तो बताइये।

वर्धमान—मित्रों! देवता भी भगवान की भक्ति और सम्यग्दर्शन की दृढ़ता से अगले जन्म में उस बहुमूल्य मनुष्य शरीर को धारण कर सकते हैं।

देवबालक नं. २—हे सन्मति! कुछ लोग मनुष्य पर्याय पाकर भी लूले-लंगड़े हो जाते हैं, वह किस कारण से?

वर्धमान—सुनो भाइयों! इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जो लोग पूर्व जन्म में दूसरों को दुःख देते हैं अथवा दूसरे अंगहीन लोगों को देखकर उनकी हंसी उड़ाते हैं वे लोग मनुष्य जन्म पाकर भी लूले-लंगड़े हो जाते हैं।

देवबालक नं. ३—हे महावीर! कुछ मनुष्य बेचारे गूंगे और बहरे देखे जाते हैं, सो उसका क्या कारण है?

वर्धमान—मेरे सखा! इसका भी उत्तर सुनो, जो लोग दूसरों की बुराई करते हैं या झूठ बोलते हैं वे तो गूंगे हो जाते हैं और जो बुराई सुनते हैं वे बहरे हो जाते हैं।

देवबालक नं. ४—(राजस्थानी भाषा में) अरे ओ सिद्धारथ पुत्र! म्हारे भी एक प्रश्न का उत्तर दे दीजो। मैं पूछवा चाहूँ के थांके बाबा को काई नाव है, मने तो मालुम कोनी?

वर्धमान—सुण सुण म्हारो सखो। म्हारे बाबा को नाव है राजा सर्वार्थ। समझा या कोनी समझा। म्हारा बाप जी तो राजा सिद्धार्थ है और वाका बापजी राजा सर्वार्थ है।

देवबालक नं. ५—(गुजराती भाषा में) अरे वाह! त्रिशलानन्दन तो आज्ञे सबने बतावा मा लागा छे तो मू पण एक प्रश्न जरूर पूछवा माटे व्याकुल छूँ। हे महावीर! तीर्थंकर भगवन्त ऋषभदेव ने दीक्षा क्यां लीधी थी?

वर्धमान—आ आ देवसखा! आ प्रश्न न उत्तर जानवा माटे थारी इच्छा छे तो सुण, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान ज्यां दीक्षा लीधी त्याना नाम छे-प्रयाग। वर्तमान मा त्यां “तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली” नाम तीर्थ बणी गया छे, त्यां अक्षयवटवृक्ष तले भगवान ऋषभदेव नी प्रतिमा ध्यानस्थ मुद्रा मा विराजमान छे।

देवबालक नं. ६—(अंग्रेजी में) ओ माई डियर फ्रैंड महावीर! आई वान्ट टू आस्क यू वन क्वेश्चन दैट हू आर काल्ड रीयल गॉड?

वर्धमान—दिस इस वेरी गुड क्वेश्चन मिस्टर देव! हू हैव डेस्ट्रायड एट कर्माज एण्ड अटेन्ड निर्वान पदवी दे आर काल्ड रीयल गॉड।

देवबालक नं. ७—(अवधी भाषा में) अरे ओ महावीर! जरा हमहू का एक बात बताय देव कि हमारे सौधर्मइन्द्र महाराज कौन अइसा पूरब जनम मा पुन्य किहिन हैं कि आप जइसे कितनेव तीर्थंकर भगवन्तन के इ जन्माभिषेक करे का सौभाग्य पावत हैं?

वर्धमान—हाँ हाँ देव महाराज! तुम तो अब अवधी भाषा मा पूछे लागेव, हमका यहू बोली बोलेक आवत है। तुम सौधर्म इन्द्र के पुन्य की बात जाना चाहत हौ ना, तौ सुनौ! ई हमरे इन्द्र राजा अपने पूरब जनम मा खूब भगवान की भक्ति करिन और फिर निर्दोष चारित्र का पालन करिन, तपस्या करिन, वही पुन्य के परताप से ई मनुष्य का चोला छोड़ के सौधर्म इन्द्र भये हैं।

देवबालक नं. ८—(बुंदेलखंडी भाषा में) अरे ओ लल्ला महावीर! ई इन्द्र महाराज कबै मोक्ष जैहें?

वर्धमान—बस, हिया से जब इनकी उमर पूरी हुई जई है तो एक मनुष्य का जनम लइकै, तपस्या करिकै सीधे इनका मोक्ष होय जई है।

देवबालक नं. ९—(नीमाड़ी भाषा में) महावीर! तुम जवान हुइन ब्याह करोगा कि नइ?

वर्धमान—हउं तो बड़ो हुइन दीक्षा लेऊंगा, ब्याव नि करूंगा।

देवबालकों का सामूहिक स्वर—जय हो महावीर! तुम्हारी जय हो। तुम्हारी जय हो। त्रिशला माता की जय हो, कुण्डलपुर नगरी की जय हो।

(इसी बीच माता त्रिशला उस बालसभा में आकर पुत्र महावीर का चुम्बन लेकर उनसे कहती हैं)–

त्रिशला—बेटा, चलो उद्यान में तुम्हें झूला झुलाऊँगी।

वर्धमान—चलो माँ, आपके साथ झूलने में तो कुछ और ही आनन्द आएगा।

(माता-पुत्र झूले पर बैठ जाते हैं और देव-देवियाँ उन्हें झुला रहे हैं। सामूहिक गीत गा-गाकर खूब मनोरंजन करते हैं।)

छंद—(सावनी गीत-अरे रामा.....)

अरे माता, तेरे गुणों की महिमा, जगत में छाई है भारी।

महावीर से तीर्थंकर की जननी।

महाराज सिद्धार्थ की धर्मपत्नी॥

अरे माता, कुण्डलपुर नगरी में, खुशियाँ छाई हैं भारी॥१॥

देवबालक नं. १—माता! मैं भी आपकी गोदी में बैठकर झूला झूलूँगा।

त्रिशला—हाँ, हाँ, आओ पुत्र! तुम भी मेरे साथ झूला झूलो। (झूलने लगते हैं)

देवबालक नं. २—माँ! मुझे भी दुलार करो ना!

त्रिशला—(पुचकारते हुए) आओ मेरे प्यारे बच्चों! तुम सभी के साथ तो आज मुझे बड़ा ही आनन्द आ रहा है।

(सभी देवबालक वहीं पास में आकर माता को घेरकर गाना गाने लगते हैं।)—

तर्ज—छोटे-छोटे ग्वाल.....

छोटे छोटे बालकों की प्यारी मइया।

छूने को चाहें हम तेरी पइयां॥

खेलें आज वीर संग हम छइयां।

कुण्डलपुर में बज रहीं शहनाइयां॥

आँख मिचौली खेलेंगे, वीर की लीला देखेंगे।

फिर माँ के आँचल में आकर, साथ में झूला झूलेंगे॥

देख देख खुश होगी मइया।

छूने को चाहें हम तेरी पइयां॥१॥

त्रिशला—सुनो बच्चों! अब मैं जा रही हूँ, तुम लोग खेलकर थोड़ी देर में घर आ जाना।

सभी बालक—ठीक है माँ, ठीक है। हम सन्मति वीर को लेकर जल्दी ही आपके पास आ जाएंगे।

(माता चली जाती है, पुनः सभी बालक महावीर के साथ कबड्डी, खो-खो, गेंद-फुटबाल आदि खेल खेलते

हैं। तभी एक देव भयंकर नाग का रूप धारणकर महावीर की परीक्षा लेने आता है। सभी बालक उसे देखकर डर के मारे पेड़ पर चढ़ जाते हैं और कुछ पेड़ से गिर-गिरकर इधर-उधर भागने लगते हैं।

(पेड़ पर चढ़े बालकों का दृश्य एवं इधर-उधर भागते बालक)

वर्धमान—(बालकों से) अरे! तुम सब लोग पेड़ पर क्यों चढ़ गये?

देवबालक नं. १—जल्दी से तुम भी ऊपर आ जाओ, वर्धमान! नहीं तो सांप काट लेगा।

देवबालक नं. २—अरे अरे, देखो! सांप उधर वर्धमान की ओर ही भाग रहा है, कहीं काट न ले।

देवबालक नं. ३—इन्हें कुछ हो गया तो हम माता के सामने क्या मुँह दिखाएंगे?

देवबालक नं. ४—(महावीर को जबर्दस्ती पेड़ पर चढ़ाते हुए) चलो चलो, ऊपर पेड़ पर बैठकर देखते हैं कि यह साँप कहाँ जाता है।

वर्धमान—क्या तुम्हें भी डर लग रहा है मित्रों! मैं तो इसे पछाड़ सकता हूँ।

देव बालक—नहीं मित्र! ऐसा साहस मत करना, यह साँप साधारण नहीं, भयंकर नाग है। इसके अंदर इतना जहर होता है कि एक फुंकार से ही मनुष्य के प्राण निकल जाते हैं।

एक बालक—यह क्या? यह साँप तो इसी पेड़ के ऊपर चढ़ा आ रहा है, क्या हम सभी की जान लेना चाहता है?

सभी बालक—अरे बचाओ, बचाओ! कुण्डलपुर के वनमाली! जल्दी आओ, नहीं तो यह नाग आज हम सबको खा जाएगा।

वर्धमान—(पेड़ की एक डाल पर खड़े होकर बीन बजाने लगते हैं) ऐ मेरे मित्र! सुनो, तुम किसी को काटना मत। अपनी शक्ति ही तुम दिखाना चाहते हो, तो मैं आता हूँ तुम्हारे पास। लेकिन मेरे मित्रों को तुम बिल्कुल मत सताना। (तुरंत पेड़ से लिपटे हुए नाग के फण पर पैर रखकर बालक वर्धमान नीचे उतर आए और सर्प को अपने हाथों में लेकर उसके साथ क्रीड़ा करने लगे।

देवबालक—अरे मित्र! छोड़ दो, छोड़ दो, इस सर्प को छोड़ दो। अन्यथा मौका पाते ही तुम्हारे ऊपर हमला कर देगा।

बालक नं. २—हे प्रभो! कितना धैर्य और बल है इस बालक में। मेरी तो डर के माने जान ही सूखी जा रही है।

बालक नं. ३—बस, यही मनाओ कि वर्धमान की रक्षा हो और माता त्रिशला तक हम इन्हें सुरक्षित पहुँचा सकें।

वर्धमान—मित्रों! तुम सभी निर्भय होकर नीचे उतर आओ, यह सर्प तुम लोगों का कुछ भी नहीं बिगाड़ेगा।

(अकस्मात् वहाँ संगम नामक देव प्रगट होकर कहने लगता है)–

संगमदेव—(नमस्कार मुद्रा में) जय हो जय हो, वर्धमान महावीर की जय हो।

वर्धमान—आप कौन हैं?

संगमदेव—मैं एक देव हूँ और मैं ही साँप का रूप धारण कर आपके पराक्रम की परीक्षा लेने आया था। हे वर्धमान! आज मैं आपको “महावीर” के नाम से अलंकृत कर आपको बारम्बार नमन करता हूँ। धन्य हैं आप। बोलो महावीर तीर्थंकर भगवान की जय।

सभी बालक—(नीचे उतरकर) हे महावीर! सचमुच में आपका बल-पौरुष सराहनीय है।

सामूहिक गीत—

सब मिलकर आज जय कहो, महावीर प्रभू की।

मस्तक झुकाकर जय कहो, श्री वीर प्रभू की॥

ज्ञानी बनो दानी बनो, बलवान भी बनो।

महावीर सम बन जय कहो, महावीर प्रभू की॥१॥

देकर परीक्षा नाग को, परास्त कर दिया।

हम सब भी मिल वन्दन करें, महावीर प्रभू की॥२॥

सामूहिक स्वर—जय बोलो, महावीर भगवान की जय।

झण्डारोहण गीत

तर्ज—फूलों सा.....

केशरिया झण्डा मेरा, जिनमत की पहचान है।
 साथिया निशान है, जैनियों की शान है, उत्सव का सम्मान है॥ टेक.॥
 जिनवर के मंदिर शाश्वत बने जो,
 उन सब पे भी ध्वज लहराते हैं।
 रत्नों से निर्मित फिर भी हवा के,
 चलने से वे ध्वज लहराते हैं।
 देव वहाँ जाते, कीर्ति प्रभु की गाते, जिनचैत्य की वंदना कर रहे।
 जय जय हो, जय जय प्रभो, केशरिया ध्वज धाम है॥ साथिया॥१॥
 आकाश की ऊँचाई को कहता,
 झण्डा यह देखो फहराया है।
 फूलों से गूँथा घंटी से गूँजा,
 जिनवाणी का स्वर लहराया है।
 महामहोत्सव में, आज के उत्सव में, “चन्दनामती” ध्वज वंदन करो।
 जय जय हो, जय जय प्रभो, केशरिया ध्वज धाम है॥ साथिया॥२॥

झण्डारोहण गीत

तर्ज—जनगणमन.....

जन-जन के हितकारी हो प्रभु, युग के आदि विधाता।
 ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तुम ही, वृषभेश्वर जग त्राता॥
 तुमने जन्म लिया जब,
 कण-कण धन्य हुआ तब।
 इन्द्र सिंहासन डोला,
 मेरु सुदर्शन पांडु शिला पर, सबने जय जय बोला।
 जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे॥१॥
 नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, हुए प्रथम अवतारी।
 पंचकल्याणक के हो स्वामी, सब जन मंगलकारी॥
 सब मिल जय प्रभु बोलो,
 जग के बंधन खोलो।
 गूँज उठे जग सारा,
 मुक्तिमार्ग बतलाते तुमको, नमन “चन्दनामति” का।
 जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे॥२॥

गर्भकल्याणक गीत

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
 चन्दा सूरज करें आरती, छुटते जनम मरण हैं॥
 सौ सौ बार नमन है॥
 ऋषभदेव जिनवर को युग का, सौ-सौ बार नमन है॥ टेक॥
 प्रभु का गर्भकल्याणक उत्सव, इन्द्र मनाया करते।
 छः महिने पहले कुबेर, रत्नों की वर्षा करते॥
 तीर्थकर माँ के आँगन में, बरसें खूब रतन हैं,
 सौ-सौ बार नमन है॥ ऋषभदेव.....॥१॥
 पिता उन्हीं रत्नों को जनता, में वितरित कर देते।
 रत्न प्राप्त कर श्रावक जन, निज भाग्य धन्य कर लेते॥
 धरती स्वर्णमयी बन जाती, पुलकित हुआ गगन है।
 सौ-सौ बार नमन है॥ ऋषभदेव.....॥२॥
 एक रत्न उनमें से प्रभु यदि, आज मुझे मिल जावे।
 तब मेरा भी भाग्य “चन्दनामती”, स्वयं खिल जावे॥
 तुम सम गर्भागम मेरा भी, होवे यही जतन है।
 सौ-सौ बार नमन है॥ ऋषभदेव.....॥३॥

जन्मकल्याणक गीत

आदीश्वर तेरी नगरी में धूम मची है-२।
 मची है, धूम मची है-२॥ आदीश्वर.।टेक.॥
 सुना है इन्द्र भी दर पे तिहारे आते थे,
 तेरे गुण को वे सभी मिल के यहाँ गाते थे।
 तूने जब जन्म लिया रत्नवृष्टि करते थे,
 तेरा जन्माभिषेक मेरु गिरि पे करते थे॥
 यादों में वही मानो तस्वीर बसी है॥ आदीश्वर.॥१॥
 इसी नगरी को अयोध्या जी सभी कहते हैं,
 यहीं जिनवर के सदा जन्म हुआ करते हैं।
 ऋषभ भगवान की यह जन्मभूमि कहलाई,
 पुनः श्रीराम की भी मातृभूमि कहलाई॥
 दुनिया में इसी नगरी की धूम मची है॥ आदीश्वर.॥२॥
 ज्ञानमति माँ तेरे दर्शन को यहाँ आ गई,
 तीन चौबीसी औ समवसरण बना गई।
 ब्राह्मी माँ के समान पितु की शरण आ गई,
 ऋषभ भगवान की छवि उनके हृदय भा गई॥
 “चन्दना” तेरी नगरी चहुँ ओर सजी है॥ आदीश्वर.॥३॥

पालना गीत

आदीश्वर झूले पलना, मरुदेवी लोरी गावें-२।
 मरुदेवी लोरी गावें, सब देवी उसे सुलावें॥ आदीश्वर॥
 कहाँ प्रभू को जनम भयो है-२
 कौन झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥
 नगरि अयोध्या में जनम भयो है-२,
 इन्द्र झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥
 कौन पिताश्री धन्य हुए हैं-२,
 किनने जायो ललना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥
 नाभिराय पितु धन्य हुए हैं-२,
 मरुदेवी जायो ललना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥
 स्वर्ग से इन्द्र-इन्द्राणी आये-२,
 सभी झुलाएं पालना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥
 माता पाकर धन्य हुई हैं-२,
 तीर्थकर सा ललना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥
 यही “चन्दनामति” मैं चाहूँ-२,
 पाऊँ प्रभु सा पालना, मरुदेवी लोरी गावें॥ आदी॥

राजदरबार का गीत

तर्ज—लिया प्रभू अवतार.....

लगा प्रभू दरबार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।
 अवध के राजकुमार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार॥
 आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।
 खुशियाँ अपरम्पार, जय जयकार.....॥ लगा....॥१॥
 पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हरषा-हरषा।
 बजे दुन्दुभी सार, जय जयकार.....॥ लगा....॥२॥
 नाभिराय ने ऋषभदेव का, राज्यपट्ट अभिषेक किया था।
 सबको हर्ष अपार, जय जयकार.....॥ लगा....॥३॥
 प्रभु ने राजनीति सिखलाई, धर्मनीति की बात बताई।
 धर्म ही जग में सार, जय जयकार.....॥ लगा....॥४॥
 आवो हम सब प्रभु गुण गावें, धन्य “चन्दनामति” हो जावें।
 सब जग मंगलकार, जय जयकार.....॥ लगा....॥५॥

दीक्षा के समय का गीत

तर्ज—दिल के अरमां.....

प्रभु जी सिद्धि कांता वरने चल दिये।
 संग में चार हजार राजा चल दिये॥ प्रभु जी.॥
 सारी धरती पर प्रभू का राज्य था।
 किन्तु प्रभु को हो गया वैराग्य था॥
 तज के सब संसार, वे तो चल दिये।
 संग में चार हजार राजा चल दिये॥१॥
 वन में जाकर नग्न दीक्षा धार ली।
 अवध की जनता दुःखी अपार थी॥
 पंचमुष्टी केशलुंचन कर लिये।
 संग में चार हजार राजा चल दिये॥२॥
 दीक्षा लेकर वे तो ध्यान मग्न हुए।
 बाकी सब राजा नियम से च्युत हुए॥
 सम्बोधा वनदेव ने नहीं मुनिमार्ग ये।
 संग में चार हजार राजा चल दिए॥३॥
 छह महीने के बाद चले आहार को।
 हुआ जहाँ आहार, धरा गजपुर की वो॥
 तभी “चन्दनामती” मुनी व्रत पल रहे।
 संग में चार हजार राजा चल दिए॥४॥

दीक्षा के समय का भजन

तर्ज—चल दिया छोड़.....

सब अथिर जान संसार, तजा घर बार, ऋषभप्रभु स्वामी।
 फिर नहीं किसी की मानी।
 पहले तो ब्याह रचाया था, सबको सब कुछ सिखलाया था।
 राजाओं ने भी राजनीति तब जानी-
 फिर नहीं किसी की मानी॥१॥
 इक दिन नीलांजना नृत्य हुआ, प्रभु का मन पूर्ण विरक्त हुआ।
 दे पुत्र भरत को राज्य बने वे ज्ञानी-
 फिर नहीं किसी की मानी॥२॥
 प्रभु नगरि अयोध्या छोड़ चले, पहुँचे प्रयाग के उपवन में।
 हुई केशलौंच से उनकी शुरू कहानी, फिर नहीं किसी की मानी॥
 फिर नहीं किसी की मानी॥३॥
 वटवृक्ष तले ध्यानस्थ हुए, केवलज्ञानी भी यहीं हुए।
 “चन्दनामती” यह तीर्थ उन्हीं की निशानी, फिर नहीं किसी की मानी॥
 फिर नहीं किसी की मानी॥४॥

अक्षय तृतीया (आहार गीत)

तर्ज—एक परदेशी.....

प्रभु ऋषभदेव का आहार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जयजयकार हो रहा॥
प्रथम प्रभू का प्रथम पारणा, प्रथम बार जब हुआ महल में॥ हुआ.....॥
पंचाशचर्य की वृष्टि हुई थी, चौके का भोजन अक्षय हुआ तब॥ अक्षय.....॥
भक्ती में विभोर सब संसार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जयजयकार हो रहा॥ प्रभू.....॥१॥
भरत ने नगरि अयोध्या से आकर, श्रेयांस का सम्मान किया था॥ श्रेयांस.....॥
दानतीर्थ के प्रथम प्रवर्तक, कहकर उन्हें बहुमान दिया था॥ बहुमान.....॥
राजा के महलों में मंगलाचार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जयजयकार हो रहा॥ प्रभू.....॥२॥
सब मिलकर अक्षय तृतीया को, आहार दान का पर्व मनाओ।
गुरुओं को आहार दे 'चन्दनामति', सबको गन्ने का रस भी पिलाओ॥.....रस भी पिलाओ॥
देखो कैसा धर्म का प्रचार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जयजयकार हो रहा॥ प्रभू.....॥३॥

समवसरण गीत

तर्ज—सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।टेक.॥
करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी॥
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था॥१॥
हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने॥
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था॥२॥
आज के इस महाकलियुग में नहीं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में॥
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था॥३॥
अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में "चन्दना" देखो प्रभू की गंधकुटि भी है॥
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था॥४॥

ज्ञानकल्याणक गीत

तर्ज — माई रे माई.....

आओ रे आओ खुशियाँ मनाओ, उत्सव सभी मनावो।

प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ॥

बोलो रे जय जय जय.....।

पुरिमतालपुर के उपवन में, ज्ञान हुआ जब प्रभु को।

इन्द्राज्ञा से धनपति ने, रच डाला समवसरण को॥

नभ में अधर विहार करें वे.....

नभ में अधर विहार करें वे, दर्शन कर सुख पाओ।

प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ॥

बोलो रे जय जय जय.....॥१॥

चरण कमल तल स्वर्णकमल की, रचना इन्द्र करे हैं।

सोने में होती सुगंधि है, यह साकार करे हैं॥

उन जिनवर के दर्शन करने.....

उन जिनवर के दर्शन करने, भव्य सभी आ जावो।

बोलो रे जय जय जय.....॥२॥

बीस हजार हाथ ऊपर है, समवसरण की रचना।

अंधे-लूले-लंगड़े-रोगी, चढ़कर कभी थकें ना॥

यही “चन्दनामती” प्रभू की,.....

यही “चन्दनामती” प्रभू की, महिमा सब मिल गाओ।

प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ॥

बोलो रे जय जय जय.....॥३॥



केवलज्ञान गीत

तर्ज—तुम तो ठहरे परदेशी.....

समवसरण दर्शन करो, तो भव्य कहलाओगे।
 यदि तुम अभव्य हुए, तो दर्श नहीं पाओगे॥ टेक.॥
 प्रभु जी की धर्म सभा, मैं जो भी आता है।
 तुम भी दिव्यध्वनि को सुनो, तो भव से तिर जाओगे॥ समवसरण.॥१॥
 गुंगे भी वहाँ जाकर, बोलने लग जाते हैं।
 तुम भी आज श्रद्धा करो, तो आत्मसुख पाओगे॥ समवसरण.॥२॥
 इन्द्रभूति गौतम का भी, मान गलित हुआ था वहाँ।
 देखो वही मानस्तंभ, मुक्तिपथ पाओगे॥ समवसरण.॥३॥
 दर्शनों के भावों से, मेढक ने देवगति ली।
 दर्शन करो तुम भी तो, देवगती पाओगे॥ समवसरण.॥४॥
 भव्य या अभव्यपने की, “चन्दना” परीक्षा करो।
 दर्शन से भव्यत्व की, श्रेणी में आओगे॥ समवसरण.॥५॥

सामूहिक नृत्य गीत

तर्ज—रंग बरसे भीगे चुनर वाली.....

रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके.....
 हो.....रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके.....हो.....।टेक.॥
 जग को होली का रंग सुहाता-२
 तुमको सुहाती ज्ञान गंग, जगत तरसे रंग छलके.....हो.....॥१॥
 जग को सुहाती, जयपुर की चुनरिया-२
 तुम्हें भाती चरित्र चुनरिया, जो मन हरषे रंग छलके.....हो.....॥२॥
 जग को सुहाते, रत्न के गहने-२
 तुम्हें भाते ज्ञान के गहने, रतन बरसे रंग छलके.....हो.....॥३॥
 जग को सुहाती, विषयों की लाली-२
 तुमको सुहाती जिनवाणी, जगत झलके रंग छलके.....हो.....॥४॥
 कहे “चन्दना” सब मिल आओ-२
 हम भी सुनें जिनवाणी, ज्ञान बरसे रंग छलके.....हो.....॥५॥

निर्वाणकल्याणक गीत

तर्ज —माई रे माई.....

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, मिलकर सभी मनाएँ।

आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ॥

प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।

कोड़ा-कोड़ी वर्ष पूर्व तिथि माघ कृष्ण चौदश थी।

अष्टापद से मोक्ष पधारे, ऋषभदेव जिनवर जी॥

तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ.....

तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ, दीप असंख्य जलाए।

आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ॥

प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय॥१॥

ऋषभदेव से महावीर तक, हैं चौबिस तीर्थकर।

इन सबका उपदेश एक ही, धर्म अहिंसा हितकर॥

जिओ और जीने दो सबको.....

जिओ और जीने दो सबको, यह संदेश सुनाएं।

आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ॥

प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय॥२॥

सिद्धक्षेत्र की भक्ती करके, हम भी सिद्ध बनेंगे।

जब तक सिद्ध नहीं बनते, तब तक प्रभु भक्ति करेंगे॥

सभी “चन्दनामती” खुशी से.....

सभी “चन्दनामती” खुशी से, यही भावना भाएँ।

आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ॥

प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय॥३॥



आद्य वक्तव्य

—गणिनी ज्ञानमती

श्री तीर्थकर भगवन्तो की रत्न, सुवर्ण, चांदी और पाषाण आदि की प्रतिमाओं को भगवान बनाने की जो विधि है उसी का नाम 'प्रतिष्ठा' है। उन प्रतिष्ठा के ग्रंथों में यह 'प्रतिष्ठातिलक' ग्रंथ यथानाम तथागुण वाला होने से सर्वश्रेष्ठ है। बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज ने इस ग्रंथ को अतीव प्रामाणिक कहते हुए ब्र. सूरजमल जी प्रतिष्ठाचार्य को इसी ग्रंथ के आधार से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने की आज्ञा दी थी। इसमें गर्भकल्याणक क्रियाएं एवं मोक्षकल्याणक क्रियाएं भी विस्तार से हैं जबकि श्री वसुविंदु-अपरनाम श्री जयसेन विरचित "प्रतिष्ठापाठ" ग्रंथ में गर्भकल्याणक एवं मोक्षकल्याणक विधि के मंत्र ही नहीं हैं। इसलिए यह 'प्रतिष्ठातिलक' ग्रंथ परिपूर्ण है, महान है।

'पंचामृताभिषेक पाठ' श्री पूज्यपाद स्वामी का बनाया हुआ छपा है। उसमें श्री पूज्यपाद स्वामी ने पूजा के प्रारंभ में और अन्त में जो विधि बताई है—प्रारंभ में सिद्धभक्ति का पाठ एवं अन्त्य में चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शांतिभक्ति को पढ़ने का विधान है, वही सर्वविधि इस प्रतिष्ठातिलक में 'पूजामुखविधि' एवं पूजा अन्त्यविधि के नाम से आई है। यही विधि नित्य पूजा में श्री वामदेवकृत भावसंग्रह में व अनेक 'श्रावकसंहिता' ग्रंथों में भी है इसलिए यह ग्रंथ मुझे अतीव प्रिय है।

इसमें यागमण्डल के १६ देवताओं की पूजा महत्त्वपूर्ण है—पाँच परमेष्ठी भूत-वर्तमान-भविष्यत्कालीन तीर्थकर ये ५+३=८ हुए। पुनः अर्हन्मंगललोकोत्तमशरण, सिद्धमंगल लोकोत्तमशरण, साधुमंगल लोकोत्तमशरण, केवलप्रणीतधर्ममंगल लोकोत्तमशरण, ये ४, अनंतर जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय ये ४, ऐसे ८+४+४=१६ ये १६ देवता माने हैं।

ऐसे ही इसमें अनेक विषय अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। मैं जब इस ग्रंथ को पढ़ने लगती हूँ तो एक-एक गद्य और पद्य इतने अधिक सरल और अर्थपूर्ण हैं, इतने अधिक प्रिय लगते हैं कि उनको छोड़ने का भाव ही नहीं होता है, ऐसा लगता है कि इन्हें पढ़ते ही रहें।

जो विद्वान्-प्रतिष्ठाचार्य विधिवत् मंत्रों का शुद्ध उच्चारण करते हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न करते हैं वे उन पाषाणादि प्रतिमाओं को साक्षात् भगवान बना देते हैं। इसलिए प्रतिष्ठाचार्यों को मंत्रादिविधि में प्रमाद नहीं करना चाहिए अन्यथा वे बहुत बड़े दोष के भागी होते हैं और तभी प्रतिष्ठा में अनेक विघ्नों की भी संभावना हो जाती है तथा प्रतिमाओं में भी चमत्कार नहीं आ पाता है अतः इस प्रतिष्ठा ग्रंथ के आधार से विस्तार से प्रतिष्ठाविधि करना चाहिए। बाह्य प्रदर्शन में अन्य विद्वान् को भार सौंपना चाहिए।

मैंने सन् १९९३ में हस्तिनापुर में पौष शु. १५ को इस 'प्रतिष्ठातिलक' में जो मराठी भाषा में विधि बतलाई गई थी, उसको हिन्दी भाषा में लिखना शुरू किया। अनंतर फाल्गुन कृ. ५ को हस्तिनापुर से अयोध्या तीर्थ की ओर मंगल विहार कर दिया। यह अयोध्या तीर्थकरों की शाश्वत जन्मभूमि है वहाँ जाकर भगवान ऋषभदेव की ३१ फुट उत्तुंग प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक कराने के भाव जाग्रत हुए थे एवं यह 'रामजन्मभूमि' 'तीर्थकर ऋषभदेव जन्मभूमि' के नाम से भी विख्यात हो, यह भावना प्रबल थी। यह मंगल प्रभावना कार्य वहाँ सन् १९९४ में माघ शुक्ला में सम्पन्न हुआ। पुनः चैत्र कृष्णा ९ को भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती के मंगल अवसर पर मैंने इसे पूर्ण किया था।

इसमें जहाँ एक मंत्र पूरे थे एवं दूसरे अधूरे थे, वहाँ पर उन्हें पूरे किये हैं एवं संशोधन में खासकर मंत्रों की शुद्धि में विशेष श्रम किया गया है। मैंने तो श्रम किया ही है, आर्यिका चंदनामती जी ने भी प्रूफ संशोधन में श्रम किया है। ब्रह्मचारिणी कु. सारिका ने भी अधिक श्रम किया है। संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें इसी प्रकार धर्मग्रंथ प्रकाशन में रुचि लेती रहें, यही मेरी प्रेरणा एवं उनके लिए मंगल आशीर्वाद है।

आप सभी प्रतिष्ठाचार्य विद्वान् इस प्रतिष्ठाग्रंथ के आधार से पाषाण प्रतिमाओं को भगवान बनाकर धर्मप्रभावना के साथ-साथ अपनी आत्मा को भी संस्कारित करते हुए परमात्मा बनाने के पुरुषार्थ में आगे बढ़ें, यही मेरी मंगलकामना है।

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-

भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।

ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः

स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥1॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं

मुक्ति-श्री-नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।

धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं

प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥2॥

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः

श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।

ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशति-

स्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥3॥

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता

श्रीतीर्थङ्करमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।

द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा

दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥4॥

ये सर्वोषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिङ्गता पञ्चये

ये चाष्टाङ्ग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ विधाश्चारणः।

पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः

सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥5॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे

चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो

निर्वाणाऽवनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥6॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा

जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।

इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे

शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥7॥

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो

यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।

यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः

कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ॥8॥

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं

कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणामुषः।

ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता

लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥

॥ इति मङ्गलाष्टकम् ॥



॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

॥ अथ श्रीनेमिचन्द्रदेवविरचितं ॥

(प्रथम-परिच्छेदः)

मंगलाचरण

इन्द्रवज्रा छंद— श्रीमत्त्रिलोकीतिलकं जिनेन्द्रं । स्वात्मप्रतिष्ठं सकलप्रतिष्ठम् ।

नत्वा प्रतिष्ठातिलकं प्रवक्ष्ये । संगृह्य सारं जिनसंहितानाम् ॥ १ ॥

श्रीजिनेन्द्रदेव अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतसौख्य और अनंतवीर्य इन अनंतचतुष्टयरूप अन्तरंगलक्ष्मी से, चौतीस अतिशय, आठप्रातिहार्य आदि समवसरण की विभूतिरूप बहिरंग लक्ष्मी से सहित हैं, तीन लोक के तिलक हैं। यद्यपि वे अपने स्वरूप में ही स्थित हैं तथापि अपने ज्ञान से तीनों लोकों को और अलोकाका । को भी जानने वाले होने से सकल भुवन में प्रसिद्ध हैं स्थित हैं व्याप्त हैं, ऐसे श्री जिनेन्द्रदेव को नमस्कार करके मैं (नेमिचन्द्रदेव) 'जिनसंहिता' ग्रन्थों का सार ग्रहण करके 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के ग्रन्थ को कहूँगा।

ग्रन्थ की प्रमाणता

अनुष्टुप् छंद— इन्द्रनन्दादियोगीन्द्रप्रतिष्ठाशास्त्रसंग्रहात् । पूर्वाचार्यप्रणीतं स्यादिदं तेन प्रमाण्यताम् ॥ २ ॥

इदं प्रतिष्ठाशास्त्रौघप्रधानमिति युज्यते । तत्सारसंग्रहात्मत्वाद्गन्थानां गंधयोगवत् ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठानां प्रधानत्वात् प्रतिष्ठातिलकं मतम् । प्रतिष्ठा स्थापना न्यासो जिनादेः प्रतिमादिषु ॥ ४ ॥

यह ग्रन्थ श्री इन्द्रनन्दि, वसुनन्दि, अकलंकदेव आदि योगीन्द्रों के प्रतिष्ठा शास्त्रों के आधार से संगृहीत होने से पूर्वाचार्यों द्वारा प्रणीत है, प्रमाणता को प्राप्त है अतः यह सभी प्रतिष्ठाशास्त्रों में प्रधान माना जाता है जैसे कि गंधों सुगंधित वस्तुओं के सारभाग का संग्रह करके गंधयोग अर्क इत्र बनाया जाता है। प्रतिष्ठाओं में प्रधान होने से यह ग्रन्थ 'प्रतिष्ठातिलक' माना गया है। अर्हत, सिद्ध, साधु, सरस्वती, श्रुतस्कंध यंत्र आदि मंत्र-यंत्र और यक्ष प्रियक्षी आदि की तदाकार प्रतिमाओं में स्थापना-निक्षेप करना उनके गुणों का न्यास करना आरोपण करना इसी का नाम प्रतिष्ठा है ॥ २-३-४ ॥

प्रतिष्ठा के भेद

व्यासमध्यमसंक्षेपभेदतः सा त्रिधा मता । तत्र व्यासप्रतिष्ठा तु पूर्वमत्राभिधीयते ॥ ५ ॥

प्रतिष्ठा मध्यमा पश्चात्संक्षिप्ता सा ततः परम् । सिद्धादीनां प्रतिष्ठातस्तत् उत्सवसंविधिः ॥ ६ ॥

तत्र व्यासप्रतिष्ठा सा पंचकल्याणलक्षणा । वक्ष्यतेऽद्य प्रपंचेन प्रयोगैर्लक्षणान्वितैः ॥ ७ ॥

व्यास **॥**विस्तार, मध्यम और संक्षेप के भेद से प्रतिष्ठा के तीन भेद हैं। उनमें से यहां सर्वप्रथम विस्तृत प्रतिष्ठा विधि को कहते हैं। इसके बाद मध्यम प्रतिष्ठा विधि को और संक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि को भी कहेंगे। अनंतर सिद्ध प्रतिष्ठा, आचार्य प्रतिष्ठा, श्रुतदेवी, यक्ष-यक्षी एवं यंत्रादि की प्रतिष्ठा विधि के पश्चात् महामहोत्सव विधि को भी कहेंगे। उनमें व्यास प्रतिष्ठा **॥**विस्तृत प्रतिष्ठाविधि पंचकल्याणक रूप है, उसे ही लक्षणों से सहित प्रयोगविधि बतलाते हुये विस्तार से कहेंगे ॥ ५॥ ७॥

बृहत् पंचकल्याणक प्रयोग का वर्णन

प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं दशमे दिवसे दिवा । नांदीनामांतरं शक्रप्रतिष्ठाविधिमाचरेत् ॥ ८ ॥

प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं नवमे दिवसे निशि । वक्ष्यमाणेन विधिना विदध्यादंकुरार्पणम् ॥ ९ ॥

ततः प्रभृति कुर्वन्तु शांतिहोमविधिं बुधाः । दातृसंघनृपादीनां विश्वविघ्नोपशान्तये ॥ १० ॥

द्वितीयेऽह्नि ततः कुर्यान्मंडपानां प्रसाधनम् । वास्तुदेवबलिं कृत्वा लघुशांतिपूर्वकम् ॥ ११ ॥

वेदीनिर्वर्तनं कुर्यात्तृतीये दिवसे ततः । सपंचकुंभविन्यासं सवास्तु बलिकर्म च ॥ १२ ॥

अंकुरार्पणतस्तुर्ये नवमे तीर्थतः पुरा । दिवसे विधिवत्कुर्याद् ध्वजारोहणसंविधिम् ॥ १३ ॥

तस्मिन्नेव दिने रात्रौ भेरीत्कनमाचरेत् । पंचमेऽह्नि ततः कुर्याज्जलयात्रामहोत्सवम् ॥ १४ ॥

गर्भावतारकल्याणं ततः षष्ठे दिने निशि । निर्वर्तयेन्महायंत्रसमाराधनपूर्वकम् ॥ १५ ॥

जन्माभिषेककल्याणं सप्तमे दिवसे दिवा । दीक्षाग्रहणकल्याणमष्टमे दिवसेऽह्नि ॥ १६ ॥

केवलज्ञानकल्याणं नवमे दिवसे ततः । कुर्यात्प्राणहेऽपराणहे तु देवं पुरि विहारयेत् ॥ १७ ॥

प्रतिष्ठातो द्वितीयेऽह्नि दिवा वासंतमुत्सवम् । वितन्वन्भव्यसंदोहो देवं पुरि विहारयेत् ॥ १८ ॥

तृतीयेऽह्नि ततः कुर्वन्सुगंधिसलिलोक्षणं । देवं विहारयेत्पुर्यां चतुर्थे दिवसे ततः ॥ १९ ॥

प्रातरैव हि निर्वाणकल्याणविधिमाचरेत् । ततः पूर्ववदानीततीर्थवाभिर्महोत्सवात् ॥ २० ॥

विधायैवभृतस्नानं एकादशमहं विभोः । कृत्वा संघं च संतर्प्य यथाशक्ति यथोचितम् ॥ २१ ॥

अवरोह्य ध्वजं रात्रौ धामाग्रे विनिवेशयेत् । निष्ठापितप्रतिष्ठं तं यष्टेन्द्रं बहु मानयेत् ॥ २२ ॥

सत्कृत्य शक्त्या भव्यास्तं सर्वं यान्तु यथायथम् । प्रतिष्ठाया विधिः सोयं प्रोक्तव्यः सविवक्षया ॥ २३ ॥

॥ तत्तत्कर्मविशेषस्तु प्रयोगे प्रतिपाद्यते ॥

इत्यनुक्रमः

प्रतिष्ठा दिवस **॥**केवलज्ञान दिवस से दशवें दिन पूर्व दिन में इन्द्रप्रतिष्ठाविधि संपन्न करें, इसका दूसरा नाम 'नांदी' विधि भी है। प्रतिष्ठादिवस से नवमें दिन आगे कही गई विधि से 'अंकुरारोपण' करें ॥ ८-९ ॥

उसी दिन से लेकर विद्वान् **॥**प्रतिष्ठाचार्य, दाता **॥**यजमान, चतुर्विधसंघ और राजा आदि के संपूर्ण विघ्नों की शांति के लिये 'शांतिहोम विधि' करें ॥ १० ॥

अंकुरारोपण के दूसरे दिन 'प्रतिष्ठामंडप' पांडाल आदि को सजावें, लघुशांतिपूर्वक वास्तुदेव बलि-पूजा विधि करें ॥ ११ ॥

अंकुरारोपण के तीसरे दिन वेदी बनवावें, उसमें पंचकुंभ विन्यास विधि, वास्तुविधि सहित बलिकर्म-पूजाविधि करें ॥ १२ ॥

अंकुरारोपण के चौथे दिन विधिवत् ध्वजारोहण विधि संपन्न करें ॥ १३ ॥

उसी रात्रि में भेरी-ताड़न विधि करें। अनंतर पांचवें दिन 'जलयात्रा' महोत्सव करें ॥ १४ ॥

पुनः अंकुरारोपण से छठे दिन महायंत्र समाराधन विधि करके रात्रि में गर्भकल्याणक विधि करें ॥ १५ ॥

अंकुरारोपण से सातवें दिन दिवस में जन्माभिषेक कल्याणक करें पश्चात् आठवें दिन दिवस में दीक्षाकल्याणक विधि संपन्न करें ॥ १६ ॥

अंकुरारोपण से नवमें दिन प्रातः केवलज्ञान कल्याणक विधि संपन्न करें अनंतर अपरान्ह में भगवान का नगर में विहार करावें, रथयात्रा निकालें। यह केवलज्ञान कल्याणक दिवस ही 'प्रतिष्ठादिवस' कहलाता है॥ ८ से १७॥

प्रतिष्ठा से दूसरे दिन केवलज्ञान कल्याणक से दूसरे दिन दिवस में सभी भव्यजन 'वासंत उत्सव' करते हुये भगवान की रथयात्रा निकालें।

प्रतिष्ठा दिवस से तीसरे दिन भगवान का सुगंधित जल से अभिषेक करके नगर में शोभायात्रा निकालें। पश्चात्तुर्थ दिवस प्रातः ही निर्वाणकल्याणक विधि करें। इसके बाद पूर्ववत् घटयात्रा विधि से तीर्थजल लाकर महोत्सवपूर्वक भगवान का 'अभ्युत्थान' महाभिषेक करके प्रभु की 'एकादशमह' एकादश प्रकारी पूजा करें। पुनः चतुर्विधसंघ आचार्य संघ की एवं आर्यिकासंघ की शक्ति के अनुसार पूजा करें।

भावार्थ जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप और फल ये आठ द्रव्य हैं। इन सबको मिलाकर अर्घ्य बनाकर चढ़ाना, पुनः शांतिधारा करके पुष्पांजलि वर्षा करना यही 'एकादशमह' एकादश प्रकारी पूजा है।

आचार्यसंघ की पूजा में अष्टद्रव्य से गुरु की एकादश पूजा करके उन्हें आस्त्र, पिच्छी, कर्मंडलु आदि देवें। आर्यिकाओं को भी पिच्छी, कर्मंडलु, आस्त्र तथा साड़ी रूप वस्त्र देवें। ऐलक-क्षुल्लक, ब्रू चारी-ब्रू चारिणी गणों को भी उनके योग्य वस्त्र देवें। अनंतर जो पांडाल के सामने ध्वजारोहण किया था, रात्रि में उसे अवतरणविधि से उतार लेवें और मंदिर के ऊपर उसे चढ़ा देवें। इस प्रकार यजमान प्रतिष्ठापूर्ण करने वाले ऐसे इन्द्र प्रतिष्ठाचार्य का बहुत प्रकार से सम्मान करें।

भावार्थ यहां प्रतिष्ठातिलक में प्रतिष्ठाचार्य को "इन्द्र" संज्ञा दी है और प्रतिष्ठा कराने वाले श्रावकों को यजमान कहा है। इस प्रकार सभी भव्यजन उन प्रतिष्ठाचार्य का शक्त्यनुसार सम्मान करके और यजमान का भी सत्कार करके अपने-अपनेस्थान चले जावें। इस तरह यह प्रतिष्ठा की विधि कही गई है। इस प्रतिष्ठा में जो विशेष क्रियाएं करना हैं उन्हें यथास्थान उस-उस की प्रयोग विधि में कहेंगे॥ १८-२३॥

इस प्रकार यह अनुक्रमणिका बताई गई है।

विशेषार्थ यहां इस प्रतिष्ठातिलक ग्रन्थ में विस्तृत पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में तेरह दिनों का कार्यक्रम निर्धारित किया है एवं केवलज्ञानकल्याणक दिवस को 'प्रतिष्ठादिवस' माना है। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है

प्रतिष्ठा दिवस केवलज्ञान कल्याणक दिवस से

१. दशवें दिन पूर्व इन्द्रप्रतिष्ठा आचार्य निमंत्रण विधि
 २. नवमें दिन पूर्व अंकुरारोपण
 ३. आठवें दिन पूर्व मंडप प्रसाधन पांडाल बनवाना, सजाना
 ४. सातवें दिन पूर्व वेदी निर्माण पंचकुंभविन्यास विधि
 ५. छठे दिन पूर्व ध्वजारोहण विधि, उसी दिन रात्रि में भेरीताडन विधि
 ६. पांचवें दिन पूर्व जलयात्रा महोत्सव (वेदी शुद्धिपूर्वक पांडाल में भगवान को विराजमान करना।)
 ७. चौथे दिन पूर्व महायंत्राराधना (यागमंडलविधान नवग्रह होम समेत)
- इसी दिन रात्रि में गर्भकल्याणक महोत्सव
८. तीसरे दिन पूर्व प्रातः जन्मकल्याणक
 ९. दूसरे दिन पूर्व दीक्षाकल्याणक
 १०. प्रथम दिवस प्रतिष्ठादिवस केवलज्ञानकल्याणक
 ११. द्वितीय दिवस वसंतोत्सव
 १२. तृतीय दिवस सुगंधित जलाभिषेक
 १३. चतुर्थ दिवस निर्वाण कल्याणक

अथवा

इस महापंचकल्याणक महोत्सव को तेरह दिन में करने के लिये कार्य

प्रथम दिन	इन्द्रप्रतिष्ठा विधि
द्वितीय दिन	अंकुरारोपण विधि
तृतीय दिन	मंडप प्रसाधन विधि

चतुर्थ दिन	वेदी निर्माण विधि
पाँचवें दिन	ध्वजारोहण विधि
छठे दिन	जलयात्रा विधि
सातवें दिन	यागमंडलाराधना और रात्रि में गर्भकल्याणक
आठवें दिन	जन्मकल्याणक
नवमें दिन	दीक्षाकल्याणक
दशवें दिन	केवलज्ञानकल्याणक
ग्यारहवें दिन	वसंतोत्सव विधि
बारहवें दिन	सुगंधित जलाभिषेक
तेरहवें दिन	मोक्षकल्याणक विधि

इस वसंतोत्सव में अनेक विधि के साथ भगवान का १०८ कलशों से अभिषेक और रथयात्रा करने का वर्णन है। बारहवें दिन अन्य विधि के साथ १०८ कलश सुगंधित जल से अभिषेक करके रथयात्रा महोत्सव का वर्णन है। इस प्रतिष्ठा ग्रन्थ में 'इंद्र' पद से प्रतिष्ठाचार्य और 'प्रतीन्द्र' पद से सहप्रतिष्ठाचार्य लिया है। आजकल तो प्रतिष्ठा महोत्सव में यजमान श्रावकों को सौधर्म ईशान आदि बारह इंद्र बनाने की एवं कुबेर बनाने की परंपरा है। प्रायः बोलियों से इनका चयन होता है। कहीं-कहीं पूर्व से ही न्यौछावर राशि निर्धारित की जाती है। इस ग्रन्थ में भगवान के माता-पिता बनाने का कोई उल्लेख नहीं है प्रत्युत कलश घड़े में माता की कल्पना बताई गई है। उसी में मातृपूजा, गर्भशोधन क्रिया आदि करायी जाती है।

वसुनंदि प्रतिष्ठापाठ में काष्ठ की पेटी में माता की कल्पना करने को कहा है। एक पंक्ति ऐसी भी आई है कि किन्हीं कुलांगना को माता बना सकते हैं।

२- अथ तावदिन्द्रप्रतिष्ठा-तद्यथा इन्द्र प्रतिष्ठा

अनुष्टुप् छंदः—अथ यष्टा प्रतिष्ठार्थं, लग्नं निश्चित्य पौर्तिकः । प्रागतो दशमेऽन्हीन्द्रं, सुलग्ने स्वगृहं नयेत् ॥ १ ॥

विधृताक्षतपात्रोद्धस्त्रीषु यान्तीषु चाग्रतः । साधर्मिकान्वितो गत्वा स पुरंदरमंदिरम् ॥ २ ॥

दत्त्वा फलं समुचितं नत्वा विज्ञापयेदिदम् । हंहो श्रीपूजकाचार्य प्रसीद शृणु मद्रचः ॥ ३ ॥

सर्वाभ्युदयनिःश्रेयसार्थसिद्धिनिबंधनम् । नित्यं नित्यमहं कर्तुं निर्माप्य जिनमंदिरम् ॥ ४ ॥

प्रतिष्ठापयितुं तत्र जिनबिंबमिहोत्सहे । समीहितमिदं सद्यः साधु साधयितुं मम ॥ ५ ॥

प्रसीद धर्मवात्सल्याज्जिनयज्ञविशारद । त्वत्सहायादयं धर्मो नूनं सिध्यति मेऽन्यथा ॥ ६ ॥

केवलज्ञान कल्याणक से दशवें दिन पूर्व यजमान प्रतिष्ठा कराने वाला श्रावक प्रतिष्ठा कराने के लिये सर्वप्रथम प्रतिष्ठा के लिये मुहूर्त निश्चित करके इन्द्र प्रतिष्ठाचार्य को अपने घर लावे। सो कैसे ?

हाथों में अक्षतादि से भरे पात्रों को लिये हुये ऐसी सौभाग्यवती महिलाओं को आगे करके साधर्मिकों के साथ वह श्रावक प्रतिष्ठाचार्य के घर जावे और उन्हें फल-श्रीफल भेंट कर निवेदन करे हे श्रीपूजकाचार्य! आप मुझ पर प्रसन्न होवो और मेरे वचन सुनो ! स्वर्गादिसुख और मोक्षसुख के लिये कारणभूत ऐसी सदा नित्यमहं नित्यपूजा करने के लिये मैंने जिनमंदिर बनवाया है। उस मंदिर में जिनप्रतिमा विराजमान करने के लिये उन जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराने का मेरे मन में उत्साह उत्पन्न हुआ है। हे जिनयज्ञविशारद ! धर्मवात्सल्य से तुम मुझ पर कपा करो। मुझे यह विवास है कि तुम्हारे सहयोग से यह मेरा धर्म कार्य अच्छी तरह संपन्न होवेगा ॥ ११५ ॥

क्व चेन्द्रसाध्ययज्ञोऽयं क्व चाहं क्षुल्लको जनः । किमत्र बहुनोक्तेन प्रतिष्ठविधिसाधनात् ॥ ७ ॥

धर्मं संपाद्य मामद्य कृतार्थ्य कृपापर । इत्युक्त्वा प्रणिपत्यांग्रौ प्रार्थयेत् सहायताम् ॥ ८ ॥

अथांगीकृतकार्यं तं भूत्या नीत्वा स्वमंदिरम् । चतुष्के तत्र रचिते कोणदीपचतुष्फके ॥ ९ ॥

विष्टरे रक्तवस्त्रेणाच्छादिते विनिवेश्य तम् । मंगलातोद्यसध्वाने सति रक्तप्रसाधनाः ॥ १० ॥

सुवासिन्यश्चतस्रोऽस्य वर्द्धयंतु सुचंदनम् । आशीर्मंगलपाठेषु पीतोद्धर्तनपूर्वकम् ॥ ११ ॥

आरोप्य तैलं तत्पीतखल्यापोह्य सुखाम्बुभिः । आसिच्यापादयेद्भूषावस्त्रस्रक्चंदनार्पणम् ॥ १२ ॥
 अथांतरीयकं सोत्तरीयं धृत्वा समाहितः । आचम्य प्रोक्ष्य दत्तार्घ्यं तर्पणं चापराजितं ॥ १३ ॥
 अष्टोत्तरं शतं जप्त्वा धृत्वा श्रीचंदनादिकम् । इंद्रो गजेन्द्रमारुह्य सप्रतीन्द्रो जिनालयम् ॥ १४ ॥
 गत्वा ततोवतीर्यारात्रविश्य जिनपुंगवम् । दर्शनस्तोत्रपाठेन त्रिः परीत्य त्रिधानतः ॥ १५ ॥
 पूजामुखं विधायातः स्नपनक्रमतो जिनम् । अभ्यर्च्य धृत्वा गंधांबु पीठयंत्रं समर्च्य च ॥ १६ ॥
 चैत्यादिभक्तिभिः स्तुत्वा देवं शेषं समुद्रहन् । धर्माचार्यं समभ्यर्च्य नत्वा विज्ञापयेदिदम् ॥ १७ ॥

अहो ! कहाँ सौधर्मेन्द्र के द्वारा साध्य यह महायज्ञ! और कहाँ मैं क्षुद्र-साधारण मनुष्य? बहुत कहने से क्या इस प्रतिष्ठाविधि को योग्य रीति से संपन्न कराकर हे दयाशील विद्वान्! आप मुझे कृतार्थ करें। ऐसा कहकर यजमान प्रतिष्ठाचार्य क्रोमस्कार-प्रणाम करके उनकी सहायता की प्रार्थना करें।

पुनः प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा प्रार्थना स्वीकार कर लेने पर विभूति के जुलूस के साथ उन्हें अपने घर लावे। घर में मंगल चौक के चारों कोनों पर दीपक रखकर उस पर पाटा रखे और उस पर लाल वस्त्र बिछाकर उसी पर उन्हें बिठाकर लाल वस्त्रों से सुसज्जित चार सौभाग्यवती महिलायें उन प्रतिष्ठाचार्य को उबटन लगाकर मंगलगीत गाते हुये मंगलस्नान करावें पुनः उन्हें नवीन धोती, दुपट्टा, माल्य, चंदन आदि प्रदान करें। वे प्रतिष्ठाचार्य भी उन वस्त्र आभूषण को धारण कर आचमन करके अर्घ्य देकर तर्पण करें अर्थात् संध्यावंदन विधिवत् करके १०८ बार महामंत्र का जाप्य करें अनंतर चंदन का तिलक लगाकर माला आदि धारण कर सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के साथ हाथी पर बैठकर जिनमंदिर के निकट पहुंचकर हाथी से उतरकर मंदिर में प्रवेश कर स्तोत्र पाठ पढ़ते हुये जिब्रेदेव की तीन प्रदक्षिणा दें।

मंदिर में पूजामुख विधि करके विधिवत् जिनैन्द्रदेव का अभिषेक करके गंधोदक ग्रहण करें। अष्ट द्रव्य से पूजा करें पुनः पीठयंत्र की पूजा करके चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति पढ़कर देवाधिदेव की स्तुति करके विसर्जनादिविधि करें। अनंतर शेषाक्षत मस्तक पर चढ़ाकर धर्माचार्य, दिगंबर जैनाचार्य की पूजा करके नमस्कार करके हाथ जोड़कर निवेदन करें। इस निवेदन में प्रतिष्ठाचार्य और यजमान मिलकर प्रार्थना करें ॥ ७ ॥ १७ ॥

इंद्रवज्रा छंदः

ऐदंयुगीनाखिलशास्त्रदृष्टेत्वं पंचभेदाचरणैकतान । आचार्यवर्यागमदेशितां नो, निरूपयौपासककार्यपूजाम् ॥ १८ ॥

यष्ट्याजकयोर्लक्ष्म, यज्ञदीक्षोचितं व्रतम् । भवतः श्रोतुमिच्छामि, भगवन् भव्यबांधव ॥ १९ ॥

त्वत्प्रासादात्प्रबुद्धार्हत्, पूजादर्लक्षणं स्फुटम् । जिनप्रतिष्ठामिच्छामः, कर्तुमेतेऽद्य बालिशः ॥ २० ॥

हे आचार्यवर्य! श्रीकुंदकुंदादि जो अर्वाचीन आचार्य हुये हैं उनके द्वारा लिखे गये शास्त्र वे ही आपके नेत्रस्वरूप हैं, आप पाँच प्रकार के आचार के पालन करने में पूर्ण तत्पर हैं, इसलिये आप श्रावकाचार में वर्णित, श्रावकों के लिये करने योग्य पूजाओं का स्वरूप हमें बतलाइये।

हे भगवन् ! हे भव्यबांधव ! यजमान और याजक का लक्षण और यज्ञदीक्षा के लिये उचित व्रतों को हम आपसे सुनना चाहते हैं।

आपके प्रसाद से अर्हंतदेव की पूजादि का स्पष्ट लक्षण समझकर आज हम अज्ञानीजन जिनैन्द्रदेव की प्रतिष्ठा करने की इच्छा कर रहे हैं ॥ १८- २० ॥

पूजा के भेद

अनुष्टुप्छंद इति विज्ञापनां श्रुत्वा कृपाचोदितमानसः । गंभीरमधुरोदारगिरा सूरिरिदं वदेत् ॥ २१ ॥

प्राक्कार्या धार्मिकैरिज्या सा चतुर्था सदार्चनम् । चतुर्मुखमहः कल्पद्रुमश्चाष्टान्हिकोऽपि च ॥ २२ ॥

तत्र नित्यमहो नाम शश्वज्जिनगृहं प्रति । स्वगृहान्नीयमानार्चा गंधपुष्पाक्षतादिका ॥ २३ ॥

चैत्यचैत्यालयादीनां भक्त्या निर्माणं च यत् । शासनीकृत्य दानं च ग्रामादीनां सदार्चनम् ॥ २४ ॥

या च पूजा मुनीन्द्राणां नित्यदानानुषंगिणी । स च नित्यमहो ज्ञेयो यथाशक्त्युपलक्षितः ॥ २५ ॥

महामुकुटबद्धैस्तु क्रियमाणो महामहः । चतुर्मुखः स विज्ञेयः सर्वतोभद्र इत्यपि ॥ २६ ॥

दत्वा किमिच्छकं दानं सम्राड्भिर्यः प्रवर्त्यते । कल्पद्रुममहः सोऽयं जगदाशाप्रपूरणः ॥ २७ ॥
 अष्टान्हिको महः सार्वजनिको रूढ एव सः । महानैन्द्रध्वजोऽन्यस्तु सुरराजैः कृतो महः ॥ २८ ॥
 बलिस्नपनमित्यन्यत्रिसंध्यासेवया समम् । उक्तेष्वेव विकल्पेषु ज्ञेयमन्यच्च तादृशम् ॥ २९ ॥
 एवंविधिविधानेन या महेज्या जिनेशिनाम् । विधिज्ञास्तामुशन्तीज्यां वृत्तिं प्राथमकल्पिकीम् ॥ ३० ॥
 अतो नित्यमहोद्युक्तैर्निर्माणं सुकृतार्थिभिः । जिनचैत्यगृहं जीर्णमुद्धार्य च विशेषतः ॥ ३१ ॥
 जिनयज्ञं करिष्याम इत्यध्यवसिताः किल । जित्वा दिशो जिनानिष्ट्वा निर्वृता भरतादयः ॥ ३२ ॥

॥ इति इज्यास्वरूपोपदेशः ॥

इस प्रकार की विज्ञापना सुनकर दया से जिनका चित्त आर्द्र है ऐसे आचार्य गंभीर, मधुर और उदार वचन बोलें।

पूजा के भेद **॥** हे भव्यात्माओं ! सुनो, आप धर्मात्माओं को पहले इज्या **॥** पूजा क्रिया करनी चाहिये। उस इज्या के चार भेद हैं **॥** सदाचर्न **॥** नित्यमह, चतुर्मुखमह, कल्पद्रुम और आष्टान्हिक। इनमें से पहले नित्यमह का लक्षण कहते हैं। हमेशा **॥** प्रतिदिन अपने घर से गंध, पुष्प, अक्षतादि सामग्री लेकर मंदिर में जाकर जो पूजा की जाती है, वह नित्यमह है। भक्तिपूर्वक जिनप्रतिमा, जिनमंदिर आदि का निर्माण कराना, मंदिर में नित्य ही पूजा होती रहे इसलिये ग्राम, खेत आदि का दान देना भी नित्यमह है।

अपनी शक्ति के अनुसार मुनिराजों की पूजा करते हुये उन्हें नित्य ही आहार दानादि देना यह भी 'नित्यमह' कहलाता है।
 महामुकुटबद्ध राजाओं के द्वारा जो महापूजा की जाती है उसे 'चतुर्मुखमह' कहते हैं इसका दूसरा नाम 'सर्वतोभद्र' भी है।
 सम्राट् चक्रवर्तियों के द्वारा 'किमिच्छिक' दान देते हुये जगत की आशा को पूर्ण करने वाली जो महापूजा की जाती है उसे 'कल्पद्रुम' पूजा कहते हैं। जो व्यक्ति जो कुछ भी मांगे, उसे वही देना इस तरह चक्रवर्ती के सिंहासन, छत्र आदि विशेष वस्तुओं को छोड़कर सभी को इच्छानुसार सब कुछ देना यह 'किमिच्छिकदान' कहलाता है।

आष्टान्हिक पूजा सर्व लोगों में प्रसिद्ध है अर्थात् नंदीश्वर पर्व के आठ दिनों में जो नंदीश्वर द्वीप के बावन जिनमंदिरों की या अन्य भी पूजायें की जाती हैं वह 'आष्टान्हिक' पूजा कहलाती है।

तथा इन्द्रों के द्वारा की गई महान् पूजा 'ऐन्द्रध्वज' कहलाती है। आज भी स्थापना निक्षेप से इन्द्र बनकर जो अनुष्ठान करते हैं उसे 'इन्द्रध्वज' पूजा कहते हैं यह पाँचवा भेद समझना चाहिये।

बलि-पूजा की एक विधि, स्नपन **॥** अभिषेक विधि इत्यादि अन्य भी त्रिकाल भक्ति आदि से जो भी पूजायें की जाती हैं उन सभी को इन्हीं पूजाओं के भेदों में गर्भित करना चाहिये। इस प्रकार की विधि-विधानपूर्वक जिनैन्द्रदेव की जो महापूजा की जाती है, विधि-विधान के ज्ञाता महासाधु उसे 'इज्या' नाम की प्रथम वृत्ति कहते हैं ॥

इसलिये 'नित्यमह' करने के लिये उद्यमशील सुकृतीजनों को जिनमंदिर का निर्माण कराना चाहिये और विशेषकर जीर्ण मंदिरों का भी उद्धार कराना चाहिये।

'जिनयज्ञ करूँगा' ऐसा विश्वास करने वाले भरतचक्रवर्ती आदि महापुरुषों ने षट्खंड पृथ्वी को जीतकर भगवान की पूजन करके निर्वाण प्राप्त किया है ॥ २१ **॥** ३२ ॥

इस प्रकार इज्या के स्वरूप का उपदेश पूर्ण हुआ।

प्रतिष्ठाचार्य का लक्षण

अनुष्टुप्छंदः **॥** देशजातिकुलाचारैः श्रेष्ठो दक्षः सुलक्षणः । त्यागी वाग्मी शुचिः शुद्धसम्यक्त्वः सद्ब्रतो युवा ॥ ३३ ॥

श्रावकाध्ययनज्योतिर्वास्तुशास्त्रपुराणवित् । निश्चयव्यवहारज्ञः प्रतिष्ठाविधिवित्प्रभुः ॥ ३४ ॥

विनीतः सुभगो मंदकषायो विजितेन्द्रियः । जिनेज्यादिक्रियानिष्ठो भूरिसत्त्वार्थबांधवः ॥ ३५ ॥

दृष्टसृष्टक्रियो वार्तः संपूर्णांगः परार्थकृत् । वर्णी गृही वा सद्बृत्तिरशूद्रो याजको दुराट् ॥ ३६ ॥

गुणिनोय्यगुणे व्यर्था गुणवत्यगुणा अपि । याजकेन्ये कृतार्थाः स्युस्तन्मृग्योऽसौ स्फुरद्गुणः ॥ ३७ ॥

आयुष्मंस्त्वयि वर्तते प्रोक्ता याजकसद्गुणाः । जिनाग्रयाजकतया सौधर्मेन्द्रोऽसि सोऽधुना ॥ ३८ ॥

इत्युच्चैर्वदता दत्तान्समंत्रान्गुरुणाक्षतान् । स्वीकृत्यांजलिनोपांशु मंत्रमुच्चार्य नामिते ॥ ३९ ॥

स्वमूर्ध्नि विन्यसेत्सोहं सौधर्मेन्द्र इति ब्रुवन् । (इन्द्रेण पुनरत्रैव 'ते' स्थाने 'मे' प्रयोजयेत्) ॥४०॥

गुरु निम्न मंत्र को पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य को आशीर्वाद देवें पुनः प्रतिष्ठाचार्य 'ते' के स्थान में 'मे' का प्रयोग कर स्वयं अपने मस्तक पर अक्षत-पुष्प क्षेपण करें।

मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरिहंताणं अनाहतपराक्रमस्ते भवतु भवतु ह्रीं नमः स्वाहा ।

एष मंत्रो गुरुणा प्रयोज्यः । इन्द्रेण पुनरत्रैव 'ते' स्थाने 'मे' इति प्रयोज्यम् ।

॥ इति इन्द्रस्थापनम् ॥

प्रतिष्ठाचार्य का लक्षण

देश, जाति, कुल और आचार इनसे श्रेष्ठ हो, दक्ष हो, सामुद्रिक २४ स्वकथित अच्छे लक्षणों वाला हो, त्यागी, व्रतसहित हो या दानी हो, वक्ता हो, पवित्र हो, उद्ध सम्यग्द नि से सहित हो, व्रती, अनुव्रती हो, युवा हो।

श्रावकाचार, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र और पुराण शास्त्रों का ज्ञाता हो, निश्चयनय और व्यवहारनय को जानने वाला हो, प्रतिष्ठाशास्त्र के अनुसार विधि-विधान का ज्ञाता हो, तेजस्वी हो, विनीत, सुभग-सर्वप्रिय, मंदकषायी, जितेन्द्रिय हो, जिनपूजा विधान ज्ञाता, स्वाध्याय आदि क्रियाओं में तत्पर रहने वाला हो, सभी जीवों में वत्सलभाव धारण करने वाला हो, जिसने प्रतिष्ठा आदि ओक बार देखी हैं और अनेक बार करायी हैं ऐसा हो, शुभकर्म-आजीविका करने वाला हो, अच्छे व्यापार आदि करने वाला हो, सर्व अवयवों से परिपूर्ण हो, परोपकारी हो, वर्णी-ब्रह्मचारी-सप्तमप्रतिमाधारी तक हो या सद्गृहस्थ हो, सदाचारी हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीनों वर्णों में से किसी भी वर्ण का हो, इन सभी गुणों से युक्त ही याजक, प्रतिष्ठा कराने वाला, द्युराट्, इन्द्र अर्थात् प्रतिष्ठाचार्य कहलाता है ।

यदि प्रतिष्ठाचार्य उपर्युक्त गुणों से युक्त नहीं है और यजमान श्रावकगण गुणी हैं तो भी व्यर्थ है और यदि प्रतिष्ठाचार्य अपने गुणों से युक्त है किन्तु यजमान आदि अपने-अपने गुणों से युक्त नहीं हैं तो भी प्रतिष्ठाचार्य गुणवान के निमित्त से सभी योग्य हो जाते हैं इसलिये प्रतिष्ठाचार्य उज्ज्वल गुणों से युक्त ही खोजना चाहिये ।

(दिगंबर जैनाचार्य अक्षत को हाथ में लेकर मंत्र पढ़कर वे अक्षत उस यजमान को देवें और यजमान आगे कथित वक्य बोलकर प्रतिष्ठाचार्य को देवे । यजमान बोले अर्थात् यहाँ सौधर्मेन्द्र से प्रतिष्ठाचार्य को लिया है ।

हे आयुष्मन् ! शास्त्र में कथित सभी याजक के गुण आपमें विद्यमान हैं, जिनेन्द्रदेव की पूजा विधि में आप अग्रणी हैं अतः इस समय “आप ही ‘सौधर्मेन्द्र’ प्रतिष्ठाचार्य हो” इस प्रकार उच्चस्वर से बोले और गुरु के द्वारा मंत्रोच्चारणपूर्वक दिये गये अक्षत अपनी अंजुलि में लेकर प्रतिष्ठाचार्य को दे देवें ॥३३ से ४०॥ गुरु, दिगंबराचार्य या प्रमुख या जो भी प्रमुख साधु-साध्वी हों वे मंत्र बोले, प्रतिष्ठाचार्य स्थापना मंत्र

प्रतिष्ठाचार्य स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा णमो अरिहंताणं अनाहतपराक्रमस्ते भवतु भवतु ह्रीं नमः स्वाहा ।

पुनः प्रतिष्ठाचार्य इसी मंत्र को अंतर में बोलते हुये ते के स्थान में 'मे' का प्रयोग करके मस्तक को झुकाकर अपने मस्तक पर उन अक्षत को गुरु से क्षेपण करावें या स्वयं

“सोऽहं सौधर्मेन्द्रः प्रतिष्ठाचार्यः” ।

ऐसा बोलते हुये अपने मस्तक पर अक्षत डालें ॥

॥ इति इन्द्रस्थापनम् ॥

यजमान का लक्षण

पाशिकाचारसंपन्नो धीसंपद्बन्धुबन्धुरः । राजमान्यो वदान्यश्च यजमानो मतः प्रभुः ॥ ४१ ॥

आयुष्मन्स्त्वयि वर्तते यजमानगुणा अमी । यज्ञेऽस्मिन्यजमानत्वं साधु मन्यामहे त्वयि ॥ ४२ ॥

इत्युच्चैर्वदता दत्तान्समंत्रान्गुरुणाक्षतान् । स्वीकृत्यांजलिनीषांशु मंत्रमुच्चार्य नामिते ॥ ४३ ॥

स्वमूर्ध्नि विन्यसेद्यज्ञे दीक्षितोऽहमिति ब्रुवन् । प्रतिपद्येत चातीर्थात्सैकभक्तं सुनिर्मलं ॥ ४४ ॥

यजमान प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरिहंताणं अनाहतपराक्रमस्ते भवतु भवतु ह्रीं नमः स्वाहा ।

एष मंत्रो गुरुणा प्रयोज्यः । यष्ठा पुनरत्रैव तेऽस्थाने मे इति प्रयोज्यम् ।

(इस मंत्र का प्रयोग गुरु करें पुनः यजमान प्रतिष्ठा कराने वाले श्रावक 'ते' के स्थान में 'मे' का प्रयोग करके मंत्र पढ़ें ।)

॥ इति यजमानस्थापनम् ॥

अथ याजकयजमानयोर्यज्ञदीक्षोचितव्रतादिविधेरुपदेशः ॥

प्रतिष्ठाचार्य और यजमान के दीक्षोचित व्रतादि का उपदेश

जो पाशिकाचार से संपन्न हो, एकदेश हिंसा का त्यागी हो, बुद्धिमान, संपत्तिवान् और बंधुजनों से युक्त हो, राजमान्य हो, दानी हो और प्रभु हो ऐसा यजमान माना गया है ।

'हे आयुष्मन् ! तुम्हारे में यजमान के गुण विद्यमान हैं इस प्रतिष्ठा में हम तुम्हें अच्छा यजमान मानते हैं' कहते हुये आचार्यवर्य मंत्रोच्चारणपूर्वक उसे अक्षत देवें । यजमान भी शिर झुकाकर अंजलि में अक्षत लेकर अपने मस्तक पर डालते हुये वक्ष्य करे कि मैं यज्ञविधि में गुरु के द्वारा दीक्षित हो रहा हूँ । अनंतर याजक और यजमान दोनों ही अर्थात् प्रतिष्ठाचार्य सौख्यधर्मेन्द्रादि सभी प्रतिष्ठाविधिपूर्ण होने तक जुद्ध भोजन एक बार करने का नियम लेंवें ॥ ४१॥४४॥

भावार्थ ॥ वर्तमान में एक बार अन्न का भोजन, एक बार फलाहार एवं औषधि, जल आदि की छूट रखते हैं, रात्रि में चतुर्विधाहार का त्याग करा दिया जाता है ।

ब्रह्मचर्यं विविक्ते च स्वप्यात्सद्भावनारतः । शलाकापुरुषाख्यानध्यानस्वाध्यायभागभवेत् ॥ ४५ ॥

परमेष्ठिश्रुतगुरुनेव वंदेत वर्जयेत् । साधर्मिकसजातीयैरपि पंक्तिं च भोजने ॥ ४६ ॥

तदा प्रभृति यष्ठापि ब्रह्मयाजकवच्चरेत् । आयज्ञांतं विशेषेण तदाज्ञां न च लंघयेत् ॥ ४७ ॥

प्रतिष्ठासूचकैर्लेखैः संघं देशांतरादपि । आकारयेद् व्रजेद् द्रष्टुं तां संघोऽपि यथाबलम् ॥ ४८ ॥

वेदीनिवेशादारभ्य यावद्यज्ञान्तमात्मवान् । धर्मकारी गुणौचित्यकृपादानपरो भवेत् ॥ ४९ ॥

गर्भरूपो विनेयोऽस्मीत्याक्षितो गुरुभविदेत् । आकृष्टो याचकैः स्वेष्टदाने वोऽस्मि कियानिति ॥ ५० ॥

याजका यष्टवत्सर्वे श्रावकैरपरैरपि । संभाव्या भक्तितः संघोऽप्याराध्यो धर्मकाम्यया ॥ ५१ ॥

दातृसंघनृपादीनां शांत्यै स्नात्वा समाहिताः । शांतिमंत्रैर्जपं होमं कुर्युरिन्द्रा दिने दिने ॥ ५२ ॥

देशकालानुसारेण व्यासतो वा समासतः । कुर्वन्कृत्स्नां क्रियां शक्रो दातुश्चित्तं न दूषयेत् ॥ ५३ ॥

यथोक्तनिगदद्रव्यैः प्रयुक्तेर्व्यासतः क्रिया । मंत्रमात्रयथाप्राप्तद्रव्यैश्चेष्टा समासतः ॥ ५४ ॥

॥ इति कर्तव्योपदेशः ॥

प्रतिष्ठापर्यंत प्रतिष्ठाचार्य, सहप्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचर्य का पालन करें, एकांत स्थान में शयन करें, सद्भावना में तत्पर हुये त्रेसठ शलाका पुरुषों के चरित को पढ़ें, ध्यान और स्वाध्याय आदि में समय व्यतीत करें । पंचपरमेष्ठी की स्तुति और गुरुओं की वंदना करें । साधर्मिक और सजातीय लोगों के साथ भी पंक्ति में बैठकर भोजन न करें अर्थात् एकाकी शुद्ध भोजन करें ।

तब से लेकर यजमान भी प्रतिष्ठाचार्य के समान ही प्रतिष्ठापर्यंत सारे नियमों का पालन करें । विशेष बात यह है कि वे प्रतिष्ठाचार्य की आज्ञा का उलंघन न करें ।

प्रतिष्ठासूचक लेखों से कुंकुमपत्रिका सर्वत्र भेजकर और पत्र आदि से भी सबको आमंत्रित करें । संघ को भी बुलावें और चतुर्विध संघ भी उस प्रतिष्ठा में सान्निध्य देने के लिये पधारें । वेदी रचना से लेकर प्रतिष्ठापूर्तिपर्यंत यजमान शांतपरिणामी, धर्मकार्य में निष्ठ, गुणीजनों में उचित आदर और अन्यजनों में भी वात्सल्य भाव से सहित दान आदि देते हुये क्रियाओं को संन करे ।

यदि गुरुओं ने कुछ गलती टोकी तो उनके सामने विनय से बोलें, कि मैं आपका अज्ञानी शिष्य हूँ याचक लोग अधिक कुछ मांगे तो बोले कि मैं आप लोगों को इच्छित वाक्यों से अपनी लघुता प्रदर्शित करता हूँ । इस प्रकार सबको प्रसन्न रखें ।

अन्य श्रावक भी यजमान के समान प्रतिष्ठाचार्यों का सम्मान करें और धर्म की इच्छा से साधुसंघ की भी भक्तिपूर्वक आराधना करते रहें ।

प्रतिष्ठाचार्य भी सहयोगी विद्वानों के साथ प्रतिदिन दाता, साधुसंघ और राजा आदि की शांति के लिये स्नानादि से शुद्ध हो

एकाग्रमना होकर शांतिमंत्रों से जाप्य और होम चालू रखें। देश और काल के अनुसार विस्तार से या संक्षेप से संपूर्ण क्रियाओं को करते हुये प्रतिष्ठाचार्य दाता के चित्त को दूषित न करें। **॥** कष्ट न पहुंचावें।

प्रतिष्ठाशास्त्र में कथित सर्वद्रव्यों से प्रतिष्ठा करना यह विस्तृत प्रतिष्ठा है और मंत्रमात्र से तथा जितनी सामग्री हो उतने में ही संपूर्ण क्रिया करना **॥** पूरे मंत्रों का प्रयोग करते हुये संक्षिप्त सामग्री से प्रतिष्ठा करना यह संक्षिप्त प्रतिष्ठाविधि है ॥४५॥ ५४॥

इस प्रकार प्रतिष्ठाचार्य एवं यजमान के कर्तव्यों का वर्णन हुआ।

अर्हदेवयज्ञदीक्षांगीकारः (यज्ञदीक्षा स्वीकार करें)

दृग्बोधदेशव्रतरूपरत्न - त्रयं भवेन्मे कलितैकभक्तम् ।

आकर्मिका ब्रह्मनिवृत्तियुक्तं, स्याद्यज्ञदीक्षाविधिना विशिष्टम् ॥ ५५॥

सम्यग्दर्शन, ज्ञान और एकदेशचारित्ररूप रत्नत्रय **॥** एक बार भोजन, प्रतिष्ठासमाप्तिपर्यंत ब्रह्मचर्यव्रत ये सर्व मेरी क्रियायें यज्ञदीक्षाविधि से विशिष्ट होंगे ॥ ५५ ॥

दीक्षाचिन्होद्धहनम् (यज्ञदीक्षा के चिन्ह)

रत्नत्रयांगमुपवीतमुरस्यथांगं देशव्रतस्य च सुकंकणमत्र हस्ते ।

ब्रह्मव्रतांगमधुना स्वकटौ च मौंजीं धृत्वारभे जिनमखं मखदीक्षितोऽहम् ॥ ५६॥

(इस श्लोक को बोलकर जनेऊ, कंकणबंधन और कमर में कंदोरा **॥** करधनी का धागा बाँधें।)

मैं रत्नत्रय के चिन्हस्वरूप यज्ञोपवीत को अपने वक्षस्थल पर धारण करता हूँ। देशव्रतों के चिन्हस्वरूप यह कंकण हाथ में धारण करता हूँ। ब्रह्मचर्यव्रत का चिन्ह ऐसी यह मौंजी मैं अपनी कमर में पहनता हूँ। इस प्रकार से यज्ञदीक्षा धारण करें। मैं जिनेन्द्रदेव की पूजन प्रारंभ करूँगा ॥ ५६ ॥

ॐ वज्राधिपतये आँ हाँ अः ऐं हां व्हः श्रूं हूं क्षः इंद्राय संवोषट् ।

अनेन एकविंशतिवारानात्मानमधिवासयेत् ॥

(उपर्युक्त मंत्र को प्रतिष्ठाचार्य २१ बार बोलकर अपनी आत्मा को इंद्र **॥** प्रतिष्ठाचार्य बनावें)

॥ इति यज्ञदीक्षाविधानम् ॥

नांदीमंगलविधि प्रारंभ

नत्वा गुरुं ततः कुर्याद्यंत्रदेवविसर्जनम् । द्वारपालबलिं ब्रह्मबलिं दिक्पालसद्बलिम् ॥ ५७ ॥

बलिं चापददेवानां विधिना श्रीबलिं ततः । मूलवेराग्रतः (वेद्यग्रतः) स्थित्वा स्वेष्टार्थप्रार्थनामतः ॥ ५८ ॥

शुभानुध्यानवचनमर्हदेवविसर्जनम् । क्षमापणं च पंचांगनतिमापृच्छनं गतेः ॥ ५९ ॥

कृत्वैवं क्रमतः शक्रः स्वं विधेयं समापयेत् । यजमानस्ततो नत्वा जिनाधीशं श्रुतं गुरुम् ॥ ६० ॥

इंद्रादीन्वगृहे नीत्वा भोजयित्वा यथोचितम् । सत्कृत्य वस्त्रभूषाद्यैः प्रतिवन्देत् सादरम् ॥ ६१॥

अनंतर आचार्य देव को नमस्कार कर यंत्रदेव का विसर्जन करें पुनः द्वारपाल बलि, ब्रह्मबलि, दिक्पालबलि, आपद्देवताबलि और श्रीबलि करें। इन सभी की विधि आगे कहेंगे। अनंतर मूलवेदी के सामने खड़े होकर इष्टप्रार्थना करें। मेरे मन में शुभ भावना उत्पन्न होवे, ऐसा बोलकर अर्हत देव का विसर्जन करें, क्षमापण करके पंचांग नमस्कार करके घर जाने की आज्ञा मांगें। इस प्रकार क्रम से सारी विधि करके प्रतिष्ठाचार्य अपने कर्तव्य को पूर्ण करें। अनंतर यजमान भी जिनेन्द्रदेव को, शास्त्र को और गुरु को नमस्कार करके प्रतिष्ठाचार्य आदि को अपने घर ले जाकर भोजन करावें पुनः वस्त्र, आभूषण आदि से सत्कार करके उन्हें साब प्रणाम करें ॥५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥

रात्रौ दीपोत्करेणार्हद्धामचत्वरशोधनम् । कारयेदिति निर्दिष्टमिन्द्रस्थापनलक्षणम् ॥ ६२ ॥

इदमेव विदुः केचिन्नांदीमंगलसंज्ञितम् । इमं नित्यमहं प्राहुर्यज्ञदीक्षाविवर्जितम् ॥ ६३ ॥

उसी दिन रात्रि में दीपमालिका सजाकर जिनमंदिर का आंगन सुशोभित करें। इस इन्द्रस्थापनलक्षण **॥** प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण को ही कोई **॥** कोई आचार्य 'नांदीमंगल' ऐसा नाम देते हैं। यक्षदीक्षा विधि से रहित 'नित्यमह' यह नाम भी माना है ॥६२॥ ६३॥

॥ इति नांदीमंगलविधिः ॥



(मंत्र स्नान—संध्यावन्दन विधि)

अथेन्द्रः स्थापनानन्तरं—

(प्रतिष्ठाचार्य आदि सभी जलस्नान के अनन्तर आगे कही विधि से मंत्रस्नान करें। इसे 'संध्यावन्दन' विधि भी कहते हैं। स्नान के ३ भेद हैं । जलस्नान, मंत्रस्नान और व्रतस्नान। 'संध्यावन्दन' यह मंत्रस्नान है और गुरु से अणुव्रत आदि व्रत लेना व्रतस्नान है।)

ॐ ठं स्वरावृतं तोयमंडलद्वयसंवृतम् । तोये न्यस्याग्रतर्जन्या तेनानुस्नानमाचरेत् ॥ १ ॥

इति जलयंत्रोपस्कृत्यजलैरमृतमंत्रेणानुस्नानं कृत्वा सांतरीयोत्तरीयं धारयेत् ।

(एक पात्र में पानी लेकर उसमें जल यंत्र रखें या जलमंडल बनावें उसकी विधि आगे दी है। नीचे लिखे इन मंत्रों से जल सिंचित करके धोती-दुपट्टा आदि पर जल छिड़के।)

१. ॐ श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीये धारिणी हं हं ॐ ॐ वं वं सं सं तं तं परिधानीयोत्तरीये धारयामि स्वाहा । सांतरीयोत्तरीयवस्त्रधारणम् । (धोती दुपट्टा धारण करें अर्थात् उन पर जल छिड़कें।)

२. ॐ क्ष्वीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । भूमिशोधनमंत्रः ॥ (भूमि पर जल छिड़कें)

३. ॐ ह्रीं अहं क्षं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा । आसनस्थापनं । (आसन बिछावें)

४. ॐ ह्रीं अहं ह्रूं ह्रूं णिसिहि णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा । उपवेशनम् ॥ (आसन पर बैठें)

५. ॐ मम समस्तपापक्षयार्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं पौर्वाण्हिकसंध्याचरणं करिष्ये । इति संकल्पः ।

(इस प्रकार प्रतिज्ञा करें)

अनुस्नान मंत्र

जटान्तौ बिन्दुसंयुक्तौ कला वं पं सुवेष्टितौ । सोममध्ये लिखित्वाभोमध्ये स्नानादिकं चरेत् ॥

यंत्रमिदं जले तर्जन्याग्रेण विलिखेत् । (उपर्युक्त श्लोक बोलकर तर्जनी से थाली में यंत्र लिखें, केशर से)

(रकेवी में अर्धचंद्राकार बनाकर मध्य में 'ॐ' अर्धचंद्र के दोनों कोनों पर 'ॐ ठं' ये अक्षर लिखकर चारों तरफ १६ स्वर और वं पं लिखें।)

१. इवीं क्ष्वीं हं सः । सुरभिमुद्राबीजानि । (इस मंत्र से यंत्र को यह सुरभिमुद्रा दिखावें)

२. ॐ ह्रूं ह्रीं हूं ह्रैं हः अ सि आ उ सा इदं समस्ततीर्थनदीजलं भवतु स्वाहा ॥ (इस मंत्र से जलयंत्र में पानी डें।)

३. ॐ ह्रीं लां पं व्हः पः इवीं क्ष्वीं स्वाहा । इत्यपस्त्रिः पिबेत् । (शंखाकार हाथ में तीन बिंदु जल लेकर मुख पर डालें।)

४. ॐ ह्रीं इवीं । इत्यास्यं संवृत्य अंगुष्ठमूलेन त्रिः प्रमृज्यात् । (मुखबंद कर मंत्रित जल से अंगूठे से तीन बार मुख पोंछें)

५. क्ष्वीं । इति तर्जन्यादित्रयेण आस्यमुपस्पृशेत् । एतच्चतुष्टयं संभूय आस्यस्पर्शनम् ।

(क्ष्वीं-इस मंत्र को बोलकर तर्जनी आदि तीन अंगुलियों से मंत्रित जल से मुख स्पर्श करें)

६. वं मं । इति बीजद्वयेन अंगुष्ठानामिकाभ्यां चक्षुर्द्वयस्पर्शनम् । (वं मं बीजाक्षर बोलकर अंगूठा और अनामिका से दोनों नेत्र स्पर्श करें)

७. हं सं । इति बीजद्वयेन अंगुष्ठदेशिनीभ्यां नासापुटद्वयस्पर्शनम् ॥ (हं सं बीजाक्षर से अंगूठा और देशनी से दोनों नाक को स्पर्श करें)

८. तं पं । इति बीजद्वयेन कनिष्ठांगुष्ठयुग्मेन कर्णद्वयस्पर्शनम् । (तं पं बीजाक्षर से कनिष्ठा और अंगूठा से क्रम से दोनों कान का स्पर्श करें)

९. द्रां । इति बीजेन अंगुष्ठेन नाभिस्पर्शनम् । (द्रां बोलकर अंगूठा से नाभि का स्पर्श करें)

१०. द्रीं । इति बीजेन तलेन हृदयस्पर्शनम् । (द्रीं बोलकर हस्त तल से हृदय का स्पर्श करें)

११. हं सः । इति बीजद्वयेन कराग्रेण भुजाग्रद्वयस्पर्शनम् । (हं सः बीजाक्षर से हाथ के अग्र भाग से क्रम से दोनों भुजाओं का स्पर्श करें)

१२. स्वाहा । इति बीजपदेन सर्वांगुलिभिः शिरः स्पर्शनम् । (स्वाहा इस बीजाक्षर को बोलकर सर्व अंगुलियों से शिर का स्पर्श करें)

एतानि द्वादशांगस्पर्शनानि पृथक्पृथग्भः स्पर्शनपूर्वकाणि कर्तव्यानि । इति द्वादशांगस्पर्शनविधिः इत्याचमनविधानम् ।

इन द्वाद । अंगों का स्पर्शन पथक्पृथक् जल स्पर्शन पूर्वक करना चाहिये ।

पूरकं विधाय अंगुष्ठानामिकाभ्यां नासाविवरद्वयं संवृत्य कुंभकं कुर्वन्नेव—

प्राणायामविधि

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं । इति गाथांशद्वयं जप्त्वान्ते रेचकं कुर्यात् । अनेनैव विधिना

णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं । इति गाथांशद्वयं तथा

णमो लोए, सब्बसाहूणं । इत्येकांशं जपेत् ।

॥ इति प्राणायामविधिः ॥

(पूरक विधि से अंगूठा और अनामिका से नाक के छिद्र को बंद कर कुंभक करते हुये मंत्र के दो पदों को धीरे, अन्त में रेचक विधि करें। ऐसे ही दो पदों के उच्चारण में भी पूरक, कुंभक, रेचक विधि है पुनः 'णमो लोए सब्बसाहूणं' भी तीनों विधि हैं। 'णमो अरिहंताणं' बोलते हुये श्वांस को खींचे यही पूरक है अनन्तर कुछ सेकेंड अंदर से श्वांस रोके रखकर कुंभक है अनन्तर 'णमो सिद्धाणं' बोलते हुये श्वांस को छोड़ें यह रेचक है। ऐसे ही णमो आइरियाणं में पूरक व कुंभक अनन्तर णमो उवज्झायाणं बोलते हुये रेचक होता है। तथैव णमो लोए में पूरक कुंभक करके 'सब्बसाहूणं' में रेचक प्राणायाम होता है। यह सब मन से ही होता है उच्चारणमें नहीं बनता है।

वांस की वायु को मस्तक तक पहुंचाना पूरक है, वायु को नाभिस्थान में लाकर रोकना कुंभक है और रुकी वायु को धीरे-धीरे बाहर निकालना रेचक है।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं झ्रय द्रावय स्वाहा ।

इति प्रोक्षणमंत्रः ।

(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुली मिलाकर आगे करके जल में डुबो-डुबो कर अपने सर्वांग पर जल छिड़कना चाहिये।)

ॐ झं वं ढः पः हः स्वाहा । दिगंजलिः । (इस मंत्र को बोलकर अंजुलि में जल लेकर चारों तरफ दिशाओं में क्षेपण करें, यह दिगंजलि है)

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा । अनेन पंचगुरुणां त्रिबारजलार्घ्यप्रदानम् ॥ (इस मंत्र से तीन बार जल का अर्घ्य देना)

१. ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा । २. ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा । ३. ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा । ४. ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा ।

५. ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यः स्वाहा । ६. ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा । ७. ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा । ८. ॐ ह्रीं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा । ९. ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा । १०. ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनेभ्यः स्वाहा । ११. ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानेभ्यः स्वाहा । १२. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र्येभ्यः स्वाहा । १३. ॐ ह्रीं सम्यक्त्वपोभ्यः स्वाहा । १४. ॐ ह्रीं अस्मद्गुरुभ्यः स्वाहा । १५. ॐ ह्रीं अस्मद्विद्यागुरुभ्यः स्वाहा । इति तर्पणमंत्राः ।

(इन १५ तर्पण मंत्रों से जलांजलि देना चाहिये)

ॐ णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सब्बसाहूणं ।

इत्यपराजितमंत्रमष्टशतवारान्जपेत् ॥ इति जपः ॥

(पुनः १०८ बार या २७ बार या ६ बार महामंत्र का जाप करें)

पुनः मुकुलित कमल जैसा हाथ जोड़कर ॐ से १५१ लोक पढ़कर चारों दिशाओं में धूमधूमकर तीन-तीन अवर्त, एक-एक शिरोनति करते हुये नमस्कार करें।)

चतुर्दिग्वंदना

आर्याछंद—

प्राग्दिग्विदिगंतरतः केवलजिनसिद्धसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वंदे ॥ १॥ (पूर्व दिशा में)

दक्षिणदिग्विदिगंतरतः केवलजिनसिद्धसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वंदे ॥ २॥ (दक्षिण दिशा में)

पश्चिमदिग्विदिगंतरतः केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वंदे ॥३॥ (पश्चिम दिशा में)
उत्तरदिग्विदिगंतरतः केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वंदे ॥४॥ (उत्तर दिशा में)

इति चतुर्दिक्षु पृथक्पृथक्त्रयावर्तैकशिरोनतिपूर्वकं प्रदक्षिणनमस्कारं कुर्यात् ॥

(एक रकेबी में गंधयंत्र बनाकर अथवा बायें हाथ की हथेली में गंध यंत्र बनाकर उस गंध को लेकर दायें हाथ की अनामिका से आगे के मंत्र से चंदन लगावें।)

चंदन से तिलक करने की विधि

१. ॐ हां हीं हूं हौं हः नमो अरिहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । ललाटे । (ललाट में लगावें)
२. ॐ हां हीं हूं हौं हः नमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । हृदये । (हृदय में लगावें)
३. ॐ हां हीं हूं हौं हः नमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । दक्षिणभुजे । (दाहिनी भुजा में लगावें)
४. ॐ हां हीं हूं हौं हः नमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । वामभुजे । (बायीं भुजा में लगावें)
५. ॐ हां हीं हूं हौं हः नमो लोए सब्बसाहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा । कंठे । (गले में लगावें।)

विशेष— गंध यंत्र की विधि परिशिष्ट में दी गई है।

(भगवान के अभिषेक और पूजन के पहले मंदिर में प्रवेश से लेकर अभिषेक से पहले तक जो विधि की जाती है उसे पूजामुख विधि कहते हैं और अभिषेक पूजा पूर्ण होने के बाद जो विधि की जाती है उसे पूजा अन्त्य विधि कहते हैं। इन मुख विधि और अन्त्य विधि सहित जो पूजा की जाती है वही श्रावक की सामायिक विधि है।)

स्रग्धराछंद—

स्नानानुस्नानशुद्धो विधृतसितसुधौतान्तरीयोत्तरीयः । कृत्वोपस्पर्शनादीन्यथ जिनगृहमुद्घाटितश्रीकपाटम् ॥

प्राप्य प्रक्षालिताग्निर्विहितविविधसंस्कारविभ्राजमानम् ॥ सानंदः संविशामि त्रिजगदधिपतिश्रीजिनाराधनाय ॥ १ ॥

इति प्रक्षालितपादः सन् श्रीविमानं प्रविशेत् ॥ (श्लोक पढ़कर पैर धोकर मंदिर में प्रवेश करें।)

स्नान, अनुस्नान करके शुद्ध होकर धुले हुये श्वेत धोती और दुपट्टे पहनें, पुनः उपस्पर्शन आदि करके मंदिर के निकट पहुंच कर मंदिर का दरवाजा खोलें। पैर धोकर जिनमंदिर में प्रवेश करें। यह मंदिर अनेक प्रकार के ध्वजा, चंदोवा आदि से शोभायमान हो रहा है। त्रैलोक्य के नाथ ऐसे जिनेन्द्रदेव की आराधना के लिये मैं आनंदपूर्वक मंदिर में प्रवेश करता हूं।

अनुष्टुपछंद—चतुर्दिक्षु पृथक्पृथक्त्रयावर्तैकशिरोनतिः । त्रिः परीत्यानतो जैनगेहमन्तर्विशाम्यहम् ॥ २ ॥

जिन मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देते हुये प्रत्येक दि ॥ में तीन-तीन आवर्त और एक-एक शिरोनति करते जावें

जिनमंदिर स्तुति

बसंततिलकाछंद— दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि, भव्यात्मनां विभवसंभवभूरिहेतुः ।

दुग्धाब्धिफेनधवलोज्ज्वलकूटकोटि-नद्धध्वजप्रकरराजविराजमानम् ॥ ३ ॥

क्षीरसमुद्र के फेन के समान धवल उज्ज्वल जिसका शिखर शोभायमान है, जो अनेक ध्वजाओं से शोभित है, जो भव्यजीवों के संसारताप को दूर करने वाला है और उन्हें अनेक प्रकार के वैभव को प्राप्त कराने में हेतु है ऐसे जिनमंदिर का मैं दर्शन करता हूं।

शार्दूलविक्रीडित—

दृष्टं धाम रसायनस्य महतां, दृष्टं निधीनां पदं । दृष्टं सिद्धरसस्य सद्मसदनं, दृष्टं च चिंतामणेः ।

किं दृष्टैरथवानुषंगिकफलै-रेभिर्मयाद्य ध्रुवम् । दृष्टं मुक्तिविवाहमंगलगृहं, दृष्टे जिनश्रीगृहे ॥ ४ ॥

मालिनीछंद—

जयति सुरनरेन्द्रश्रीसुधानिर्झरिण्याः कुलधरणिधरोऽयं जैनचैत्याभिरामः ॥

प्रविपुलफलधर्मानोकहाग्रध्वालपुष्परिखरजुभक्तेतनश्रीनिकेतः ॥ ५ ॥

श्रियः पदं जिगमिषतां मनीषिणां तनूभृतामतनुनिमित्तमुत्तमम् ॥

जिनेश्वरप्रतिकृतिपुण्यकेतनप्रदक्षिणीकरणमिदं पुनातु नः ॥ ६ ॥

इति त्रिभुवनगुरुभवनं त्रिःपरीत्याभिमुखमुपगतो भगवंतमभिवंदेत ॥

मंदिर में प्रवेश करते समय का मंत्र

ॐ ह्रीं हुं हूं णिसिहि स्वाहा ॥ इत्यंतः प्रविशेत् ॥

(इस स्तोत्र को पढ़ते हुये मंदिर की तीन प्रदक्षिणा कर मंदिर में प्रवेश के समय यह मंत्र बोलकर प्रवेशानुसरगवान को पंचांग नमस्कार करें)

हाथ धोने का मंत्र

शोधये मंत्रपूतेन हस्तौ शस्तेन वारिणा ॥ अपहस्तितपंकार्हात्पादपद्मार्चनोद्यतः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा । हस्तप्रक्षालनमंत्रः ॥

(श्लोक और मंत्र को पढ़कर दोनों हाथ प्रक्षालित करें।)

ईर्यापथशुद्धिः

प्रतिक्रम्य पृथग्गाथां द्विद्वयेकांशांतरेचकां ॥ नवकृत्वः स्थितो जप्त्वा निषद्यालोचयाम्यहम् ॥ ८ ॥

पडिक्कमामि भंते । इरियावहियाये । विराहणाये । अणागुत्ते । अइगमणे । णिग्गमणे । ठाणे । गमणे । चक्कमणे । पाणुग्गमणे । बीजुग्गमणे । हरिदुग्गमणे । उच्चारपस्सवणखेलसिंघाणवियडिपयिट्ठावणियाये ॥ जे जीवा एइंदिया वा । बेइंदिया वा । तेइंदिया वा । चउरिंदिया वा । पंचिंदिया वा । णोल्लिदा वा । पेल्लिदा वा । संघट्टिदा वा । संघादिदा वा । ओद्दाविदा वा । परिदाविदा वा । किरिञ्छिदा वा । लेस्सिदा वा । छिदिदा वा । भिंदिदा वा । ठाणदो वा । ठाणचंक्रमणदो वा । तस्स उत्तरगुणं । तस्स पायच्छित्तकरणं । तस्स विसोहिकरणं जाव अरहंताणं । भयवंताणं । णमोकारं करेमि । तावकायं पावकम्मं । दुच्चरियं वोस्सरामि ।

णमो अरिहंताणमित्यादि जपः । (६ बार णमोकार मंत्र जपें)

इच्छामि भंते । इरियावहियस्स आलोयणां । पुव्वुत्तरदक्खिणपच्छिमचउदिसविदिसासु विहरमाणेण जुगुत्तरदिट्ठिणा डबडबचरियाये पमाददोसेण पाणभूदजीवसत्ताणं । एदेसिं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमणिणदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥

सकलीकरण विधि

दृष्टे मृष्टे भुवि न्यस्ते संनिविष्टः सुविष्टरे ॥ समीपस्थार्चनाद्रव्यो मौनमाकर्म्मिकं दधे ॥ ९ ॥

ॐ क्ष्वीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । (जमीन पर जल छिड़कें)

ॐ ह्रीं क्ष्वीं आसनं निक्षिपामि स्वाहा । (आसन बिछावें)

ॐ ह्रीं ह्युं ह्युं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा । (इस मंत्र को बोलकर आसन पर बैठें।)

ॐ ह्रीं मौनस्थिताय स्वाहा । इति मौनव्रतं गृह्णीयात् ॥ (पूजा के शब्द बोलने के सिवाय अन्य वार्तालाप हेतु मौन रखें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः ॥ समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम् ॥ १० ॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

(इस श्लोक व मंत्र को पढ़कर पूजा के पात्रों पर जल छिड़कें।)

ॐ ह्रीं अर्हं झौं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हंसः असिआउसा समस्ततीर्थपवित्रतरजलेन शुद्धपात्रनिक्षिप्तपूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा ॥ (सामग्री का शोधन करें अर्थात् जल छिड़कें)

गुरुमुद्राग्रभूः झं वं व्हः पोहोभ्योऽमृतं स्वकैः ॥ स्रवद्भिः सिच्यमानं स्वं ध्याये मंत्रमिमं पठन् ॥ ११ ॥

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । अमृतोक्षणम् ॥

गुरुमुद्रा ॥ पंचगुरुमुद्रा बनाकर उनके अग्रभाग में 'झं वं व्हः पः हः' इन बीजाक्षरों को लिखकर वह मुद्रा मस्तक पर रखकर मंत्र पढ़ते हुये चिंतन करें कि इन अक्षरों से अमृत प्रवाह निकलता हुआ मेरे सर्वांग को सिंचित कर रहा है। यही अमृत प्रोक्षण विधि है, मस्तक पर मंत्रित जल भी छिड़कें)

स्वस्तिकाग्रत्रिकोणान्त-र्गतरेफं शिखावृतम् ॥ अग्निमंडलमोकार-गर्भं रक्ताभमास्थितम् ॥ १२ ॥

दहामि सप्तधात्वंग-मंगं रेफार्चिषां चयैः ॥ सर्वांगदेशगैर्विष्वग्धूयमानैर्नभस्वता ॥ १३ ॥

औदारिकदेहदहनध्यानम् ॥ (औदारिक देह जल रहा है ऐसा चिंतन करें अथवा रकेबी में कपूर जलाकर सामने रखें)

शरीर को त्रिकोणाकार समझें अर्थात् पद्मासन से बैठकर त्रिकोणाकार में स्वस्तिक पर 'ॐ' बनावें और त्रिकोणाकार को रं रं रं से वेष्टित करें यह अग्निमंडल लाल बन गया है। इन रेफ समूह से मैं सातधातुमयी शरीर को जला रहा हूँ। दग्धायमान अग्नि समूह से मेरा औदारिक शरीर जल रहा है ऐसा चिंतन करें ॥ १३ ॥ १४ ॥

नाभिस्थसस्वरद्व्यष्ट-पत्राब्जांतरहं रतः । दहेच्छिखौघैरुद्यद्भि-रष्टकर्ममयं वपुः ॥ १४ ॥

कार्मणदेहदहनम् ॥ (कार्मण शरीर जल रहा है)

नाभि में स्थित सोलहदल वाले कमल में १६ स्वर लिखे हैं और कर्णिका में 'हं' बीजाक्षर लिखा है 'इस "हं" से अग्नि निकलकर हृदय में स्थित आठ पांखुड़ी के ऊपर लिखित आठ कर्मों को जला रही है ऐसा चिंतन करें ॥ १५ ॥ (यह आग्नेयी धारणा है)

वृत्तात्सबिंदोर्दिक्कोणस्वायाद्गोमूत्रिकाकृतेः ॥ कृष्णाद्यायुपुराज्जातैः प्रेरयद्भस्म वायुभिः ॥ १५ ॥

भस्मापसारणं ॥ (तीव्र हवा से भस्म दूर हो रही है ऐसा चिंतन करें)

गोल, बिंदुसहित, गोमूत्रसदृश वक्र, कृष्ण वायुमंडल से उत्पन्न हुई वायु मेरे शरीर पर लगी कर्मभस्म को उड़ा रही है इसमें 'स्वाय स्वाय' लिखा है ऐसा चिंतन करें ॥ १६ ॥ यह श्वसना या वायवी धारणा है।

व्योमव्यापिघनासारैः स्वमाप्लाव्यामृतस्रुतम् ॥ खेहं ध्यायन्सृजाम्यंगममृतैरन्यदिन्दुवत् ॥ १६ ॥

अमृतप्लावनममृतमयदेहकरणं च । (अमृत में स्नान कर शरीर अमृतमय हो गया है)

तदनंतर आकाश को व्याप्त करके मेघ से जलवृष्टि हो रही है और उसमें मैं भीग रहा हूँ, मेरे ऊपर अमृत का सिंचन हो रहा है और इस अमृत से चंद्रसमान उज्ज्वल मेरी आत्मा निर्मल हो रही है ऐसा चिंतन करें। यह वारुणी जल धारणा है।

अंगन्यास विधि

हस्तद्वये कनीयस्याद्यंगुलीनां यथाक्रमम् । मूले रेखात्रयस्योर्ध्वमग्रे च युगपत्सुधीः ॥ १७ ॥

न्यस्योहमादिहोमाद्वायान्नमस्कारान्करौ मिथः । संयुज्यांगुष्ठयुग्मेन स्वांगेषु द्विर्न्यसामि तान् ॥ १८ ॥

अंगुलियों में मंत्र न्यास करना ॥ दोनों हाथों की कनिष्ठा आदि अंगुलियों पर मूलभाग से लेकर अग्रभाग पर्यंत तीनों रेखाओं पर क्रम से मंत्र लिखें—

कनिष्ठा पर ॥ ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा ।

अनामिका पर ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ।

मध्यमा पर ॥ ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा ।

तर्जनी पर ॥ ॐ हौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा ।

अंगूठे पर ॥ ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा ।

इन मंत्रों को चंदन से लिखकर पुनः उपर्युक्त श्लोक बोलते हुये दोनों हाथ मिलावें ।

मंत्र लिखित दोनों हाथों को मिलाकर दोनों अंगूठे पर करके उनसे आगे कथित मंत्र बोलते हुये उन पुस्तानों का स्पर्श करें ।

ॐ हां णमो अरिहंताणं स्वाहा । हृदये ॥ (दोनों अंगूठों से हृदय का स्पर्श करें)

ॐ हीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । ललाटे ॥ (ललाट का स्पर्श करें)

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा । शिरसो दक्षिणे ॥ (शिर के दाहिने भाग का स्पर्श करें)

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा । पश्चिमे ॥ (शिर के पश्चिम भाग का स्पर्श करें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा । उत्तरे ॥ शिर के उपरि बायीं तरफ स्पर्श करें

पुनः इन्हीं मंत्रों को बोलते हुये क्रम से स्पर्श करें ।

पुनस्तानेव मंत्रान् शिरःप्राग्भागे शिरसो दक्षिणे पश्चिमे उत्तरे च क्रमेण विन्यसेत् ।

ॐ हां णमो अरिहंताणं स्वाहा । (शिर के पूर्व ललाट का स्पर्श करें)

ॐ हीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । (शिर के मध्य का स्पर्श करें)

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा । (शिर के दायें भाग का स्पर्श करें)

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा । (शिर के पीछे भाग का स्पर्श करें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा । (शिर के बायें भाग का स्पर्श करें)

दिशाबंधन मंत्र

तथा वामप्रदेशिन्यां न्यस्य पंचनमस्कृतीः ॥ पूर्वादिदिक्षु रक्षार्थं दशस्वपि निवेशयेत् ॥ १६ ॥

वामप्रदेशिन्यग्रे पंचनमस्कारतया ॥

बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में “अ सि आ उ सा” लिखकर उसे सीधी करके नीचे लिखे मंत्रों से ॐ पुन दिशाओं को दिखाता जावे ।

ॐ हां णमो अरिहंताणं । पूर्वस्यां दिशि ॥

ॐ हीं णमो सिद्धाणं । आग्नेय्यां दिशि ॥

ॐ हूं णमो आइरियाणं । दक्षिणस्यां दिशि ॥

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं । नैऋत्यां दिशि ॥

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं । पश्चिमायां दिशि ॥

ॐ हां णमो अरिहंताणं । वायव्यां दिशि ॥

ॐ हीं णमो सिद्धाणं । उत्तरस्यां दिशि ॥

ॐ हूं णमो आइरियाणं । ऐशान्यां दिशि ॥

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं । अधरस्यां दिशि ॥

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं । ऊर्ध्वायां दिशि ॥

इन दशों दिशाओं में अंगुली दिखाते हुये मंत्र बोलते हुये दश दिशाओं का बंधन करें ।

इति दिग्बंधनम्

इस तरह सकलीकरण से अपने शरीर को कवच पहनाकर संपूर्ण इष्टपूजादि मंत्रादि दिशाओं को करते हुये पूजक किसी भी विघ्न से बाधित नहीं होता है ।)

वर्मितोऽनेन सकलीकरणेन महामनाः ॥ कुर्वन्निष्ठानि कर्माणि केनापि न विहन्यते ॥

पुनः आगे के मंत्र को सात बार बोलकर पुष्पाक्षतों को मंत्रित कर सभी पूजक आदि के मस्तक पर क्षेपण करें।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

अनेन पुष्पाक्षतान् सप्तवारान् प्रजप्य परिचारकाणां शीर्षेषु प्रक्षिपेत् ॥ इति परिचारकरक्षा ॥

ॐ हूं फट् किरटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखंडान् कुरु कुरु आत्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद छिंद परमंत्रान् भिंद भिंद क्षः फट् स्वाहा ॥ अनेन सिद्धार्थानभिर्मन्त्र्य सर्वविघ्नोपशमनार्थं सर्वदिक्षु क्षिपेत् ॥

(पुनः ॐ हूं फट् . . . इत्यादि मंत्र से पीली या सफेद सरसों मंत्रित कर सर्वविघ्न दूर करने के लिए सर्वत्र क्षेपण करें।)

॥ इति सकलीकरणविधानम् ॥

(यह सकलीकरणविधान पूर्ण हुआ।)

पूजा करने की प्रतिज्ञा

उद्घाट्य वदनवस्त्रं प्रवण्ड परमेष्ठिनं च मुखवस्त्रम् ॥ उत्सारयामि पुरतः सति सत्तौर्यत्रिकारंभे ॥

विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

पृथ्वीछंद— कनत्कनकघंटिकं विमलचीनपट्टोज्ज्वलम् । बहुप्रकटवर्णकैः कुशलशिल्पिभिर्निर्मितम् ॥

जिनेन्द्रचरणाम्बुजद्वयसमर्चनार्थं मया । समस्तदुरितापहृद्ददनवस्त्रमुद्घाटयते ॥ १ ॥

वदनवस्त्रोद्घाटनमंत्रः ॥ (वेदी के सामने का वस्त्र हटा दें)

जिनेन्द्रदेवस्तुति

वसंततिलकाछंद— अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य । देव ! त्वदीयचरणांबुजवीक्षणेन ॥

अद्य त्रिलोकतिलक ! प्रतिभासते मे । संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणं ॥ २ ॥

अनुष्टुपछंद—

अद्य मे सफलं जन्म, नेत्रे च विमले मम । त्वामद्राक्षं यतो देव ! हेतुमक्षयसंपदः ॥ ३ ॥

अद्य संसारगंभीर-पारावारः सुदुस्तरः । सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र ! तव दर्शनात् ॥ ४ ॥

वंशस्थछंद—

समस्तवस्तुप्रतिभासमूर्तये । जगत्त्रयानंदनिकेतकीर्तये ॥

जिनाय सर्वेप्सितकामधेनवे । नमस्तमोर्ध्वंसविधानभानवे ॥ ५ ॥

वसंततिलकाछंद—

देवाधिदेव परमेश्वर वीतराग । सर्वज्ञ तीर्थकर सिद्ध महानुभाव ॥

त्रैलोक्यनाथ जिनपुंगव वर्द्धमान । स्वामिगतोऽस्मि शरणं चरणद्वयं ते ॥ ६ ॥

इति भगवंतमभिवीक्ष्य वदेत् ॥ (भगवान का मुखकमल देखते हुए नमस्कार करें)

वसंततिलका—

नानाभवप्रभवदुःसहघोरदुःख, संतानदुस्तरमहोदधिपारगत्यै ॥

द्रष्टुं जिनेन्द्रवदनं बहुवर्णपूर्ण-मुद्घाटयामि मुखवस्त्रमनेकवस्त्रम् ॥ ७ ॥

॥ इति मुखवस्त्रमुद्घाटयेत् ॥

सामायिक विधि

शार्दूलविक्रीडित—

आवेद्यासनतः क्रियां प्रणमनं, पश्चाद्विधेया स्थिति-स्यावर्त्येकशिरोनतिः प्रथमतः, साम्यं तदन्तेऽपि च ॥

कायोत्सर्गविधिर्नतिः स्तवनमायोज्यं च तत्साम्यवत् । कार्या भक्तिरभीप्सिताप्यवसितावालोचनाप्यासनात् ॥ ८ ॥

अनुष्टुपछंद— इति लक्षणतः कृत्वा सिद्धभक्तिमनाकुलः । प्रतोष्ये जिननाथस्य विधिना स्नपनक्रियाम् ॥ ९ ॥

(पहले सामायिक स्वीकार कर पूजा क्रिया की प्रतिज्ञा करके नमस्कार करें पुनः तीन आवर्त एक शिरोनति करके णमोकार मंत्र चत्तारिमंगलादि सामायिक दण्डक पढ़कर तीन आवर्त एक शिरोनति करके ६ बार णमोकार मंत्र जपकर पुनः नमस्कार करें। अनंतर तीन आवर्त एक शिरोनति करके थोस्सामि स्तव पढ़कर पुनः तीन आवर्त एक शिरोनति करें। अनंतर सिद्ध भक्ति पढ़ें। यह विधि आगे दी गई है। तदनंतर अभिषेक विधि करें।)

अथ कृत्यविज्ञापना ॥ भगवन्नमोऽस्तु ते एषोऽहं जिनेद्रपूजावंदनां कुर्याम् ।

अथ सामायिकस्वीकारः

अनुष्टुपछंद— जयंति दूरमुन्मुक्तगमागमपरिश्रमाः। संसारविवरोत्तारतीर्थभूता जिनक्रमाः ॥ १० ॥

नमोऽस्तु धूतपापेभ्यः सिद्धेभ्यः ऋषिपरिषदे ॥ सामायिकं प्रपद्येऽहं भवभ्रमणसूदनम् ॥ ११ ॥

साम्यं मे सर्वभूतेषु वैरं मम न केनचित् ॥ आशाः सर्वाः परित्यज्य समाधिमहमाश्रये ॥ १२ ॥

अथ कृत्यविज्ञापना । नमोऽस्तु प्रसीदन्तु प्रभुपादा वंदिष्येऽहं । एषोऽहं तावच्च सर्वसावद्ययोगविरतोऽस्मीति ॥

अथ जिनेन्द्रपूजावंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीमत्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥ चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्धसरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ॥

जाव अरहंताणं । भयवंताणं । पज्जुवासं करेमि । तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

(यहाँ ६ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें।)

थोस्सामिस्तव

आर्याछंद—थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे । णरपवरलोयमहिये विहुयरयमले महप्पण्णे ॥१॥

लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे । अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चव केवलियो ॥२॥

॥अथवा॥

चउवीसं तित्थयरे उसहाई वीरपच्छिमे वंदे । सव्वे सगणगणहरे सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥१॥

लघु सिद्धभक्ति

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य । णाणह्मि दंसणह्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥

इच्छामि भंते । सिद्धभक्तिकाउस्सगो कओ तस्स आलोचेउं । सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं । अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं । उड्ढलोयमत्थयह्मि पयिट्ठियाणं तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं अतीदाणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

॥ पुष्पांजलिः ॥

इति पूजामुखविधिः ॥ यह पूजामुख विधि पूर्ण हुई ।

पंचामृत अभिषेक पाठ (पंचामृताभिषेक पाठ सहित नित्यपूजा विधि)

शार्दूलविक्रीडित— श्रीमत्पंचमवार्धिनिर्मलपयःपूरैः सुधासन्निभैः । यज्जन्माभिषवं सुराद्रिशिखरे सर्वे सुराश्चक्रिरे ।

त्रैलोक्यैकमहापतेर्जिनपतेस्तस्याभिषेकोत्सवं । कर्तुं भव्यमलोपलेपविलयं प्राज्ञैः स्तुतं प्रस्तुवे ॥१॥

(अमृततुल्य ऐसे क्षीरसमुद्र के जल से देवों ने मेरुपर्वत पर तीन लोक के नाथ ऐसे जिनेन्द्रदेव का जन्माभिषेक किया है, वह अभिषेकोत्सव में करना प्रारंभ करता हूं। यह अभिषेकोत्सव भव्यों के पापमल को दूर करेगा। उपर्युक्त श्लोक पढ़कर आगे कात्र बोलकर पुष्पांजलि क्षेपण करेंगे)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । इति पुष्पांजलिं कुर्यात् ।

वायुकुमार आदि पंचकुमार पूजा

उपजातिछंद—विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ॥ हुत्वाचिंतो वायुकुमारदेव ! त्वं वायुना शोधय यागभूमिम् ॥२॥

(तीर्थकरों के विहार के समय भगवान की सेवा करके तुमने जो अपनी शक्ति प्रगट की है इसलिये मैंने तुम्हें बुलाकर तुम्हारी पूजा की है। तुम वायु से इस यज्ञभूमि को शुद्ध करो।)

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा । षड्दर्भपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत् ॥

(षड्दर्भ पूले से भूमि को संमार्जित करें)

उपजातिछंद—

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ॥ हुत्वाचिंतो मेघकुमारदेव ! त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम् ॥३॥

ॐ ह्रीं क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । षड्दर्भपूलोपातजलेन भूमिं सिंचेत् । (डाभ के पूले से जल लेकर भूमि पर छिड़कें)

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैर्निर्वाणपूजासु कृतापदान ॥ हुत्वाचिंतो वन्हिकुमारदेव ! त्वं ज्वालाया शोधय यागभूमिम् ॥४॥

(गर्भान्वय आदि में द्विजों विधानाचार्यों ने जिसकी पूजा की है तीर्थकरादि के निर्वाण कल्याणक में जिसकी पूजा की गई है। ऐसे हे अग्निकुमार देव ! तुम ज्वाला से यज्ञभूमि को शुद्ध करो।)

ॐ ह्रीं क्षीं अग्निं प्रज्वालयामि निर्मलाय स्वाहा । षड्दर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालयेत् । (डाभ के पूले से अग्नि जलाकर भूमि पर रख दें)

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा भवंत्ववार्या भुवि कामचाराः ॥ यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्तसुधोपमानांजलिपूर्णवार्भि ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । इति नागतर्पणार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् ।

(नागसंतर्पण के लिये ईशान दिशा में जलांजलि दें)

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण ॥ दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञविघ्नौघविध्वंसकृते समन्त्रम् ॥६॥

ॐ दर्पमथनाय नमः । इति ब्रह्मस्थानादिषु दर्भखंडानवस्थापयेत् । (इन मंत्रों से ब्रह्मस्थान आदि में दर्भ स्थापित करें)

श्वेतं पूतं सांतरीयोत्तरीयं धृत्वा नव्यं धारयेऽहं पवित्रम् ॥ आलेप्यार्द्रं चंदनं सर्वगात्रे सारं पुष्पं धास्त्रैतमांगे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरजिनी परिधानोत्तरीये धारिणोऽहं झं झं वं वं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीये धारयामि स्वाहा ॥ वस्त्रावरणम् (धोती-दुपट्टे पर जल छिड़कें)।

ॐ ह्रीं परमपवित्राय नमः । पवित्रधारणम् (पवित्र या अंगूठी को चंदन लगावें)।

श्रीचंदनानुलेपनं स्रग्धारणं च ॥ (चंदन लगावें और माला पहनें)

भावश्रुतोपासकदिव्यसूत्रं द्रव्यं च सूत्रं त्रिगुणं दधानः ॥ सस्वेन्द्रमात्मानमुदारमुद्रां, श्रीकंकणं सन्मुकुटं दधेहं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । इति ब्रह्मसूत्रं विभृयात् ॥ (यज्ञोपवीत पहनें)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा । इति मुद्राम् । (अंगूठी पहनें) ।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा । इति कंकणम् । (कंकण पहनें)

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा । इति शेखरम् । (मुकुट पहनें)

अभिषेक हेतु कलश स्थापना

शार्दूलविक्रीडित— संस्थाप्याढकवारिपूर्णकलशान्पद्मापिधानाननान् । प्रायो मध्यघटान्वितानुपहितान्सद्गंधचूर्णादिभिः ॥

द्रोणाम्भःपरिपूरिताश्चतुरशः कोणेषु यज्ञक्षितेः । कुंभान्यस्य समंगलेषु निदधे तेषु प्रसूनं वरं ॥६॥

(श्वेत अक्षत को बिछाकर उन पर अभिषेक हेतु पांच कलश स्थापित करके नीचे लिखे मंत्र से उनमें जल डालें)

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः नमोऽहंते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्मतिगिच्छकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकगंगासिंधु-
रोहिद्रोहितास्याहरिश्चरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णकूलारूपकूलारक्तारक्तोदाक्षीराम्भोनिधिजलं स्वर्णघट-
प्रक्षिप्तं गंधपुष्पाद्यमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं स्वाहा ॥ इति जलशुद्धिं कुर्यात् ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ॥ इति कलशस्थापनम् ।

ॐ ह्रौं नेत्राय संवौषट् । इति कोणकुंभेषु पुष्पाणि क्षिपेत् ।

(कलशों में चंदन आदि लगाकर पुष्प अक्षत क्षेपण करें)

शार्दूलविक्रीडित— स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहजप्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः कुंभान्समभ्यर्चये ॥१०॥

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् । इति कलशानभ्यर्चयेत् ॥ (कलशों को अर्घ्य चढ़ावें)

हिरण्मयं हीरहरिन्मणीद्धश्रीपद्मरागादिविचित्रपाश्वर्यं । पीठं समुत्तुंगमिदं निवेश्य प्रक्षालयामः सलिलैः पवित्रैः ॥११॥

ॐ ह्रीं क्ष्मं ठ ठ श्रीपीठं स्थापयामि स्वाहा ॥ इति श्रीपीठं स्थापयेत् ॥

(जिसमें भगवान का अभिषेक करना है उसे पीठ कहते हैं उस जलोत् या थाल को स्थापित करें)

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः नमोऽहंते भगवते श्रीमत्पवित्रजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा । इति श्रीपीठं प्रक्षालयेत् ।

(श्रीपीठ को प्रक्षालित करें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहजप्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः पीठं समभ्यर्चये ॥१२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय नमः स्वाहा । इति श्रीपीठं अभ्यर्चयेत् ॥ (श्रीपीठ—अभिषेक पात्र को अर्घ्य चढ़ावें)

इन्द्रवज्रा— नाकेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रभास्वत्कोटीरधृष्टोज्ज्वलपादपीठं ॥

आरोपये लोकजितं जिनेन्द्रं श्रीवर्णकीर्णाक्षतमध्यपीठम् ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा । इति श्रीवर्णमालिखेत् ॥ (पीठ में 'श्रीकार' लिखें 'श्रीः' विसर्ग सहित लिखें)

ॐ ह्रीं धात्रे वषट् । इति श्रीपादौ स्पृष्ट्वा ॥ (जिनेन्द्रदेव के चरण स्पर्श करें)

भगवान को अभिषेक पात्र में विराजमान करना

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रौं स्वाहा । इति श्री जिनबिंबं श्रीवर्णं स्थापयेत् ॥

(मंत्र पढ़कर प्रतिमाजी को श्रीवर्ण पर विराजमान करें)

अभिषेक से पूर्व पूजा

शार्दूलविक्रीडित—आहूता भवनामरैरनुगता यं सर्वदेवास्तदा । तस्थौ यस्त्रिजगत्सभांतरमहापीठाग्रसिंहासने ॥

यं हृद्यं हृदि संनिधाप्य सततं ध्यायति योगीश्वराः । तं देवं जिनमर्चितं कृतधियामावाहनाद्यैर्भजे ॥१४॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा हं! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा हं!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा हं! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथगिमान्मंत्रानुच्चारयन्पुष्पांजलिं प्रयुंजीत । (स्थापना विधि करें)

उपजातिछंद— सुराचलाग्रे सुरपुंगवेन प्रकल्पपाद्याचमनक्रियस्य ।

वारास्य कुर्वे चरणेत्र पाणौ पाद्यक्रियामाचमनक्रियां च ॥ १५ ॥

ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अहं नमोऽहंते स्वाहा । पाद्यमंत्रः ॥

ॐ हीं इवीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा । आचमनमंत्रः ।

इन्द्रवज्रा— भस्मान्ममृद्गोमयपिण्डदीपैरद्भिः फलैरक्षतमिश्रपुष्पैः ॥

त्वां वर्द्धमानैः सहपात्रसंस्थैर्द्भाग्निकीलैरवतारयेऽहंन् ॥ १६ ॥

ॐ हीं नीराजनं करोमि दुरितमस्माकमपहरतु भगवान् स्वाहा । इति नीराजनं कुर्यात् ।

(थाली या रकेबी में पुष्पाक्षत आदि रखकर कपूर जलाकर आरती करें। अवतरण विधि करना ही नीराजन कहलाता है।)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरनुच्छसहजप्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैर्देवं समभ्यर्चये ॥ १७ ॥

ॐ नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा । इति जलैरभ्यर्चयेत् ॥ जल चढ़ावें।

ॐ नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा । इति गंधैरभ्यर्चयेत् । चंदन चढ़ावें।

ॐ नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा । इत्यक्षतैरभ्यर्चयेत् । अक्षत चढ़ावें।

ॐ नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा । इति पुष्पैरभ्यर्चयेत् । पुष्प चढ़ावें।

ॐ नमोऽन्तर्ज्ञानेभ्यः स्वाहा । इति चरुभिरभ्यर्चयेत् । नैवेद्य चढ़ावें।

ॐ नमोऽन्तर्दर्शनेभ्यः स्वाहा । इति दीपैरभ्यर्चयेत् । दीपक से आरती करें।

ॐ नमोऽन्तर्वीर्येभ्यः स्वाहा । इति धूपैरभ्यर्चयेत् । धूप अग्नि में खेवें।

ॐ नमोऽन्तर्सौख्येभ्यः स्वाहा । इति फलैरभ्यर्चयेत् । फल चढ़ावें।

ॐ नमः परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ दिक्पाल आवाहननम् (दश दिक्पालपूजा)

शार्दूलविक्रीडित—उत्तुंगंशरदभ्रशुभ्रमुचितादभ्रस्फुरद्विभ्रमम् । तं दिव्याभ्रमुवल्लभं द्विपमुपारूढं प्रगाढश्रियम् ॥

दंभोलिश्रितपाणिमप्रतिहताज्ञैश्वर्यविभ्राजितम् । शच्या संयुतमाह्वयामि मरुतामिंद्रं जिनेन्द्राध्वरे ॥ १८ ॥

ॐ हीं क्रों सुवर्णवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ हीं क्रों सुवर्णवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हीं क्रों सुवर्णवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

इंद्राय स्वाहा । इंद्रपरिजनाय स्वाहा । इंद्रानुचराय स्वाहा । इंद्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।

अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा ।
स्वः स्वाहा स्वधा । इंद्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, स्वस्तिकं
यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

शांतिः सदास्तु तस्यायं देवो यस्य कृतेऽर्च्यते ॥

उपजातिछंद—

भूश्मश्रुकेशादिपिशंगवर्णं निर्वर्णनाभीलसशोणमूर्तिम् ॥

प्रत्युज्ज्वलज्वालजटालशक्तिं स्वाहायुतं वह्निमिहाह्वयामि ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं क्रों रक्तवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं क्रों रक्तवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे अग्ने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं क्रों रक्तवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे अग्ने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
अग्नये स्वाहा । अग्निं परिजनाय स्वाहा । अग्निं अनुचराय स्वाहा । अग्निं महत्तराय स्वाहा । अग्नये
स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः
स्वाहा । स्वः स्वाहा, स्वधा । अग्नये स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं,
बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

मालिनीछंद—

गवल्युगलघृष्टाम्भोदमारूढवन्तं, महितमहिषमुच्चैरंजनाद्रीन्द्रकल्पं ॥

असितमहिषभूषं भीषणं चंडदंडं, विदितमदयधर्मं व्याह्वये धर्मराजं ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे यम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे यम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
यमाय स्वाहा । यमपरिजनाय स्वाहा । यमानुचराय स्वाहा । यममहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय
स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा,
स्वधा । यमाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं
दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

उपजातिछंद—

तमालनीलं पुरतोवलम्बिस्फुटत्सटाभारमुदारमृक्षम् ॥

आरूढमाभीलमुदूढशक्तिं वधूयुतं नैऋतमाह्वयामि ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं क्रों श्यामवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे नैऋत! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं क्रों श्यामवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे नैऋत! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं क्रों श्यामवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णं स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारं हे नैऋत! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
नैऋताय स्वाहा । नैऋतपरिजनाय स्वाहा । नैऋतानुचराय स्वाहा । नैऋतमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा ।
स्वः स्वाहा, स्वधा । नैऋताय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं,
स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

उपजातिछंद— करी कथंचिन्मकरः कथंचित्सत्यापयेज्जनकथंचिदुक्तिम् ॥

यस्तं करिप्राङ्मकरं गतोहिषाशोर्च्यते विश्रुतपाशपाणिः ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे वरुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे वरुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
 वरुणाय स्वाहा । वरुणपरिजनाय स्वाहा । वरुणानुचराय स्वाहा । वरुणमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
 अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा ।
 स्वः स्वाहा, स्वधा । वरुणाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं,
 स्वस्तिकं यज्ञभागं च दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

उपजातिछंद—

यः पंचधाराचतुरं तुरंगं समारोहोरुमहीरुहास्त्रः ॥

तं वायुवेगीयुतवायुदेवं व्याव्हानये व्याहृतयागविघ्नं ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
 ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे पवन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे पवन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
 पवनाय स्वाहा । पवनपरिजनाय स्वाहा । पवनानुचराय स्वाहा । पवनमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
 अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा ।
 स्वः स्वाहा, स्वधा । पवनाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं,
 स्वस्तिकं यज्ञभागं च दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

चारुनूलरत्नराजिभाभराहितेन्द्रचापचित्रिताश । हारगौरराजहंसनीयमान माननीय केतनौधव्योमयानमारुरोह ॥
 यस्त्वमेष भूषणाभिराजमान राजराज-सर्वलोकराजराजयागमंडपं समेहि ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
 ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे कुबेर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे कुबेर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
 कुबेराय स्वाहा । कुबेरपरिजनाय स्वाहा । कुबेरानुचराय स्वाहा । कुबेरमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
 अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा ।
 स्वः स्वाहा, स्वधा । कुबेराय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं,
 स्वस्तिकं यज्ञभागं च दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

शार्दूलविक्रीडित—

कैलासाचलसंनिभायतसितोत्तुंगांगविभ्राजितं । पर्जन्योर्जितगर्जनं वृषभमारूढं जगद्गुहकम् ॥

नागाकल्पमनल्पपिंगलजटा-जूटार्धचंद्रोज्ज्वलम् । पार्वत्याः पतिमावृणुते त्रिणयनं, भास्वत्त्रिशूलायुधम् ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे ईशान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे ईशान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
 ईशानाय स्वाहा । ईशानपरिजनाय स्वाहा । ईशानानुचराय स्वाहा । ईशानमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
 अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा ।

स्वः स्वाहा, स्वधा । ईशानाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

उपजातिछंद—

ऐरावणोरुचरणातिपृथुत्वधर्म-श्रीकूर्भवज्रनिभपृष्ठकृतप्रतिष्ठम् ॥

व्याव्हानये धवलमंकुशपाशहस्तं, पद्मापतिं फणिपतिं फणिमौलिचूलिम् ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे धरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे धरणेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे धरणेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव षट् ।
 धरणेन्द्राय स्वाहा । धरणेन्द्रपरिजनाय स्वाहा । धरणेन्द्रानुचराय स्वाहा । धरणेन्द्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा, स्वधा । धरणेन्द्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

मालिनीछंद—

अरुणसितसदौघभ्राजितश्वेताग्नप्रखरनखररंहःसिंहमारुढवन्तम् ॥

कुवलयमयमालं कांतकांतं सकुन्तं, सितनुतकरसांद्रं चंद्रमाव्हानयामि ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे चंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे चंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे चंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव षट् ।
 चंद्राय स्वाहा । चंद्रपरिजनाय स्वाहा । चंद्रानुचराय स्वाहा । चन्द्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भूर्भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा, स्वधा । चंद्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

वसंततिलकाछंद—

इंद्राग्निनालनिकषात्मजपाशिवायु-श्रीदेन्दुशेखरफणाधरराजचंद्राः ॥

अर्घ्यादिपूजनविधेर्भवत प्रसन्ना; प्रत्यूहजालमपसारयताध्वरस्य ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं क्रों इंद्रादिदशदिक्पालकदेवा यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा । पूर्णार्घ्यं ।

॥ अथाभिषेकविधिः ॥

इंद्रवज्रा—

येनोद्धृतं भव्यजगद्भववाब्धेरभ्युद्धृतं येन दुरंतमेनः ॥

पूर्णार्थमर्हन्तमिहाभिषेक्तुं तं पूर्णकुंभं वयमुद्धरामः ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा ॥ इति कलशमुद्धरेत् । (कलश हाथ में लेवें)

जल से अभिषेक

शार्दूलविक्रीडित—यज्ज्ञानादिमहत्त्वनिर्मितमहत्त्वाकाशमेत्यांभसा । व्याजातं न्वभिषिंचतीह जिनमित्याविष्कृताशंककैः ॥

अच्छाच्छैरपि शीतलैः सुमधुरैस्तीर्थोपनीतैर्जलैः । शांत्यापादितवारिपूर्णमनघं देवं जिनं स्नापये ॥३०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं
 सःत्रैलोक्यस्वामिनो जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ।

नारियल, संतरा, अंगूर, सेब आदि रसों से अभिषेक

शार्दूलविक्रीडितं— तापध्वंसिभिरहदागमनिभैश्चोचाम्बुभिश्शीतलैः, पुण्ड्रेक्षुप्रभवैः रसैश्च मधुरैः संतुष्टिपुष्टिप्रदैः ।

चोचाद्युद्धफलप्रभूतसुरसैः सुस्वादुसौरभ्यकै-र्नित्यानंदरसैकतृप्तमरहदेवं तरां स्नापये ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं
सःत्रैलोक्यगुरोर्नालिकेरादिरसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ॥

घी से अभिषेक

सौरभ्यं वरमार्द्रता यदि सुवर्णस्येह सम्पद्यते । तत्तेन ह्युपमीयते घृतमिदं नान्येन केनापि च ॥

धीरैरित्यभिवर्णितेन महता हैयंगवीनेन वै । सिंचामो बलकान्तिपुष्टिसुखदं श्रेयस्करं श्रीजिनम् ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं
सःत्रैलोक्यस्वामिनो घृताभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ।

दूध से अभिषेक

आकृष्टत्वममर्त्यकैरसदृशं देवस्य सेवाकृते । मत्वेति स्वयमेत्य तं स्नपयति क्षीराम्बुराशिर्ध्रुवम् ॥

इत्युद्भावितशंकनैर्बहुशुभैः क्षीरैर्जिनं स्नापये । क्षीराभासवनुं सुमेरुशिखरे क्षीराभिषेकाप्तये ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं
सःत्रैलोक्यस्वामिनः क्षीराभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ॥

दधि से अभिषेक

लेश्या किं बहिरुद्गता जिनपतेः शुक्ला समुज्जृम्भणा-दन्तर्मातुमशक्तितः किमथवा ध्यानं नु शुक्लाव्हयम् ।

किंवा केवलनामधीः किमथवा तीर्थकरं पुण्यमि-त्याशंक्येन शशांकदीधितिरुचा दध्ना जिनं स्नापये ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं
सःत्रैलोक्यस्वामिनो दधिस्नपनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ॥

चंदनादि चूर्ण का लेपन

उपजाति छंदः— काश्मीरकृष्णागरुसल्लवंग-निशाक्षतानामवधूल्यचूर्णैः ।

शालेयचूर्णैर्हरिचंदनाद्रै - रुद्धर्तये स्नेहहरैर्जिनांगम् ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं
सःत्रैलोक्यस्वामिनः कल्कचूर्णेन उद्धर्तनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ।

नीराजना (आरती) करें

सपंचवर्णैर्वरवल्भपिण्डैर्निर्वर्त्य कार्तस्वरभाजनस्थैः ।

नीराजनार्थैरपि पूर्वमुक्तैर्नीराजयामो भगवज्जिनेन्द्रम् ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं समस्तनीराजनद्रव्यैर्नीराजनं करोमि दुरितमस्माकमपहरतु भगवान् स्वाहा ।

सर्वौषधि से अभिषेक

क्षीरद्रुमत्वक्कलितैः सुखोष्णैः, कषायनीरैरभिषेचयामः ।

कषायनाशोद्यदन्तबोधं, भवज्वरामूलविलोपनार्थम् ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः सर्वौषधिना^१ अभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ।

चतुष्कोण कलशों से अभिषेक

उपजातिछंद—

बिसेन बोधद्रुमपल्लवेन, धामाग्निणापि युतैः सुवार्भिः ।

सहोद्धृतैः कोणघटैश्चतुर्भिः, संस्थापये तच्चतुरस्रबोधम् ॥३८॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसा नमोऽर्हते भगवते मंगललोकोत्तमशरणाय कोणकलशजलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा ।

पूर्ण कुंभ से अभिषेक

शार्दूलविक्रीडित—मध्यस्थापितचारुभूषितबृहत्कुंभीयगंधाभसा । सौरभ्याहतचंचरीकनिचयैः पंकापनोदक्षमाम् ॥

स्वामुद्घोषयतेव शक्तिमभितो भव्यात्मनां भूरिणा । गंगाव्योमरयोपमेन जगतामीशं जिनं स्नापये ॥३९॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशातिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडारविनाशनाय ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसा नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा स्वधा । गंधोदकाभिषेकः ।

(मध्य के पंचम कलश से अभिषेक करना)

घातिव्रातविघातजातविपुल-श्रीकेवलज्योतिषः । देवस्यास्य पवित्रगात्रकलनात्-पूतं हितं मंगलम् ॥

कुर्याद्भव्यभवार्तिदावशमनं, स्वर्मोक्षलक्ष्मीफलम् । प्रोद्यद्धर्मलताभिवर्द्धनमिदं सद्गंधगंधोदकम् ॥४०॥

निःशेषाभ्युदयोपभोगफलवत्-पुण्यांकुरोत्पादकम् । धृत्वा पंकनिवारकं भगवतः, स्नानोदकं मस्तके ॥

ध्यातौ सर्वमुनी वरैरभिनृतौ प्रेक्षावतामर्चिताम् । विन्द्राद्यैर्मुहुरर्चितौ जिनपतेः, पादौ समभ्यर्चये ॥४१॥

ॐ नमोऽर्हत्परमेष्ठिभ्यो मम सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा । आत्मपवित्रीकरणम् ॥ (गंधोदक लगावें)

ॐ हीं ध्यातृभ्योऽभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा । पुष्पांजलिः ।

अष्टद्रव्य से पूजा

शार्दूलविक्रीडित— यत्रागाधविशालनिर्मलगुणे, लोकत्रयं सर्वदा । सालोकं प्रतिबिंबितं प्रविशतां, नित्यामृतानंदनम् ॥

सर्वाब्जानिमिषास्पदं स्मतिगतं, तापापहं धीमताम् । मर्हसि धर्मपूर्वमक्षयमिदं, वार्धारया धारये ॥ १ ॥

ॐ हीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

गंधश्चंदनगंधबंधुरतरो, यद्विव्यदेहोद्भवो, गंधर्वाद्यमरस्तुतो विजयते, गंधांतरं सर्वतः ॥

गंधादीनखिलानवैति विशदं, गंधाधिमुक्तोऽपि यस्तं गंधाद्यघ्नगंधमात्रहतये गंधेन संपूजये ॥ २ ॥

ॐ हीं परमब्रह्मणे सहजसौगन्ध्यबन्धुराय गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्राहीन्द्रसमर्चितैरनुपमैर्दिव्यैर्वलक्षाक्षतैर्यस्य श्रीपदसन्नखेन्दुसविधे नक्षत्रजालायितम् ।

ज्ञानं यस्य समक्षमक्षतमभूद्वीर्यं सुखं दर्शनं, यायज्यक्षतसंपदे जिनमिमं सूक्ष्माक्षतैरक्षतैः ॥ ३ ॥

ॐ हीं परमब्रह्मणे अक्षयफलप्रदाय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्य द्वादशयोजने सदसि सद्गंधादिभिः स्वोपमा-नप्यर्थात्सुमनोगणान्सुमनसां, वर्षन्ति विष्वक्सदा ।

यः सिद्धिं सुमनःसुखं सुमनसां, स्वं ध्यायतामावहे । अं देवं सुमनोमुखैश्चसुमनो-भेदैः समभ्यर्चये ॥ ४ ॥

ॐ हीं परमब्रह्मणे सुमनःसुखप्रदाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितं—यद्वाबाधविवर्जितं निरुपमं, स्वात्मोत्थमत्यूर्जितम् । नित्यानंदसुखेन तेन लभते, यस्तृप्तिमात्यन्तिकीम् ॥

यं चाराध्य सुधाशिनो ननु सुधा-स्वादं लभते चिरम् । तस्योद्यद्रसचारुणैव चरुणा, श्रीपादमाराधये ॥५॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतसुसंतृप्ताय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्यान्यस्य सह प्रकाशनविधौ, दीपोपमेऽयन्वहम् । यः सर्वं ज्वलयन्ननंतकिरणै-स्त्रैलोक्यदीपोऽस्त्यतः ॥

येनोद्दीपितधर्मतीर्थमभवत्सत्यं विभोस्तस्य स-द्दीप्त्या दीपितदिङ्मुखस्य चरणौ, दीपैः समुद्दीपये ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतदर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

येनेदं भुवनत्रयं चिरमभू-दुद्धूषितं सोप्यहो । मोहो येन सुधूषितो निजमहा-ध्यानाग्निना निर्दयम् ॥

यस्यास्थानपथस्य धूपघटजैर्धूमैर्जगद्धूषितम् । धूपैस्तस्य जगद्वशीकरणसद्धूपैः पदं धूपये ॥७॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे वशीकृतत्रिलोकनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्भक्त्या फलदायि पुण्यमुदितं, पुण्यं नवं बध्यते । पापं नैव फलप्रदं किमपि नो, पापं नवं प्राप्यते ॥

आर्हन्त्यं फलमद्भुतं शिवसुखं, नित्यं फलं लभ्यते । पादौ तस्य फलोत्तमादिसुफलैः, श्रेयःफलायार्च्यते ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अभीष्टफलप्रदाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंगं लाति मलं च गालयति यन्मुख्यं ततो मंगलं । देवोर्हन्वृषमंगलोऽभिविनुतस्तैर्मंगलैः साधुभिः ॥

चंचच्चाभरतालबृतमुकुरैर्मुख्येतरैर्मंगलै-र्मुख्यं मंगलमिच्छसिद्धसुगुणान्सम्प्राप्तुमाराध्यते ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं अर्हंतः! इदं सकलमंगलद्रव्यार्चनं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः परममंगलेभ्यः स्वाहा । अर्घ्यं ।

मालिनीछंद—

ज्वलितसकललोकालोकलोकोपरिश्री ॥ कलितललितमूर्ते कीर्तितेन्दुनीन्दे

जिनवर तव पादोपांततः पातयामो, भवदवशमनार्थमर्थतः शांतिधाराम् ॥ १० ॥

शांतिकृद्भ्यः स्वाहा । शांतिधारां ॥

शार्दूलविक्रीडितं—

पुष्पेषोरिषवो वयं पुनरिदं, पुष्पेषुनिष्पेषकम् । निष्पीतानि मधुव्रतैर्वयमिदं, निष्पापसंसेवितम् ॥

इत्यालोच्य नमंत्यपास्य मदमित्याशंकयंतीश ते । निष्पीताखिलतत्त्वपादकमले, पुष्पाणि निःपातये ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं अर्हंतः! इदं पुष्पांजलिप्रार्चनं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमोर्हद्भ्यो ध्यातृभ्योऽभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा पुष्पांजलिः ।

इत्येकादशविधमहः ।

(जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल, अर्घ्य, शांतिधारा और पुष्पांजलि इन द्रव्यों से पूजा करना “एकादशमह” ॥ एकादशप्रकारी पूजा कहलाती है ।)

अथ श्रुतपूजा

उपजातिछंदः—

अपौरुषेयानखिलानदोषा-नशेषविद्भिर्विहितप्रकाशान् ।

प्रकाशितार्थान्प्रयजे प्रमाणं, प्रवेदयद्द्वादशदिव्यवेदान् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं हसी हसं सरस्वति सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् नमः सरस्वत्यै स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं हसी हसं सरस्वति सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ नमः सरस्वत्यै स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं हसी हसं सरस्वति सर्वशास्त्रप्रकाशिनि! वद वद वाग्वादिनि ! मम सज्ज्ञानं कुरु कुरु
ॐ नमः सरस्वत्यै स्वाहा ।

१. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
२. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।
३. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
४. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
५. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।
६. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
७. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
८. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
९. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मणे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतिधारां । पुष्पांजलिं ॥

अथ गणधरपूजा

उपजातिछंदः—

ये येऽनगारा ऋषयो यतीन्द्रा मुनीश्वरा भव्यभवद्व्यतीताः ।

तेषां समेषां पदपंकजानि, संपूजयामो गुणशीलसिद्धयै ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्रचतुरशीतिगुणगणधरचरणा! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्रचतुरशीतिगुणगणधरचरणा! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्रचतुरशीतिगुणगणधरचरणा! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत
वषट् सन्निधीकरणं मम रत्नत्रयशुद्धिं कुरुत कुरुत वषट् ॥ स्थापनं ॥

- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥

अथ यक्षपूजा

उपजातिछंदः—

यक्षं यजामो जिनमार्गरक्षा-दक्षं सदा भव्यजनैकपक्षम् ।

निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षं, प्रतीक्ष्यमत्यक्षसुखे विलक्षम् ॥१॥

ॐ ह्रीं हे यक्ष ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥ ॐ ह्रीं हे यक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥
ॐ ह्रीं हे यक्ष ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥ स्थापनं ॥
ॐ ह्रीं यक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं यजामहे प्रतिगृह्यताम्
प्रतिगृह्यताम् स्वाहा ॥ (जिनशासन यक्ष देवों को अर्घ्य चढ़ाना)

अथ यक्षीपूजा

उपजातिछंदः—यक्षीं सपक्षीकृतभयलोकां, लोकाधिकैश्वर्यनिवासभूताम् । भूतानुकंपादिगुणानुमोदां, मोदांचितामर्चन्मोक्षि ॥१॥

ॐ ह्रीं हे यक्षि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं हे यक्षि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं हे यक्षि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं हे यक्षी देवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (जिनशासनयक्षी देवी को अर्घ्य चढ़ाना)

अथ ब्रह्मपूजा

उपजातिछंदः—यः सारसम्यग्गुणब्रह्मणेन ब्रह्माणमेकं भजते जिनेन्द्रम् । ब्रह्माणमेनं परिपूजयास्तं ब्रह्मविद्विघ्नविघातरक्षम् ॥१॥

ॐ ह्रीं हे ब्रह्मन् ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं हे ब्रह्मन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं हे ब्रह्मन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (ब्रह्मदेव को अर्घ्य चढ़ाना)

॥ इति मूलवेराद्यर्चनम् ॥

अठासी देव सहित पीठ यंत्र पूजा

(जो इष्ट अर्थ को प्रदान करने वाले हैं और अठासी देवों से सहित हैं ऐसे नवदेवताओं की पूजा करते हैं। अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय ये नवदेवता हैं। १५ तिथिदेव, ६ नवग्रहदेव, २४ यक्ष, २४ यक्षी, ८ दिक्पाल और ८ द्वारपाल ये ८८ देव हैं। इनका यंत्र या मंडल ऐसा बनाना, कर्णिका सहित ८ दल का कमल बनाकर उनके बाहर चौकोन पांच मंडल बनावें, चारों तरफ द्वार बना दें। पुनः क्रम से पूजा करें। परिशिष्ट में पीठयंत्र दिया हुआ है।)

अथ पीठयंत्राराधना

इन्द्रवज्रा— अष्टाधिकाशीतिसुरावृतानां, इष्टार्थदानां नवदेवतानाम् ।

आराधनां नित्यमहांगभूतां, श्रीपीठयंत्रे विधिना विधास्ये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ।

उपजाति— संसेचये यागभुवं जिनानां, अनाविलैस्तीर्थजलैः समंत्रम् ॥

दर्भाग्निनीलैरपि शोधये तां, संतर्पये तान्फणिनोऽमृतेन ॥२॥

ॐ क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । इति दर्भपूलोपात्तजलेन भूमिं सिंचयेत् । (डाभ से भूमि पर जल छिड़कें)

ॐ ह्रीं क्षीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा । ज्वलद्दर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालयेत् । (डाभ जलाकर भूमि पर डालें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । इति नागतर्पणार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् ॥ (ईशान दिशा में जलांजलि दें)

अहत पूजा ॥ कमल की कर्णिका में

उपजाति— ये घातिजातप्रतिघातजातं, शक्राद्यलङ्घ्यं जगदेकसारम् ।

प्रपेदिरेऽनंतचतुष्टयं तान्, यजे जिनेन्द्रानिह कर्णिकायाम् ॥ १ ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । *स्थापनं ॥*
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । *शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।*

सिद्ध पूजा ॥ पूर्व दल में

उपजाति—

निःशेषबंधक्षयलब्धशुद्ध - बुद्धस्वभावान्निजसौख्यवृद्धान् ।

आराधये पूर्वदलेत्र सिद्धान्स्वात्मोपलब्धै स्फुटमष्टधेष्टूया ॥ २ ॥

ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥ *स्थापनं ॥*
 ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । *शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।*

आचार्य पूजा ॥ दक्षिण पांखुड़ी में

इन्द्रवज्रा—

ये पंचधाचारभरं मुमुक्षू-नाचारयंति स्वयमाचरन्तः ।

अभ्यर्चये दक्षिणदिग्दले ता-नाचार्यवर्यान्स्वपरार्थवर्यान् ॥ ३ ॥

ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । *स्थापनं ॥*
 ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । *शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।*

उपाध्याय पूजा ॥ पश्चिम पांखुड़ी पर

उपजातिछंदः—

येषामुपान्तं समुपेत्य शास्त्राण्यधीयते मुक्तिकृते विनेयाः ।

अपश्चिमान्पश्चिमदिग्दलेऽस्मिन्नमूनुपाध्यायगुरुन्महामि ॥ ४ ॥

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः ।

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्थापनं ॥

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतितारा, पुष्पांजलिः ।

साधु पूजा ॥ उपरि दि ॥ के दल में

इन्द्रवज्रा—

ध्यानैकतानानबहिःप्रचारान्, सर्वसहान्निवृत्तिसाधनार्थान् ।

संपूजयाम्युत्तरदिग्दलान्तः, साधूनशेषान्गुणशीलसिंधून् ॥ ५ ॥

ॐ हः साधुपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ हः साधुपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः ।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्थापनं ॥

ॐ हः साधुपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हः साधुपरमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हः साधुपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हः साधुपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हः साधुपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतितारा, पुष्पांजलिः ॥

जिनधर्म पूजा ॥ आग्नेय विदिशा की पांखुड़ी पर

उपजातिछंदः—

आराधकानभ्युदये समस्ते, निःश्रेयसे वा धरति ध्रुवं यः ।

तं धर्ममाग्नेयविदिग्दलान्तः, समर्चये केवलिनोपदिष्टम् ॥ ६ ॥

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्म ! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः ।

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्थापनं ॥

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हौं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतितारा, पुष्पांजलिः ॥

जिनागम पूजा ॥ नैऋत विदि ॥ की पांखुड़ी पर

उपजातिछंद—

सुनिश्चयासंभवबाधकत्वात्, प्रमाणभूतं सनयप्रमाणम् ।

यजे द्विनानाद्विषभेदवेदं, मत्यादिकं नैऋतकोणपत्रे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं जिनागम! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ ह्रीं जिनागम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जिनागम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्थापनं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं हसीं हसों जिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥

जिनचैत्य पूजा ॥ वायव्य विदि ॥ के दल में

उपजातिछंद—

व्यपेतभूषायुधवेषदोषा-नुपेतनिःसंगदयार्द्रमूर्तीन् ।

जिनेन्द्रबिंबान्भुवनत्रयस्थान्यजामहे वायुविदिग्दलेऽस्मिन् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्य! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्थापनं ॥

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्येभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥

जिनचैत्यालय पूजा ॥ ई ान विदि ॥ की पांखुड़ी पर

उपजातिछंद—

सालत्रयान्सद्वनकेतुमानस्तंभालयान्मंडलमंगलाद्यान् ।

गृहाञ्जिनानामकृताङ्कृतांश्च, भूतेशकोणस्थदले यजामि ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालय! अत्र एहि एहि संवौषट् । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्थापनं ॥

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्य धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्य फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥

अथवा समासेन नवदेवताराधनमेवं कुर्यात् ॥ अथवा संक्षेप से नवदेवता पूजा करें

(आठ दल के कमल में कर्णिका में अर्हत को, पूर्व आदि दिशाओं में सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु को एवं विदिशाओं की पंखुड़ियों पर जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिनचैत्यालय को स्थापित करके पूजा करें)

मध्येकर्णिकमर्हदार्यमनघं, बाह्येऽष्टपत्रोदरे । सिद्धान्सूरिवरांश्च पाठकगुरुन्, साधूश्च दिक्पत्रगान् ।

सद्धर्मागम जैनबिंबनिलयान्कोणस्थपत्रस्थितान् । भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितांस्तानष्टधेष्ट्या यजे ॥१०॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्यनवदेवता! अत्र आगच्छत आगच्छतौषट्

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्यनवदेवता ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्यनवदेवता ! अत्र मम सन्निहिता

भवत भवत वषट् । स्थापनं ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः अन्नं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रैं हः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयाख्य नवदेवताभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

पंचदशतिथिदेवता पूजा ॥ प्रथम मंडल में अर्घ्य

उपजातिछंदः—

श्रीजैनमार्गप्रसितान्तरंगास्तिथिप्रमाणास्तिथिदेवतास्ताः ॥

यक्षादिका वर्तितपक्षभेदाः, संपूजयाम्यादिमंडलस्थाः ॥ ११ ॥

ॐ यक्षवै वानरराक्षसनधतः ॥ पन्नगः ॥ असुरः ॥ सुकुमारपितः ॥ वि वमालिनिः ॥ चमरः ॥ वैरोचनमहाविद्यमार-
विश्वेश्वरपिंडाशिन्निति पंचदशतिथिदेवा! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ यक्षवै वानरराक्षसनधतः ॥ पन्नगः ॥ असुरः ॥ सुकुमारपितः ॥ वि वमालिनिः ॥ चमरः ॥ वैरोचनमहाविद्यमार-
विश्वेश्वरपिंडाशिन्निति पंचदशतिथिदेवा! अत्र स्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ यक्षवै वानरराक्षसनधतः ॥ पन्नगः ॥ असुरः ॥ सुकुमारपितः ॥ वि वमालिनिः ॥ चमरः ॥ वैरोचनमहाविद्यमार-
विश्वेश्वरपिंडाशिन्निति पंचदशतिथिदेवा! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

ॐ ह्रीं पंचदशतिथिदेवेभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च
यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्य चढ़ावें)

नवग्रहदेवपूजा ॥ द्वितीय मंडल में अर्घ्य

उपजातिछंद—

प्रदक्षिणीकृत्य चरन्ति मेरुं, ये निग्रहानुग्रहयोः प्रतीताः ॥

ग्रहाननादन्निव वै द्वितीये, तान्मंडलेऽस्मिन् बहु मानयामि ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं आदित्यसोमकुजबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतव, इति नवग्रहदेवा! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं आदित्यसोमकुजबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतव, इति नवग्रहदेवा! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आदित्यसोमकुजबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतव, इति नवग्रहदेवा! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहेभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्यं चढ़ावें)

चौबीसयक्षपूजा ॥ तीसरे मंडल पर अर्घ्य

उपजातिछंद—

यक्षाधिका रक्षितधर्ममार्गा, ये गोमुखाद्यास्त्रिगुणाष्टसंख्याः ।

तृतीयसन्मंडलवर्तिनस्तान्-सपर्यया प्रीतिजुषस्तनोमि ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबरु-कुसुम-वरनदि-विजय-अजित-ब्रह्मेश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-किंपुरुष-गरुड-गंधर्व-खेन्द्र-कुबेर-वरुण-भृकुटि-सर्वाण्ह-धरणेन्द्र-मातंगाभिधानचतुर्विंशतियक्षदेवताः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं.....अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । ॐ ह्रीं.....अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

ॐ ह्रीं गोमुखादिचतुर्विंशतियक्षेभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्यं चढ़ावें)

चौबीसयक्षीपूजा ॥ चतुर्थमंडल पर अर्घ्य

उपजातिछंद—

सम्यक्प्रभावितजिनेश्वरशासनश्री-चक्रेश्वरीप्रभृतिशासनदेवता याः ॥

यक्षप्रमाणकलिता गुणिंसंघगृह्यास्तास्तुर्यमंडलगता बलिना धिनोमि ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी-रोहिणी-प्रज्ञप्ती-वज्रश्रृंखला-पुरुषदत्ता-मनोवेगा-काली-ज्वालामालिनी-महाकाली-मानवी-गौरी-गांधारी-वैरोटी-अनंतमती-मानसी-महामानसी-जया-विजया-अपराजिता-बहुरुपिणी-चामुंडी-कूष्मांडिनी-पद्मावती-सिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिदेवताः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । ॐ ह्रीं अत्र सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यादिशासनदेवताभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्यं चढ़ावें)

आठ दिक्पाल पूजा ॥ पांचवें मंडल पर अर्घ्य

उपजातिछंद—

दिशाधिनाथा जिननाथयज्ञ-विघ्नौघविध्वंसविधानवित्ताः ।

इंद्रादयः पंचममंडलस्थाः, सपर्यया तेऽष्ट भवन्तु तुष्टाः ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं इंद्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरैशानाभिधानाष्टदिक्पालदेवाः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं इंद्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरैशानाभिधानाष्टदिक्पालदेवाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं इंद्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरैशानाभिधानाष्टदिक्पालदेवाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

ॐ ह्रीं इंद्राद्यष्टदिक्पालकदेवेभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्यं चढ़ावें)

अष्ट द्वारपाल पूजा ॥ पूर्वादि दि ॥ में अर्घ्य

उपजातिछंद—

द्वे राक्षसी द्वावसुरावही द्वौ, द्वौ वैनतेयाविति साष्टसंख्यान् ॥

दौवारिकानिष्टबलिप्रदानात्पूर्वादिदिग्द्वारगतान् धिनोमि ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं राक्षसाद्यष्टदौवारिका! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं राक्षसाद्यष्टदौवारिका! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं राक्षसाद्यष्टदौवारिका! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

॥ राक्षसाद्यष्टदौवारिकदेवेभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्यं चढ़ावें)

१०८ सुगंधित पुष्पो से आगे लिखित मंत्र को जपें

उपजातिछंद—

शुभप्रसन्नैर्मणिभिर्विशुद्धैस्तथा समत्रैरथवाङ्गुलीभिः ॥

आराधयाम्यष्टशतं सुरेन्द्रैराराध्यपादं भगवज्जिनेन्द्रम् ॥ १७ ॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उ सा स्वाहा । अनेनाष्टोत्तरशतपुष्पैरर्हन्तमाराधयेत् ॥

स्तुतिः

शार्दूलविक्रीडितं—

ये र्हन्तस्त्रिजगज्जनैक ऋणाः, सिद्धा निरुद्धान्तक ॥ व्यापारा गणरक्षिणः विपथाभ्युद्धारिणो ध्यापकाः ।

धीमत्सर्वपदीनलोचनसजो, वाचंयमाः संयम ॥ ज्ञानध्यानजुषो मनीषितपुषस्तानौम्यहं भक्तितः ॥ १८ ॥

स्रग्धराछंद—

दिग्विन्यस्तक्षिबीजांतरलिखितलकारं ठकारावृतांगम् । द्विर्धात्रीमंडलान्तर्निहितमुपहितब्रह्मलींकारकोष्ठं ॥

ग्लौं क्ष्मं ठं वेष्टितांतं क्षितितलमहितं ध्यायति प्रत्यहं यो । देवं ह्रस्व्यूंकाररूपं रिपुकुलमखिलं तस्य संस्मरेति ॥ १९ ॥

ऊर्ध्वाधःपार्श्वदत्तांकुशमितरदिशा योजितं क्लीं सबीजं । जंभामोहात्तकोष्ठज्वलनपुरपुटाग्लांतरौं प्लूं सक्षेम् ॥

ॐ ब्लें धात्रे वषंवेष्टितमवनिपुरान्तर्गतं देव यस्त्वां । ह्रींकारं ध्यायतीद्भृद्युतिमखिलजगद्वश्यतां तस्य याति ॥ २० ॥

झं वं व्हः पः क्षि बीजाक्षरमयवपुषं ठस्वरैरावृतांगं । त्रिध्नाष्टार्धाब्जपत्रार्पितसकलसितं सांतसत्संपुटास्थम् ॥

क्लीं हं सः सक्तमंभः पुरपुटघटितं मूर्ध्नि देवं भवन्तं । ध्यायेद्यस्तस्य भद्रं शिवममलमलं मंगलं सर्वकालम् ॥ २१ ॥

शार्दूलविक्रीडितं—

आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतां । उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् ॥

स्तंभं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य संमोहनं । पायात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥ २२ ॥

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(प्रतिज्ञा करके 'णमो अरहंताणं से दुच्चरियं वोस्सरामि' बोलकर ६ बार णमोकार मंत्र का जप करके 'चउवीसं' आदि स्तुति पढ़कर चैत्यभक्ति पढ़ें ।)

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

चत्तारिमंगलं-अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंत

लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि । जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि । (६ बार णमोकार मंत्र पढ़ना)

थोस्सामि स्तव या—

चउवीसं तित्थयरे उसहाइवीर पच्छिमे वंदे । सव्वे सगणगणहरे, सिद्धे सिरसा णमंसामि ।

पुनः—

चैत्यभक्ति

शार्दूलविक्री—कोट्योऽर्हत्प्रतिमाः शतानि नवतिः, पंचोत्तरा विंशतिः । पंचाशत्त्रियुता जगत्सु गुणिता, लक्षाः सहस्राणि त ।

सप्ताग्रापि च विं तित्तिर्नव तित्तिर्यूनं ताथ मताऽस्ता नित्याः पुरुतुंगपूर्वमुखसत्पयकबंधाः स्तुवे ॥ २३ ॥

इच्छामि भंते । चेइयभक्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं । अहलोयतिरियल्लोयउड्ढल्लोयन्दि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसु वि लोएसु भवणवासियवाणवेंतरजोयिसियकप्पवासियन्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहिं गंधेहिं, दिव्वेहिं अक्खेहिं, दिव्वेहिं पुप्फेहिं, दिव्वेहिं दीवेहिं, दिव्वेहिं धूवेहिं, दिव्वेहिं चुण्णेहिं, दिव्वेहिं वासेहिं, दिव्वेहिं ण्हाणेहिं, णिच्चकालमच्चंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसन्ति चेदियमहाकल्लाणं करंति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं पंचगुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं

शेषं णमो अरिहंताणं, चत्तारि मंगलमित्यादि पूर्ववत् । (पूर्ववत् विधि से कायोत्सर्ग करें)

पंचगुरु भक्ति

अनुष्टुप् छंद—प्रातिहार्यैर्जिनान्सिद्धान्गुणैः सूरीन्स्वमातृभिः । पाठकान्विनयैः साधून्योगागैरष्टभिः स्तुवे ॥ २४ ॥

इच्छामि भंते ! पंचगुरुभक्तिकाओसग्गो कओ तस्स आलोचेउं । अट्ठमहापाडिहेर सहियाणं अरहंताणं । अट्ठमहाकम्मविप्पमुक्काणं सिद्धाणं । अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आइरियाणं । आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं । तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं । भत्तीए णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीशांतिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं । १०४ पूर्ववत् । (विधिपूर्वक कायोत्सर्ग करें)

शांतिभक्ति

शार्दूलविक्रीडित—श्रीमत्पंचमसार्वभौमपदवीं, प्रद्युम्नरूपश्रियं । प्राप्तः षोडशतीर्थकृत्वमखिल-त्रैलोक्यपूजास्पदम् ॥

यस्तापत्रयशांतितः स्वयमितः, शांतिं प्रशांतात्मनाम् । शांतिं यच्छति तं नमामि परमं, शांतिं जिनं शांतये ॥ १५ ॥

इच्छामि भंते ! संतिभक्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं । अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, चउत्तीसअइसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिमौलिमत्थमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजयिअणगारावद्धाणं, थुयिसयसहस्सणिलयाणं, उसहायिवीरावसाणाणं मंगलमहापुरुसाणं, भत्तीये णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तववंदनासमेतं सिद्धचैत्यपंचगुरुशांतिभक्तीर्विधाय तद्धीनाधिकदोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।।

शेषं पूर्ववत् । (पूर्ववत्, णमोकार आदि चत्वारिदण्डक ६ बार जाय्य व थोस्सामिस्तव पढ़कर पूरी विधि करें)

समाधिभक्ति

अनुष्टुप् छंद—स्वात्माभिमुखसंवित्ति-लक्षणं श्रुतचक्षुषा । पश्यन्पश्यामि देव ! त्वां, केवलज्ञानचक्षुषा ॥ २६ ॥
इच्छामि भंते ! समाहिभक्तिकाओस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं । रयणत्तयसरूवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिं सव्वकालमंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

प्रध्वस्ताशेषघातिप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः । कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ॥

तैरष्टप्रातिहार्यैस्त्रिजगदधिपतिर्यस्तमेनं प्रवदे । स्याद्वादामोघवाक्यं सकलसुखकरं सन्नतेन्द्रं जिनेन्द्रम् ॥ १७ ॥

इति पंचांगप्रणामः । (पंचांग नमस्कार करें) । शांतिमंत्रं पंचकृत्वः गणधरवलयं पुण्याहमंत्रं च जप्त्वा जिनपादशेषं मूर्ध्नि धारयेत् ॥
(शांति मंत्र को पांच बार पढ़कर गणधरवलय मंत्र पढ़ें पुनः पुण्याहमंत्र को बोलकर जिनेन्द्रदेव की शेषा कोमस्तक पर धारण करें) ॥

शांतिमंत्र (शांति मंत्र को ५ बार पढ़ें)

ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा ।

गणधरवलय मंत्र

णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहि-जिणाणं, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणंतोहिजिणाणं, णमो कोट्टबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणु-सारीणं, णमो संभिण्णसोदाराणं, णमो सयंबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमो चउदस-पुव्वीणं, णमो अट्ठंग-महा-णिमित्तकुसलाणं, णमो विउव्व-इट्ठि-पत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगास-गामीणं, णमो आसीविसाणं, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दित्ततवाणं, णमो तत्ततवाणं, णमो महातवाणं, णमो घोरतवाणं, णमो घोरगुणाणं, णमो घोर-परक्कमाणं, णमो घोरगुण-बंधयारीणं, णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहिपत्ताणं, णमो जल्लोसहिपत्ताणं, णमो विण्णोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो मणबलीणं, णमो वचिबलीणं, णमो कायबलीणं, णमो खीरसवीणं, णमो सप्पिसवीणं, णमो महुरसवीणं, णमो अभियसवीणं, णमो अक्खीणमहाणसाणं, णमो वट्ठमाणाणं, णमो सिद्धायदणाणं, णमो भयवदो महदिमहावीर-वट्ठमाणबुद्धरिसीणं, ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः स्वाहा ।

अष्टकम् ॥ आचार्यदेव की पूजा

रथोद्धताछंदः—शांतिकुंभमयकुंभसंभृतमोदमुख्यगुणशुभदम्भसा । धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ १ ॥

ॐ हीं आचार्यदेवाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंदगंधवहसंगसंसरद्गंधबंधुरसुगंधचर्चया ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ २ ॥

ॐ हीं आचार्यदेवाय गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋक्षभाक्षपणदक्षकक्षतक्षेपसौक्ष्मपरिलक्षिताक्षतैः ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंजुगुंजदलिपुंजमंजुलानेकनूतनविनूतपुष्पकैः ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्णगंधरसपाकसारतामेदुरान्नपरमान्नभक्ष्यकैः ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोलुपालिकुलवच्छिखालसत्कालिकाकलितकर्पूरार्चिषा ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

भृंगमंगलनिनादतो नभोरंगनृत्यदुरुधूपधूमकैः ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बीजपूरसहकारसौरभैः चोचमोचपनसादिसत्फलैः ॥ धर्मसूरिपदपंकजद्वयं यायजीमि भुवनैकभूषणम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मालिनीछंद— विनुतविनयसिंधुर्भव्यलोकैकबंधुः । प्रकटितनिजधर्मो भूरिसत्पुण्यकर्मा ॥

निखिलमुनिजनेन्द्रो नम्रनानानरेन्द्रो । जयतु विनुतधैर्यः सन्नुताचार्यवर्यः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं आचार्यदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

अनेनार्घ्यं दत्त्वा पंचांग प्रणामं कृत्वा प्रागुक्तविधिना यज्ञदीक्षामिन्द्रः स्वीकुर्यात् ॥

(इस पद्य से अर्घ्य चढ़ाकर पंचांग नमस्कार करें पुनः प्रतिष्ठाचार्य यज्ञदीक्षा ग्रहण करें।)

अथ यंत्रदेवताविसर्जनादिविधानम् (आगे की विधि से विसर्जन करें)

अनुष्टुपछंद—अष्टाशीतिसुरा हूताः शिष्टार्हत्प्रभुपूजने ॥ इष्टमस्माकमापाद्य तुष्टा यांतु यथायथम् ॥ १ ॥

१. ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा नवदेवताः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः ॥

ॐ ह्रीं अष्टाशीतिपरिवारदेवाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः । इति यंत्रदेवताविसर्जनम् ।

तदन्ते अर्चनावेरं स्वस्थाने विनिवेशयेत् ॥

(इस विसर्जन के बाद भगवान को वेदी में विराजमान कर दें।)

अथ द्वारपालबलिः (द्वारपाल पूजा)

शिलामध्येथ नासाया मध्ये सव्येतराग्रयोः ॥ शिलाया अपि षड्द्वारदेवताभ्यो बलिं ददे ॥ १ ॥

२. ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्तवर्णा हे सर्वलक्षणसंपूर्णायुधसपरिवाराः क्षेत्रपालाः श्रियः गंधर्वाः किन्नराः प्रेताः भूताः सर्वेपि ॐ भूर्भुवः स्वाहा । इमं सार्घ्यं चरुममृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृण्हीत गृण्हीत ॥ इति द्वारपालबलिः ॥

(क्षेत्रपाल, श्री, गंधर्व, किन्नर, प्रेत और भूत इन छह को नैवेद्य सहित अर्घ्य समर्पित करना द्वारपाल बलि कहलाती है। यह विधि मंदिर के द्वार पर की जाती है।)

अथ ब्रह्माष्टदिक्पालबलिः (ब्रह्मदेव एवं दिक्पालपूजा)

मध्येगृहं विधातारमर्चये सलिलादिभिः । अष्टौ दिक्पालकान् दिक्षु बलिपीठे पदामरान् ॥ १ ॥

जिनमंदिर के मध्य भाग में और आठों दिशाओं में एक-एक पात्र रखना उन्हीं में ॐ से ॥ मध्य में ब्रह्म देव को अर्घ्य देना पुनः आठों दिशाओं में क्रम से नैवेद्य सहित अर्घ्य समर्पण करना यही ब्रह्मबलि एवं दिक्पाल बलि विधि है।)

ॐ ह्रीं क्रों रक्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित ब्रह्मन् भूर्भुवः स्वः स्वाहा ।

इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा । इति ब्रह्मबलिः ॥ (मध्य में अर्घ्य देना)

ॐ ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णयानायुधयुवतिजनसहित हे इंद्र एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ पूर्व दिशा में अर्घ्य

ॐ ह्रीं रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे अग्ने! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ आग्नेय में अर्घ्य

ॐ ह्रीं कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे यम! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ दक्षिण में अर्घ्य

ॐ ह्रीं श्यामवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे नैऋत! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ नैऋत में अर्घ्य

ॐ ह्रीं धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे वरुण! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ पश्चिम में अर्घ्य

ॐ ह्रीं कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे पवन! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ वायव्य में अर्घ्य

ॐ ह्रीं पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे कुबेर! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ उत्तर में अर्घ्य

ॐ ह्रीं धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण यानायुधयुवतिजनसहित हे ईशान! एहि एहि । (पुष्पांजलिः)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं सार्धं चरुं अमृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ ईशान में अर्घ्य देना ॥

॥ इति दिक्पालबलिः ॥

ॐ ह्रीं क्रों अपदाः सर्वे देवाः इमं बलिं गृण्हीत गृण्हीत ॥ इत्यपददेवेभ्यो बलिं बलिपीठे दद्यात् ॥ इत्यपददेवताबलिः ॥

बलिपीठं बलिपूजा के पात्र में अर्घ्य देना)

अथ श्रीबलिविधानम्

गद्य ॥ ॐ समस्ताभ्युदयनिःश्रेयससमुद्भूतदुस्तरसुखनिस्तीरनिजानंदनिदाननित्यमहाद्विजैनमहामहं विधाय, तस्यांते सकलमंगलकुम्भिर-
भगवज्जिनमंदिरमुखमंडपदक्षिणदिग्भागरचितचतुरस्रमंडलविन्यस्तस्य, द्वित्रिचतुस्तालान्यतमव्यासैकांगुलतटोच्छ्रयस्य, रजत्सहारजतादिमयस्य
बलितालस्य तन्निर्भागविष्कंभायामे तद्वलायामाष्टदलेष्टितायां एकांगुलोच्छ्रायतन्मध्यकर्णिकायां पंचकुटपप्रस्थद्वयाद्व्यक्तममानकलमतंडुलसुश्रुतेन
दधिपक्वफलादिकलितेन बलिवल्भेन अष्टांशवर्जितकर्णिकासममूलव्यासद्वयंगुलाग्रव्यासक्रमहानिरूपेण बलिपिंडं परिकल्प्य, तदुपरि
पंचाक्षरीरूपपंचनमस्कारं विन्यस्य, पंचगुरुसंकल्पेन बलिपिंडं समभ्यर्च्य, शुद्धदर्शनसुलक्षणोपलक्षितबलिवाहकस्य, प्रहे शोणोत्तरीयमाल्यानुलेपन-
स्यायोदंडमंडितस्य समौनस्योदङ्मुखस्य शिरसि सोष्णीषे बलितालं समारोप्य शंखकाहलाभ्यां अन्यत्र सकलवादित्रयद्विरहितं द्वारतो निर्गत्य
छत्रचामरगानानेकनानावाद्यनिनादविराजितेन जिनबिंबपुरःसरेण बलितालेन जिनमंदिरं मंगिणीतालेन प्रथमवारे परीत्य पूर्वादिदिक्षु क्रमेण
तदभ्यंतरे बलिस्थापनभंगिमल्लनवनागकौलिककटंकरीतालैस्तृतीयवारे तत्परीत्य द्वारोपांते जिनार्चामभ्यर्च्य तां बलिं च पूर्वस्थाने निवेश्य,
बलिदेवानभ्यर्च्य, विनम्य, विसृज्य, बल्यन्नमंभःसंभृतं बलिपीठे निधाय, बलिक्रियां मध्याह्ने सितांबरादिमद्धृतललिना, निशि पीतांबरादिमद्ध-
धृततद्रुबलिना जिनबिंबवियुक्तेन तां तथैव निष्ठाप्य, राजराष्ट्रश्रीबलकरश्रीबलिनामनित्योत्सवं एवं विधाय नित्यानंद-
निबंधननित्यमहाद्विजैनमहामहमंगलं सांगं विधातुमिमे वयं उत्सहामहे । क्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः ॥

पात्र में निक्षिप्त बलिपिंड की पूजा सर्वत्र बलि का अर्थ नैवेद्य आदि से पूजा करना है

(पिंड के मध्य अरिहंत को, पूर्वादिदिशाओं में सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु को स्थापित कर उनकी पूजा करें।)

मध्ये जिनेन्द्रानिह वल्भपिंडे, क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु सिद्धान् ॥

सूरीनुपाध्यायगुरुंश्च साधू-नाराधयामो विधिना स्वमंत्रैः ॥ १ ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आउसा पंचपरमेष्ठिनः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आउसा पंचपरमेष्ठिनः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आउसा पंचपरमेष्ठिनः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहजप्रोद्गंधिगंधैः सितैः ॥ सूक्ष्मत्वायति शालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः ॥ धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः पंचापि चाये गुरुन् ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! जलं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! गंधं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! अक्षतं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! पुष्पं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! चरुं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! दीपं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! धूपं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! फलं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः पंचपरमेष्ठिनः! अर्घ्यम् गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ॥ २ ॥

प्रथम पर्यये (प्रथम प्रदक्षिणा में) —

पूर्वस्यां दिशि

भवेयुर्मंगिणीताले लघुर्बिंदू लघू गुरु ॥ नांदीनामांतरं पूर्वपर्यये तं प्रयोजय ॥ मंगिणीतालम् ॥

(मंगिणी ताल पर नृत्य करते हुए मंदिर की प्रदक्षिणा देवें)

तक्कत्तो दिगिदिगिणां ण्तकणां । दिक्किणगिणदो । तक्किणगण्णिं गिडिदरिगिड । तगदरिगिडदिगिडतक्कण्णी ।

तदिदत्त । तक्कडतगदरिगिडदिगिडो ॥ इति प्रथमपर्ययः ।

द्वितीय पर्यये (दूसरी प्रदक्षिणा में) —

प्राच्यां दिशि

पूर्व दि ॥ में इस ताल पर नृत्य करें

समहस्ते लघुद्वंद्वं विरामांतं द्रुतद्वयम् ॥ द्वितीयपर्यये प्राच्यां सामान्याख्यः स योज्यताम् ॥ ०० ॥

तक्कतरिकी तक्कण्णिं तोकणं तक्कणं । दिक्किणगिणदो दिक्किणगिणदो ॥ तक्कडदरिगिड तगदरिगिडदिगिड तक्कण्णिं तरिकिट तदिदत्तक्कड तगदरिगिडदिगिडो ॥ १ ॥

आग्नेयां दिशि

(आग्नेय दिशा में इस ताल पर नृत्य करें)

ताले लिंगितसंज्ञे स्याद् द्रुतद्वंद्वं गुरुलघुः ॥ ललितापरनामानं आग्नेय्यां तं प्रवादय ॥ ७००६ ॥

तद्धित्तगण्णं तोक । दिगिदिगिणां दिक्किणगिणदो । दरिगिडदरिगिडतगदरिगिडदिगि । तक्कण्णिं गित्तरिकिट् तदिदत्तक्कड तगदरिगिडदिगिडो ॥ २ ॥

दक्षिणस्यां दिशि

(दक्षिण दिशा में निम्नलिखित ताल पर नृत्य करें)

कर्तृवाद्याव्हये ताले द्रुतद्वंद्वं लघुद्वयम् ॥ कुडुक्कापरनामानं अपाच्यां तं प्रयोजय ॥ ७०० ॥
तक्कणं दिक्कणदिद्धि । णंतकणं दिक्कणगिणदो तत्तरगिडदगि । तक्कणंगि तक्कत्तरि । तत्तरगिडदगि ।
तदित्ततक्कड तगदरगिडदगिदो ॥ ३ ॥

नैऋत्यां दिशि

(नैऋत्य दिशा में निम्नलिखित ताल पर नृत्य करें)

ताले तुटंकरीनाम्नि द्रुतद्वंद्वं लघुस्तथा ॥ तं तुरंगापराभिख्यं नैऋत्यां दिशि योजय ॥ ० ० ॥
तक्कतोक् । तरिकितो कणंगतोक् । दिगिदिगिणं तक्कणंगि दिक्कण गिणदो । टिक्किटिक्किडदगिणंगु ।
णंगिड दगिदरि गिडदरि गिडदाग तक्कत्तरि कितकणंगि तक्कट दगिदरि गिडदगिदो तम् ॥ ४ ॥

प्रतीच्यां दिशि

(पश्चिमदिशा में निम्नलिखित ताल पर नृत्य करें)

चत्वारो लघवश्चांते गुरुः खर्जुसतालके ॥ कंतुकापरसंज्ञं तं प्रतीच्यां परिवादय ॥
दिकितोक णक्तोक णंदिणं तकणं दिक्कणगिणदो । दित्तगणंगिड तक्कड दिक्कड । तगदरगिडदगि
तक्कणंगि । तदित्त तक्कड तगदर गिडदगिदो ॥ ५ ॥

वायव्यां दिशि

(वायव्यदिशा में निम्नलिखित ताल पर नृत्य करें)

क्रौंचताले द्रुतं द्वंद्वं यगणः परिकीर्तितः ॥ कंदर्पापरसंज्ञं तं वायव्यां दिशि वादय ॥ ७००६६ ॥
तद्विक्किट्तोङ्ग दरिगिड तगदरगिडदगि तद्विगि दिदिं निदिगिणां तकणां दिक्कणं गिणंतो तक्कड
तगदरगिडदगिदरिगिददगिनं गिडदगि । तत्तरि तरिक्कितगणंगिदो । गिडदगितद्धि । तक्कडतगदरगिडदगिदो ॥ ६ ॥

उदीच्यां दिशि

(उत्तर दिशा में निम्नलिखित ताल पर नृत्य करें)

ताले वटभसंज्ञे स्यान्नगणो मगणस्तथा ॥ वसंतापरनामानं उदीच्यां तं प्रयोजय ॥ ७ ॥ ६६६ ॥
तद्विगिदीं । तद्विगिदीं । दिकितोक तदिगिदि णंतकणां दिक्कणगिणंदो । तक्कड दगिदरि गिडदगि
तक्कडतगदरगिडदगि । तक्कत्तरि तत्तरगिडदगि तद्वित्त । तक्कड तगदर गिडदगिदो ॥ ७ ॥

ईशान्यां दिशि

(ईशान दिशा में निम्नलिखित ताल पर नृत्य करें)

वेदद्रुता विरामांता द्विवारं विषमंजरौ ॥ विषमापरसंज्ञां तामैशान्यां दिशि वादयेत् ॥ ७०००००००० ॥
तक्किटकातक तरिकिणां तक्कणंगि । धिकिणगिणतो । तक्कडदगि दरिगिड दरिगिड । तक्कडदगित ।
तक्कडदगि । दरिगिड दरिगिड । तक्कड दगित । तक्कडदगि । दरिगिड दरिगिड दगितोतम् ॥ ८ ॥

इति द्वितीयपर्ययः । यह द्वितीय प्रदक्षिणा हुई । बलिपीठं सकृत्प्रदक्षिणीकृत्य प्रक्षाल्य पादौ जिनावासं प्रविश्य तदभ्यन्तरे ।

(द्वितीय प्रदक्षिणा के अनंतर बलिपीठ को एक प्रदक्षिणा देकर पैर धोकर जिनमंदिर में प्रवेश करके तीसरी प्रदक्षिणा में पूर्व आदि दिशाओं में आगे कहे हुये ताल पर नृत्य करते हुए विधि करें) ॥

(पुनः पूर्व दिशा में आगे लिखा हुआ श्लोक व गद्य पढ़कर नृत्य करें)

तृतीय पर्यये (तीसरी प्रदक्षिणा में)—

पूर्वस्यां दिशि-पूर्व दिशा में

लघुद्वयाप्लुतस्ताले बल्याख्ये तं प्रयोजय । तृतीयपर्यये प्राच्यामुत्सवापरनामकम् ॥७॥६॥

तक्कतोक दिकितोक णं दिक्किडदगित्तक्कणां दिक्किण गिणदो । दरिगिड तगदर गिडदगि । दरिगिड तगदर गिडदगि । तक्कणकि तरिकिट्ट । तत्तरगिडदगि । तद्धित्त तक्कड । तगदर गिडदगिदो ॥ १ ॥

आग्नेयां दिशि-आग्नेय दिशा में

(ऐसे ही दिशाओं के क्रम से श्लोक व गद्य पढ़-पढ़कर नृत्य करें)

स्थापनाख्ये भवेत्ताले द्रुतद्वंद्वं लघुः प्लुतः ॥ तं वर्धनापराभिख्यं आग्नेय्यां दिशि योजय ॥ ७००६ ॥

दिगि दिगिणं । दिक्किणदिं । णंदिक्किड दगित्तक्कणं दिक्किण । गिणगिणदो । तत्तरगिडदे गिडदगिगिड दगिगिड तगदरगिड देगिड दगिडगिड । तक्कडदरिगिड । तगदरगिडदगि । तद्धित्त तक्कड तगदर गिडदगिदो ॥ २ ॥

दक्षिणस्यां दिशि-दक्षिणदिशा में

भंगिनामनि ताले स्याल्लघुद्वंद्वं गुरुद्वयम् ॥ त्रिभंग्यपरसंज्ञं तं यमाशायां प्रयोजय ॥ ७ ॥ ६६ ॥

तक्कतरिकि तोक तक्कडदगि दरिगिड दगित्तोक तक्कण दिक्किणं तक्कणां । दिक्किणगिणदो तत्तरगिडदगि । तक्कणगि तक्कुकुत्तरिगित्त तक्कुकुत्तरिगि । तक्कडदरिगिड । तगदरगिड दगिणां । तद्धित्ततक्कड तगदरगिडदगिदो ॥

नैऋत्यां दिशि-नैऋत्य दिशा में

मल्लताले चतुर्मात्रं विरामांतं द्रुतद्वयं ॥ नैऋत्यां दिशि तं वाद्यवादनाभिख्यं वादय ॥ ००॥

तक्कतोक दिकितोकणं दिक्किणदि णंतक्कणं दिक्किणगिणदो । तक्कण दरिगिड । तगदरगिडदगि । तक्कणगि तरिकिट्ट तद्धित्त । तक्कड तगदर गिडदगिदो ॥ ४ ॥

पश्चिमायां दिशि-पश्चिम दिशा में

नवताले लघुद्वन्द्वं गुरुद्वन्द्वं प्लुतस्तथा ॥ नंदनापरनामानं प्रतीच्यां तं प्रयोजय ॥७॥६६६॥

तक्कतो तरिकि तक्कडदगि । तक्कणंग तोक तक्कणदोक तक्कणां । दिक्किणगिणदो तत्तरगिडदगि । तक्कणंगि । तगदर गिडदगि । तक्कणंगि । तक्कडदरिगिड । तगदरगिदगि तक्कणंगि । तरिकिट तद्धित्त । तक्कट तगदर गिडदगिदो ॥ ४ ॥

वायव्यां दिशि-वायव्य दिशा में

अनुष्टुप् छंद—नागताले विरामान्तं भवेल्लघुचतुष्टयम् ॥ गजलीलपराख्यं तं वायव्यां दिशि योजय ॥ ७ ॥

दिगिदिगिणं णंतक्कणां । णंतक्कणं । दिक्किणगिणदो । तक्कडदरिगिड । तक्कडदगि । दरिगिडदगि ॥ तक्कडदरिगिड तगदरगिडदगि । तक्कतरिकिट । तत्तरगिडदगि । तद्धित्ततक्कड तगदरगिडदगिदो ॥ ६ ॥

उदीच्यां दिशि-उत्तर दिशा में

ताले कौलिकसंज्ञे स्युः क्रमाद्गुरुलघुप्लुताः ॥ तं कोकिलाप्रियान्याख्यमुदीच्यां दिशि वादय ॥ ७६ ॥ ६ ॥

तद्धिदिं । दिगिदिगिणां । दिगिणां । दिगिदिगिणदि । दिक्किणगिणदो । तत्तरगिडदगि तक्कणंगि । तद्धित्त तक्कड तगदरगिड दगिदो ॥

ईशान्यां दिशि-ईशान दिशा में

कंटक्यां लघुद्वंद्वं गुरुर्लघुयुगं गुरुः ॥ जयमंगलरूढीं तामैशान्यां दिशि वादय ॥ ७ ॥ ६ ॥ ६ ॥

णदिविकणंगं तोंगा णंतकणां । दिक्कणगिणदो । दरिगिड तगदरगिडदगि । तक्कणंगि । तरिकिट । तद्वित्त
तक्कड तगदरगिडदगिदो ॥

ततो द्वारोपांते जिनबिंबार्चनम् (इसके बाद द्वार के पास आकर श्रीजिनेंद्रदेव को अर्घ्य चढ़ावें) ॥

शार्दूलविक्रीडितं— स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहजप्रोद्गंधिगंधैः सितैः ॥ सूक्ष्मत्वायति शलिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः ॥ धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः देवं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीमदहर्त्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(तदनंतर उस बलिपिंड को पूर्वस्थान में रखकर बलिदेवतार्चन करावें)

अथ तां बलिं च पूर्वस्थाने निवेश्य बलिदेवार्चनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहजप्रोद्गंधिगंधैः सितैः ॥ सूक्ष्मत्वायति शलिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः ॥ धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः पंचापि चाये गुरून् ॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बसंततिलकाछंद— तुभ्यं नमोस्तु नवकेवलपूर्वलब्धे! । तुभ्यं नमोस्तु परमैश्वर्योपलब्धे! ॥

तुभ्यं नमोस्तु मुनिकुंजर यूथनाथ! । तुभ्यं नमोस्तु भुवनत्रितयैकनाथ! ॥ १ ॥

विसर्जन करें

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा पंचपरमेष्ठिने स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः । इति बलिदेवताविसर्जनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रौं अपदाः सर्वे देवा इमं बलिं गृणहीत । इत्यपददेवेभ्यो बल्यन्नमंभःसंभृतं बलिपीठे दद्यात् ॥

(इस मंत्र से अपददेवों को जलसहित बलि—अन्न को बलिपीठ पर अर्पित करें)

शार्दूलविक्रीडितं— इत्थं नित्यमहं विधाय विधिना निर्वर्त्यते श्रीबलिपुत्र्योसौ तेन बलारिवद्बहुबलो राजा स्वयं श्रीबली ॥

देशोऽयं दिशतात्सुखानि बलवद्वर्णाश्रमाणां सदा भूयात्सर्वबलं जिताहितबलं जैनं मतं वर्द्धताम् ॥

इस प्रकार जो नित्यपूजाविधि को करके विधिवत् श्रीबलि करते हैं उसके प्रभाव से राजा स्वयं श्रीपुलक्ष्मी से संपन्न हो जाते हैं। यह पूजाविधि देश, वर्ण एवं आश्रमों को सुख प्रदान करे। शत्रु के बल को जीतने वाला जैनमत बलशाली होव एवं वृद्धि को प्राप्त करे।

इति श्रीबलिविधानम्

अथ मूलवेराग्रतः (मूलवेद्यग्रतः) स्वेष्टप्रार्थना

(अब मूलवेदी के सामने इष्ट प्रार्थना करें)

जय जय जिन शश्वद्विश्वविद्यैकमूर्ते । हर हर दुरितं मे ध्वस्तनिःशेषदोष ॥

नय नय नतनाकिव्रात मां मुक्तिमार्गं । भव भव शरणं मे जन्मजन्मन्यधीश ॥१॥

अथ शुभानुध्यानम्

शांतिः शिरोधृतजिनेश्वरशासनानां । शांतिर्निरंतरतपोवरभावितानाम् ॥

शांतिः कषायजयजृम्भितवैभवानां । शांतिः स्वभावमहिमानमुपागतानाम् ॥ २ ॥

जीवंतु संयमसुधारसपानतृप्ता । नंदन्तु शुद्धसहजोदयसुप्रसन्नाः ॥

सिध्यंतु सिद्धिसुखसंगकृताभियोगास्तीव्रं तपंतु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञाः ॥ ३ ॥

तद्द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभैः स देशः । संतन्यतां प्रतपतु सततं स कालः ॥

भावः स नंदतु सदा यदनुग्रहेण । प्रस्नौति तत्त्वरुचिमाप्तगवी नरस्य ॥ ४ ॥

॥ अथ जिनेश्वरविसर्जनम् ॥

प्रक्षीणदोषमलमिद्धमणिप्रकाशं । लोकैकभूषणमहो जिनदिव्यरत्नम् ॥

मुक्तिश्रियः सपदि संवदनं विधातुं । पूज्यं प्रपूज्य हृदये जिनदिव्यरत्नम् ॥५॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आउसा अर्हत्परमेष्ठिन् स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः जः ॥

प्रमादाज्ज्ञानदर्पाद्यैर्विहितं विहितं न यत् । जिनेन्द्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलं च तत् ॥६॥

॥ क्षमापणपूर्वकं पंचांगप्रणामः ॥

शार्दूलविक्रीडित—मोहध्वांतविदारणं विशदविश्वोद्भासिदीप्तिश्रियम् । सन्मार्गप्रतिभासकं विबुधसंदोहामृतापादकम् ॥

श्रीपादं जिनचंद्रशांतशरणं सद्भक्तिमाने मिते ॥ भूयस्तापहरस्य देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥७॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचन्द्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि नांदीमंगलविधानीय-

प्रारंभिकविधिर्नाम प्रथमः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप

ग्रंथ में नांदीमंगलविधान स्वरूप प्रारंभिक विधि को कहने वाला

यह प्रथम परिच्छेद पूर्ण हुआ ।



अथ द्वितीयः परिच्छेदः

अथ अंकुरार्पणविधानम्

अनुष्टुप् छंदः—प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं, नवमेऽन्हि शुभे निशि। वक्ष्यमाणेन विधिना विदध्यादंकुरार्पणम्॥११॥

सप्तमे पंचमे वान्हि, तद्विधिर्न विरुध्यते। इष्टत्वाद्वासाकल्पस्य, प्रस्तुतार्थोपयोगतः॥१२॥

तस्मिन्नेव दिने रात्रौ, शान्तिहोमविधिं बुधाः। प्रारभ्य विनियुंजीत, प्रतीन्द्रांस्तत्र कांश्चन॥१३॥

तेऽपि नित्यं विदध्युस्तं, यावच्चावभृथक्रिया। तद्भस्म प्रत्यहं शान्त्यै, यष्ट्रे दद्युः समंत्रकम्॥१४॥

प्रतिष्ठा दिवस—केवलज्ञान कल्याणक से नवमे दिन पूर्व शुभ दिन रात्रि में आगे कही विधि से अंकुरारोपण करे। अथवा प्रतिष्ठदिवस से सातवें या पांचवें दिन पूर्व भी यह विधि विरुद्ध नहीं है। विस्तृत प्रतिष्ठा के समय इस प्रकार अंकुरारोपण किया जाता है। उसी दिन रात्रि में सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यों को लगा देवें। वे भी मोक्ष कल्याणक से पूर्व अवभृत्स्नान—१००८ कलशों से महाभिषेक होने पर्यंत प्रतिदिन 'हवन' करके मंत्र पढ़कर शांति के लिये होम की भस्म यजमान को देते रहें ॥ १ से ४॥

तस्मिन्नेव दिने प्राण्हे, सांगं नित्यमहोत्सवम्। प्रारभ्य विनियुंजीत, प्रतीन्द्रांस्तत्र कांश्चन॥१५॥

तेऽपि कुर्युस्त्रिसंध्यं तं, यावच्चावभृथक्रिया। जिनस्नानांबुशेषां च, यष्ट्रे दद्युः समंत्रकम्॥१६॥

प्रोक्तो नादिविधौ पूर्व, सर्वो नित्यमहक्रमः। यज्ञदीक्षाविधानं तु, केवलं तत्र वर्ज्यते॥१७॥

उसी दिन प्रातः सांगोपांग—पूर्णरूपेण नित्यमहोत्सव विधि प्रारंभ करके इस कार्य में भी सहप्रतिष्ठाचार्यों को नियुक्त कर देवें। वे सहयोगी विद्वान भी महाभिषेक पर्यंत प्रतिदिन तीनों काल नित्य अभिषेक पूजा करते हुये यजमानों को मंत्रपूर्वक गंधोदक और शेषाक्षत देते रहें। नांदी विधि में यह सभी नित्यपूजा विधि कही गई है। प्रतिदिन यही विधि की जाती है इस नित्यपूजा में प्रतिदिन यज्ञदीक्षा विधि नहीं की जाती है। ॥५ से ७॥

तस्मिन्नेव दिने प्राण्हे, शांतिकर्मविधिं सुधीः। प्रारभ्य विनियुंजीत, प्रतीन्द्रांस्तत्र कांश्चन॥१८॥

तेऽपि नित्यं विदध्युस्तं, यावच्चावभृथक्रिया। ते चत्वारोऽथवा शिष्टाः, शांतिमंत्रं समाहिताः॥१९॥

अष्टोत्तरशतं वारान्, जपेयुश्चापराजितम्। मंत्राक्षतांस्तदन्ते ते, यष्ट्रे दद्युः समंत्रकम्॥११०॥

वक्ष्यते तद्विधिः सर्वो, यज्ञशालाप्रवेशने। केवलं वर्ज्यते तत्र, वास्तुदेवबलिक्रिया॥१११॥

उसी दिन प्रातःकाल 'शांतिकर्मविधि' प्रारंभ करके उसमें भी सहप्रतिष्ठाचार्यों को लगा देवें। वे भी महाभिषेक होने तक नित्य ही यह शांति कर्मविधि करते रहें। चार सहप्रतिष्ठाचार्य इन सहयोगी विधि विधानों में लगे रहें। ये एकाम्रचित होकर शांतिमंत्र का जप करते रहें और अपराजित महामंत्र को १०८ बार जपें। पुनः वे यजमान को मंत्र पढ़कर उन मंत्राक्षतों को देवें। इस प्रकार यज्ञशाला के प्रवेश में सर्व विधि कहेंगे, इसमें केवल वास्तुदेवबलि क्रिया वर्जित है ॥ ८ से ११ ॥

अंकुरार्पण की प्रयोगविधि दिखाते हैं—करोड़ों सूर्य-चंद्र की प्रभा को धारण करने वाले जगत् के एक चंद्र ऐसे जिनेंद्रदेव जगत् को प्रकाशित करने वाले हैं और जगत् की रक्षा करने वाले हैं उन्हें नमस्कार करके पुण्यप्रद ऐसी पुण्यांकुर अर्चन विधि को कहता हूँ।

अथ अंकुरार्पणविधेः प्रयोगः

इन्द्रवज्रा—श्रीमज्जिनेन्द्रं जगदेकचंद्रं, चंद्रार्ककोटिप्रभमिद्धलोकम्॥ लोकानवन्तं प्रणिपत्य पुण्यं, पुण्यांकुराभ्यर्चनमातेति॥

गद्य—ॐ त्रिजगदेकसारसर्वानुल्लंघनीयपरमप्रकर्षप्रतिष्ठाधिष्ठितविशिष्टानंतचतुष्टयजुष्टस्य भगवज्जिनेन्द्रस्य पादारविन्दं शुभगमकहिमकुंदस्वर्णहाटकहट्टपुण्यांकुरपटलैः समर्चयितुकामा एते वयं साक्षादकृत्रिमचैत्यालय लक्ष्मीमात्मसात्कुर्वतश्चैत्यालयस्य प्राच्यामुदीच्यां वा दिशि, प्रकल्पितकूटमंडपसभान्यतमाश्रये, भूम्यपतितगोमयक्षीरद्रुमत्वक्कषायकन्यकाकरसंमार्जितवेदिकास्थलरचितनानाविधरुचिर-रंगवलिपुष्पोपहारशोभिते, विचित्रवितानमुक्तादामदर्भमालादिगर्भिते, चतुर्दिग्द्वारतोरणदिकपालकेतनध्वजामालाक्षिविधमंडनमंडिते मध्येमंडपं, पंचवर्णचूर्णैः सुवर्णवर्णकर्णिकमरुणवर्णदलाष्टकमंभोरुहं विलिख्य, तत्कर्णिकायां मायाबीजाक्षरोपरि मुकुरफलपल्लवफुल्लाक्षतलक्षितं, श्वेतसूत्रपरिवेष्टितमभिवेष्टितग्रीवाप्रदेशं, पंचरत्नसुवर्णौषधोपहितसुधाक्षराभिर्मंत्रिततीर्थाभःपूर्णकलशमवस्थाय, पूर्णकुंभतिरीटचतुर्भुज-पद्मकुड्मलहस्तप्रशस्तश्रयादिपुष्ट्यंतदेवतानां मंत्रानूपूर्वादिदलेषु विलिख्य, बहिश्चतुष्कोणमंडले दिक्पालमंत्रान्, तद्बहिस्तथाविधमंडले

भेर्यादिमंगलाष्टकमवस्थाय, बहिर्मंडलत्रयं विरचय्य, तदेतत्पंचमंडलपश्चिमभागरचितरमणीयविष्टरे, विघ्नविक्षेपणदक्षसर्वाण्यक्षं विनिक्षिप्य, तत्पंचमंडलपूर्वभागे यावदमंत्रं विरचितेष्वंशेषु प्रत्यंशं प्रस्तीर्णप्रस्थशालिविलिखितस्वस्तिकेषु प्रत्येकं दशद्वादशाष्टसंख्या वा, जिनाध्वरदिनसंख्या वा, पालिकाघटिशरावपटलीः कल्पेशभावनज्योतिष्कदेवताः क्रमेण विन्यस्य, तत्कोणेषु पूर्णकुम्भान् शोभार्थं पटलीरवस्थाय, समुचितसपर्यायविशेषैः ससंभ्रममिज्यारक्षकयक्षादीनां पूजाक्रममुपक्रमामहे ।।

तीन जगत के लिये एक अद्वितीय, जिनकी परमप्रकर्ष प्रतिष्ठा सर्वजनों से अनुल्लङ्घ्य है, जो अनंत चतुष्टय से सहित हैं, ऐसे जिनेंद्रदेव के चरणकमलों को शुभ स्वर्ण आदि के सदृश उगे हुये धान्यांकुरों से अर्चन करने की इच्छा करते हुए ऐसे हम सभी—प्रतिष्ठाचार्य, यजमान आदि अंकुरारोपण विधि को करने के लिये उत्साहित हो रहे हैं ।

साक्षात् अकृत्रिम चैत्यालयों की लक्ष्मी—शोभा को आत्मसात् करने वाले ऐसे जिनमंदिर के पूर्व में या उत्तर में एक मंडप बनाकर उसमें एक वेदी बनावें । उस वेदी को पीली मिट्टी, क्षीरीवृक्ष का काड़ा, गोमय आदि से कुमारी कन्याओं से लेपन कराकर सुंदर रंगावली बनवावें, पुष्पों से सुशोभित करें । सुंदर चंदोवा, मोतियों की मालायें, दर्भ की माला आदि सजावें, चारों द्वालों पर तोरण बांधें । दिक्पालों को ध्वजायें, माला आदि से सुसज्जित करें । पंचवर्णी चूर्णों से मंडल की रचना करें । जिसमें सुवर्णवर्ण की कर्णिका बनावें और लाल वर्ण की आठ पांखुड़ी बनावें । उस कर्णिका में मायाबीज (ह्रीं) अक्षर लिखें । पुनः दर्पण, फल, पत्ते, फूल, अक्षत से युक्त ऐसे जल से भरे कुंभ उस पर स्थापित करें । इस कुंभ को श्वेत सूत्र से वेष्टित करें, उसमें पंचरत्न, स्वर्ण, सर्वौषधि डालेऔर ‘ॐ अमृते अमृतोद्भवे’ इत्यादि मंत्र से मंत्रित तीर्थजल भर दें ।

कर्णिका के बाहर आठों पांखुड़ियों में क्रम से जिनके हाथ में पूर्णकुंभ है, मुकुटसहित चार भुजा वाली कमल हाथ में लिये हुये ऐसी ‘श्री, ह्रीं आदि से पुष्टि पर्यंत देवताओं के मंत्र लिखें । पुनः इस कमल से बाहर चतुष्कोण मंडल में दिक्पालों को, दूसरे चतुष्कोण मंडल में ‘भेरी’ आदि आठ मंगलों को स्थापित करें । इसके बाहर पुनः तीन चौकोन मंडल बनावें, उनमें एक सेर—किलो प्रमाण तंदुल के एक-एक ‘स्वास्तिक’ बनाकर दश, बारह या आठ ऐसी संख्या से युक्त अथवा जिनयज्ञ की संख्या से युक्त ‘पालिका, घटी, सराव और पटलिका’ स्थापित करें । वैमानिक, भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिष्क इन देवों को क्रम से स्थापित करें । पुनः कोनों पर शोभा के लिये पूर्ण कुंभों को और ‘पटली’ को स्थापित करें । इन पांचों मंडलों के पश्चिमभाग में बनाये हुए सुंदर सिंहासन पर विघ्न निवारण में दक्ष ऐसे सर्वाण्यक्ष को विराजमान करें ।

इसके अनंतर योग्य पूजा विशेष से आदरपूर्वक इज्या—पूजारक्षक ऐसे यक्षादिकों की पूजा करने का उपक्रम करें ।

अथ सर्वाण्यक्षपूजा

शार्दूलविक्रीडितं— उत्तुंगंशरदभ्रशुभ्रमुचितं, सद्धिभ्रमं बिभ्रतं ।। यो दिव्यद्विपमारुरोह शिरसि, श्रीधर्मचक्रं दधौ ।।
हस्ताभ्यामसितद्युतिं करयुगे-नान्येन बद्धांजलिं । तं जैनाध्वरक्षणक्षममिमं, सर्वाण्यक्षं यजे ।। १ ।।

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाण्यक्ष! एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाण्यक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाण्यक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सर्वाण्यक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं दीपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं यजामहे

प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।

इन्द्रवज्राच्छंद— यक्षेश्वरोऽयं जिनमार्गरक्षा-दक्षः सदा भव्यजनैकपक्षः ।

निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षो, भूयात्प्रतीक्ष्यो मखरक्षणाय ।। २ ।।

ॐ ह्रीं सर्वाण्यक्ष यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। पूर्णार्घ्यं ।।

श्रीशातकुंभमयकुंभमुतान्यकुंभं, गर्भीकृतामलपयोमणिशातकुंभम् ।।

शुभंतमब्दफलपल्लवसूत्रवस्त्रैः, संस्थापये स्थिरतरं वरकर्णिकायां ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितं— स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगन्धैः सितैः ॥ सूक्ष्मत्वायति शालिशालिसदकै-र्गन्धोद्गमैरुद्गमैः ।
हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः ॥ धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, कुंभं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनम् करोमि स्वाहा ॥

मेरोर्दक्षिणतो महाकुलकुभृत्पद्माकराम्भोरुह—प्रासादस्थितिकाः शचीपतिवधूः श्री-ह्री-धृतीरंबिकाः ।

तस्यैवोत्तरतस्तथोत्तरसुरेङ्गगृहां च कीर्तिं धियम् ॥ लक्ष्मीं शांतिकरीं च शांतिमिह सत्पुष्टिं च पुष्टिं यन्ने ४ ॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते श्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते श्रीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते श्रीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ॥

ॐ श्रीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥१॥

ॐ रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते ह्री देवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते ह्री देवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते ह्री देवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ॥

ॐ ह्रीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥२॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते धृतिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते धृतिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते धृतिदेवि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ धृतिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥३॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते कीर्तिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते कीर्तिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते कीर्तिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ कीर्तिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥४॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ बुद्धिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥५॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते लक्ष्मीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते लक्ष्मीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते लक्ष्मीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ॥

ॐ लक्ष्मीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥६॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते शांतिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते शांतिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते शांतिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ॥

ॐ शांतिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते पुष्टिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते पुष्टिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते पुष्टिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ॥

ॐ पुष्टिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ८ ॥

सप्तमातर इति व्यपदेशं या वहति जिनमातृसमेताः ॥

श्रयादयः षडपि ताः सुखपुष्टिं शांतिपुष्टिसहिता वितरंतु ॥

(श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी और जिनमाता इन सात को 'सप्तमातरः' यह संज्ञा दी है।)

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्णाः चतुर्भुजाः पुष्पमुखकलशकमलहस्ताः श्रयाद्यष्टदिक्कन्यका यजमानप्रभृतीनां सर्वशांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यं ॥

अथ दिक्पालकपूजा

(प्रथम कोष्ठक में पूजा करना)

शार्दूलविक्रीडितं—

श्रीमत्सर्वजनीनजैनसवन-प्रत्यूहप्रध्वंसन । प्रोद्भूताऽप्रतिमप्रभावविहित-प्रख्यातिपूजांचितान् ।

स्वस्वातुच्छपरिच्छदान् दशदिशा-मान्याप्रधृष्यामितान् । दिक्पालान् जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पाक्षतं प्रक्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

(स्थापना करके आगे का मंत्र पढ़कर अर्घ्य चढ़ावें, ऐसे ही आगे के नव दिक्पालों की भी स्थापना व अर्घ्य हैं)

इंद्राय स्वाहा । इंद्रपरिजनाय स्वाहा । इंद्रानुचराय स्वाहा । इंद्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।

अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । इंद्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १ ॥ (अर्घ्य समर्पित करें)

ॐ ह्रीं क्रौं रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं क्रौं रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे अग्ने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं क्रौं रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे अग्ने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अग्नये स्वाहा । अग्निपरिजनाय स्वाहा । अग्निअनुचराय स्वाहा । अग्निमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।

अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । अग्नये स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ २ ॥ (अर्घ्य समर्पित करें)

ॐ ह्रीं क्रौं कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं क्रौं कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे यम ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं क्रौं कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे यम ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।
 ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे कुबेर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥
 ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे कुबेर ! अत्र मम स्निहितो भव भव वषट् ।

कुबेराय स्वाहा । कुबेरपरिजनाय स्वाहा । कुबेरानुचराय स्वाहा । कुबेरमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । कुबेराय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ७ ॥ (अर्घ्यं समर्पित करें)

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे ईशान ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे ईशान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे ईशान ! अत्र मम सन्निहितो भव भवषट् ।
 ईशानाय स्वाहा । ईशानपरिजनाय स्वाहा । ईशानानुचराय स्वाहा । ईशानमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । ईशानाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ८ ॥ (अर्घ्यं समर्पित करें)

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवारहे धरणीन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे धरणीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे धरणीन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

धरणीन्द्राय स्वाहा । धरणीन्द्रपरिजनाय स्वाहा । धरणीन्द्रानुचराय स्वाहा । धरणीन्द्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । धरणीन्द्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ९ ॥ (अर्घ्यं समर्पित करें)

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे चंद्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे चंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्णं सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे चंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चंद्राय स्वाहा । चंद्रपरिजनाय स्वाहा । चंद्रानुचराय स्वाहा । चंद्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । चंद्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १० ॥ (अर्घ्यं समर्पित करें)

पृथ्वीछंदः— शतमखशिखिकाला यातुधानप्रचेताः, पवनधनदनागाकल्पनागेन्द्रचन्द्राः ।

मखमुखविहितार्घाः येऽप्रधृष्यप्रभावाः, प्रकृतयजनविघ्नान्जन्त ते मंत्रनिघ्नाः ॥११॥ पूर्णार्घ्यः ॥

(दश दिक्पालकेभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि)

अष्टमंगलद्रव्य की स्थापना

(द्वितीय कोष्ठक में अष्टमंगलद्रव्य स्थापित करना)

उपजातिछंद—

न्यसामि भेरीरवशंखघंटा-प्रदीपचंद्रार्करथांगकाब्दान् ।

मंत्रात्मकान्पूर्वमुखासु दिक्षु, क्रमादिहाष्टावपि मंगलानि ॥१॥

(१) ॐ भेरीश्रियै स्वाहा । (२) ॐ शंखश्रियै स्वाहा । (३) ॐ घंटाश्रियै स्वाहा । (४) ॐ प्रदीपश्रियै स्वाहा ।
(५) ॐ चंद्रश्रियै स्वाहा । (६) ॐ आदित्यश्रियै स्वाहा । (७) ॐ चक्रश्रियै स्वाहा । (८) ॐ दर्पणश्रियै स्वाहा ॥

लेखनमंत्राः ॥

(यहां भेरी, शंख, घंटा, प्रदीप, चंद्रमा, सूर्य, चक्र और दर्पण ये आठ मंगल द्रव्य माने हैं इन्हें अंकुरारोपण की आठ दिशाओं में लिखावेँ।)

मंगलद्रव्य की पूजा

वार्दभर्गधैः सुमनोक्षतौघैः, धूपप्रदीपैरमृतोपमानैः । अभ्यर्चये मंगलमष्टभेदं, भूम्यर्चनाया विधिनार्चनीयम् ॥२॥

ॐ नीरजसे नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा । शीलगंधाय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा । अक्षताय नमः
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा । विमलाय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा । दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ज्ञानोद्योताय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा । श्रुतधूपाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा । परमसिद्धाय नमः फलं
निर्वपामीति स्वाहा । (इन मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ावेँ)

अथ घटीनामभ्यन्तरेषु (छोटे घड़ों के अन्दर पुष्पांजलि आदि से पूजा करें)

गद्य— ॐ भगवदर्हन्महामहप्रथमोत्सवांकुरार्पणपंचसप्तनवदिनविकल्पापेक्षया जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदद्वादशचतुर्दशषोडशमात्रा-
मितोत्सेधान्यतमघटगितोत्सेधानाम् । तदुत्सेधानोत्सेधतदर्थव्यासव्यासचतुर्थांशव्यासरंध्रान्वितदंडमंडितांशु दंडोत्सेधसमन्वितव्यासान्वितपादानां
दंडरंध्रव्याससमव्यासोष्ठाणां । व्यासद्विमात्रव्यासैकमात्रोत्सेधवदनचतुष्टयोपलक्षितकुक्षीणां । मात्रात्रयसंमितनिजोर्ध्ववदनानां ।
अष्टादशद्वादशान्यतमसंख्यानां । जिनाध्वरदिनसंख्यानां वा । घटीवत्प्रथितघटीनामभ्यन्तरेषु चमरवैरोचनादिसर्वभवेन्द्राणां आह्वानादिपुरःसरं
समुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ।

(इस गद्य को बोलकर आगे के मंत्रों से घटी के भीतर दशविध भवनवासी देवों की स्थापना करके पूजा करें।)

तृतीय कोष्ठक में भवनवासी इन्द्रों की पूजा

उपजातिछंद—

द्वासप्ततिर्यानि भवन्ति लक्षाः, कोट्यश्च सप्तातिमहांति तानि ।

प्रपालयन्तो भवनानि सर्वेऽप्यायात यूयं भवनामरेन्द्राः ॥३॥

आह्वानादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय घटीषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च
यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १ ॥ एवं सर्वत्र योज्यम् ॥

(असुरकुमारेन्द्र की स्थापना करके अर्घ्य चढ़ावेँ। ऐसे ही आगे के ६ इन्द्रों की स्थापना करके अर्घ्य चढ़ाना है)

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १० ॥

पूर्णार्घ्य

मालिनीछंद

असुरफणिसुपर्ण-द्वीपशेषाधिपा ये । परमुदधिनिपल्यार्धार्धहीनायुषः स्युः ।

प्रवरमहिषमुख्यैः सप्तभेदैरनीकैः ॥ कृतपरिवृतयोऽप्राक् तेर्घिताः सन्तु शान्त्यै ॥११॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादिदशविधभवेनेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यं ॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादिदशविधभवेनेन्द्रा यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥

शरावाणामभ्यन्तरेषु (चतुर्थ कोष्ठक में सराव के अंदर व्यंतर देवों की पूजा करें)

गद्य—ॐ विश्वजनीनजिनाध्वरदिनसंख्यात्रययासंख्याभिहिताष्टदशद्वादशांगुलमितवक्त्रव्यासानां, वक्त्रव्यासार्धसंपादितप्रादप्रततीनां, पादप्रतत्यर्धप्रमितदंडततीनां, दंडततीसमानसंघटितोष्ठव्यासानां, ओष्ठघटितमुखव्यासत्रयसमानोत्सेधानां, जघन्यादिविकल्पविवक्षिताष्टदशद्वादशसंख्यानां वा शरावाणामभ्यन्तरेषु किन्नरकिंपुरुषादिसर्वव्यंतरेन्द्राणां आवाहनादिपुरःसरसमुचितसर्वाक्रमं यथाक्रमं उपक्रमामहे ॥

संख्याव्यतीताश्रयवर्तमान, भौमामराणां प्रभवो भवतः ।

आयांतु तिष्ठंतु ममात्र साक्षाद्-भवंतु गृण्हंतु च यज्ञभागम् ॥११॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकप्रतिज्ञापनाय शरावाणामभ्यन्तरेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ किन्नरेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ८ ॥

पूर्णार्घ्यं

शालिनीछंद—

त्रायस्त्रिंशैलोकपालैर्व्यपेतैर्ये सेव्यते सप्त सामानिकाद्यैः ।

तेऽमी युक्ता द्विद्धिदेवीसहस्रैः सर्वे शान्त्यै संतु भौमामरेन्द्राः ॥६॥

ॐ ह्रीं किन्नराद्यष्टविधव्यंतरेन्द्रेभ्यः इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

१ किन्नराद्यष्टविधव्यंतरेन्द्रा यजमानप्रभतीनां ातिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यं

अथ पटलिकानामभ्यंतरेषु (पटलिका के अंदर ज्योतिष्क देवों की अर्चा करें)

गद्य—ॐ विकल्पत्रयाकलितशरावमुखव्याससमानव्यासपादबंधबंधुराणां, पादबंधसमानप्रततिप्रमित- प्रथमपटलिकानां, उपर्युपरि
अल्पविहीनमानोपघटितद्वितीयतृतीयपटलिकानाम् । तत्प्रमाणमडितनववंशदंडानाम् । अग्रविरचितसरोरुहाणां
अर्हदातपत्रत्रयसंस्थानमात्मसात्कुर्वाणानाम् । अष्टदशद्वादशसंख्यानां वा । पटलिकानामभ्यंतरेषु सकलसूर्याचंद्रमसामाह्वानादिपुरःसरं
समुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ॥

(ज्योतिषी देवों की पूजा)

कायप्रवीचारसुखानुरक्तान्, पीतांतलेश्यांस्त्रिविधानवंतौ ।

ज्योतिष्कदेवानपि चंद्रसूर्या-वायातमात्मीयपरिच्छदाभ्याम् ॥१॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पटलिकासु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥ ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥१॥

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥२॥

पूर्णार्घ्य

यो योजनान्यष्टशतीं व्यतीत्य, भूमेश्चरन्व्योमनि भानुमाली ॥

यो योजनाशीतिमतीत्य तस्माच्चन्द्रोर्ध्वितौ तौ भवतां प्रसन्नौ ॥३॥

ॐ ह्रीं सूर्याचंद्रमसौ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां शांतिं कुरुतां कुरुतां स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

अथ पालिकानामभ्यंतरेषु (पालिका के अंदर में वैमानिकदेवों की अर्चा करें।)

गद्य—ॐ सर्वज्ञमहायज्ञादिनसंख्याविकल्पत्रयक्रमसंभवद्द्वादशषोडशविंशतिमात्रमितव्यासान्यतममुखव्यासानाम् । मुखव्यासार्ध—प्रमाणचरणागतव्यासानां । मुखव्यासचतुर्थांशसंभितदंडविस्ताराणां । मुखव्यासाष्टमभागप्रमितरंघ्रोष्ठगततृतीया मुखव्याससमानोत्सेधकलितानां । अष्टदशद्वादशसंख्यानामिज्यादिनसंख्यानां वा । पालिकानामभ्यंतरेषु । सौधर्मैशानादिद्वादशकल्पेन्द्राणां आवाहनादिपुरःसरं समुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ॥

उपजातिछंद-

द्वौ सागरौ सप्तदश द्विसप्त-स्थितिः क्रमाद्द्विद्विधिका च यावत् ।

द्वाविंशतिर्येषु सुराधिपास्ते सर्वे समायांतु भजंतु पूजाम् ॥ १ ॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पालिकासु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं माहेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं लांतवेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं लांतवेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं लांतवेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं लांतवेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ १२ ॥

शार्दूलविक्रीडितं—

पूर्णाध्य—हस्तान्सप्त षडेव पंच चतुर-स्त्रीनर्धयुक्तानथ ॥ त्रीनुत्सेधमुशंति जैनमुनयो, येषु द्वयोश्च द्वयोः ।

तेऽमी सारसुखानुभावकलिता, नन्दन्ति चेदंति च ॥ स्वर्लक्ष्मीपतयः सदा विदधतां, शांतिं सतामर्षिताः ॥१३॥

ॐ ह्रीं सौधर्मादिद्वादशकल्पेन्द्राः इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णाध्यः ॥

अथ मृत्तिकासंग्रहः

गद्य—अथ पीठमंडलपात्रेषु न्यक्षेण यक्षादिदेवतानां अधिवासनं निर्वर्त्य मृत्तिकायां संजिघृक्षितायां शुभ्रादभ्रमिविभ्राजितातिविचित्रातपत्रेषु विनेयजनैः समुच्छिन्नेषु, कुर्वेदुहारीहारीगौरचामरनिकुरुंबेषु । विलासादिविलसद्वारविलासिनीवाराभिवीज्यम्बुनेत्रेषु भवजविजयध्वजध्वजायमान-विविधध्वजेषु समुच्छिन्नेषु । मंगलालंकारचंचत्कन्यकाकरांभोरुहप्रतिष्ठितेषु सुप्रतिष्ठादिमंगलेषु । कराहतांगुलिहतदंडाहतान्योन्याहताना-हतपंचमहावाद्यध्वानेन भव्यजयजयध्वानद्गुणिनेन बधिरितेषु सकलदिकतटेषु, कल्याणसमयसुरसुंदरीरचितगानायमानमतिशुरगानमातन्वतीषु सुकंठीषु, प्रेक्षकजनश्चेतश्चमत्कारिविद्युल्लताविलासानुकारिलास्यादिनृत्यमत्याहितमानदंतीषु, हूकारमुखरप्रतीहारसिकरैः परितो निवारितेषु नीचमर्त्येषु श्वेतवस्त्रामाल्याभरणभूषितसल्लक्षणोपलक्षितप्रशस्तहस्त्यश्वारूढमस्तकन्यस्तकार्तस्वरादिपात्रेषु त्रैवर्णिकजनेषु, यक्षाग्रतो गच्छत्सु, भगवद्गुणस्तोत्रपठनपरायणेषु ऋष्यार्थिकाविद्वद्विशिष्टजनेष्वन्वतो गच्छत्सु, संमार्जनसुगंधिजलसेचनपुष्पोपहारद्विसंस्कारपुष्पकृतशोभासु पुरवीथिषु, समुत्तभितपताकातोरणपूर्णकलशरंगवलिस्पर्षाकरपुरंधीजनप्रविराजितेषु गृहद्वारेषु, समुचितस्नोधायामचतुःस्तंभसंभृतवितानमुक्ता-दामादिमंडितमंडपमधिष्ठितं त्रिजगदेकचक्रवर्तिश्रीजिनेश्वरधर्मचक्रं मस्तकेन कराभ्यां बिभ्राणं कराभ्यामपराभ्यां रचिंल्लिं श्यामांगमुत्तुंगगजाधिरूढं सर्वज्ञयज्ञरक्षादक्षं पुरं परिगमय्य सरोवरसरित्पतिसरित्पटाकादितटं वा नगरप्रागुत्तरवप्रादिक्षेत्रं वा पुरानयामहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ॥

इति पुष्पांजलिं कृत्वा पुरविहाराय यक्षं नयेत् ॥ (नगर में शोभायात्रा में सर्वाण्ह यक्ष को ले जावें)

गद्य—अथ अनन्यसाधारणसमवसरणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिंशदतिशयपंचकल्याणसमलंकृतस्य, सर्वदा सर्वक्लेश-कर्मविपाकाशयपाशैरपराभृष्टस्य, सर्वज्ञवीतरागपरमाप्तार्हत्परमेश्वरस्य महामहरक्षादक्षं सर्वाण्हयक्षं पुरं परिगमय्य समुचितोद्देशं समानीय, पूर्वाननमुत्तराननं वा समुपनिवेश्य, निर्वातनिस्तारंगसमुद्र इव भव्यसमूहे समुत्सृष्टान्यव्यासंगे, विधीयमानजिनयज्ञनिष्ठानैकताने, वयमिमे जिनयज्ञदीक्षिता यक्षाग्रतः क्षेत्रं करपरिमितं परिगृह्य, तत्र पुष्पांजलिपुरःसरं वायुमेधाग्निदेवान्सम्मान्य, तैर्भूमिं विशोध्य, नागामरानमृतेन संतर्प्य, क्षेत्रपालस्य तैलाभिषेकाभ्यर्चनविधिं विधाय, प्राङ्मुखमुदङ्मुखं वा निखन्योर्ध्वमृत्तिकापसार्य, पुनः खात्वा, अथःस्थितशुद्धस्निग्ध-सद्वर्णभेकभक्षणीयत्वादिगुणोपलक्षितां प्रशस्तमृत्तिकां भूम्यर्चनविधानेनाभ्यर्च्य, स्वकीयवामकरतलं धरामभिर्मन्य शंखभुंभुंकारनादेषु सकलजगदुदरविवरमापूरयत्सु, तत्करेण तां मृत्तिकामुखद्वय कार्तस्वरादिपात्रेषु विनिक्षिप्य भगवज्जिनांकुराभ्यर्चनविधानमूलभूतां पुण्यांकुरजनावस्थानवृद्धिफलोदयैकसाधकतर्फी मृत्स्नानेनां तत्पात्रधरैर्मूर्ध्ना दृढं ग्रीयमाणां यक्षनायकेनाश्विष्यमाणां परया विभूत्या नीत्वा नगरं चलत्केतनजिनकेतनं प्रदक्षिणपुरःसरं पुरमानयामहे ॥

घटी, शराव, पटलिका और पालिका में भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों की अर्चाविधि करके पुनः मृत्तिका संग्रह के लिये निकलें । कुमारी कन्याओं के हाथ में कलश, दर्पण, आदि मंगलद्रव्य देवों, अनेक प्रकार के बाजे बजक्यों, सुवासिनी स्त्रियां तीर्थंकरों के गर्भकल्याणक आदि के भजन गावें, मिट्टी भरने के लिये सोने, चांदी आदि धातु के थाल सदाचारी पुरुषों को लेना चाहिये ।

सर्वाण्हयक्ष को आगे करके शोभायात्रा निकालें, उसमें मुनि, आर्यिका विद्वानजन पीछे-पीछे चल रहे हों, द्विषेष्ट का स्तोत्रपाठ चल रहा हो । लोग ध्वजा, चंवर, छत्र आदि हाथ में लेकर चल रहे हों जब शोभायात्रा शुरू हो, तभी प्रारंभ में—

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ।

मंत्र बोलकर सर्वाण्हयक्ष को नगर में विहार करावें ।

श्रीजिनेंद्रदेव के यज्ञ-पूजनविधि के रक्षण में समर्थ, ऐसे सर्वाण्हयक्ष को योग्य स्थान पर लाकर पूर्व या उत्तर दिशा में उनका मुख करके स्थापित करें । भव्यजीव शांति से उचित स्थान पर बैठ जावें तब जिनयज्ञदीक्षा विधि जिन्होंने ग्रहण की है ऐसे प्रतिष्ठाचार्य आदि यक्ष के सामने एक हाथ जमीन निश्चित करें उसमें पुष्पांजलि पूर्वक आगे कही विधि से वायुकुमार आदि पंचकुमार पूजा करके भूमि शुद्धि करें । अनंतर पूर्व या उत्तर तरफ मुख करके भूमि खोदें, ऊपर की मिट्टी हटाकर पुनः खोद करके शुद्ध, स्निग्ध मिट्टी निकलेगी वहां भी 'भूमिपूजन विधि' करके अपने बायें हाथ को और भूमि को मंत्रित करके शंख आदि बाजे बजवाते हुये उस मिट्टी को निकाल कर सोने, चांदी आदि के पात्रों में भर लें ।

(जहां की मिट्टी लेनी है, उस स्थल को शुद्ध करने की विधि)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ॥ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ॥

पंचकुमार पूजा

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं ।

प्रागेव वास्तुविधिकल्पितयज्ञभाग-स्येशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि ॥१॥

ॐ ह्रीं वास्तुकुमारदेवाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं, दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

उपजातिष्ठंद— विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ॥

हुत्वारचितो वायुकुमारदेव!, त्वं वायुना शोधय यागभूमिम् ॥२॥ इति वायुकुमारार्चनम् ॥

(तीर्थकरों के विहार के समय भगवान की सेवा करके तुमने जो अपनी शक्ति प्रगट की है इसलिये मैंने तुम्हें बुलाकर तुम्हारी पूजा की है। तुम वायु से इस यज्ञभूमि को शुद्ध करो।)

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु २ हूं फट् स्वाहा । षड्दर्भपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत् ॥

(षड्दर्भ पूले से भूमि को संमार्जित करें)

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ॥

हुत्वारचितो मेघकुमारदेव!, त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम् ॥३॥ इति मेघकुमारार्चनम् ॥

ॐ ह्रीं क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । षड्दर्भपूलोपातजलेन भूमिं सिंचेत् ॥ (दाभ के पूले से जल लेकर भूमि पर छिड़कें)

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैर्निर्वाणपूजासु कृतापदान ॥

हुत्वारचितो वह्निकुमारदेव!, त्वं ज्वालाया शोधय यागभूमिम् ॥४॥ इति अग्निकुमारार्चनम् ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव भूमिं ज्वालय-ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा ।

(गर्भान्वय आदि में द्विजों विधानाचार्यों ने जिसकी पूजा की है, तीर्थकरादि के निर्वाण कल्याणक में जिसकी पूजा की गई है, ऐसे हे अग्निकुमार देव! तुम ज्वाला से यज्ञभूमि को शुद्ध करो।)

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवंत्ववार्या भुवि कामचाराः ॥

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त, सुधोपमानांजलिपूर्णवार्भिः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । इति नागतर्पणार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् ।

(नागसंतर्पण के लिये ईशान दिशा में जलांजलि दें)

क्षेत्रपालपूजा

शार्दूलविक्रीडितं— ऊर्ध्वस्थेन करद्वयेन फलकं, खड्गं कराभ्यामथो । वर्तिभ्यामुरुसारमेयमसितं, स्फूर्जद्गदां बिभ्रतम् ।

प्रत्यहक्षपणक्षमं समवित-क्षेत्रव्रजं क्षेत्रपम् । तैलेनाद्य सताभिषिच्य विदधे, सिंदूरकैर्धूसरम् ॥१॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल ! अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय तैलाभिषेकं करोमि प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय सिंदूरसेचनं करोमि स्वाहा ।

क्षेत्रं मखेऽस्मिन्परिपालयन्तं । विघ्नानशेषानपसारयन्तम् ॥

अग्नेर्दिशायां गुडदानपूर्वं । श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि ॥२॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय गुडं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय सद्बस्त्रं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय भूषणं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ (इन मंत्रों से वस्त्र एवं आभूषण अर्पित करें)

प्राङ्मुखमुदङ्मुखं वा निखन्त्योर्ध्वमृत्तिकामपसार्य पुनः खात्वाधःस्थितशुद्धमृत्तिकां पुंजीकुर्यात् ।
(पूर्वमुख या उत्तर मुख होकर मिट्टी खोदें पुनः ऊपर की मिट्टी हटाकर नीचे की शुद्ध मिट्टी इकट्ठी करें)

(अर्घ्य समर्पण करें)

वार्दभगंधैः सुमनोक्षतौधै-धूपप्रदीपैरमृतोपमानैः ॥

इमां समर्चामि विशुद्धमृत्स्नां, पुण्यांकुराभ्यर्चनमूलभूताम् ॥३॥

स्वागताछंद—

पुंजितां समभिमंत्र्य मृदं मे । वामहस्तमपि पूर्वमुखो वा ॥

तेन तामहमिहोत्तरवक्त्रो, वा न्यसामि कनकादिसुपात्रे ॥४॥

ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा । इति स्वकीयवामकरतलं अभिमंत्रयेत् ॥ (जल से बायें हाथ को मंत्रित करें)

ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा । इति धरामप्यभिमंत्रयेत् ॥ (भूमि पर जल छिड़कें)

ॐ ह्रीं सर्वलोकगुरुभ्यो नमः स्वाहा ॥ इति मृत्स्नां गृण्हीयात् ॥ (मिट्टी को पात्र में भरें)

शार्दूलविक्रीडितं—

शंखादौ सुषिरे तते च वितते, भेरीमृदंगादिके । वीणादौ वितते घने घनतरं, तालादिके चोत्थिते ॥ ५ ॥

शब्दे पंचविधे सगीतनिनदे, व्याजृम्भमाणेतराम् । मृत्स्नापूरितपात्रकाणि कृतिनां, मूर्धस्विहारोपये ॥ ६ ॥

अनेन मृत्पूरितपात्राणि विनयोत्तमांगेषु स्थापयेत् ॥

(मिट्टी से भरे पात्र शिष्यों के मस्तक पर रखावें)

गद्य—अथार्हतपरमेश्वरमहाध्वरविधित्सया मृत्स्नां महोत्सवेनानीय तद्रक्षकयक्षेश्वरं यक्षपीठे निवेश्य मंगलातोद्यमहाध्वानेषु लोकाकाशावकाशमश्वानेषु, पूर्वाधिवासितपात्राणामग्रतो मृत्पूरितपात्राणि निधाय, गंधाक्षततांबूलादिभिः समागतान्सतः सत्कृत्य धामग्रामाश्रितदिक्पालादिकदेवताः संतर्प्य, जिनेन्द्रस्य महोत्सवेन महास्नपनमेकादशविधार्चनां पंचमंडलाराधनां श्रुत्स्वधर्महर्षिणां च सपर्यां समाप्य, पात्रावस्थितमृत्तिकामादायोत्तरमुखं पाल्यादिपात्राणि समापूर्य, अप्रतिहतांकुरशक्तियुक्तवापोचितगोधूमदिधान्यानि पवित्रतरपयोभिः प्रक्षाल्य, रात्रावभ्यर्हितमुहूर्ते प्रवर्तमाने, प्रस्फातशंखध्वाने विजृम्भमाणे सति, कुलस्त्रीभिस्तानि धान्यानि वापयित्वा स्वयमुत्त्वा च पंचकुंभसंभृतांभोभिरभिसिच्यान्वतः पुण्यतीर्थजलेन पुण्याहमंत्रात्परिषिच्य, पद्मपत्रादिभिः समुचितं पात्राणि पिधाय सुखवायुसेवित-निर्बाध तमस्थाने समवस्थाप्य गंधशेषाप्रसूनतांबूलादिभिरुपासकान्प्रसाद्य, यक्षादिदेवान्विसृज्य, दिनत्रयमपि कथितकुंभाहतशीतांभोभिः तत्सेचनं करिष्यामहे ॥

अर्हतदेव की प्रतिष्ठा—जिनयज्ञ महोत्सव को करने की इच्छा से महामहोत्सवपूर्वक मिट्टी को लाकर सर्वाण्हयक्ष देवता को उचित स्थान पर विराजमान करके मंगलवाद्य बजवाते हुये पूर्व में जिन पात्रों की घटी, शराव, पटलिका और पालिकाओं में पूजा विधि संपन्न की है, उनके पास मिट्टी से भरे पात्रों को रखें। गंध, अक्षत आदि से आगत जनों का सत्कार करके मंदिर और ग्राम के आश्रित देवताओं को यज्ञभाग समर्पित करें।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ॥ पुष्यांजलिः ।

(सर्वाण्हयक्ष को उचित आसन पर विराजमान करके मृत्तिका से भरे पात्रों को सामने रखें)

सर्वाण्यह्यक्ष स्थापना

उपजातिछंद—

संस्थाप्य यक्षं निजपूर्वपीठे, श्रीमृत्तिकापूरितपात्रकाणि ॥

अमत्रकाणामधिवासितानां, पुरःप्रदेशे विनिवेशयामः ॥ १ ॥

अनेन यक्षपीठे यक्षेश्वरमवस्थाप्याधिवासितपात्राणां पुरःप्रदेशे मृत्पूरितपात्राणामवस्थानं कुर्यात् ॥

शार्दूलविक्रीडितं—

देवर्षिद्विजपूजनं च विहितं, श्रेयोर्थिनां ते मता ॥ रागद्वेषविमोहमूलविलयात्सारंभसंगोज्जनात् ॥

स्थूलप्राणिवधादिवर्जनविधेर्देवानृषीस्तादृशान् ॥ संपूज्य द्विजपुंगवांश्च धिनुयात्तांबूलदानादिभिः ॥ २ ॥

उपासकान् तांबूलाद्यैः प्रतोषयेत् ॥ (श्रावकों को तांबूल आदि से संतुष्ट करें)

गद्य—अथ चैत्यालयस्यैशान्यां दिशि अष्टदलकमलमालिख्य चैत्यालयनगरसंबंधिदिकपालकेभ्यो निजमंत्रपूतयज्ञांगविशेषेण सर्वतः पूजां वित्तीर्य ग्रामाश्रितशेषाशेषदेवताश्च सर्वशांत्यर्थं समुचितसपर्याशप्रदानेन प्रतर्पयामहे । विधियज्ञप्रतिज्ञापनायाष्टदलकर्णिकामध्येषु पुष्पाक्षतदर्भान् क्षिपेत् ॥

जिनमंदिर की ईशान दिशा में अष्टदल कमल बनाकर चैत्यालय और नगर संबंधि दिक्पालों को उन-उन मंत्रों से यज्ञभाग समर्पित कर ग्रामसंबंधित देवताओं को शांति के लिये यज्ञभाग दें ।

पूर्वस्यां दिशि ॥ उत्तुंगंशरदभ्रेत्यादिविधिनाष्टदिक्षु अष्टदिक्पालकदेवान्पूजयेत् ।

(पूर्वकथित दिक्पाल मंत्रों से संक्षेप में पृष्ठ २० से दशदिक्पाल को अर्घ्य चढ़ावें)

धामाश्रिता दिक्पतयोष्टसंख्या, ग्रामाश्रितास्ते च परे च सर्वे ।

अर्घ्यप्रदानेन सुतृप्तिभाजो, निघ्नंतु विघ्नान्प्रकृताध्वरस्य ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं धामग्रामाश्रितदिक्पालकदेवाः सर्वेऽपि ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदमर्घ्यं गृण्हीत गृण्हीत यागविघ्नशान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा । (इस मंत्र से अर्घ्य दें)

अनंतर अठासी देवों सहित नवदेवता पूजा करें और श्रुतपूजा व गुरुपूजा करके पात्रों में रखी मिट्टी को लेकर उत्तर मुख होकर घटी आदि पात्रों में मिट्टी भर दें । अच्छी तरह से अंकुरशक्ति वाले ऐसे बोये जाने वाले गेहूं आदि धान्यों को पवित्र जल से धोवें । पुनः रात्रि में शुभमुहूर्त में वाद्य बजवाते हुये कुलांगनाओं से उन पात्रों में बीज डलवाकर स्वयं भी बीज बोंत्रे पंचकुंभ में भरे हुये जल से मंत्रपूर्वक जलसिंचन करके पुण्यतीर्थजल से पुण्याहमंत्र से जलसिंचन करके कमलपत्रादि से उन पात्रों को ढककर जहां सुखदवायुमिल सके, ऐसे निर्बाध । स्थान में उन्हें रखें ।

पुनः गंध, पुष्प, शेषाक्षत, तांबूल आदि से श्रावकों को संतर्पित करें । यक्षादि देवताओं का विसर्जन करके तीन दिन तक कुंभों के जल से उनका सिंचन करें ।

ततो जिनेन्द्रस्य महोत्सवेन महास्नपनमेकादशविधार्चनां पंचमंडलाराधनां श्रुतस्कंधमहर्षिणां च सपर्यां विधिना विदध्यात् ॥

(पद्य व मंत्र पढ़कर सौभाग्यवती स्त्रियों से पात्रों में मिट्टी भरावें)

उपजाति—

आनीतमृद्भिर्विधिना सतीभिः, पात्राणि सर्वाण्यधिवासितानि ॥

न्यासक्रमेणोचितमुत्तरस्याः, प्रपूरयामोद्य समंत्रमेव ॥ १॥

ॐ ह्रीं परिपूर्णानंतचतुष्टयाय नमः । इति पालिकादिपात्रेषु मृत्तिकां पूरयेत् ॥

(आगे के पद्य व मंत्रों से बीज धुलावें और बीज बोवावें)

उपजाति—

गोधूममुद्गान् शिलशालिशिंबान् । कुलत्थमाषांस्तिलराजमाषान् ॥

व्रीह्याढकीकोद्रवसर्षपौघान्श्यामाककंगूंश्चणकान्यवांश्च ॥ २ ॥

सुगर्भतोष्टादश बीजधान्या-न्यमूनि धौतानि शुभैः पयोभिः ॥

लग्ने प्रशस्ते सति शंखनादे, कुलांगनाभिर्निशि वापयामः ॥ ३ ॥ युग्मम्

ॐ ह्रीं नमो वृषभाय रोहिणि चंडे महाचंडे सर्वचंडे स्वाहा । इति बीजानि प्रक्षालयेत् (बीज प्रक्षालित करावें) ॥

ॐ नमो रोहिणि वर्धमानविजये विजयचंडे बीजप्रमुखाय लोकविदिताय सर्वज्ञाय स्वाहा ॥

इति सुंदरीभिर्वापयेत्स्वयं च वपेत् । (इस मंत्र से महिलाओं से बीज डलवायें एवं स्वयं भी डालें)

(गेहूं, मूंग, शिल, शालि, धान्य, शिंवा, कुलथी, उड़द, तिल, राजमा, ब्रीहि, अरहर, कोदों, सरसों, श्यामातंदुल, कंगनी, चना, जौ ये अठारह प्रकार के बीज बोये जाते हैं।)

(पुण्याहमंत्रों से और आगे के पद्य को पढ़कर पंचकुंभ में भरे हुये जल से घटी आदि में जल सिंचन करें)

अथ पुण्याहमंत्रः

अथ निरतिशयनिजमहिमभरसमसमानमितात्मीयचरणपरिचरणचतुरचतुर्णिकायामरनिकुरुंबशुभत्कोटीरकोटिकोटितटाव घटितस्फुटतरप्रभाभासुरानेकनूत्तरत्ननिकराकरदिवाकरशताधिकातिगंभीरविपुलप्रभामंडलक्षीरोदडिंडीरपिंडायमानचतुःषष्टि-चामरप्रभृतिलक्ष्यमाणप्रातिपक्षबहिरंगमहालक्ष्मीनाथस्य, अशेषदोषावरणविगमसमसमनंतरसमुद्भूतसकललोकालोकनिरंतर-परिपूर्णसर्वद्रव्यपर्यायविषयक्रमकरणव्यवधानातिवर्तिकेवाख्यपरंज्योतिःस्वरूपांतरंगिकाक्षय महालक्ष्मीनाथस्य, भगवद्दत्तारमेश्वरस्य पादांभोरुहं सकलमंगलपुरोगमपुण्यांकुरैरभ्यर्चयितुकामाः तमःस्थानावस्थापितपात्रप्रोद्यदंकुरान्संसेचयितुं फलषड्कुलादिचंचत्पंचकुंभेभ्यः शीतलातिविमलसलिलमिदानीमाहरामः ॥

शार्दूलविक्रीडितं—यः पूर्वावगमः सुशीतलवचो—वार्भिर्विनेयांकुरा—नुच्चैरुन्नतिमानिनाय जगता—मीशस्य तस्यार्हतः ॥

श्रीमत्पादपयोजपूजनकृते, तत्पूर्णकुंभांबुभिः । सेसिच्येह समंत्रकं जनयतः, पुण्यांकुरानंकुरान् ॥१॥

ॐ नमो रोहिणि चंडे पार्श्वचंडे विघ्नविजयचंडे अजितचंडे सर्वचंडे स्वाहा । इति जलसेचनं कुर्यात् ॥

पुण्याहमंत्रेणापि जलसेचनं कुर्यात् ॥

शिवमस्तु सर्वजगतां परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ॥

दोषाः प्रयांतु नाशं तिष्ठतु जिनशासनं सुचिरम् ॥ २ ॥ इत्याशिषं कुर्यात् ॥ (आशीर्वाद देवें)

देवर्षिद्विजपूजनं च विहितमिति पूर्वोक्तश्लोकेन जैनब्रह्मजनसभापूजनम् ॥

इष्टास्तेऽमी सुराहूताः, शिष्टार्हत्प्रभुपूजने ॥ इष्टमस्माकमापाद्य, तुष्टा यांतु यथायथम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्यक्षप्रमुखदेवा आहूतार्चिताः सर्वे स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः ।

इति विसर्जनमंडलेषु पुष्पांजलिं वित्तीयं देवता विसर्जयेत् ॥ (इस मंत्र से विसर्जन करें)

(केवलज्ञान कल्याणक से नवमें, सातवें या पांचवें दिन पूर्व विधिवत् अंकुरारोपण विधि की गई । महामहोत्सवके दिन इन अंकुरों के पात्रों को सुवासिनी स्त्रियां मस्तक पर लेकर मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर भगवान के सामने इन अंकुरों को चढ़ावें—स्थापित करें)

गद्य—ॐ मंगललोकोत्तमशरणाहृद्भट्टारकमहाध्वरदिवसात्पूर्वस्मिन्नवमसप्तमपंचमान्यतमदिने विधिनांकुरार्पणं विधाय, त्रिदिनमुक्तकुंभांभोभिः सेचनं निर्वर्त्य, समुत्पन्नेष्वंकुरेषु तत्तृतीयदिनेऽन्यस्मिन्वा दिने जैनमहामहमत्युत्तमेन विनिर्माप्य, तदर्चनासमये समुज्जृम्भमाणविचित्रवादित्रजालेषु दिग्भित्तिमासादयत्सु निजनिजोत्तमांगेषु विधृत्य, वरवर्णिनीभिर्महत्या विभूत्या चैत्यालयं प्रदक्षिणीकृत्य प्रदत्तेषु पात्रेषु प्ररूढैः प्रगाढसौंदर्यमास्कंदद्भिः, साक्षात्पुण्यांकुरैरिव कुंदेदुहारगौरांकुरैः कीर्तनीतिमापन्नैः भव्यानुरागैरिव सुवर्णहाटकहट्टि-शंगवर्णनीयांकुरैर्वा, समसमानतामरकोटीरकोटिकोटितटावघटितनानारत्नप्रभाभारांकुरैः समाराधनीयपादांभोरुहं भगवंतमर्हन्तं ईश्वरमर्चितं समर्चयामहे ॥

प्रध्वस्ताशेषघातिप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः ॥ कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ।

तैरष्टप्रातिहार्यैस्त्रिजगदधिपतिर्यस्तमेनं जिनेन्द्रं । प्रोद्यत्पुण्यांकुरौघैरनघमिह यजेऽगण्यपुण्यांकुरार्थम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नमः परमकल्याणेभ्यः स्वाहा । इत्यंकुरैरभ्यर्चयेत् ॥ (इस मंत्र से अंकुर पात्रों से जिनेन्द्रदेव की पूजा करें)
प्रमादाज्ज्ञानदर्पाद्यैर्विहितं विहितं न यत् ॥ जिनेन्द्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलं च यत् ॥ ५ ॥

क्षमापणपुरःसरं पंचांगप्रणामः ॥

प्रक्षीणदोषमलविद्धनिजप्रकाशं, लोकैकभूषणमहं जिनदिव्यरत्नम् ।

मुक्तिश्रियं सपदि संवदनं विधातुं, पूज्यं प्रपूज्य हृदये निदधे भवन्तम् ॥ ६ ॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उसा स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः जः । इति जिनेश्वरविसर्जनम् ॥ (विसर्जन करें)
शार्दूलविक्रीडितं— मोहध्वांतविदारणं विशदविश्वोद्भासिदीप्तिश्रियं ॥ सन्मार्गप्रतिभासकं विबुधसंदोहामृतापादकम् ॥
श्रीपादं जिनचंद्रशांतिशरणं, सद्भक्तिमाने मिते ॥ भूयस्तापहरस्य देव भवतो, भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥ ७ ॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि अंकुरार्पणविधिर्नाम

द्वितीयः परिच्छेदः ॥

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के
ग्रंथ में अंकुरार्पणविधि को कहने वाला
यह द्वितीय परिच्छेद पूर्ण हुआ ।

मंदिर के शिखर पर ध्वजा का महत्त्व

प्रासादेध्वजनिर्मुक्ते पूजाहोमजपादिकम् ।

सर्वं विलुप्यते यस्मात्तस्मात्कार्यो ध्वजोऽष्टयः ॥१०७॥

अर्थ—जिस जिनमंदिर पर ध्वजा नहीं होती है उस जिनमंदिर में किया हुआ जप, होम, पूजा आदि सब व्यर्थ हो जाता है । इसलिए जिनमंदिर पर ध्वजा-स्तंभ अवश्य होना चाहिए ।

भावार्थ—जिनमंदिर पर शिखर और शिखर से ऊँचा ध्वजस्तंभ होना चाहिए । शिखर के कलशों से ध्वजा सदा ऊँची होनी चाहिए, नीची ध्वजा शुभ नहीं होती है । जिस प्रकार व्रत की पूर्णता उद्यापन से होती है, उसी प्रकार जिनभवन की शोभा और पूर्णता शिखर, कलश और ध्वजास्तंभ से होती है ।

(उमास्वामी श्रावकाचार-पृष्ठ ४०)

पूजा करने के लिए दिशाएं

तथार्चकः पूर्वदिशि चोत्तरस्यां न सम्मुखः ।

दक्षिणस्यां दिशायां च विदिशायां च वर्जयेत् ॥११६॥

अर्थ—यदि जिन प्रतिमा का मुख पूर्व दिशा की ओर हो तो पूजा करने वाले को उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पूजा करनी चाहिए । यदि प्रतिमा का मुख उत्तर दिशा की ओर हो तो पूजक को पूर्व दिशा की ओर मुंह करके पूजा करनी चाहिए । जिन प्रतिमा के सामने खड़े होकर पूजन कभी नहीं करनी चाहिए । इसी प्रकार दक्षिण दिशा की ओर व विदिशा की ओर मुंह करके कभी पूजन नहीं करनी चाहिए ।

कोई-कोई कहते हैं कि अत्यधिक भीड़ में मंदिर जी में यह व्यवस्था संभव नहीं हो तो दिशा का विकल्प नहीं करना चाहिए ।

(उमास्वामी श्रावकाचार-पृष्ठ ४३)

अथ तृतीयः परिच्छेदः

(शांति हवन विधि)

अथ शांतिहोमविधानमभिधास्यामः ॥

तत्रादौ तावत्संकल्पपूर्वकपुण्याहवाचनां कुर्यात् ॥

गद्य — श्रीमदहर्हत्परमेश्वरोपदिष्टशिष्टेष्टदयामूलधर्मप्रभावकयष्ट्याजकप्रभृतिभ्यजनानां सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैर्व्याभिवृद्धिरस्तु ॥ अथ दयार्द्रवृत्तित्वलक्षणन्यायनिष्ठश्रुतिस्मृतिपुरावृत्तमंत्रक्रियादेवतालिंगकामान्विषयदशशुद्धिप्रतिष्ठान्निष्ठे, श्रीमज्जिनशासने भगवतो महति महावीरवर्द्धमानतीर्थकरस्य धर्मतीर्थे, तत्साक्षात्समारम्भकसकलगुणगरिमगौतममहर्षिचंदनार्यिकाश्रेणिकमहामंडस्त्रेवरचेलिनीप्रभृतिऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविकाभेदचतुर्विधसंघपरंपरातिश्लाघनीयगुणसंघश्रीमूलसंघे, भूर्भुवःस्वर्भेदात् त्रैक्यमात्मसात्कुर्वाणस्य लोकस्य मध्यमध्यासीने मध्यमलोके, तन्मध्यवर्तिनो लक्षयोजनोदयस्य सुदर्शनमेरोर्दक्षिणभागे, क्षुर्विंशपंचशतयोजनैकान्विंशतिषड्भागविस्तारानादिसिद्धभरतव्यपदेशभरतक्षेत्रे, विजयार्धगंगासिंधुप्रवृत्तिविहितषट्खंडमंडिते त्रिषष्टिशलाकापुरुषप्रभृत्यार्यजनसमुत्पत्तिपवित्रितार्यखंडे, तत्रवस्थितायोध्यां दक्षिणेन स्थिते, पशुधान्यहिरण्यकुप्यादिसमृद्धिवर्णनीयवर्णाश्रमाक्षीकर्णाटकदेशेगामिकसमाजसततविधीयमानविविधपुण्योत्सवन्निकराकरेऽस्मिन्नगरे क्षीरद्रुमादिभिः समुचितोत्सेधव्यासायाम- विनिर्मितविविधालंकारमंडितयज्ञमंडपे, अनाद्यनंतकालसंतानमध्यपतितासंख्यातोत्सर्पिण्यवसर्पिणीसमनंतरोपनतदशकोटिकोटिसागरोपमप्रमितहुंडावसर्पिणीकाले प्रवर्तमाने, तत्र सविंशतिशतायुःसप्तहस्तोत्सेधरुक्षवर्णशरीरप्रजाप्रभृतिवर्तनालक्षणैकविंशति-सहस्रवर्षप्रमितदुःषमनाम्नि पंचमे कलियुगे प्रवर्तमाने, तत्र शालिवाहनशककाले एकोनचत्वारिंशदुत्तराष्टशतवर्षसहस्र १८३६ वर्षसंमिते सति प्रवर्तमानपिंगलनामसंवत्सरे, उत्तरायणे वसंतर्तौ, चैत्रमासे, कृष्णपक्षे, एकादश्यां तिथौ भौमवारयुक्तायां तिथिवारनक्षत्रयोगकरणाख्य-पंचांगतिथिसंशुद्धि-निर्दोषायतत्तलनशुद्धिविलग्नहोराद्रेककाननवांशद्वदशांशाभिधानषड्वर्गशुद्धिविविधभेदप्रभेदगोचरशुद्धिरुदकफलावगमनिमित्तनिमित्तशुद्धिरित्येवंविधपंचशुद्धि-समन्वित-प्रशस्तमुहूर्तयुक्तायां, वीतयोषाभूषादिसंगत्वाद्धीतरागतं, निरस्तनिस्त्रिंशत्वादपास्तद्वेषत्वं, तदुभयनिमित्तनिश्चलध्यानैकतानत्वं, तत्कारणकर्मक्षयसर्वज्ञत्वादिगुणान् साक्षात्कथयंत्या इव भगवज्जिनार्चायाः जिनप्रतिमायाः सन्निधौ, सकलसमयसमाराध्यनिरवद्यविद्यारूपवान्देवतासन्निधौ, चतुरजनचेत्त्रचमत्कारिचतुरनुयोगधीतिबोधाचरणप्रचारणपरायणाचार्यवर्यस्य सन्निधौ, निरस्तविषयाभिलाषनिरारंभिःपरिग्रहनितांतज्ञानध्याननिरतमुमुक्षुवर्गसन्निधौ, निरवद्यस्याद्वादविद्याविदग्धपदवाक्यप्रमाणज्ञविद्वज्जनसन्निधौ, न्यायविहितप्रजापालनमतिपालनकुलपालनात्मपालनसमंजसत्त्वलक्षणज्ञात्रधर्मराजद्राजादिसन्निधौ, आर्यषट्कर्मगर्भान्वयादिकर्मकर्मत्वमक्रिया-कुतूहलत्रैवर्णिकसमाजसन्निधौ, न्यायार्जितरक्षितवर्द्धितार्थ पात्रविनियोगेन सकलं कुर्वन्तः, सर्वहितदयामूलमहच्छासनं महामहाग्निः प्रभावयतो धार्मिकस्य सन्निधौ, तेन विधाप्यमानजिनयज्ञमहोत्सवे, स्नानानुस्नानलेपभूषणवसनाख्यशरीरोपस्कारशुद्धिपंचकं, शोषणदहनभस्मीकरणामृतप्लावनजिनात्मध्यानाह्वयात्मशुद्धिपंचकं च प्राप्ता एते वयं पंचोपचारादिक्रियाशुद्धिसहितं, औत्सर्गिकविशेषविषयाशेषमंत्रशुद्धिसहितं अभिहिततीर्थक्षेत्रकालशुद्धिसहितं, निधानापिधानादिविषयसकलपात्रशुद्धिसहितं स्नपनार्चन हवनद्रव्यादि निखिलद्रव्यशुद्धिसहितं केवलश्रुत-केवलदशपूर्वधरैकादशांगधर्ममांगधरसूत्रकारभाष्यकारप्रभृत्याचार्यपरंपरायाताजनसंहिताशास्त्रतदुपदेश तत्कर्मप्रयोगानुक्रमायातेन विधिना विधीयमानप्रतिष्ठाकर्मणि सकलाभ्युदयनिःश्रेयससिद्ध्यर्थ, शुद्ध्यर्थ, शान्त्यर्थ शान्तिहोमविधिं विधास्यामः । तत्कर्मणः पुण्याहार्यं ऋद्ध्यर्थं स्वस्त्यर्थं पुण्याहवाचनां कर्तुमुत्सहामहे । इति संकल्प्य तद्गत्वेन कर्मणः पुण्याहवाचनां कुर्यात् ॥

तत्रैवं प्रयोगः

गद्य — शालिनां प्रस्थं प्रस्तीर्य तत्र ह्रींकारं वेष्टितस्वस्तिकयंत्रं समालिख्य, तदुपरि तीर्थजलपरिपूरितगंधाक्षतपुष्पाद्यर्घ्यैः पल्लवदर्पणशोभित-दर्भपल्लवांचिततंडुलपरिपूरितपात्रपिहितपंचरत्नसुवर्णगर्भितसच्छ्वेतसूत्रावृत्तचंदनपंकमग्नशाल्यक्षतोपलक्षित-कंठलक्ष्मणपुष्पदामशोभितशुभलक्षण-लक्षितसनालकलशं संस्थाप्य तत्कलशजलं यष्ट्रप्रभृतिर्वर्जनेषु सर्वशान्तिमंत्रमुच्चारयन् सिंचेत् ॥

एक पाटे या चौकी पर एक सेर श्वेत चावल फैलाकर स्वस्तिक बनावें । उस पर 'ह्रीं' बीजाक्षर लिखें । उसके ऊपर तीर्थजल से भरे कलश को स्थापित करें । इसको गंध, अक्षत से चर्चित कर पत्ते लगाकर पुष्प रखें और श्वेत सूत्र से वेष्टित कर दर्पण लगावें, पंचरत्न डालें । इसमें मंत्रित जल भरें । पुनः इस कलश को हाथ में लेकर आगे के पुण्याह मंत्रों का उच्चारण करते हुये सर्वत्र जल छिड़कें ।

पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः त्रिलोकनाथाः त्रिलोकप्रद्योतनकराः वृषभाऽजितसंभवाऽभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्त-शीतल-श्रेयोवासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शांति-कुन्धु-अर-मल्लि-मुनिमुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-श्रीवर्धमानाः शांताः शांतिकराः सकलकर्मरिपुविजय-कांतारदुर्गविषमेषु रक्षन्तु नो जिनेन्द्राः सर्वविदश्च ॥ श्री ह्री धृति कीर्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधाविन्यः सेवाकृषिवाणिज्यवाद्यलेख्यमंत्रसाधनचूर्णिप्रयोगस्थानगमनसिद्धिसाधनायाप्रतिहतशक्तयो भवन्तु नो विद्यादेवताः ॥ नित्यमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधवश्च भगवन्तो नः प्रीयन्तां प्रीयन्तां ॥ आदित्यसोमांगारबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर-राहुकेतुग्रहाश्च नः प्रीयन्तां प्रीयन्तां ॥ तिथिकरणमुहूर्तलग्नदेवताः इह चान्यग्रामनगरादिषु अपि वास्तुदेवताश्च ताः सर्वा गुरुभक्ता अक्षीणकोषकोष्ठागारा भवेयुर्दानतपोवीर्यं नित्यमेवास्तु नः प्रीयन्तां प्रीयन्तां । मातृपितृभ्रातृसुत-सुहृत्स्वजनसंबन्धिबंधुवर्गसहितानां धनधान्यैश्वर्यद्युतिबलयशोवृद्धिरस्तु । प्रमोदोऽस्तु । शांतिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । सिद्धिर्भवतु । काममांगल्योत्सवाः सन्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । पुण्यं वर्द्धताम् ॥ धर्मो वर्द्धताम् । श्रयायुषी वर्द्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्द्धतां । स्वस्ति भद्रं चास्तु नः । हतास्ते परिपंथिनः । शत्रवः शमं यान्तु । निष्प्रतिघमस्तु । शिवमतुलमस्तु । सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः स्वाहा ॥

ॐ कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति प्रार्थयेत् (ऐसा विद्वान् बोलें) । प्रार्थितविप्राः पुण्याहं कर्मणोऽस्तु इति ब्रूयुः ॥ अनेन प्रकारेण । ॐ कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु स्वस्ति कर्मणेऽस्तु च । कर्मऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु कर्मऋद्धिस्तु । एतद्वाक्यत्रयोच्चारणान्ते त्रिवारपात्रांतरपातितपूर्णकलशजलेन सभां शान्तिमंत्रेण सिंचेत् ॥

अथ शांतिमंत्रः

(पुनः इस शांतिमंत्र को बोलते हुये सभी पर जल सिंचन करें)

अथ निरतिशयनिजमहिमभरसमसमानात्मीयचरणपरिचरणचतुरचतुर्णिकायामरनिकुण्डलशुभक्तोटीरकोटीतट-घटितस्फुटतरप्रभाभासुरानेकनूत्तरत्ननिकराकरदिवाकरशताधिकातिगंभीरविपुलप्रभामंडलक्षीरोदडिंडीरपिंडायमान-चतुःषष्टिचामरप्रभृतिपरिलक्ष्यमाणाप्रतिपक्षबहिरंगमहालक्ष्मीवान् । अशेषदोषावरणविगमसमनंतरसमुद्भूतसकल-लोकालोक-निरंतरपरिपूर्णसर्वद्रव्यपर्यायविषयक्रमकरणव्यवधानातिवर्तिकेवलाख्यपरंज्योतिः स्वरूपांतरंगिकाक्षय-महालक्ष्मीवान् । अभ्यर्हिताखिलाभ्युदयनिःश्रेयससंपादकः स्याद्वादन्यायनायकः परमाप्तो भगवानर्हद्भट्टारकः । मातृपितृभ्रातृसुहृत्स्वजनसंबन्धिबंधुवर्गसहितयजमानस्य सकलकल्याणं करोतु ॥ शांतिं कान्तिमाविष्करोतु प्राप्नुकरोतु ॥ सौभाग्यमारोग्यमातनोतु संतनोतु ॥ संपदमापदं संपादयतु संविदारयतु । अयशोयशो निष्कासयतु विकाशयतु ॥ एनो मतिमवसादयतु प्रसादयतु ॥ सुखमसुखं तनोतु धुनोतु ॥ अनभिमतमभिमतं वारयतु पूरयतु ॥ श्रियमायुः श्लाघयतु द्राघयतु । पुण्यं पापं व्याजृंभयतु स्तंभयतु ॥ कुपथं सुपथं व्यावर्तयतु प्रवर्तयतु ॥ सत्कर्मासत्कर्म बोधयतु रोधयतु ॥ अनेकान्तमेकान्तं निध्यापयतु विध्यापयतु । विद्यामविद्यामुन्मीलयतु समुन्मूलयतु ॥ सच्छास्त्रमसच्छास्त्रं पोषयतु शोषयतु ॥ श्रेयः प्रत्यवायं पुष्पातु मुष्पातु । क्षामं क्षेमं क्रशयतु भृशयतु ॥ शौचमाचारं प्रथयतु द्रढयतु ॥ कुमतिं सुमतिं अनिशं मर्दयतु वर्द्धयतु । सकलाभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिं करोतु वृद्धिं करोतु । इवीं कीं हं सः स्वाहा ॥

‘शांतिहोम’ यह प्रतिष्ठा में कार्यसिद्धि के लिये, सर्व अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि के लिये, शुद्धि के लिये, शांति के लिये आदि हेतु से किया जाता है । उसमें पहले संकल्प किया जाता है । अनंतर पुण्याहवाचन विधि की जाती है ।

(आशीर्वाद)

कल्याणमस्तु कमलाभिमुखी सदास्तु । दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं सदास्तु ॥

आरोग्यमस्त्वभिमतार्थफलाप्तिरस्तु । भद्रं सदास्तु जिनपुंगवभक्तिरस्तु ॥

(यजमान के मस्तक पर पुष्प क्षेपण करें)

हवन विधि प्रतिज्ञा

शार्दूलविक्रीडितं— श्रीमत्पंचमसार्वभौमपदवीं प्रद्युम्नरूपश्रियं । प्राप्तः षोडशतीर्थकृत्वमखिलत्रैलोक्यपूजास्पदम् ॥
शांतं शांतिजिनेश्वरं त्रिजगतामश्रांतशांतिप्रदं ॥ नत्वा शांतिविधित्सयाद्य विदधे श्रीशांतिहोमोत्सवम् ॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ॥ (पुष्पांजलि करें)

(जिन मंदिर के पूर्व या उत्तर दिशा में एक भाग में तीन कुंड बनावें । मध्य में चौकोन, ऊपर भाग में त्रिकोन व नीचे की तरफ गोल कुंड होंगे । चौकोन को तीर्थकर कुंड, त्रिकोन को गणधर कुंड व गोल को केवली कुंड कहते हैं । इनकी अग्नि के आर्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि ये नाम हैं । उनकी सारी विधि परिशिष्ट से देखें ।)

अथ होममंडपकुंडादिलक्षणम्

गद्य— ॐ समस्ताभ्युदयसुखसंघातलंघनजंघालसमुल्लासनानंतसुखनिवासनिःश्रेयसनिवासनिसर्गमार्गप्रवचनप्रकाशस्य, सर्वज्ञवीतरागपरमाप्तार्हत्परमेश्वरस्य, प्रतिबिंबशुभंजिननिकेतनस्य प्राच्यां प्रागुदीच्यां वा दिशि, जलस्थलशिलावलुकांतखातपूरितसमीकृत-भूभागकल्पितमंडपसभान्यतमसंनिवेशे, क्षीरद्रुमप्रमुखप्रशस्तषोडशस्तंभसंभूते, सप्ताष्टकरान्यतरव्याससमचतुरस्रभक्तित्रयविभागभासुरे पूर्वादिदिक्चतुष्टयद्वारबहिर्निःसृष्टविशिष्टाश्वत्थोदुम्बरलक्ष्म्यप्रोधदारुपरिकल्पितशूलत्रयशालिसमुचितानल्पानल्पकल्पितद्वारसमोत्सेध-रामणीय कचतुस्तोरणाभिरामे । सुरचापशतसमवायसंभूतशोभास्वसात्कारिविविधवर्णाकीर्णवितानविराजमाने । सर्वतोवलंबमानमुक्तालंबूष-परभागाविर्भावकदर्भावलंबितगर्भदर्भमालासमावृते । विचित्रचित्रन्यस्तदिक्पालप्रतिमोपलक्षिततत्तद्दिशांकाचितदिक्पालकेतने । विधिविहित-मंडूकस्थंडिलान्यतरपदमध्यब्रह्मप्रदेशप्रत्यकृदेवमानुषभागप्रकल्पितारत्निप्रमाणविस्तारोत्सेधसिद्धार्थवेदिकोपलक्षि । तत्पूर्वदिशि अमर्त्यमर्त्य-भागातिमध्यस्थानाध्यासितहस्तागधविस्तारभूताम्बुधिगुणमात्रांगुलमितमेखलात्रयचतुरस्रकुंडदक्षिणोत्तरभागावस्थितमात्रांतरिततत्प्रमाण-त्रिकोणवृत्तकुंडसमभिर्भंडिते, कुंडवेदिकाबहिस्तटावधटितदिक्पालपीठिकोपलक्षिते, विशुद्धमृत्पंचगव्यक्षीरद्रुमत्वक्प्रायकरकन्यकासंमार्जित-कुंडवेदिकाविश्वंभरातले विविधभंगीसमालिगितरंगबलिपुष्पोपहारधूपघटपटलमंगलद्रव्यपूजापरिकरपरिशोभिते साक्षान्नोक्षलक्ष्मीविवाह-मंडपायमानपुण्याशयजनपरिपूरितपुण्याश्रमे । यायजुकजनानां सुखतत्साधनसंप्राप्तिदुःखतत्साधनपरिहाररूपशांतिसंपादकमिष्टार्थ-पुष्टिकरममोघभावासिद्धिकारणं महोदयं होमविधानमिदानीं यथाविधि विधातुमुत्सहामहे ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

घंटाटंकारवीणाक्वणितमुरज-धांधाक्रियां-काहलाच्छे-च्छेकारोदारभेरीपटलधलधलंकारसंभूतघोषे ॥

आक्रम्याशेषकाष्ठातटमथ झटिति प्रोच्छटत्युद्भटेऽन्नं ॥ शिष्टाभीष्टार्हदिष्टिप्रमुख इह लतांतांजलिं प्रोक्षिमः ॥ २॥

वाद्यमुद्घोषपूर्वकं पुष्पांजलिः ॥

क्षेत्रपाल अर्घ्य

क्षेत्रं मखेऽस्मिन्परिपालयंतं, विघ्नानशेषानपसारयन्तं ।

वैश्वानराशापरिकल्पितेन, श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि ॥ ३॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं जलं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । एवं गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ (पृथक्-पृथक् जल आदि चढ़ावें अथवा अर्घ्य चढ़ावें)।

वास्तुकुमार अर्घ्य

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारम् ॥

प्रागेव वास्तुविधिकल्पितयज्ञभाग-स्येशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

ॐ ह्रीं वास्तुदेवाय इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

(वेदी पर पुष्पांजलि क्षेपण कर मिट्टी आदि से कुंडों का लेपन करके आगे की विधि करें।)

शार्दूलविक्रीडितं—

आलेप्याखिलकुंडवेदिजगती-मृत्यंचगव्यैर्मरुन्-मेघाग्नीनमरान्समर्च्य वसुधा-मेतैर्विशोध्य त्रिधा । संतर्प्यामृततोप्यहीन्कुशमथो, निक्षिप्य दिक्षु क्रमात् । वार्दभादिभिरर्चयामि महितां, सर्वज्ञयज्ञक्षितिम् ॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय वेद्यां पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ (वेदी पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

उपजातिछंदः—

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ॥

हुत्वारचितो वायुकुमारदेव! त्वं वायुना शोधय यागभूमिम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेव! महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा । षड्दध्मपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत् ॥

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय! सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ॥

हुत्वारचितो मेघकुमारदेव! त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं मेघकुमारदेव! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा ॥ षड्दध्मपूलोपात्तजलेन भूमिं सिंचेत् ॥

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रै - निर्वाणपूजासु कृतापदान ।

हुत्वारचितो वह्निर्कुमारदेव! त्वं ज्वालाया शोधय यागभूमिम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार देव! भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा । ज्वलद्दध्मपूलानलेन भूमिं ज्वालेत् ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥ प्राचीमैशानीं चांतरा वातकुमारादिस्थापनम् ॥

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवन्त्ववार्या भुवि कामचाराः ।

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त - सुधोपमानांजलिपूर्णवार्भिः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । नागतर्पणार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् ॥

ॐ नागकुमाराय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

दशों दिशाओं में दर्भन्यास करें

इन्द्रवज्रा—

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण ।

दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञ-विघ्नौघविध्वंसकृते समंत्रम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा । ब्रह्मादिदशदिक्षु दर्भः । इति दर्भन्यासः ।

भूमिपूजा

वार्दभर्गधैः सुमनोऽक्षतौघैः, धूपप्रदीपैरमृतोपमानैः ।

क्रमान्महामो महितां महद्भूमिर्ह्रीं महादेवमहामहस्य ॥ ११ ॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः चंदनं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः पुष्पं । दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । परमसिद्धाय नमः फलं । भूम्यर्चनम् ।

जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा स्थापन विधि

शार्दूलविक्रीडितं—वेद्या मूर्ध्नि विधाय पीठमुचितं, प्रक्षाल्य तीर्थांबुभिः । प्रत्यग्रेण महाधनेन परितः, प्रच्छाद्य दर्भैरपि ॥ अभ्यर्च्योपरि तस्य सज्जिनपते-रर्चां सतामर्चितां । न्यस्यार्चामि सयक्षयक्ष्युपगतां, चक्रातपत्राचिताम् ॥ १२ ॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः ॥

भगवान् विराजमान हेतु सिंहासन स्थापना

वसंततिलका—

श्रीपांडुकाव्हयशिलाग्रिमपीठकल्पम् ॥ तद्वेदिकोपरितटे निदधामि पीठम् ॥

प्रक्षालयामि शुचिभिः सलिलैः पटेन । प्रच्छादितेऽत्र निदधेऽक्षतपुष्पदर्भान् ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठ ठ श्रीपीठस्थापनं करोमि स्वाहा । पीठस्थापनम् ॥ (थाल या सिंहासन स्थापित करें)

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥ पीठप्रक्षालनम् ॥

तत्पीठोपरि प्रागग्रवस्त्राच्छादनम् । ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः । सकुसुमाक्षतदर्भस्थापनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, पीठं समभ्यर्चये ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । पीठार्चनम् । (सिंहासन को अर्घ्य चढ़ावें)

अभिषेक पात्र में जिनप्रतिमा विराजमान करें

वसंततिलका—

संस्थापयाम्युपरि तस्य जिनेश्वरार्चां । चक्रत्रयं जिनपतेरपसव्यभागे ॥

छत्रत्रयं तदनु तस्य तु सव्यभागे । वादित्रजालजटिले सति सर्वलोके ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थादिनाथ भगवन्निह पांडुकशिलापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

प्रतिमास्थापनम् ॥ दक्षिणपार्श्वे चक्रत्रयस्थापनम् । वामपार्श्वे छत्रत्रयस्थापनम् ॥

शार्दूलविक्रीडितं—आहूता भवनामरैरनुगता, यं सर्वदेवास्तथा । तस्थौ यस्त्रिजगत्सभांतरमहा-पीठाग्रसिंहासने ॥

यं हृद्यं हृदि संनिधाय सततं, ध्यायति योगीश्वराः । तं देवं जिनमर्चितं कृतधिया-माव्हाननाद्यैर्भजे ॥ १६ ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसाहं! एहि एहि संवौषट् आव्हानम् ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसाहं ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसाहं ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथग्मन्त्रुच्चारयन्वार्गधाक्षतांचितपुष्पांजलिं प्रयुंजीत ॥

ॐ हीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा । (इसी मंत्र से क्रमशः चंदनादि चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गांधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै - दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥ १७ ॥

ॐ हीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

इन्द्रवज्रा—

राजेन्द्रदेवेन्द्रजिनेन्द्रयोग्यं, चक्रत्रयं मंगलवस्तुमुख्यम् ।

निवेशितं श्रीजिनबिंबपाश्वे, यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः ॥ १८ ॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः चंदनं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः नैवेद्यं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । इत्यादि चक्रत्रयार्चनम् ॥

लोकत्रयैकाधिपतित्वचिन्हं । छत्रत्रयं मंगलवास्तुमुख्यम् ॥

निवेशितं श्रीजिनवामभागे । यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः ॥ १९ ॥ छत्रत्रयस्थापनं

ॐ नीरजसे नमः जलं । (इत्यादि पूर्व मंत्रों से आठों द्रव्य चढ़ावें)

कुंडात्पुरस्तात्परिमृष्टदेशे । सुविष्टरं न्यस्य सुदृष्टमृष्टम् ॥

तत्रोपविष्टोऽस्म्यथ पश्चिमास्यः, पर्यंकतो वाम्बुरुहासनाद्वा ॥ २० ॥

ॐ हीं क्षीं भूः शुध्यतु स्वाहा । ॐ हीं अहं क्षं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा ।

ॐ हीं हं ह्युं ह्युं गिसहिये आसने उपविशामि स्वाहा ॥

होमार्चनार्थादिषु वै सदेशे, निवेशितेषूचितमौनवृत्तिः ॥

मंत्रक्रियानुक्रमसावधानो, होमक्रियामेष समारभेऽहम् ॥ २१ ॥

गद्य—होमद्रव्यपूजाद्रव्याणां समीपे विनिवेशनम् । सूक्तसुवादिसमुचितसर्वपात्राणां उपस्थापनं प्रक्षालनं । सर्वपात्राणां ग्रहणे स्थापने च दर्शनं प्रतिलेखनं । आज्यपात्रस्य तूत्क्षिप्याधःपरीक्ष्योपस्थापनम् । आज्यस्य दक्षैः उद्भासनमुत्पावनमावेक्षणं च, प्राणिपीडापरिहारार्थं याजकेन सादरं संस्करणं कर्तव्यम् ।

ॐ हीं हं मौनस्थितार्हं मौनव्रतं गृण्णामि स्वाहा ॥

इन्द्रवज्रा—

तीर्थांबुपूर्णोज्ज्वलशातकुम्भ, कुम्भस्य नालाद्गलितेन वारा ॥

कुंडत्रयं सर्वममत्रमत्र, द्रव्यं च सिंचामि समंत्रमेव ॥ २२ ॥

ॐ हीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थकराय श्रीशांतिनाथाय परमपवित्राय पवित्रजलेन होमकुंडशुद्धिं पात्रशुद्धिं च करोमि स्वाहा ॥ (पात्र आदि पर जल छिड़कें)

उपजाति—

अभ्यर्च्य कुंडं परिधिं विधाय, परिस्तुतिं चानलमेधयुक्तम् ।

संस्थाप्य संधुक्ष्य कुशाग्रकीलैः, साक्षात्कृदेकां समिधं जुहोमि ॥ २३ ॥ प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः ॥

तीर्थेशसंबंधसमर्चनीय-श्रीगार्हपत्याश्रयतोर्चनीयम् ।

चैत्याश्रयत्वादिव चैत्यगेहं, समर्चयामश्चतुरस्रकुंडम् ॥ २४ ॥

ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः चंदनं। अक्षताय नमः अक्षतं। विमलाय नमः पुष्पं। परमसिद्धाय नमः नैवेद्यं। ज्ञानोद्योताय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। अभीष्टफलदाय नमः फलं। इत्यादि चक्रयार्चनम् ॥

संबंधतः सार्वगणाधिपानां, समर्चनीयाहवनीयवन्द्यैः।

समाश्रयत्वात्परिपूजनीयं, त्रिकोणकुंडं परिपूजयामः॥ २५॥

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि ॥ (पूर्ववत् मंत्रों से चंदन आदि चढ़ावें)

अंत्योत्सवे केवलिनां सुरेन्द्र-क्लप्तार्चनादक्षिणदक्षिणाग्नेः।

स्थानत्वतोऽर्घ्यं यदिह द्विजानां, तद्वृकुंडं प्रयजे जलाद्यैः॥ २६॥

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि ॥ (पूर्ववत् मंत्रों से चंदन आदि चढ़ावें)

क्षिपामि कुंडस्य चतुर्दिशासु, प्रागुत्तराग्रान्ससमित्कदर्भान्।

अंतः समंतादपि दृष्टमृष्टे, परिस्तृतिं शुष्ककुशैः करोमि॥ २७॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसंदर्भाय केवलदर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रेण दर्भपरिधिमुदुंबरसत्परिधिं च करोमि स्वाहा॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनकेवलदर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रेण होमकुंडानां मध्ये शुष्कदर्भपरिस्तरणं करोमि स्वाहा॥

(कुंडों में दर्भ की स्थापना करें)

आम्नायातानाहिताग्न्यर्चिताग्नीन्कुंडेष्वेषु स्थापयाम्यारणेषु।

उत्पाद्यैनान्गार्हपत्यादिरुपान्मत्वा शुष्कैः साकमेधैः क्रमेण॥ २८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये श्रीमंतं पवित्रतरमग्नीन्द्रं स्थापयामि स्वाहा ॥ (अग्नि की स्थापना करें, कपूर जलाकर कुंडों में रखें)

जैनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः, संशुष्कदर्भाग्रगताग्निनीलैः॥

कुंडस्थिते सेंधनशुद्धवन्हौ, संधुक्षणं सांप्रतमातनोमि॥ २९॥

उसहायि जिणे पणमामि सया। अमलो विरजो वरकप्पतरू॥

सअ कामदुहा मम रक्ख सया। पुरुविज्जुणुही पुरुविज्जुणुही॥ ३०॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं स्वाहा ॥ अग्निं संधुक्षयेत् ।

तीर्थकराद्यन्त महाप्रसिद्ध-श्रीगार्हपत्यप्रमुखानलेन्द्रान्॥

कर्मेन्धनौघदहनादिह संनिधातुं, तत्रादिमैकसमिदाहुतिमातनोमि॥ ३१॥

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावलोकिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा। एकसमिदाहुतिः। (एक समिधा कुंड में डालें)

चतुष्कोण कुंडपूजा

तीर्थेश्वरस्यान्त्यमहोत्सवे यं, भक्त्या नताग्नीन्द्रतिरीटजातम्।

आनर्चुरिन्द्राः सकलास्तमेनं, यजे जलाद्यैरिह गार्हपत्यम्॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः इत्यादि। (क्रमशः आठों द्रव्य चढ़ावें)

त्रिकोणकुंडपूजा

गणाधिपस्यान्त्यमहोत्सवे यं, भक्त्यानताग्नीन्द्रतिरीटजातम्।

आनर्चुरिन्द्राः सकलास्तमेनं, यजामहेद्याहवनीयमग्निम्॥ ३३॥

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः इत्यादि । (क्रमशः आठों द्रव्य चढ़ावें)

गोलकुंडपूजा

श्रीकेवलीशान्त्यमहोत्सवे यं, भक्त्यानताग्नीन्द्रतिरीटजातम् ।

आनर्चुरिन्द्राः सकलास्तमेनं, यजामहे दक्षिणदिव्यमग्निम् ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः इत्यादि । एवं पावकानभ्यर्चयेत् ॥ (अग्नि की पूजा करें)

अनुष्टुपछंदः—गुणाब्धिभूतमानेत्र, मेखलात्रितयेऽर्चये ॥ तिथिग्रहसुरानुक्त-पीठिकासु च दिक्पतीन् ॥

विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ॥

अथ प्रथममेखलाभ्यंतरे च ॥

प्रथम कटनी की पूजा

नदां च भद्रां च जयां च रिक्तां, पूर्णां च भूयो भुवि वर्तयन्ति ।

ये ताननेकान्तसुपक्षपक्षा-न्यक्षेण यक्षप्रमुखान्प्रयक्ष्ये ॥ ३५ ॥

आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं प्रक्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं यक्ष-वैश्वानर-राक्षस-नधृत-पन्नग-असुर-सुकुमार-पितृ-विश्वमालि-चमर-वैरोचन-महाविद्य-मार-विश्वेश्वर-पिंडाशिन्यंचदशतिथिदेवताः सर्वेऽप्यायात आयात यानायुधयुवतिजनैः सार्धं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । सार्धं चरुममृतमिमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत ॥ (अर्घ्य समर्पित करें)

ये लोकयात्रामिह वर्तयन्ते लोकोत्तमार्हत्प्रभुपादभक्ताः ।

यक्षादयस्ते पतयस्तिथीनां समर्चिताः संतु सुखाय सन्तः ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं यक्षादिपंचदशतिथिदेवाः यष्ट्रप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

द्वितीयमेखलाभ्यंतरे च ॥

द्वितीय कटनी की पूजा

मेरुं परीत्यैव चरन्ति नित्यं, ये निग्रहानुग्रहदा नृलोके ।

अवस्थिता ये बहिरर्कमुख्याः, सर्वान्समाहूय समर्चये तान् ॥ ३७ ॥

आवाहननादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं ॥

ॐ ह्रीं आदित्य-सोम-अंगार-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतवो नवग्रहदेवताः सर्वेऽप्यायात आयात यानायुधयुवतिजनैः सार्धं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । सार्धं चरुममृतमिमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत ॥ (अर्घ्य समर्पित करें)

शार्दूलविक्रीडितं—सूर्यः शौर्यगुणं शशी कुशलतां, सन्मंगलं मंगलो । बुद्धिं तत्त्वबुधां बुधो वितरताज्जीवः शुभोज्जीवनम् ॥

शुक्रः शुक्लतरं यशोतिविपुलं, मंदोप्यमंदश्चिरम् । राहुर्बाहुबलं महार्घ्यमहितः, केतुर्महीकेतुताम् ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवाः सर्वेऽपि यष्ट्रप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

तृतीयमेखलाभ्यंतरे च—

तृतीय कटनी की पूजा

चतुर्णिकायप्रभवामरेन्द्रान् । जिनेन्द्रसेवाप्रसितान्तरंगान् ।

प्रभूतभूतद्युतिसौख्यबोधा-नाहूय मंत्रैः पृथगर्चयामि ॥ ३९ ॥

आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं ॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादिद्वात्रिंशदिन्द्राः सर्वेऽप्यायात आयात यानायुधयुवतिजनैः सार्धं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । सार्धं चरुममृतमिमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत ॥ (अर्घ्यं समर्पितं करें) ॥

दश भवनसुरेन्द्रा व्यन्तरेन्द्रास्तथाष्टौ । ज्वलितसकलदिकूँ द्वावपि ज्योतिरिन्द्रौ ।

शुभविधिभिरनल्पाः कल्पजेन्द्रा द्विषश्च^१ । जिनपतिसवनेऽस्मिन्नर्घिताः सन्तु शान्त्यै ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादिद्वात्रिंशदिन्द्रा यष्ट्रप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा पूर्णार्घ्यः ॥

शार्दूलविक्रीडितं— एतत्सर्वजनीनजनैः सवन-प्रत्यूहविध्वंसन । प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहित-प्रख्यातपूजांचितान् ॥

स्वस्वातुच्छपरिच्छदान्दशदशा-मन्याप्रधृष्यामितान् । दिक्पालाज्जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं इंद्राग्नियमनैर्ऋतवरुणवायुकुबेरैशानशेषशीतांशवो दशदिक्पालदेवाः सर्वेऽप्यायात आयात यानायुधयुक्जिनैः सार्धं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । सार्धं चरुममृतमिमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत ॥ (अर्घ्यं समर्पितं करें)

शतमखशिखिकाला यातुधानः प्रचेताः । पवनधनदनागाः कल्पनागेन्द्रचन्द्राः ॥

मखमुखविहितार्घा ये प्रधृष्यप्रभावाः । प्रकृतयजनविघ्नान्धन्तु ते मंत्रनिघ्नाः ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं इंद्रादिदिक्पालदेवा यजमानप्रभृतीनां शान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

सिद्धार्चायां ये क्रियामंत्रसंज्ञा जैनै वेदे साधनाद्याश्च मंत्राः । त्रेताहोमे होममंत्रास्तदेतैस्त्रिष्वप्यग्निध्वारभेयान्नेष्टम् । अनुष्टुपछंदः— षट्त्रिंशत्पीठिकामंत्रैः काम्यमंत्रावसानकैः । इज्यावशिष्टहव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥ ४३ ॥

छत्तीस पीठिका मंत्र

ॐ सत्यजाताय नमः । अर्हज्जाताय नमः । परमजाताय नमः । अनुपमजाताय नमः । स्वप्रदाय नमः । अचलाय नमः । अक्षताय नमः । अव्याबाधाय नमः । अनंतज्ञानाय नमः । अनंतदर्शनाय नमः । अनंतवीर्याय नमः । अनंतसुखाय नमः । नीरजसे नमः । निर्मलाय नमः । अच्छेद्याय नमः । अभेद्याय नमः । अजराय नमः । अमराय नमः । अप्रमेयाय नमः । अगर्भवासाय नमः । अक्षोभ्याय नमः । अविलीनाय नमः । परमघनाय नमः । परमकाष्ठयोगरूपाय नमः । लोकाग्रवासिने नमो नमः । परमसिद्धेभ्यो नमो नमः । अर्हत्सिद्धेभ्यो नमो नमः । केवलसिद्धेभ्यो नमो नमः । अंतकृत्सिद्धेभ्यो नमो नमः । परंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः । अनादिपरंपरा सिद्धेभ्यो नमो नमः । अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्य आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्ह निर्वाणार्ह अग्नीन्द्राय स्वाहा ॥ सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु [३६]

दशभिर्जातिमंत्रैश्च, तावदव्यग्रमानसः । इज्यावशिष्टहव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥ ४४ ॥

दशजातिमंत्र

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि । अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि । अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्यामि । अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्यामि । अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्यामि । अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि । रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्यामि । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वती स्वाहा । सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु । [१०]

निस्तारकादिभिर्मंत्रैः त्रयोदशमितैरयम् । इज्यावशिष्टहव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥ ४५ ॥

तेरह निस्तारकमंत्र

ॐ सत्यजाताय नमः । अर्हज्जाताय नमः । षट्कर्मणे स्वाहा । ग्रामपतये स्वाहा । अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा । स्नातकाय स्वाहा । श्रावकाय स्वाहा । देवब्राह्मणाय स्वाहा । सुब्राह्मणाय स्वाहा । अनुपमाय स्वाहा । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे । निधिपते निधिपते । वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा । [१३] सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ॥

ऋषिमंत्रैर्महर्ष्युक्तै-रष्टादशमितैरथ । इज्यावशिष्ट हव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥४६॥

अठारह ऋषिमंत्र

ॐ सत्यजाताय नमः । अर्हज्जाताय नमः । निर्ग्रंथाय नमः । वीतरागाय नमः । महाव्रताय नमः । त्रिगुप्ताय नमः । महायोगाय नमः । विविधयोगाय नमः । विविधर्द्धये नमः । अंगधराय नमः । पूर्वधराय नमः । गणधराय नमः । परमर्षिभ्यो नमः । अनुपमजाताय नमो नमः । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ! भूपते भूपते ! नरपते नरपते ! कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा । [१८] सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ॥

अथ षोडशभिर्मंत्रैः, सुरेन्द्रादिभिरांजसैः । इज्यावशिष्टहव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥४७॥

सोलह सुरेन्द्रमंत्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा । अर्हज्जाताय स्वाहा । दिव्यजाताय स्वाहा । दिव्यार्चिजाताय स्वाहा । नेमिनाथाय स्वाहा । सौधर्माय स्वाहा । कल्पाधिपतये स्वाहा । अनुचराय स्वाहा । परंपरेन्द्राय स्वाहा । अहमिन्द्राय स्वाहा । परमार्हताय स्वाहा । अनुपमाय स्वाहा । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ! कल्पपते कल्पपते ! दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते ! वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा । [१६] सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ॥

मंत्रैः परमराजाद्यैः, अथ द्वादशसंख्यकैः । इज्यावशिष्टहव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥४८॥

बारह परमराजमंत्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा । अर्हज्जाताय स्वाहा । अनुपमेन्द्राय स्वाहा । विजयार्धजाताय स्वाहा । नेमिनाथाय स्वाहा । परमजाताय स्वाहा । परमार्हताय स्वाहा । अनुपमाय स्वाहा । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ! उग्रतेजः उग्रतेजः ! दिशांजय दिशांजय ! नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा । [१२] सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ॥

परमेष्ठ्यादिभिर्मंत्रैः, षड्विंशतिमितैरथ । इज्यावशिष्ट-हव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः ॥४९॥

छब्बीस परमेष्ठीमंत्र

ॐ सत्यजाताय नमः । अर्हज्जाताय नमः । परमजाताय नमः । परमार्हताय नमः । परमरूपाय नमः । परमतेजसे नमः । परमगुणाय नमः । परमस्थानाय नमः । परमयोगिने नमः । परमभाग्याय नमः । परमर्द्धये नमः । परमप्रसादाय नमः । परमकांक्षाय नमः । परमविजयाय नमः । परमविज्ञानाय नमः । परमदर्शनाय नमः । परमवीर्याय नमः । परमसुखाय नमः । सर्वज्ञाय नमः । अर्हते नमः । परमेष्ठिने नमः । परमनेत्रे नमो नमः । सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ! त्रिलोकविजय त्रिलोकविजय ! धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते ! धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा । [२६] सेवाफलं

षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ॥

(शाल्यन्न , घी, खीर, दूध, बड़े आदि से मिश्रित अन्न की आहुति दें)

शाल्यन्नसर्पिः परमान्नदुग्धैः, सर्पिण्डितैः पूषलिकादियुक्तैः । कृताभिरन्नाहुतिभिर्हुतस्त्वं, विधेहि वन्हीश्वस्मिन्नशांतिम् ॥५०॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

अथ समिदाहुतयः

(गूलर, पाकर, पीपल, पलाश की समिधा—६ अंगुल लंबी एवं दो या तीन अंगुल मोटी लकड़ी को समिधा कहते हैं। इनसे आगे लिखे मंत्र से हवन करें)

क्षीरद्रुमाणां च पलाशकानां, नवांगुलायामसमिद्भिरद्य ।

द्वित्रयंगुलप्रमितनाहमयीभिरग्नौ, करात्करोम्यष्टशतेन होमम् ॥५१॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सार्धप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवनाशाय सर्वक्षामडासविनाशनाय ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः असिआउसा सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति शांतिमंत्रेण सर्वशान्त्यर्थं गार्हपत्ये समिद्भिरष्टोत्तरशतमाहुतीर्विदध्यात् ।

(इस शांति मंत्र से सर्वशांति के लिये गार्हपत्य कुंड में समिधा से १०८ बार आहुति दें समयाभाव में ६ या २७ बार आहुति दें)

इत्थं समिद्भिर्हुतगार्हपत्य, सद्यः सतां पावनपावकेन्द्र ।

कर्मेन्धनानि बहुदुःखनिबन्धनानि, भो भस्मसात्कुरु विनेयजनस्य सद्यः ॥५२॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार! यजमानप्रभृतीनां सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

(गार्हपत्य कुंड में इसी शांतिमंत्र से घी की आहुति दें)

अथाज्याहुतिः

नव्येन गव्येन घृतेन सम्यक्-सृवापितेनाहुतिभिः कृताभिः ।

होमं विधास्यामि समित्समान-संख्याभिरत्यूर्जितशांतिमंत्रैः ॥५३॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय.... इति शांतिमंत्रेण गार्हपत्ये घृतेनाष्टोत्तरशतमाहुतीर्विदध्यात् ।

इत्याज्यहोमैर्महितोऽग्निदेव, त्वं दिव्यमूर्ते सकलार्चनांगम् ।

अभ्यर्चनीयो द्विजसत्तमानां, शांतिं च कांतिं कुरु पुष्टितुष्टिम् ५४ ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ।

अथ लवंगाद्याहुतिः

(पुनः इसी शांतिमंत्र से लवंग से आहुति दें)

लवंगलाजैस्तिलतंडुलाद्यैः, कर्पूरकाश्मीरपयःपटीरैः ।

सितादिभिः साष्टशतं विमिश्रैः, कृताहुतीरत्र सृजा जुहोमि ॥५५॥

“ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय” इति शांतिमंत्रेण गार्हपत्ये लवंगादिभिरष्टोत्तरशतमाहुतीर्विदध्यात् ।

एवं लवंगप्रमुखैर्विशुद्ध-द्रव्यैः समंत्रं हुतदिव्यवन्हे ।

प्रसीद विध्वंसय विघ्नजालं, स्थानानि नः षट् परमाणि यच्छ ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा । पूर्णार्घ्यः ।

(इस लवंग आदि की आहुति से सज्जातीय गृहस्थ ने सद्गार्हस्थ्य, पारिव्राज्य, सुरेन्द्रता, साम्राज्य, आर्हृत्य एवं निर्वाण इन षट् परमस्थान की याचना की है।)

अन्वतो विमलाम्भोभि-गंधपुष्पाक्षतान्वितैः । कुर्महे पीठिकामंत्रै-स्तर्पणं परमेष्ठिनाम् ॥ ५७ ॥

ॐ सत्यजाताय नमः । इत्यादिषट्त्रिंशत्पीठिकामंत्रैस्तर्पणं कुर्यात् ॥ (छत्तीस पीठिका मंत्रों से तर्पण करें।)

अथ पूर्णाहुतिः । इस पद्य को बोलकर आगे के मंत्रों से पूर्णाहुति देवें।

जिनेश्वराणां च तिथीश्वराणां, ग्रहामराणां च दिशाधिपानां ।

अग्नेः प्रसादाय तदीयमंत्रै-राज्येन पूर्णाहुतिमातनोमि ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धकेवलिभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं क्रों पंचदशतिथिदेवेभ्यः स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं क्रों नवग्रहदेवेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं क्रों द्वात्रिंशदिद्रेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं क्रों दशलोकपालकेभ्यः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा ॥ इति पूर्णाहुतिः । ततः पुण्याहमुद्घोषयेत् ॥

तीर्थंकर कुंड की अग्नि की पूजा

तीर्थेश्वरस्यान्त्यमहोत्सवे यं, भक्त्या नताग्नीन्द्रतिरीटजातम् ।

आनर्चुरिन्द्राः सकलास्तमेनं, यजे जलाद्यैरिह गार्हपत्यम् ॥ ५९ ॥

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि (क्रमशः मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ावें)।

चार सौ इकसठ मंत्रों से आहुति देकर गार्हपत्य अग्नि से प्रार्थना की है।

एकाग्रषष्ठ्यभ्यधिकैश्चतुर्भिः, शतैः समस्ताहुतिभिर्हुतस्त्वम् ।

सद्दर्शनारोपितगार्हपत्यं, निःश्रेयसं साभ्युदयं विधेहि ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं गार्हपत्य! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा । पूर्णार्घ्यः ।

गणधर कुंड की अग्नि की पूजा

गणाधिपस्यान्त्यमहोत्सवे यं, भक्त्या नताग्नीन्द्रतिरीटजातं ।

आनर्चुरिन्द्राः सकलास्तमेनं, यजामहेद्याहवनीयमग्निम् ॥ ६१ ॥

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि अष्टद्रव्य से पूजा करें ।

हुतस्त्वमन्नाहुतिभिः सहैक-त्रिंशच्छतेनोदितदिव्यमंत्रैः ।

सद्बोधकल्पाहवनीयवन्दे, निःश्रेयसं साभ्युदयं विधेहि ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं आहवनीय! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ।

केवलीकुंड अग्नि की पूजा

श्रीकेवलीशान्त्यमहोत्सवे यं, भक्त्या नताग्नीन्द्रतिरीटजातं ।

आनर्चुरिन्द्राः सकलास्तमेनं, यजामहे दक्षिणदिव्यमग्निम् ॥ ६३ ॥

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि (आठ द्रव्य चढ़ावें)।

हुतस्त्वमन्नाहुतिभिः सहैक-त्रिंशच्छतेनोदितदिव्यमंत्रैः ।

सद्रुतसंकल्पितदक्षिणाग्ने, निःश्रेयसं साभ्युदयं विधेहि ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणाग्ने! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पूर्णाध्वः ।

स्तुति करना

सर्वाभ्युदय निःश्रेयसार्थसिद्धि निबन्धनम् । रत्नत्रितयसंकल्पमग्निमीडे पुरोहितम् ॥ ६५ ॥

तिथ्यरंतिमकल्लाणंतरपणमंत अगणिदेविंद ॥ मुकुटग्गाजादमगणिं वंदे णित्थारयाघदहम् ॥ ६६ ॥

(स्वर्ग-मोक्ष को प्राप्त कराने वाली और जिसमें रत्नत्रय का संकल्प है, ऐसी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ। तीर्थंकर के निर्वाण कल्याणक के बाद नमस्कार करते हुये अग्निकुमारेन्द्र के मुकुट से जो उत्पन्न हुई है, जो संसार से पार करने वाली और कर्म को नष्ट करने वाली है ऐसी अग्नि को मैं नमस्कार करता हूँ।)

अज्झयणं ज्झाणगिहणिद्दढासेसकम्मइंधणया । केवलिणो जहि सिद्धा वंदे तहि संभवं अगणिम् ॥ ६७ ॥

बहुविहजमणियमगिहि दढ्ढं देहं गणेसिणो अंते । जो दहइ कम्मवणमिव तहि अहमगणिंदमभिवंदे ॥ ६८ ॥

(अध्ययन और ध्यानरूपी अग्नि से जिन्होंने कर्म को नष्ट किया है ऐसे केवली के शरीर को संस्कारित करने वाली दक्षिणाग्नि को मैं नमस्कार करता हूँ। बहुत प्रकार के यम-नियमरूपी अग्नि के द्वारा जिन्होंने अपने शरीर को दग्ध कर दिया है ऐसे गणधरदेव के शरीर का संस्कार करने वाली अग्नि की मैं वंदना करता हूँ।)

अर्हन्विभर्षि मोहारिविध्वंसिनयसायकान् ॥ अनेकांतद्योतिनिर्बाध, प्रमाणोदारधन्व च ॥ ६९ ॥

ततस्त्वमेव देवासि, युक्तिशास्त्राविरोधवाक् ॥ दृष्टेष्टबाधितेष्टाः स्युः, सर्वथैकांतवादिनः ॥ ७० ॥

अर्हन्निष्कमिवात्मानं बहिरन्तर्मलक्षयम् । विश्वरूपं च विश्वार्थं वेदिनं लभसे सदा ॥ ७१ ॥

अर्हन्निदं च दयसे विश्वमभ्यन्तराश्रयम् । नृसुरासुरसंघातं मोक्षमार्गोपदेशनात् ॥ ७२ ॥

ब्रह्मासुरजयी वान्यो देव रुद्रस्त्वदस्ति न । गुणब्रंहणमोहघ्न मारमारणदारुणं ॥ ७३ ॥

वसंततिलकाछन्दः—

तुभ्यं नमो दशगुणोर्जितदिव्यगात्र । कोटिप्रभाकरनिशाकरजैत्रतेजः ।

तुभ्यं नमोतिचिरदुर्जयघातिजात-घातोपजातदशसारगुणाभिराम ॥ ७४ ॥

तुभ्यं नमः सुरनिकायकृतैर्विहारे दिव्यैश्चतुर्दशविधातिशयैरुपेत ।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनाधिपतित्वचिन्ह-श्रीप्रातिहार्याष्टकलक्षितार्हन् ॥ ७५ ॥

तुभ्यं नमः परमकेवलबोधवार्द्धे, तुभ्यं नमः समसमस्तपदावलोक ॥

तुभ्यं नमो निरुपमाननिरंतवीर्य, तुभ्यं नमो निजनिरंतरनित्यसौख्य ॥ ७६ ॥

तुभ्यं नमः सकलमंगलवस्तुमुख्य, तुभ्यं नमः शिवसुखप्रद पापहारिन् ॥

तुभ्यं नमस्त्रिजगदुत्तमलोकपूज्य, तुभ्यं नमः शरणभूत्रयरक्षदक्ष ॥ ७७ ॥

तुभ्यं नमोऽस्तु नवकेवलपूर्वलब्धे, तुभ्यं नमोस्तु परमैश्वर्योपलब्धे ॥

तुभ्यं नमोस्तु मुनिकुंजरयूथनाथ, तुभ्यं नमोस्तु भुवनत्रितयैकनाथ ॥ ७८ ॥

इति जिनाचार्यमुखं स्थित्वा स्तुतिं पठेत् ॥ (इस प्रकार जिनप्रतिमा के सन्मुख खड़े होकर स्तुति करें।)

अथ याजकः स्वललाटे भुजद्वये कंठे हृदयदेशे च होमभस्म तिर्यग्धारयेत् ॥ मंत्रः ॥

(स्वयं प्रतिष्ठाचार्य आगे का पद्य पढ़कर होम की भस्म को ललाट में, दोनों भुजाओं में, कंठ में और हृदय में लगावें।)

रत्नत्रयार्चनमयोत्तमहोमभूति-र्युष्माकमावहतु वासवदिव्यभूतिम् ।

षट्खंडभूमिविजयप्रभवां विभूतिं, त्रैलोक्यराज्यविषयां परमां विभूतिम् ॥७६॥

अनयाशिषा यजमानादिभ्यः शांतिमंत्रितं तद्भस्म प्रदद्यात् । (पुनः इसी पद्य से सभी को होम की भस्म दें।)

प्रध्वस्ताशेषघातिप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः । कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ।

तैरष्टप्रातिहार्यैस्त्रिजगदधिपतिर्यस्तमेन प्रवन्दे ॥ स्याद्वादामोघवाक्यं सकलसुखकर सन्नतेन्द्रं जिनेन्द्रम् ॥८०॥

जय जय जिन शश्वदित्यादिना इष्टप्रार्थनां, स जयतु जिनधर्म इत्यादिना शुभानुद्धानं, प्रमादाज्ज्ञानेत्यादिना क्षणां, प्रक्षीणदोषमलमित्यादिना जिनेश्वरविसर्जनम्, इष्टास्तेमीत्यादिना होमार्थसमाहृतदेवतानां विसर्जनं विदध्यात् ॥ मोहध्वांतविदारणं । भूमात्पुनर्दर्शनम् ॥ पुनः इष्ट प्रार्थना, शुभानुद्धान, क्षमापण, विसर्जन करके प्रार्थना करें।

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि शांतिहोमविधिर्नाम

तृतीयः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के ग्रंथ में शांतिहोमविधि को कहने वाला यह तृतीय परिच्छेद पूर्ण हुआ।

प्रतिष्ठित प्रतिमा का महत्त्व

विना न्यासं न पूज्यः स्यान्न वंद्योसौ दृष्टत्समः ।

सुखं न जनयेन्न्यासवर्जितः प्राणिनां क्वचित् ॥७७॥

अर्थ—प्रतिष्ठा पाठों के अनुसार प्रतिष्ठा किये बिना भगवान् की प्रतिमा कभी पूज्य और वंदनीय नहीं होती, बिना न्यास वा प्रतिष्ठा के वह प्रतिमा पत्थर के समान मानी जाती है। बिना प्रतिष्ठा की हुई प्रतिमा से प्राणियों को कभी भी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

भावार्थ—प्रतिष्ठा विधि से प्रतिमा में अरहंत के गुणों का आरोपण किया जाता है। बिना गुण आरोपण किये पूज्यता नहीं आ सकती। इसलिए प्रतिष्ठित प्रतिमा ही पूज्य होती है। फोटो, चित्र, लेप आदि की अप्रतिष्ठित प्रतिमाएं कभी पूज्य नहीं होतीं।

(उमास्वामी श्रावकाचार-पृष्ठ ६६)

कौन-कौन सी मूर्तियां पूज्य हैं?

अतीताब्दशतं यत्स्यात् यच्च स्थापितमुत्तमैः ।

तद्व्यंगमपि पूज्यं स्याद्बिम्बं तन्निष्कलं नहि ॥७८॥

अर्थ—जिस प्रतिमा की पूजन करते हुए सौ वर्ष व्यतीत हो गये हैं अथवा जिस प्रतिमा का साक्षात् अतिशय हो और जो प्रतिमा किसी महापुरुष के द्वारा स्थापित की गई हो, वह प्रतिमा यदि अंगहीन हो तो भी पूज्य मानी जाती है।

भावार्थ—अंगहीन प्रतिष्ठित भी प्रतिमा अपूज्य होती है परन्तु अतिशय सहित प्रतिमा का कोई उपांग भंग हो गया हो तो वह पूज्य ही मानी जाती है।

(उमास्वामी श्रावकाचार-पृष्ठ ४०)

अथ चतुर्थः परिच्छेदः

अथ मण्डपविधानं वेदीनिर्वर्तनं च ॥

अनुष्टुप छंदः— अंकुरार्पणतः पश्चात् द्वितीयेऽहनि शोभने । कृत्वा वास्तुबलिं सर्व-मंडपानि प्रसाधयेत् ॥ १ ॥
 नांदीमंगलतः पूर्वं, दिवसेषु कियत्स्वपि । यष्ट्राहूय च सम्मान्य, प्रार्थितो याजकोत्तमः ॥ २ ॥
 सज्जयित्वापकरणं, याजको यज्ञसिद्धये । सम्यक्शांतिविधिं कृत्वा, कारयेन्मंडपादिकम् ॥ ३ ॥
 खात्वा विशोध्य संपूर्य, समीकृत्य पवित्रिते । भूभागे मंडपं कार्यं, पूगक्षीरद्रुमादिभिः ॥ ४ ॥
 जिनधामाग्रतो मूल-वेदीमंडपमिष्यते । त्रयादित्रिवर्द्धिष्णु-चतुर्विंशत्यंतकरप्रमम् ॥ ५ ॥
 तन्मध्ये नवमे भागे, वेदी निर्वर्त्यते बुधैः । एकाद्यष्टांत्यहस्तैः सा, प्रमिता वेदिकाष्टधा ॥ ६ ॥
 क्रमान्दा सुनंदा च, प्रबुद्धा सुप्रभाभिधा । मंगला कुमुदा च स्याद्विमला पुंडरीकिका ॥ ७ ॥
 सा सर्वाष्टविधा वेदी, स्वव्यव्याससमायतिः । भवेद् व्यासषडंशोच्चा, चतुरस्त्रेशदिक्लवा ॥ ८ ॥
 तास्विष्टा वेदिका काचिद्विधेयामेष्टिकादिभिः । तन्निर्माणविधिः सर्वस्तद्विधौ वर्णयिष्यते ॥ ९ ॥
 तस्याश्चतुर्विंशहस्त-विस्तारायामागधकम् । चतुरस्रं चतुर्मात्रं, मेखलात्रयकुंडकम् ॥ १० ॥
 तत्पुरस्ताच्चतुर्द्वारं, चतुरस्रं सभाह्वयम् । सप्तद्वित्रिंशदाद्यंत-हस्तप्रमितमंडपम् ॥ ११ ॥
 मूलवेद्याः प्रतीच्यां तु, दीक्षाग्रहणमंडपम् । उचितायामविष्कंभं, स्याच्चतुस्तंभसंभृतम् ॥ १२ ॥
 ईशानदिशि तन्मूल-वेदीमंडपतो भवेत् । मंडपं तत्समं वेदी-कर्णमात्राध्वसंगतम् ॥ १३ ॥
 ग्रामस्येशानदिशि वा जन्माभिषवमंडपम् । तत्समं कारयेद्धीमान्देशकालानुरोधतः ॥ १४ ॥
 तत्रैव मंडपे प्रत्यकप्रदेशे ब्रह्मभागतः । चतुरस्रं चतुस्तंभं, सर्वावयवसुंदरम् ॥ १५ ॥
 जलनिर्गमनोपेतं, वेदिकापरिवेष्टितम् । उचितायामविष्कंभं, भवेत्स्नपनमंडपम् ॥ १६ ॥
 तत्र या वेदिका सैव, भवेदीशानवेदिका । ब्रह्मांशात्पुरतः कार्या, कलशन्यासवेदिका ॥ १७ ॥
 तन्मंडपात्प्रतीच्यां तु, विधेयं होममंडपम् । ततोपि च प्रतीच्यां स्या-दंकुरारोपलक्षणम् ॥ १८ ॥
 तयोस्तु लक्षणं सर्वं, तत्प्रयोगेभिधास्यते । क्वचित्तत्रोचितोद्देशे, भवेच्छान्तिकमंडपम् ॥ १९ ॥
 सुप्रभावेदिकायोग्यं, तन्मध्ये सैव वेदिका । पूर्वाद्यष्टदिशास्वेत-द्वेद्याः सोमदिशि क्रमात् ॥ २० ॥
 नवग्रहाणां होमार्थं, नवकुंडानि कल्पयेत् । चतुरस्रमथाश्वत्थ-दलाभं चार्धचंद्रकम् ॥ २१ ॥
 त्रिकोणं वर्तुलं पंच-कोणं षट्कोणं तथा । अष्टकोणं धनूरूप-मथाहीन्द्रदिगंतरे ॥ २२ ॥
 नवग्रहाणामेकं स्यादप्कुंडं चतुरस्रकम् । सर्वं तु हस्तमात्रं स्याद्धनुःसार्धकरप्रमम् ॥ २३ ॥
 धनुषश्चार्धचंद्रस्य, व्यासो हस्तत्रिभागतः । विमानस्य चतुर्विंश, चतुरस्राणि कल्पयेत् ॥ २४ ॥
 कुंडानि मंडपं योग्यं, तत्प्रत्यक्सिद्धविष्टरम् । एवं प्रागेव निर्माप्य, समस्तं मंडपादिकम् ॥ २५ ॥
 नांदीदिनात्तृतीयेऽह्नि, कृत्वा शांतिकसंविधिम् । सन्मान्य शिल्पिनः कृत्वा, वास्तुदेवबलिं ततः ॥ २६ ॥
 विचित्रवसनैः सर्व-मंडपानि प्रसाधयेत् । ध्वजैश्च सल्लकीरंभास्तंभैरपि दलस्रजा ॥ २७ ॥
 चतुर्द्वारोर्ध्वकोणस्थ-शुभ्रकुंभाष्टकेन च । तोरणैर्भूरिसौंदर्य-नानारत्नांशुकाचितैः ॥ २८ ॥
 प्रलंबमुक्तालंबूष-हारस्रक्तारकोत्करैः । भूरिपुष्पोपहारेण, चारुचंदनचर्चया ॥ २९ ॥
 मुक्तास्वस्तिकविन्यासैः, रंगावलि विशेषकैः । कलशादर्शभृंगार-यवौश्च विरूढकैः ॥ ३० ॥
 दर्भमालिकया धूप-घटैरन्यैश्च मंगलैः । मंडपं भूषयेत् सर्वं, बुधः चित्तप्रसत्तये ॥ ३१ ॥
 एवं विधीयते यच्च, मंडपस्य प्रसाधनम् । तदेव हि बुधाः प्राहु-र्यज्ञशालाप्रवेशनम् ॥ ३२ ॥

अंकुरारोपण विधि करने के बाद दूसरे दिन शुभमुहूर्त में वास्तुबलि—वास्तुपूजा करें, सर्वमंडप अलंकृत करें। नांदीमंगल विधि से पूर्व प्रतिष्ठा कराने वाले यजमान, प्रतिष्ठाचार्य भी यज्ञसिद्धि के लिये सर्व उपकरण तैयार करके प्रथम ही शांतिविधि—शांतिविधान करावें पुनः मंडप, वेदी आदि के निर्माण करावें।

मंडप बनाने के स्थल में भूमि खोदकर उसका शोधन करके पुनः उसे भर देवें व समान—समतल कर देवें। ऐसे पवित्र स्थान में क्षीर-वृक्ष, उदुंबर आदि लकड़ियों से मंडप तैयार करावें।

जिनमंदिर के सामने मूलवेदी मंडप बनवावें, वह मंडप तीन, छह, नव, बारह इस तरह वृद्धि करें चौबीस हाथ प्रमाण। इतना लंबा, चौड़ा होना चाहिये। इसके नीचे में नवमें भाग में वेदी बनावें, वह आठ हाथ ही होवे।

प्रतिष्ठासरोद्धार में लिखा है— “कम से कम तीन हाथ का मंडप होना चाहिये और एक हाथ की वेदी बनाना चाहिये यह संक्षेप विधि है और अधिक विधि करनी हो तो तीन-तीन हाथ बढ़ाते जाना अर्थात् छह हाथ का मंडप और दो हाथ की वेदी करना। इस तरह सबसे अधिक चौबीस हाथ का मंडप (३६ फुट लगभग) और आठ हाथ की वेदी बनाना चाहिये यह विस्तार विधि करने के समय जानना।”

इस वेदी के आठ भेद हैं— नंदा, सुनंदा, प्रवृद्धा, सुप्रभा, मंगला, कुमुदा, विमला और पुंडरीका। वेदी का जो व्यास हो उतनी ही लंबाई होनी चाहिये और व्यास के छठे भाग प्रमाण ऊंचाई हो, वेदी चौकोन होवे और ईशान दिशा में होवे। इन आठ वेदियों में से कोई भी एक वेदी कच्ची ईंटों से बनवावें। इस वेदी को बनवाने की सर्वविधि ‘वेदी विधान’ के प्रकरण में कही जाएगी।

इस वेदी की चारों दिशाओं में एक हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा इस प्रकार चौकोनकुंड बनावें जिसमें तीन कटनी होवें। उसके सामने चार द्वारों वाला चौकोन ऐसा सभामंडप बनवें—यह सभा मंडप सात हाथ से लेकर बत्तीस हाथ पर्यंत होना चाहिये। मूलवेदी और पश्चिम में दीक्षामंडप बनवावें। यह मंडप योग्य लंबा, चौड़ा और चार खंभों से सहित होना चाहिये ॥ १ से १२ ॥

ईशान दिशा में मूलवेदी मंडप के समान ही मंडप बनाना चाहिये, यह मंडप वेदी के ईशान कोण से लेकर नैऋतकोणपर्यंत, जो वेदी का प्रमाण है, उतना होना चाहिये।

नगर की ईशान दिशा में देश, काल के अनुसार जन्माभिषेक मंडप बनवावें। वह भी उपर्युक्त प्रमाण वाला होना चाहिये। इस मंडप के ब्रह्मभाग—पश्चिमभाग में चौकोन, सुंदर, पानी निकलने के साधन से सहित ऐसी वेदी से युक्त, चार खंभे वाला यथायोग्य लंबा ऐसा स्नपन—अभिषेक मंडप बनवावें। इस मंडप में जो वेदी है, उसे ‘ईशानवेदी’ कहते हैं।

ब्रह्मांश के सामने कलश स्थापित करने के लिये एक वेदिका बनावें। इस मंडप की पश्चिम दिशा में होम मंडप बनावें और उसके भी पश्चिम में अंकुरारोपण मंडप तैयार करवावें। इस होम मंडप और अंकुरार्पण मंडप के सर्वलक्षण उन-उन की प्रयोगविधि में कहा जावेगा। इन दोनों मंडपों के निकट यथायोग्य स्थान में शांतिविधिमंडप होना चाहिये।

उपर्युक्त-सुप्रभा वेदी के योग्य उस मध्य में वही वेदी है।

इस वेदी की आठों दिशाओं में क्रम से नवग्रह के होम के लिये क्रम से नव कुंड होना चाहिये।

१. सूर्यग्रह का चौकोन कुंड २. चंद्रग्रह का पीपल के पान के आकार का ३. मंगल ग्रह का अर्ध चंद्राकार ४. बुधग्रह का त्रिकोण ५. गुरुग्रह का वर्तुलाकार ६. शुक्रग्रह का पंचकोण ७. शनिग्रह का षट्कोण ८. राहुग्रह का अष्टकोण और ९. केतुग्रह का धनुषाकार इस प्रकार नवग्रह हवन के लिये नौ कुंड तैयार करवावें और एक जलहोम कुंड बनवावें जो कि चौकोन होवे।

जिस दिन नांदीमंगल विधि की है, उससे तीसरे दिन शांति विधि करे। पुनः सर्वशिल्पि लोगों का सत्कार करके वास्तुबलि नाम से विधि संपन्न करें।

सर्वमंडपों को चित्र-विचित्र वस्त्रों से सुसज्जित करें। ध्वजायें लगावें, साल्लकी, केला आदि के स्तंभ खड़े करें, चारों तरफ मालायें लटकावें। मंडप के चारों दरवाजों में दो-दो, ऐसे आठ कुंभों की स्थापना करें। तोरण बांधें, मोतियों का चूर्ण बिखरावें, चंदन के छीटे दिलावें, पुष्पों से सजावें, स्वस्तिक आदि बनवावें और सुंदर-सुंदर रंगोली बनवावें।

कलश, दर्पण, भृंगार, यवारक—उगे अंकुरे, विरुद्धक—द्विदल धान्य के अंकुर, दाभ की मालायें, धूपघट और अन्य भी मंगल पदार्थों से मंडप को सुशोभित करें। इसे ही विद्वान् लोग ‘यज्ञशाला प्रवेशन’ यह नाम देते हैं ॥ १३ से ३२ ॥

अस्य यज्ञशालाविधेः प्रयोगः

तत्रादौ पूजामुखविधिः पूर्ववत्कर्तव्यः ॥ (प्रारंभ में पूर्ववत् पूजामुख विधि करें)

इन्द्रव्रजा— स्नानादिसिद्धस्तवनावसानं, पूजामुखं तद्विधिना विधाय।

निःशेषविघ्नप्रतिघातनार्थं, श्रीशांतियंत्रार्चनमारभेऽहम् ॥१॥

प्रस्तावनपुष्पांजलिः । (पुष्पांजलि क्षेपण करें) ।

अथ वक्ष्यमाणविधिना क्षेत्रपालवास्तुदेवबलिं वायुमेघाग्निदेवानामर्चनापूर्वकं तैर्भूमिशोधनं नागतर्पणं दम्भासं भूम्यर्चनं च क्रमेण विदध्यात् ॥ वेद्यां मंगलमालिखार्चितेत्यादिना चूर्णानि स्थापयेत् ॥ (भूमिशोधन विधि करके वेदी में पूर्व मंत्रों से पंचवर्षी चूर्ण स्थापित करें)

अथ पूजा

(अनंतर मंडप में चूर्णों से अष्टदल कमल बनाकर चार द्वार सहित चौकोन मंडल बनावें । कर्णिका में अर्हत, पूर्वादि दिशाओं के चार दलों में सिद्धादि परमेष्ठी, चार विदिशा के दलों में मंगल, लोकोत्तम, शरण और केवलीप्रणीत धर्म लिखें । पुनः आठ दल कमल में जयादिदेवी, चौकोन मंडलों में दिक्पाल और सोम दिक्पाल के ऊपर पूर्वादि दिशा में सूर्यादिग्रहों को लिखें, ग्रहमंडल के मध्य केतुग्रह लिखें अनंतर विघ्नशमन हेतु सबकी आराधना करें ।)

गद्य—अथातः समुचितोद्देशपरिकल्पितषोडशस्तंभसंभृतचतुरस्रसमुचितोत्सेधायामविस्तारविराजिते । चंद्रोपकमुक्ताफललंबूषादिविविधमंडनाभिर्मंडितशांतिकायागमंडलाराधनामंडपे । मध्येमंडपं रुचिरतरचूर्णैरष्टदलकमलमुपात्तचतुर्द्वारचतुरस्रमंडलं समालिख्य, तत्कर्णिकामध्ये अर्हत्परमेष्ठिनस्तत्पूर्वादिदिशासु अपरपरमेष्ठिनः, तदाग्नेयाद्यन्तरेषु मंगलान्सिद्धभट्टारकोपरिष्ठादयोगकेवलिचरमसमयसंभविसंपूर्णरत्नत्रयरूपधर्म तद्बहिरष्टदलेषु जयादिदेवीः, चतुरस्रमंडले दिक्पालकान्, सोमदिक्पालकोपरि पूर्वादिदिक्षु सूर्यादिग्रहान् ग्रहमंडलमध्ये केतुग्रहं च, सर्वानिमान्मंत्ररूपान्निधाय, सर्वविघ्नानामनुत्पत्त्यर्थं उपशमनार्थं सम्यगिदानीमाराधयामहे ॥

ॐ परमब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः ॥

अथ वक्ष्यमाणविधिना शब्दब्रह्मावर्जनं परब्रह्माधिवासनं पंचपरमेष्ठिपूजनं मंगललोकोत्तमशरणार्घ्यप्रदानं धर्मपूजां च अनादिसिद्धमंत्रेण पुण्यजपं विदध्यात् ॥ (आगे कही विधि से शब्दब्रह्म की पूजा, परब्रह्म की अधिवासना, पंचपरमेष्ठी पूजन, मंगललोकोत्तम आदि की पूजाकरके अनादिसिद्धमंत्र का पुष्पों से जाप करें)

आर्याछंदः— पंचपरमेष्ठिनस्ते, मंगललोकोत्तमाश्च शरणानि ।

धर्मोपि कर्णिकायां, समर्चिताः सन्तु नः सुखदाः ॥ २ ॥ (पूर्णार्घ्यः)

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठ्यादिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ्यमंत्रः ॥

अथ वक्ष्यमाणविधिना गद्यपद्यमंत्रवाक्यैः जयादिदेवीसमर्चनं, दिक्पालार्चनं नवग्रहपूजाविधिं नवग्रहहोमं च क्रमेण यथाविधि विदध्यात् (आगे कही गई विधि से क्रम से जयादिदेवी पूजा, दिक्पालार्चना, नवग्रहपूजा और नवग्रह होम करें) ।

नवग्रहहोमे तावज्जलहोमविधानम् ॥ नवग्रह में जलहोम विधि कहते हैं)

वसंततिलकाछंदः— कुंडात्परस्तात्परिमृष्टदेशे, सुविष्टरं न्यस्य सुदृष्टमृष्टम् ।

तत्रोपविष्टोऽस्म्यथ पश्चिमास्यः, पर्यंकतो वाम्बुरुहासनाद्वा ॥ ३ ॥

ॐ क्षीं भूः शुध्यतु स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अर्हं क्षीं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं हूं हूं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा ।

इंद्रवज्रा— तीर्थांबुपूर्णोज्ज्वलशातकुंभकुंभस्य नालाद्गलितेन वारा ।

कुंडं शुभं सर्वममत्रमत्र, द्रव्यं च सिंचामि समंत्रमेव ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थकराय श्रीशांतिनाथाय परमपवित्राय पवित्रतरजलेन होमकुंडशुद्धिं करोमि स्वाहा ॥ वक्ष्यमाणमंत्रैः कुंडमभ्यर्चयेत् । (यहां हवन के पूर्व की विधि करें) ।

(जौ, तिल और शालिधान्य मिलाकर आगे के नवग्रहों के मंत्रों से सात-सात बार इन तीन धान्यों की मुट्ठी लेकर जलकुंड में क्षेपण करें) ।

उपजाति—

यवैस्तिलैः शालिभिरेव सप्त-सप्तस्वमुष्टिप्रमितैर्विशुद्धैः ।

होमं विधास्यामि समंत्रमंभः, कुंडे ग्रहाणामिह सुप्रसत्तयै ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं हः फट् आदित्यमहाग्रह! अस्माकं^१ शिवं कुरु कुरु स्वाहा । एवं सोमादिष्वपि ।

ॐ ह्रीं हः फट् सोममहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् मंगलमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् बुधमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् गुरुमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् शुक्रमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् शनिमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् राहुमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् केतुमहाग्रह!..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितं—

सूर्यः शौर्यगुणं शशी कुशलतां, सन्मंगलं मंगलो । बुद्धिं तत्त्वबुधां बुधो वितरता-ज्जीवः शुभोज्जीवन्म
शुक्रः शुक्लतरं यशोतिविमलं, मंदोप्यमंदश्रियम् । राहुर्बाहुबलं महार्घमहितः, केतुर्महाकेतुताम् ॥ ६ ॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः ।

अथाग्निहोमविधानम्

(अग्निहोम की विधि कहते हैं)

उपजाति—

अभ्यर्च्य कुंडं परिधिं विधाय, परिस्तृतिं चानलमेघयुक्तम् ।

संस्थाप्य संधुक्ष्य कुशाग्रकीलैः, साक्षात्कृदेकां समिधं जुहोमि ॥ ७ ॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः । ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः
पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं ॥

इति मेखलातले कुंडानामर्चनम् ॥ (अष्टद्रव्य से कुंडों की पूजा करें, यहां हवन की पूर्व विधि करें)

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसंदर्भाय केवलदर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रेण दर्भपरिधिमुदुंबरसमित्परिधिं च
करोमि स्वाहा । इत्यनेन परिधिस्थापनम् (होमकुंड में समिधा स्थापित करें) ॥ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसंदर्भाय केवलदर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तरहोमकुंडानां मध्ये शुष्कदर्भपरिस्तरणं
करोमि स्वाहा । इति परिस्तरणस्थापनम् (सूखी डाभ स्थापित करें) ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये श्रीमंतं पवित्रतरगार्हपत्यमग्नीन्द्रं स्थापयामि स्वाहा । (अग्नि की स्थापना करें)

जैनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः, संशुष्कदर्भाग्रगताग्निकीलैः ।

कुंडस्थिते सेंधनशुद्धवन्हौ, संधुक्षणं सांप्रतमातनोमि ॥ ८ ॥

उसहायि जिणे पणमामि सया, अमलो विरजो वरकप्तरु ।

स अ कामदुहा मम रक्ख सया, पुरुविज्जुणुहि पुरुविज्जुणुहि ॥ ९ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं स्वाहा इत्यग्निं संधुक्षयेत् । (अग्नि को संधुक्षित करें)

१. अस्माकं या बिंदु के स्थान पर जिनके लिए हवन करना, उनका नाम षष्ठी विभक्ति लगाकर बोलें जैसे कि 'कमलचंद्रस्य' अथवा प्रतिष्ठा कराने वालों के लिए 'प्रतिष्ठाकारकस्य' ऐसा बोलें ।

ॐ वैश्वानरजातवेद, इहावलोकिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा ॥

अनेन गार्हपत्याग्नींद्रस्य संनिधीकरणार्थं एकसमिदाहुतिं विदध्यात् ॥ (गार्हपत्य अग्नि में एक समिधा की आहुति देवें)

(आक, ढाक, खैर, चिरचिटा, वट, उदुंबर, सफेद कीकर, दूब और डाभ इनकी समिधा से क्रम से पृथक्-पृथक् एक-एक ग्रहों के एक-एक कुंडों में आहुति देवें।)

अर्कः पलाशः खदिरो मयूरो-प्यश्वत्थफलू च शमी च दूर्वा।

कुशोप्यमीषां समिधो जुहोमि, ग्रहप्रसादार्थमिहाग्निंकुंडे ॥१०॥

अनुष्टुपछंदः— प्राक्कृते चतुरस्रेत्र, कुंडे संस्थापितेऽनले। घृतप्लुतार्कसमिधो, हुत्वा र्कं सुप्रसादये ॥११॥

ॐ ह्रीं हः फट् आदित्यमहाग्रह अस्माकं^१ शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से सूर्यग्रह कुंड में आक की समिधा घी में डुबोकर डालें)

आग्नेयकोणवत्पुतेऽग्नि-कुंडेश्वत्थदलोपमे। पलाशसमिधः साज्या, हुत्वा सोमं प्रसादये ॥१२॥

ॐ ह्रीं हः फट् सोममहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से सोमग्रह कुंड में घी में डुबोकर पलाश की समिधा डालें)

अपाच्यामर्धचंद्राभ-वन्हिकुंडे घृतप्लुताः। खादिरीः समिधो हुत्वा, तोषयामि कुजग्रहम् ॥१३॥

ॐ ह्रीं हः फट् कुजमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से मंगलग्रहकुंड में खैर की समिधा घी में डुबोकर डालें)

नैऋत्यां दिशि क्लृप्तेऽत्र, त्रिकोणे वन्हिकुंडके। साज्यापामार्गसमिधो, जुहुयां बुधतृप्तये ॥१४॥

ॐ ह्रीं हः फट् बुधमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से अपामार्ग—चिरचिटा की समिधा घी में डुबोकर डालें)

प्रतीच्यां वृत्तकुंडेऽग्नौ, हुत्वा गव्यघृताप्लुताः। बोधिद्रुमस्य समिधः, प्रीणयामि बृहस्पतिम् ॥१५॥

ॐ ह्रीं हः फट् बृहस्पतिमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से वट की समिधा घी में डुबोकर गुरुग्रह के कुंड में डालें)

वायव्यां पंचकोणाग्नि-कुंडे हुत्वा घृतांचिताः। उदुंबरस्य समिधो, भार्गवं सुप्रसादये ॥१६॥

ॐ ह्रीं हः फट् शुक्रमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से शुक्रग्रह के कुंड में उदुंबर-गूलर की समिधा घी में डुबोकर डालें)

उदग्गतेत्र षट्कोण-कुंडेऽग्नौ सर्पिराप्लुताः। शम्यास्तु समिधो हुत्वा, प्रीणयामि शनैश्चरम् ॥१७॥

ॐ ह्रीं हः फट् शनिमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से शनिग्रह कुंड में शमीवृक्ष की समिधा घी में डुबोकर डालें)

ऐशान्यां दिशि निर्वृत्ते, कुंडेऽस्मिन्नष्टकोणके। दूर्वा घृतप्लुता हुत्वा, राहुं संतर्पयाम्यहम् ॥१८॥

ॐ ह्रीं हः फट् राहुमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से राहुग्रह के कुंड में दूब की समिधा घी में डुबोकर आहुति देवें)

पाशदक्षिणभागस्थे, धनुराकारकुंडके। कुशानाज्यप्लुतान्हुत्वा, केतुमेतं धिनोम्यहम् ॥१९॥

ॐ ह्रीं हः फट् केतुमहाग्रह..... शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र से केतुग्रह कुंड में डाभ की समिधा घी में डुबोकर आहुति देवें)

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता यूयं प्रसन्नाः स्थ नः, सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं सर्वेऽपि दिक्पालकाः, पूर्णागां विधिपूर्तिपूर्णफलदां पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥ पूर्णाध्व्यम् ॥

(पूर्णाध्व्यं देवें)

गद्य—अथात्र मंडले स्नपनपीठे निवेश्य जिनचतुर्विंशतिं प्रागुक्तविधिना संस्नाप्याभ्यर्चयेत् ॥ छत्रचामरादिविभवशालिनीं भृंगारकलशहस्तजनमुक्ताम्बुधारापूतपुरोधरां अग्रतो नृत्यत्कलशाङ्गनां जिनार्चामनुयांतः शक्राः, महातूर्यस्कैः भव्यजनजयजयकोलाहलैः सह स्नानोदकचरुपुष्पाक्षतादिभिर्ब्रह्ममंत्रेण सर्वमंडपब्रह्मस्थाने, दिक्पालमंत्रेण दिक्षु दिक्पालबलिं दत्त्वा, तत्क्षेत्रे सर्वत्र स्नानोदकादिभिः सर्वदिशं पूरयंतो बलिमंत्रेण त्रिवारं बलिभ्रमणं कुर्यात् ॥ ब्रह्ममंत्रदिक्पालमंत्राः प्रागेवोक्ताः ॥

अयं तु बलिमंत्रः (ये बलिमंत्र—पूजाविधि के मंत्र हैं)

ॐ अर्हद्भ्यो नमः । सिद्धेभ्यो नमः । सूरिभ्यो नमः । पाठकेभ्यो नमः । सर्वसाधुभ्यो नमः । ॐ अतीतानाप्त-वर्तमानत्रिकालगोचरानंतद्रव्यपर्यायात्मकवस्तुपरिच्छेदक-सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राद्यनेकगुणगणाधारपंचपरमेष्ठिभ्योनमः ॥ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयतां प्रीयतां वृषभादिमहतिमहावीरवर्धमानपर्यंतपरमतीर्थकरदेवाः तत्समयपालिन्योऽप्रतिहतचक्र-चक्रेश्वरीप्रभृतिशासनदेवताः गोमुखप्रभृतिचतुर्विंशतियक्षदेवताः आदित्यचंद्रमंगलबुधवृहस्पतिशुक्रशनिराहुकुक्षभृत्यष्टा-शीतिग्रहाः, वासुकिशंखपालकर्कोटकपद्मकुलिशान्ततक्षकमहापद्मजयविजयनागाः देवनागयक्षगंधर्वब्रह्मराक्षसभूतव्यंत-प्रभृतिभूताश्च । सर्वेभ्येते जिनशासनवत्सलाः, ऋष्यार्यिकाश्चावकश्चाविकायष्ट्रयाजकराजमंत्रिपुरोहितसामंतरक्षक-प्रभृतिसमस्तलोकसमूहस्य शांतिवृद्धिपुष्टिपुष्टिक्षेमकल्याणस्वायुरारोग्यप्रदा भवन्तु । सर्वसौख्यप्रदाश्च संतु । देशे राष्ट्रे, पुरेषु च सर्वदैव चोरारिमारीतिदुर्भिक्षावग्रहविघ्नौघदुष्टग्रहभूतशाकिनीप्रभृत्यशेषानि प्रलयं यांतु । राजा विजयी भवतु । प्रजासौख्यं भवतु । राजप्रभृतिसमस्तलोकाः सततं जिनधर्मवत्सलाः पूजादानव्रतशील-महामहोत्सवप्रभृतिषु उद्यता भवन्तु । चिरकालं नंदन्तु । यत्र स्थिता भव्यप्राणिनः संसारसागरं लीलयोत्तीर्यानुपमं सिद्धसौख्यमनंतकालमनुभवन्तु । इतश्चाशेषप्राणिगणशरणभूतं जिनशासनं नंदत्विति स्वाहा ॥

इत्यनेन बलिमंत्रेण बलिं त्रिवारं विहारयेत् । इति द्वितीयदिने यज्ञशालाप्रवेशविधानं ॥

(इन मंत्रों को बोलते हुये तीन बार बलि को घुमावें अर्थात् यज्ञभाग—पूजा द्रव्य लेकर भगवान को भी लेकर प्रदक्षिणा देवें, इस प्रकार दूसरे दिन यज्ञशाला प्रवेश विधि हुई ।)

तृतीय दिन की विधि—मूलवेदिका व ईशानवेदिका निर्माण विधि

अनुष्टुप्छंदः—

अंकुरार्पणतश्चान्हि, तृतीये मूलवेदिकां । निर्वर्तयेत्तद्देशान-वेदिकामपि तद्यथा ॥ २० ॥
लघुशान्तिकमाराध्य, यंत्रशांतिकमंडपे । वेदीं निर्वर्त्य संकल्प-पूर्वकं तदनंतरम् ॥ २१ ॥
सर्वौषधिपंचरत्न-मिश्रतीर्थान्बुपूरितान् । पंचाममृष्मयान्कुंभान्धिदूर्वाक्षतांचितान् ॥ २२ ॥
वेदिकाग्रे विनिक्षिप्य, समभ्यर्च्याधिवासयेत् । अनादिसिद्धमंत्रेण, पृथगेकैकवारतः ॥ २३ ॥
वेद्यां मध्यमगते च, कोणगर्भचतुष्टये । निक्षिपेत्क्रमशस्तत्र, श्रीखंडमपि कुंकुमम् ॥ २४ ॥
जीवंतौ पितरौ यासां, श्वसुरौ ताभिरादरात् । पतिपुत्रवतीभिस्तान्कुंभानिन्द्रो निवेशयेत् ॥ २५ ॥
मध्यगतेऽग्निकोणादिचतुष्टयमिति क्रमात् । ताभिस्तान्स्थापयेत्कुंभान्शंखनादे समुद्यति ॥ २६ ॥

पदार्थ—अंकुरारोपण के तीसरे दिन मूलवेदिका और ईशानवेदिका का निर्माण करावें । उसकी विधि यह है—

यंत्रशांतिमंडप में लघुशांतिक—लघुशांतिविधान की आराधना करके वेदी बनवावें । उस वेदी के सामने कच्ची मिट्टी के पांच कुंभ रखें, उनमें सर्वौषधिचूर्ण मिश्रित तीर्थोदक डालें, प्रत्येक में एक-एक रत्न डालें, कलशों के बाहर दही, दूध, अक्षत लगावें । आगे लिखे अनादिसिद्ध मंत्रों से कलशों की पूजा करके वेदी बनाते समय मध्य के गड्ढे में एक कलश स्थापित करावें और चारों कोणों के गड्ढों में एक-एक कलश रखावें । जिनके माता-पिता, सास, ससुर जीवित हैं ऐसी पति और पुत्र वाली सौभाग्यवती स्त्रियों से प्रतिष्ठाचार्य इन कच्चे कुंभों की स्थापना करावें । ॥ २० से २५ ॥

पहले मध्य के गर्त में पुनः आग्नेय कोण, नैऋत्य, वायव्य और ईशान कोण में रखावें । उस समय शंखनाद करावें और बाजे बजवावें । इन कलशों के ऊपर उन्हीं महिलाओं से एक-एक कच्ची ईंटें रखवावें, इन ईंटों को भी अनादिमंत्रसे मंत्रित करके रखावें । ॥ २६ ॥

तेषामुपरि विन्यस्येत्, पंचाप्यामेष्टिकाः पृथक् । अनादिमंत्रैरध्यास्य, ताभिरेव निवेशयेत् ॥ २७ ॥

तथा निर्वर्त्य चैशान-वेदीं सन्मान्य शिल्पिनः । ब्रह्मदिक्पालबल्यन्ते, त्रिवारं कारयेद्बलिम् ॥ २८ ॥

इसी प्रकार से ईशान वेदी निर्माण में भी विधि करके वेदी बनवाकर शिल्पी-कारीगरों को सम्मानित करें। पुनः ब्रह्मबलि, दिक्पाल बलि अंत में पूर्वकथित बलिमंत्रों से तीन बार बलिभ्रमण करावें ॥ २७ से २८ ॥

अस्य वेदीनिर्वर्तनविधेः प्रयोगः ॥ अब वेदी बनवाने की विधि बताते हैं—

लघुशांतियंत्राराधनं । तदुपरि जिनार्चाभिषेकं च पूर्ववद्विदध्यात् । (लघु शांतियंत्राराधना करके जिनप्रतिमा का अभिषेक करें।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सब्बसाहूणं ॥

चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलम् । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आउसा शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

अनेन अनादिसिद्धमंत्रेण पंचाममृमयान्कुंभान्पृथगेकवारं अभिमंत्रयेत् (इस अनादिसिद्धमंत्र से पांच कच्चे कलशों को मंत्रित करें) ॥

ॐ हां नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा । ॐ हीं नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ हूं नमः सूरिभ्यः स्वाहा । ॐ हौं नमः पाठकेभ्यः स्वाहा । ॐ हः नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा । पंचेष्टकाभिर्जिनादिमंत्रैरधिवासयेत् (इन पांच मंत्रों से पांच कच्ची ईंटें मंत्रित करें) ॥

ततः शिल्प्यादीन्प्रतोष्य पूर्ववत् त्रिवारं जिनधाम परीत्य वेद्या ब्रह्मप्रदेशे ब्रह्मबलिं, दिक्षु दिक्पालबलिं पूर्वोक्ततन्मंत्रैः कृत्वा तत्क्षेत्रे सर्वत्र पूर्वोक्तबलिमंत्रेणैव बलिं त्रिवारं विहारयेत् । इति वेदीनिर्वर्तनविधानम् ।

(इसके बाद कारीगरों को संतुष्ट करके तीन बार जिनमंदिर की प्रदक्षिणा देकर वेदी के ब्रह्मस्थान में ब्रह्मबलि, आठों दिशाओं में दिक्पालबलि को पूर्वकथित मंत्रों से करके उस क्षेत्र में सर्वत्र पूर्वकथित बलिमंत्र से ही बलि को तीन बार विहार करावें) ।

मोहध्वांत विदारणं विशदविश्वोद्भासिदीप्तिश्रियम् । सन्मार्ग प्रतिभासकं विबुधसंदोहामृतापादकम् ॥

श्रीपादं जिनचंद्रशांत शरणंसद्भक्तिमाने मिते । भूयस्तापहरस्यदेव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

(पंचांग नमस्कार करें) ॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचन्द्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलक-

नाम्नि मण्डपविधानवेदीनिर्वर्तनविधानं

नाम चतुर्थः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप ग्रंथ में मंडप विधान एवं वेदी बनाने की विधि को कहने वाला

यह चतुर्थ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।



अथ पंचमः परिच्छेदः

अथ ध्वजारोहणविधिः ।

अथातो ध्वजारोहणविधानम् ॥ (अब ध्वजारोहण विधि कहते हैं -)

अनुष्टुपछंदः— अथांकुराच्चतुर्थेऽह्नि, ध्वजारोहणसिद्धये । विदध्याद्विधिवच्छक्रो, बृहच्छान्तिकसंविधिम् ॥ १ ॥

ध्वजप्रतिष्ठां निष्ठाप्य, भूत्या पुरि विहार्य च । ध्वजमारोपयेद्दंडे, सुलग्ने विधिवत्सुधीः ॥ २ ॥

बृहच्छान्तिविधेः सर्वं, लक्षणं ध्वजदंडयोः । तत्प्रतिष्ठाक्रमश्चूर्णौ, प्रयोगे वर्णयिष्यते ॥ ३ ॥

प्रायशोऽत्र मया तत्तल्लक्षणं विध्यनुक्रमः । प्रयोगे वर्णयिष्येते, काले तत्स्मृतये स्फुटम् ॥ ४ ॥

(अब अंकुरारोपण विधि करने के बाद चौथे दिन ध्वजारोहण विधि करने के लिए इन्द्र—प्रतिष्ठाचार्य विधिवत् बृहत् शांतिकविधि करे। ध्वज की प्रतिष्ठा करके वैभव के साथ उसकी नगर में शोभायात्रा निकालें, पुनः अच्छे लग्न में विधिपूर्वक वह विद्वान् ध्वजदण्ड पर ध्वजा को चढ़ावें। बृहत् शांतिविधि का लक्षण, ध्वज और दण्ड की प्रतिष्ठा का क्रम चूर्णिसूत्र में कथित प्रयेया विधि में वर्णित करेंगे। प्रायः यहां उन-उनके लक्षण और उनके करने की विधि का क्रम प्रयोग के समय उसकी स्पष्ट स्मृति के लिए उसी-उसी काल मेकहेंगे ॥ १-४॥)

कन्याभिः कारयेद्देवी-लेपनं गव्यगोमयैः । क्षीरद्रुमत्वक्कषाय-कलितैर्भूम्यपातिभिः ॥ ५ ॥

यद्यंकुराः समुत्पन्नाः, सुसम्यक् तैः समर्चयेत् । तस्मिन्नेव दिने भूत्या, नित्यार्चाविध्यनंतरम् ॥ ६ ॥

तद्वात्रौ ध्वजनिष्ठायां, श्रीबलेः समनंतरम् । वक्ष्यमाणेन विधिना, भेरीताडनसंविधिम् ॥ ७ ॥

(क्षीरवृक्ष आदि की छाल का काढ़ा, भूमि में न गिरे ऐसा गोबर या पीली मिट्टी आदि द्रव्य से कुमारिकाओं द्वारा वेदी का लेपन कारवें। जो अंकुर उत्पन्न हुये हैं, उसी दिन नित्यपूजा के अनंतर उन अंकुरों से अर्चा करें। अनंतर उसी रात्रि में ध्वजारोहण के अनंतर “श्रीबलि” करें, पुनः आगे कही विधि के अनुसार भेरीताड़न विधि करें ॥ ५-७॥

अथ बृहच्छान्तिकयंत्राराधनविधेः प्रयोगः

(अब बृहत्शांतिकयंत्राराधन विधि का प्रयोग दिखाते हैं) —

बसंततिलकाछंदः—

स्नानादिसिद्धस्तवनादिपूर्वं, पूजामुखं तद्विधिना विधाय ।

निःशेषविघ्नप्रतिघातनाय, श्रीशांतिकाराधनमारभेऽहम् ॥ ८ ॥

॥ प्रस्तावना पुष्पांजलिः ॥

(अभिषेक-सिद्धस्तवनादिपूर्वक विधिवत् पूजामुखविधि करके सर्वविघ्नो को दूर करने के लिए हम श्रीशांतिकाराधना करते हैं।)

गद्य—अथ वक्ष्यमाणविधिना क्षेत्रपालवास्तुदेवबलिं वायुमेधाग्निदेवानामभ्यर्चनपूर्वकं तैर्भूमिशोधनं नागतर्पणं दर्भन्यासं भूम्यर्चनं च क्रमेण विदध्यात् । वेद्यां मंडलमालिखार्चितेत्यादिना चूर्णस्थापनं नयेत् ॥

(अब पृष्ठ ६४ से क्षेत्रपाल अर्चा और वास्तुदेव अर्चा करें, अनंतर वायुकुमार, मेघकुमार, अग्निकुमार की अर्चा पूर्वक भूमिशोधन करें, पुनः नागतर्पण, दर्भन्यास और भूमि अर्चन विधि करें। अनंतर “वेद्यां मंडलमालिखा..... ” इत्यादि श्लोक आगे ११८ पृष्ठ से बोलकर चूर्ण स्थापन करें।)

गद्य—अथातः समुचितोद्देशपरिकल्पिते चतुःस्तंभसंभृतचतुरस्रसमुचितोत्सेधायामविस्तारविराजिते चंद्रोपकमुक्तालंबूषादि-विधिमंडनाभिर्मंडिते शांतिकयागमंडलाराधनमंडपे । तिर्यगूर्ध्वन्यासवज्राग्रविंशतिसूत्रपरिकल्पितैकाशीतिपदेषुसाष्टदलपद्मानि तावति विरचय्य मध्येपद्मकर्णिकायां पंचगुरुमंगलोत्तमशरणधर्मान् पूर्ववत् समवस्थाय, अष्टषोडशचतुर्विंशतिद्वित्रिंशत्पदेषुजायादिदेवीः षोडशविद्यादेवीः, चतुर्विंशतियक्षीद्वित्रिंशदिन्द्रान्दिक्षु दिक्पालकान्, वज्राग्रेषु चतुर्विंशतियक्षान्सोमदिक्पालकोपरि नवग्रहान्, ग्रहमंडलमध्ये केतुग्रहं च । सर्वानिमान्मंत्ररूपान्निधाय सर्वविघ्नानामनुत्पत्यर्थं उपशमार्थं च सम्यगिदानीमारारथयामहे ॥

(अर्थ—समुचित मंडप में यागमंडल बनावें, इसमें—इस यंत्र में ८१ कोष्टक होते हैं, प्रथम आठ पांखुड़ियों का कमल बनावें। सर्वकमल कोष्टक की संख्या इतनी हैं—मध्यभाग में स्थित कमल की कर्णिका में पंचगुरु, मंगल, लोकोत्तम, शरण और धर्म इनकी

पूर्ववत् स्थापना करें। इसके चारों ओर आठ, सोलह, चौबीस और बत्तीस स्थानीय कमल समूह में क्रम से आठ्यादि देवी, सोलह विद्यादेवी, चौबीस यक्षिणी, बत्तीस इन्द्र और दिशाओं में दिक्पालों की स्थापना करें। वज्र के अग्रभाग में चौबीस यक्ष और सोम दिक्पाल के ऊपर नवग्रह और ग्रहमंडल के मध्य केतुग्रह, इन सबको मंत्ररूप से स्थापित करके सर्वविघ्न दूर करने के लिए शांतिक यंत्र की आराधना करें। इस यागमंडल के यंत्र को परिशिष्ट में देखें।)

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः । (पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

गद्य - शब्दब्रह्मावर्जनं, परब्रह्माधिवासनं, पंचपरमेष्ठिपूजनं, मंगललोकोत्तमशरणार्घ्यप्रदानं, धर्मपूजां च अनादिसिद्धस्मै पुष्पजपं विदध्यात् ॥

(अनन्तर शब्द ब्रह्म पूजा, परब्रह्म की अधिवासना, पंचपरमेष्ठी पूजा, मंगल, लोकोत्तम और शरण को अर्घ्य देना, धर्मपूजा और अनादिसिद्धमंत्र से पुष्पों द्वारा जाप करें।)

आर्याछंदः—पंचपरमेष्ठिनस्ते, मंगललोकोत्तमाश्च शरणानि। धर्मोपि कर्णिकायां, समर्चिताः संतु नः सुखदाः॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठ्यादिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । पूर्णार्घ्यः॥

गद्य—अथ वक्ष्यमाणगद्यपद्यमंत्रवाक्यैर्जयादिदेवीनां, षोडशविद्यादेवीनां, चतुर्विंशतियक्षिणां, द्वात्रिंशदिंद्राणां, दशदिक्पालकानां, चतुर्विंशतियक्षाणां, नवग्रहाणां, पूजाविधिं नवग्रहहोमं चेशानदिश्यनावृतार्चनं च क्रमेण विदध्यात् ॥ अथात्र मंडले स्नपनपीठे निवेश्य जिनचतुर्विंशतिं प्रागुक्तस्नपनविधिना संस्नाप्याभ्यर्चयेत् ॥

(आगे कहे जाने वाले गद्य—पद्य मंत्र वाक्यों से जयादिदेवी, सोलह विद्यादेवी, चौबीस यक्षी, बत्तीस इन्द्र, दश दिक्पाल, चौबीस यक्ष, नवग्रह इनकी पूजा विधि करके नवग्रह होम करें पुनः ईशान दिशा में अनावृतयक्ष की अर्चना करें।

पुनः इस मंडल पर स्नपनपीठ रखकर जिनचतुर्विंशति प्रतिमा का स्नपन विधि से अभिषेक करके पूजा करें।)

इति बृहच्छान्तिकविधेः प्रयोगः ॥



अथ ध्वजारोहणविधिः

गद्य—ॐ सर्वद्रव्यपर्यायविषयवैशद्यपराकाष्ठाधिष्ठितकेवलज्ञाननिष्ठपरमेष्ठिप्रतिष्ठादिवसात् षष्ठेऽहनि बृहच्छान्तिकयागमंडलाराधनां समासतः समापूर्य पंचदशाद्यंतवितस्तिरूपषड्विधदैर्घ्यान्यतमदैर्घ्यस्य, एकोनविंशत्यंगुलादिचतुर्विंशत्यंगुलांतषड्विधव्यासान्यतमव्यासस्य, पादोत्तद्व्याससमदैर्घ्यसरज्जुपाशर्वमूलाग्र पौष्टिकक्रमहानिरूपकफुल्लिकालंकृतशिखोपलक्षितस्य, शिखासमाभ्यंतरूं माग्रपौष्टिकक्रमहानिरूपपादद्वयविराजितस्य, अष्टत्रयोदशाद्यंतवयव्यासकदलिच्छेदकलितशिखापादवर्जितपार्श्वस्य, शिखापादविस्तारतिर्यंगूढेधिकाभूषितस्य, शिखामूलैषिकामध्यघटितरज्जुबंधस्य, हट्टाटकघटिकाफुल्लिकासमुल्लसितस्य सुधौतसुश्लिष्टश्वेतनूतनवासःपरिकल्पितस्यास्य ध्वजस्य, ध्वजमस्तकाधः प्रथमे पदे छत्रत्रयं, द्वितीये पदे जिननाथपद्मयानप्रदर्शकं पद्मवाहनं, तृतीये पूर्णकलशं, तत्पार्श्वयोः स्वस्तिकं, स्वस्तिकचूलिकायाः पार्श्वद्वये दीपदंडद्वयमुज्ज्वलज्वालकं, चतुर्थे श्वेतातपत्रं, तदुभयपार्श्वयोः कुंदेदुविशदचारुचमरद्वयं, पंचमे पदे छत्रं, तस्याधःप्रदेशे तत्र विलिखितध्वजे वा श्वेतगजपृष्ठाधिष्ठितमिंद्रनीलप्रभमथः करद्वयरचितांजलिं, ऊर्ध्वकरद्वयधृतधर्मचक्रं, जिनबिंबेच्छ-मूर्धानं एकछत्रसमन्वितं अनेकालंकारालंकृतसर्वाण्यहयक्ष्मं, तत्पार्श्वयोर्दीपदंडचामरस्वस्तिकानि यथाशोभं शिल्पिन विलिख्य तदेतन्महाध्वजं तद्यागमंडलस्याग्रतो वेदिकातले पूर्वस्यां दिशि समवस्थाप्य, हस्तद्वयोदयहस्तविस्तारप्रमितान् शिखापादकदलिच्छेदफुल्लिकाशोभितान्, दिक्पालकेतून् तथा विधानेन मंगलार्घ्यकरदिक्कन्यकाकेतून्, एकहस्तोदयहस्तार्धव्यासशिखाद्यलंकृतमालामृगेन्द्राद्यंकितपंचवर्ण केतून् तद्ध्वजपार्श्वयोरवस्थाप्य, यक्षादिसर्वध्वजदेवानां आवाहनस्थापनसंनिधापनानि समंत्रं विधाय। तन्महाध्वजाग्रतः सर्वौषधिमिश्र-तीर्थोदकपूर्णांमृतमंत्राभिर्मंत्रितनवकलशान् गंधाक्षतपुष्पफलादीन् मंगलोपकरणानि निधाय। दर्पणप्रतिबिंबित्वां सर्वाण्यहयक्षादिध्वजदेवतानां तज्जलेन संप्रोक्षणमनुलेपनं विधाय। मुखवस्त्रं दत्वा नयनोन्मीलनं सुलग्ने विरचय्याभ्यर्च्य विविधालंकारालंकृतानामेषां सर्वध्वजानां पुरि महोत्सवेन विहारमिदानीं विधातुमिमे वयमुत्सहामहे॥

श्री जिनेन्द्रदेव के केवलज्ञान कल्याणक के दिवस से छठे दिवस पूर्व “बृहत्श्रांतिकयागमंडलाराधन विधि” संक्षेपसे करके ध्वजारोहण करें। यह ध्वज कैसा हो ? ध्वज का वस्त्र कितना लंबा और कितना चौड़ा हो ? इस विषय का वर्णन ध्वज के चित्र में जो दिया है उसी में से समझना चाहिए। इस ध्वजा के दोनों तरफ लघुध्वजायें २८ होनी चाहिए। यह महाध्वज यागमंडल के सामने और वेदी के नीचे होना चाहिए। महाध्वज के वस्त्र पर सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति लिखना चाहिए। इस ध्वज के दोनों तरफ दिक्पाल और दिक्कन्यकाओं के लघुध्वज और माला, मृगेन्द्र आदि चिन्ह के ध्वज रहते हैं।

इन सर्वध्वज देवताओं का आह्वानन-स्थापन-सन्निधीकरण मंत्र विधि से करें। पुनः ध्वजा के सन्मुख नव कलश स्थापित करें। उन कलशों में सर्वोषधि डालें, अमृतमंत्र से अभिमंत्रित जलयात्रा विधि से लाये गये तीर्थोदक—तीर्थ के जल को भरें। गंध, अक्षत, पुष्प, फल और मंगलद्रव्य, उपकरण आदि पास में रखकर महाध्वज के सामने बड़ा सा दर्पण स्थापित करें। उसमें सभी ध्वजाओं का प्रतिबिंब पड़ना चाहिए। उस दर्पण में बिंबित सर्वाण्हयक्ष आदि देवताओं का कलशों के जल से अभिषेक व अनुलेपन करें। तदनंतर मुखवस्त्र लगाकर (पर्दा डालकर) शुभलग्न में नयनोन्मीलन विधि करें और पूजा करें। अनंतर इस महाध्वज को सजाकर शहर में बड़े वैभव के साथ जुलूस निकालें।

अब ध्वजारोहण विधि कहते हैं ॥

बसंततिलकाछंद— श्रीमज्जिनस्य जगदीश्वरताध्वजस्य, मीनध्वजादिरिपुजालजयध्वजस्य।

तन्यासदर्शनजनागमनध्वजस्य, चारोपणं विधिवदाविदधे ध्वजस्य ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः (पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

श्रीमद्विमानाभिमुखं ध्वजस्थं । यक्षं प्रसूनांजलिभिः समंत्रम् ।

आहूय संस्थाप्य च संनिधाप्य । प्रसादये दिक्पतिदिक्कुमारीः ॥२॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः! आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ॥

नवकलश स्थापना विधि

(“अभिनव” आदि श्लोक बोलकर ८ कलश स्थापित करें। इन कलशों के पास मंगल-द्रव्य आदि स्थापित करें पुनः आगे लिखित ‘ॐ हां ह्रीं हूं’ आदि मंत्र पढ़ते हुए उन कलशों में जल डालें। ‘ॐ ‘ह्रीं स्वस्तये’ मंत्र बोलकर कलशों को स्थापित करने हेतु उन पर पुष्पांजलि छोड़ें। अनंतर स्वच्छैस्तीर्थ इत्यादि श्लोक बोलकर मंत्र बोलकर कलशों को अर्घ्य चढ़ावें।)

अभिनवनवकुंभान्पुण्यतीर्थान्बुपूर्णान् । विधिवदिह निवेश्या-भ्यर्च्य यक्षध्वजाग्रे ।

कलशानिकटदेशे, सर्वतः स्थापयामि । प्रकृतयजनयोग्यं, मंगलद्रव्यजालम् ॥३॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्मतिगिच्छकेसरिपुंडरीकमहापुंडरीकगंगासिन्धुरोहिद्-रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णकूलारूपकूलारक्तारक्तोदाक्षीरांभोधिजलं स्वर्णघटप्रक्षिप्तसर्व-गंधपुष्पाढ्यं आमोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं वं मं हं सं तं पं स्वाहा । जलाभिमंत्रणम् (कलशों में जल डालें) ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा । (कलशों को स्थापित करें)

शार्दूलविक्रीडितं— स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, कुंभान्समभ्यर्चये ।

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा (अर्घ्य चढ़ावें) ॥

अथ गंधाक्षतपुष्पफलादिमंगलोपकरणस्थापनम् ॥

सर्वाण्हयक्ष का अभिषेक

(जो नवकलश जल से भरे स्थापित किये थे, उनसे दर्पण में प्रतिबिंबित सर्वाण्हयक्ष का अभिषेक करें।)

वसंततिलकाछंदः—

तत्कुंभवार्षिर्वरमंत्रपूतैः सत्समुखीनप्रतिबिंबितानाम् ।

यक्षादिसर्वध्वजदेवतानां, संप्रोक्षणं सांप्रतमातनोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहित सर्वध्वजदेवते इदं स्नानं गृहाण गृहाण ॥

ॐ सर्वराष्ट्रक्षुद्रोपद्रवं हर हर ॐ स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा ॥ संप्रोक्षणम् ॥

सर्वाण्हयक्ष का चंदनानुलेपन

(दर्पण के प्रतिबिम्ब को निम्नलिखित 'अभिमुख' आदि श्लोक व मंत्र पढ़कर चंदन लेपन करें।)

मालिनीछंदः—

अभिमुखनिहितश्रीदर्पणे यक्षनाथं, प्रतिफलिततनुं श्रीचंदनेनानुलिप्य ।

ध्वजविलिखितकाष्ठानाथदिवक्कन्यकानां, मुकुरमुपगतानां तेन तन्वेऽनुलेपम् ॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं नमः अरिहंताणं सर्वाण्हयक्षाय धर्मचक्रविराजिताय चतुर्भुजाय सुवर्णवर्णाय गजारूढाय सर्वजननयनाल्हादकाय सुगंधानुलेपनं करोमि स्वाहा ॥ सुगंधानुलेपनम् ॥ (गंध लेपन करें)

मुखवस्त्रदान विधि

(‘कांडादि’ श्लोक बोलकर मंत्र पढ़कर ध्वजा के सामने श्वेतवस्त्र का पर्दा लगावें।)

अनुष्टुपछंदः—कांडादिमंडितादभ्र-श्रीकांडपटमुज्ज्वलं । यक्षस्य संप्रयच्छामि, सर्वधान्यादिसंभृतम् ॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं नमः सर्वाण्हयक्षस्य मुखवस्त्रमहं प्रक्षिपामि स्वाहा । मुखवस्त्रप्रदानम् । (सामने पर्दा डालें)

नेत्रोन्मीलन विधि

(‘ध्वजविरचित’ आदि श्लोक पढ़कर व मंत्र पढ़ते हुए नेत्रोन्मीलन विधि करें। एक सुवर्ण कटोरी में दूध, शक्कर और कपूर मिलाकर रखें, सोने की सलाई से उसे लेकर सर्वाण्हयक्ष के नेत्रों में लगावें, यही नेत्रोन्मीलन विधि है।)

मालिनीछंदः—

ध्वजविरचितमूर्तेर्यक्षनाथस्य सद्यो, हिमसितयुतदुग्धैः स्वर्णपात्रोपयुक्तैः ।

कनकमयशलाकाग्राहृतैर्वल्गुलने, विधियुतमिह नेत्रोन्मीलनं संविदध्मः ॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं नमः णमो अरिहंताणं सर्वाण्हयक्षाय श्यामवर्णाय यथोक्तलक्षणलक्षिताय सर्वजननयनाल्हादकराय नयनोन्मीलनं करोमि स्वाहा । नयनोन्मीलनविधानम् ॥ (नयनोन्मीलन विधि करें)

सर्वाण्ह यक्ष का अर्घ्य

(‘उत्तुंगं’ आदि पढ़कर अर्घ्य चढ़ावें)

शार्दूलविक्रीडितछंदः—उत्तुंगं शरदभ्रशुभ्रमुचितं, सद्धिभ्रमं बिभ्रतं । यो दिव्यद्विपमारुरोह शिरसि, श्रीधर्मचक्रं दधौ ।

हस्ताभ्यामसितद्युतिं करयुगे-नान्येन बद्धांजलिं । तं जैनाध्वररक्षणक्षममिमं, सर्वाण्हयक्षं यजे ॥८॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षाय इदमर्घ्यमित्यादि ॥ (अर्घ्य चढ़ावे)

इंद्रादिदिक्पाल का अर्घ्य

श्रीमत्सर्वजनीनजैनसवन-प्रत्यूहविध्वंसन-प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहित-प्रख्यातिपूजांचितान् ॥

स्वस्वातुच्छपरिच्छदान्दशदशा-मन्याप्रधृष्ट्यामितान् । दिक्पालाञ्जगदेकपालकजिनाधीशाध्वरे व्यह्वये ॥९॥

ॐ ह्रीं इंद्रादिदशदिक्पालकेभ्यः इदमर्घ्यमित्यादि ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

अष्टदिवक्कन्यका अर्घ्य

मेरोर्दक्षिणतो महाकुलकुभत्पद्माकरांभोरुह ॥ प्रासादस्थितिकाः ।चीपतिवधूश्री ीधतीरंबिकाः ।
तस्यैवोत्तरतस्तथोत्तरसुरेङ्गह्यां च कीर्तिं धियम्-लक्ष्मीं शातिकरीं च शातिमिह सत्पुष्टिं च पुष्टिं यजे ॥१०॥

ॐ ह्रीं अष्टदिवक्कन्यकाभ्यः इदमर्घ्यमित्यादि ॥ (अर्घ्य चढ़ावें) ततः पुरि महोत्सवेन विहारणम् ।

महाध्वज का मंगल जुलूस

(पुनः महाध्वज को शहर में घुमावें । जुलूस से शहर में घुमाकर जहां ध्वज स्थापना करना है वहां लाकर ध्वज दण्ड का पंचामृत अभिषेक आगे लिखित विधि से करना है ।)

गद्य ॥ अथ सर्वध्वजोपलक्षितमहाध्वजं प्रतिष्ठाप्य विधिनाभ्यर्च्य विविधशोभायुक्तासु पुरवीथिषु विहार्य यागमंडलाग्रते निवेश्य, क्षुद्रधामांतनासांतसिंहस्थलान्तान्यतमसमानदैर्घ्यस्य, चंदनादिसारवितपिपूगवंशान्यतमार्जव संयुक्तदारुपरिकल्पितस्य, ऋदशाद्यंतांगुलान्यतम-समानमूलव्यासस्य, पादोनमूलव्याससमानाग्रव्यासविशिष्ट ध्वजदंडस्य, तदग्रे द्वित्रिचतुरंगुलघनान्निशार्कतिथिमात्रायामान् षडादिद्वा-दशांतांगुलमूलव्यासान्, द्विरंध्रान्वितान्, पयोद्रुमपरिकल्पितकोकिलादंडान्संयोज्य, तदग्रग्रेषु ध्वजदंडचक्रगुणान्यतमदैर्घ्यां, चतुःपंचषडंगुलानां वेणुयष्टिं, ध्वजदंडाद्धृतिकृत्यंगुलोच्छ्रायां यथातथैव दृढतरं संयोज्य । वेणुयष्ट्यग्रे अष्टांगुलस्याधः सुलोहजं सूत्राधारं विमानाभिमुखं दंडमध्यगतच्छिद्रं यथातथैव संयोज्य, तदेतद्भ्वजदंडमग्रतो मूलातीर्थोदकैः प्रक्षाल्य अशोकाश्वत्थपत्राद्व्यदर्भमलयाभिवेष्ट्य । वेणुयष्ट्यग्रे कुशकूर्चान्संबद्ध्य । ध्वजदंडचूलिकां ज्ञानशक्तिरूपिणीं संकल्प्य अनादिसिद्धमंत्रेण पंचामृतैरभिषिच्य बलिपीठाद्वहिसद्व्यासान्तरालके गर्ते दधिदूर्वांन्वितशाल्यादिधान्यं निक्षिप्य भूम्यर्चनविधिनार्चिते सहिरण्यपायसं निक्षिप्य, तन्महाध्वजदंडं विमानाभिमुखं दृढतरं संस्थाप्य । तन्मूले पादोनपीठविस्तारं विस्तारसदृशोच्छ्रायां उत्सेधसप्तभागोच्छ्रयतत्तूर्यांशत्रयप्रवेशान्वितकमलाग्रां । सार्धसप्तभद्रयोत्सेधपूर्ववत्प्रदेशान्वितांत्यमेखलां वेदीं परिकल्प्य । तत्परितो दशदिवक्कन्यकादिक्षुद्रपीठिकादिक्षुद्रपीठिकां निर्वर्त्य, द्वारद्वयोपेतां द्वारोत्तंभिततोरपां दर्भमालावृतां दारुभिवृतिं निर्माप्य । महाध्वजदंडत्रिपंचसप्तभागान्यतमदैर्घ्यक्षुद्रध्वजवंशदंडानामष्टाविंशतिं स्वस्वपीठेषु समर्च्य । यथोचितं परितोवस्थाप्य । महाध्वजमनादिसिद्धमंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं अधिवास्य । तन्मंत्रेण पंचामृतैरभिषिच्यभ्यर्च्य तदग्रे सर्वलोकशांत्यर्क्षिभेष्टप्रार्थनामालामंत्रमुद्धोष्य । शंखादिवाद्यघोषेषु दिगंतरपूरितेषु शुभलघने कार्पासतंतुनिर्वृत्तत्रिवर्तिरूपरज्जुयंत्रेण यंत्रविदा महाध्वजं कोकिलाग्रस्थवेणुदंडे समारोप्य । दिक्पालध्वजादिक्षुद्रध्वजान्वंशदंडेषु समारोप्य तन्महाध्वजं त्रिजगत्त्रिकालविषयं केवलाख्यपरंज्योतिःस्वरूपं ध्यात्वा मह्यर्घ्येण बहुमानयामहे ॥

ध्वजदंडशुद्धि एवं दर्भमाला वेष्टन

(आगे का श्लोक व मंत्र बोलकर जल से ध्वजदंड की शुद्धि करके उसमें दर्भ की माला पहनावें ।)

समंततः श्रीध्वजदंडमग्रं, प्रक्षाल्य सर्वौषधिमिश्रवार्भिः ।

अश्वत्थकंकेलिदलौघभाजा, दर्भस्रजैर्न परिवेष्टयामि ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं नमोऽर्हते श्रीमत्पवित्रजलेन ध्वजदंडशुद्धिं करोमि स्वाहा ॥ संप्रोक्षणं ॥ (ध्वजदंड पर जल डालें)

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा । दर्भमालावेष्टनम् ॥ (डाभ की माला पहनावें)

दर्भतुरास्थापनविधि

(आगे का श्लोक पढ़कर व मंत्र बोलकर ध्वजदंड के ऊपर जो तीन कोकिला हैं उनके अग्रभाग में दर्भ की तुरा बांधें ।)

अनुष्टुपछंदः—ध्वजदंडाग्रभागस्थ, कोकिलात्रयवर्तिनः । वेणुदंडस्य तस्याग्रे, बध्नामि कुशकूर्चिकां ॥१२॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः । वेणुयष्ट्यग्रे कुशकूर्चस्थापनम् ॥ (तुरा—लंबी कूची बांधें)

ध्वजदंड का पंचामृत अभिषेक

(आगे का श्लोक पढ़कर अनादिसिद्धमंत्र द्वारा ध्वजदंड का पंचामृत अभिषेक करें । पुनः 'नीरजसे नमः' आदि से अष्टद्रव्य चढ़ाकर "स्वच्छैस्तीर्थ....." आदि बोलकर अर्घ्य चढ़ावें ।)

ज्ञानशक्तिमयीं मत्वा, ध्वजदंडाग्रचूलिकां । अनादिसिद्धमंत्रेण, पंचभिः स्नापयेऽमृतैः ॥ १३ ॥

ॐ णमो अरिहंताणं । चत्तारि मंगलं—अरिहंतं मंगलम् । सिद्धं मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंतं लोगुत्तमा । सिद्धं लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंतं सरणं पव्वज्जामि । सिद्धं सरणं पव्वज्जामि । साहुसरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि । ॐ हौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

अनादिसिद्धमंत्रः । अनेन ध्वजदंडस्य पंचामृतस्नपनम् ॥ (इस मंत्र से पंचामृत अभिषेक करें)

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । (अष्टद्रव्य चढ़ावें)
स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।
हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः दण्डं ध्वजस्यार्चये । (अर्घ्य चढ़ावे)

गर्तभूमि अर्चन

(आगे का श्लोक बोलकर जहां ध्वजदण्ड स्थिर करना है, उस गड्ढे में दूब, दही और धान्य स्थापित करके अष्टद्रव्य से पूजा करके हिरण्य-सुवर्णयुक्त खीर वहां रखें पुनः ध्वजदण्ड वहां स्थापित करें।)

उपजाति— विन्यस्य दूर्वादधिमिश्रधान्यं, भूम्यर्चनासंविधिना समर्च्य ।

हिरण्ययुक्तं परमान्नमेतन्न्यसामि शस्ते ध्वजदंडगर्ते ॥ १४ ॥ दूर्वादधिमिश्रधान्यस्थापनम् ।

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं ।

इति गर्तभूम्यर्चनम् । (गर्त भूमि की पूजा करें)

अथ हिरण्ययुक्तपरमान्नस्थापनम् । तदनंतरं ध्वजदंडस्थापनम् । दिक्पालादिक्षुद्रध्वजदंडस्थापनं च कर्तव्यम् ।

(नीरजसे नमः, शीलगंधाय नमः इत्यादि पढ़कर गड्ढे की भूमि का पूजन करें। सुवर्ण सहित खीर की स्थापना करें। अनंतर ध्वजदण्ड स्थापित करें और दिक्पाल आदि स्थापन एवं लघु ध्वजदण्ड भी स्थापित करें।)

१०८ बार जाप्य

(आगे लिखे श्लोक को पढ़कर नीचे लिखित मंत्र से १०८ बार जाप्य दें।)

अष्टोत्तरशतवारं, संजप्यानादिसिद्धमंत्रेण । अधिवासयेऽधिकर्द्धिं, सार्वं सर्वाण्हयक्षमिमम् ॥ १५ ॥

ॐ णमो अरिहंताणं स्वाहा ॥ १०८ बार ॥

सर्वाण्हयक्ष का पंचामृताभिषेक

लोक पढ़कर पूर्वकथित अनादिसिद्ध मंत्र को बोलकर सर्वाण्हयक्ष का पंचामृत अभिषेक करें पुनः अर्घ्य चढ़ावें ॥ यदि सर्वाण्हयक्ष का कपड़े आदि पर चित्र है तो उसे दर्पण में प्रतिबिंबित कर दर्पण का अभिषेक करें। यदि मूर्ति या यंत्र है तो उसी का अभिषेक करें।

बसंततिलका— श्रीमज्जिताघजिनबिंबहट्तिरीटं, सर्वज्ञयज्ञविधिरक्षणदक्षयक्षम् ।

पंचामृतैरमृतभव्यसुखार्थिभव्यमूर्धाभिषिक्तमभिषिक्तमिमं तनोमि ॥ १६ ॥

अनादिसिद्धमंत्रेण पंचामृतस्नपनम् । (चत्तारिमंगल.....बोलकर पंचामृत अभिषेक करें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, यक्षं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्ष इदं जलादिकं गृहाण गृहाण स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा ॥

सर्वलोकशान्त्यर्थ इष्टप्रार्थना

(अब सर्वाण्ह यक्ष के सामने आगे लिखे श्लोक व गद्यमंत्रों द्वारा, जो कि ५१ हैं, उनको बोलते हुए विश्वशांति की प्रार्थना करें। इसमें जहां 'देवदत्त' शब्द है उस स्थान पर वहां जो यजमान है, उसका नाम लेवें। या सामूहिक समाज के द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया है तो उनके समूह को उच्चारित करें। उपस्थित यजमान व भक्तों पर पुष्पांजलि छोड़ते जावें।

इन गद्य आशीर्वाद मंत्रों में कहा है कि इस यज्ञानुष्ठान के कर्ता भरत चक्रवर्तीवत्, श्रीरामचंद्र आदिवत् प्रभावशाली व प्रजापालक आदि होवें, सर्वविश्व में शांति होवे इत्यादि।)

अथ यक्षाग्रे सर्वलोकशान्त्यर्थमिष्टप्रार्थनामालामंत्रधोषणम् ।

शार्दूलविक्रीडितं— तीर्थेशा नवदेवता बहुविधाः, सर्वे जयाद्याः सुराः। योगीन्द्रा महिताः त्रिषष्टिपुरुषा-स्त्वप्रबोधादयः। राज्ञोऽमात्यवरादिसर्वतनुभृद्वृन्दस्य राष्ट्रादिक-स्यार्त्यादीन्पह्नित्य नित्यपरमानंदं विदध्युर्भृशं ॥१७॥

सब्रह्मवृद्धिर्भूयात् सद्धर्मवृद्धिर्भूयात् ॥

गद्य—ॐ जय जय जिनेश्वर विश्वगोचरानश्वरबोधैकस्वरूपपरमेश्वर, स्वस्तिश्रीमदनारतप्रणमनप्रवणाशेषशक्र-चक्रीश-चक्रेश्वर चक्रप्रकटमुकुटकोटीकुटीरनिकटतटघटनसमटदनल्पनिजप्रकाश-प्रचयप्रभावप्रहृतरुणतरणिबिंबशुभ-दाडंबरस्तोकस्तोत्रकीस्तुभप्रतिमानुत्तमानूत्तरत्नामलमरीचिप्रचयप्रसरण-प्रसक्तरक्तीकृतप्रभाप्रकृष्टप्रसिद्धप्रशस्त-प्रभूतप्रातिहार्यप्रभृति-प्रशोभितपरिप्राप्तपरमाप्तपदसमासादिदानंतज्ञानदर्शनवीर्यसुखात्मकपुरुश्रीमुखमुख्यगुणगणा-भिरामत्वामतरामारमणप्रणद्धांस्तमः॥पटलनखकिरण-राजमानचारुचरणारविंदद्वंद्वबाभास्यमानभगवद्वषभादि-महावीरपर्यंतस्याद्वादप्राज्यसाम्राज्यमूर्धाभिषिक्तातिरिक्तभक्तजनसमीहितसंपादकनिरस्तघातिचतुष्टयविशिष्टनित्यनिः-स्वेदनिर्मलत्वादिगण-जुष्टनिरतिशयपरमौदारिकशरीरविराजितावशुद्धबुद्धस्वरूपपरमेष्ठिपदध्विप्रसिद्धसद्धर्मतीर्थकराः सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्यप्रमुखानि प्रयच्छन्तो भूयासुरश्रान्तम् ॥ १ ॥

निखिलप्रत्यवायमथनदक्षाक्षुणपवित्रचारित्रयानपात्रप्रपूर्णगुणदर्शनकर्णधारनिर्वाणद्वीपयायिसार्थवाहायितस्वार्थ-परार्थप्रतिपादनविशारदविशारुशरीरादिविशीर्णममत्वसत्वसंघातदयाप्रभृतिचतुरशीतिलक्षगुणाधारमुनयः ऋष्यनगार-राजर्षिब्रह्मर्षिदेवर्षिपरमर्षिप्रभृतिविकल्प-विगताकल्पस्वल्पेतरगुणगौरवसमंविता पंचपंचाष्टाष्टप्रपंचत्रिसप्तभेदौषधि-तपोनिमित्तचारणज्ञानबलबुद्धिभेदध्वि-परिप्राप्तत्रिसंख्यानूननवकोटिमहर्षयः प्रसन्ना भूयासुरश्रान्तम् ॥ २ ॥

सर्वगीर्वाणोर्वीशदवीकरेशसार्वभौमसमाराधितपरमेश्वरपादारविंदद्वंद्वैदिरायमाणमानसानाम् । शरणैषिसुजन-जनहंससंदोहवरशरण्यभूतमानसानां । परमशर्मावहार्हद्धर्मानेकविधप्रभावनप्रवीणानां । सकलमुमुक्षुवर्ग-संरक्षणसमुद्धण-धुरीणानां । प्रशस्तसमस्तशास्त्रपारावारपारीणानां । प्रविमलनिजान्वयगगनांगणगगनमणिप्रायाणां । सार्थककविसार्थोप-लक्षितानेकप्रकारबिरुदावलिविराजमानानाम् । श्रीमतामाचार्यवर्याणां तपःप्राज्यसाम्राज्यं निष्प्रत्यूहेन प्रवर्द्धमानं भूयादश्रान्तम् ॥ ३ ॥

सर्वतोनिवृत्तहिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहोग्रदीप्ततप्तमहद्गोरभेदतपस्तप्यमानोत्तमक्षमादिलक्षितमुमुक्षुवर्गो ज्ञानाधन-प्रवीणो भूयादश्रान्तम् ॥ ४ ॥

(अखिलजैनसमाजः^{१)}) सकलसमालोकनलोकाल्हादकबाल्हीकादिजातिजातां बरगंगारंगदुरुतरंगभंगुरगतिचतुरत-ममिहिरतुंगतुरंगतुलालंघनजाधिकहैरण्यकनिजोदार-परिष्कारपरिष्कृतानुषंगमंगलभूतपटुनटाध्यापकपदाध्यासकहेषिता-भिभूषिताजानेयजवनादिवाजिप्रातचदुलखरखुरपुटपृथुतररथयूथपतिप्रततिपदसंघटनसमुद्भूतान्तरीक्षव्याजृम्भमाण-

१. इस जगह एवं आगे सर्वत्र बिन्दु की जगह यजमान का नाम लेवें या वहाँ की जैन समाज के लिए जैसे कि दिल्ली जैन समाज के लिए “दिल्लीजैनसमाजः” आदि ऐसा बोलें।

धूलिजालप्रलयविदधानानूनलक्ष्मभद्रभद्रजातीयजीमूताकारानुकारिगंधसिंधुरघटाकरतटविगलद्धानधारासंसेकसमुत्सर्पदमंद-
गंधलोभाभिभ्रमद्भ्रमरमंजुगंजनमंजुल-सेवासमसमागच्छद्भूप परस्परसंगर्षणप्रकर्षविस्तरत्नावरंगवलिभासुवराजिर-
राजद्वललिमप्रासाद-शिखरनिकरनिषण्णकलधौतविमलकलशजालाग्रसुघट्टनराजाह्वयमात्रावहद्विधुबिंबधिवकारकारि-
निष्प्रत्यूहेन प्रवर्द्धमानसप्तांगसंपन्नो भूयादश्रांतम् ॥ ५ ॥

.....निजपराक्रमप्रभावावनताखिलराजमंडलानेकमंडनप्रभाद्विगुणीकृतसिंहासनप्रभाभिरामो
भूयादश्रांतम् ॥ ६ ॥

.....रामचंद्रवदखिललोकपरिपालनप्रवीणो भूयादश्रांतम् ॥ ७ ॥

.....भरतराजवत्सकलदिङ्मण्डलविजयी भूयादश्रांतम् ॥ ८ ॥

.....श्रेयांसवन्निःश्रेयसदाननिदानमहादानप्रसिद्धो भूयादश्रांतम् ॥ ९ ॥

.....भुजबलकुमारवदवार्यभुजवीर्यो भूयादश्रांतम् ॥ १० ॥

.....ऽर्जुनवदनन्य-साधारणधनुर्विद्याविशारदो भूयादश्रांतम् ॥ ११ ॥

.....जीवंधरवत्संगीतसाहित्यविद्याविशारदो भूयादश्रांतम् ॥ १२ ॥

.....अक्षरलेख्यगणितगांधर्व-वेदांगकल्प-न्याय ज्योतिर्ज्ञान-नष्टमुष्टिचिन्तनागंधयुक्तिवीणावेणु
अन्तरीक्षयान-नृत्यगीतवाद्य-भरत आस्त्र-आयुर्वेद-धनुर्वेदलक्षणलक्ष्यप्रद्यूतभेदप्रतिपत्तिहस्तनैपुण्यतर्ककौटिल्याष्टा-
गयोगहस्तितुलंगशिक्षाशालिहोत्र-शिक्षारत्नपरीक्षाभूपरीक्षाचित्रकर्मपत्रच्छेदनवात्स्यायनमर्दनशास्त्र अग्निस्तंभखड्गस्तंभ
सेनास्तंभईंद्रजालमहेंद्रजालस्पर्शवादरसवादखन्यवादबिलप्रवेश-शस्त्रशिक्षा-शास्त्रशिक्षाकूपशास्त्र-सूपशास्त्र-तटाकशास्त्र-
सामुद्रिकलक्षणमहागमनदूरागमनपरकायप्रवेशआगमशिक्षाआत्मज्ञानस्वसमयपरसमय-अंगनिमित्ताख्यचतुःषष्टि-
कलाकुशलो भूयादश्रांतम् ॥ १३ ॥

देवदत्तमहाराजस्य^१ अंतः पुरपुण्यस्त्रियो यशस्वतीसुनंदानंतमतीरेवतीप्रभावतीप्रभृतिप्रसिद्धपुण्यस्त्रीवद्रूपयौवन-
विज्ञानशीलादिसकलगुणसंपन्नाः भूयासुरश्रान्तम् ॥ १४ ॥

^२..... पुत्रा लवांकुशवत्सकलशस्त्रशास्त्रवाहनारोहणादिसकलकलाकौशल्यनीतिपराक्रमसंपन्ना
भूयासुरश्रान्तम् ॥ १५ ॥

सुदेशजसदाचारशुद्धबांधवाभिसंगतव्यसनविदूरप्रमादरहितसुजनजनाभिमतसत्कुलप्रसूतसर्वकर्माभिज्ञनीति-
शास्त्राद्यशेषशास्त्रप्रवीणसर्वव्यवहारविशारदनिबिडतमस्वामिभक्तिप्रमुखगुणगरीयांसो दंडसनाथा भूयासुरश्रान्तम् ॥ १६ ॥

अहमहमिकाकृतनिजपतिपदनिर्मायसेवाभिसेवितनिर्मलधर्मनिर्मुक्तकर्माचारनियोजितानेकक्रियाचातुरी-
विराजितकर्मप्रतिष्ठाधिष्ठितगरिष्ठा मंत्रिपुरोहितप्रमुखनिखिलराजसेवकवर्गाः त्रिवर्गसिद्धिवृद्धिप्रसिद्धिभाजो
भूयासुरश्रान्तम् ॥ १७ ॥

उपासकवेदप्रतिपादितप्रकारयजनयाजनाध्यापनदानप्रतिग्रहानुग्रहप्रशस्तत्रिपंचाशत्क्रियाप्रवणत्रिकालसंध्योपासनजप-
देवर्षिपितृतर्पणादिनित्यानुष्ठानतीर्थयात्राप्रतिष्ठाऽष्टमीचतुर्दश्याष्टान्हिकादिपर्वविशिष्टदानव्रतादिनैमित्तिकानुष्ठा-
नगरिष्ठानुष्ठेयोभयकर्मकर्मठाः शर्मसंततिभाजो द्विजा भूयासुरश्रान्तम् ॥ १८ ॥

प्रतिपक्षप्रतिक्षेपणदक्षाक्षुणस्वपररक्षकप्रेक्षावत्प्रमोदकसदुक्तियुक्तिसंयुक्ताः पृथ्वीप्रसिद्धलौकायतिकौलूक्यसेश्वर^३शिवर-
भेदाकलनकापिलपूर्वमीमांसाविलंबिभाट्टप्रभाकरोत्तरमीमांसाविलम्बि वेदांतवैभाषिकसौत्रांतिकयोगाचारमाध्यमिकाख्य-
चातुर्विध्यसहितसौगततार्किका-कंसमाख्याहर्हतादिमतप्रथिततर्कतितर्कशास्त्रार्किकाः प्रतिव्यूढनित्याद्येकांतरूपमौढ्यानि-

वद्यस्याद्वादविद्याविदग्धा भूयासुरश्रांतम् ॥ १९ ॥

मूलशास्त्रानुशास्त्रोपशास्त्रप्रभेदनिखिलशास्त्रागण्यनैपुण्यशब्दार्थालंकारसुकरदुष्करचित्रमार्गमाधुर्यार्थव्यक्ति-
प्रसादिगुणन्यूनातिरिक्तपुनरुक्तव्याघातादिदोषादिगतिख्याता ऋषभगताध्वानुविधायिश्राद्धभेदश्रावणसुधासार-
वाग्गुंफभणितिभावप्रभावावभासिनः पौरस्त्यदाक्षिणात्यचक्रवर्तिनः कविजना भूयासुरश्रांतम् ॥ २० ॥

प्रवचनपारगामितामहाप्रातिभवाचोयुक्तित्वप्रभृतिनिजकौशल्यैर्वाग्मिगमकादयो निखिलजनमानसमलिप्तुचा
भूयासुरश्रांतम् ॥ २१ ॥

तिथिवारक्ष्ययोगकरणाख्यपंचांगसंशुद्धिनिर्दोषनक्षत्रायत्तलग्नहोराद्रेक्काणनवांशद्वादशांशत्रिंशांशाभिधान-
षड्वर्गशुद्धिर्विविधभेदप्रभेदगोचरशुद्धिरुदकफलवगमनिमित्तनिमित्तशुद्धिरित्येवविधपंचशुद्धिसमन्वितस्य मुहूर्तस्य
परीक्षायामतिदक्षाः सकलपुरुषपरिषत्संपदापदवाप्तिपरिहारनिबंधनग्रहणग्रहचाराद्यविसंवादिनो गणितजातकविधानप्रश्न-
भेदचातुर्विध्यज्योतिः शास्त्रापारावारपारगाः प्रतिविष्टनष्टमुष्टिचिंतामोघप्रतिपादनोत्पादि सकलजनचेतश्चमत्काराः
कार्तातिका भूयासुरश्रांतम् ॥ २२ ॥

देशदोषशरीरप्रकृतिवयः सत्त्वाग्निदिनर्तुप्रभृतिकालाचरितरसनादिकादानचिकित्सादूतशकुननिमित्तमंत्रयंत्रादिसुपरि-
बोधप्रज्ञानिरवद्यवैद्यसंप्रदायप्रतीताः कौशल्यसौशील्यनैराश्यनीरोगतादिगुणजुष्टाः कौसीद्यप्रमादादिव्यपेताः सुध्वदमोघ-
फलदायिभैषज्य-क्रियाप्रसिद्धाः प्रवचनप्रसिद्धपंचकोट्यष्टषष्टिलक्षणवनवतिसहस्रपंचशतचतुरशीतिप्रभेदोपलक्षित-
विविधव्याधिप्रशमनप्रवीणाः चिकित्सिता भूयासुरश्रांतम् ॥ २३ ॥

स्वर्गापवर्गसौख्यसंपादकचतुर्विधदानविधानाधिष्ठानां सिद्धपदाधिरोहरूपैकादशनिलयातिलालसानाम् । सागारधर्म-
प्रणीतनिखिलगुणमणिरौहणधरणीधरायमानमानसानां । समस्तश्रावकजनानां स्वायुरारोग्यैश्वर्यप्रमुखैहिका-मुत्रिकाम्युदया
भूयासुरश्रांतम् ॥ २४ ॥

पुण्यपण्यारामसरोवापीप्रपासत्रादिनिर्माणक्रियानिरता निरंतरातिथिपूजासदाचारमाचरिष्णवः समस्तद्रव्य-
समृद्धिसंपन्नाः निषिद्धक्रियाव्यावृत्तवार्तोपजीविनो वैश्या भूयासुरश्रांतम् ॥ २५ ॥

भूवाहपाठकादिस्वकीयतत्पराः त्रिवर्णशुश्रूषाप्रवणाः शूद्रा भूयासुरश्रांतम् ॥ २६ ॥
सम्यगागमप्रणीतनिजनिजविहिताचारपरायणाः समस्तसंपत्समेताः समस्तजातयो भूयासुरश्रांतम् ॥ २७ ॥

पात्रत्यागत्वगुणानुरागत्वसुपरिजनभोगत्वशास्त्रविग्रहबोद्धृत्वयोद्धृतानृशंस्यवचनस्तेयवर्जनपरयोषिन्निवृत्तिरूप-
पुरुषसाधारणलक्षणोपलक्षिताः सर्वे पुरुषा भूयासुरश्रांतम् ॥ २८ ॥

आसेचनकरूपाभिरामाः स्वानुरूपवरोपलंभाः पातिव्रत्यानुकूल्यकौलीन्यकौशल्यादिसुगुणसंपन्नाः कामिन्यो
भूयासुरश्रांतम् ॥ २९ ॥

देवगुरुमातापितृप्रभृतिभूयिष्ठभक्तिशक्तिसंयुक्तिसदुक्तिशस्त्रशास्त्रादिनैपुण्यागण्यपुण्यप्रभावातिशयकुलपवित्रीकस्तथा-
पुत्रा भूयासुरश्रांतम् ॥ ३० ॥

प्रफुल्लकमलविमलसलिलविलसत्सरोवरार्णःपरिपूर्णवापीकूपतटाकपल्वलादिप्रवर्द्धमानशाकटोद्वट्टा रामशालेयन-
दीमातृकप्रभृतिप्रदेशसमूहघटोष्णीघृष्टिप्रष्टौहिकानैचिकीप्रमुखगोधनधोरणिकृत्स्नधान्यकुटुंबहिरण्यसंपत्तिजितानि राष्ट्रप्राणि
भूयासुरश्रांतम् ॥ ३१ ॥

अशेषमनुष्याणां स्वर्गसौख्यानि देशा दिशंतो भूयासुरश्रांतम् ॥ ३२ ॥

कामदुघोद्विक्तसंपद्ग्रामपुरखेडखर्वडमटंबद्रोणमुखादिमंडितानि भूयासुरश्रांतम् ॥ ३३ ॥

अवर्षातिवर्षमूषिकाशुकशलभस्वचक्रपरचक्राख्यसप्तेतिजातबाधाः प्रणष्टा भूयासुरश्रांतम् ॥३४॥
 सुकालवर्षानुकूलवातादिसंभवाशेषधान्यफलादिप्रवृद्धिपयःपयस्यादिसमृद्धिरत्नरिक्थवस्त्रशस्त्रशास्त्रादिलाभानुरूप-
 कुमारकुमारीपरिणीतिनीरोगतापरस्परमैत्री चेति सप्तसंपत्तयो भूयासुरश्रांतम् ॥३५॥
 क्वचित्कदाचित्कुतश्चित्कस्यचिदपि कांदिशीकत्वं प्रणष्टं भूयादश्रांतम् ॥३६॥
 शातिकपौष्टिकप्रमुखषट्कर्मणां सकलयंत्रतंत्रादिविद्यानां संसिद्ध्यः साधकानां भूयासुरश्रांतम् ॥३७॥
 मुनिवर्यायिकाराजमंत्रिपुरोहितयाजकयष्टप्रभृतिनिखिललोकसमूहानां शांतिकांतिसिद्धिवृद्धितृष्टिपुष्टिक्षेमकल्याण-
 स्वायुरारोग्यादयो भूयासुरश्रांतम् ॥३८॥
 हंतुकामरतिकामबलिकामशाकिनीप्रभृति सर्वग्रहभयानि प्रध्वस्तानि भूयासुरश्रांतम् ॥३९॥
 अग्न्युत्पाताशनिपातवाताहततिप्रभृति समस्तबाधाः प्रणष्टा भूयासुरश्रांतम् ॥४०॥
 सर्वोपसर्गसर्वविघ्नसर्वाधिसर्वव्याधयो विलीना भूयासुरश्रांतम् ॥४१॥
 सर्वराजभयसर्वचोरभयसर्वमृगभयसर्वसर्पभयसर्वभयादिसर्वभयानि प्रणष्टानि भूयासुरश्रांतम् ॥४२॥
 सर्वात्मघातपरघातप्रमुखानि क्रूरकर्माणि निरस्तानि भूयासुरश्रांतम् ॥४३॥
 सर्वनगरगजाश्वगोमहिषादिमार्यः प्रणष्टा भूयासुरश्रांतम् ॥४४॥
 सर्वसस्यधान्यवृक्षगुल्मलतापुष्पफलादिमार्यः प्रणष्टा भूयासुरश्रांतम् ॥४५॥
 सर्वदा सर्वेषां सर्वसंपदो भूयासुरश्रांतम् ॥४६॥
 अपारचातुरीविराजमानमानिनीमतल्लिकामार्जिताभिरुचिररुचिनानारंगवलिराजिताजिरसमुत्कीर्णसुरभिगंधपुष्पोपहार-
 प्रतिगृहकोणद्वारादिप्रदेशनिक्षिप्तधूपघटपटलदंदह्यमानधूमावलिव्याप्तदशदिशांतरालबहलपरिमलासक्तपरिगताखिल-
 धामांगमधुकरमंजुलारावच्छलस्तुतिशतमुखावशोभमानमणिकनकरवचितालंकृत शिखरनिकराग्रप्रणद्धवातांदोलित-
 ध्वजारजिसमाहूयमानवदागच्छद्भ्यस्यसंदोहसमानीतसपर्यां ऽनेकवितानातिशयमुक्ताफलालंबिलंबूषादृष्टपूर्वर्तनगानानून-
 मंद्रामंदजयजयारावनानोपकरण-घृणिगण देदीप्यमानाभ्यंतरप्रदेशाश्चैत्यालया भूयासुरश्रांतम् ॥४७॥
 इह सकलचैत्यालया अकृत्रिमचैत्यालया इव स्वर्णमया रत्नमया ज्योतिर्मया भूयासुरश्रांतम् ॥ ४८ ॥
 नित्योत्सवमासोत्सवपक्षोत्सववर्षोत्सवप्रमुखोत्सवानां समृद्धयोऽर्हतां मंदिरेषु भूयासुरश्रांतम् ॥ ४९॥
 भगवज्जिनेश्वरप्रतिमाप्रतिष्ठामहोत्सवप्रारंभे विधीयमानध्वजारोहणमुहूर्तः सुमुहूर्तो भूयात् ॥ ५०॥
 स जयतु जिनधर्मो यावदाचंद्रतारम् । व्रतनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः ।
 अहरहरभिवृद्धिं यांतु चैत्यालयास्ते । तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु ॥५१॥

ध्वजारोहण मंत्र

(आगे का श्लोक बोलकर व मंत्र बोलकर बाजे बजाते हुए शुभ मुहूर्त में ध्वजारोहण करें। यहां ध्वजदण्ड में रत्नत्रय और ध्वज में केवलज्ञान का संकल्प है।)

वसंततिलका— रत्नत्रयात्मकतयाभिमतेऽत्र दंडे, लोकत्रयप्रकृतकेवलबोधरूपम् ।

संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सति मंगलवाद्यघोषे ॥५२॥

ॐ नमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु । सर्वलोकशांतिर्भवतु स्वाहा । ध्वजारोहणमंत्रः ।

सर्वाण्हयक्ष को अर्घ्य

शार्दूलविक्रीडितं—यज्जैनेन्द्रमहामहस्य सुतरा—माद्यं विधेयं मतं। यज्जैनोत्सवसंदिदृक्षुजनसंधानक्षरावाहनम्।

यल्लोकाखिलदुःखहारिसुखसंतानैकसंपादकम्। तच्चारोप्य महाध्वजं विधिकृते—नार्घ्येण संभावये ॥१३॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्ष इदमर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वस्ति भद्रं च भवतु स्वाहा । अर्घ्योद्धारणम् ।

इति ध्वजारोहणविधानम् ॥ यह ध्वजारोहण विधि पूर्ण हुई।

वेदिका लेपन विधि

गद्य—तदेवं ध्वजारोहणविधिं विधायानंतरं स्नातलंकृतकन्यकाभिर्मूलवेदीमुत्तरवेदीं संमार्ज्य समंत्रं प्रोक्ष्य पूतमृद्धेमयक्षीरवृक्षत्वक्कषायेण लेपयित्वा द्वारतोरणभांडोच्चयचंद्रोपकादिभिस्तद्योग्यपुरुषैरलंकारयेत् ॥

(इस ध्वजारोहण विधि को करके इसके बाद स्नान करके जो वस्त्र-अलंकार आदि से सुसज्जित हैं, ऐसी कुमारी कन्याओं द्वारा मूलवेदी और उत्तरवेदी को सम्मार्जित कराके मंत्रों द्वारा प्रोक्षणविधि करके पवित्र मिट्टी, गोमय से क्षीरवृक्ष के चूर्ण या क्वाथ से वेदी का लेपन करावें, पुनः द्वार पर तोरण बांधें, मंगलघट तथा चंदोवा आदि से उन-उन कार्यों में कुशल व्यक्तियों द्वारा मंडप को सजावें।)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः। प्रोक्षणजलाभिर्मंत्रणम् (इस मंत्र से वेदी पर जल छिड़कें) ॥ इति वेदीलेपविधानम् ॥

अंकुरों से पूजा-अवतारण विधि

गद्य—यद्यंकुराः सम्यगुत्पन्नास्तर्हि तस्मिन्नेव ध्वजारोहणदिने प्रागुक्तैर्मंगललोकोत्तमशरणाहद्भट्टारकेत्यादिगद्यपद्यमंत्र-वाक्यैर्भगवतोऽङ्कुरार्चनविधिं विदध्यात् ॥

पुनः जो अंकुरें उत्पन्न हुए हैं, उसी ध्वजारोहण दिन के पहले कहे हुये 'मंगल, लोकोत्तम, शरण अर्हद्भट्टारक' इत्यादि गद्य-पद्य मंत्र वाक्यों से भगवान की अंकुरार्चन विधि करें।

प्रध्वस्ताशेषघातिप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः। कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशतायातिशेषैः ॥

तैरष्टप्रातिहार्यैस्त्रिजगदधिपतिर्यस्तमेनं जिनेन्द्रं। प्रोद्यत्पुण्यांकुरौघैरनघमिह यजेऽगण्यपुण्यांकुरार्थम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं नमः परमकल्याणेभ्यः स्वाहा ।

(इस प्रकार श्लोक व मंत्र बोलकर अंकुरों का अवतारण करके भगवान की पूजा करें अर्थात् भगवान के सामने रखें।)

अथ भेरीताडन विधेः प्रयोगः

गद्य—ॐ अथ प्रतिष्ठादिवसात् षष्ठेऽहनि दिवा ध्वजारोहणविधिं निष्ठाप्य, तद्वात्रौ श्रीबलिविधेरनंतरं विमलसलिलकलितकल्लिगोमयेन ध्वजवेदीं प्रत्यंतभूभागं च सम्मार्ज्य ध्वजपीठमलंकृत्य ध्वजमभ्यर्च्य श्रीविमानाभिमुखं सर्वाण्हयक्षप्रतिमां छत्रत्रयं च निधायाभ्यर्च्य। दिक्पालादिपरिवारध्वजदेवताः समाहूय। अवभृथदिनावधिका अवस्थाप्य। तत्पीठेषु समभ्यर्च्य। महाध्वजदंडं तद्वक्षिणे पार्श्वे स्थित्वा नवकलशैरभिषिच्य अभ्यर्च्य। ध्वजबहिर्भागे द्विद्रोणप्रमितान् सदर्भाक्षतशालीन् प्रस्तीर्य। तदुपरि भेरीशंखच्छांदिवाद्यानि निधाय। भूम्यर्चन-विधिनाभ्यर्च्य स्थित्वा, स्रक्चंदनवसनभूषणभूषितेन देवालयं परित्यज्य, जिनेश्वरं प्रणिपत्य, पुष्पांजलिं विकीर्य तद्वाद्यानामग्रतो विमानाभिमुखं स्थितेन ताडकेन भेर्यादिवाद्यानि क्रमेण ताडयित्वा पुष्पांजलिपूर्वकं जयादिमालामंत्रमुद्घोष्योद्घोष्य, भूयामूयो भेरीं ताडयित्वा पुण्याहुमुद्घोष्य तांबूलगंधपुष्पाद्यैः सर्वान्जनान्संतर्पयामहे ॥

(प्रतिष्ठा दिवस से छह दिन पहले दिन में ध्वजारोहण विधि पूर्ण करके, उसी रात्रि में श्रीबलिविधि—पूजा करें, पुनः गोमय से ध्वजवेदी और उसके चारों तरफ के भाग को संमार्जित—लिप्त करके ध्वजपीठ को अलंकृत करके ध्वजा की पूजा करें, श्रीविमान—मंदिर के सामने सर्वाण्हयक्ष प्रतिमा और छत्रत्रय को रखकर पूजा करें। दिक्पालादि परिवार, ध्वजदेवताओं का आह्वन करके 'अवभृथ अभिषेक' दिवसपर्यंत उनकी स्थापना करके उनकी पूजा करें। महाध्वजदंड के दाहिनी तरफ खड़े होकर नवकलशों से अभिषेक करके पूजा करें।

पुनः ध्वजा के बाह्य भाग में दोद्रोण—८ किलो तंदुल फैलाकर उस पर दर्भ डालकर उसके ऊपर भेरी, शंख, घंटा आदि बाजे रेंख

अनंतर 'भूमि अर्चन' विधि से पूजा करके माला, चंदन, वस्त्र, अलंकार से भूषित होकर मंदिर की प्रदक्षिणा देकर जिनेंद्रदेव को नमस्कार करके पुष्पांजलि क्षेपण करें। पुनः उन बाजों के आगे और मंदिर के सामने खड़े होकर बाजे वालों से भेरी आदि बाजे क्रम से बजवावें।

अनंतर पुष्पांजलि क्षेपण करते हुए "जयादिमालामंत्रों को" बोल-बोलकर पुनः पुनः भेरी बजवावें। बाद में पुण्याहमंत्र बोलकर तांबूल, गंध, पुष्प आदि से सभी आगंतुकजनों को प्रसन्न करें।)

अब प्रयोगविधि दिखाते हैं—

सर्वाण्हयक्ष पूजा

(आगे का श्लोक पढ़कर सर्वाण्हयक्ष को और मंदिर के सामने स्थित सर्वाण्हयक्ष की प्रतिमा को अर्घ्य चढ़ावें।)

उत्तुंगंशरदभ्रशुभ्रमुचितं, सद्धिभ्रमं बिभ्रतम् । यो दिव्यद्विपमारुरोह शिरसि, श्रीधर्मचक्रं दधौ ॥

हस्ताभ्यामसितद्युतिं करयुगे-नान्येन बद्धांजलिम् । तं जैनाध्वरक्षणक्षममिमं, सर्वाण्हयक्षं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षाय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षाय इदमर्घ्यमित्यादिविधिना महाध्वजयक्षार्चनं श्रीविमानाभिमुखस्थितयक्षप्रतिमार्चनं च विदध्यात् ।

छत्रत्रय पूजा

(सर्वाण्ह यक्ष के पास स्थापित तीन छत्र को अर्घ्य चढ़ावें।)

लोकत्रयैकाधिपतित्वचिन्हं, छत्रत्रयं मंगलवस्तुमुख्यम् ।

निवेशितं श्रीजिनवामभागे, यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः ॥२॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । इत्यादि छत्रत्रयार्चनम् ॥ (जल, चंदन आदि चढ़ावें) ।

दशदिक्पाल पूजा

(आगे के १-१ श्लोक व मंत्र पढ़कर दशदिक्पाल की पूजा करके अर्घ्य चढ़ावें।)

अथ दिक्पालपूजा

अनुष्टुप्छंदः— प्रालेयशैलसंकाशं, समुत्तुंगमतंगजं । आरूढमतिरूढश्री-बिडौजसमिहाव्हये ॥१॥

ॐ ह्रीं हे इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं हे इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं हे इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं इन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

भीषणाकारमेषाढ्यं, मेषोषितमुषर्बुधं । तोषयामि समाहूय दोषापेतजिनाध्वरे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं हे अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं हे अग्ने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं हे अग्ने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अग्नये इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे ...॥

तमालश्यामलोत्ताल-भैरवाकारसैरिभम् । अधिश्रितमधिश्रीमच्छास्त्रदेवं समाव्हये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं हे यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं हे यम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

- ॐ ह्रीं हे यम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं यमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे ...॥
 ऋक्षाकारस्वसात्कारी, रक्षोयानमधिष्ठितः । समाहूतः समायातु, यातुधानो जिनाध्वरे ॥ ४ ॥
 ॐ ह्रीं हे नैऋत! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे नैऋत! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे नैऋत! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं नैऋताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे ...॥
 स्फारदारुण-दंष्ट्राति-भीमेभमकरस्थितं । पाशपाणिं जिनाधीश-यज्ञे संशब्दयामहे ॥ ५ ॥
 ॐ ह्रीं हे वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे वरुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे वरुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं वरुणाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे॥
 गंगारंगत्तरंगौघ-गतितुंगतुरंगम्^१। आशुगाशु^२ समागच्छ, यागे त्वामाह्वयेऽर्हतः ॥ ६ ॥
 ॐ ह्रीं हे वायो! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे वायो! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे वायो! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं वायवे इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे॥
 नानारत्नमयोदार-श्रीविमानमधिश्रितं । जिनराजाध्वरे राज-राजमाकारयामहे ॥ ७ ॥
 ॐ ह्रीं हे कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे कुबेर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे कुबेर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं कुबेराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे...॥
 कैलासशैलतुंगांग-शाक्वरास्थितमीश्वरम् । आह्वयेऽनश्वरश्रीमज्जिनेश्वरमहामहे ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं हे ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे ईशान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे ईशान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं ईशानाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे..॥
 धराधरोपमातुच्छ, कायकच्छपकस्थितम् । सर्पराजं समाहूय, तर्पयामि सपर्यया ॥ ९ ॥
 ॐ ह्रीं हे धरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे धरणेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे धरणेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजोमह..॥
 सांद्ररुद्रसटाटोप-मृगेंद्रगतमुज्ज्वलं । चंद्रमाहूय सत्कुर्वे, जिनचंद्रमसो मखे ॥१०॥
 ॐ ह्रीं हे चन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं हे चन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
 ॐ ह्रीं हे चन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
 ॐ ह्रीं चन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे ...॥
 इंद्राग्निकालनिकषात्मजपाशिवायु-श्रीदैदुशेखरफणाधरराजचंद्राः ।
 साकं स्वकैरवभृथावधि तिष्ठतात्र, निःशेषविघ्नमपसारयताध्वरस्य ॥११॥
 ॐ ह्रीं इंद्रादिदशदिक्पालकदेवा यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा । पूर्णार्घ्यं . . .

आठ दिक्कन्यका पूजा

(आगे के श्लोक मंत्र बोल-बोलकर श्री आदि आठ देवियों की पूजा करें)

अथाष्टदिक्कन्यकार्चनम्

अनुष्टुप्छंदः—

हेमसाद्भूतहिमवत्सरोवरसरोरुहे । या वसेत्तडिदाभां तां, श्रीदेवीं बहुमानये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं श्रीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीदेवि ! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

अर्जुनात्मोर्जितमहाहिमवत्सरसोर्बुजे । या समास्ते जपाभां तां, ह्रीं देवीमाव्हयामहे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ह्रीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ह्रीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ह्रीदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

तपनीयमयोत्तुंग-निषधाद्रिसरोम्बुजे । वसन्तीं विद्युदुद्घोतां धृतिदेवीं यजामहे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं धृतिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं धृतिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं धृतिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं धृतिदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

वैडूर्यमयनीलाद्रिसरःसरसिजस्थितिम् । कार्तस्वरोज्ज्वलन्मूर्तिं कीर्तिदेवीं समर्चये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं कीर्तिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कीर्तिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कीर्तिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कीर्तिदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

रूप्यात्मरुक्मिसरसो-सरसीरुहवासिनीं । भास्वद्भर्मसमिद्धाभां, बुद्धिदेवीं यजामहे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं बुद्धिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं बुद्धिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं बुद्धिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं बुद्धिदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

हेमात्मनः शिखरिणः, कासारकमलालयां । कलधौतप्रभालक्ष्मीं लक्ष्मीदेवीं प्रसादये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

पुष्पास्यकलशां कंज-हस्तां शस्तविभूषणां । कनत्कनकसत्कांतिं शांतिदेवीमिहाव्हये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शांतिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शांतिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शांतिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं शांतिदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

सर्वमातृजिनाधीश, मातृसेवापरायणां । निष्टप्ताष्टापदरुचिं, पुष्टिदेवीं प्रपूजये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पुष्टिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पुष्टिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पुष्टिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं पुष्टिदेवि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

स्वागताछंदः— सप्तमातर इति व्यपदेशं, या वहन्ति जिनमातृसमेताः।

श्रयादयः षडपि ताः सुखपुष्टी, शांतिपुष्टिसहिता वितरन्तु ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रयाद्यष्टकन्यका यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यम् ॥

दशविध ध्वज स्थापना

(दश प्रकार के चिन्हों से सहित दश ध्वजाओं को क्रम से दश दिशाओं में स्थापित करें। इन दशचिन्हों के नाम-माला, सिंह, कमल, वस्त्र, गरुड़, हाथी, बैल, चकवा, मयूर और हंस। ये दशों ध्वजायें क्रम से पांच वर्ण की मानी हैं।

उनके वर्ण-पीत, लाल, काली, हरी, श्वेत, नीली, काली, पंचवर्णी, पंचवर्णी और पंचवर्णी ऐसी ध्वजायें बनावें और क्रम से आगे के श्लोक व मंत्र बोल-बोलकर उन-उन दिशाओं में लगाते जावें।

यहां अधर और ऊर्ध्व दिशा के लिए ईशान से पूर्व के बीच को अधो दिशा और नैऋत्य तथा पश्चिम दिशा के बीच की दिशा को ऊर्ध्व मानकर वहां-वहां लगाते हैं।

अथ मालामृगेन्द्रादिदशविधध्वजपूजनम्

आर्याछंदः—मालाहरिकमलांबरगरुडेभगवेशचक्रशिखिहंसैः। उपलक्षितध्वजानि न्यसामि दशदिक्षु पंचवर्णानि॥

पुष्पांजलिः ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अनुष्टुप्छंदः—पीतप्रभाह्वया देवी, पीतवर्णमिदं ध्वजं। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, पूर्वस्यां दिशि तिष्ठतु॥१॥

ॐ पीतप्रभायै स्वाहा ॥ (पूर्व दिशा में पीली ध्वजा लगावें)

पद्माख्यदेवी पद्माभा, पद्मवर्णमिदं ध्वजम्। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, आग्नेय्यां दिशि तिष्ठतु॥२॥

ॐ पद्मायै स्वाहा ॥ (आग्नेय दिशा में लाल ध्वजा लगावें)

सा मेघमालिनी कृष्णा, कृष्णवर्णमिदं ध्वजं। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, अपाच्यां दिशि तिष्ठतु॥३॥

ॐ मेघमालिन्यै स्वाहा ॥ (दक्षिण दिशा में काली ध्वजा लगावें)

हरिन्मनोहरा देवी, हरिद्वर्णमिदं ध्वजं। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, नैऋत्यां दिशि तिष्ठतु ॥४॥

ॐ मनोहरायै स्वाहा ॥ (नैऋत्य दिशा में हरी ध्वजा लगावें)

श्वेताभा चंद्रमालेयं, श्वेतवर्णमिदं ध्वजं। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, प्रतीच्यां दिशि तिष्ठतु॥५॥

ॐ चंद्रमालायै स्वाहा ॥ (पश्चिम दिशा में सफेद ध्वजा लगावें)

नीलाभा सुप्रभा देवी, नीलवर्णमिदं ध्वजं। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, वायव्यां दिशि तिष्ठतु॥६॥

ॐ सुप्रभायै स्वाहा ॥ (वायव्य दिशा में नीली ध्वजा लगावें)

श्यामप्रभा जयादेवी, श्यामवर्णमिदं ध्वजम्। धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-मुदीच्यां दिशि तिष्ठतु॥७॥

ॐ जयायै स्वाहा ॥ (उत्तर दिशा में काली ध्वजा लगावें)

विजया पंचवर्णाभा, पंचवर्णमिदं ध्वजम्। धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, ईशान्यां दिशि तिष्ठतु॥८॥

ॐ विजयायै स्वाहा ॥ (ईशान दिशा में पंचवर्णी ध्वजा लगावें)

विजया पंचवर्णाभा, पंचवर्णमिदं ध्वजम्। धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-मधरादिशि तिष्ठतु॥९॥

ॐ विजयायै स्वाहा ॥ (अधो दिशा में पंचवर्णी ध्वजा लगावें)

विजया पंचवर्णाभा, पंचवर्णमिदं ध्वजम् । धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-मूर्ध्वायां दिशि तिष्ठतु ॥१०॥

ॐ व्यक्तांतरायै स्वाहा ॥ (ऊर्ध्व दिशा में पंचवर्णी ध्वजा लगावें)

इति पंचवर्णपताकार्चनम् ॥ (पंचवर्ण ध्वजार्चन विधि पूर्ण हुई)

(ध्वज की अग्रभूमि में चार कोनों में चार कलश या मध्य कलश समेत पांच कलश स्थापित करें।)

अथ कलशार्चनम् (अथ कलश स्थापना)

शार्दूलविक्रीडितं—संस्थाप्यान्ननवारिपूर्णकलशान्पद्मापिधानाननान् । प्रायो मध्यघटान्वितानुपहितान्सद्गंधचूर्णादिभिः ।
द्रोणांभः परिपूरिताश्चतुरशः, कोणेषु यज्ञक्षितेः । कुंभान्यस्य समंगलेषु निदधे, तेषु प्रसूनं वरम् ॥१॥

ध्वजाग्रभूमौ कलश स्थापना ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः कुंभान्समभ्यर्चये ॥ (कलशार्चनम्)
(पूर्वकथित अर्घ्य श्लोक पढ़कर मंत्र बोलकर कलशों को अर्घ्य चढ़ावें)

ध्वजा पूजा

(आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर ध्वजदण्ड की पूजा करना।)

उपजातिष्ठंद— संकल्प्य रत्नत्रयरूपमेतत्स्वेष्टार्थमूलं ध्वजदंडमूलम् ।

संस्नापयेऽहं नवचारुकुंभै-रनादिसिद्धाव्यदिव्यमंत्रैः ॥ १ ॥

ॐ णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सब्बसाहूणं ।

चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलम् । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहुसरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ हौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, दण्डं ध्वजस्यार्चये ॥२॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । इत्यादि ध्वजदंडस्यार्चनम् ॥

वाद्य स्थापना

(भूमि में धुले चावल फैलाकर उन पर वाद्य रखें।)

अथ वाद्यस्थापनम्

उपजातिष्ठंद— ध्वजस्य दंडाद्बहिरत्र भूमौ, द्विद्रोणशालीनभितः प्रसार्य ।

भेर्यादिवाद्यं विनिवेशयामि, सदर्भपुष्पाक्षतकांस्तदग्रे ॥३॥ वाद्यस्थापनम् ॥

वाद्य अर्चन

(आगे का श्लोक बोलकर पुनः 'ॐ नीरजसे नमः' आदि मंत्रों द्वारा वाद्यों की पूजा करें। वास्तव में भगवान के कल्याणक आदि महोत्सवों में ये बाजे बजाये जायेंगे अतः इनकी पूजा की जाने का यहां कथन है।)

वार्दभर्गंधैः सुमनोक्षतौघैः, दीपैश्च धूपैरमृतोपमानैः । वाद्यानि भेरीप्रमुखानि जैन-यज्ञांगभूतानि समर्चयामि ॥४॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । इति वाद्यानामर्चनम् ॥
(पूर्वोक्तमंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ावें)

अथ भेरीताडन

(आगे के श्लोकों को पढ़कर क्रम-क्रम से बाजे बजवावें।)

(इन श्लोकों का भावार्थ यह है कि स्वर्ग से तीर्थंकर के आगमन के समय देवों ने जो बाजे बजाये थे, क्या बाजे ही स्वर्ग से लाये गए हैं? अथवा विरक्त हुए तीर्थंकर देव ने दीक्षावधू का जब वरण किया था—जब दीक्षा ली थी, उस समय देवों ने जो बाजे बजाये थे, क्या यह उन्हीं बाजों की ध्वनि है? अथवा जिस समय तीर्थंकर भगवान का सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक हुआ था, उस समय देवों ने जो बाजे बजाये थे, क्या यह उन्हीं बाजों का घोष है? इत्यादि आशंका हो रही है, इस प्रकार के बाजों से मैं भगवान के श्रीस्त्रों की पूजा करता हूँ।

नंदीश्वर द्वीप में भगवान की पूजा के लिए जाते समय देवगण जो सुंदर बाजे बजाते हैं, क्या उन्हीं की यह ध्वनि है? जिनेंद्रदेव ने जब समवसरण में श्रीविहार किया था, उस समय देवों ने जो साढ़े बारह करोड़ मंगलवाद्य बजाये थे, क्या उन्हींका यह उद्घोष है? इत्यादि अनेक प्रकार की कल्पना करते हुए हम इन बाजों को बजाकर भगवान के श्रीचरणों की पूजा करते हैं अथवा जिनेंद्रदेव का जब मेरु पर्वत पर जन्माभिषेक हुआ था, उस समय वह अभिषेक का जल उछलकर जमीन पर पड़ते हुए गंगानदी जैसा कलकल रवकर रहा था क्या यह उसी समय की मंगलध्वनि है? ऐसी कल्पना करते हुए हम इन वाद्यों से भगवान के श्रीचरणों की पूजा करते हैं।)

अथ भेरीताडनम्

शार्दूलवि.—किं स्वर्गाज्जिनपागमे सुरवरै-रानीततूर्यस्वरः। किं नीरागजिनस्य निष्क्रमवधू-पाणिग्रहे घोषणा।

किं मेरावमरेन्द्रजैनजनन-स्नाने सुरातोद्यसं-पन्नोद्घोष इतीह शंकितरवै-र्वाद्यैर्जिनांग्री यजे ॥१॥

किं सर्वीयजनस्य दुंदुभिरधो, निर्वाणयोषिद्युतेः। किं नंदीश्वरभूत्रिमाससुरराड्-विश्वेशपूजारवः।

किं कैवल्यरमायुतौ जिनपतौ, वृंदारकातोद्यसं-पन्नोद्घोष इतीह शंकितरवै-र्वाद्यैर्जिनांग्री यजे ॥२॥

किं नाथस्य महाविहारसमये, प्रस्थानभेरीरवः। किं मुन्यादिगणावृतातिविलसत्सर्वेशादिव्यध्वनिः।

किं मेरोर्जिनजन्ममज्जनपयो-भूपातजातो वियद्। गंगाघोष इतीह शंकितरवै-र्वाद्यैर्जिनांग्री यजे ॥३॥

अथैकैकमुक्त्वा प्रत्येकं वाद्यमुद्घोषयेत् ॥ (एक-एक पद्य बोलकर प्रत्येक बाजे बजवावें)

अथ आशीर्वादात्मक स्वागत करते हुए आह्वान

(अब आगे के बाईस श्लोकों को क्रम से बोलते हुए उन-उन महान पुरुष आदि को यहां बुलाकर विराजमान करें। एक-एक श्लोक बोल-बोलकर पुष्पांजलि क्षेपण करते जावें)

अथ द्वाविंशत्याशिषः

श्रीमज्जिनेन्द्रा हतमोहतंद्राः, सुरेन्द्रसंपादितदिव्यपूजाः।

फणीन्द्रयोगीन्द्रनुतप्रभावाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१॥

लब्धात्मलाभा निजसौख्यसिद्धा, ये शुद्धबुद्धाः सुनयादिसिद्धाः।

सिद्धाः समृद्धाः सुगुणैरनन्तैः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥२॥

ये पंचभेदांचितपुण्यचर्या-माचारयन्ति स्वयमाचरन्तः।

आचार्यवर्याश्च परान्यदार्थाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥३॥

येऽध्यापयन्ति स्वमतप्रसिद्धं, विशुद्धशास्त्रं विनयाद्विनेयान्।

सर्वेषुपाध्यायपदं प्रपन्नाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥४॥

सर्वसहा वर्जितसर्वसंगा, ये सर्वदा ध्यानकृतावधानाः ।
 सर्वर्द्धयः सर्वगुणाश्च सार्वार्वाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१५॥
 ये मंगलत्वेन मताश्चतुर्धा, लोकोत्तमा ये च चतुः प्रभेदाः ।
 शरण्यभूताश्च चतुर्विधा ये, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१६॥
 लोकत्रयापादितसत्सपर्याः, पर्यंतयाताप्रतिमप्रभावाः ।
 भावाधिरूढा नवदेवता याः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१७॥
 जयं जनानां ध्रुवमावहन्त्यो, जयोजिता निर्जितवैरिवर्गाः ।
 जयादिदेव्यो जिनपादभक्ताः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१८॥
 विद्याख्यकैवल्यविबोधरक्ता, विद्याविभूत्यादिवरप्रदानाः ।
 विद्यादिदेव्यो विविधप्रभावाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१९॥
 विश्वेश्वरा विश्वजगत्सवित्र्यः, पूज्या महादेव्य इति प्रतीताः ।
 जिनाम्बिका यास्त्रिजगज्जिनाम्बाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११०॥
 चतुर्णिकायप्रभवामरेन्द्रा, जिनेन्द्रसेवाप्रसितांतरंगाः ।
 प्रभूतभूतिद्युतिसौख्यबोधाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१११॥
 तिथिप्रवृत्त्याहितलोकयात्रास्तिथौ तिथौ सौख्यकराः प्रसन्नाः ।
 तिथीश्वरा यक्षमुखप्रतीक्ष्याः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११२॥
 मेरुं परीत्यैव चरन्ति नित्यं, ये निग्रहानुग्रहदा नृलोके ।
 अवस्थिता ये बहिरर्कमुख्याः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११३॥
 यक्षाह्वया रक्षितधर्ममार्गा, ये गोमुखाद्यास्त्रिगुणाष्टसंख्याः ।
 संख्यावतामिष्टफलप्रदानाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११४॥
 यक्ष्यः सपक्षीकृतभव्यलोका, लोकाधिकैश्वर्यनिवासभूताः ।
 भूतानुकंपादिगुणानुमोदाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११५॥
 कुलाचलाग्रोरुसरोनिवासाः, श्रीमुख्यदेव्यो जिनमातृसंज्ञाः ।
 सामानिकादित्रिदशैर्वृता याः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११६॥
 दिक्पालकाः पालितसर्वकाष्ठाः, काष्ठां परां येऽधिगता महिम्नाम् ।
 सन्मंत्रनिघ्ना हतसर्वविघ्नाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११७॥
 जिनेन्द्रदौवारिकतां प्रपन्नाः, सुरेन्द्रसम्मानितलोकपालाः ।
 सोमादयो ये क्षपितान्तरायाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११८॥
 विरोधिनां वै विजये विदग्धाः, दुग्धोदगौरामितकीर्तिकान्ताः ।
 यक्षेश्वरा ये विजयादिसंज्ञाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥११९॥
 प्रभावयंत्यो मतमार्हतं याः, प्रभापरीतोज्ज्वलदिव्यदेहाः ।
 प्रभादिदेव्यो ध्वजमावहन्त्यः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१२०॥
 चक्रादिदिव्यायुधसन्निविष्टाः, पौलोमिकाद्यष्टविशिष्टदेव्यः ।
 शिष्टात्मनामिष्टफलप्रदानाः, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥१२१॥

द्वीपाधिपा दीव्यदनावृताद्याः, समुद्रनाथा अपि ये परे च ।

गंगादिदेवीनिवहाश्च सर्वे, स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु ॥२२॥

(प्रथम श्लोक में अरहंतदेव के लिए प्रार्थना की है कि आप यहां सम्यक् प्रकार से आकर विराजमान हों। पुन सिद्धों को, आचार्य, उपाध्याय और साधुओं को बुलाकर विराजमान होने को कहा है ॥ १ से ५ ॥

चार मंगल, चार लोकोत्तम और चार शरणभूत को यहां आकर विराजमान होने को कहा है। नवदेवता—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय इन को विराजमान होने को कहा है ॥ ६ से ७ ॥

पुनः जयादिदेवी, विद्या आदि देवी, जिनमाता, इनको बुलाकर विराजमान किया है। इसके बाद चतुर्णिकायदेवेन्द्र, तिथीश्वर, ज्योतिर्वासीदेव, चौबीस यक्ष, चौबीस यक्षिणी, श्री-ही आदि देवियां, दिक्पाल, सोमादि लोकपाल और विजय आदि को बुलाकर उन्हें विराजमान होने को कहा है ॥ ८ से १६ ॥

पुनः प्रभा आदि ध्वजदेवता, चक्रादिदिव्यआयुधों की रक्षा करने वाली पौलोमी आदि देवियां, द्वीपों के अधिपति, अनावृत यक्ष आदि, समुद्रों के अधिपति और गंगा आदि देवियों का स्वागत किया है ॥ २०-२१-२२ ॥ पुष्पांजलिः ॥

स्रग्धराछंद—

श्रीपादन्यासमत्राचरत जिनमतोद्योतनार्थं मुनीन्द्राः। कल्पेन्द्रा विक्रियांगैरिह समुपगता विघ्नशांतिं कुरुध्वम्।

यो भित्वा घातिकर्माचलमखिलजगज्ज्योतिराय प्रणेता। श्रेयोमार्गस्य सोयं जिनविभुरलमाराध्यतेभ्यर्च्य सिद्धान् ॥२३॥

प्रभावकसिंहसान्निध्यविधानाय समन्तात्पुष्पाक्षतं विदध्यात् ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

(पुनः कहते हैं कि हे महामुनियों ! जिनमत की प्रभावना करने के लिए आप यहां आकर विराजो ! हे स्वर्गों के इन्द्रराज ! आप यहां आकर इस यज्ञ के सर्व विघ्नों को दूर करो। सिद्धों की पूजा करके मैं जो मोक्षमार्ग के नेता हूँ, ऐसे अर्हंतों की आराधना करता हूँ ॥)

आगे का श्लोक बोलकर चारों तरफ पुष्पांजलि क्षेपण करें।

शार्दूलविक्रीडितं— आर्याः पोषयताशिषर्द्धिकलिताः, सप्तापि हुत्वाचिताः। देवा विघ्ननिवारणेन निखिलाः स्वस्वायुषान्विताः।

स्थानस्थाश्च सुरर्षयस्तुत मुदा, सर्वेऽहमिन्द्रास्तथा। श्रद्धतार्यजनाश्च पंच सदयं, यागं मया प्रस्तुतम् ॥२४॥

त्रिभुवनधार्मिकाध्येषणाय समन्तात्पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ (चारों तरफ पुष्पांजलि क्षेपण करें)

(पुनः आगे के कहे श्लोकों को पृथक्-पृथक् बोलकर पुष्पांजलि क्षेपण करके वादकों से भेरी बजवावें। इसमें आठ दिशाओं के क्रम से आठ श्लोक हैं और उनके साथ वादकों द्वारा बजाने वाली ध्वनि के अक्षरों का उच्चारण कराया गया है। मंदिर के या मंडप के चारों तरफ फेरी लगाते हुये आठों दिशाओं में क्रम-क्रम से श्लोक व वाद्य अक्षर बोल-बोलकर भेरी बजवाना चाहिए ॥)

वक्ष्यमाणैतान् श्लोकानुक्त्वा पृथक्पृथक्पुष्पांजलिं स्वयं विकीर्य ताडकेन भेरीं ताडयेत् ॥

सर्वत्र च ब्रह्मपदे निषण्णो, ब्रह्मावृतो वास्तुसुरैरशेषैः।

अर्हत्प्रभोरध्वरमंडपेऽस्मिन्, समागतः सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥१॥ (पूर्व दिशा में)

इदमुक्त्वा पूजकाचार्यः पुष्पांजलिं प्रयुंजीत ॥ (पद्य बोलकर विद्वान् पूर्व दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण करें)

जयति वंघं त्रिदशपतिनुतं मंडलीकमुकुटसंबंधविलसन्मणिगणमंडलितकिरणसंगकृतपरिधिबंधम्। पदयुगलम्। लपदुरंतं सुबहुभवनिबंधं सकलदुरितवृद्धं क्षपयितुं प्रभवदंचम्। चरणरुचिविटकं शिवसुपथमलंघ्यं च जिनपतेः ॥

इदं वाक्यं वादको वादयेत् ॥ एवमुत्तरत्रापि ॥

ऐरावणं वारणरत्नरूढं, आरूढवान्वज्रकरः सुरेन्द्रः।

अर्हत्प्रभोरध्वर मंडपेऽस्मिन्, समागतः सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥२॥ (आग्नेय दिशा में)

गगदुग गगदुग डर्गडर्गण घटिमघल घटितवृद्धम्। ग्रीचतुग्रीचतुरूपाख्यरेकतटा। एकस्तटिमटि क्रमतटविकट क्रमतटविकट तटे। (वाद्य बजावें)

सततं सततं सद्योजातं । वामनधोरस्तत्पुरुषाभाभागम् ॥ बलिशुभयं स्वैस्त्रैमस्त्रैविकले ।

स धर्मराजो महिषाधिरूढो, दंडायुधो दंडितवैरिवर्गः ।

अर्हत्प्रभोरध्वर मंडपेऽस्मिन्, समागतः सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥ ३ ॥ (दक्षिण में)

विप्रवंतु स्तुतिस्पृष्टदक्षस्मकदलिप्रवृक्षस्य रसभे ॥ (वाद्य बजावें)

ऋक्षाधिरूढः क्षपितांतरायो, रक्षःपतिर्मुग्दरभीकरास्त्रः ।

अर्हत्प्रभोरध्वरमंडपेऽस्मिन्, समागतः सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥ ४ ॥ (नैऋत्य में)

कल्पवृक्षदर्शनमर्दतं निर्जपरमस्तुत्यकमले । (वाद्य बजावें)

पाशी करिप्राडूमकराधिरूढो, विघ्नापहारी फणिपाशपाणिः ॥

अर्हत्प्रभोरध्वरमंडपेऽस्मिन्, समागतः सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥ ५ ॥ (पश्चिम में)

कस्तवंत यदि विस्पृशभ्यत्यजगं जिनस्यार्धममृतम् ॥ (वाद्य बजावें)

रंगत्तरंगाभतुरंगरूढः, समीरणो दारुणभूरुहास्त्रः ।

अर्हत्प्रभोरध्वरमंडपेऽस्मिन्, समागतो सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥ ६ ॥

युशयुशकमल रक्षशुष्कभभवति यिमुदि द्विज्जगसा ॥ (वाद्य बजावें)

समाश्रितः पुष्पकसद्विमानं, कुबेरवीरो विधृतोग्रशक्तिः ।

अर्हत्प्रभोरध्वर मंडपेऽस्मिन्, समागतो सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥ ७ ॥

नृत्तानंदं नेदानंदं निर्मलनिर्मल दंडं ॥ (वाद्य बजावें)

कैलासशैलोपमशाक्वरस्थो, महेश्वरः शूलधरस्त्रिनेत्रः ।

अर्हत्प्रभोरध्वरमंडपेऽस्मिन्, समागतो सन्निहितोऽस्तु सद्यः ॥ ८ ॥ (ईशान में)

दंतमदन्तं क्रमतटमृककट झर्झरीमंतलि झल्लरि काकिणभेदुंभि हेहं नर्द्धम् ॥ (वाद्य बजावें)

(पुनः आगे का 'स जयतु' इत्यादि श्लोक बोलकर मंडप में सर्व तरफ पुष्पांजलि क्षेपण करें । अनंतर पुण्याहवाचनबोलकर सर्वजनों को तांबूल, गंध, पुष्पादि से संतर्पित करें या समयोचित लोगों को फलादि देकर प्रभावना बांटें ।

स जयतु जिनधर्मो यावदाचंद्रतारं, यमनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः ॥

अहरहरभिवृद्धिं यांतु चैत्यालयास्ते, तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु ॥ ९ ॥

अनेन मंडपांतः समन्तात्पुष्पाक्षतं क्षिपेत् पुष्पांजलिं च विकिरेत् ॥

ततः पुण्याहमुद्घोष्य तदनंतरं सर्वान् जनान् तांबूलगंधपुष्पाद्यैः संतर्पयेत् ।

इति भेरीताडनविधानम् ॥

इति ध्वजारोहणविधिं सभेरी-संताडनं यो विदधाति भव्यः ।

स मोक्षलक्ष्मीनयनोत्पलानां, नक्षत्रनेमित्वमुपैति नूनम् ॥ १० ॥

इस प्रकार जो भव्य ध्वजारोहण विधि और भेरीताडनविधि को करते हैं, वे मोक्षलक्ष्मी के नेत्रकमलों को प्रफुल्लित करने के लिए चंद्रमा के समान हो जाते हैं ।

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलकनाम्नि

ध्वजारोहणविधिर्नाम पंचमः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेवविरचित 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप

ग्रंथ में ध्वजारोहणविधि को कहने वाला यह पांचवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।

अथ षष्ठः परिच्छेदः

अथ जलाधिवासनविधानम् ।

घटयात्रा विधि

अनुष्टुप्छंदः—अथांकुरात्पंचमेऽह्नि जलयात्रामहोत्सवम् । कृत्वा भुक्त्वा दधीतोपवासादानविधिं बुधः ॥१॥

गद्य—तद्यथा—अथांकुरात्पंचमेऽह्नि पूर्वाह्णे दिव्यवसनभूषणमाल्यानुलेपनालंकृतोऽहं महेन्द्रः प्रतीन्द्रदातृसमन्वितोर्ध्वं गजमश्वं वा समारूढः सत्पल्लवच्छन्नमुखान्, दूर्वादध्यक्षतांचितान्, कंठतटलुठत्पुष्पमालान्, फलगर्भान्, कुंभान् दृढतरं बिभ्रतीभिः पतिपुत्रवतीभिः कुलस्त्रीभिर्विमानस्य चतुर्दिक्षुशांतिशुद्ध्यभिधानहोमं विधाय छत्रचामरतौत्रिकध्वजाद्यैर्विश्वं विस्मापयन् मंत्राभ्यस्तान्यवसर्षपान् शांत्यै सर्वदिक्षु क्षिपन् महाभूत्या सरस्तीरं समासाद्य तत्र पद्माकरायार्घ्यं दत्वा शांतिविधिं निष्ठाप्य जलदेवताः प्रसाद्य पूरयित्वा जलैरास्यस्थापितश्रयादिदेवता- कान्कुभांस्ताभिरेव पुरंद्रीभिर्महाभूत्या चैत्यालयमानाय्य तत्र सुरक्षितांस्तान्संस्थाप्य तज्जेलन गर्भावतरणांगं जलाधिवासनं यथाविधि विधातुमुत्सहामहे तराम् ।

(अंकुरारोपण से पांचवें दिन जलयात्रा महोत्सव करके विद्वान्-यजमान आदि भोजन करके उपवास ग्रहण की विधि करें। उसे ही कहते हैं—)

अंकुरारोपण के पांचवें दिन पूर्वाह्ण में दिव्यवस्त्राभूषण माला आदि धारण कर इंद्रप्रतिष्ठाचार्य, प्रतीन्द्र-सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यो एवं दाता-यजमान आदि के साथ उत्तम हाथी या घोड़े पर बैठें। सुवासिनी-पति-पुत्र वाली स्त्रियां मस्तक पर मंगलकलश धारण करें। उन कलशों के गले में पुष्प माला, मुख पर पत्ते व पुष्प हों इत्यादि रूप से सुसज्जित कलशों को लेकर नदी के किनारे जावें। इससे पूर्व मंदिर की चारों दिशाओं में शांतिहोम विधि करें। तथा उन महिलाओं की घटयात्रा के साथ लोग छत्र, चँवर, ध्वजा आदि लेकर चल रहे हों, नाना प्रकार के बाजे बज रहे हों। इस तरह प्रतिष्ठाचार्य मंत्रों का उच्चारण कर मार्ग में शांति के लिए चारों तरफ जौ और सरसों का क्षेपण कर रहे हों। वहां नदी के पास पहुंच कर सरोवर को अर्घ्य देकर शांति विधि करके, जलदेवता को प्रसन्न करें। उन कलशों में जलभरकर उन कुंभों में श्री आदि देवियों की स्थापना विधि करके पुनः उन कुंभों को महिलाओं के मस्तक पर रखाकर पूर्ववत् वैभव के साथ वापस आकर मंदिर जी में उन कलशों को सुरक्षित रख दें। उसी मंत्रित जल से गर्भावतरण आदि क्रियायें करना है।

(विशेष—ऐसे ही भगवान के अभिषेक के लिए और वेदीशुद्धि तथा मंदिर की शुद्धि के लिए भी घटयात्रा विधि से जल्लाना चाहिए।)

अब आगे प्रयोगविधि दिखाते हैं—

आगे का श्लोक व मंत्र बोलकर सरोवर को अर्घ्य चढ़ावें—

पद्मापादनतो महामृतभवानंदप्रदानानृणां । जैनो मार्ग इवावभासि विमलो योगीव शीतीभवन् ।

जैनेन्द्रस्नपनोचितोदकतया क्षीरोदवत्तत्सताम् । पूज्यं त्वां शुभशुद्धजीवननिधिं कासार संपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । (सरोवर को अर्घ्य चढ़ावें)

(पूर्ववत् शांतिकविधि करके समापन करें पुनः जलाशय के पास पहुंचें। वहां अच्छे पवित्र पात्र—थाल में कर्पूर मिश्रित घिसे हुए चंदन से अनार की कलम या सुवर्ण की कलम से जलयंत्र बनावें। यह यंत्र आगे दिया है। यहां यंत्र बनाने की विधि बताते हैं - पहले अष्टदल का कमल बनावें, उसमें कर्णिका पर—‘ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपरब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये नमः’ मंत्र लिखकर पूर्वदिशा आदि में क्रम से अष्टदलों पर नीचे लिखे मंत्र लिखें। अनंतर ‘ह्रीं’ इस माया बीजाक्षर से तीन बार कमल को वेष्टित करें और ‘क्रीं’ मंत्र से रोके।

पुनः मुख और मूल को ‘व’ ‘प’ बीजाक्षर से सहितपद्म पत्र से अंकित करें। ‘प व’ वर्ण से दिक्कोण सहित करके यह जलमंडल बनावें।

इस प्रकार ‘जलाधिवासनयंत्र’ बनाकर आगे कथित श्लोक व मंत्रों से इस यंत्र की पूजा करें। (परिशिष्ट में जलाधिवासन यंत्र देखें)

गद्य—पूर्ववच्छांतिकविधिं विधाय परिसमाप्य ततो जलाशयमुपसद्य, सुपवित्रपात्रे वरकाश्मीरकर्पूरादिना कर्णिकायां ‘ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपरब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये नमः’ इति लिखित्वा पूर्वाघट्टदलेषु क्रमेण ॐ ह्रीं श्रीप्रभृतिदेवताभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं गंगादिदेवताभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाहृददेवेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सीतोदाविद्धमहाहृददेवेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादितीर्थदेवेभ्यः

स्वाहा । ॐ ह्रीं सीतासीतोदामागधादित्थदेवेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं संख्यातीतसमुद्रदेवेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं लोकाभिमततीर्थदेवेभ्यः स्वाहा । इति विलिख्य । त्रिर्मायामात्रया परिक्षिप्य क्रोकारेण निरुध्य ।

मुखमूलवपोपेतपद्मपत्रांकितः सितः । पववर्णाक्तदिवकोणः कलशस्तोयमंडलः ॥३॥

इत्येवं वरुणमंडलं चालिख्य । परब्रह्मार्चनपुरःसरं पत्रेषु जलदेवताः स्वस्वमंत्रपूतजलादिभिरुपचरेत् ॥ तद्यथा—

(आगे के श्लोक व मंत्रों को पढ़कर पहले कर्णिका में अर्हतदेव की पूजा करें, अनंतर क्रम से श्रीदेवी आदि के श्लोक व मंत्रों से क्रम-क्रम से आठ दलों की पूजा करें।)

प्रकाशिताशेषपदार्थसार्थं, जिनेन्द्रचंद्रं जनतापलोपम् ।

पयःपटीराक्षतपुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अनेन कर्णिकामध्ये पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । अनेन तद्वत्प्रतिष्ठापयेत् ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं, समर्पयामि स्वाहा । (यहाँ पृथक्-पृथक् अष्ट द्रव्य चढ़ावें) शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

आठ दलों की पूजा

उपजातिछंद—

श्रीमुख्यदेवीः कुलशैलमूर्ध, पद्मादिपद्माकरसद्मसक्ताः ।

पयःपटीराक्षतपुष्पहव्य - प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीप्रभृतिदेवताभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च । (अर्घ्य चढ़ावें या जल आदि से पृथक्-पृथक् पूजा करें)

गंगादिदेवीरतिमंगलांगा, गंगादिविख्यातनदीनिवासाः ।

पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ॥२॥

ॐ ह्रीं गंगादिदेवीभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

सीतानदीविद्धमहाहदस्थान्, हृदश्वरान्नागकुमारदेवान् ।

पयः पटीराक्षतपुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ॥३॥

ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाहददेवेभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

सीतोत्तरामध्यमहाहदस्थान्, हृदश्वरान्नागकुमारदेवान् ।

पयः पटीराक्षतपुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ॥४॥

ॐ ह्रीं सीतोदाविद्धमहाहददेवेभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि

स्वाहा । शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

क्षीरोदकालोदकतीर्थवर्ति-श्रीमागधादीनमरानशेषान् ।

पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ॥५॥

ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादित्थदेवेभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं

समर्पयामि स्वाहा । शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

सीतातदन्त्यद्वयतीर्थवर्ति-श्रीमागधादीनमरानशेषान् ।

पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ।६॥

ॐ ह्रीं सीतासीतोदामागधादितीर्थदेवेभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा । शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

समुद्रनाथांल्लवणोदमुख्य-संख्याव्यतीतांबुधिभूतिभोक्तृम् ।

पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ।७॥

ॐ ह्रीं संख्यातीतसमुद्रदेवेभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा । शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

लोकप्रसिद्धोत्तमतीर्थदेवान्दीश्वरद्वीपसरःस्थितादीन् ।

पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य-प्रदीपधूपोद्घफलैः प्रयक्ष्ये ।८॥

ॐ ह्रीं लोकाभिमततीर्थदेवेभ्य इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा । शान्तिधारां, पुष्पांजलिं च ।

एवं जलदेवताः प्रसाध्य तत्पूजां जलाशयमध्ये प्रविश्य मंत्रमिमं पठित्वा प्लावयेत् ।

(इस प्रकार जलदेवताओं को प्रसन्न करके उस पूजा द्रव्य को जलाशय में प्रवेश कराकर अर्थात् आगे के मंत्रों से पूजा द्रव्य को जल में डुबो दें)

गंगादयः श्रीप्रमुखाश्च देव्यः, श्रीमागधाद्याश्च समुद्रनाथाः ।

हृदेशिनोऽन्येऽपि जलाशयेशास्ते सारयन्त्वस्य जिनोचितांभः ।९॥

इति पूजाप्लावनमंत्रः ।

(“जो गंगादि देवी, श्रीआदि देवी, मागध आदि देव, समुद्राधिपति, सरोवर निवासी देव व जलाशय के देव हैं, वे सभी इस जिनेंद्रदेव की कल्याणक विधि के लिए उचित जल को शुद्ध करें।” ऐसी प्रार्थना करते हुए इस श्लोक को पढ़कर जलाशय, सरोवर या कुएँ में उस पूजा समेत जलयंत्र को डाल दें यह ‘पूजा प्लावन’ विधि है। इसके बाद प्रतिष्ठाचार्य उस जल से कलशों को भर-भर कर जलाशय के किनारे पहले से बनाये गये चौक पर रखकर उन्हें चंदन, माला, दूब, डाभ आदि से अर्घित करके उन कलशों के मुख श्री आदि मंत्रों से मंत्रित अशोक के पते या आम के पत्तों को रखकर पुनः नारियल या मोसम्बी आदि फलों को रखकर ‘कलशोद्धरण’ मंत्र द्वारा उन कलशों को उठाकर उसी समय सम्मानित की गईं उन सुवासिनी महिलाओं के कर कमलों में देकर शेष कलश अपने हाथों में लेकर हाथी आदि वाहनों पर चढ़कर गाजे-बाजे के साथ चैत्यालय के पास आवें।

गद्य—ततः शक्रास्तज्जलेन कलशान्पूरं पूरं तीरे प्रस्तीर्य चंदनस्रग्दूर्वादभादिभिरभ्यर्च्य तन्मुखेषु श्रयादिमंत्रपूतं पल्लवफलं विन्यस्य, कृतकलशोद्धारमंत्रोपहारोपस्कारानेतानेकशः स्वयमुद्धृत्य, तत्क्षणसंमानितपुरंध्रीपाणिपद्मेषु सार्ज्यं। शेषकलशान्निजकरैरुद्धहन्तो । गजादिवाहनान्यारुह्य महोत्सवेनाभिचैत्यालयमागच्छेयुः ।

जलाशय के कलशों को मंत्रित करने की विधि—

जल भरे कलशों को मंत्रित करने का मंत्र

ॐ ह्रीं श्री-ही-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-शांति-पुष्टयः श्रीदिवकुमार्यो जिनेंद्रमहाभिषेककलशमुखेष्वेतेषु नित्यविशिष्टा भवत भवतेति स्वाहा ।

आगे का श्लोक बोलकर कलशों को उठाकर सुवासिनी स्त्रियों को दें—

तीर्थेनानेन तीर्थांतरदुरधिगमोदारदिव्यप्रभाव-स्फूर्जतीर्थोत्तमस्य प्रथितजिनपतेः प्रेषितप्राभृताभान् ।

श्रीमुख्यख्यातदेवीनिवहकृतमुखाद्यासनोद्भूतशक्ति-प्रागल्भ्यानुद्धरामो जयजयनिनदे शातकुंभीयकुंभान् ।१०॥

इति तीर्थोदकादानविधानम् ।।

(इस प्रकार तीर्थोदक लाने की—घटयात्रा की विधि पूर्ण हुई।)

अथ उपवासादानविधेः प्रयोगः

उपवास ग्रहण विधि

गद्य—अथेन्द्राः प्रतीन्द्रपरिचारकसहिताः स्नात्वा, जिनादीनभ्यर्च्य, लोकं संतर्प्य, स्वादुतरं हितमितमन्नं भुक्त्वा, युवतीभिः कृत्रिकमांगल्याः समुचितवाहनान्यारुह्य, पत्युरभीष्टसिद्धिरस्त्विति वादिनीभिः स्त्रीभिर्दत्तानि पाणिपात्रात्फलानि शकुनेच्छया गृहीत्वा, यक्षांगपरिच्छदान्वितां यज्ञभूमिं समासाद्य, तत्र निसहीत्युच्चार्य यागभूमिं प्रविश्य, जिनास्त्रिःपरीत्य, त्रिरानम्य ईर्यापथशुद्धिं कृत्वा, जिश्रुतगुरुनभ्यर्च्य गुरोरनुज्ञया बृहत्सिद्धयोगभक्तौ विधाय। गुरोरनुज्ञया अन्नखाद्यलेह्यत्रिविधाहारपरित्यागं त्रिविधोपवासं मायज्ञानमादाय, ततोबृहदाचार्यभक्तिं कृत्वा गुरोः पादांभोजं प्रणम्य तस्याशिषो गृहीत्वा यज्ञांगं सन्निधापयेयुः इत्युपवासादानविधिः। तत्क्रियाप्रयोगे दिङ्मात्रमिदमुदाह्रियते।

(अनंतर इंद्र—प्रतिष्ठाचार्य अपने सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यों सहित स्नान करके जिनेंद्रदेव आदि की पूजा करके लोगों को संतर्पित करके स्वादिष्ट, हितकर और परिमित ऐसा भोजन करें पुनः जिनकी सुवासिनी स्त्रियों ने आरती उतारी है तथा जिन्हें “आपको अभीष्ट सिद्धि हो” ऐसा कहते हुये स्त्रियों ने हाथों में फल दिये हैं और उन्होंने शुभशकुन की इच्छा से ग्रहण किया है, ऐसे प्रतिष्ठाचार्यगण यज्ञभूमि में पहुंचे वहां ‘निःसही’ शब्द का उच्चारण करके यागभूमि में प्रवेश करके जिनेंद्रदेव की तीन प्रदक्षिणा करके तीन बार नमस्कार करके ईर्यापथ शुद्धि पाठ पढ़ें। जिन, श्रुत और गुरुओं की पूजा करके गुरु की आज्ञा से बृहत् सिद्धभक्ति और बृहत् योगिभक्ति पढ़कर गुरु से त्रिविध उपवास की याचना करें। गुरु भी दिगंबर जैनाचार्य या समय पर मुनि, आर्यकाएँ जो भी हों वे अन्न, खाद्य और लेह्य ऐसे तीन प्रकार के आहार का ‘प्रतिष्ठा विधि’ पूर्ण होने पर्यंत त्याग करा दें। इसे त्रिविध उपवास कहते हैं। इसमें केवल पेय-दूध, रस, मट्ठा आदि लेने को कहा है।

(आजकल एक बार शुद्ध अन्न का भोजन व दूसरी बार फलाहार ऐसा नियम दिया जाता है।)

इसके बाद प्रतिष्ठाचार्य और यजमान आदि बृहत् आचार्यभक्ति पढ़कर गुरु को नमस्कार करें और गुरु का आशीर्वाद ग्रहण करें। इसकी प्रयोगविधि दिखलाते हैं—

भगवन्नमोस्तु ते एषोहमर्हत्प्रतिष्ठारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

इत्युच्चार्य। नमो अरिहंताणमित्यादि चत्वारिदंडकं पठित्वा थोस्सामीत्यादि स्तवं चाधीत्य। सिद्धभक्तिं पठित्वा। इच्छामि भंते इत्याद्यालोचनां पठेत्।

अथ पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं योगिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

इत्युच्चार्य। नमो अरिहंताणमित्यादि चत्वारिदंडकं पठित्वा थोस्सामीत्यादि स्तवं चाधीत्य। योगिभक्तिं पठित्वा। इच्छामि भंते इत्याद्यालोचनां पठेत्।

अथ पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीमदाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(ऐसी प्रतिज्ञा करके)

नमो अरिहंताणं से लेकर चत्वारिमंगल आदि सामायिक दण्डक पढ़कर नव बार नमोकार मंत्र का जाप करें।

पुनः थोस्सामि स्तवं पढ़कर ‘तव सिद्धे’ आदि सिद्धभक्ति पृष्ठ १७ से पढ़कर इच्छामि भंते इत्यादि अंचलिका पढ़कर पूर्वोक्त विधि से योगिभक्ति पृष्ठ २४२ से पढ़ें। अनंतर उपवास या जैसा भी हो, नियम लेकर रात्रि में चतुर्विध आहार त्याग कर आचार्यभक्ति पृष्ठ ३३६ से पढ़कर क्रिया पूर्ण करें।

इत्थं प्रतिष्ठाविधिसिद्धये यस्तीर्थोदकादानविधिं विधत्ते। स्वात्मोपलंभार्णवनित्यपूर्णनक्षत्रनेमित्वमुपैतिसम् ॥

॥ इत्युपवासादानविधानम् ॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलकनाम्नि

तीर्थोदकादानविधिर्नाम षष्ठः परिच्छेदः।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित ‘प्रतिष्ठातिलक’ नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप ग्रंथ में तीर्थोदक लाने का—घटयात्रा विधि को कहने वाला यह छठा परिच्छेद पूर्ण हुआ।

अथ सप्तमः परिच्छेदः

अथ महायागमंडलाराधना

अथांकुरार्पणदिनात् षष्ठे तु दिवसे दिवा। विदधीत महायागमंडलाराधनां सुधीः॥

गद्य—तद्यथा—अथ सकलविमलकेवलाख्यपरंज्योतिःस्वरूपभगवदहर्त्परमेश्वरगर्भावतरणकल्याणचिकीर्षया स्नानानुस्नान-विशुद्धाश्चैत्यालयमुपेत्य पूजामुखविधिं विधाय, जिनेश्वरस्याष्टविधार्चनं, सिद्धाराधनां, महर्षिपर्युपासनं, स्वस्त्ययनविधिं, यज्ञदीक्षाविधानं, भूमिशुद्धिं, मंडपप्रतिष्ठां, यागमंडलवर्तनविधानं च कुर्वाणा एते वयं गर्भावतरणकल्याणांगभूतां यागमंडलास्त्रिणां यथाविधि विधातुमुत्सहामहे॥

गद्य का अर्थ—यहां महायागमंडल विधान से पूर्व की आराधना विधि कहते हैं। इसमें अंकुरारोपण दिन से छठे दिवस में बुद्धिमान, प्रतिष्ठाचार्य “महायागमंडल” की आराधना विधि करें।

उसे ही स्पष्ट करते हैं—सकल-विमल केवलज्ञानमय परंज्योतिस्वरूप अर्हंत परमेश्वर के गर्भावतरण कल्याणक को करने की इच्छा से जलस्नान, मंत्रस्नान और व्रतस्नान से शुद्ध होकर चैत्यालय में आकर पूजामुख विधि करके अर्हंतदेव की अष्टद्रव्य से पूजा, सिद्धों की पूजा, महर्षियों की पूजा, स्वस्तिपाठ विधि, यज्ञदीक्षाविधि, भूमिशोधनविधि, मंडलप्रतिष्ठा और यागमंडल बनाने की विधि को करते हुये हम सभी भगवान के गर्भावतरण कल्याणक के लिये अंगभूत—अवयवरूप ऐसी यागमंडल आराधना को विधिवत् करने के लिये उत्साहित हो रहे हैं।

पुनः स्नानादि—मंत्रस्नान अर्थात् संध्यावंदन विधि से लेकर “सिद्धभक्तिपर्यंत “पूजामुखविधि” को विधिवत् करके निःश्रेयस—मोक्ष और अभ्युदय—सांसारिक नानाविध सौख्य के लिये कारण ऐसे “श्रीयंत्र” की पूजा के उत्सव को मैं प्रारंभ करता हूँ।

स्नानादिसिद्धस्तवनावसानं, पूजामुखं तद्विधिना विधाय।

निःश्रेयसस्याभ्युदयस्य चांगं, श्रीयंत्रपूजोत्सवमारभेऽहम्॥१॥ प्रस्तावनापुष्पांजलिः॥

अनुष्टुप्छंद—जिनानामपि सिद्धानां, महर्षीणां समर्चनात्। पाठात्स्वस्त्ययनस्यापि, मनः पूर्वं प्रसादये॥२॥

मनःप्रसतिसूचनार्थं अर्चनापीठाग्रतः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(मन की प्रसन्नता को सूचित करने के लिये मंडल के सामने थाली में पुष्पांजलि क्षेपण करें)

॥ इतो जिनयज्ञविधानम् ॥

अर्हंत पूजा

शार्दूलविक्रीडित—आहूता भवनामरैरनुगता, यं सर्वदेवास्तथा। तस्थौ यास्त्रिजगत्सभांतरमहा-पीठाग्रसिंहासने।

यं हृद्यं हृदि सन्निधाप्य सततं, ध्यायति योगीश्वर-स्तं देवं जिनमर्चितं कृतधिया-मावाहनाद्यैर्भजे॥१॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हं! एहि एहि संवौषट् ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हं! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उसा अर्हं! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥ स्थापनं ।

तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथगिमान्मंत्रानुच्चारयन् पुष्पांजलिं प्रयुंजीत॥

(तीर्थजल से जिनदेव के चरणों का प्रक्षालन करके उनके आगे पृथक्- पृथक् उपर्युक्त मंत्रों का उच्चारण करके स्थापना करें।)

अथाष्टकम्

यत्रागाधविशालनिर्मलगुणे, लोकत्रयं सर्वदा। सालोकं प्रतिबिंबितं प्रविशतां, नित्यामृतानंदनम्।

सर्वाब्जानिमिषास्पदं स्मृतिगतं, तापापहं धीमता। महर्त्तीर्थमपूर्वमक्षयमिदं, वार्धारया धारये॥१॥

ॐ हीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये जलम् निर्वपामीति स्वाहा॥

गंधश्वंदनगंधबन्धुरतरौ, यद्विव्यदेहोद्भवो । गंधर्वाद्यमरस्तुतो विजयते, गंधांतरं सर्वतः ।

गंधादीनखिलानवैति विशदं, गंधादिमुक्तोऽपि यः । तं गंधाद्यधगंधमात्रहतये, गंधेन संपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

इंद्राहीन्द्रसमर्चितैरनुपमैर्दिव्यैर्वलक्षाक्षतैर्यस्य श्रीपदसन्नखेदुसविधे, नक्षत्रजालायितम् ।

ज्ञानं यस्य समक्षमक्षतमभूद्वीर्यं सुखं दर्शनम् । यायज्यक्षतसंपदे जिनमिमं, सूक्ष्माक्षतैरक्षतैः ॥३॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्य द्वादशयोजने सदसि, सद्गंधादिभिः स्वोपमा-नप्यर्थात्सुमनोगणान्सुमनसो वर्षन्ति विष्वक्सदा ।

यः सिद्धिं सुमनःसुखं सुमनसां, स्वं ध्यायतामावहेत् । तं देवं सुमनोमुखैश्च सुमनो-भेदैः समभ्यर्चये ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्व्याबाधविवर्जितं निरुपमं, स्वात्मोत्थमत्पूजितम् । नित्यानन्दसुखेन तेन लभते, यस्तृप्तिमात्यन्तिकीम् ।

यं चाराध्य सुधाशिनो ननु सुधा-स्वादं लभते चिरम् । तस्योद्यद्रसचारुणैव चरुणा, श्रीपादमाराधये ॥५॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्यान्यस्य सहप्रकाशनविधौ, दीपोपमोप्यन्वहम् । यः सर्वं ज्वलयन्ननंतकिरणै-स्त्रैलोक्यदीपोऽस्त्यतः ।

येनोद्दीपितधर्मतीर्थमभवत्सत्यं विभोस्तस्य सद्दीप्त्यादीपितदिङ्मुखस्य चरणौ, दीपैः समुद्दीपये ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

येनेदं भुवनत्रयं चिरमभू-दुद्धूषितं सोप्यहो । मोहो येन सुद्धूषितो निजमहा-ध्यानाग्निना निर्दयम् ।

यस्यास्थानपथस्थधूपघटजै-र्धूमैर्जगद्धूषितम् । धूपैस्तस्य जगद्धशीकरणसद्धूपैः पदं धूपये ॥७॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्भक्त्या फलदायि पुण्यमुदितं, पुण्यं नवं बध्यते । पापं नैव फलप्रदं किमपि नो, पापं नवं प्राप्यते ।

आर्हन्त्यं फलमद्भुतं शिवसुखं, नित्यं फलं लभ्यते । पादौ तस्य फलोत्तमादिसुफलैः, श्रेयःसमाराधये ॥८॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंगं लाति मलं च गालयति यन्मुख्यं ततो मंगलम् । देवोर्हन्वृषमंगलोऽभिविनुतैस्तैर्मंगलैः साधुभिः ।

चंचच्चांमरतालवृंतमुकुरै-र्मुख्येतैर्मंगलम् । मुख्यं मंगलमिद्धसिद्धसुगुणान्संप्राप्तुमाराधये ॥९॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये मंगलद्रव्यार्चनं करोमि स्वाहा ।

ज्वलितसकललोकालोकलोकोत्तरश्री-कलितललितमूर्ते कीर्तितेन्द्रैर्मुनीन्द्रैः ।

जिनवर तव पादोपांततः पातयामो, भवदवशमनार्थामर्थतः शांतिधाराम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं शांतिधारां करोमि स्वाहा ।

पुष्पेषोरिषवो वयं पुनरिदं, पुष्पेषुनिष्पेषकम् । निष्पीतानि मधुव्रतैर्वयमिदं, निष्पापसंसेवितम् ।

इत्यालोच्य नमन्त्यपास्य मदमित्याशंकयंतीश ते । निष्पीताखिलतत्त्वपादकमले पुष्पाणि निष्पातये ॥११॥

ॐ ह्रीं पुष्पांजलिः ।

वार्गधतण्डुललतांतचरुप्रदीपै-र्धूपैः फलैः कनकपात्रगतैर्जिनाग्रे ।

नद्यादिवर्तदधिस्वस्तिकदर्भदूर्वासिद्धार्थकैश्च कृतमर्घ्यमिहोद्धरामः ॥१२॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ स्तुतिः - (जयमाला)

वसंततिलकाष्टदं—

तुभ्यं नमो दशगुणोर्जितदिव्यगात्र, कोटिप्रभाकरनिशाकरजैत्रतेजः ॥
 तुभ्यं नमोतिचिरदुर्जयघातिजात-घातोपजातदशसारगुणाभिराम ॥ १ ॥
 तुभ्यं नमः सुरनिकायकृतैर्विहारे, दिव्यैश्चतुर्दशविधातिशयैरुपेत ॥
 तुभ्यं नमस्त्रिभुवनाधिपतित्वचिन्ह-श्रीप्रातिहार्याष्टकलक्षितार्हन् ॥ २ ॥
 तुभ्यं नमः परमकेवलबोधवार्धे, तुभ्यं नमः समसमस्तपदावलोक ॥
 तुभ्यं नमो निरुपमाननिरंतवीर्य, तुभ्यं नमो निजनिरंजननित्यसौख्य ॥ ३ ॥
 तुभ्यं नमः सकलमंगलवस्तुमुख्य, तुभ्यं नमः शिवसुखप्रद पापहारिन् ॥
 तुभ्यं नमस्त्रिजगदुत्तमलोकपूज्य, तुभ्यं नमः शरणभूत्रय रक्ष रक्ष ॥ ४ ॥
 तुभ्यं नमोस्तु नवकेवलपूर्वलब्धे, तुभ्यं नमोस्तु परमैश्वर्योपलब्धे ।
 तुभ्यं नमोस्तु मुनिकुंजरयूथनाथ, तुभ्यं नमोस्तु भुवनत्रितयैकनाथ ॥ ५ ॥

॥ इति जिनाचार्यभिमुखं स्तुतिं पठेत् ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथातः सिद्धार्चनविधानम्

सिद्धपूजा

आहूता इव सिद्धिमुक्तिवनितां, मुक्तान्यसंगा ययु-स्तिष्ठन्त्यष्टमभूमिसौधशिखरे, सानंतसौख्यास्पदाः ॥
 साक्षात्कुर्वत एव सर्वमनिशं, सालोकलोकं समं । तानद्धेच्छविशुद्धसिद्धनिकरा-नावाहनाद्यैर्भजे ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अथाष्टकम्

गंगादितित्थप्पहदप्पएहिं, सगंधदा णिम्मलदापएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ट सिद्धे, सव्वट्ट संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गंधेहिं घाणाण सुहप्पएहिं, समच्चयाणंपि सुहप्पएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ट सिद्धे, सव्वट्ट संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये गंधं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

पेरंतछोणीसियकारणेहिं, वरक्खएहिं सियकारणेहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परम सिद्धे, सव्व संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पुप्फेहिं दिव्वेहिं सुवण्णएहिं, कव्वेकईसेहि सुवण्णएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परम सिद्धे, सव्व संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

बब्भेहि णाणासुरसप्पएहिं, भव्वाणणाणायिरसप्पएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परम सिद्धे, सव्व संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये चरुं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

देदिव्वमाणप्पहदीवएहिं, संवूयआणं सिरिदीवएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परम सिद्धे, सव्व संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कालाअरुब्भूयसुहूवएहिं, जीयाण पावाण सुहूवएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परम सिद्धे, सव्व संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

अणग्घभूएहिं फलव्वएहिं, भवस्स संदिण्ण फलव्वएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परम सिद्धे, सव्व संपादय सव्वसिद्धे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

णएण णाणेण य दंसणेण, तवेण उट्टेण य संजमेण ॥

सिद्धे तियाले सुविसुद्धबुद्धे, समग्घयामो सयले विसुद्धे ॥

ॐ ह्रीं जलादियज्ञांगदूर्वादधिसिद्धार्थादिमंगलद्रव्यविनिर्मितमहाघर्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

एवं अर्हत्प्रतिमाग्रे सिद्धानभ्यर्च्य भक्त्या स्तुवीत ॥ (इस प्रकार अर्हत प्रतिमा के सामने सिद्धों की पूजा करके भक्ति से स्तुति करें)

अथ स्तुतिः

नमस्ते पुरुषार्थाय परां काष्ठां अधिष्ठित । सिद्धभट्टारकस्तोम निष्ठितार्थ निरंजन ॥ १ ॥

स्वप्रदाय नमस्तुभ्यमचलाय नमोस्तु ते । अक्षयाय नमस्तुभ्यमव्याबाधाय ते नमः ॥ २ ॥

नमस्तेऽनंतविज्ञानदृष्टिवीर्यसुखास्पद । नमो नीरजसे तुभ्यं निर्मलाय तु ते नमः ॥ ३ ॥

अच्छेद्याय नमस्तुभ्यं अभेद्याय नमो नमः । अक्षताय नमस्तुभ्यं अप्रमेयाय ते नमः ॥ ४ ॥

नमोस्त्वगर्भवासाय नमो गौरवलाघव । अक्षोभ्याय नमस्तुभ्यमविलीनाय ते नमः ॥ ५ ॥

नमः परमकाष्ठात्मयोगरूपत्वमीयुषे । लोकाग्रवासिने तुभ्यं नमोऽनंतगुणाश्रय ॥ ६ ॥

निःशेषपुरुषार्थानां निष्ठां सिद्धिमधिष्ठित । सिद्धभट्टारकव्रात भूयो भूयो नमोस्तु ते ॥ ७ ॥

विविधदुरितशुद्धान् सर्वतत्त्वार्थबुद्धान् । परमसुखसमृद्धान्युक्तिशास्त्राविरुद्धान् ॥ ८ ॥

बहुविधगुणवृद्धान्सर्वलोकप्रसिद्धान् । प्रमितसुनयसिद्धान्संस्तुवे सर्वसिद्धान् ॥ ९ ॥

इति सिद्धभक्तिविधानम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये जयमाला अघर्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथातो महर्षिपर्युपासनविधिः (महान ऋषियों की पूजा—गुरुपूजा)

ये येऽनगारा ऋषयो यतीन्द्रा । मुनीश्वरा भव्यभवद्भ्यतीताः ।

तेषां समेषां पदपंकजानि । संपूजयामो गुणशीलसिद्धयै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्रचतुरशीतिलक्षगुणगणधरचरणा ! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्रचतुरशीतिलक्षणगुणगणधरचरणा ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्रचतुरशीतिलक्षणगुणगणधरचरणा ! अत्र मम सन्निहिता भवत
 भवत वषट् ।

अथाष्टकम्

अनुष्टुप्छन्द— सुगंधिशीतलैः स्वच्छैः, स्वादुभिर्विमलैर्जलैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सारकपूरकाश्मीर-कलितैश्चंदनद्रवैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः गंधम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षतैरक्षतैः सूक्ष्मैर्वलक्षैर्ऋक्षसनिभैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्पैः प्रसरदामोदाहतपुष्पंधयावृतैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

हव्यैर्नव्यघृतापूप-पायसव्यंजनान्वितैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः चरुम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

कर्पूरप्रभवैर्दीपैर्दीप्त्या दीपितदिङ्मुखैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दशांगधूपसद्धूमैर्दशाशापूर्णसौरभैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

चोचमोचाग्रजंबीर-फलपूगादिसत्फलैः । सार्धद्वीपद्वयातीत भवद्भव्ययतीन्यजे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः फलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

गुणमणिगणसिंधून्भव्यलोकैकबन्धून् । प्रकटितनिजमार्गान्ध्वस्तमिथ्यात्वमार्गान् ।

परिचितनिजतत्त्वान्यालिताशेषसत्त्वान् । शमरसजितचन्द्रानर्घ्ययामो मुनीन्द्रान् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ स्तुतिः

ये सर्वतीर्थप्रभवा गणेन्द्राः, सप्तर्द्धयो ज्ञानचतुष्टयाढ्याः ।

तेषां पदाब्जानि जगद्धितानां, वचोमनोमूर्धसु धारयामः ॥ १ ॥

तपोबलाक्षीणरसौषधर्द्धीन्, विज्ञानऋद्धीनपि विक्रियर्द्धीन् ।

सप्तर्द्धियुक्तानखिलानृषीन्द्रान्-स्मरामि वंदे प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥

सर्वेषु तीर्थेषु तदन्तरेषु, सप्तर्षयो ये महिता बभूवुः ।

भवांबुधेः पारमिताः कृतार्था, भवंतु नस्ते मुनयः प्रसन्नाः ॥ ३ ॥

ये केवलीन्द्राः श्रुतकेवलीन्द्रा, ये शिक्षकास्तुर्यतृतीयबोधाः ।

सविक्रिया ये वरवादिनश्च, सप्तर्षिसंज्ञानिह तान्प्रवन्दे ॥ ४ ॥

प्रमत्तमुख्येषु पदेषु सार्ध-द्वीपद्वये ये युगपद्भवन्ति ।
उत्कर्षतस्तान्नवकोटिसंख्यान्-वंदे त्रिसंख्यारहितान्मुनीन्द्रान् ॥५॥

॥ इति महर्षिपर्युपासनविधिः ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथातः स्वस्त्ययनविधानम्

स्वस्तिपाठ

(प्रत्येक श्लोक को पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

उपजातिछंद —

श्रीपंचकल्याणमहार्हणार्हा, वागात्मभाग्यातिशयैरुपेताः ॥
तीर्थंकराः केवलिनश्च शेषाः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहन्तु ॥१॥
ये शुद्धमूलोत्तरसद्गुणानां, आधारभावादनगारसंज्ञाः ।
निर्ग्रन्थवर्या निरवद्यचर्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥२॥
ये चाणिमाद्यष्टसविक्रियाद्व्या-स्तथाक्षयावासमहानसाश्च ।
राजर्षयस्ते सुरराजपूज्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥३॥
ये कोष्ठबुध्यादिचतुर्विधर्द्धिरवापुरामर्षमहौषधर्द्धिः ।
ब्रह्मर्षयो ब्रह्मणि तत्परास्ते, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥४॥
जलादिनानाविधचारणा ये, ये चारणाग्न्यांबरचारणाश्च ।
देवर्षयस्ते नतदेववृन्दाः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥५॥
सालोकलोकज्वलनैकतानं, प्राप्ताः परंज्योतिरनंतबोधम् ।
सर्वर्षिवंद्याः परमर्षयस्ते, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥६॥
श्रेणिद्वयारोहणसावधानाः, कर्मोपशान्तिक्षपणप्रवीणाः ।
ये ते समस्ता मुनयो महान्तः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥७॥
समग्रमध्यक्षमिताश्च देश-प्रत्यक्षमत्यक्षसुखानुरक्ताः ।
मुनीश्वरास्ते जगदेकमान्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥८॥
उग्रं च दीप्तं च तपोभितप्तं, महच्च घोरं च तरां चरन्तः ।
तपोधना निर्वृत्तिसाधनोक्ताः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥९॥
मनोवचःकायबलप्रकृष्टाः, स्पष्टीकृताष्टांगमहानिमित्ताः ।
क्षीरामृतास्राविमुखा मुनीन्द्राः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥१०॥
प्रत्येकबुद्धप्रमुखा मुनीन्द्राः, शेषाश्च ये ये विविधर्द्धियुक्ताः ।
सर्वेपि ते सर्वजनीनवृत्ताः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ॥११॥

शार्दूलविक्रीडित —

शापानुग्रहशक्तिताद्यतिशयै-रुच्चावचैरंचिता । ये सर्वे परमर्षयो भगवतां, तेषां गुणस्तोत्रतः ।

एतत्स्वस्त्ययनादपैति सकलः, संक्लेशभावः शुभो । भावः स्यात्सुकृतं च तच्छुभविधे-रादाविदं श्रेयसे ॥१२॥

इति स्वस्त्ययनं मनःप्रसादनविधानम् ॥

अथातो यज्ञदीक्षाविधानम्

(यज्ञ दीक्षा विधि)

न्यस्याहद्विष्टरे धृत्वा-नादिमंत्राभिमंत्रितम् ॥ प्रसाधनं गुरोरग्रे, यज्ञदीक्षामुपाश्रये ॥१॥

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं । णमो उवज्जायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ ह्रीं क्रौं शान्तिं^१ कुरु कुरु स्वाहा । अयमनादिसिद्धमंत्रः ॥

अथ वस्त्रादिप्रसाधनाभिमंत्रणम्

(चंदन, माला, मुकुट आदि प्रसाधन वस्तुयें एकपात्र में लेकर भगवान के सामने रखना, पुनः अनादिसिद्ध मंत्र बोलकर मंत्रित करके आगे-आगे के मंत्रों को बोल-बोलकर उन-उन वस्तुओं को ग्रहण करना या मंत्रित चंदन उन-उन वस्त्र आदि में लगाते रहना ।

जिनमतमिव सूक्ष्मं यत्सुखस्पर्शदक्षं । क्षपितविविधबाधं, साध्वलंकारमुख्यम् ।

शुचित्रमपदोषं सद्गुणं तद्वधेहं । परमजिनमखेऽस्मिन्सांतरीयोत्तरीयम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीये धारणीये हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा । वस्त्रावरणम् ॥ (वस्त्र धारण करना अथवा धोती दुपट्टे आदि वस्त्रों को स्पर्श करना)

पवित्रभूमिप्रभवैः पवित्रैः, पवित्रमुद्रासहितं सुदृब्धम् ।

पवित्रताकृन्मम सव्यहस्ते, त्वनामिकायां निदधे पवित्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं पवित्रं धारयामि स्वाहा ॥

(दाहिने हाथ की अनामिका में पवित्र धारण करना, यह गीले डाभ का छल्ला जैसा बनाया जाता है)

सुशीतलेनोक्तवदहर्दीशो, यशोवदुच्चैर्विशदेन तस्य ।

तदंगवन्मंगलगंधभाजा, समालभेऽंगं मम चन्दनेन ॥४॥

श्रीचंदनानुलेपनम् ॥ (चंदन लगाना)

चेतश्चमत्कारकरी जनानां, गंधादिना या विदुषां विशेषात् ।

स्वर्भोगमालावहदिव्यशक्त्या, मालां दधे मूर्ध्नि जिनार्चितां तां ॥५॥

स्रग्धारणम् ॥ (माला पहनना)

दृग्बोधचारित्रगुणत्रयेण, धृत्वा त्रिधौपासकभावसूत्रम् ।

द्रव्यं च सूत्रं त्रिगुणं समुक्ता-फलं तदारोपणमुद्वहामि ॥६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । इति ब्रह्मसूत्रं विभ्रूयात् ॥ (जनेऊ धारण करें)

जिनेश्वराज्ञाभरवद्विशिष्टै-र्धार्यं महाहार्यगुणौघरत्नम् ।

मूर्ध्ना वहेयं मुकुटं महान्तं, चंचत्प्रभामंडितकुंडलाभ्याम् ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा । कुंडलविशिष्टमुकुटोपयोगः ॥ (कुंडल और मुकुट पहनना)

१. ॐ ह्रीं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा । ऐसा भी पाठ है ।

आसन्नभव्ये जिनभक्तिमुख्या, गुणा यथायोगमुपव्रजन्ति ।
तथैव यस्मिन्मणयो महान्तः, करे ममैतत्कटकं करोमि ॥८॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥ कंकणप्रणयनम् ॥ (हाथ में कंकण पहनना)
उन्मुद्रिताशेषविनेयपद्म, श्रीकेवलार्कोदयपूर्वशैलम् ।
यष्टुं जिनं जीवदयासमुद्रं, मुद्रां दधे चारुमनामिकायाम् ॥९॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा । मुद्रिकास्वीकारः ॥ (अंगुली में अंगूठी पहनें)
दृग्बोधदेशव्रतरूपरत्न-त्रयं भवन्मे कलितोपवासम् ।
आकर्म्मिकाब्रह्मनिवृत्तियुक्तं, स्याद्यज्ञदीक्षाविधिना विशिष्टम् ॥१०॥

अहर्देवयज्ञदीक्षाङ्गीकारः ॥ (अर्हंतदेव की प्रतिष्ठा होने पर्यंत यह यज्ञदीक्षा स्वीकार की गई है)
रत्नत्रयाङ्गमुपवीतमुरस्यथाङ्ग - देशव्रतस्य वसुकंकणमत्र हस्ते ।
ब्रह्मव्रताङ्गमधुना स्वकटौ च मौर्जी, धृत्वारभे जिनमखं मखदीक्षितोहम् ॥११॥

दीक्षाचिन्होद्ग्रहणम् ॥

(रत्नत्रय का सूचक जनेऊ, देशव्रत का सूचक हाथ में कंकण, ब्रह्मचर्य व्रत का सूचक कमर में कंदोरा धारण करें। पुरुषों के दाहिने हाथ में कलावा—पंचवर्णी सूत्र का कंकण बांधना और महिलाओं के बायें हाथ में बांधना। अनुष्ठानपर्यंत ब्रह्मचर्यव्रत, पाँचअणुव्रत दिया जाता है।)

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रीं हः श्रूं हूं क्षः इंद्राय संवौषट् ॥

अनेनैकविंशतिवारानात्मानमधिवासयेत् (इस मंत्र से २१ बार पुष्पाक्षत यजमानों के मस्तक पर डालकर उन्हें 'इंद्र' बनावे।)
इति यज्ञदीक्षाविधानम् ॥

अथ भूमिशोधनम् भूमिशोधन विधि

घंटाटंकारवीणाक्वणितमुरज-धां-धां क्रियाकाहलाच्छे - छेकारोदारभेरीपटहधलधलंकारसंभूतघोषे ।

आक्रम्याशेषकाष्ठातटमथ झटिति प्रोच्चत्युद्भटेऽभ्रं । शिष्टाभीष्टार्हदिष्टिप्रमुख इह लतांतांजलिं प्रोत्क्षिपामः ॥१२॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नमः । स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व
अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं माङ्गल्यं माङ्गल्यं पुष्पांजलिः ॥ सोदकानि पुष्पाणि क्षिपेत् ॥
(पुष्पांजलि करें)

क्षेत्रं मखेऽस्मिन्परिपालयन्तं, विघ्नानशेषानपसारयन्तम् ।

वैश्वानराशापरिकल्पितेन, श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि ॥१२॥

ॐ ह्रीं अत्र स्थितक्षेत्रपालाय स्वाहा । इति क्षेत्रपालार्चनम् । (क्षेत्रपाल को अर्घ्य चढ़ावें)

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं ।

प्रागेव वास्तुमिह कल्पितयज्ञभाग-स्यैशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि ॥१३॥

ॐ ह्रीं वास्तुदेवाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां ।

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ।

हुत्वारचितो वायुकुमार देव, त्वं वायुना शोधय यागभूमिम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां ॥ महीं पूतां कुरु कुरु हुं
फट् स्वाहा ॥ षड्दर्भपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत् ॥ (डाभ के पूले से जमीन का शोधन करें)

विहारकाले जगदीश्वराणा - मवाप्तसेवार्थकृतापदान ।

हुत्वारचितो मेघकुमारदेव, त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम् ॥५॥

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां । धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा । षड्दर्भपूलोपात्तजलेन भूमिं सिचेत् ॥ (डाभ के पूले से जल लेकर भूमि पर छिड़कें)

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैर्निर्वाणपूजासु कृतापदान ।

हुत्वारचितो वन्हिकुमारदेव, त्वं ज्वालाया शोधय यागभूमिम् ॥६॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां । भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा ।

ज्वलद्वर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालेत् । (डाभ जलाकर या कपूर जलाकर भूमि शुद्ध करें) ॥

प्राचीमैशानीं चांतरा वातकुमारादिस्थापनम् ॥ (पूर्व और ईशान के मध्य में वायुकुमारादि की स्थापना करना)

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवन्त्ववार्या भुवि कामचाराः ।

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त, सुधोपमानांजलिपूर्णवार्भिः ॥७॥

ॐ ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । इदमर्घ्यं.. । नागतर्पणार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् ।

(नागसंतर्पण हेतु ईशान दिशा में जलांजलि दें)

दर्भस्थापनविधि

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्टासु पुनः क्रमेण ।

दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञ-विघ्नौघविध्वंसकृते समंत्रम् ॥८॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

परमब्रह्मभूयात्परमाप्तजिनक्रतौ । ब्रह्मस्थाने स्थितं कुर्वे, दर्भं विघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा ॥ ब्रह्मदर्भः ॥ (ब्रह्मस्थान में दर्भ स्थापना करें)

ॐ सर्वज्ञस्य यज्ञेशो, यज्ञेऽस्मिन्निदधे कुशम् । शतयज्ञहरिद्भागे, यज्ञविघ्नविदारणम् ॥२॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय अनंतदर्शनाय अनंतवीर्याय अनंतसुखाय पूर्वदिङ्मुखे दर्भमवस्थापयामि नमः स्वाहा ।

इन्द्रदर्भः ॥ (पूर्व दिशा में दर्भ स्थापित करें)

ॐ विश्वदोषसंप्लुष्टाद्यागे वैश्वानरात्मनः । वैश्वानरहरिद्भागे, कुशखंडं निवेशये ॥३॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । जिनाय स्वाहा । जिनोत्तमाय स्वाहा । धवाय स्वाहा ।

धवोत्तमाय स्वाहा । शुचिष्ठाशुचिष्ठेषु । कोणाकोणेषु । आग्नेय्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । अग्निदर्भः ॥

(आग्नेयदिशा में डाभ स्थापित करना)

ॐ वैवस्वतमहामूर्ते, वैवस्वत्कोटिदीधितेः । यागे वैवस्वताशायां, दर्भखंडं विदध्महे ॥४॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्याय । जितेन्द्रियाय । दक्षिणस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ॥ यमदर्भः ॥ (दक्षिण दिशा

में दर्भ स्थापित करना)

ॐ क्षमामयक्षमामूर्तेः, पुण्यराशेर्महामहे । पुण्ये पुण्यजनाशायां, दर्भन्यासं विदध्महे ॥५॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नैऋत्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ॥ नैऋत्यदर्भः ॥ (नैऋत दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ विघ्नशांतये शांतेरपांमूर्तिमतः क्रतौ । अपांपत्युस्तनोम्याशां, पवित्रेण पवित्रिताम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं परममंगलाय परमपवित्राय परमनिर्वाणकारणाय । अपरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ।

वरुणदर्भः ॥ (पश्चिम दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ निःसंगस्वरूपस्य, यागेस्मिन्मारुतात्मनः । मारुतस्य ककुब्भागे, कुशमास्थापयामहे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणसंपूर्णाय । वायव्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ॥ वायुदर्भः ॥ (वायव्य दिशा में दर्भ स्थापना करना)

ॐ सर्वसौम्यरूपस्य, सोममूर्तेर्महामहे । सोममौलिसुहृत्काष्ठां कुशोऽयमधितिष्ठतु ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय त्रिलोकमहिताय शुचिरत्नत्रयदर्शनकराय । उत्तरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ॥ यक्षदर्भः ॥ (उत्तर दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ निर्लेपस्य जिनेन्द्रस्य, व्योममूर्तेर्महाध्वरे । व्योमकेशस्य दिग्भागे, कुर्महे दर्भगर्भितम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिसहिताय देवाधिदेवाय । ऐशान्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ॥ (ईशान दिशा में दर्भ स्थापित करना)

इति दर्भस्थापनविधानम् ॥ (दर्भस्थापना विधिपूर्ण हुई)

वार्दभगंधैः सुमनोऽक्षतौघैर्दीपैश्च-धूपैरमृतोपमानैः । क्रमान्महामो महितां महद्भि-र्महीं महादेवमहामहस्य ॥

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः पुष्पं । दर्पमथनाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । परमसिद्धाय नमः फलं । इति धूम्यर्चनम् ॥ (अष्टद्रव्य से भूमि की पूजा करना)

अथातो मंडपप्रतिष्ठाविधानम्

(मंडप प्रतिष्ठा विधि)

गद्य— ॐ मणिमयमहास्तंभसंभूतत्रयादित्रिवर्धिष्णुचतुर्विंशत्यंतकरान्यतमायामसमुत्तुंगसमचतुरस्रचतुर्द्वारोत्तंभितघंटादर्पणाद्य-लंकृततोरणोपहितरामणीयकम् । धवलदुकूलवसनकन्याकदंबकृतकपिलाविशुद्धगोमयपयोद्रुमत्वक्कषायसम्मार्जनमहितमहीतलविहित-विचित्ररंगबलिविराजितम् । समसमुत्पन्नसुरचापशतशंकावहविचित्रवितानसंतानसंपादितचित्तचमत्कारम् ॥ सौरभासक्तमधुकरमालाकरंभितकमनीयकुसुममालाकलापनिरंतरितांतरालम् । दशविधानेकध्वजदंडकोटीविघट्ट्यमानघनाघनगलन्मुक्तासारसंकाशमुक्ताफल-लंबूषतारकादिविभूषणभूषितम् ॥ विविधाकारकलिताकल्पकेतन-मालालंबमानधवलकलशाष्टकदर्भमालावरणविभ्राजिम् ॥ धूपघटपटलनिर्यद् धूमलेखासौरभप्रसरसुरभीकृतसकलदिङ्मुखम् । दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशभावनीयभावबीजयवसिद्धार्थादिद्रव्यबीजकृत्पुंजनिकुरुंबरंजितम् । मणिकनकचंदनमयानेकयज्ञांगभाजनभावद्रव्यरत्नफलपल्लवदूर्वादिपूजापरिकरपरिपूर्णम् ॥ घोषविशुद्धप्रवचनपाठस्तवगान्त्रीर्वादवाद्यप्रमुख-निनादमुखरितदिगंतरविविधविनेयजनपरिपूरितं । जन्माभिषवणसमयपांडुकशिलातटघटितमहामंडपलक्ष्मी-मात्मशोभातिशयभव्यजन-संकल्पाभ्यासमात्मसात्कुर्वाणम् ॥ निर्वाणकारणदयायागसाधनतया महनीयमखिलमंडितमहामंडपमिमं बहुमानयामहे ।

मंडपांतः समंताद् भूषणादिवस्तुषु च पृथक्कुंकुमाक्तपुष्पाक्षत्वं क्षिपेत् ॥ (मंडप के अंदर भूषणादि वस्तुओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम् ।

तेन त्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमंडपेन्द्रम् ॥ ११ ॥

मंडपमिमं बहिः पंचवर्णेन सूत्रेण त्रीनारान्वेष्टयेत् ॥ (यागमंडप को बाहर से पंचवर्णीसूत्र से तीन बार वेष्टित करें)

श्रीमंडपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितं पंडितपुंडरीकम् ।

श्रीमंडपं खंडितपापतापं, तमेनमर्घ्येण च मंडयामः ॥ १२ ॥

श्री मण्डपाय अर्घ्यं समर्पयामि । मंडपायार्घ्यं दद्यात् ॥ (मंडप को अर्घ्य चढ़ावे)

अथ कुमुदादिद्वारपालानुकूलनम्

(कुमुद आदि चार द्वारपालों को अनुकूल करें—अर्घ्य चढ़ावें)

रक्षार्थमस्य पूर्वादि-द्वारदक्षिणभागके। कुमुदं चांजनं यक्ष्ये, वामनं पुष्पदन्तकम् ॥१॥

तोरणोपांतापसव्यदेशेषु कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः। पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्ताम्
बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः। पूर्वद्वाराधिकारं कुमुदमतिमुदं कुर्महे पूजनेन ॥२॥

ॐ ह्रीं कुमुदप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा। (पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य चढ़ावें)

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः। पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्ताम्
बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः। कुर्वेऽपागद्वारपालं बलिविहितमुदं सांजनाभांजन त्वाम् ॥३॥

ॐ ह्रीं अंजनप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः। पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्ताम्।

बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः। प्रत्यग्द्वाराधिकारं, विधुधवलरुचं वामनं मानयामि ॥४॥

ॐ ह्रीं वामनप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः। पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्ताम्।

बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः। लब्धोदग्द्वारदक्षं विधिविहितबलिं पुष्पदंतं तनोमि ॥५॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

इति मंडपप्रतिष्ठाविधानम् ॥ (मंडपप्रतिष्ठाविधिपूर्ण हुई)

अथातो वेदीप्रतिष्ठाविधानम्

(वेदी प्रतिष्ठा विधि)

गद्य—ॐ तदेतन्महामंडपस्य मध्ये नवमतन्मध्यभागायामविस्तारव्यासषडंशोच्छ्रायचतुरस्रेशदिकूलवोपलक्षिताम्। चंद्रोपकरं-
द्रस्तंभसांद्रच्छायचामरादिपरिच्छदविशेषपरिष्कृताम्। मंगललोकोत्तमशरणवदुपर्युपरिव्यवस्थितभांडोच्चयमंडिताम्। दर्शनविशुद्ध्यादि-
वर्धनार्थमीशानादिसुरेन्द्रपरीतसौधमेन्द्रविनिर्मापित जिनेन्द्रमहामहवेदी साक्षादियमेवेति संकल्प्यमानां। प्रोक्षसमालंभनसमर्चननीराजनलवण-
कलशाष्टकावतरणैरिमां वेदीं बहुमानयामहे ॥

वेद्यां चंद्रोपकादिषु कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ (वेदी चंदोवा आदि के ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

भव्यात्मनां दुष्कृतकर्मौघप्रक्षालनार्थं जिनयज्ञवेदीम्।

कुशोद्धृतैः प्रोक्षणमंत्रपूतैः, संप्रोक्षयामः परितः पयोभिः ॥१॥

(अब वेदी प्रतिष्ठा विधि कहते हैं)

इस महामंडप के बीच में चौकोन वेदी बनावें, इसमें चंदोवा, छत्र, चंवर आदि लगाकर सजावें। इस वेदी के चारों कोनों में तीन-तीन मिट्टी के कल्ला (मटकी) रखें, जिनमें नीचे के कलश बड़े हों पुनः दूसरे छोटे हों और तीसरे इनसे भी छोटे हों। ये मंगल, लोकोत्तम और शरण के प्रतीक हैं। दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारण भावनाओं की वृद्धि के लिये ईशानादि इंद्रों से सहित ऐसे सौधमेन्द्र ने जिनेन्द्रदेव के 'महामह' के लिये जैसी वेदी बनाई थी "यह वेदी साक्षात् वही है" ऐसी कल्पना करें। अब प्रोक्षण, समालंभन, अर्चना, नीराजना-विधि करके लवण और आठ कलशों से अवतरण विधि करके इस वेदी की हम विधिवत् प्रतिष्ठा करते हैं।

इस प्रकार ॐ तदेतन्महा... इत्यादि उपरोक्त गद्य पढ़कर वेदी में चंदोवा आदि उपकरणों पर चंदन से अभिषिक्त पीले पुष्प क्षेपण करें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रोक्षणजलाभिमंत्रणम् ॥ (इस मंत्र को बोलकर वेदी पर जल छिड़कें।)

काशमीरकालागुरुमिश्रितेन । कर्पूरभाजा हरिचंदनेन ।

वेदीं समंतादिह चर्चयामो । निजात्मचर्चाचरणप्रसिद्धयै ॥२॥

ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः । इति वेद्यां गंधचर्चनम् ॥ (वेदी में चंदन लगावें)

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः..... । (आदि मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ावें) । इति वेद्यचर्चनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः वेदीं समभ्यर्चये ॥

दीव्यत्प्रदीपकलिकोदनवर्णपूरै-र्नीराजनार्थविदितैर्वरभाजनस्थैः ।

नीराजयामि भगवज्जिनयज्ञवेदी-मोजोगुणस्य यजतामभिवर्द्धनाय ॥३॥

दीपकलिकावर्णपूरान्नीराजनम् । (दीपक आदि से नीराजनविधि करें)

स्वादिष्टता सर्वरसस्य येन, जायेत सद्भाजनपुंजितेन ।

लावण्यसिद्धयै लवणेन तेन, वेदीं विशिष्टामवतारयामः ॥४॥

लवणावतरणम् ॥ (लवण का अवतारण करें)

कुशकलितजलौघैरुभितैः शातकुंभ-प्रमुखरचितकुंभैरिष्टभिः श्रीविशिष्टैः ।

परिवृतसितसूत्रैरुल्लसत्पल्लवास्यै-रवतरणममुष्यास्तन्महे सन्महिम्ने ॥५॥

कुंभाष्टकावतरणम् ॥ (आठ कुंभों से अवतरण विधि करें)

इति वेदिकाप्रतिष्ठा ॥ (वेदी प्रतिष्ठा विधि पूर्ण हुई)

अथातो यागमंडलवर्तनविधानम्

शार्दूलविक्रीडित — वेद्यां मंडलमालिखार्चितसितैश्चूर्णैः सिताकल्पभृन्-नागाधीशधनेशपीतवसनालंकारपीतैश्च तैः । नीलैर्नीलभनीलवेषसुमनोरक्ताभ रक्तैस्ततो, रक्ताकल्पक कृष्णवेशविलसत्कृष्णैश्च कृष्णप्रभ ॥९॥

ॐ ह्रीं श्वेतपीतहरितारुणकृष्णमणिचूर्णं स्थापयामि स्वाहा ॥ पंचचूर्णस्थापनमंत्रः ॥

श्वेतांगरागांबरमाल्यभूष-श्वेताभ्रयानेन समेत्य सद्यः ।

श्वेताभनागेन्द्र जिनेन्द्रयज्ञे, श्वेतैर्वितर्द्धिं लिख रत्नचूर्णैः ॥१२॥

ॐ नागराजाय अमिततेजसे स्वाहा ॥ श्वेतचूर्णस्थापनम् ॥ (सफेद चूर्ण स्थापित करना)

पीतांगरागांबरमाल्यभूष, पीताभ्रयानेन समेत्य सद्यः ।

पीताभ यक्षेन्द्र जिनेन्द्रयज्ञे, पीतैर्वितर्द्धिं लिख रत्नचूर्णैः ॥१३॥

ॐ ह्रीं हेमप्रभाय धनदाय अमिततेजसे स्वाहा ॥ पीतचूर्णस्थापनम् ॥ (पीत चूर्ण स्थापन करना)

नीलांगरागांबरमाल्यभूष, नीलाभ्रयानेन समेत्य सद्यः ।

नीलाभ देवेन्द्र जिनेन्द्रयज्ञे, नीलैर्वितर्द्धिं लिख रत्नचूर्णैः ॥१४॥

ॐ ह्रीं हरित्प्रभाय मम शत्रुमथनाय स्वाहा । हरितचूर्णस्थापनम् । (हरा चूर्ण स्थापित करना)

रक्तांगरागांबरमाल्यभूष, रक्ताभ्रयानेन समेत्य सद्यः ।

रक्ताभदेवेन्द्र जिनेन्द्रयज्ञे, रक्तैर्वितर्द्धिं लिख रत्नचूर्णैः ॥१५॥

ॐ ह्रीं रक्तप्रभाय मम सर्वशंकराय वषट् स्वाहा । अरुणचूर्णस्थापनम् । (लाल चूर्ण स्थापित करना)

कृष्णांगरागांबर माल्यभूष, कृष्णाभ्रयानेन समेत्य सद्यः ।

कृष्णाभ देवेन्द्र जिनेन्द्रयज्ञे, कृष्णैर्वितर्द्धिं लिख रत्नचूर्णेः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं कृष्णप्रभाय मम शत्रुविनाशनाय फट् घे घे स्वाहा ॥ कृष्णचूर्णस्थापनम् । (कृष्ण चूर्ण स्थापित करना)

इति पंचचूर्णस्थापनम् ॥

सन्मंगलस्यास्य कृते कृतस्य, कोणेषु बाह्यक्षितिमंडलस्य ।

वज्राणि चत्वारि च वज्रपाणे, वज्रस्य चूर्णेन लिखाद्य वेद्याम् ॥ ७ ॥

वेदीकोणेषु प्रत्येकं हीरकं न्यसेत् ॥ इति वज्रस्थापनम् ॥ (वेदी के चारों कोनों पर एक-एक हीरा स्थापित करें)

अथ यागमंडलोल्लेखनविधानम्

गद्य— तदेवं चूर्णानि संस्थाप्य वेदिकामध्ये पीतचूर्णेन कर्णिकां, श्वेतपीतहरितारुणकृष्णचूर्णक्रमेण पंचवृत्तमंडलां तद्बहिःश्चतुष्कोण-चतुर्द्धारचतुरस्रपंचमंडलानि च तद्बहिः सवज्रं पीताभं भूमंडलं समालिख्य, वृत्तमंडलेषु क्रमेण चतुरष्ट्रषोडशचतुर्विंशतिद्वित्रिंशदलानि लोहितानि विरचय्य । सुवर्णशलाकया अपामार्गजातिलेखन्या वा दर्भेण वा कर्णिकाबहुमध्यभागे ।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं स्वाहा । इत्यर्हन्मंत्रं तत्पूर्वादिदिक्षु सिद्धादिमंत्रान्विलिख्य, तन्मंत्राननाहताहर्द्बीजमायाबीजश्रींकारप्रणवैः पृथक्पृथगावेष्ट्य, तद्बहिः षोडशस्वरवलयं पार्श्वगतझ्र्णकारद्वयकलितं तद्बहिः ‘ॐ श्रीं ह्रीं हं अर्हत्सिद्धकेवलभ्यः स्वाहा’ इति मंत्रवलयं । तद्बहिरेकठकारवलयं विधाय चतुर्दलेषु पूर्वदले ॐ अरिहंतं मंगलं । अरिहंतं लोगुत्तमा । अरिहंतं सरणं पव्यज्जामि स्वाहा इति मंत्रं, दक्षिणपश्चिमोत्तरदलेषु सिद्धसाधुकेवलप्रज्ञपथमंगललोकोत्तमशरणमंत्रान्विलिख्य । आग्नेयान्तराले ॐ श्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्यैः स्वाहा इति मंत्रं, नैऋत्याद्यंतरालेषु ॐ श्रीं ह्रीं हं जिनागमेभ्यः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं हं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं हं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा । इति मंत्रान्विलिख्य । चतुर्दलाग्रेषु ॐंकारं । चतुरंतरालेषु झ्र्णकारं लिखेत् । तत्सर्वं ह्रींकारेण त्रिधा संवेष्ट्य क्रोकारेण संरोधयेत् ॥ अष्टदलेषु दिक्षु जयादीनां । विदिक्षु जंभादीनां । ॐ आदि-स्वाहांत-चतुर्थ्यतनामरूपतन्मंत्रान् दलांतरेषु ह्रीं । दलाग्रेषु क्रोकारं लिखेत् । षोडशदलेषु रोहिण्यादिविद्यादेवतामंत्रान् दलांतरेषु क्लींकारं । दलाग्रेषु ब्लेंकारं विलिखेत् । चतुर्विंशतिपत्रेषु जिनमातृमंत्रान् । तदंतरालेषु झंकारं । तदग्रेषु वंकारं विलिखेत् ॥ द्वात्रिंशत्पत्रेषु द्वात्रिंशदिंद्रमंत्रान् । तदंतरालाग्रेषु झंकारवंकारौ विलिख्य । तत्सर्वं ह्रींकारेण त्रिधावेष्ट्य क्रोकारेण संरुध्य जलमंडलेन संवेष्टयेत् । ततश्चतुरस्रमंडलेषु चतुर्षु तिथिग्रहयक्षयक्षीदेवतामंत्रान् पंचममंडलदिकपालदिककन्यकामंत्रान् । पूर्वादिद्वारेषु सोमयमवरुणधनदमंत्रान् । वेद्याः पूर्वादिदिक्षु विजयवैजयंतजयंतअपराजितमंत्रान् । ईशान्यकोणे अनावृतमंत्रं । ब्रह्मेन्द्रोपरि लौकांतिकमंत्रमच्युतेंद्रोपरिष्टादहमिंद्रमंत्रं पृथ्वीमंडले मंगलाष्टक आयुधाष्टकपताकाष्टकमंत्रान्समालिख्य, वक्ष्यमाणस्मिना संपूज्य, कलशाष्टकं विन्यस्य । पंचवर्णसूत्रेणावेष्ट्य वेदीकोणेषु बाणचतुष्टयसिद्धार्थयवारकस्थापनम् ॥ वेद्यां शिलास्थापनम् । मन्त्रेस्त्वेन महाध्व्योच्चारणम् ॥ त्रिवारप्रदक्षिणप्रणामं धूपादिना यंत्रविभूषणं । चतुर्णां अष्टानां वानादिसिद्धमंत्रस्य कुसुमैर्जपूषां वेद्याः समंतान्नियोजनं विधाय । यागमंडलाराधनां निष्ठापयेत् । इति यागमंडलावर्तनविधानम् ॥

(अब यागमंडल बनाने की विधि बताते हैं)

इस प्रकार मंत्रपूर्वक चूर्णों की स्थापना करके वेदी के बीच में—यागमंडल के बीच में पीतचूर्ण से कर्णिका बनावें । श्वेत, पीत, हरे, लाल और काले चूर्णों से क्रम से पांच गोल मंडल बनावें । उसके बाहर चौकोन वाले चार द्वार सहित चौकोन के पांच मंडल बनावें पुनः उसके बाहर वज्रसहित पीले रंग के पृथ्वीमंडल बनावें अर्थात् मंडल के बाहर चारों तरफ का स्थान पीले रंग से भर दें । पुनः गोलाकार मंडलों में क्रम से चार, आठ, सोलह, चौबीस और बत्तीस दलों के कमलों को लाल वर्ण से बनाकर सुवर्णशलाका से या अपामार्ग—चिरचिटा की लेखनी या डाभ से कर्णिका के ठीक बीच में निम्नलिखित मंत्र लिखें ।

इन मंत्रों को लिखने का क्रम बताते हैं—

कर्णिका में “ॐ णमो अरिहंताणं स्वाहा” । इस अर्हन्मंत्र को लिखें पुनः इस कर्णिका के चारों तरफ चार दल के कमल में पूर्व दिशा में “ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं” दक्षिण दिशा के दल में “ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं ।” पश्चिम दिशा के दल में “ॐ ह्रीं णमो उवज्जायाणं” तथा उत्तरदिशा के दल में “ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं” लिखें । इन मंत्रों को अनाहत, अर्हत् बीज, मायाबीज, श्रींकार और प्रणवमंत्र

से पृथक्-पृथक् वेष्टित करके, इनके बाहर सोलह स्वर के वलय को, पास में स्थित झौंकार द्वय से सहित कर, उसके बाहर “ॐ श्रीं हीं ह्रीं अर्हत्सिद्धकेवलिभ्यः स्वाहा।” इस मंत्रवलय को बनावें। इसके बाहर एक “ठकार” वलय बनावें।

अनंतर आठ दल वाले कमल में चार दलों पर—पहले पूर्वदिशा के दल में “ॐ अरिहंत मंगलं अरिहंत लोगुत्तमा अरिहंतसरणं पव्वज्जामि स्वाहा।” यह मंत्र लिखें। दक्षिण दल में “सिद्धमंगलं सिद्धलोगुत्तमा सिद्धसरणं पव्वज्जामि स्वाहा।” लिखें। पश्चिम दिशा के दल में “साहु मंगलं साहु लोगुत्तमा साहुसरणं पव्वज्जामि स्वाहा।” ऐसा लिखें। उत्तर दिशा के दल में “केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं धम्मो लोगुत्तमा धम्मो सरणं पव्वज्जामि स्वाहा।” यह मंत्र लिखें पुनः इसी आठ दल कमल में आग्नेय दिशा के दल में “ॐ श्रीं हीं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्येभ्यः स्वाहा।” नैऋत्य विदिशा के दल में “ॐ श्रीं हीं ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा।” वायव्यविदिशा के दल में “ॐ श्रीं हीं ह्रीं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा।” इन मंत्रों को लिखें और ईशान विदिशा के दल में ॐ श्रीं हीं ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा।

पुनः चार दलों के अग्रभाग पर “ॐ” लिखें और चार विदिशा के अंतराल में “झ्रौं” लिखें। इन सभी को “हीं” से तीन बार वेष्टित करके “क्रौं” से संरुद्ध करें।

आगे के आठ दल वाले कमल में पूर्वदिशा के दल में “ॐ जयायै स्वाहा” दक्षिणदिशा के दल में “ॐ विजयायै स्वाहा।” पश्चिम दिशा में “ॐ अजितायै स्वाहा।” उत्तरदिशा के दल में “ॐ अपराजितायै स्वाहा।” ऐसे मंत्र लिखें पुनः विदिशा के दलों में अर्थात् आग्नेय विदिशा में “ॐ जंभायै स्वाहा” नैऋत्यविदिशा के दल में “ॐ मोहायै स्वाहा।” वायव्य विदिशा के दल में “ॐ स्तंभायै स्वाहा” और ईशान विदिशा के दल में “ॐ स्तंभिन्नायै स्वाहा” इन मंत्रों को लिखें। अनंतर इन्हीं आठ दलों के अंतराल में “हीं” और दलों के अग्रभाग में “क्रौं” बीजाक्षर लिखें।

अनंतर सोलह दल वाले कमल में क्रम से एक-एक दलों पर रोहिणी आदि सोलह विद्या देवताओं के मंत्र लिखें। उनका स्पष्टीकरण—

१. ॐ हीं रोहिण्यै स्वाहा २. ॐ हीं प्रज्ञप्त्यै स्वाहा ३. ॐ हीं वज्रशृंखलायै स्वाहा ४. ॐ हीं वज्राकुशायै स्वाहा ५. ॐ हीं जांबूनदायै स्वाहा ६. ॐ हीं पुरुषदत्तायै स्वाहा ७. ॐ हीं काल्यै स्वाहा ८. ॐ हीं महाकाल्यै स्वाहा ९. ॐ हीं गौर्यै स्वाहा १०. ॐ हीं गांधार्यै स्वाहा ११. ॐ हीं ज्वालामालिन्यै स्वाहा १२. ॐ हीं मानव्यै स्वाहा। १३. ॐ हीं वैरोट्यै स्वाहा १४. ॐ हीं अच्युतायै स्वाहा। १५. ॐ हीं मानस्यै स्वाहा १६. ॐ हीं महामानस्यै स्वाहा।

इन सोलह मंत्रों के कमल दलों के अन्तराल में “क्लीं” पुनः दलों के अग्रभाग में “ब्लें” के बीजाक्षर लिखे।

आगे चौबीस दलों के कमल में क्रम से एक-एक दलों पर जिनमाता के नाम लिखें। उनके मंत्र निम्न प्रकार हैं—

ॐ हीं मरुदेव्यै स्वाहा। ॐ हीं विजयायै स्वाहा। ॐ हीं सुषेणायै स्वाहा। ॐ हीं सिद्धार्थायै स्वाहा। ॐ हीं मंगलायै स्वाहा। ॐ हीं सुसीमायै स्वाहा। ॐ हीं पृथ्वीषेणायै स्वाहा। ॐ हीं लक्ष्मणायै स्वाहा। ॐ हीं रामायै स्वाहा। ॐ हीं सुनंदायै स्वाहा। ॐ हीं विष्णुश्रियै स्वाहा। ॐ हीं जयायै स्वाहा। ॐ हीं जयश्यामायै स्वाहा। ॐ हीं सुव्रतायै स्वाहा। ॐ हीं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ हीं ऐरिण्यै स्वाहा। ॐ हीं सुमित्रायै स्वाहा। ॐ हीं प्रभावत्यै स्वाहा। ॐ हीं पद्मावत्यै स्वाहा। ॐ हीं वप्रायै स्वाहा। ॐ हीं विनुतायै स्वाहा। ॐ हीं शिवदेव्यै स्वाहा। ॐ हीं देवदत्तायै स्वाहा। ॐ हीं प्रियकारिण्यै स्वाहा।

इस कमल के बाहर प्रत्येक दलों के अन्तराल में “झ्रं” बीजाक्षर लिखे और दलों के अग्रभाग में “वं” बीजाक्षर लिखे।

आगे बत्तीसदल के कमल में एक-एक दलों पर क्रम से बत्तीस इंद्रों के मंत्र लिखे। जैसे—

ॐ हीं असुरेंद्राय स्वाहा। ॐ हीं नागकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं सुपर्णकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं द्वीपकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं उदधिकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं स्तनितकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं विद्युत्कुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं दिक्कुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं अग्निकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं वातकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं किन्नरेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं किम्पुरुषेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं महोरगेन्द्राय स्वाहा। ॐ हीं गंधर्वेन्द्राय स्वाहा।

स्वाहा । ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं भूतेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं सोमेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं सूर्येन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं ईशानेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं माहेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं शतारेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं आनतेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं आरणेन्द्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्राय स्वाहा ।

इन मंत्र दलों के बाहर अन्तराल में “झं” और दलों के अग्रभागों में ‘वं’ बीजाक्षर लिखे । इन सभी को “ह्रींकार” से तीन बार वेष्टित करके “क्रौं” से रोककर जलमंडल से वेष्टित कर देवें ।

अनन्तर जो चौकोन पांच मंडल बनाये हैं उनमें से चार में क्रम से तिथि देवों के, नवग्रहों के, चौबीस यक्षों के और चौबीस यक्षियों के मंत्रों को लिखे । जैसे—

प्रथम चौकोन मंडल में—ॐ यक्ष-वैश्वानर-राक्षस-नधृत-पन्नग-असुर-सुकुमार-पितृ-विश्वमालि-चमर-वैरोचन-महाविद्य-मार-विश्वेश्वर-पिंडाशिभ्यः स्वाहा ।

१. पार्श्वपुराण में वामादेवी, उत्तरपुराण में “ब्राह्मी” तथा यहां प्रतिष्ठातिलक में ‘देवदत्ता’ लिखा है । ऐसे ही यहां अन्य माताओं के नाम में भी अंतर है ।

दूसरे चौकोन मंडल में—ॐ रवि-सोम-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु-केतुभ्यः स्वाहा ।

तृतीय मंडल में—ॐ गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबुर-पुष्पयक्ष-मातंगयक्ष-श्याम-अजित-ब्रह्मयक्ष-ईश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-गरुड-गंधर्व-खेन्द्र-कुबेर-वरुण-भृकुटि-गोमेध-धरणेन्द्र-मातंगयक्षेभ्यः स्वाहा ।

चतुर्थमंडल में—ॐ चक्रेश्वरी-अजिता-नम्रेक्षी-दुरितारि-संसारिदेवी-मोहनी-मानवी-ज्वालामालिनी-भृकुटिदेवी-चामुण्डी-गोमेधयक्षी-विद्युन्मालिनी-विद्यादेवी-विजृंभिणी-परभृता-कंदर्पादेवी-गांधारिणी-कालीदेवी-अनातजा-सुगंधिनी-कुसुममालिनी-कूष्माण्डिनी-पद्मावती-सिद्धायिनीयक्षीभ्यः स्वाहा ।

पांचवें मंडल में—ॐ श्रीदेवी-ह्रीदेवी-धृतिदेवी-कीर्तिदेवी-बुद्धिदेवी-लक्ष्मीदेवी-शान्तिदेवी-पुष्टिदेवीभ्यः स्वाहा ।

इसी पांचवें मंडल में—*दिक्पालों के मंत्र लिखे*—इन्द्र, अग्नि-यम-नैऋत्य-वरुण-पवन-कुबेर-ईशान-धरणेन्द्र-सोमेभ्यः स्वाहा ।

अनन्तर पूर्व आदि चारों द्वारों में—सोम-यम-वरुण-धनद मंत्र लिखे । पुनः वेदी के—यागमंडल के पूर्वादि चारों दिशाओं में विजय, वैजयंत, जयंत और अपराजित, इन चारों के मंत्रों को लिखे ।

ईशानकोण में अनावृतयक्ष के मंत्र को लिखे ।

ब्रह्मेन्द्र के ऊपर लौकांतिक मंत्र को और अच्युतेन्द्र के ऊपर अहमिन्द्र मंत्र को लिखकर पूर्वमंडल में आठ मंगल द्रव्य, आठ आयुध और आठ पताका के मंत्रों को लिखकर आगे कही गयी विधि से उनकी पूजा करके यथास्थान आठ कलशों की स्थापना करें पंचवर्णी सूत्र से वेष्टित करके वेदी—मंडल के चारों कोनों पर चार वाण, सिद्धार्थ—सफेद सरसों, यवारक—उगे हुये धान्यांकुर कुंडों की स्थापना करे । वेदी—मंडल के आगे या मंडल पर आगे पाषाण की शिलालोढ़ा सहित स्थापित करें ।)

अनन्तर महोत्सवपूर्वक महार्घ्य को चढ़ावें । तीन बार प्रदक्षिणा देकर प्रणाम करें पुनः धूपादि से यंत्र को (मंडल को) विभूषित करें ।

तत्पश्चात् जप करने वाले चार या आठ श्रावकों को वेदी के चारों तरफ बिठाकर श्वेत सुगंधित पुष्पों से अनादिसिद्धमंत्र की जाप्य करावें, इस तरह यागमंडल आराधना को पूर्ण करें ।

इस प्रकार यागमंडल बनाने की विधि पूर्ण हुई ।

१. इन यक्षों के नाम प्रसिद्धि में जो हैं, यहां उनसे भिन्न—बदले हुये हैं । जैसे नेमिनाथ के यक्ष—शासनदेव का नाम ‘सर्वाणहयक्ष’ है । यहां ‘गोमेधयक्ष’ है ।

२. यहां प्रतिष्ठातिलक में श्लोक में यक्षियों के नाम अलग हैं और मंत्रों में अलग-अलग हैं। तथा अन्यत्र 'महाशांतिधारा' आदि में प्रसिद्धि में भी प्रायः अन्य-अन्य नाम हैं।

अथातो यागमंडलपूजाविधानमभिधास्यामः

याग मंडल विधान पूजा

शार्दूलविक्रीडित—मध्येवेदि सकर्णिकं दलचतुष्कोणाष्टसंख्यैर्दलैर्युक्तं द्वित्रिचतुर्हताष्टदलवत्पद्मं बृहत्तद्बहिः।

सद्वाःकोणकपंचमंडलवृत्तं, संलिख्य तत्र क्रमान्मंत्रंगान्नवदेवतावृत्तिसुरान्सर्वान्समाराधये ॥ १ ॥

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

स्रग्धरा छंद—

श्रीपादन्यासमन्त्राचरत जिनमतोद्योतनार्थं मुनीन्द्राः।

कल्पेन्द्रा विक्रियागैरिह समुपगता विघ्नशांतिं कुरुध्वम् ॥२॥

यो भित्त्वा घातिकर्माचलमखिलजगज्ज्योतिराप्य प्रणेता ।

श्रेयोमार्गस्य सोयं जिनविभुरलमाराध्यतेऽभ्यर्च्य सिद्धान् ॥३॥

प्रभावकसिंहसान्निध्यविधानाय समंतात्पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

शार्दूलविक्रीडित—

आर्याः पोषयताशिषर्द्धिकलिताः, सप्तापि हुत्वारचिताः ।

देवा विघ्ननिवारणेन निखिलाः, स्वस्वायुधाद्यन्विताः ॥

स्थानस्थाश्च सुरर्षयः स्तुत मुदा, सर्वेऽहमिन्द्रास्तथा ।

श्रद्धतार्यजनाश्च पंच सदयं, यागं मया प्रस्तुतम् ॥४॥

त्रिभुवनसाधर्मिकाध्येषणाय समंतात्पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ (तीन लोक के सभी साधर्मीजनों के आमंत्रण हेतु पुष्पांजलि क्षेपण करें)

कर्णिका में पुष्पांजलि

अशेषमंत्रात्मकसर्वशक्ति-प्रभावमुद्योतितसर्वतत्त्वम् ।

सतां परब्रह्मनिवेदिशब्द-ब्रम्हाव्यज्योतिरिहाव्हयामि ॥ ५ ॥

शब्दब्रह्मावर्जनाय कर्णिकामध्ये पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ (कर्णिका में पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अधिवास्य परब्रह्म पंचापि परमेष्ठिनः। जिनान्भूतभवद्भव्यान्मध्येकर्णिकमर्चये ॥ पुष्पांजलिः ॥

संसारपारं यदवाप्य शुद्धं, चिद्रूपमार्हन्त्यमचिंत्यमाप्तम् ॥

आसन्नसिद्धत्वमिदं त्रिलोकी-ज्योतिः परब्रह्ममहो महामि ॥ ६ ॥

परब्रह्मयज्ञप्रतिज्ञापनाय कर्णिकान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ (कर्णिका में पुष्पांजलि क्षेपण करें)।

आहूता भवनामरैरनुगता, यं सर्वदेवास्तथा। तस्थौ यस्त्रिजगत्संभांतरमहा-पीठाग्रसिंहासने।

यं हृद्यं हृदि संनिधाप्य सततं, ध्यायति योगीश्वरा — स्तं देवं गुरुपंचकात्मपरमब्रम्हात्मत्राह्वये ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अनेन कर्णिकामध्ये पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्प्रतिष्ठयेत् ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परमब्रह्मन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् । आवाहनादिपुरःसरं

पूजावसरप्रार्थना ॥

अथ पूजा । कर्णिकाभ्यन्तरं

(कर्णिका में अर्हत पूजा)

शार्दूलविक्रीडित—घातिप्रक्षयजाक्षयोजितिमहा-धीसौख्यदृक्कृतयः । कल्याणानि महति पंच परम-श्रीप्रातिहायाष्टकम् ।

प्राप्ता ये भुवनत्रयैरतिशयै-र्युक्ताश्चतुस्त्रिंशता । तानर्हाम्यहमर्हतस्त्रिजगती, साम्राज्यलक्ष्मीपतीन् ॥ १ ॥

गद्य—ॐ हं नितांतशुद्धबुद्धस्वभावनिजात्माखिलप्रदेशानादिघटितनिराधाटघातिघोरारटवीसाटोपशिखापटलदावानलायमानद्वितीयशुक्ल-
ध्याननिष्पादितारिहननरजोहननरहस्यहननसंजातजगत्रयमहार्हणा निवासाद्भुताचिंत्याहन्त्यपद-मधिष्ठितानाम् । सर्वतो विजृम्भमाण-
साकारनिराकारकेवलज्ञान दर्शनयुगपत्प्रवृत्तिव्यवस्थितप्रमाणप्रतिपन्नसर्वज्ञत्वानाम् । शक्तिव्यक्तिविभागावस्थितसमस्तवस्तुविविधाकार-
किर्मीरितसकलसंसारिमुक्तात्मस्वरूपसंकरव्यतिकरव्यपेत-साक्षात्करणशक्तिरूपपरमाश्चर्यवीर्याणां । व्याबाधव्यपेताचिन्मात्रानोपमानातीत-
नित्यनिजात्माजातानंदमदिराणाम् । त्रिभुवनैकाधिपतित्व्यजं कविशिष्टाष्टमहाप्रातिहार्यादिबहिरंगमहालक्ष्मीसमालक्षितानाम् ॥ सकल-
लौकिकलोकोत्तमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानाम् ॥ भगवदहत्परमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि
स्वाहा ॥ १ ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गांधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः श्रीमज्जिनेन्द्रान्यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने अनंतानंतज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा । इमान्मंत्रान्द्रुच्यारयन् पूजां विदध्यात् ।

(पृथक्-पृथक् जल, चंदन, अक्षत आदि आठों द्रव्य चढ़ावें या अर्घ्य चढ़ावें) ।

प्राच्यां दिशि — पूर्व दिशा के दल में सिद्ध पूजा करें

बाह्याभ्यन्तरहेतुजातसुदृशः पूर्वश्रुतैरादिमा-च्छुक्लध्यानयुगाद्विजित्य दुरितं, लब्ध्वा सयोगिश्रियम् ।

प्राप्यायोगिपदं परेण सकलं, निर्जित्य कर्मोत्करम् । शुक्लध्यानयुगेन सिद्धसुगुणान्सिद्धान्समाराधये ॥ २ ॥

गद्य—ॐ ह्रीं अशेषभोग्यद्रव्यद्रव्यकर्मनिरपेक्षस्वात्मोपादानमात्रसंजातातिशयसकलात्मप्रदेशनित्यव्यापकस्य । सर्वदा सर्वाबाधवृद्धिक्षय-
प्रतिपक्षदुःखोदयमानोपमानरिक्तस्य । सकलचक्रिकुरुभवार्थफणींद्रसुरेन्द्राहमिंद्रत्रिकालसंभावितसुखानंतगुणितक्षणपर्यग्नस्य । सम्यक्सकल-
शास्त्रविद्वद्वृष्टान्त साधितसंसारनाटकावलोकनसंभावितसर्वकालशश्वतपरमोत्कृष्टसुखस्यैकनिवासानाम् । निरवशेषास्त्र विश्लेषविशेषाविवृत्त-
चरमानंतानंतनिर्भासजाज्वलत्रिकालविषयलोकालोकोवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायक्रमकरणव्यवधानातिक्रमसाक्षात्करण दक्षाक्षुण्णकेवलाख्यपरंज्योतिःप्रमुख
स्वाभाविकानंतगुणविशेष विभूषितानां । नैगमनयातिरूढतपोनयसंयमचारित्रज्ञानदर्शनसिद्धप्रसिद्धव्यवहाराणाम् । सकलैकैकमंगललोकोत्तमशरण-
भूतानाम् । सप्ततिसमेतशत- कर्मभूमिभूतभवद्भव्यानाम् । भगवत्सिद्धपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । (ऐसे ही चंदन आदि चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गांधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः श्रीसिद्धनाथान्यजे ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अपाच्यां दिशि — दक्षिण दल में आचार्य की पूजा

कुमततिमिरसूर्यान्सारगंभीरधैर्यान् । परहितनिजकार्यान्चभेदोद्धर्चर्यान् ।

विनयनवधिवीर्यान्पूजयाम्यादृतार्यान् । मुनिजनपरिवार्यान्श्रीमदाचार्यवर्यान् ॥ ३ ॥

गद्य—ॐ हूं निजनिरतिशयतपश्चरणप्रभावोपलब्धबुद्धिलब्धिप्रकृष्टश्रुतज्ञानावरणवीर्यांतरायक्षयोपशमद्वाराविर्भावितसकलश्रुतज्ञान-
स्वपरपक्षक्षोदक्षमलक्षणगणांतराधानोपस्कारदूरापास्तसमस्त विनेयसंशयविपर्ययावसानाध्यवसायदुस्तरतमस्तोमानाम् । स्नातजनमनश्चमत्कार-
करणप्रवीणाचारवत्पाद्यष्टकाचेलक्यादिदशकतपोद्विष्टकावश्यकषट्कलक्षणानन्यसाधारणषट्त्रिंशद्गुणरत्नाकराणां शुद्धचिदानंदस्वरूपनिजात्म-
निर्विकल्पसमाधि जनितसारसुखास्वादनलंपटानां अपि परहितापादनैकतानमानसानाम् । निःश्रेयसामोघनिर्बंधनज्ञानदर्शनचारित्र्यत-

पोवीर्याचारानंतचतुष्टयलाभाय स्वयमाचरतामप्यसाधारणकरुणया परानाचारयताम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानाम् । भगवदाचार्यपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । (ऐसे ही चंदन आदि चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीधर्मसूरीन्यजे ॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रतीच्यां दिशि—पश्चिम दल में उपाध्याय की पूजा

दुःखावर्तसहस्रदुस्तरमहा-संसारघोरांबुधि-क्षिप्रप्रोत्तरणार्थसार्थजिनवाक्यामोघपोतप्रदान् ॥

नित्यानंदनिवासनिश्चलचिदा-त्मात्मानिशाभ्यासतः । स्वोभ्यासीभवदक्षयामृतपदान्, श्रीपाठकार्यान्यजे ॥ ४ ॥

गद्य — ॐ ह्रीं अनाद्यविद्याविलासदुस्तरतमः पटलपटावगुठितजगदजितज्योतिःस्वरूप जगदेकसाराचाराद्यंगसामायिकाद्युपांगसंगताप्त-संतानप्रवृत्तप्रमाणभूतभूतदयैकतानातिथिप्रपंचप्रवचन पारावारपारगतानाम् । अक्षयात्यक्षमोक्षसुखैकसाधकतमांतरंगतपः सनाथीकृत-पराकाष्ठाधिष्ठितानेक बहिरंगतपस्तप्यमानानाम् । दृष्टेष्टविरोधादिदोषास्पृष्टप्रसादमाधुर्यादिगुणाश्लिष्टातितुष्टिप्रदसूक्तिसुनय-प्रमाणात्मकयुक्तियुक्ताक्षेपणीप्रभृतिचतुर्विधधर्मोपदेशामृतवृष्टिसंतर्पितसव्यसस्यानाम् । शुद्धोपयोगानुविष्टानाधीनशुद्धबुद्धस्वभावात्मानुभूति-समुद्भूतशुद्धसुखाब्धिविवक्षूणामपि मुमुक्षुजनमोक्षमार्गोपदेशकरणबद्धकक्षाणाम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानां । भगवदुपाध्यायपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीपाठकार्यान्यजे ॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदीच्यां दिशि - उत्तर दल में साधु की पूजा

त्यक्त्वा संगमशेषमक्षयपदोत्कंठास्तपोदुष्करम् । कुर्वतः प्रतिसंहर्तेन्द्रियमरुत्स्वांतः स्फुरच्चेतनाः ।

ध्यानं धर्म्यमथापि शुक्लमपि ये, कुर्वन्ति सर्वर्द्धयः । सर्वार्च्यानिह सर्वसंयमगुणांस्तान्सर्वसाधून्यजे ॥ ५ ॥

गद्य — ॐ हः सर्वज्ञवीतरागप्रकाशितानादिप्रवचनहृदयांतस्तत्त्वैकलोलीभावनिर्वर्तितनिर्विकल्पशुद्धस्वात्मसंवेदनरूपसमिद्ध-ध्यानाधीनमानसानाम् । इतरयतिदुरासदातिविस्मयकराचिंत्यप्रभाव सप्तर्द्धिसमुद्बोधनसमग्रसाधनपवित्रतराचाराणाम् । परमोत्तम-धर्मध्यानप्रथमशुक्लध्यान सामर्थ्यसंपाद्यमानागण्यपुण्यास्रवसहचारिसकलपापकर्मनिर्जरप्रतिबंधानाम् । निजांतःप्रतिफलितसमस्त-वस्तुविस्तारविपुलकेवलज्ञानोदयोपघातधातिसंधातनसमर्थसहजचैतन्यशक्तिव्यंजकत्वदेहादिभेदज्ञानसंततिप्रवृत्तिप्रवृद्ध ध्यानोद्दीपित-निजानंदरसास्वादक्षणावदीरितमोक्षाभिलाषाणाम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानाम् । भगवत्साधुपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सर्वसाधुपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि से पूजा करें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीसर्वसाधून्यजे ॥

ॐ ह्रीं सर्वसाधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ स्वरवलयभ्यंतरे। (अब स्वर वलय में अर्घ्य।)

स्रग्धरा छंद—घातिव्रातप्रघातप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः । कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ।

यश्चाष्टप्रातिहार्यैस्त्रिभुवनपतितालांछनैस्तं यजामि । स्याद्वादामोघवाक्यं विदितसमुदयं भूततीर्थकराणाम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि चढ़ावें) ।

मंत्रवलयभ्यंतरे च । (मंत्र वलय के अंदर अर्घ्य) ।

घातिव्रातप्रघातप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः । कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ।

यश्चाष्टप्रातिहार्यैस्त्रिभुवनपतितालांछनैस्तं यजामि । स्याद्वादामोघवाक्यं निवहमिह भवत्कालतीर्थकराणाम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वृषभाजितादिवर्तमानार्हत्परमेष्ठिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि चढ़ावें) ।

ठकारवलयभ्यंतरे च । (ठकार वलय के अंदर अर्घ्य) ।

घातिव्रातप्रघातप्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यसौख्यः । कल्याणैः पंचभेदैः प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ।

यश्चाष्टप्रातिहार्यैस्त्रिभुवनपतितालांछनैस्तं यजामि । स्याद्वादामोघवाक्यं विदितसमुदयं भावितीर्थकराणाम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं महापद्मसुरदेवादिअनागतकालतीर्थकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि चढ़ावें) ।

(अब द्वितीय अष्टदल कमल में पहले चार दिशा के चार दलों में पूजा करें)।

अथ चतुर्दलस्थापितमंगललोकोत्तमशरणार्घ्यविधानम् ॥

तत्र पूर्वदलाभ्यंतरे

(कमल के पूर्व दल में अर्हन्मंगललोकोत्तमशरण पूजा)

सन्मंगलं ये मलगालमंगादानाज्जगत्पूज्यतया मता ये ।

लोकोत्तमा ये शरणं च रक्षात्तानर्हदीशान्प्रयजामि भक्त्या ॥ १ ॥

गद्य—ॐ निस्तीरदुस्तरसुखनिवासनिःश्रेयसाभ्युदयसाक्षात्परंपरानिबंधनपुण्यादानचतुर्गति भवातिदुःसहशारीरमानसदुःखैकनिदानपापस्वरूपं मं गालनरूपमंगलमुख्यलक्षणोपलक्षिततया सकललोकमुख्यमंगलानाम् । परीक्षाप्रधानजनमानसायः समाकर्षणायस्कांतायमात्रमाणप्रसिद्धनिजगुण-ग्रामानुसंधानसंजातानुरागसांद्रदेवेंद्रनागेंद्रनरेन्द्रपुरोगमाखिलत्रैलोक्यविनिर्मितपूजातिशयप्राप्ततया लोकोत्तमाम् । विचारनृपलोकात्मदिव्यप्रत्यय-परिच्छिन्नमाहात्म्यदयामयसिद्धमोपायसंपादितसकलैहिकामुत्रिकापाय-परिहाररूपजगद्रक्षणदक्षतया सर्वलोकैकेशरणाणाम् । अवदहत्परमेष्ठिना-मष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, रर्घीकृतैरर्चये ॥

ॐ ह्रीं हूं श्रीं अर्हन्मंगललोकोत्तमशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । (अर्घ्य चढ़ावें) ।

दक्षिणदिग्दले च । दक्षिण दिशा के दल में सिद्धमंगल लोकोत्तम शरण पूजा ॥

सन्मंगलं ये मलगालमंगादानाज्जगत्पूज्यतया मता ये ।

लोकोत्तमा ये शरणं च रक्षात्तान्सिद्धनाथान्प्रयजामि भक्त्या ॥ २ ॥

ॐ निस्तीरदुस्तरसुखनिवास.....इत्यादि ऊपर वाला पाठ बोलते हुए अन्त में निम्न पंक्ति पढ़ें—

भगवत्सिद्धपरमेष्ठिनां अष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै - दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलै - रर्घीकृतैरर्चये ॥

ॐ ह्रीं हूं श्रीं सिद्धमंगललोकोत्तमशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

पश्चिमदिग्दले च (पश्चिम दिशा के दल में साधुमंगललोकोत्तमशरण पूजा) ।

सन्मंगलं ये मलगालमंगादानाज्जगत्पूज्यतया मता ये ।

लोकोत्तमा ये शरणं च रक्षात् तानत्र साधून्प्रयजामि भक्त्या ॥ ३ ॥

ॐ निस्तीरदुस्तरसुखनिवास.....इत्यादि पाठ पूर्ववत् पढ़ते हुए निम्न पंक्ति पढ़ें—

भगवत्साधुपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, रर्घीकृतैरर्चये ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं साधुमंगललोकोत्तमशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

उत्तरदिग्दले च (उत्तर दिशा के दल में धर्म मंगल लोकोत्तम शरण पूजा)

सन्मंगलं यो मलगालमंगादानाज्जगत्पूज्यतया मतो यः ।

लोकोत्तमो यः शरणं च रक्षात् केवलिज्ञप्तवृषं यजामि ॥ ४ ॥

ॐ निस्तीरदुस्तरसुखनिवासनिःश्रेयसाभ्युदयसाक्षात्परंपरानिबन्धनपुण्यादानचतुर्गतिभवातिदुःसहशारीरमानसदुःखैकस्मिन्नापस्वरूपमलगाल-नरूपमंगलमुख्यलक्षणोपलक्षिततया सकललोकोत्तममंगलस्य । परीक्षाप्रधानजनमानसायःसमाकर्षणायस्कांतायमानप्रमाणसिद्धिगुणग्रामानु-संधान संजातानुरागसांद्रदेवेंद्रनागेंद्रनरेंद्रपुरोगमाखिलत्रैलोक्यविनिर्मितपुण्यातिशयप्राप्ततया लोकोत्तमस्य । स्मरनृपलोकात्मदिव्यप्रत्ययपरिच्छिन्न-माहात्म्यदयामयसम्बर्माणपापदितसकलैहिकामुन्निकापाय परिहाररूपजगद्रक्षणदक्षतया सर्वलोकैकेशरणस्य केवलिप्रज्ञप्तस्य धर्ष्यार्घ्यमयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगललोकोत्तमशरणायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । (अर्घ्य चढ़ावें)

अथ चतुर्दलांतरालस्थापितधर्मश्रुतचैत्यचैत्यालयावर्चनविधानम्

(इसी कमल के विदिशा की पंखुड़ियों में क्रम से जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालयपूजा)

तत्र आग्नेयान्तराले च । (आग्नेय विदिशा के दल में जिनधर्मपूजा) ।

शार्दूलविक्रीडितं — संसारोग्रमहाटवीस्फुटमरुत्संवृद्धदावानलम् । संपूर्णमलवृत्तधीरुचिमयं लोकत्रयीदुर्लभम् ।

लभ्यं नूनमयोगकेवलिगुणस्थानांतिमैकक्षणे । साक्षान्मोक्षनिबन्धनं निरुपमं, धर्मं समभ्यर्चये ॥ ५ ॥

गद्य—ॐ दर्शनमोहज्ञानावरणवीर्यांतरायचारित्रमोहप्रमुखप्रतिबंधोपशमादिसंजातोपशमादिस्वरूपप्रादेशसम्यग्दर्शनज्ञानचक्षुर्भेदस्वरूपस्य तद्भेदभावनाविशेषप्रबंधप्रादुर्भावितप्रादेशिकादिभेदसमिद्धधर्मशुक्लध्यानबलेन तद्भेदरूपमात्मप्रदेशव्यापस्त्रिधा कृतकृत्यतया निवृत्तव्यापारस्य निरवशेषकर्म संघातनिर्मूलक्षणातिदुष्करकर्मकर्मठस्य समस्तपुरुषार्थपराकाष्ठाधिष्ठितनिःश्रेयसाभ्युदयपरंपरानिबन्धनं । मंगललोकोत्तमशरणभूतस्य केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्याष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अनेन आग्नेयांतराले पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्प्रतिष्ठापयेत् ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा । (इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें) ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीजैनधर्मं यजे ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैऋत्यांतराले च ।

नैऋत्य विदिशा के दल में जिनागम की पूजा

अपौरुषेयानखिलानदोषानशेषविद्भिर्विहितप्रकाशान् । प्रकाशितार्थान्प्रयजे प्रमाणं प्रवेदयद्द्वादशदिव्यवोन् ॥ ६ ॥

गद्य—ॐ निखिलजगदेकसारनिरतिशयपरमगंभीराणां अमोघस्यात्कारलांछितत्वेन पराप्रधृष्ट्याणामपि परप्रधर्षकाणाम् । ज्ञानत्रयाविसंवादित्वेन प्रमाणभूतानाम् अखिलबाधाजाललंघनजंघालानाम् । अनादिपरंपरायातत्वेनापौरुषेयाणाम् । अंगपूर्ववस्तुप्रभृतिभेद-प्रभेदोपलक्षितानाम् । प्रमाणनयनिक्षेपनिर्देशादिसदसदादिजीवस्थानगुणस्थानमार्गणा-स्थानाधिगमोपायप्रज्ञापितषड्द्रव्य पंचास्तिकाय-सप्ततत्त्वनवपदार्थानाम् । सकलवर्णाश्रमाचारव्यवहारप्रायश्चित्तादिविधिप्रतिपादकानाम् । अपरस्परव्याहतवाक्यार्थानाम् । नित्यमहादिविध-विधियज्ञकर्मनिवेदकानां अखिलभूतदयैकतानानां अभ्युदयफलनिःश्रेयसफलावसानानाम् । ब्रह्मलोकाविच्छिन्नसंप्रदायानां । इह परापरपरमेष्ठिसंतानप्रकाशितानाम् । अतिविततमिथ्यांधकारावृतलोकैकज्योतीरूपाणां । राजर्षिदेवर्षिपरमर्षिभिर्वाचनापृच्छनादिभि-रुपासितानाम् । भूतं भवंतं भविष्यन्तं सूक्ष्मं व्यवहितं विप्रकृष्टं इत्येवंजातीयकमर्थमशेषमावेदयतामन्वर्थवेदयपदेशानाम् । आचारसूत्रकृत-स्थानसमवायव्याख्याप्रज्ञप्तिज्ञातृधर्मकथाउपासकाध्ययनअंतकृद्दशोपपादिकदशप्रश्नव्याकरणविपाकसूत्रदृष्टिवादाख्यद्वादशांगानाम् । मंगललोकोत्तमशरणभूतानामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीजिनागम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्रीं श्रीजिनागम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीजिनागम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीजैनवाक्यं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वायव्यांतराले च ।

वायव्यविदिशा के दल में जिनचैत्य पूजा

कोट्योर्हत्प्रतिमाः शतानि नवतिः, पंचोत्तरा विंशतिः । पंचाशत्त्रियुता जगत्सु गुणिता, लक्षाः सहस्राणि तु ॥

सप्ताग्राणि च विंशतिर्नवशतिद्वयूनं शतार्थं मता-स्ता नित्याः पुरुतुंगपूर्वमुखसत्पर्यकबंधा यजे ॥७॥

गद्य—ॐ भगवदहर्द्भट्टारकादिस्थापनान्यासनिवासतापुण्यगणप्रभावप्रचोदितत्रिजगज्जनविधीयमानपूजातिशयस्थानानाम् । नागश्चामर-द्वात्रिंशन्मिथुनकरकलितचतुःषष्टिचामराद्यष्टमहाप्रातिहार्यविशिष्टानाम् । विनीलकुंतलकुलिशदशनप्रवालाधरपल्लवोपमकरचरणसमुल्लसितानाम् । श्रीश्रुतदेवीसर्वाण्यक्षप्रतिमोपलक्षितपीठोपकंठानाम् । प्रत्येकाष्टशतभृंगारादिमंगलद्रव्याष्टकगर्भगर्भावासमध्यमध्यसीनानाम् । वदंतीनामिव, पश्यंतीनामिव, हसंतीनामिव, निजासेचनकरूपातिशयेन सकलजनमनश्चमत्कारमातन्वतीनाम् । असान्भयताद्यंतरंगसाधनसंपन्न-भयजनसम्यक्त्वोपपत्तिबहिरंगनिमित्तमहिमानमापादयंतीनाम् । अलब्धशुद्धोपयोगिनामर्चानिर्माणस्थापनार्चनपराणाम् । पुण्यापुण्यास्रव-संवरतदुत्पादकवृद्धिक्षयसाक्षात्फलचतुष्टयमापादयंतीनां । मंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । अहर्द्भट्टारकप्रतिमानामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूहाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ (चंदन आदि चढ़ावे)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीजैनबिम्बान् यजे ॥

ऐशान्यान्तराले च ।

ईशान विदिशा के दल में जिनमंदिर पूजा

भवनजवनजानां ज्योतिषां कल्पजानां । मणिमयनिलयस्था येहमिंद्रालयस्थाः ।

बहुविभवयुता ये ये च मध्ये त्रिलोकी-जिनपतिनिलयांस्तांस्तांश्च सर्वान्महामि ॥ ८ ॥

गद्य—ॐ रजतमहारजतेन्द्रनीलमरकतमाणिक्यमयमहामानभासुरभित्तिस्तंभसालशिखरमंडपाद्यंगोपांगसंगताकीर्ण पंचवर्णप्रभा-
जालप्रभाविहितविचित्रांबरविलासांबराणां । संततानादिसंसिद्धहटद्धाटकीयधूपघटपेटकास्यविनिर्यद्विश्वतोविसर्पिधूमलेखाजालबहलपरिमल-
प्रसरसुरभीकृतसकलदिङ्मुखानां । वंदारुसुरासुरवृंदारकजयजयारावसुरनर्तकीकरकंकणझंकारादिद्विगुणीकृतानादिघटिघटाजालझणझणध्वान
बधिरिकृतसकलदिङ्मंडलानाम् । तमः समूलसमुत्पाटनपटुता-वलेपलिप्सागतगभस्तिमालिमंडलायमानहृद्घाटकीयघटितपैटकोपघटितचित्त-
चमत्काराणाम् । चकचकायमाननानाविधोपकरणनितितनीलतलनिर्जितज्योतिर्गणकितगगनांगणानाम् ॥

समुत्तुंगसुवर्णभित्तिभागवलंबमानमणिमालामुषितमेरुगिरिपाश्वर्तो शोभातिशयानाम् ॥ विचित्रनिर्माणवदन्निषेकनर्तनसंगीतावलोक-
नादिमंडपाभिर्मंडितचैत्यमहामहितानाम् । कुंजरातरिकुंजरादिदशविधध्वजराजितसभाजिताद्यद्वितीयसालांतरध्वजधराविरजितानाम् । चतुर्दिग्गता-
शोकसप्तच्छदचंपकाग्र चतुर्वर्णांचिततृतीयबहिःसालांतरवनावनिविनूतानाम् । चतुर्वीथिपर्यंतगतमहामानस्तंभाहितप्रतिर्भ्यजनमानस्तंभानाम् ।
सहजसकलपरिष्काराणामकृत्रिमाणामहार्यविविधालंकाराणामपि कृत्रिमाणां मंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । भगवज्जिनचैत्यालयानामष्टतयी-
मिष्टिं करोमि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हूं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं हूं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं हूं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूहाय जलं निर्वपामीति स्वाहा । (चंदन आदि चढ़ावें)।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, चैत्यालयान्संयजे ॥

ॐ ह्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालय समूहाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गद्य—एवमर्हदादीनभ्यर्च्य शरच्चन्द्रमरीचिरोविषोन्तश्चेतसि चिंतयन्ननादिसिद्धमंत्राभिमतत्रितकपूरहरिचंदनद्रवालुलितसुरभि-
शुभ्रपुष्पांजलिरैकविंशतिवारानधिवास्य पूर्णार्घ्यदानेन बहुमानयेत् ॥

(इस प्रकार अर्हतादि की पूजा करके अनादिसिद्ध मंत्र से २१ बार मंत्र करके पूर्णार्घ्य चढ़ावें)।

अनादिसिद्धमंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।
चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि
लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं
पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो
धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ हौं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा । इत्यनादिसिद्धमंत्रेण शुभ्रपुष्पैरेकविंशतिवारानधिवासयेत् ॥

(इसी अनादिसिद्धमंत्र से २१ बार पुष्पों से जप करें)

पूर्णार्घ्यः

इन्द्रवज्रा—

इत्यर्चिताः श्रीजिनचंद्रमुख्या, द्व्यष्टप्रभेदांचितदेवतास्ताः ।

एता महार्घ्येण समर्चिता नः, सिद्धिश्रियं शुद्धसुखं दिशंतु ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्प्रभृतिजिनचैत्यालयपर्यंतेभ्यः पूर्णार्घ्यं..... ।

यहां यागमण्डल में सोलह देवता माने हैं, वे ये हैं—पांच परमेष्ठी, भूत-वर्तमान-भाविकालीन तीर्थंकर में ५+३=८ हुये पुनः अर्हन्मंगललोकोत्तमशरण, सिद्धमंगलादि, साधुमंगलादि, केवलिप्रणीतधर्ममंगलादि ये ४ और जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और चैत्यालय ये ४ ऐसे ४+४=८ कुल ८+८=१६ होते हैं।

अष्टदल कमल में जयादि आठ देवियों की पूजा

अथाष्टदलस्थापितजयादिदेवतार्चनविधानम्

भुवनविजयदृष्टान्तगमोहादिविद्विजयविजितलोकश्रीजिनैन्द्राग्निभक्ताः ।

विमतविजयदक्षा जैनमार्गेकरक्षा, विधिवदिह यजामः साधुदेवीर्जयाद्याः ॥१॥

जयादिदेवीसमुदायपूजाविधानाय समस्तहव्यद्रव्यपूर्णपात्रं परमपुरुषचरणकमलयोरवतार्य पार्श्वतो विनिवेशयेत् ।

जयादि देवियों की पूजा करने के लिये समस्त पूजन-सामग्री को लेकर अर्हंतदेव के चरणों में अवतारण करके पास में रखें और इसी द्रव्य से आगे अर्घ्य चढ़ावें। एवमुत्तरत्रापि विधेयं ॥

गद्य—ॐ संतताखंडितभक्तिमंडिताखंडलकुंडलीशमंडलीकसार्वभौमादिभव्यपुंडरीकमंडलपुंडरीकषंडमार्तंडमंडलायमानतीर्थंकर-भट्टारकक्रमसरोरुहलोलंबायमानमानसानाम् ॥ निरवद्यस्याद्वादशासनजिनाध्वरयजमानयाजकजनेश्वरजनपदचतुर्विधसंघांतराक्षचयनिर्मूलोत्पा-टनपटूनाम् । विधिविहितनिजपूजाविशेषभव्यजनद्विषद्विजयद्वेषस्तम्भनप्रमोषकमोहादिविविधामोघफदान्वर्थ नामोर्जितजयाद्यष्टदेवतानाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसपर्याक्रमयथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरस्सस्त्रेकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

जयं विबोधवृत्तिपंचकस्य । स्वयं बहन्नावहति प्रजानाम् ।

जिनो जितात्मेति तमाभजंतीं, जयाय विघ्नस्य जयां यजामि ॥१॥

ॐ ह्रीं जये! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं जये! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जये! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं जयायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

दृष्ट्यावृत्तीनां विजयं दधानं, कुदृष्टिवाचां विजयं स्ववाचा ।

जिनं जरादेर्विजयाय नित्यं, भक्त्या भजंतीं विजयां भजामि ॥२॥

ॐ ह्रीं विजये! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं विजये! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं विजये! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं विजयायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

मोहारिमष्टोत्तरविंशतीष्ट, भेदं जयंस्तज्जयमातनोति ।

जिनो जनानामिति तं भजंतीं, जयार्थिपूज्यामजितां यजामि ॥३॥

ॐ ह्रीं अजिते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं अजिते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अजिते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं अजितायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

परैरजेयो रिपुरंतरायः, पराजितो येन तमाभंजतीं ।

जिनेश्वरं विघ्नपराजयार्थं, यजामि देवीमपराजितां ताम् ॥४॥

ॐ ह्रीं अपराजिते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं अपराजिते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अपराजिते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं अपराजितायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

यो वेदनीयोदयजक्षुदादेर्विजृम्भणं मोहविघातनेन ।

जघान जंभारिसमर्चितांग्रिं, तमर्चयतीं प्रयजामि जंभां ॥५॥

ॐ ह्रीं जंभे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं जंभे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जंभे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं जंभायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

नानाविधायुर्निगलोग्रबंध-प्रबंधमोहापहमर्हदीशम् ।

मोहव्यपोहाय मुदा वहंतीं, विद्वेषिमोहाय महामि मोहाम् ॥६॥

ॐ ह्रीं मोहे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं मोहे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं मोहे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं मोहायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

जिनप्रभोस्तंभितदुष्टनाम्नः, पादांबुजे स्तंभितचित्तभृंगाम् ।

शुभद्युतिं स्तंभितविघ्नजालां, स्तंभामिमामर्चनया धिनोमि ॥७॥

ॐ ह्रीं स्तंभे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ ह्रीं स्तंभे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं स्तंभे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।

ॐ ह्रीं स्तंभायै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

अर्हत्प्रभुं स्तंभितगोत्रबंधं, गोत्रच्छिदाभ्यर्चितमर्चयंतीम् ।

समर्चये स्तंभितकामपूज्यां, तां स्तंभिनीं स्तंभितविघ्नवर्गाम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं स्तंभिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अनेन दलाभ्यंतरे पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥
 ॐ ह्रीं स्तंभिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्स्थापनम् ।
 ॐ ह्रीं स्तंभिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । अनेन तद्वत्सन्निधापयेत् ।
 ॐ ह्रीं स्तम्भिन्धै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां
 प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

पूर्णाघ्यं

इत्थं सारसपर्यायाद्य महिता, यूयं प्रसन्नास्ततः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥
 सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, देव्यो जयाद्याव्हयाः । पूर्णागां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥ ६ ॥
 ॐ ह्रीं जयादिदेवीभ्यः पूर्णाघ्यं यजामहे..... ।

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः ॥ इति जयादिदेवतार्चनविधानम् ॥

अथ षोडशपत्रस्थापितविद्यादेवतार्चनम्

(सोलहदल कमल में विद्यादेवताओं की पूजा)

स्फुरितकरचतुष्कास्तीर्थकृन्नामपुण्या- वहविदितविशिष्टद्वयष्टसद्भावनोक्ताः ।

प्रकटितजिनमार्गाः संहतैकांतमार्गाः । विबुधविनुतविद्यादेवता व्याहरामः ॥ ११ ॥

विद्यादेवीसमुदायपूजाविधानाय समस्तहव्यद्रव्यपूर्णपात्रं परमपुरुषचरणकमलयोरवतार्य पार्श्वतो विनिवेशयेत् ॥

(पूजन-सामग्री जिनेन्द्रदेव के चरणों के सामने अवतरण करके उसी से देवियों की पूजा करें ।)

गद्य—ॐ निष्टप्तकांचनचंचरीकचामीकररुचिश्यामहेमसोमाभरिद्राभनीलपीतासितचंद्रेन्द्रनीलजलदजांबूनदजपापद्मरागप्रभाणाम्
 अंभोरुहवाहद्विपुष्पयानकेकिकोककुरंगशरभगोधाकच्छपलुलायसूकरसिंहहयाहिहंसवाहनानाम् । चराचरसर्वद्रव्यत्रिकालगोचरगुणपर्यायपंच-
 प्रतीक्षणक्रमसाक्षात्करणदक्षाक्षयकेवलज्ञानरूपविद्यप्रीतिजातान्वर्थनारमरोहिण्यादिविद्यादेवतानां । सकलसंपत्संपादकयथाक्रममुपक्रमामहे ।
 आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येक पूजा

दोर्भिश्चतुर्भिः कलशं दधाना, शंखं पयोजं फलपूरमुद्धं ।

सद्दृष्टि संसिद्धजिनानुरागा, या रोहिणी तां प्रयजामि देवीम् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं रोहिणि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं रोहिणि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं रोहिणि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं रोहिण्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां
 प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

दृष्ट्यादिसम्यग्विनयानुरागां, चक्रं समाक्रांतविरोधिचक्रम् ॥

खड्गं पयोजं फलमुद्धहन्तीं, प्रज्ञप्तिमंचामि धृतार्हदाज्ञाम् ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्ति! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं प्रज्ञप्ति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्ति! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां
 प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

शीलव्रताभा जिनभावनास्था, बिभर्ति दोर्भिः पविशृंखलां या ॥

शंखं सरोजं वरबीजपूर-माराधयामः पविशृंखलां ताम् ॥३॥

ॐ ह्रीं वज्रशृंखले! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वज्रशृंखले! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वज्रशृंखले! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वज्रशृंखलादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

या सुप्रमोदा सुतरामभीक्ष्णं, ज्ञानोपयोगोत्तमभावनायाम् ॥

धृतांकुशांभोजसुबीजपूरां, वज्रांकुशां तामिह यायजीमि ॥४॥

ॐ ह्रीं वज्रांकुशे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वज्रांकुशे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वज्रांकुशे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वज्रांकुशादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

सद्धर्मतत्फलजरागभवार्तिभीति-स्वरूपसंवेगविभावनोत्काम् ॥

सखड्गकुंतांबुजबीजपूरां, जांबूनदां भक्तहितां भजामि ॥५॥

ॐ ह्रीं जांबूनदादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं जांबूनदादेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जांबूनदादेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जांबूनदादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

धीसंयमत्यागविभावनाप्त-श्रीतीर्थकृन्नामजिनांघ्रिभक्त्याम् ।

वज्राब्जशंखोद्धफलांकहस्तां, यजामहे पूरुषदत्तिके त्वाम् ॥६॥

ॐ ह्रीं पूरुषदत्ते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पूरुषदत्ते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पूरुषदत्ते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पूरुषदत्तादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

तप्त्वा तपो दुश्चरमाप पुण्यं, यस्तीर्थकृन्नाम् तमर्चयंतीम् ।

कालीं यजामो मुसलासिपद्म, फलोल्लसद्दुर्जयदोश्चतुष्काम् ॥७॥

ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कालीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

भक्त्यान्विता साधुसमाधिरूप-सद्भावनासिद्धजिनांघ्रिपद्मे ॥

चापं फलं बाणमसिं बभार, या तां महाकालिमहं यजामि ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं महाकालीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं महाकालीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं महाकालीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं महाकालीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

यस्तीर्थकृन्नाम बबन्ध वैयावृत्ये स्फुरद्भावनयाग्रपुण्यम् ॥

तं सेवमानामरविंदहस्ता-माराधयामो वरगौरिदेवीम् ॥६॥

ॐ ह्रीं गौरीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गौरीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गौरीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गौरीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

योर्हन्महाभक्तिभरात्तपुण्यै-रचिन्त्यमार्हन्त्यमुपाससाद ।

तत्पादभक्तां धृतचक्रखड्गां, गांधारि गंधादिभिरर्चये त्वाम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं गांधारि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गांधारि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गांधारि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गांधारीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

आचार्यभक्त्योद्यदगण्यपुण्य-मर्हन्तमर्हन्त्यनुरागयोगात् ।

कोदंडकांडादियुताष्टबाहुं, ज्वालोज्ज्वलज्वालानि पूजये त्वाम् ॥११॥

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

बहुश्रुतेष्वाहितभक्तिमीशं, भक्त्या भजंतीं झषमुद्रहन्तीम् ।

घोरं करालं करवालमुग्र-त्रिशूलकं मानवि मानये त्वाम् ॥१२॥

ॐ ह्रीं मानवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मानवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मानवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मानवीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

यः श्रद्धया प्रत्ययरोचनाभ्यां, स्पृष्ट्या जिनेष्टागममेव भेजे ॥

तमानसंतीमहिमुद्रहन्त-मिंचामि वैरोटि हटत्विषं त्वाम् ॥१३॥

ॐ ह्रीं वैरोटि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वैरोटि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वैरोटि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वैरोटीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

आवश्यकस्यापरिहाणिमुच्चै-श्चचार षड्भेदवतीं वशी यः ॥

तमच्युतं सादरमर्चयंतीं, त्वामच्युते खड्गयुजं यजामि ॥१४॥

ॐ ह्रीं अच्युते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अच्युते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अच्युते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अच्युतादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

तपःश्रुताद्यैर्विततान मार्ग-प्रभावनां यो वृषनीतभव्यः ॥

तस्य प्रणामप्रवणां प्रणाम-मुद्रान्वितां मानसि मानये त्वाम् ॥१५॥

ॐ ह्रीं मानसि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मानसि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मानसि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मानसीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

साधर्मिकेष्वहितवत्सलत्व-माराधयंतीं विभुमक्षमालाम् ॥

मालां वरं चांकुशमादधानां, मान्ये महामानसि मानये त्वाम् ॥१६॥

ॐ ह्रीं महामानसि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं महामानसि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं महामानसि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं महामानसीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो युष्मत्प्रसादादियं ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं विद्यादिदेवाह्वयाः । पूर्णांगा विधिपूर्तिपूर्णफलदां पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥१७॥

ॐ ह्रीं रोहिण्यादिषोडशदेवीभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इष्टप्रार्थनापुरःसरपूर्णाहुतिः ॥ इति विद्यादेवतार्चनम् ॥

अथ चतुर्विंशतिदलन्यस्तजिनमातृकार्चनविधानम्

(चौबीस दल के कमल में चौबीस जिनमाता की पूजा)

मन्त्रिष्वाकुकुरुग्रनाथहरिसंज्ञापूर्ववंशोद्भवा । धीरोदात्तमहीक्षितः क्षितिनुता, यज्जीवितेशाश्च याः ॥

देवेन्द्राः प्रणमंति देवयुवति-व्रातश्चिरं सेवते । दासीवत्सकलाश्च तास्त्रिजगता-मंबा जिनांबा यजे ॥१८॥

जिनमातृसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥

गद्य — ॐ निरतिशयभक्तिभरानतपुरंदरपरिचोदितविविधसेवाविधायिश्रीप्रभृतिदिक्कुमारीकृतसंस्कारातिपूतगर्भागारपरिकल्पित-दिव्यारविंदविष्टरोपविष्टपरमोत्कृष्टशक्तिजुष्टसमुत्पन्ननिष्कलविश्वेश्वरवृषभादितीर्थकराभिख्यपुत्रप्रसवपवित्रीकृतसर्वलोकानाम् । निजतनूजगच्चूडामणि जिनगुणानुरागावनम्रसुरेन्द्रमुकुटतटघटितहटन्माणिक्यमयूखमालाबालातपोल्लसितसमसमानतसुरकामिनीजन-कुटिलकुंतलकलापचंचरीकचुंबितपादारविंदानाम् ॥

विश्वेश्वरा जगन्माता महासती पूज्या सुमंगला इत्यादिप्रतीतान्वर्थपुण्यनामधेयानाम् । साकेतादिप्रसिद्धपुराधीश्वरमहानुभावना-भिराजादिमहाराजप्राणवल्लभातिदुर्लभगुणमहितमरुदेव्यादिजिनेश्वराबिकानाम् । सकलसंपत्सम्पादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थ-मावाहनादिपुरःसरं सपर्याक्रमं यथाक्रमं उपक्रमामहे ॥ आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

श्रीनाभिराजस्य समस्तनाभि-प्रभोरयोध्याधिपतेः प्रियां त्वाम् ॥

मरुद्गणाच्यै मरुदेवि धन्ये, मान्ये महामः पुरुदेवि मातः ॥१॥

ॐ ह्रीं मरुदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मरुदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मरुदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मरुदेवीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं मरुदेवीमात्रे जलाद्यर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

विजितसकलशत्रोः कोसलाधीश्वरस्य, प्रविनुतजितशत्रोर्वल्लभां प्राणकल्पाम् ।

विदितविजयसेनामर्चयेऽभ्यर्चनीया-मजितजिनसवित्रीं मानिनीं लोकजैत्रीम् ॥२॥

ॐ ह्रीं विजयामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विजयामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विजयामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विजयामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं विजयामात्रे जलाद्यर्घ्यं...

अवन्त्यधीशो दृढराजलक्ष्मी-र्यस्याः प्रियोभूद्दृढराजभूपः ॥

तां शंभवाकौदयपूर्वभूभृत्-तटीमुपासे सुगुणां सुषेणाम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सुषेणामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुषेणामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुषेणामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुषेणामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सुषेणामात्रे जलाद्यर्घ्यं..

साकेतसाम्राज्यरमावरस्य, स्वयंवराभिख्यनृपस्य राज्ञीं ॥

यजे सवित्रीमभिनन्दनेशः, सिद्धार्थिकां सिद्धसमीहितार्थाम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धार्थामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सिद्धार्थामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सिद्धार्थामात्रे जलाद्यर्घ्यं..

प्राणप्रियां मेघरथक्षितीशः, साकेतनाथस्य मनोरथाप्तेः ।

महामतेः श्रीसुमतेः सवित्रीं, यजे जगन्मंगलमंगले त्वाम् ॥५॥

ॐ ह्रीं मंगलामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मंगलामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मंगलामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मंगलामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं मंगलामात्रे जलाद्यर्घ्यं..

कौसंब्यधीशो धरणाव्हयस्य, प्राणेश्वरि त्वां धरणीधरस्य ॥

यजामि पद्मप्रभपद्मबन्धुं, प्राचीं सुषीमे सुषमैकसीमे ॥६॥

ॐ ह्रीं सुषीमामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुषीमामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुषीमामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुषीमामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सुषीमामात्रे जलाद्यर्घ्यं..

काशीपुरवरलब्ध-प्रतिष्ठनुतसुप्रतिष्ठनृपराज्ञीम् ।

प्रयजे पृथिवीषेणां, सुपार्श्वजिनरत्नजन्मखनिम् ॥७॥

ॐ ह्रीं पृथिवीषेणामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पृथिवीषेणामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पृथिवीषेणामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पृथिवीषेणामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं पृथिवीषेणामात्रे जलाद्यर्घ्यं समर्पयामि ।

चंद्रश्चंद्रपुरीं शशास स महासेनो महीशां महा-सेनस्तस्य मनःप्रिया क्षणकरी, सल्लक्षणा लक्ष्मणा ॥

या चंद्रप्रभचंद्रभःसमुदयस्यैद्री महाशामिमा-मभ्यर्चामि शचीकचालिकलित-श्रीपादपद्मद्वयाम् ॥८॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मणामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं लक्ष्मणामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मणामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मणामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं लक्ष्मणामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

काकंदधीशो महिषीं महाग्रयां, सुग्रीवराजस्य समग्रशक्तेः ॥

श्रीपुष्पदंतोदयपुण्यपूज्यां, यजेऽभिरामे जयरामिके त्वाम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं रामामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं रामामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं रामामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं रामामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं रामामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

या राजभद्रनगरीपतिराजधर्म-दाढ्योल्लसदृढरथक्षितिपालराज्ञी ।

तां शीतलप्रसवकल्पितसर्वलोका-नंदां प्रवद्यचरणां प्रयजे सुनंदां ॥१०॥

ॐ ह्रीं सुनंदामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुनंदामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुनंदामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुनंदामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सुनंदामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

विष्णुः स जिष्णुविभवो वरसिंहपुर्याः, सिंहासनं शिखरितुंगमलंकरिष्णुः ।

यस्याः प्रियः प्रसवन्दितलोकनंदा, श्रेयोजिनस्य जननीमभिपूजये त्वाम् ॥११॥

ॐ ह्रीं विष्णुश्रीमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विष्णुश्रीमातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विष्णुश्रीमातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विष्णुश्रीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं विष्णुश्रीमात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

राजन्वर्ती यो वसुपूज्यराज-श्चकार चंपापुरमस्य राज्ञीम् ॥

त्रैलोक्यपूज्यक्रमवासुपूज्य-प्रसू यजे देवि जयावति त्वाम् ॥१२॥

ॐ ह्रीं जयामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं जयामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जयामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जयामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं जयामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

कापिल्यवल्लभश्री-कृतवर्म महीपतेर्महादेवीं ॥

विमलजिननाथजननीं, विमलगुणामर्चये जयश्यामाम् ॥१३॥

ॐ ह्रीं जयश्यामामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं जयश्यामामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जयश्यामामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जयश्यामामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं जयश्यामामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

साकेतसिंहासनमध्यवास, यः सिंहसेनो महिषीममुष्य ।

शीलव्रतालंकृतसुव्रताख्या-मनंतजिन्मातरमर्चयामि ॥१४॥

ॐ ह्रीं सुव्रतामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुव्रतामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुव्रतामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुव्रतामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सुव्रतामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

भानुक्षितीशः कुरुवंशभानोः, प्राणेश्वरीं रत्नपुरेश्वरस्य ।

सद्धर्मतीर्थकरधर्मनाथ-प्रसूमुपासे स्तुतसुप्रभे त्वाम् ॥१५॥

ॐ ह्रीं सुप्रभामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुप्रभामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुप्रभामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुप्रभामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सुप्रभामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

हस्तिनागपुरपंकजभास्वद्-विश्वसेननृपपुंगववेदीम् ।

पूर्वशांतिकरशांतिसवित्री-मर्चयामि भवतीमहमैरे! ॥१६॥

ॐ ह्रीं ऐरिणीमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ऐरिणीमातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ऐरिणीमातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ऐरिणीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं ऐरिणीमात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

शस्तश्रियो हास्तिनपालकस्य, श्रीसूरसेनस्य महीक्षितो या ।

मनःप्रिया कुंथुजिनेद्रमाता, श्रीशांतिदेवीमिह तां यजामि ॥१७॥

ॐ ह्रीं सुमित्रामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुमित्रामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुमित्रामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुमित्रामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं सुमित्रामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

शशास यो हास्तिनमस्तशत्रुः, सुदर्शनो दर्शनशुद्धिमुख्यः ॥

तत्प्रेयसीं विश्रुतमित्रसेनां, यजे जिनेशो जननीमरस्य ॥१८॥

ॐ ह्रीं प्रभावतीमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं प्रभावतीमातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं प्रभावतीमातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं प्रभावतीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं प्रभावतीमात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

पृथ्वीललामं मिथिलापुरं यो, ररक्ष शुभद्गुणकुंभभूपः ।

प्रजावतीं तन्महिषीं महाभो, यतो लसन्मल्लिविभोः सवित्रीम् ॥१९॥

ॐ ह्रीं पद्मावती मातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पद्मावती मातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पद्मावती मातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पद्मावतीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं पद्मावतीमात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

राजश्रिया राजगृहे रराज, यो राजमित्रस्य सुमित्रनाम्नः ।

राज्ञीं महामो मुनिसुव्रतस्य, प्रसूं मुखश्रीजितसोमशोभां ॥२०॥

ॐ ह्रीं वप्रामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वप्रामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वप्रामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वप्रामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं वप्रामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

मिथोऽनुरागा मिथिलापुरेशो, राज्ञी विनूता विजयस्य राज्ञः ।

नमेरमेयर्द्धिमतोऽस्य माता, या वप्पिलास्यै बलिमर्पयामि ॥२१॥

ॐ ह्रीं विनूतामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विनूतामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विनूतामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विनूतामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं विनूतामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

या द्वारवत्यमरकल्पितराजधानी-राजत्समुद्रविजयक्षितिपालराज्ञी ।

माता त्रिविष्टपपतेस्त्वमरिष्टनेमेश्चाये प्रसीद शिवदेवि भवत्पदाब्जम् ॥२२॥

ॐ ह्रीं शिवदेवी मातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शिवदेवी मातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शिवदेवी मातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं शिवदेवीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं शिवदेवीमात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

काशीमहीशासनविश्वसेन, प्राणेश्वरीं विश्वजगत्सवित्रीम् ।

ब्रह्माव्यां ब्रह्मपथस्य नेतुः, पार्श्वप्रभोर्मातरमर्चयामि ॥२३॥

ॐ ह्रीं देवदत्तामातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं देवदत्तामातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं देवदत्तामातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं देवदत्तामात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं देवदत्तामात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

क्षोणीमंडनकुंडरूढनगरी-नाथस्य नाथान्वय-श्रीसिद्धार्थमहीपतेः प्रियतमा, सिद्धाखिलार्थस्य या ।

लोकालोकविवर्धमानविलसद्धीवर्धमानांबिकां । लोकांबां प्रियकारिणीं प्रियकरीं, यायन्मि तां यज्वनाम् ॥२४॥

ॐ ह्रीं प्रियकारिणीमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं प्रियकारिणीमातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं प्रियकारिणीमातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं प्रियकारिणीमात्रे जलं इत्यादि । ॐ ह्रीं प्रियकारिणीमात्रे जलाद्यर्घ्यं.. ।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाःस्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, सर्वा जिनेन्द्राम्बिकाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥२५॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनमातृभ्यः पूर्णाघ्यं . . .

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः ।

यासां गोतमगोत्रजः सकलविन्नेमीश्वरः सुव्रतः । शेषाः काश्यपगोत्रजा जिनवराः, पुत्रा जगत्स्वामिनः ।

या धर्मस्थितिहेतवो जिनलसन्नो कर्मनो आगम-द्रव्योत्पादनतो जिनेन्द्रजननीः, संभावयेऽर्घ्येण ताः ॥ २६ ॥

एतद्वंदनामुद्रया पठित्वा भक्त्या पंचांगप्रणामं कुर्यात् ॥ (इस पद्य को पढ़कर वंदनामुद्रा से भक्तिपूर्वक पंचांग नमस्कार करें)

इति जिनमातृपूजाविधानम् ॥

अथ द्वात्रिंशत्पत्रार्पितशक्रार्चनम्

(बत्तीस दल के कमल में बत्तीस इंद्रों की पूजा)

चतुर्णिकायप्रभवामरेन्द्रान् । जिनेन्द्रसेवाप्रसितान्तरंगान् ।

प्रभूतभूतिद्युतिसौख्यबोधा-नाहूय मंत्रैः पृथगर्चयामि ॥

द्वात्रिंशदिन्द्रपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

द्वासप्ततिर्यानि भवन्ति लक्षाः, कोट्यश्च सप्तापि महन्ति तानि ।

प्रपालयन्तो भवनानि सर्वेऽप्यायात यूयं भवनामरेंद्राः ॥१॥

भवनेन्द्रसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥

गद्य — ॐ विविधरत्नप्रभासहचरितरत्नप्रभाभूमिपंकभागखरभागावस्थितभवनवासशीलतान्वर्थभवनवासिसामान्यसंज्ञानां । प्रतिविशिष्टनामकर्मोदयप्रतिपादितासुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिककुमारविशेषसंज्ञानाम् । कुमारवद्वेषायुधयान-वाहनक्रीडादियुक्ततारुढकुमारव्यपदेशानाम् । कायप्रवीचारपीतांतलेश्यानाम् । दशभेदोपलक्षितप्रथमनिकायनिचयिमानदेक्षाम् ॥ प्रतिनिकायभेदं द्विद्विसंख्ययेन्द्रत्वमात्मसात्कुर्वताम् ॥ सामानिकादिसुरसमितिसंसेव्यमानानां सौधर्मेशानेंद्रसंजातसहाभ्यसूयचमरवैभानप्रभृतिविंशतिभवनेन्द्राणां । सकलसंपत्सम्पादकदयामययागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसर्पाक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ॥ आवाहनादिपुरःसत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ असुरेन्द्रादीनां पृथक्पूजा

अग्न्यादिदिग्गतमहामहिषादिसप्ता-नीकं लुलायगतमुद्भटमुद्गरास्त्रम् ।

चूडामणिप्रथितचिन्हयुताग्रमौलिं, जैनेन्द्रभक्तमसुरेंद्रमिहाह्वयामि ॥१॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं असुरेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । एवं सर्वत्र ।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

नागाद्यनीकं कमठाधिरूढं, नागस्फटाचिन्हमुद्रूढवन्तम् ।

नागेन्द्रपाशप्रतिभासहस्तं, नागेन्द्रमेनं विधिना धिनोमि ॥२॥

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

सुपर्णमुख्यावृतसप्तसैन्यं, सुपर्णचिन्हातिहटत्तिरीटम् ।

दंडं प्रचंडोज्ज्वलमंडलाग्रं, बिभ्राणमंचामि सुपर्णराजम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.. ।

द्विपादिसेनांचितसप्तकक्षं, द्विपांककोटीरविराजमानम् ।

द्वीपाद्रिदेशेषु विहारसक्तम्, द्वीपेन्द्रमर्चामि तुरंगरूढम् ॥४॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । एवं सर्वत्र ।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

कोटीरकोटीमकरांकमग्न्या-द्याशासु गच्छन्मकराद्यनीकम् ।

वारीभयानं वडिदण्डचंडं, वाराशिनाथं परितर्पयामि ॥५॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.. ।

खड्गं धरन्तं धृतवज्रचिन्हं, खड्गाद्यनीकैः परितः परीतम् ।

मृगेन्द्रमाप्तं स्तनितोग्रनादं, संपूजयामः स्तनितामरेन्द्रम् ॥६॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

आरूढमुच्चंडतरं वराहं, स्वस्वस्तिकाकं करभादिसैन्यम् ।

विद्युन्महादंडधरं प्रचंडं, विद्युत्कुमारेन्द्रमिहारयामि ॥७॥

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च... ।

सिंहादिसप्तप्रमवाहिनीशं, सिंहांकमौलिं परिघायुधोग्रम् ।

यजामि दिव्योद्भटचारुवेषं, दिक्कुंजरावस्थितदिककुमारम् ॥८॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

कुंभांकमुल्कायुधकल्पितारि-स्तंभं महास्तंभविमानसंस्थम् ।

यजे परीतं शिबिकाद्यनीकै-रग्नीन्द्रमग्न्युज्ज्वलकीलमौलिं ॥९॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.. ।

तुरंगमादिस्तुतसप्तसैन्यं, तुरंगमालक्षितसत्तिरीटम् ।

तुरंगमारूढमिमं महामो, महीरुहास्त्रं पवनामरेन्द्रम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

असुरफणिसुपर्णद्वीपशेषाधिपा ये, परमुदधिप्रप्लवार्धहीनायुषः स्युः ।

प्रवरमहिषमुखैः सप्तभेदैरनीकैः, कृतपरिवृतयोऽप्राकृतेर्घिताः सन्तु शान्त्यै ॥११॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादिभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं..... ।

इष्टप्रार्थनापुरःसरपूर्णाहुतिः इति (पूर्णार्घ्यं चढ़ावे) । भावनेन्द्रार्चनम् ।

अथ व्यंतरेन्द्रार्चनम्

संख्याव्यतीताश्रयवर्तमान-भौमामराणां प्रभवो भवन्तः ।

आयान्तु तिष्ठन्तु ममात्र साक्षात्, भवन्तु गृण्हेन्तु च यज्ञभागम् ॥१॥

व्यंतरेन्द्रसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥ (व्यंतरेन्द्रो की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करें) ।

गद्य—ॐ विविधवनवनधिरिगिरिवेदिकादिदेशान्तरनिवासशीलतान्त्र्यव्यंतरसाधारणनामधेयानाम् । नामकर्मविशेषविष्कृतकिंनरकिं-
पुरुषमहोरगांधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचविशेषाभिधानानाम् ॥ प्रथमचतुर्लेश्याकायप्रवीचारयुक्तानाम् । अष्टप्रभेदविशिष्टनिकायनिचितदेवानां ।
द्विद्विसंख्यया प्रतिनिकायप्रभेदमिंद्रत्वमापनीपद्यमानानां । अंजनाद्यष्टदिक्चतुष्टयावस्थितजंबूद्वीपप्रमितपंचपंचमहानगरनिवासिनाम् ।
प्रचुरतरपरिच्छदपरिष्कृतमरकिंकरपरीतकिंनरकिंपुरुषादिषोडशव्यंतरेन्द्राणाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागग्रहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादि-
समुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ॥ आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनार्थं पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

जिनानदृष्टेष्टविरोधदृष्टी-नभिष्टुवन्तं फणिपाशपाणिम् ।

अष्टापदाधिष्ठितमिष्टितुष्टं, कुर्वे महत्किंनरकिंनरेन्द्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

हटतिरीटादिमणिप्रभाभि-रुत्पादयन्तं सुरचापकोटिम् ।

निशांतखंडाचितपाणिमिष्ट्या, किंपूरुषं तोषयुतं तनोमि ॥२॥

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

विशालशार्दूलविमानसंगं, मुनीशशार्दूलपदाब्जभृंगं ।

अयोग्रदंडांचितबाहुदंडं, महोरगेन्द्रं प्रयजे प्रचंडम् ॥३॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

जिनेन्द्रहंसं परमुक्तिहंसी-प्रियं वहन्तं निजमानसांतः ।

हंसाधिरूढं महयामि यज्ञे, सार्वस्य गांधर्वकसार्वभौमम् ॥४॥

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

फणीश्वराकारमहाविमानं, फणित्रजासेवितशेवधीशम् ।

अक्षोत्सवं मोक्षपथस्थितानां, रक्षाक्षमं यक्षपतिं प्रयक्ष्ये ॥५॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

अक्षानपेक्षाक्षयमोक्षलक्ष्मी-विलक्षमर्हत्पदपक्षपातम् ।

हर्यक्षरूढं धृततीक्ष्णकुंतं, यक्ष्यामि रक्षःपतिमार्यरक्षम् ॥६॥

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

सभंगभंगातिगसंगतोक्तिं, जिनं जगन्मंगलमाभजन्तम् ।

तुरं तुरंगं गतमुद्धभूतिं, भूतेन्द्रमुद्भूतमुदं तनोमि ॥७॥

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

आराध्यमर्हत्पदपुंडरीक-माखंडलैः पंडितपुंडरीकैः ।

आराध्यतं धृतचंडदंडं, प्रीतं पिशाचाधिपतिं तनोमि ॥८॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

त्रायस्त्रिंशैर्लोकपालैर्व्यपैर्यै सेव्यंते सप्तसामानिकाद्यैः ।

तेमी युक्ता द्विद्विदेवीसहस्रैः सर्वे शान्त्यै सन्तु भौमामरेन्द्राः ॥९॥

ॐ ह्रीं किन्निरेन्द्रादिभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णार्घ्यः । इति व्यन्तरेन्द्रार्चनम् ।

अथ ज्योतिरिन्द्रार्चनम्

कायप्रवीचारसुखानुरक्तान्-पीतांतलेश्यास्त्रिविधानवन्तौ ।

ज्योतिष्कदेवानपि चंद्रसूर्या-वायातमात्मीयपरिच्छदाभ्याम् ॥१०॥

ज्योतिष्केन्द्रपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥ (ज्योतिष्केन्द्रों की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करें)

गद्य—ॐ चित्रासमतलोपरि नवत्युत्तरसप्तशतयोजनानि व्यतिक्रम्य व्यवतिष्ठमाने, दशाधिकशतयोजनबहुलतिर्यगसंख्यातद्वीप-समुद्रप्रमाणधनोदधिपर्यंतज्योतिर्लोकं प्रवर्तमानानाम् । ज्योतिः स्वभावतान्दर्थीकृतज्योतिष्साधारणसमाख्यम् । तत्तन्नामकर्मप्रत्ययप्रसूतसूर्येन्दु-ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाविशेषावहयानाम् । मेरुमेकादशभिर्योजनशतैरेकविंशतिं परिहृत्य प्रदक्षिणं नृलोके मत्पिमावर्तमानानाम् । मानुषोत्तर-

महीधराद्बहिरवस्थितानां क्रियाविशेषपरिच्छिन्नान्यपरिच्छेदनिमित्तक्रियाविशेषरूपव्यवहारकालप्रवर्तकानाम् । पंचसमचित्तृतीयनिकाय-संजातदेवानाम् । प्रभावादिभिः प्राधान्यमास्कंदतां सूर्याचंद्रमसाम् ॥ सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहतिक्रमार्थं आवाहनपुरःसरं समुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

उत्तानीकृतगोलकार्धसदृशे, बिंबेकमण्यादिके । मध्येध्यासिजिनालये पुरुपुरे, शोभाभिरामे स्थिरम् ।

नक्षत्रेः प्रचुरप्रकीर्णभगणै-रर्केग्रहैरावृतम् । चंद्रं कुंतकरं चराचरविधुं, सिंहाधिरूढं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सोमेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

प्रस्फीतातपमर्धगोलकनिभं, पद्माक्षरत्नात्मकम् । राजचैत्यनिवासमध्यनगरं, योऽलंकरोत्युज्ज्वलम् ।

लोके रात्रिदिवास्थितिं वितनुते, मेरोःपरीत्याचर-न्नर्कस्थायिचरार्कैर्मुदमितं, तं तन्महेऽहन्महे ॥२॥

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यो योजनान्यष्टशतीं व्यतीत्य, भूमेश्वरन्योमनि भानुमाली ।

यो योजनाशीतिमतीत्य तस्माच्चंद्रोर्धितौ तौ भवतां प्रसन्नौ ॥३॥

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः । इति ज्योतिष्केन्द्रार्चनम् ।

अथ कल्पेन्द्रार्चनम्

द्वौ सागरौ सप्तदशद्विसप्तस्थितिक्रमाद्द्विद्वयधिका च यावत् ।

द्वाविंशतिर्येषु सुराधिपास्ते, सर्वे समायांतु भजंतु पूजाम् ॥१॥

कल्पेन्द्रसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥ (कल्पेन्द्रों की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करें)

गद्य—ॐ इंद्रसामानिकादिविविधविकल्पनाधिकरणद्व्यष्टकलोपत्पन्नोपकलितकल्पोपन्नसामान्यसंज्ञानाम् ॥ तत्तत्कल्पसाहचर्यात्भावतो वा सौधर्मेशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलांतवशुकशतारानतप्राणतारणाच्युतेन्द्र विशेषाभिख्यानाम् ॥ उपर्युपकल्पेषु स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधिविषयैरभ्यधिकानाम् । गतिशरीरपरिग्रहाभिमानैर्हीनानाम् ॥ द्वित्रियुगलशेषकल्पेषु प्रायः पीतपद्मशुक्ललेश्यानाम् । एकैकद्विद्वियुगलशेषकल्पेषु कायस्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराणाम् । इंद्रभेदाहितद्वादशप्रभेदांचितचतुर्थनिकायनिचितसकलकल्पोपन्नदेवेन्द्राणां । पंचकल्याणैर्द्रध्वजप्रमुखशतमखविधानोन्मुखशतमरवादिद्वादशकल्पेन्द्राणाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थं आवाहनादिसमुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

सौधर्मे त्रिंशदेकद्व्युपलकलितेष्टादशे दक्षिणाशा-श्रेणीबद्धे सदास्ते समवति च लसत्पंचवर्णान्विमानान् ॥

द्वात्रिंशल्लक्षसंख्यानुरुकुलिशकरः प्राच्यवाचीप्रतीची । श्रेणीस्थान्यस्तमर्चाम्यमरकरिगतं धर्म्यसौधर्ममिंद्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे

प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ईशानकल्पोत्तरदिग्विमाना-नष्टोत्तराविंशतिमेव लक्षाः ।

अवंतमीशानसुरेन्द्रमर्चा-म्यष्टादशश्रेणिनिबद्धसंस्थम् ॥२॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सानत्कुमारे पटलेऽतिमे तच्छ्रेणीनिबद्धेऽजनि षोडशे यः ।

तं रक्षितद्वादशलक्षसम्यग्विमानमर्चामि सनत्कुमारम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च... ।

माहेन्द्रकल्पे पटलेऽतिमे तच्छ्रेणीनिबद्धेऽजनि षोडशे यः ।

तमष्टलक्षोरुविमाननाथं, माहेन्द्रमर्हन्महामहामि ॥४॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं माहेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

श्रेण्यामपाच्यां पटले चतुर्थे, चतुर्दशे तिष्ठति यो विमाने ।

यजे चतुर्लक्षविमाननाथं, ब्रह्मेन्द्रमेनं जिनयज्ञलोलम् ॥५॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

स्थितं द्वितीयेपटलेऽप्यपाच्य श्रेणीभवे द्वादशके विमाने ।

लक्षार्धकाकृष्णहरिद्विमाना-धीशं यजे विश्रुतलांतवेन्द्रम् ॥६॥

ॐ ह्रीं लांतवेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं लांतवेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं लांतवेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं लांतवेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

एकत्रास्ते यो द्युचक्रेऽप्युदीच्यश्रेणीबद्धे पंक्तिसंख्ये यजामि ।

चत्वारिंशद्वै सहस्राण्यवन्तं शुक्रेद्रं तं श्वेतपीतान्विमानान् ॥७॥

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

एकेन्द्रकान्योऽवति षट्सहस्रं, श्वेताभपीताभमहाविमानान् ।

यजे शतारेन्द्रमिहाप्युदीच्य-श्रेणीनिबद्धेऽष्टमके वसन्तम् ॥८॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

षष्ठ्यां पटल्यां पटलेषु षट्सु, श्वेतौकसां सप्तशतीयुतेषु ।

अपाच्यषष्ठास्पदमर्चयामि, त्रिश्रेणिनाथं नुतमानतेन्द्रम् ॥६॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

षष्ठ्यां पटल्यां पटलेषु षट्सु, श्वेतौकसां सप्तशतीयुतेषु ।

उदीच्यषष्ठास्पदमाप्तमेक-श्रेणीश्वरं प्राणतमर्चयामि ॥१०॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

षष्ठ्यां पटल्यां पटलेषु षट्सु, श्वेतौकसां सप्तशतीयुतेषु ।

अपाच्यषष्ठास्पदमर्चयामि, त्रिश्रेणिनाथं नुतमारणेन्द्रम् ॥११॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

षष्ठ्यां पटल्यां पटलेषु षट्सु, श्वेतौकसां सप्तशतीयुतेषु ।

उदीच्यषष्ठास्पदमाप्तमेत-श्रेणीशमर्चामि तमच्युतेन्द्रम् ॥१२॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

हस्तान्सप्त षडेव पंच चतुरस्त्रीनर्धयुक्तानथ । त्रीनुत्सेधमुशंति जैनमुनयो, येषु द्वयोश्च द्वयोः ॥

तेमी सारसुखानुभावकलिता, नंदंति चेंदंति च । स्वर्लक्ष्मीपतयः सदा विदधतां, शांतिं सतामर्चिताः ॥ १३ ॥

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः ॥ (पूर्णार्घ्यं चढ़ावे)

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, द्वात्रिंशदिन्द्राव्हयाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥१४॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रा इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ॥

इति द्वात्रिंशदिन्द्रार्चनम् ॥

अथ चतुरस्रमंडलस्थापिततिथिदेवार्चनविधानम्

(अब प्रथम चौकोन मंडल में १५ तिथिदेवता की पूजा)

ये सांसिद्धिकदिव्यभूषणलसद्विव्यांगदीप्त्युज्ज्वलाः । ये शिष्टाष्टगुणाश्च येऽवधिमिता, बोधं भवप्रत्ययम् ।

ये नंदादितिथिप्रवर्तनविधौ, दक्षाश्च यक्षादयस्-तानेताञ्जिनयज्ञविघ्नविहतान्यक्षेण यक्ष्ये क्षमान् ॥१५॥

तिथिदेवतासमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥ (तिथिदेवताओं की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करें)

गद्य—ॐ धर्माधर्मानुभोगपरिच्छिन्नपर्यन्तासंख्यातप्रदेशलोकाकाशप्रतिप्रदेशैकैकव्यवस्थितरत्नराशिसंकाशवर्तनालक्षणक्लाणुमुख्य-
कालबलोपबृंहितक्रियाविशेषपरिच्छिद्यमानसमयादिस्वरूप व्यवहारकालप्रभेदपंचदशतिथिस्वाम्यत्वतन्निबन्धनजयापजयलाभालाभादि-
सकललोकयात्राप्रवर्तन दक्षयक्षादितिथिदेवतानाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःस्समुपचितसपर्याक्रमं
यथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय प्रथमचतुरस्रमंडले पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

(प्रथम चौकोन मंडल में पुष्पांजलि क्षेपण करे।)

अथ प्रत्येकपूजा

रक्ष यः क्षमात्रयवर्तिलोकं, चिक्षेप कर्मारिमनक्षसौख्यः ।

तत्पक्षपातं क्षपितान्तरायं, यक्षं प्रयक्ष्येऽतितिथिप्रतीक्ष्यम् ॥१॥

ॐ ह्रीं यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं यक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं यक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

वैश्वानरं देवमर्घेधनानां, वैश्वानराद्यष्टतनुं भजंतम् ।

वैश्वानराशासविधे यजामि, वैश्वानराभिख्यमिमं तिथीशम् ॥२॥

ॐ ह्रीं वैश्वानर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वैश्वानर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वैश्वानर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वैश्वानराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

मोहाव्हयं राक्षसमुद्भटं यः, क्षिप्त्वा क्षयं मोक्षमुपाससाद ।

तन्मार्गविघ्नक्षपणातिदक्षं, यजामहे राक्षसतिथ्यधीशम् ॥३॥

ॐ ह्रीं राक्षस! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं राक्षस! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं राक्षस! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं राक्षसाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यो मोक्षमार्गं प्रणिनाय देवो, बिभेद दुर्भेदनघातिशैलान् ।

विवेद विश्वार्थमिमं भजन्तं, तमाद्रियेऽहं नधृतं तिथीशम् ॥४॥

ॐ ह्रीं नधृत! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नधृत! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं नधृत! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं नधृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यस्योपपन्नं विविधोपपत्त्या, सार्वज्ञमेनं शरणं प्रपन्नं ।

सतां विपन्नत्वहरं यजे श्री-संपन्नकं पन्नगतिथ्यधीशम् ॥५॥

ॐ ह्रीं पन्नग! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पन्नग! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पन्नग! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पन्नगाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सुरासुराधीशतिरीटकोटी-रत्नप्रभाभासुरपादपीठम् ।

मोहासुरध्वंसिनमाश्रितो यः, समर्च्यतेऽसावसुरस्तिथीशः ॥६॥

ॐ ह्रीं असुरदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं असुरदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं असुरदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं असुराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

उपास्यमानं विबुधैरशेषै-रुपाश्रितः श्रीजिनचंद्रपादम् ।

तिथीश्वरो यः सुकुमारवृत्तिः, समर्च्यतेऽसौ सुकुमारदेवः ॥७॥

ॐ ह्रीं सुकुमारदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुकुमारदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुकुमारदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुकुमाराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

यतो जगत्पाति भवार्तिदावा-त्ततोखिलानां जगतां जिनेन्द्रम् ।

पितामहं वै पितरं जिनेन्द्रं, तिथीश्वरं तं पितरं धिनोमि ॥८॥

ॐ ह्रीं पितृदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पितृदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पितृदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पितृदेवाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

विश्वार्थविज्ञानमहांबुराशिं, विश्वेक्षणं योर्चति विश्वमूर्तिं ।

विश्वांतरायोरुतमोंशुमाली, स विश्वमाली विधिनाचर्यतेऽयम् ॥९॥

ॐ ह्रीं विश्वमालिन्! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विश्वमालिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विश्वमालिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विश्वमालिने इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

तिथिप्रवृत्याखिललोकयात्रां, प्रवर्तयेद्यश्चतुरग्रषष्ठ्या ।

युतं जिनेन्द्रं चमरीरुहैस्तं, सेवेत चाये चमरं तिथीशम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं चमरतिथिदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं चमरतिथिदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं चमरतिथिदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं चमरतिथिदेवाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च...।

दयादमत्यागसमाधिनिष्ठं, जैनं मतं वीतसमस्तबाधम् ।

भव्याय यस्मै खलु रोचते वै, वैरोचनं तं प्रयजे तिथीशम् ॥११॥

ॐ ह्रीं वैरोचन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वैरोचन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वैरोचन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वैरोचनाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

यः सेवते महाविद्यं, विश्वविद्यामहेश्वरम् ।

आप्तुकामो महाविद्यां, महाविद्यं महामि तं ॥१२॥

ॐ ह्रीं महाविद्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं महाविद्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं महाविद्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं महाविद्याय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

मारं जघानापरदुर्यं यो, माऽरं यमार्हन्त्यमयीं जगाम ।

मारं तमाराधयतां भजन्तं, मारं तिथीशं महितं महामि ॥१३॥

ॐ ह्रीं मारतिथिदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मारतिथिदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मारतिथिदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मारतिथिदेवाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

विश्वार्थसार्थप्रतिबिंबबोधं, विश्वात्मकं विश्वजनीनवृत्तिम् ।

विश्वेश्वरं यो भजते जिनेन्द्रं, विश्वेश्वरं तं प्रयजे तिथीशम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं विश्वेश्वर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विश्वेश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विश्वेश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विश्वेश्वराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

आखंडलार्घ्यं पदपुंडरीकं, चंडेक्षुकोदंडजितो जिनस्य ।

समाश्रितं खंडितविघ्नमिष्ट्या, पिंडाशिनं मंडितमातनोमि ॥१५॥

ॐ ह्रीं पिण्डाशिन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पिण्डाशिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पिण्डाशिन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पिंडाशिने इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, सर्वे तिथीशाढ्याः । पूर्णागां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥१६॥

ॐ ह्रीं पञ्चदशतिथिदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि..... ।

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः ॥ (पूर्णार्घ्यं समर्पित करें) । इति तिथिदेवतार्चनविधानम् ॥

अथ चतुरस्रमंडलेषु द्वितीयचतुरस्रमंडलस्थापितग्रहार्चनविधानम्

(अब द्वितीय चौकोन मंडल में नवग्रह की पूजा करें)

रक्तार्कं धवलेन्दुमारमरुणं, पीतं ससौम्यं गुरुं । शुक्रं शुक्रमलिप्रभं शनिमहिं, केतुं सवर्णाक्षतैः ॥

पुंजेषूचितमंडलोपरि कृतेष्वास्थाप्य मूलान्वितम् । दर्भं संस्कृतमत्र साधु धिनुयां, तत्तत्सवर्णार्चनैः ॥१७॥

ग्रहपूजासमुदायविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् । (नवग्रह की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करें)

गद्य—ॐ महीतलोपरिष्टादष्टशताशीत्युत्तराष्टशतत्रिंशद्विंशदशषण्णवयूननवशतनवशतीप्रमाणयोजनांताक्रांताकाशप्रदेशचरान् । एकषष्टि-भागीकृतप्रमाणयोजनाष्टचत्वारिंशद्भागषट्पंचाशद्भागक्रोशार्धक्रोशकिंचिन्न्यूनक्रोशतदर्धोपरिविस्तारान् । प्रत्येकं चतुःसहस्रसंख्यतत्संख्य-द्विद्विहसहस्रप्रमाणपूर्वादिदिग्गतसिंहसिंधुरमहोक्षजटिलाश्वकाकाराभियोग्यामरनीयमानानिलप्रतिष्ठितविमानानधितिष्ठत् । संवत्सरसहस्रतच्छत-सहस्राधिकपल्यपल्याधार्धपल्यपल्यशतवत्सराधिकपल्यपल्यार्धमानोत्कृष्टायुषाम् । तापसकापालिकबौद्धऋषिब्रह्मचारिपरिव्राटपाशुपत-श्रवणमुनिपूजाप्रधानवरदानाम् । आदित्यसोमांगारबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चराणाम् । अरिष्टछायाविष्टकिंचिन्न्यूनयोजाविस्तारविमानाधिष्ठित-तद्ध्वजाग्रत्यक्तचतुरंगुलचंद्रार्कविमानषट्षण्मासांतच्छादाकराहुकेतुसहितानाम् । नागयक्षभूतकृतदेहार्तिधनहानिस्थानच्युतिरसादि-वैषभ्योपशान्तिकरपूजाविशेषसानुग्रहनवग्रहाणाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनाधिरःसरसमुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरःसरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय द्वितीयमंडले सवर्णाक्षतपुंजान्स्थापयित्वा तदुपरि सूर्यादीनां क्रमेण कुंकुमाद्युक्तदर्भासनानि विन्यसेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

अर्काकैधनसुश्रुतोद्धपरमान्नाज्यैर्गुडैर्मोदकैः । पुष्पैश्चारुजपादिभिः परिणतैर्नारंगमुख्यैः फलैः ।

गंधैस्तैर्घुसृणादिभिः करलसत्पद्मं हरिद्राहकम् । त्वामंचाम्यरुणैः पुरैः समुचितैस्त्वं नः प्रसन्नो भव ॥१॥

ॐ ह्रीं आदित्य ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

आदित्याय स्वाहा । आदित्यपरिजनाय स्वाहा । आदित्यानुचराय स्वाहा । आदित्यमहत्तराय स्वाहा ।
अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा ।
स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ आदित्याय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं,
स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । इत्यादित्याव्हाननम् । (अर्घ्यं समर्पितं करे)

यस्यार्थं क्रियते पूजा स प्रसन्नोस्तु नः सदा ॥

पूर्वदक्षिणस्यां दिशि—आग्नेय विदिशा में पूजा

त्वं देवदार्वादिजसाज्यधूपै-हव्यैः सितैः किंशुकदारुसिद्धैः ।

सवर्णगंधप्रसवाक्षताद्यैः, क्षीरादिभिश्चंद्रं यजे प्रसीद ॥२॥

ॐ ह्रीं सोम ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोमाय स्वाहा । सोमपरिजनाय स्वाहा । सोमानुचराय स्वाहा । सोममहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ सोमाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं... ।

दक्षिणस्यां दिशि—दक्षिण दिशा में पूजा

यजे कुजं खादिरकाष्ठभृष्टै-र्गुडाज्यजुष्टैर्यवसक्तुवारैः ।

धूपैश्च रालामहिषादिगुग्गुलै-रेलादिजैराज्ययुतैः सशूलम् ॥३॥

ॐ ह्रीं कुज! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कुज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कुजाय स्वाहा । कुजपरिजनाय स्वाहा । कुजानुचराय स्वाहा । कुजमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ कुजाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं... ।

दक्षिणपश्चिमायां दिशि—नैऋत्य विदिशा में पूजा

अजस्थ सत्पुस्तकहस्तपीत-यज्ञोपवीतेन्दुज गव्यदुग्धैः ।

हव्यैरपामार्गसमित्सुसिद्धै-रालाज्यधूपैः परिपूजये त्वाम् ॥४॥

ॐ ह्रीं बुध! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं बुध! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं बुध! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

बुधाय स्वाहा । बुधपरिजनाय स्वाहा । बुधानुचराय स्वाहा । बुधमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ बुधाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं.... ।

पश्चिमायां दिशि—पश्चिम दिशा में पूजा ।

कमंडलुं पुस्तकमक्षमालां, बिभ्रद्गुरो पद्मगसोपवीत ।

क्षैरेयमश्वत्थसमिच्छुतं त्वं, भजाज्यवत्पीतसुवस्तुधूपम् ॥१॥

ॐ ह्रीं गुरो! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गुरो! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गुरो! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गुरवे स्वाहा । गुरुपरिजनाय स्वाहा । गुरु-अनुचराय स्वाहा । गुरुमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ गुरवे स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं.... ।

पश्चिमोत्तरस्यां दिशि—वायव्य विदिशा में पूजा

शुक्लोपवीतं फणिपाशमक्ष-मालां वहन्दर्दुरसंस्थ शुक्र ।

गुडं यवान्नं भज फल्गुकाष्ठ-शृतं सवर्णाक्षतगंधपुष्पम् ॥६॥

ॐ ह्रीं शुक्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शुक्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शुक्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

शुक्राय स्वाहा । शुक्रपरिजनाय स्वाहा । शुक्रानुचराय स्वाहा । शुक्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ शुक्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं... ।

उत्तरस्यां दिशि—उत्तर दिशा में पूजा

शनैश्चर श्यामतमोपवीत, त्वं पूज्य नेपालजनैर्भजस्व ।

शमीसमित्पक्वतिलाक्षतौघं, शनैश्चराय परिपूजयामि ॥७॥

ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

शनैश्चराय स्वाहा । शनैश्चरपरिजनाय स्वाहा । शनैश्चरानुचराय स्वाहा । शनैश्चरमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ ह्रीं शनैश्चराय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं... ।

पूर्वोत्तरस्यां दिशि—ईशान विदिशा में पूजा

द्विजार्चनाप्रीत विधुंतुद त्वं, गोधूमचूर्णं च सकज्जलं च ।

दूर्वा तथा गव्यपयोघृताक्तं, लाक्षासुधूपं भज मे प्रसीद ॥८॥

ॐ ह्रीं राहो! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं राहो! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं राहो! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

राहवे स्वाहा । राहुपरिजनाय स्वाहा । राहु-अनुचराय स्वाहा । राहुमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ ह्रीं राहवे स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिं... ।

ऊर्ध्वायां दिशि ऊर्ध्व दिशा में पूजा

केतो महिम्ना निजविक्रियाया, बहूद्भवत्केतुसहस्रदेहा ।

माषादिकुल्माषमिमं सदर्भ-बित्वाज्यधूपं भज मे प्रसीद ॥९॥

ॐ ह्रीं केतो! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं केतो! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं केतो! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

केतवे स्वाहा । केतुपरिजनाय स्वाहा । केतु-अनुचराय स्वाहा । केतुमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । (पुष्पांजलिः)

ॐ ह्रीं केतवे स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिं... ।

(जलकुण्ड में जौ आदि धान्य से सात-सात बार आहुति देना)

यवैस्तिलैः शालिभिरेव सप्त-सप्तस्वमुष्टिप्रमितैर्विशुद्धैः ।

होमं विधास्यामि समंत्रमंभः-कुंडे ग्रहाणामिह सुप्रसत्त्यै ॥१०॥

ॐ ह्रीं आदित्यमहाग्रह !^१ शिवं कुरु कुरु स्वाहा । एवं सोमादिष्वपि योज्यम् ।

अर्कः पलाशः खदिरो मयूरो-प्यश्वत्थफलू च शमी च दूर्वा ।

कुशोऽप्यमीषां समिधो जुहोमि, ग्रहप्रसादार्थमिहाग्निकुंडे ॥११॥

ॐ ह्रीं ह आदित्यमहाग्रह !^१ शिवं कुरु कुरु स्वाहा । एवं सोमादि ॥

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, सूर्यादिसर्वग्रहाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥१२॥

पूर्णाध्यः

सूर्यः शौर्यगुणं शशी कुशलितां, सन्मंगलं मंगलो । बुद्धिं तत्त्वबुधां बुधो वितरता-ज्जीवः शुभोज्जीवन्म् ॥

शुक्रः शुक्लतरं यशोऽतिविपुलं, मंदोप्यमंदश्रियम् ॥ राहुर्बाहुबलं महाधर्ममहितः, केतुर्महीकेतुताम् ॥१३॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः । इति ग्रहार्चनविधानम् ॥

अथ तृतीयमंडलस्थापितयक्षार्चनम्

(अब तीसरे चौकोन मंडल में स्थापित चौबीस यक्षों की अर्चना)

यक्षान्यजामो जिनमार्गरक्षा-दक्षान्सदा भव्यजनैकपक्षान् ।

निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षा-नत्यक्षयात्यक्षसुखे विलक्षान् ॥१॥

गोमुखादिचतुर्विंशतियक्षसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥

गद्य—ॐ कनककलधौतांजनालिघनालिघनाभश्यामश्वेतावदातधवलपांडुरपलाशलोहितप्रवालाभकालाभकालनीलासितचित्रसितारुण-
कृष्णश्याममुद्रप्रतिभानाम् । वृषभकरिशिखावलदंताक्षवैनतेयमृगमृगेन्द्रकपोतकमठकंजोक्षासितपक्षमयूरमकरमत्स्यपोत्रपितत्रिशंखकुंजरवृष-
वृषभपुष्पककच्छपानेकपसरुढानाम् । भगवदादिब्रह्मदितीर्थकरापसव्यापार्श्वविहितविन्यासानाम् । अव्युत्पन्नतावच्छिन्नसम्भवसनाथजिनभजनैः
शश्वदैहिकफलोपलिप्सया समुपास्यमानानाम् । स्वर्गापवर्गानिसर्गमार्गजिनमार्गप्रतिकूलानुकूलजननिग्रहसमग्रविधानदक्षप्रतीक्ष्यगोमुखादि-
चतुर्विंशतियक्षाणाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसमुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ।
आवाहनादिपुरःसरप्रत्येक पूजाप्रतिज्ञापनाय तृतीयमंडले पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

शार्दूलविक्रीडित—वामान्योर्ध्वकरद्वयेन परशुं, धत्तेऽक्षमालामधः । सव्यासव्यकरद्वयेन ललितं, यो बीजपूरं वरम् ॥
तं मूर्ध्ना कृतधर्मचक्रमनिशं, गोवक्त्रकं गोमुखम् । श्रीनाभेयजिनेन्द्रपादकमला-लोलालिमालापये ॥१॥
ॐ ह्रीं गोमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गोमुखयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं गोमुखयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं गोमुखाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे
प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

चक्रं त्रिशूलं कमलं सृणिं वै, खड्गं च दंडं परशुं प्रधानं ।

बिभ्राणमिष्टाजितनाथपादं, यजे महायक्ष चतुर्मुख त्वां ॥२॥

ॐ ह्रीं महायक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं महायक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं महायक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं महायक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।
सव्यैः करैश्चक्रमसिं सृणिं यो, दंडं त्रिशूलं सितकर्त्रिकां च ।
अन्यैर्बिभर्ति श्रितसंभवं तं, यजे त्रिनेत्रं त्रिमुखाख्ययक्षं ॥३॥
ॐ ह्रीं त्रिमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं त्रिमुखयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं त्रिमुखयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं त्रिमुखाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।
कोदंडसत्खेटकवामहस्तं, वामान्यहस्तोद्धृतबाणखड्गं ।
यक्षेश्वर त्वामभिनन्दनार्हत्-पादाब्जभृगं प्रयजे प्रसीद ॥४॥

ॐ ह्रीं यक्षेश्वर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यक्षेश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं यक्षेश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं यक्षेश्वराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

ऊर्ध्वस्थिताभ्यां फणिनौ कराभ्यां, अधःस्थिताभ्यां दधत्तं प्रदानम् ।

फलं प्रयक्ष्ये सुमतीशभक्तं, श्रीतुंबुरं सर्पमयोपवीतं ॥५॥

ॐ ह्रीं तुंबुरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं तुंबुरयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं तुंबुरयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं तुंबुराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

खेटोभयोद्भासितसव्यहस्तं, कुतेष्टदानस्फुरितान्यपाणिम् ।

पद्मप्रभश्रीपदपद्म भृंगं, पुष्पाख्ययक्षेश्वरमर्चयामि ॥६॥

ॐ ह्रीं पुष्पयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पुष्पयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पुष्पयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पुष्पयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यमोग्रदंडोपमचंडदंडं, सव्येन चासव्यकरेण शूलम् ।

बिभ्राणमर्चामि सुपाश्वर्भक्तं, मातंगयक्षं कुटिलाननोग्रम् ॥७॥

ॐ ह्रीं मातंगयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मातंगयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मातंगयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मातंगयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सव्येन धत्ते परशुं फलं यस्तथाक्षमालां च वरं परेण ।

करद्वयेन प्रयजे त्रिनेत्रं, श्यामं तमिंदुप्रभभक्तिभारम् ॥८॥

ॐ ह्रीं श्यामयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं श्यामयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्यामयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं श्यामाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यजामहे शक्तिफलाक्षमाला-वरांकवामेतरहस्तयुग्मम् ।

पुष्पेषुनिष्पेषकपुष्पदंत-श्रीपादभक्ताजितयक्षनाथम् ॥९॥

ॐ ह्रीं अजितयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अजितयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अजितयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अजितयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सचापदंडोर्जितखेटवज्र-सव्योद्धपाणिं नुतशीतलेशम् ।

सव्यान्यहस्तेषु परश्वसीष्ट-दानं यजे ब्रह्मसमाख्ययक्षम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ब्रह्मयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सव्यान्यहस्तोद्धृतसत्त्रिशूल-दंडाक्षमालाफलमीश्वराख्यम् ।

यक्षं त्रिनेत्रं परितर्पयामि, श्रेयोजिनश्रीपददत्तचित्तम् ॥११॥

ॐ ह्रीं ईश्वरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ईश्वरयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ईश्वरयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ईश्वरयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
हस्तैर्धनुर्बभृफलानि सव्यै-रन्यैरिषुं चारुगदां वरं च ।

धरंतमर्चामि कुमारयक्षं, त्रिविक्रमाराधितवासुपूज्यम् ॥१२॥

ॐ ह्रीं कुमारयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुमारयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कुमारयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कुमारयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
ऊर्ध्वाष्टहस्तविलसत्परशुं चतुर्भिः, खड्गामलाक्षमणिखेटकदंडमुद्राः ।

शेषैःकरैश्च दधतं विमलेशभक्तं, नाम्नोर्थतः षण्मुखमर्चयामि ॥१३॥

ॐ ह्रीं षण्मुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं षण्मुखयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं षण्मुखयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं षण्मुखाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
सव्यैःकशाहलफलान्यपसव्यहस्तै-र्बिभ्राणमंकुशसशूलसरोरुहाणि ।

पातालकं त्रिफणनागशिरस्त्रिवक्त्र-मर्चाम्यनंतजिनमादरतोर्चयन्तम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं पातालयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पातालयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पातालयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पातालयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
चक्रं पविं चांकुशमुद्रहन्तं, सव्यैःपरैर्मुद्गरमक्षमालाम् ।

वरं च संसेवितधर्मनाथं, त्रिवक्त्रकं किन्नरमर्चयामि ॥१५॥

ॐ ह्रीं किन्नरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं किन्नरयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं किन्नरयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं किन्नरयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
पद्मं फलं संदधतं कराभ्यां, अधःस्थिताभ्यामुपरिस्थिताभ्याम् ।

वज्रं च चक्रं गरुडाढ्यं त्वा-मर्चामि शांतिश्रित वक्रवक्त्र ॥१६॥

ॐ ह्रीं गरुडयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गरुडयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गरुडयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गरुडाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
उर्ध्वद्विहस्तोद्धृतनागपाश-मधोद्विहस्तस्थितचापबाणम् ।

गंधर्वयक्षेश्वर कुंथुनाथ-सेवोत्थितानंदधुमर्चये त्वाम् ॥१७॥

ॐ ह्रीं गंधर्वयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गंधर्वयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गंधर्वयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गंधर्वयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

सव्यैः करैरिह शरासनवज्रपाश-समुद्गरांकुशवरानपरैर्धरन्तम् ।

बाणांबुजोरुफलमात्यमहाक्षमाला-लीला यजाम्यरमितं त्रिदशं च खेद्रं ॥१८॥

ॐ ह्रीं खेन्द्रयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं खेन्द्रयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं खेन्द्रयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं खेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सव्यैः करैः फलककार्मुकदंडपद्मा-नन्यैः कृपाणशरपाशवरान्दधानं ।

दुर्वारवीर्यचतुरानन पूजये त्वां, श्रीमल्लिनाथपदभक्तकुबेरयक्षम् ॥१९॥

ॐ ह्रीं कुबेरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुबेरयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कुबेरयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कुबेराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यजे जटाजूटतिरीटजुष्ट-विशिष्टभावाष्टमुखं त्रिनेत्रम् ।

सखेटखड्गं सफलेष्टदानं, श्रीसुव्रतेशो वरुणाख्ययक्षम् ॥२०॥

ॐ ह्रीं वरुणयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वरुणयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वरुणयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वरुणयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

यः खेटखड्गौ दृढचापबाणौ, सृण्यंबुजे चक्रवरौ दधानः ।

हस्ताष्टकेनोग्रचतुर्मुखं तं, नमीशयक्षं भृकुटिं यजामि ॥२१॥

ॐ ह्रीं भृकुटियक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं भृकुटियक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं भृकुटियक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं भृकुटियक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

घनं कुठारं च बिभर्ति दंडं, सव्यैः फलैर्वज्रवरौ च योऽन्यैः ।

हस्तैस्तमाराधितनेमिनाथं, गोमेधयक्षं प्रयजामि दक्षम् ॥२२॥

ॐ ह्रीं गोमेधयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गोमेधयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गोमेधयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं गोमेधयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

सव्येतराभ्यामुपरि स्थिताभ्यां, यो वासुकीपाशवरौ पराभ्याम् ।

धत्ते तमेनं फणिमौलिचूलं, पार्श्वेशयक्षं धरणं धिनोमि ॥२३॥

ॐ ह्रीं धरणयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं धरणयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं धरणयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं धरणयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

बिभर्ति यो मूर्धनि धर्मचक्रं, फलं च वामेन वरं परेण ।

करेण तं सेवितवर्धमानं, मातंगयक्षं सहितं महामि ॥२४॥

ॐ ह्रीं मातंगयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मातंगयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मातंगयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मातंगयक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगां स्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, सर्वेऽपि यक्षेश्वराः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोर्षये ॥२५॥

इष्टप्रार्थनापुरःसरपूर्णाहुतिः ॥ (पूर्णार्घ्यं समर्पित करे) इति यक्षदेवतार्चनविधानम् ॥

अथ चतुर्मंडलस्थापितयक्षीदेवतार्चनम्

(अब चौथे चौकोन मंडल पर स्थापित चौबीस यक्षियों की अर्चना)

यक्षीः सपक्षीकृतभव्यलोका, लोकाधिकैश्वर्यनिवासभूताः ।

भूतानुकंपादिगुणप्रमोदा, मोदांचिताः पूजनया धिनोमि ॥१॥

ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यादिचतुर्विंशतिशासनदेवतासमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ।

(चौबीस यक्षियों की पूजा के लिए पूर्ववत् विधि करें)

गद्य — ॐ जातरूपजांबूनदरजतमहारजतकनककार्तस्वरकुन्देन्दुकांतिकालपालाशगांगेयगारुत्मताशमगर्भभर्मप्रवालहेमहिरण्य-
हाटकहरिन्मणितपनीयछायाहरितहरित्पद्मरागेंद्रनीलप्रभाणाम् । महोत्पललोहासनशकुंतसितपक्षकरितुरगसौरभेयसैरिभकूर्मकोलकु-
रंगमकराजगरश्वेतच्छदशार्दूलशिखंडिसूकरहंसाष्टापद कालोरगमकरकेसरिकुक्कुटाहिमानसावासवाहनानाम् । वृषभादिभवदहर्द्भट्टारकसव्य-
भागविहितविनिवेशयानानाम् । तत्तदहर्त्पूजापूर्वकस्वस्वपूजाविधिविधायिनीनाम् । अखिलसंपत्संपादनोत्तालानाम्यजमानयाजकजनपदजनेश्वरादि-
विघ्नपरिहारद्वारेण सर्वज्ञयज्ञसहकारितां आचरंतीनाम् । परमगंभीरामोघस्यात्कारलांछनजिनशासनविद्वेषिविशसनव्याजृंभणप्रभाव-
चक्रचक्रेश्वरीप्रभृतिशासनदेवतानाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसमुचितसपर्याक्रमं
यथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय चतुर्थमंडले पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येकपूजा

शार्दूलविक्रीडित — या देव्यूर्ध्वकरद्वयेन कुलिशं, चक्राण्यधःस्थैः करैः । अष्टाभिश्च फलं वरं करयुगे-नाधत्त एवाथवा ॥

धत्ते चक्रयुगं फलं वरमिमां, दोर्भिश्चतुर्भिःश्रिताम् । ताक्ष्यं तां पुरुतीर्थपालनपरां, चक्रेश्वरीं संयजे ॥१॥

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रे चक्रेश्वरि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रे चक्रेश्वरि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रे चक्रेश्वरि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रा चक्रेश्वर्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ऊर्ध्वद्विहस्तोद्धृतचक्रशंखां, अधोद्विहस्ताभयदानमुद्राम् ।

प्रभावयंतीमजितेशतीर्थं, यजे ऽरिषिक्कारिणि रोहिणि त्वाम् ॥२॥

ॐ ह्रीं अजिते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अजिते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अजिते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अजितायै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

धत्तेर्धचंद्रं परशुं फलं वै, कृपाणपिंडीवरमादधानाम् ।

यजामहे संभवनाथयक्षीं, प्रज्ञप्तिसंज्ञां क्षपितारिशक्तिम् ॥३॥

ॐ ह्रीं नम्रेक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नम्रेक्षि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं नम्रेक्षि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं नम्रेक्षिदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

या नागपाशं फलमक्षसूत्रं, वरं बिभर्ति प्रवरप्रभावा ।

यजे यजन्तीमभिनन्दनेश-मुच्छ्रंखलद्धिं पविशृंखलां ताम् ॥४॥

ॐ ह्रीं दुरितारिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं दुरितारिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं दुरितारिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं दुरितारिदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

वज्रं फलं सव्यकरद्वयेन, चक्रं वरं चान्यकरद्वयेन ।

समुद्रहन्तीं सुमतीशयक्षीं, यजामहे पूरुषदत्तिकाख्याम् ॥५॥

ॐ ह्रीं संसारिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं संसारिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं संसारिदेवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं संसारिदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

अनुष्टुपछंद—

फलकं फलमुग्रासिं वरं वहति दुर्जया ।

पद्मप्रभस्य या यक्षी, मनोवेगां महामिताम् ॥६॥

ॐ ह्रीं मोहिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मोहिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मोहिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मोहिनिदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

आरभ्य वामोपरि हस्ततो या, घटां फलं शूलमभीष्टदानम् ।

दधाति काली कलितप्रसादा, सपर्यया सास्तु सुपाश्वर्यक्षी ॥७॥

ॐ ह्रीं मानवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मानवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं मानवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मानवीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

शार्दूलविक्रीडित—

चक्रं चापमहीशपाशफलके, सव्यैश्चतुर्भिः करै-रन्यैः शूलमिषुं झषं ज्वलदसिं, धत्तेऽत्र या दुर्जया ॥

तामिन्दुप्रभदेवसेवनपरा-मिष्टार्थं सार्थं प्रदाम् । ज्वालामालकरालमौलिकलितां, देवीं यजे ज्वालिनीम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च....।

या वज्रमत्यूर्जितमातुलुंगं, धत्ते स्फुरन्मुद्गरमिष्टदानम् ।

तां पुष्पदन्तप्रभुपादसेवा-सक्तां महाकालिमिमां महामि ॥९॥

ॐ ह्रीं भृकुटिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं भृकुटिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं भृकुटिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

- ॐ ह्रीं भृकुटीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
ऊर्ध्वद्विहस्तोद्धृतमत्स्यमालां, अधोद्विहस्तात्तफलप्रदानाम्।
वामादितःशीतलनाथयक्षीं, महर्द्धिकां मानवि! मानये त्वाम्॥१७०॥
- ॐ ह्रीं चामुंडीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं चामुंडीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं चामुंडीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं चामुंडीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
दोर्भिश्चतुर्भिर्दुघणं पयोजं, त्वां बिभ्रतीं कुंभमभीष्टदानाम्।
श्रेयोजिनश्रीपदपद्म भृंगीं, गौरीं यजे विघ्नविघातकारीम्॥१७१॥
- ॐ ह्रीं गोमेधयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गोमेधयक्षि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं गोमेधयक्षि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं गोमेधयक्ष्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
लीलांबुजांकोपरि हस्तयुग्मा-मधोद्विहस्ते मुसलेष्टदानाम्।
त्वां वासुपूज्यमसितान्तरंगां, गांधारि! मान्ये बहु मानयामि॥१७२॥
- ॐ ह्रीं विद्युन्मालिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विद्युन्मालिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विद्युन्मालिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं विद्युन्मालिन्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
ऊर्ध्वेन हस्तद्वितयेन सर्पा-वधःस्थितेनोर्जितचापबाणौ।
यजे वहन्तीं विमलेशयक्षीं, वरोटिकां त्रोटितविघ्नकोटिम्॥१७३॥
- ॐ ह्रीं विद्यादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विद्यादेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विद्यादेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं विद्यादेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
अधिज्यधन्वोत्तममातुलुंगं, निशातबाणं दधतीष्टदानम्।
समर्चितानंतमति प्रसन्ना, भूयादिहानंतजिनेशयक्षी॥१७४॥
- ॐ ह्रीं विजृम्भणि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं विजृम्भणि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विजृम्भणि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं विजृम्भणीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
अंभोरुहं कार्मुकमिष्टदानं, धत्तेकुशं मार्गणमुत्पलं च।
दधाति वै धर्मजिनेशयक्षी, या मानसीमां बहु मानयामि॥१७५॥
- ॐ ह्रीं परभृते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं परभृते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं परभृते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
ॐ ह्रीं परभृतायै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
रथांगपाणिं फलपूरहस्ता-मीडीशयां दानकरामजेयाम्।
शांतीशपादांबुजदत्तचित्तां, कांतां महामानसि मानये त्वाम्॥१७६॥

- ॐ ह्रीं कंदर्पा देवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कंदर्पादेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं कंदर्पा देवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं कंदर्पा देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
 चक्रं समाक्रांतविरोधिचक्रं, शंखं स्वभुंकारकृतारिभीतिम् ।
 अत्युग्रखड्गं वरमादधानां, यजे जयां कुंथुजिनेन्द्रयक्षीम् ॥१७॥
- ॐ ह्रीं गांधारिणि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं गांधारिणि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं गांधारिणि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं गांधारिण्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
 स्वर्णाभां हंसगां सर्प-मृगवज्रवरोद्धुराम् ।
 चाये तारावतीं त्रिंशच्-चापोच्चप्रभुभाक्तिकाम् ॥१८॥
- ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं कालीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
 हस्तद्वयेनोपरिमेनखेटं, कृपाणमन्येन फलं प्रदानम् ॥
 उ भ्रती मल्लिजिनेन्द्रयक्षी, गृण्हातु पूजामपराजितेयम् ॥१९॥
- ॐ ह्रीं अनातजदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अनातजदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं अनातजदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं अनातजदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
 या खेटकं मंगलमातुलुंगं, कृपाणमुग्रं वरमादधाति ।
 सा नः प्रसन्ना मुनिसुव्रतार्हद्-भक्तास्तु भव्या बहुरुपिणीष्ट्या ॥२०॥
- ॐ ह्रीं सुगंधिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सुगंधिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं सुगंधिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं सुगंधिन्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
 इष्ट्यास्तु तुष्टा धृतयष्टिखेट-सव्यद्विहस्तान्यकरद्वयेन ।
 दिव्याक्षमालामसिमादधानां, चामुंडिकां श्रीनमिमानमन्तीम् ॥२१॥
- ॐ ह्रीं कुसुममालिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुसुममालिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं कुसुममालिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं कुसुममालिन्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।
 धत्ते वामकटौ प्रियंकरसुतं, वामे करे मंजरी - माभ्रस्यान्यकरे शुभंकरतुजो, हस्तं प्रशस्ते हरौ ॥
 आस्ते भर्तृचरे महाभ्रविटपिच्छायं श्रिताभीष्टदा । याऽसौ तां नुतनेमिनाथपदयो-र्नम्रामिहाभ्रां यजे ॥२२॥
- ॐ ह्रीं कुष्मांडीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुष्मांडीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं कुष्मांडीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।
 ॐ ह्रीं कुष्मांडीदेव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.....।

पाशाद्यन्तितषड्भुजारिजयदा, ध्याता चतुर्विंशतिं । शंखास्यादियुतान्करांस्तु दधती, या क्रूरशान्त्यर्थदा ॥

शान्त्यै सांकुशवारिजाक्षमणिसद्धानैश्चतुर्भिः करै- युक्ता तां प्रयजामि पार्श्वविनतां, पद्मस्थपद्मावतीम् ॥२३॥

ॐ ह्रीं पद्मावति! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पद्मावति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पद्मावति! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पद्मावत्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

बिभर्ति या पुस्तकमिष्टदानं, सव्यापसव्येन करद्वयेन ।

भद्रासनामाश्रितवर्धमानां, सिद्धायिकां सिद्धिकरीं यजे ताम् ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धायिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सिद्धायिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सिद्धायिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सिद्धायिन्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च..... ।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, देव्यश्च यक्ष्योखिलाः । पूर्णागां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥२५॥

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः (पूर्णार्घ्यं समर्पित करे) ॥ इति यक्षीदेवतार्चनविधानम् ॥

विशेष—यहाँ प्रायः श्लोक में शासनदेवियों के नाम भिन्न हैं और मंत्रों में भिन्न हैं ।

जैसे—	श्लोक में	मंत्र में	श्लोक में	मंत्र में
१.	चक्रेश्वरी	-अप्रतिचक्रा चक्रेश्वरी	१३.	वरोटिका - विद्यादेवी
२.	रोहिणी	-अजिता	१४.	अनन्तमती - विजृम्भिणी
३.	प्रज्ञप्ती	-नम्रेक्षी	१५.	मानसी - परभृतादेवी
४.	वज्रशृङ्खला	-दुरितारिदेवी	१६.	महामानसी - कंदर्पा देवी
५.	पुरुषदत्ता	-संसारिदेवी	१७.	जयादेवी - गांधारिणी
६.	मनोवेगा	-मोहिनी	१८.	तारावती - कालीदेवी
७.	कालीदेवी	-मानवीदेवी	१९.	अपराजिता - अनातजदेवी
८.	ज्वालिनी	-ज्वालामालिनी	२०.	बहुरुपिणी - सुगंधिनी
९.	महाकाली	-भृकुटीदेवी	२१.	चामुण्डिका - कुसुममालिनी
१०.	मानवी	-चामुण्डी	२२.	आम्रादेवी - कूष्माण्डीदेवी
११.	गौरीदेवी	-गोमेध यक्षी	२३.	पद्मावती - पद्मावती
१२.	गांधारी	-विद्युन्मालिनी	२४.	सिद्धायिका - सिद्धायिनी

अथ पंचममंडलस्थापितदिवक्कन्यकार्चनविधानम्

(अब पांचवें चौकोन मंडल में स्थापित दिक्कन्याओं की अर्चना)

मेरोर्दक्षिणतो महाकुलकुभृत्पद्माकरांभोरुह-प्रासादस्थितिकाः शचीपतिवधूः, श्रीहीधृतीरंबिकाः ॥

तस्यैवोत्तरतस्तथोत्तरसुरेड्-गृह्यां च कीर्तिं धियं, लक्ष्मीं शातिकरीं च शातिमिह सत्पुष्टिं च पुष्टिं यजे ॥१॥

श्रयादिदेवीसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ।

(श्री आदि देवियों की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करें)

गद्य—ॐ विविधमणिविचित्रितोभयपार्श्वहेमादिमयहिमवदादिकुलाचलाधित्यकानादिसिद्धपद्मादिसरोवरान्तरसामानिकपरिषदध्युषित-परिवारवारिजपरीतपुष्करमध्यशारदशशांकविशदप्रासादनिवासिनीनाम् । कांतिलज्जाधैर्यजिनार्यादिकीर्तनलोकोत्तरज्ञान्विर्गसाधनांगव्यापकत्व-

धर्मानर्हन्मातुरापादयतीनाम् । श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीनामदेवीनाम् । अलक्ष्यशचीप्रत्यक्ष्यान्यलक्ष्यालगमंगलश्रयादिवीविहितजिनमातृभोगादि विघ्नोपशमनादिमनोनिवृत्तिनिर्वर्तकशांतिदेवीसहितानाम् । प्रतिफलितेदुर्बिंबादर्शसन्निभोदरजिनांबिकांगभर्तृगुणभोगभक्तादिपुष्टि- विधायिपुष्टिदेवीसमन्वितानाम् । पीतारुणपीतशातकुंभकांचनकनकतपनीय-हिरण्यप्रभापधनानाम् । पुष्पमुखकलशहस्तानमष्टदिवकुमारीणां । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसमुचितसपर्याक्रमं यथाक्रमं पंचममंडलेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ पृथगिष्टिः

श्रियं नरागोचरकांतिरूप-श्रियं जगन्मातरि योजयन्तीम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥१॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ह्रियं लसद्बोधसहायसौम्य-ह्रियं जिनांबाधृतिपोषयन्तीम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥२॥

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

धृतिं ससामानिकदिककुमारीं, धृतिं जिनेशो जननीं नयन्तीम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥३॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

कीर्तिं जिनेद्रस्तवनादिरूपां, कीर्तिं विभोर्मातरि संजयन्तीम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

बुद्धिं प्रबुद्धाखिललोकयात्रां, बुद्धिं नयतीं जननीं जिनानाम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥५॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

लक्ष्मीं त्रिवर्गोचितसाधनाप्तीं, लक्ष्मीं प्रभोर्मातरि साधयन्तीम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥६॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

शांतिं मनोनिर्वृतिमंतराय-शांतिं च जैनीं जननीं नयन्तीम् ।

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

पुष्टिं जिनांबावपुरादिषूच्चैः, पुष्टिं विशिष्टामुपपादयन्तीम् ॥

संफुल्लफुल्लाननशातकुंभ-कुंभांकहस्तां विधिना धिनोमि ॥८॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः ॥ सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मद्वसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत दृतं, सर्वाश्च दिक्कन्यकाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोर्षये ॥६॥

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः (पूर्णार्घ्यं समर्पित करें) । इति दिक्कन्यकार्चनम् ।

अथ तत्रैव मंडले दिक्पालकार्चनविधानम्

(अब उसी पांचवें चौकोन मंडल पर दिक्पालों की अर्चना करें)

एतत्सर्वजनीनजैनसवन-प्रत्यूहविध्वंसन, प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहित-प्रख्यातपूजांचितान् ।

स्वस्वातुच्छपरिच्छदानिहदशा-मन्यप्रधृष्यामितान्दिकपालाञ्जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥११॥

दिक्पालकसमुदायपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ॥ (दिक्पालों की पूजा के लिये पूर्व विधि करें) ।

गद्य—ॐ विमलकलधौतखचितमणिमयाभरणभूषितैरावतच्छागरक्ताक्षऋक्षकरिमकरतुरगपुष्पकपुष्पांग शाक्वराकारवाहनारूढानाम् । नितांतचारुचामीकरातिबालभास्करांजनपुंजतमस्तोमसुधाकरसुवर्णस्वर्ण शशांकसंकाशशरीरप्रभाभिरामाणाम् । क्षुशजाज्वलज्वालाजालप्रचंडदंड-मुद्गराहिपाशपादपशक्तित्रिशूलाप्रतिहतप्रभावप्रहरणानाम् । कमनीयकामिनीकुलललामशचीस्वाहाछायानैर्ऋतिवरुणानीवायुवेगी-धनदेवीपार्वतीनाममहादेवीमुखांबुजदत्तदृष्टीनाम् । पाकशासनपावककृतान्तकौणपपाशपाणिपवनपार्वतीशसखपार्वतीप्रियाभिधानलोकपालानाम् । कूर्मगतसितांगसांकुशपद्मावतीप्रियफणीशकंठीरवारूढपांडुरतनुकुंतकरोहिणीजीवितेश्वरसहितानाम् । सकलसंपत्संपन्नकदयामयमहायागप्रत्यू-हव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसमुचितसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे । आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पंचमंडले पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

देहप्रभाद्विगुणभूषणदिव्यदीप्ते-व्यालिप्तदिग्विवरमंतरितांतरायम् ।

वज्रायुधं निजवधूवदनाब्जनेत्रं, व्याव्हानये नुतजिनेन्द्रमहे महेंद्रम् ॥११॥

ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं इंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं इंद्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

शोणभ्रूश्मश्रुकेशांबकमरुणरुचं जाज्वलज्वालशक्तिं, कुंडीं वामेक्षमालामितरकरतले बिभ्रतं सोपवीतम् ॥

स्वाहायुक्तं नियुक्तं जिनयजनविधेर्दीपधूपादिकारे । सद्देदाघोषिसभ्यावृतमनलभलंकारसारं यजेऽहम् ॥१२॥

ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अग्नये इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

भृंगांगासितभूरिभंगुरजटा-जूटं शिखाडंबरो-द्विदंडोड्डभरं प्रचंडफणिभृत्सन्मंडनैर्मंडितम् ॥

छायातुच्छमुखेन्दुसच्छविकृता-नंदं सकालच्छविं । कालं कालजकालधर्मरहिता-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥१३॥

ॐ ह्रीं यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं यम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं यमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे... ।

कटकमुकुटमुद्राहारकेयूरमुख्या-भरणकिरणभारोद्भासिताशांतरालम् ।

असितलसितकांतिं मुद्गरास्त्रं च रात्रिं-चरपरिवृतमेतं व्याह्वये नैऋतीशम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं नैऋताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

मुक्ताफलात्युज्ज्वलविद्रुमानु-स्यूतप्रभूताभरणाभिरामम् ।

भीमाहिपाशं वरुणान्यधीशं, यागेत्र यादःपतिमाव्हयामि ॥५॥

ॐ ह्रीं वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वरुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वरुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वरुणाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

चलद्विपुलभूरुहं कलितविस्फुरद्भूषणं । लसन्मधुकरच्छविं चलितगात्रयंत्रोत्करं ।

जगत्त्रितयजीवनं विरचिताखिलार्थेतरं । समीरणमिहाव्हये समदवायुवेगीयुतम् ॥६॥

ॐ ह्रीं पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पवन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पवन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पवनाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

निधनरहितमुक्ता-भूषणप्रौढवेषं, धनमुखनिजदेवी-सन्मुखंभोजभृंगम् ।

धनदमिह धनद्वयै, सेव्यमाव्हानयेऽहं, निधननिपुणशक्तिं, विद्विषामुद्वहन्तम् ॥७॥

ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कुबेराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

कंकलीद्रुमपल्लवच्छविजटा-जूटार्धचंद्रप्रभा । सांद्रीभूतभुजंगभूषणफणा-रत्नप्रभाभासुरम् ।

भालाभीलविलोचनानलशिखा-तीक्ष्णत्रिशूलायुधम् । पार्वत्या धवमाव्हये गणवृतं, दक्षाध्वरेऽर्धसिनम् ॥८॥

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ईशान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ईशानाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

स्फटापरिगतरुणद्युमणिबिंबशुभन्मणि-प्रभापटलपाटलीकृतसितांगविभ्राजितम् ॥

धृतांकुशमनंकुशं सुगुणसद्मपद्मायुतम् । फणाधरगणावृतं फणिमर्हीद्रमाव्हानये ॥९॥

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे... ।

जिनगुणमणिमालां, मौक्तिकानां च मालां, कुमुदकुसुममालां, रोहिणीदृष्टिमालाम् ॥

चिरमुरसि धरंतं, कुंदभासं सकुंतं, कविनुतगुणरुद्रं, चंद्रमाव्हानयेऽहम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सोमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे... ।

दिकपालकानिति समर्च्य यवान्विता ये, गोधूममुद्गचणकाढकशालिमाषाः ॥

तत्सप्तधान्यकृतमुष्टिभिरंबुकुंडे । सप्ताहुतीरिह दधे पृथगेव तेभ्यः ॥११॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं इंद्राय स्वाहा । ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्नये स्वाहा । ॐ आं क्रौं ह्रीं यमाय स्वाहा । ॐ आं क्रौं

हीं नैऋत्याय स्वाहा । ॐ आं क्रौं हीं वरुणाय स्वाहा । ॐ आं क्रौं हीं पवनाय स्वाहा । ॐ आं क्रौं हीं धनदाय स्वाहा । ॐ आं क्रौं हीं ईशानाय स्वाहा । ॐ आं क्रौं हीं धरणेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ आं क्रौं हीं सोमाय स्वाहा ॥

॥ इत्याहुतयः ॥

(जौ, गेहूं, मूंग, चना, तुवर—अरहर, शालि और उड़द ये सात धान्य हैं, इन्हें मिलाकर 'जलहोमकुंड' में १-१ मुट्ठी लेकर सात-सात बार मंत्र बोलते हुये जलकुंड में आहुति देते जावें)

शार्दूलविक्रीडित—

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥
सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत दृतं, सर्वेपि दिक्पालकाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोषये ॥१२॥
(पूर्णार्घ्यं समर्पित करे)

इति दिक्पालकार्चनम् ॥

अथ द्वारपालानुकूलनं

सोमं जिनेन्द्राध्वरवार्धिसोमं, यमं यमाभीलमसज्जनानाम् ॥
निवारणोत्कं वरुणं विपत्ते-र्यजामि वीरैकवरं कुबेरम् ॥११॥

सोमादिद्वारपालसांमुख्यविधानाय द्वारेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

गद्य—ॐ सर्वाभीष्टफलदविशिष्टेष्टजिनेष्टियष्ट्रयाजकराजराष्ट्रचतुःसंघविघ्नविधातनाखंडितचंडिमाडंबरकोदंडधरदंडाभानदंडकुंडली-
शपाशप्रचंडगदामंडितभुजादंडपूजामंडलपूर्वादिद्वारपालनप्रयुक्तद्वारपालकानाम् ॥ सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थ
मावाहनादिपुरःसर समुचितसपर्याक्रमं यथाक्रमं उपक्रमामहे ॥ आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय द्वारेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

॥ अथ पृथगिष्टिः ॥

कोदण्डकांडस्फुटदृष्टिमुष्टि-मरुद्भटोद्भव्यकथानुरक्तम् ।

प्राग्द्वारमस्या जिनयज्ञवेद्या, रक्षतमेनं प्रयजामि सोमम् ॥११॥

ॐ हीं धनुर्धराय अर अर त्वर त्वर हूं सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ हीं धनुर्धराय अर अर त्वर त्वर हूं सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हीं धनुर्धराय अर अर त्वर त्वर हूं सोम! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ हीं सोमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे... ।

यो दंडितारातिसमस्तदंडं, दंडं धरंश्चंडसुरैः परीतः ।

रक्षत्यपाच्यं जिनयज्ञवेद्या, द्वारं तमेनं यममर्चयामि ॥१२॥

ॐ हीं दंडधराय अर अर त्वर त्वर हूं यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ हीं दंडधराय अर अर त्वर त्वर हूं यम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हीं दंडधराय अर अर त्वर त्वर हूं यम! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ हीं यमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे... ।

हलाहलज्वालजटालभाला-भीलाहिपाशं सुरवीरसैन्यम् ।

द्वारं प्रतीच्यं परिपालयंतं, दुर्वारवीर्यं वरुणं वृणोमि ॥१३॥

ॐ हीं पाशधराय अर अर त्वर त्वर हूं वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ हीं पाशधराय अर अर त्वर त्वर हूं वरुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पाशधराय अर अर त्वर त्वर हूं वरुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वरुणाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

गदाभ्रमाकपितवैरिलोकं, लोकाक्रमोत्तालसुरैः परीतम् ।

उदग्भवद्वारमवन्तमेनं, कुबेरवीरं बलिना धिनोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं गदाधराय अर अर त्वर त्वर हूं कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं गदाधराय अर अर त्वर त्वर हूं कुबेर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं गदाधराय अर अर त्वर त्वर हूं कुबेर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कुबेराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे.. ।

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत दृतं, सर्वेऽपि दौवारिकाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोर्षये ॥५॥

इष्टप्रार्थनापुरःसरपूर्णार्घ्यः (पूर्णार्घ्यं समर्पित करें) । इति द्वारपालानुकूलनम् ॥

अथ वेद्याः पूर्वादिमहादिक्षु यक्षचतुष्टयार्चनम्

(वेदी के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर इन महादिशाओं में चार यक्षों की अर्चना करें)

अनुष्टुप्छंद— विजयं वैजयन्तं च जयंतमपराजितं ।

यक्षं यक्ष्येत्र पूर्वादि-महादिक्षु यथाक्रमम् ॥१॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय वेद्याः पूर्वादिमहादिक्षु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

मोहारिविजयोद्भूत, त्रैलोक्यविजयं विभुम् ।

भजंतं विजयं यक्षं, यक्ष्ये प्राग्दिग्वधूवरम् ॥१॥

ॐ ह्रस्व्यूं विं विजययक्ष बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । (अर्घ्यं समर्पित करें)

भजंतं त्रिजगन्नाथं, दशोच्चैर्वैजयतिकम् ।

वैजयन्तं यजे यक्षं, अपाचीदिग्वधूवरम् ॥२॥

ॐ ह्रस्व्यूं वै वैजयंतं बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । (अर्घ्यं समर्पित करें)

जयंतं जितमंहासि, जयंतं जिनविद्विषः ।

जयंतं प्रयजे यक्षं, प्रतीचीदिग्वधूवरम् ॥३॥

ॐ ह्रस्व्यूं जं जयंतं बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । (अर्घ्यं समर्पित करें)

आराधयन्तमाराध्यं, जगतामपराजितम् ।

यजेऽपराजितं यक्षं, उदीचीदिग्वधूवरम् ॥४॥

ॐ ह्रस्व्यूं अ अपराजितं बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । (अर्घ्यं समर्पित करें)

इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ॥

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत दृतं, दिग्वासियक्षेश्वराः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोर्षये ॥५॥

इति विजयादियक्षानुकूलनविधानम् ॥

अथैशान्यां दिश्यनावृत्तार्चनम्

(अब ईशान दिशा में अनावृत यक्ष की अर्चा करें)

मेरोरीशानभागे कुरुषु मणिमयस्योत्तरेषु स्थितस्य । श्रीजंबूभूरुहस्य स्थितिजुषमनिशं पूर्वशाखास्थसौ॥१॥
शंखं चक्रं च कुण्डिं दधतमुरुकरैरक्षमालां च कृष्णं । पक्षीन्द्रारूढमस्या भवदिशि विधिनानावृत्तेन्द्रं यजामि॥१९

गद्य—ॐ दशदिशाधिनाथं त्रैलोक्यदंडनायकं जंबूद्वीपाधिपतिं गरुडपृष्ठमारूढं स्निग्धभृं गांजनाभमक्षसूत्रकमंडलुव्यग्रहस्तं चतुर्भुजं
शंखचक्रविधृतभुजादंडं यक्षिणीसहितं सपरिजनसपरिवारमनावृतं देवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥

हे अनावृत! अत्र आगच्छ आगच्छ संवैषट् । हे अनावृत! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

हे अनावृत! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अनावृताय स्वाहा । अनावृतपरिजनाय स्वाहा । अनावृतानुचराय स्वाहा । अनावृतमहत्तराय स्वाहा । अग्नये
स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । पुष्पांजलिः ।

ॐ ह्रीं अनावृतयक्षाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं
यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । इत्यनावृत्तार्चनम् ॥

अथ ब्रह्मेन्द्रोपरि देवर्षिसत्कारः

(अब ब्रह्मेन्द्र के ऊपर देवर्षि का सत्कार करना)

जिनेंद्रवैराग्यविवर्धनोत्काशचतुर्दशाभ्यर्हितपूर्वबोधाः ।

ये ब्रह्मलोकस्थितयो यजे तांल्लौकान्तिकान्ब्रह्मसुरेश्वराग्रे ॥१९॥

ॐ ह्रीं लौकान्तिकदेवेभ्यः पुष्पांजलिं निर्वपामीति स्वाहा ॥ इति ब्रह्मेन्द्रोपरि देवर्षिपुष्पांजलिः ॥

अथ अच्युतेन्द्रोपरि अहमिन्द्रसत्कारः

(अब अच्युतेन्द्र के ऊपर अहमिन्द्रों का सत्कार करना)

इंद्रोऽस्म्यहं नैव परोस्ति चेन्द्रो, मदित्थमुद्भूतविकत्थनादयान् ।

यजेऽच्युतेन्द्रोपरि सौख्यसांद्रा-ञ्जिनेंद्रभक्तानहमिन्द्रदेवान् ॥१९॥

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रदेवेभ्यः पुष्पांजलिं निर्वपामीति स्वाहा । इत्यच्युतेन्द्रोपरि अहमिन्द्रपुष्पांजलिः ।

अथ पृथ्वीमंडले मंगलाष्टकस्थापनम्

(इसी यागमंडल में पृथ्वीमंडल के स्थान में आठ मंगल-द्रव्य स्थापित करना । आगे का पद्य पढ़कर पुनः एक-एक मंत्र बोलते
हुये उन-उन मंगलद्रव्य को स्थापित करना है । श्वेतछत्र, दर्पण, ध्वजा, चंवर, तोरण, पंखा, स्वस्तिक और दीपक ये ८ मंगल द्रव्य हैं)

श्वेतच्छत्राब्दौ ध्वजं चामरे द्वे । मंत्रैर्वेद्यां तोरणं तालवृंतम् ।

नंदावर्तं दीपमष्टासु दिक्षु । न्यस्याम्याप्तुं मंगलं मंगलानि ॥१९॥

ॐ श्वेतच्छत्रश्रियै स्वाहा । ॐ अब्दश्रियै स्वाहा । ॐ ध्वजश्रियै स्वाहा । ॐ चामरश्रियै स्वाहा ।
ॐ तोरणश्रियै स्वाहा । ॐ तालवृंतश्रियै स्वाहा । ॐ नंदावर्तश्रियै स्वाहा । ॐ दीपश्रियै स्वाहा ।

इति मंगलाष्टकस्थापनम् ॥

अथ तत्रैवायुधाष्टकस्थापनम्

(अब वहीं पर आगे के पद्य व मंत्र बोल कर उन-उन आयुधों को स्थापित करते जाना)

(चार दिशा और चार विदिशा में क्रम से इन्द्राणी, वैष्णवी, कौमारी, वाराहिका, ब्रह्माणी, लक्ष्मी, चामुण्डी और रुद्राणी देवियाँ आगे कहे हुये आयुध धारण कर यज्ञ में रक्षा करती हैं)

उत्तुंगमत्तद्विरदेन्द्ररूढा , रूढोग्रवज्रायुधमुद्वहन्ती ।

ऐन्द्री वसत्विन्द्रदिशीहवेद्यां, हेमप्रभा विघ्नविघातनाय ॥१॥

ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा । (इस मंत्र से पूर्व दिशा में वज्र आयुध स्थापित करना)

या वैष्णवी विष्णुरथांगयाना, जिष्णोर्जिनेशः सवने सुनीला ।

प्रत्यर्थिचक्रप्रतिघातचक्रं, धृत्वेयमास्तां दिशि सा यमस्य ॥२॥

ॐ वैष्णव्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से दक्षिण दिशा में चक्र आयुध स्थापित करना)

कौमारिका कोमलविद्रुमाभा, शिखंडियाना धृतमंडलाग्रा ।

प्रचंडमूर्तिर्वसतात्प्रतीच्यां, वेद्यां जिनेन्द्राध्वरविघ्नशान्त्यै ॥३॥

ॐ कौमार्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से पश्चिम दिशा में तलवार स्थापित करना)

वाराहिका वन्यवराहयाना, श्यामप्रभा भीकरसीरपाणिः ।

अत्रोत्तरस्यां दिशि वेदिकाया-मास्तां समस्ताध्वरविघ्नशान्त्यै ॥४॥

ॐ वाराहिकायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से उत्तर दिशा में हल आयुध स्थापित करना)

पद्मप्रभांगा श्रितपद्मयाना, विद्वेषिसंत्रासकमुद्गरास्त्रा ।

ब्रह्माणिसंज्ञा जिनयज्ञवेद्यां, हुताशनाशां समलंकरोतु ॥५॥

ॐ ब्रह्माण्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से आग्नेय दिशा में मुद्गर आयुध स्थापित करना)

श्वेतच्छदाभौंदुरुवाहनस्था, लक्ष्मीर्गदालक्षितशस्तहस्ता ।

विघ्नापनोदाय दिशीह वेद्या; प्रवर्ततां दक्षिणपश्चिमायाम् ॥६॥

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से नैऋत्य दिशा में गदा आयुध स्थापित करें)

चामुंडिका प्रेतगता समध्य-मार्तंडदीप्तिर्धृतदंडशक्तिः ।

प्रत्यूहशान्त्यै दिशि वेदिकायाः, प्रवर्ततामुत्तरपश्चिमायाः ॥७॥

ॐ चामुण्ड्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से वायव्य दिशा में दण्ड आयुध स्थापित करना)

उच्चंडशाक्वरगते धृतभिंडिमाले, रुद्राणि रुद्रामलचंद्रकान्ते ।

पूर्वोत्तरस्यां दिशि तिष्ठ वेद्या, विद्यानिधेरध्वरविघ्नशान्त्यै ॥८॥

ॐ रुद्राण्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से ईशान दिशा में भिंडिमाल आयुध स्थापित करना)

इत्यायुधाष्टकस्थापनम्

अथ वेद्याः पूर्वादिदिक्षु पताकाष्टकस्थापनम्

(वेदी के पूर्वादि आठों दिशाओं में क्रम से उन-उन पद्य और मंत्र को बोलते हुये उन-उन वर्ण की ध्वजा स्थापित करना है। इन मंत्रों में उन देवियों के नाम हैं जो उन-उन वर्ण वाली हैं और उन्हीं-उन्हीं वर्णों की ध्वजा धारण करती हैं।)

पीतप्रभाह्वया देवी, पीतवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, पूर्वस्यां दिशि तिष्ठतु ॥१॥

ॐ प्रभावत्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से पूर्व दिशा में पीली ध्वजा स्थापित करना)

पद्माख्यदेवी पद्माभा, पद्मवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-माग्नेयां दिशि तिष्ठतु ॥२॥

ॐ पद्मायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से आग्नेय दिशा में लाल ध्वजा स्थापित करना)

सा मेघमालिनी कृष्णा, कृष्णवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-मपाच्यां दिशि तिष्ठतु ॥३॥

ॐ मेघमालिन्यै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से दक्षिण दिशा में काली ध्वजा स्थापित करना)

हरिन्मनोहरादेवी, हरिद्वर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, नैऋत्यां दिशि तिष्ठतु ॥४॥

ॐ मनोहरायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से नैऋत्य दिशा में हरित ध्वजा स्थापित करना)

श्वेताभा चंद्रमालेयं, श्वेतवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, प्रतीच्यां दिशि तिष्ठतु ॥५॥

ॐ चंद्रमालायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से पश्चिम दिशा में श्वेत ध्वजा स्थापित करना)

नीलाभा सुप्रभा देवी, नीलवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, वायव्यां दिशि तिष्ठतु ॥६॥

ॐ सुप्रभायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से वायव्य दिशा में नीली ध्वजा स्थापित करना)

श्यामप्रभा जयादेवी, श्यामवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-मुदीच्यां दिशि तिष्ठतु ॥७॥

ॐ जयायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से उत्तर दिशा में काली ध्वजा स्थापित करना)

विजया पंचवर्णाभा, पंचवर्णमिदं ध्वजम्।

धृत्वा जयाय श्रीवेद्या-मैशान्यां दिशि तिष्ठतु ॥८॥

ॐ विजयायै स्वाहा ॥ (इस मंत्र से ईशान दिशा में पंचवर्णी ध्वजा स्थापित करना)

अथ वेद्याः पूर्वादिदिक्षु कलशाष्टकस्थापनम्

(अब वेदी के आठों दिशाओं में आठ कलशों को स्थापित करना)

तीर्थांशुपूर्णशरणोत्तममंगलार्थ-संकल्पनाष्टसमलंकृतशुभ्रकुंभान्।

वेद्यष्टदिक्षु विनिवेश्य सपंचवर्ण-सूत्रेण तांस्त्रिगुणमेव वृणोमि सिद्ध्यै ॥९॥

ॐ कलशाष्टकस्थापनम् इति।

अथ वेद्या दिक्षु बाणचतुष्टयस्थापनम्

बाणैश्चतुर्भिर्निशितैर्जयाय, सिद्धार्थपुंजैश्च निजेष्टसिद्ध्यै।

सन्तानवृद्ध्यै च यवारकैः श्री-वेद्याश्च कोणान्परिभूषयामि ॥९॥

बाणचतुष्टयादिस्थापनाय वेदीकोणेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

अथ तीक्ष्णचतुर्बाणान् । भव्यानां जयलब्धये ।
आग्नेयादिषु कोणेषु, वेदिकाया विदध्महे ॥२॥

(चारों दिशाओं में चार बाण स्थापित करना)

अथ सिद्धार्थसत्पुंजान्यष्टुरिष्टार्थसिद्धये ।
आग्नेयादिषु कोणेषु, वेदिकाया विदध्महे ॥३॥

ॐ सिद्धार्थस्थापनं ॥ (वेदी के चारों कोनों पर सरसों के पुंज रखना)

यवारकाद्वयपात्राणि, यष्टुः संतानसिद्धये ।
आग्नेयादिषु कोणेषु, वेदिकाया विदध्महे ॥४॥

ॐ यवारकस्थापनम् ॥ (धान्यांकुरों को स्थापित करना)

अथ वेद्याः पुरो भागे शिलास्थापनम्

(अब वेदी के सामने शिला स्थापित करना, जिस पर लोढा हो, सूत्र से वेष्टित हो, गुड़ और नमक उस पर रखना)

शिलां विशालां लवणेन विद्धां । सूत्रेण बद्धां सगुडां सलोष्टाम् ।

भोगौघपुष्ट्यै दुरितौघपिष्ट्यै, वेद्याः पुरस्ताद्विनिवेशयामि ॥१॥

ॐ सर्वजनानन्दकारिणि सौभाग्यवति ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥ (इस मंत्र से शिला स्थापित करना)

मध्येवेदि सकर्णिकं दलचतुष्केणाष्टसंख्यैर्दलैः, युक्तं द्वित्रिचतुर्हताष्टदलवत्पद्मं बृहत्तद्बहिः ।

सद्वाःकोणकपंचमंडलवृत्तं, संलिख्य तत्रार्चितान् । मंत्रांगान्नवदेवतावृत्तिसुरा-नर्घ्येण संभावये ॥२॥

ॐ ह्रीं यंत्रस्थापितसर्वदेवताभ्योऽर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु
स्वाहा ॥ (पूर्णार्घ्य समर्पित करें)

चतुर्दिक्षु पृथक्कृत्पुत यावर्तैकशिरोनतिः । त्रिः परीत्यानतोस्मीह, यंत्रराजं महोदयम् ॥३॥

अथानन्दस्तवः

(आगे का आनन्दस्तव (जयमाला) बोलते हुये मंडल की तीन प्रदक्षिणा देवें। चारों दिशाओं में तीन-तीन आवर्त और एक-एक शिरोनति करते जावें।)

जय जय जय जिनराज ध्वस्तदुर्मोहराज । प्रहृतमदनराज प्रहृतदेवराज ।

रुचिरतरविराज स्तुत्यशक्ताहिराज । प्रचुरसुगुणराजन्मच्युताधीशराज ॥ १ ॥

जय जय जिनधीर प्राप्तजन्माब्धिपार । प्रथितविभवसार प्रौढतीर्थावतार ।

प्रहृतहृतकमार प्रोद्गतानंदपूर । प्रहसितशतसूर प्रप्रकृष्टांशुभार ॥ २ ॥

जय जय जिनमित्र ध्वांतविध्वंसमित्र । स्वतिशयगुणगात्र ज्ञानविस्फूर्तिपात्र ।

परमपदपवित्र प्रोल्लसद्देवयात्र । प्रवरशरण चात्र प्राणिनामप्यमुत्र ॥ ३ ॥

जय जय जिनजैत्र क्षमात्रयारामचैत्र । त्रिदशविधृतवेत्र श्वेतचित्रातपत्र ।

निरतिशयचरित्र श्रीमदर्थोक्तसूत्र । स्वदुरघतरुदात्र श्रायसश्रीकलत्र ॥ ४ ॥

जय जय जिनतात त्रातरत्यंतपूत । स्थिरतरसुखदात कर्मसंघातघात ।

कुमतजलदवात ज्ञेयजातप्रमात । प्रवचनरथसूत ख्यातदेवाभिनूत ॥ ५ ॥

जय जय जिनचंद्र छिन्नदुर्मोहतंद्र । प्रणतनरसुरेंद्र स्वात्मलक्ष्मीन्मुनींद्र ॥
 स्वतिशयगुणरुद्र प्रीणित प्राणिमंद्र । प्रवचनसरिदिन्द्र स्फीत भासांद्रचन्द्र ॥६॥
 जय जय जिनसेव्य त्रातसुप्रीतभव्य । त्रिभुवनमहितव्य स्वाप्तिसंभावितव्य ॥
 वरद नमसितव्य प्रत्यहं कीर्तितव्य, । स्मृतिपथनिहितव्य श्रेयसे भावितव्य ॥ ७ ॥
 जय जय जिननाथ ज्ञातसंपत्सनाथ । प्रतिहतरतिनाथ प्राप्तमोहापनाथ ॥
 नतसुरनरनाथ श्रीद लोकाधिनाथ । श्रुतिकजदिननाथ श्रीवधूप्राणनाथ ॥ ८ ॥
 नमदनिमिषखंडं खंडितानंगकांडं । हसितलसिततुंडं ध्यानधीराग्निकुंडम् ॥
 सुगुणमणिकरंडं जन्मवाद्धौ तरंडं । विनमितचिदखंडं श्रायसानंदपिंडम् ॥ ९ ॥

इत्यानंदस्तवनेन वेद्यास्त्रिवारप्रदक्षिणं कृत्वा पंचांगप्रणामं कुर्यात् ॥

(वेदी—मंडल के चारों तरफ आठ धूपघटों को स्थापित करें पुनः चार या आठ जनों को मंडल के चारों तरफ बिठाकर आगे के मंत्र से सफेद पुष्पों से जाप करावें)

विभूष्य सद्भूषणैः सुधूपैर्विभूषणाद्व्यांश्चतुरोष्ट वार्यान् ॥
 वेद्यावृत्तान्मंत्रमनादिसिद्धं, शुभ्रैः प्रसूनैरथ जापयामि ॥

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ हौं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा । अनादिसिद्धमंत्रः (यह अनादिसिद्ध मंत्र है) ॥ इति वेदीभूषणपुरःसरजपुविनियोजनम् ॥

इत्थं यस्तु समस्तशस्तदिविजस्तोमस्य तत्संवृत- त्रैलोक्यार्चितपादपद्मयुगलश्रीमज्जिनानामपि ॥
 भक्त्याराधनमातनोति विधिना, द्रव्यादिशुद्ध्यन्वितः । सोयं धर्मरथस्य नेमिररहन्भूत्वैति सिद्धिश्रियम् ॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते
 प्रतिष्ठातिलकनाम्नि यागमंडलविधानीयो
 नाम सप्तमः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप ग्रंथ में यागमण्डल विधान को कहने वाला यह सातवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।



अथ अष्टमः परिच्छेदः

अथ गर्भावतारकल्याणम्

(भूमिका)

अथांकुरार्पणदिनात् षष्ठे तु दिवसे निशि । गर्भावतारकल्याणं विदधीत यथाविधि ॥ १ ॥
 तत्रादौ पूजकाचार्य, कुंजरेण विधीयते । पुरस्तान्नविबिंबस्य, प्रतिष्ठेयनिरूपणम् ॥ २ ॥
 सकलीकरणं कार्यं, हस्तशुद्ध्यादिपूर्वकम् । मूलवेदीपुरोदेशे, कल्पिते पुष्पमंडिते ॥ ३ ॥
 संकल्पपूर्वकं पुष्पांजलिस्तद्भूमिशोधनम् । वायुमेघाग्निभिर्देवैर्दर्भन्यासोर्चना क्षितेः ॥ ४ ॥
 गंधांबुसेकः पुष्पोपहारः पीठनिवेशनम् । तद्भद्रपीठे निःशेषजिनमातृसमर्चनम् ॥ ५ ॥
 तत्पीठस्थमहापात्रे, विवक्षितजिनप्रभोः । मातुरावाहनादिः स्यात्कौबेरं रत्नवर्षणम् ॥ ६ ॥
 भोगोपभोगद्रव्योपनयनं धनदेन वै । ततः प्राक्कल्पिते पद्माकरे साष्टदलांबुजे ॥ ७ ॥
 कर्णिकायां जिनस्येष्टिः, श्रयादीनां तद्वलाष्टके । तत्र सर्वौषधीवारिपूर्णकुंभनिवेशनम् ॥ ८ ॥
 श्रयादिसंकल्पनेनाष्टकन्यानां विनिवेशनम् । गर्भशोधनमंबायाः, श्रयादिभिस्तदुपासनम् ॥ ९ ॥
 फलवत्षोडशस्वप्नस्थापनं मातुरानने ॥ प्रवेशनस्य संकल्पादुचिताकारतः प्रभोः ॥ १० ॥
 जलाधिवासनं सर्व-बिंबानां तु तथोचितम् ॥ तदर्चनं च दिक्पालपूजा यवनिकार्पणम् ॥ ११ ॥
 धामसंप्रोक्षणं होमः, शांतिशुद्ध्यभिधानकः ॥ भूमिशुद्ध्यदिकं गर्भ-गृहे पीठनिवेशनम् ॥ १२ ॥
 सर्वौषधीपंचमृद्भिः पीठाग्रस्य विलेपनम् ॥ पंचतीर्थांबुभिस्तस्य, क्षालनं विशदाक्षतैः ॥ १३ ॥
 अष्टच्छदाब्जरचना तन्मध्ये विनिवेशनम् ॥ जलाधिवासितार्चायास्ततो गर्भाभिवर्द्धनम् ॥ १४ ॥
 सांगसर्गक्रमारोपाद्गर्भशय्याविधिर्विभोः । क्षीरैर्लघ्वभिषेकोऽथ गव्यैरष्टविधा र्चनम् ॥ १५ ॥
 वस्त्रांतरावृतिर्विक्षु दिक्पालानां समर्चनम् । वालुकास्थंडिले हस्तव्यासायामेंऽगुलोच्छ्रये ॥ १६ ॥
 दर्भैर्होमो यवनिकादीपद्वयनिवेशनम् । इष्टिः स्तुतिर्जिनांबायास्तदग्रे शक्रनर्तनम् ॥ १७ ॥
 जिनतातस्य गमनाप्रच्छन्नं स्तुतिपूर्वकम् । गर्भावतारकल्याण-क्रियाशान्तिबलिस्तथा ॥ १८ ॥
 इष्टार्थप्रार्थना चेति, तत्कल्याणक्रियाक्रमः । तत्तत्क्रियाविशेषस्तु, प्रयोगे प्रतिपाद्यते ॥ १९ ॥

तद्यथा:-

इन्द्रवज्रा— पूर्वं प्रतिष्ठाविधितो विविक्षते, देशे प्रतिष्ठेयमिदं सुरस्याम् । संप्रातिहाय्यं ससुखप्रचारां, अर्चां पुरोक्षरूपयामि ॥ २० ॥
 शार्दूलविक्रीडित— शुद्धात्मानुभवैकतानमनसोऽशुद्धोपयोगान्न ये । मत्त्वानंतचतुष्टयात्मकजिनं, ये स्थापनान्यासतः ।
 अर्चां प्रार्च्यं शुभोपयोगनिरताः, पुण्यं तु संचिन्वते । तेभ्योर्हृत्परमागमोक्तमहिमा, बिंबे मया स्थाप्यते ॥ २१ ॥
 कल्याणत्रयमाप यास्यति च या कल्याणयुग्मं गुण-स्थाने क्षीणकषायकस्य चरमे, या वर्तमाना क्षणे ॥
 शुक्लध्यानमलं द्वितीयमुपयात्यारोप्य तां चेतना-मर्चायामिह योजयामि तिलकं, मंत्रं च नाभौ पुरा ॥ २२ ॥
 निर्मायावसथं जिनस्य विधिवद्बिम्बं सुधाशमादिभि-नैत्रोन्मीलनसंविधिं सतिलकान्यासं सुलग्नेऽस्य च ।
 ये कुर्वन्ति च कारयन्ति गुणिनः, पश्यन्ति भक्त्या च ये । ते भुक्त्वाभ्युदयश्रियं निज सुखं, यास्यन्ति निःश्रेयसम् ॥ २३ ॥

इति प्रतिष्ठेयनिरूपणम् ।

अंकुरारोपण दिवस से छठे दिन रात्रि में प्रतिष्ठाशास्त्र में कही विधि के अनुसार गर्भावतार कल्याण की विधि करें ॥ १ ॥
 इस विधि को करने के पहले जिस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करना है, प्रतिष्ठाचार्य उसकी पूरी जानकारी सभा में दें ॥ २ ॥
 इसके बाद हाथ-पैर आदि अवयवों की शुद्धि करके संध्यावंदन विधि से मंत्र स्नान करके सकलीकरण विधि करें। मूल वेदी के सामने जो पुष्पमंडप बनाया हुआ है उसके मध्य में संकल्पपूर्वक पुष्पांजलि समर्पण करें। पश्चात् वायुकुमार, मेघ कुमर और अग्निकुमार इन देवों के द्वारा भूमिशोधन विधि करावें, दर्भस्थापना करावें और भूमि की पूजन करावें, उस पर जल गंध क्षेपण करावें, पुष्प अर्पण करके वहां पर भद्रपीठ की स्थापना करावें। इसी उत्तम भद्रपीठ के ऊपर संपूर्ण जिनमाताओं की पूजा करावें ॥ ३-४-५ ॥

इस भद्रपीठ पर स्थित महापात्र में जिन जिनेंद्रदेव की गर्भकल्याणक क्रिया करना हो, उनकी माता का आवाहन, स्थापन आदि विधि

। करावें। कुबेर के द्वारा की गई रत्नवृष्टि दिखलावें, कुबेर जिनमाता के लिये जो भोग-उपभोग के पदार्थ लाये हैं, वह भी दिखावें।

अनंतर पहले बनाये हुये कमलों में से आठ पांखुड़ियों वाले प्रथम कमल की कर्णिका में जिनेन्द्रदेव की पूजनकरके प्रतिष्ठेय जिनप्रतिमा के नाम वाले भगवान की पूजा करावें। आठ दलों में क्रम से श्री, ही आदि देवियों की पूजा करावें। इन्हीं आठ पांखुड़ियों में क्रम से सर्वोषधि जल से भरे हुए आठ कुंभ स्थापन करें और उनमें श्री, ही आदि आठ देवियों का संकल्प करें व उनकी स्थापना करें। अनंतर जिनमाता की गर्भशोधन विधि करावें और श्री आदि देवियां माता की उपासना कर रही हैं, यह विधि करें ॥ ६ से ६ ॥

जिनमाता के सोलह स्वर्णों की स्थापना करें और माता के मुख में भगवान ने श्वेत हाथी का स्वरूप धारण कर प्रवेश किया है, ऐसा संकल्प करना। भगवान गर्भ में आ गये हैं यह दिखाने के लिये यथोचित सर्व बिंबों की 'जलाधिवासन' यह क्रिया करें तथा प्रतिमाओं की अष्टद्रव्य से पूजा करें, दिक्पालों की पूजा करके उस वेदी को चारों तरफ वस्त्रों से वेष्टित कर दें ॥ १०-११ ॥

अनंतर धामसंप्रोक्षण विधि करके 'शांतिशुद्धि' नाम का होम करें, उस समय भूमिशुद्धि वगैरह करके गर्भगृह में पीठ स्थापन करें। सर्वोषधि और पांच प्रकार की मिट्टी से पीठ का अग्रभाग चर्चित करें (विलेपित करें), पुनः पांच प्रकार के तीर्थ के जल से उस पीठ का प्रक्षालन करें।

अनंतर उस पीठ पर स्वच्छ धुले श्वेत तंदुलों से आठ पांखुड़ियों का कमल बनावें और जलाधिवासित जिनप्रतिमा को लाकर इस कमल पर स्थापित करके 'माता का गर्भ बढ़ रहा है' ऐसा दिखावें, सर्व अवयवों की रचना हो रही है व गर्भशय्या में भगवान लेटे हुये हैं ऐसी विधि करावें। अनंतर गाय के दूध से अभिषेक करके अष्टद्रव्यों से उस प्रतिमा का पूजन करावें ॥ १२ से १५ ॥

पुनः प्रतिमा का पूर्ववस्त्र हटाकर दूसरे वस्त्रों से प्रतिमा को आच्छादित कर दें, दिक्पालों का पूजन करावें। एक हाथ के व्यास का और एक अंगुल ऊंचे ऐसा बालू का एक स्थंडिल बनवावें, उस पर दर्भ से हवन करें। दो दीप वहां स्थापित करें और उसके सामने पर्दा डाल दें। पुनः जिनमाता की पूजन व स्तुति करके जिनमाता के सामने इन्द्रों की नृत्यक्रिया दिखलावें। जिनेन्द्रदेव के पिता की आज्ञा लेकर जाने का दृश्य बनावें। स्तुति करके गर्भकल्याणक क्रिया की 'शांतिबलि' करावें, पुनः इष्ट प्रार्थना करें। इस प्रकार यह गर्भकल्याणक की विधि है। इस गर्भावतार कल्याणक क्रिया की जानकारी उस-उस क्रिया को करते समय कहते हैं ॥ १६ से १८ ॥

प्रतिष्ठा विधि करने के पहले प्रतिष्ठाचार्य प्रतिमाओं की परीक्षा करें। प्रतिमा आठ प्रातिहार्यों से सहित हों, जिस प्रतिमा को विधि नायक बनाया है, वह सुखपूर्वक रथ में व पालकी में बिठाकर उनका श्रीविहार करा सकें, ऐसी होनी चाहिये। प्रतिष्ठाशास्त्रों में प्रतिमा के जो लक्षण कहे गये हैं, उन लक्षणों से युक्त होना चाहिये। शुद्धात्मा के अनुभव में जो आनंद मग्न हैं और अशुद्धोपयोग से जो दूर हैं, ऐसे जिनबिंब में अनंतचतुष्टय धारक ऐसे जिनेन्द्रदेव की स्थापना करना चाहिये। ऐसे जिनबिंब की शुभोपयोग में लीन हुए ऐसे भव्य पुरुष पूजन करके पुण्य का संचय कर लेते हैं। इसलिये ऐसे पुण्य संचय के लिये परमागम में जो जिनेश्वर की महिमा कही गई है, उसकी में स्थापना करता हूँ ॥ २०-२१ ॥

गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक और दीक्षा कल्याणक इनकी प्राप्ति करके बारहवें क्षीणकषाय गुणस्थान के अंत में और सयोगकेवली गुणस्थान में ज्ञान कल्याणक तथा अयोग केवली गुणस्थान के अंत में मोक्ष कल्याणक की प्राप्ति जिनेश्वर भगवान करेंगे। दूसरे शुक्ल ध्यान से भगवान केवलज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। इस जिनबिंब में चैतन्य शक्ति का आरोपण करके प्रतिमा की नाभि में मंत्रपूर्वक तिलक विधि को मैं करता हूँ। जो भव्य जीव जिनमंदिर बनवाकर व जिनप्रतिमा बनवाकर उत्तम लग्न में नेत्रोन्मीलन विधि व तिलक न्यास की विधि प्रतिष्ठाचार्य द्वारा करवाते हैं और जो यह विधि देखते हैं वे ऐहिक सुखों को भोगकर मोक्ष को प्राप्त करते हैं ॥ २२-२३ ॥

अथ सकलीकरणं

(गर्भकल्याणक क्रिया के लिये सकलीकरण विधि-)

हस्तशुद्धिं विधाय दौ, शुचीकरणमन्वतः। सकलीकरणं सांगं, करिष्ये प्रकृतोचितम् ॥१॥

अत्रादौ अनेन मंत्रेण स्वहस्तौ पवित्रयेत्।

(अब निम्नलिखित मंत्र से दोनों हाथ पवित्र करें-)

ॐ णमो अरिहंताणं णमो केवलिणे सुअंगदेवि पसत्थहत्थे हूं फट् स्वाहा ।

हस्तद्वयपवित्रीकरणमंत्रः। (दोनों हाथ जल से धोवें)

ततः सुरभिमुद्रां धृत्वा इमां शुचिविद्यां सप्तवारान्यसेत् ॥

(इसके बाद सुरभिमुद्रा बनाकर नीचे लिखे दोनों शुचिकरणमंत्रों को सात-सात बार पढ़कर सुरभिमुद्रा पर इन मंत्रों का न्यास करे-)

शुचिकरणमंत्र

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आगासगामीणं । णमो विज्जाहराणं । णमो सव्वोसहिपत्ताणं । णमो सयंबुद्धाणं । णमो केवलिणे स्वाहा । इमां च- (और दूसरा मंत्र)

ॐ अर्हन्मुखकमलवासिनि पापात्मक्षयंकरि श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! मम पापं हन हन दह दह क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरधवले अमृतसंभवे वं वं हूं हूं स्वाहा । शुचीकरणमंत्रौ ॥ ततः सकलीं कुर्यात् ॥ (इसके बाद सकलीकरण करे-)

ॐ अं नमः । हृदये - (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ सिं स्वाहा । शिरसि - (शिर का स्पर्श करें)

ॐ आं वषट् । शिखायां - (चोटी का स्पर्श करें)

ॐ उं घे घे । कवचं - (वस्त्रों का स्पर्श कर समझें, मैंने कवच पहन लिया है)

ॐ सां हूं फट् स्वाहा । अस्त्रं - (इस मंत्र को पढ़कर समझें, मैंने शस्त्र धारण कर लिया है)

ॐ हौं वषट् । नयनयोः - (दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)

पुनश्च- (पुनः आगे के मंत्र बोलते हुये हृदय, ललाट आदि का स्पर्श करें)

ॐ हां णमो अरिहंताणं स्वाहा । हृदये - (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ हीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । ललाटे - (ललाट का स्पर्श करें)

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा । शिरोदक्षिणे - (शिर के दक्षिण भाग का स्पर्श करें)

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा । पश्चिमे - (शिर के पीछे भाग का स्पर्श करें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा । वामे - (शिर के बायें भाग का स्पर्श करें)

पुनस्तान्येव पदानि ललाटे मूर्ध्नि दक्षिणे पश्चिमे वामे चेति न्यसेत् । (पुनः इन्हीं पांचों पदों को बोलकर क्रम से ललाट, मस्तक, दक्षिण, पश्चिम और वाम भाग का स्पर्श करें) यथा-

ॐ हां णमो अरिहंताणं स्वाहा । (ललाट का स्पर्श करें)

ॐ हीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । (मस्तक का स्पर्श करें)

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा । (दायें भाग का स्पर्श करें)

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा । (पीछे भाग का स्पर्श करें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा । (बायें भाग का स्पर्श करें)

इति सकलीकरण मंत्रः

ततः- (इसके बाद - नीचे लिखे मंत्र से अपने अंग-उपांगों का स्पर्श करें)

ॐ उसहाइ जिणे पणमामि सया, अमलो विरजो वरकप्पतरू ।

सअ कामदुहा मम रक्ख सया, पुरुविज्जुणुही पुरुविज्जुणुही ॥१॥

अट्ठेव य अट्ठसया, अट्ठसहस्सा य अट्ठकोडीओ ।

रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥२॥

अनेन स्वस्यांगप्रत्यंगपरामर्शः कार्यः ॥ ततः—(इसके बाद)

ॐ धणु धणु महाधणु महाधणु स्वाहा । (यह धनुर्विद्या मंत्र अंगुलियों के पोरों पर लिखना है)

इमां धनुर्विद्यां वामकरांगुलिपर्वसु विन्यस्य प्रतिमाग्रे वामपादांगुष्ठेन सर्रेफाग्रं पुंखं शरं धनुरालिख्य वामपादेनाक्रम्य कायोत्सर्गेण स्थितः सन्—

(बायें हाथ की अंगुलियों के पर्व पर उपर्युक्त धनुर्विद्या मंत्र का न्यास करके—लिख करके प्रतिमा के सामने बायें पैर के अंगूठे से रेफाग्र से सहित ऐसे अग्रभाग—नोक से युक्त बाण और धनुष लिखकर—बनाकर बायें पैर से आक्रमण की मुद्रा में कायोत्सर्ग से स्थित हो जावें और अगले मंत्र को हृदय में सात बार उच्चारण करके १०८ बार धनुर्विद्या मंत्र को जपें -)

(सात बार हृदय में उच्चारण करने का मंत्र -)

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

थंभेइ जलज्जलणं, चिंतितमेत्तेण पंचणमकारो ।

अरिमारि - चोर-राउल-घोरुवसगं विणासेइ ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः विणासेह स्वाहा ।

इदं सप्तवारान्हृद्युच्चार्य अष्टोत्तरशतं धनुर्विद्यां आवर्तयेत् ।

ॐ धणु धणु महाधणु महाधणु स्वाहा । (यह धनुर्विद्या मंत्र है)

इति सकलीकरणविधानम् । (सकलीकरण विधान समाप्त हुआ)

(गर्भक्रिया के मंडप में भूमिशोधन आदि क्रियायें)

अथ मूलवेद्याः पूर्वस्यां दिशि भूमिशोधनविधानम्

(अब मूलवेदी के पूर्वदिशा में भूमिशोधन विधि—)

वसंततिलका छंद—

ॐ भूर्भुवः स्वरधिराजतिरीटकोटि-रत्नप्रभापटलपाटलितांघ्रियुग्मम् ।

नत्वा जिनेंद्रमथ तत्प्रतिमाप्रतिष्ठा-प्रस्तावनाय कुसुमांजलिमुत्क्षिपामि ॥१॥

ॐ हीं क्षीं भूः स्वाहा । इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

पूर्ववद् भूमिशोधनविधानं, दर्भन्यासविधानं, भूम्यर्चनविधानं च विदध्यात् ।

(पूर्व के समान भूमिशोधन, दर्भन्यास और भूमि अर्चा विधि करें)

उपजातिछंद—

श्री मूलवेदी पुरतः प्रयुक्ते, दीपप्रदीपे प्रसरत्सुधूपे ।

सत्पुष्पनिष्पादितमंडपे क्ष्मां, विशोध्य सिंचामि च गंधवार्भिः ॥२॥

पुण्याहमंत्रेण गंधोदकसेचनम् । (पुण्याहमंत्र से सुगंधितजल सिंचन करें)

पुष्पोपहार

मालिनीछंद—

कमलबकुलवालोत्फुल्लकल्हारमल्लि-कुमुदकुरवकोद्य-द्यूथिकाकेतकीनाम् ।

मरुवक-दवनानां मालतीचंपकानां, यजनभुवि समंतादंजलिं प्रोत्क्षिपामः ॥३॥

ॐ हीं श्रीं क्षीं भूः पुष्पोपहारः । (पुष्पों की भेंट चढ़ावें)

भद्रासन स्थापना - (चौकी स्थापित करना)

वसंततिलकाछंद—

दर्भस्रगंकुरवितान विराजमान - श्रीपुष्पमंडप महीतलमध्यभागे ।

सद्विश्वकर्म पुरतो विनिवेशयामि, क्षीरद्रुमादिपरिकल्पितभद्रपीठम् ॥४॥

ॐ हीं भद्रासनं विनिवेशयामि स्वाहा । (चौकी स्थापित करें)

भद्रकुंभस्थापना

इन्द्रवज्राछंद—

प्रस्तीर्य शालीनिह भद्रपीठे, कृत्वाक्षतैरष्टदलं च पद्मम् ।

तत्कर्णिकायां कुशरत्नगर्भं, संस्थापयेऽलंकृतभद्रकुम्भम् ॥५॥

ॐ मूलवेद्याः पूर्वस्यां दिशि भद्रकुंभं निवेशयामीति स्वाहा । (चौकी स्थापित करे)

भद्रासनोपरि भद्रकुंभनिवेशनं

(एक मिट्टी का घड़ा, जिसमें प्रतिमा को रखा जा सके, ऐसे बड़े मुंह वाला हो, उसमें अंदर श्री लिखकर बाहर स्वस्तिक बनावे, गले में कलावा बांधे, पते लगाकर पानी भरकर ऊपर छोटा मिट्टी का कलश रखकर उसके ऊपर नारियल रखे, ऐसे घड़े को भद्रकुंभ संज्ञा है । नूतन चौकी पर पहले से ही धुले अक्षत से आठ दल का कमल बनाना है, उस कमल पर यह भद्रकुंभ स्थापित करे ।)

भद्रकुंभ के सामने जिनमाता की पूजा

शार्दूलविक्रीडित छंद—मन्विश्वाकु-कुरुग्र-नाथ-हरिसंज्ञा-पूर्ववंशोद्भवाः । धीरोदात्तमहीक्षितः क्षितिनुता यज्जीवितेशाश्च याः ।

देवेन्द्राः प्रणमन्ति देवयुक्ति-व्रातशिरं सेवते । दासीवत्सकलाश्च तस्त्रिजगतामंबा जिनांबा यजे ॥६॥

गद्य—ॐ निरतिशयभक्तिभरानतपुण्डरपरिचोदितविविधसेवा विधायिश्रीप्रभृतिदिव्यकुमारीकृत संस्कारातिपूतगर्भागारपरिकल्पित-दिव्यारविंदविष्टरोपविष्टपरमोत्कृष्टशक्तिजुष्टसम्पन्ननिःकल विश्वेश्वरवृषभादि तीर्थकराभिष्य पुत्रप्रसवपवित्रीकृतसर्वलोकानाम् ॥

निजतनूजगच्चूडामणिजिनगुणानुरागावनम्रसुरेन्द्रमुकुटतटधटितहटन्माणिक्यमयूखमालाबालातपोल्लासितसमसमानतसुरवर्णीजन-कुटिलकुंतलकलापचंचरीकचुंबितपादारविंदानाम् । विश्वेश्वराजगन्मातामहासतीपूज्यासुमंगलेत्यादिप्रतीतान्वर्थपुण्यनाम्नयानाम् । साकेतादि-प्रसिद्धपुराधीश्वरमहानुभावनाभिराजादि महाराजप्राणबल्लभाति दुर्लभगुणमहितमरुदेव्यादिजिनेश्वरांबिकानाम् ॥ कलसंपत्संपादकदयामय-महायागप्रत्यूहव्यूहाति क्रमार्थमावाहनादिपुरः सरसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ॥

ॐ मरुदेव्यादिचतुर्विंशतिजिनमातरः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ मरुदेव्यादिचतुर्विंशति जिनमातरः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ मरुदेव्यादिचतुर्विंशतिजिनमातरः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं ।

पूर्णाघ्यं

शार्दूलविक्रीडितछंद—यासां गौतमगोत्रजः सकलविन्-नेमीश्वरः सुव्रतः । शेषाः काश्यपगोत्रजा जिनवराः, पुत्रा जगत्स्वामिनः ॥

या धर्मस्थितिहेतवो जिनलसन्-नोकर्मनो आगम-द्रव्योत्पादनतो जिनेन्द्रजननीः संभावयेऽर्घ्येण ताः ॥

ॐ मरुदेव्यादिचतुर्विंशतिमातृभ्यः पूर्णाघ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

(पृथक्-पृथक् जिनमाता को पुष्पांजलि -)

अनुष्टुप्छंद—वृषभस्य जिनेन्द्रस्य, मरुदेव्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥१॥

अजितस्य जिनेन्द्रस्य, विजयेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ २ ॥

शंभवस्य जिनेन्द्रस्य, सुषेणेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ३ ॥

अभिनन्दजिनेन्द्रस्य सिद्धार्थेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ४ ॥

सुमतीशजिनेन्द्रस्य, मंगलेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ५ ॥

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, सुसीमेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ६ ॥

सुपाश्वस्य जिनेन्द्रस्य, पृथ्वीषेणाह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ७ ॥

चंद्रप्रभजिनेन्द्रस्य, लक्ष्मणेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ८ ॥

पुष्पदंतजिनेंद्रस्य, रामिकेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ९ ॥
 शीतलस्य जिनेंद्रस्य, सुनंदेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १० ॥
 श्रेयसोऽपि जिनेंद्रस्य, विष्णुश्रीत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ ११ ॥
 वासुपूज्यजिनेंद्रस्य, जयावत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १२ ॥
 विमलस्य जिनेंद्रस्य, जयश्यामाह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १३ ॥
 अनन्तस्य जिनेंद्रस्य, सुव्रतेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १४ ॥
 धर्मनाथ जिनेंद्रस्य, सुप्रभेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १५ ॥
 शांतीश्वर जिनेंद्रस्यैरादेवीत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १६ ॥
 कुंथुनाथजिनेंद्रस्य, शान्तिदेव्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १७ ॥
 अरनाथजिनेंद्रस्य, मित्रसेनाह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १८ ॥
 मल्लिनाथजिनेंद्रस्य, प्रजावत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ १९ ॥
 मुनिसुव्रतजिनेंद्रस्य, वप्रादेव्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ २० ॥
 नमिनाथजिनेंद्रस्य, वर्षिलेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ २१ ॥
 नेमीश्वरजिनेंद्रस्य, शिवादेव्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ २२ ॥
 पार्श्वनाथजिनेंद्रस्य, ब्रह्मिलेत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ २३ ॥
 वर्धमानजिनेंद्रस्य, प्रियकारिणीत्याह्याम्बिके । गर्भावतारकल्याणं, कुर्वेऽस्य त्वत्प्रसादतः ॥ २४ ॥

एवं जिनजनन्यादिषु योज्यम् ॥

विधिनायक भगवान की माता की पूजा

विवक्षितमातृपूजाप्रतिज्ञापनाय भद्रकुंभेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(जिन भगवान की प्रतिमा विधिनायक हैं, वे यहां विवक्षित हैं, उन जिन भगवान की माता की पूजा के लिये भद्रकुंभ में पुष्पांजलि क्षेपण करे-)

आह्वानन विधि

वसंततिलकाखंड — मातस्त्वमेव ननु तज्जगदेकनाथ, गर्भावतारपरमोत्सवपात्रमासीः ।

तन्मे प्रसीद तमिमं विधिमाचरिष्णो-रेह्यत्र तिष्ठ मम सन्निहिता भव त्वम् ॥

ॐ ह्रीं विवक्षितजिनमातः! (वृषभदेवजिनमरुदेवीमातः) अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

विवक्षित का अर्थ है कि जो यहां प्रतिष्ठा में विधिनायक भगवान हैं उन भगवान का नाम और उनकी माता का नाम लेकर पूजा करना। जैसे वृषभदेव की माता मरुदेवी, चन्द्रप्रभ की माता लक्ष्मणा, शान्तिनाथ की ऐरादेवी, नेमिनाथ की शिवादेवी, पार्श्वनाथ की ब्रह्मिला—वामादेवी और महावीर स्वामी की प्रियकारिणी या त्रिशला हैं। जो भगवान हों, उनका और उनकी माता का नाम लें।

ॐ ह्रीं विवक्षितजिनमातः ! (वृषभदेवजिनमरुदेवीमातः !) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विवक्षितजिनमातः ! (वृषभदेवजिनमरुदेवीमातः !) अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

उपजाति छंद— विश्वेश्वरे ! विश्वजगत्सवित्रि ! पूज्ये ! महादेवि महासति ! त्वाम् ।

सुमंगलेऽर्घ्यैर्बहुमंगलार्थैः संभावयामो भव नः प्रसन्ना ॥

पूर्णार्घ्य

ॐ ह्रीं वृषभदेवजिनमरुदेवीमातः ! तुभ्यं पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

रत्नवृष्टि

इन्द्रवज्राछंद—

मासान् षडादौ परतो नवाहर्द् - गर्भावताराद् धनदो ववर्ष ॥

यां रत्नवृष्टिं जिनतातसौधे, कुर्वे तदारोपणपुष्पवृष्टिम् ॥

ॐ ह्रीं धनाधिपतेऽर्हत्पितृसौधे रत्नवृष्टिं मुंच मुंचेति स्वाहा ।

कनकशलाकारत्नपंचकमिश्रचित्रकुसुमांजलिं भद्रपीठस्याग्रतः प्रकिरेत् ।

(सुवर्णशलाका और पांच प्रकार के रत्नों से मिश्रित नाना प्रकार के पुष्पों को भद्रपीठ के आगे बिखेरें)

॥ इति रत्नवृष्टिस्थापनं ॥

माता के लिये भोगोपभोग सामग्री

शार्दूलविक्रीडितछंद— सर्वर्तुप्रभवप्रसूनसुफला-न्यन्नादिभोग्योत्करं । छत्रं चामरमासनं च शयनं, भूषानुलेपाम्बरम् ॥

वाः क्रीडाप्रमुखोचितोपकरणं, भोग्यं परं प्रस्तुता- निष्ठार्थानुपदीकरोतु सततं, मातुर्धनेशोऽर्हतः ॥

ॐ निधीश्वर! जिनेश्वरमात्रे भोगोपभोगांगानि उपनय उपनय इति स्वाहा ।

चारुवस्त्रमुद्रिकाहारफलपत्रपुष्पादिकं पीठाग्रे प्रतिष्ठयेत् । तत्सर्वं विश्वकर्मा गृणीयात् ।

(सुंदर वस्त्र, अंगूठी, भोजन, फल, पत्र, पुष्पादिक भद्रपीठ में कल्पित जिनमाता के सामने रखे । मूर्तिकार मिस्त्री आदि को ये सब दे देवें)

अथ पुष्पमंडपप्राक्प्रदेशपरिकल्पितपद्माकरांतर्विरचिताष्टदलकमले जिनार्चा श्रयादिदेवी पूजाविधानं ॥

(पुष्प मंडप के पूर्व दिशा में बने हुये कमलाकारों के अंतर्गत विरचित अष्टदल कमल में कर्णिका पर जिनप्रतिमा स्थापित कर उनकी पूजा करें- पुनः आठों दलों में श्री आदि देवी की पूजा करें, उसकी विधि -)

अथाष्टदले श्रयादिदेवीपूजाविधानं

अष्टदलकमल की कर्णिका में जिनबिंब पूजा

वसंततिलकाछंद—

श्री पुष्पमंडपपुरो वरचूर्णक्लृप्त-पद्माकरे विरचितेऽष्टदले महाब्जे ।

तत्कर्णिकानिहितपीठतले जिनार्चा, संस्थापये विविधविघ्ननिवारणार्थं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं परमब्रह्मन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं परमब्रह्मन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं परमब्रह्मन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

(इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः देवं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

अथाष्टदलेषु श्रयादिदेवीपूजाविधानं

(कमल के आठ दलों पर श्री आदि देवियों की पूजा)

शार्दूलविक्रीडित—मेरोर्दक्षिणतो महाकुलकुभृत् पद्माकरांभोरुह-प्रासादस्थितिकाः शचीपतिवधूः, श्रीहीधृतीरंबिकाः ।
तस्यैवोत्तरतस्तथोत्तरसुरेङ्-गृह्यां च कीर्तिं धियं । लक्ष्मीं शांतिकरीं च शांतिमिह सत्पुष्टिं च पुष्टिं यन्ने ॥

श्रयादिदेवीपूजाविधानाय पूर्वविधिं विदध्यात् ।

(यहाँ श्री, ही आदि की पूजा के लिये पूर्ववत् विधि करे)

गद्य—ॐ विविधमणिविचित्रितोभयपाश्वर्हेमादिमयहिमवदादिकुलाचलाधित्यकानादिसिद्धपद्मादिसिद्धपद्मादि सरोवरांतर-
सामानिकपरिषदधुषितपरिवारवारिजपरीतपुष्करमध्यशारदशशांकविशदप्रासादनिवासिनीनां । कांतिलज्जाधैर्यजिनार्यादिकीर्तनलोकोत्तर-
ज्ञानत्रिवर्गसाधनांगव्यापकत्वधर्मानर्हन्मातुरापादयंतीनाम् ॥ श्रीहीधृतीकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीनामदेवीनाम् ॥ अलक्ष्यशचीप्रयक्षान्यलक्ष्यालक्ष्यांग-
मंगलश्रयादिदेवी विहितजिनमातृभोगादिविज्जोपशमनादिमनोनिर्वृतिनिर्वर्तकशांतिदेवीसहितानां प्रति फलितेकुंबादर्श सन्निभोदर जिनांबिकांग
भर्तृगुण भोगभक्तादि पुष्टि विधायि पुष्टि देवीसमन्वितानाम् ॥ पीतारुणपीतशातकुंभकांचनकनक तपनीयहिरण्यप्रभापघनानाम् ॥
पुष्पमुखकलशहस्तानाम् अष्टदिक्कुमारीणाम् । सकलसंपत्संपादक दयामयमहायाग प्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसपर्याक्रमं
यथाक्रममुपक्रमामहे ॥

आवाहनादिपुरःसरप्रत्येकपूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(पृथक्-पृथक् श्री आदि की पूजा)

अथ पृथगिष्टिः

उपजातिछंद—

श्रियं नरागोचरकांतिरूप- श्रियं जगन्मातरि योजयन्तीं ।

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ॥१॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं
यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ह्रियं लसद्बोधसहायसौम्य-ह्रियंजिनांबाधृतिपोषयन्तीं ॥

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ॥२॥

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं.. ।

धृतिं ससामानिक दिक्कुमारी, धृतिं जिनेशो जननीं नयन्ती ॥

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ॥३॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते धृतिदेवि ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं स्वस्तिकं.... ।

कीर्तिं जिनेद्रस्तवनादिरूपां, कीर्तिं विभोर्मातरि संजयन्तीं ।।

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ।।४।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं पञ्चस्तिकं....।

बुद्धिं प्रबुद्धाखिललोकयात्रां, बुद्धिं नयन्तीं जननीं जिनानाम् ।

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं पञ्चस्तिकं....।

लक्ष्मीं त्रिवर्गोचितसाधनाप्तिं, लक्ष्मीं प्रभोर्मातरि साधयन्तीं ।।

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ।।६।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं पञ्चस्तिकं....।

शांतिं मनोनिवृत्तिमंतराय- शांतिं च जैनीं जननीं नयन्तीम् ।।

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ।।७।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शांतिदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं पञ्चस्तिकं....।

पुष्टिं जिनाम्बावपुरादिषूच्चैः-पुष्टिं विशिष्टामुपपादयन्तीं ।।

संफुल्लफुल्लानन शातकुंभ-कुंभांकहस्तां बलिना धिनोमि ।।८।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं पञ्चस्तिकं....।

शार्दूलविक्रीडित-इत्थं सारसपर्ययाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद् विकलापि मोहमुखतो, युष्मतृप्तादादियं ।।

सर्वज्ञाध्वर-विघ्नमाघ्नत दृतं, सर्वाश्च दिक्कन्यकाः । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ।।

इष्टप्रार्थनापुरःसरं पूर्णाहुतिः ।

ॐ ह्रीं श्र्यादिअष्टदिवकन्यकाभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि ।

(कमल के अष्टदलों पर सर्वौषधिमिश्रित कुंभ स्थापना)

(सर्वौषधि मिलाकर तीर्थ जल से भरे घटयात्रा विधि से लाये हुये जल से भरे हुये तथा जिनके मुख पर नारियल, पते और पुष्प रखे हुये हैं ऐसे आठ कलशों को क्रम से कमल की आठों पांखुड़ियों पर रख देवे और इन्हीं के पास श्री, ह्री आदि नाम से बनाई गई कुमारी कन्याओं को खड़ी करके उनमें श्री आदि देवी की स्थापना के लिये उन पर पुष्पाक्षत क्षेपण करें-)

वसंततिलकाछंद— विन्यस्य तेषु विपुलाष्टदलेषु कुंभान्, सर्वौषधिप्रचुरतीर्थजलप्रपूर्णान् ।

दिवकन्यकाभिमननात् कुलजाष्टकन्याः, संस्थापयेऽत्र परितो विधृतार्घ्यपात्राः ॥१९॥

अष्टदलाभ्यन्तरेषु सर्वौषधिमिश्रतीर्थसंभृतकुंभान् विन्यस्यश्र्यादिदेवी भावस्थापनार्थं अष्टदलाग्रस्थापित समलंकृतकन्यासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् । (श्री आदि कन्याओं पर पुष्पांजलि करें)

दिवकन्या द्वारा गर्भशोधन विधि

(प्रतिष्ठाचार्य आगे के श्लोक व मंत्रों को बोलते हुये क्रम से एक-एक कन्या से एक-एक कुंभ उठवाकर भद्रकुंभ में जल भरावे—इनमें से पहले पूर्वदिशा की श्रीदेवी से पूर्व दिशा के कुंभ को उठवाकर मंत्र बोलते हुये भद्रकुंभ में जल भरावे पुनः उस-उस कन्या को वहीं-वहीं खड़ी कराते जावें)

श्री देवी द्वारा

उपजातिछंद— स्वयोग्यसेवाकरणान्निजानु-भावापणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! श्रीदेवि ! विश्वेश्वरमातरं त्वम् ॥१९॥

ॐ महति महसां श्रीदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं श्रीदेव्यै स्वाहा ।

अनेन पूर्वदलस्थितं कुंभं श्रीसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तया तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तत्पूर्वदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

ह्री देवी द्वारा— स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावापणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! ह्रीदेवि ! विश्वेश्वरमातरं त्वम् ॥२०॥

ॐ महति महसां ह्रीदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं ह्रीदेव्यै स्वाहा ।

अनेन अग्निदलस्थापितकुंभं ह्रीसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तया तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तदग्निदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

धृतिदेवी द्वारा—स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावापणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! धृत्याख्यदेवि ! त्वमिहार्हदंबाम् ॥२१॥

ॐ महति महसां धृतिदेवि ! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं धृतिं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं धृतिदेव्यै स्वाहा ।

अनेन दक्षिणदलस्थापितकुंभं धृतिसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तया तत्कुंभवारिणा तत्पूरयेत् । तद्दक्षिणदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

कीर्तिदेवी द्वारा—स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावापणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! कीर्त्याख्यदेवि ! त्वमिहार्हदंबाम् ॥ २२ ॥

ॐ महति महसां कीर्तिदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं कीर्तिं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं

स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं कीर्तिदेव्यै स्वाहा ।

अनेन नैऋत्यदलस्थापितकुंभं कीर्तिसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तथा तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तन्नैऋत्यदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

बुद्धिदेवी द्वारा—स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावार्पणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! बुद्ध्याख्यदेवि ! त्वमिहार्हदम्बाम् ॥५॥

ॐ महति महसां बुद्धिदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं बुद्धिं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं बुद्धिदेव्यै स्वाहा ।

अनेन पश्चिमदलस्थापितकुंभं बुद्धिसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तथा तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तत्पश्चिमदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

लक्ष्मीदेवी द्वारा—स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावार्पणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! लक्ष्म्याख्यदेवि ! त्वमिहार्हदम्बाम् ॥६॥

ॐ महति महसां लक्ष्मीदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं लक्ष्मीं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं लक्ष्मीदेव्यै स्वाहा ।

अनेन वायव्यदलस्थापितकुंभं लक्ष्मीसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तथा तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तद्वायव्यदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

शांतिदेवी द्वारा—स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावार्पणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! शांत्याख्यदेवि ! त्वमिहार्हदम्बाम् ॥ ७॥

ॐ महति महसां शांतिदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं शांतिं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं शांतिदेव्यै स्वाहा ।

अनेनोत्तरदलस्थापितकुंभं शांतिसंकल्पित कन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तथा तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तदुत्तरदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

पुष्टिदेवी द्वारा—स्वयोग्य सेवाकरणान्निजानु - भावार्पणाद् गर्भविशोधनाच्च ।

उपास्व भक्त्येन्द्रनियोगतश्च ! पुष्ट्याख्यदेवि ! त्वमिहार्हदम्बाम् ॥ ८॥

ॐ महति महसां पुष्टिदेवि! महादेवि ! ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं पुष्टिं नित्यै स्वं सं क्लीं इवीं स्वां लां झ्रौं तीर्थकरसवित्रीं स्नापय स्नापय गर्भशुद्धिं कुरु कुरु वं मं हं सं तं पं पुष्टिदेव्यै स्वाहा ।

अनेनैशानदलस्थापितकुंभं शांतिसंकल्पित कन्यया पुष्टिसंकल्पितकन्यया समुद्धार्य जिनमातृगर्भशुद्धिसंकल्पेन भद्रकुंभं तथा तत्कुंभवारिणा पूरयेत् । तदीशानदिशि तां कन्यां स्थापयेत् ।

अष्टकुमारियों द्वारा माता की सेवा

(आठों कुमारिकायें विविध वस्तुएं हाथ में लेकर माता की परिचर्या करें)

याः श्रीजिनां बां सुखयन्ति नित्यं, सेवाविशेषैर्विविधैर्विर्नोदैः ।

क्रीडाविशेषैर्बहुभक्तियुक्ताः, साक्षादिमास्ता वरदिकुमार्यः ॥६॥

ॐ दिक्कुमार्यो जिनमातरमुपेत्य परिचरत परिचरत इति स्वाहा ।

सद्वस्त्रालंकारा अष्टौ वरकुमारीर्मंगलतांबूलहस्ताः सन्निधाप्य पीठं परितः सुकुंकुमरं जितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् । इति गर्भशोधनपूर्वक दिक्कुमारीपरिचर्यास्थापनम् ।

माता के सोलह स्वप्न

(यहाँ माता के सोलह स्वप्नों को दिखाते हुये कमल आदि एक-एक फूल और नारियल आदि एक-एक फलों को एक-एक स्वप्न को बोलकर परिवर्तित करता जाये। अर्थात् एक स्वप्न का श्लोक बोलकर एक पुष्प और फल भद्रकुंभ के सामने रखें और दूसरा स्वप्न श्लोक बोलकर उसे हटाकर दूसरा फूल व फल रखें)

अथ षोडशस्वप्नतदनुबन्धफलपृथक्पृथक्स्थापनम्

वसंततिलकाछंद—

माद्यन्तमिन्द्रकरणं शरदभ्रशुभ्रं, पर्जन्यगर्जननिभोजितबृंहितं तम् ।

त्रैलोक्यपूज्यसुतलाभनिवेददक्षं, जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१॥

अमरगजेन्द्रस्वप्नदर्शनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(एक फल और एक पुष्प रखें)

पद्माद्यन्यतममेकं नालिकेराद्यन्यतममेकं फलं परिवर्त्य पीठाग्रतः स्थापयेत् ॥ एवमुत्तरत्रापि विधेयम् ।

तुंगांगवैभवविनिर्जितदिग्गजेन्द्र - गात्रं गवेंद्रमतिरुद्रतरं ध्वनंतम् ॥

श्रेष्ठं सुतं त्रिजगतामवबोधयंतं, जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥२॥

वृषभस्वप्नदर्शनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(बैल स्वप्न को दिखाने के लिये एक फल और पुष्प बदलकर रखें)

कंठीरवं करटिकोटिधटां विपात्य । कुत्कीलमूर्धनि कठोरवं रटन्तम् ॥

प्रज्ञापयंतमथ पुत्रमनंतवीर्यं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥३॥

कंठीरवस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(सिंह स्वप्न दिखाने के लिये फल और पुष्प बदलकर रखें)

हस्तींद्रहस्तधृतहेमघटामृतौघैः । संस्नाप्यमानकमलां कमले निषण्णां ॥

स्नाप्यं सुरैः सुरगिरौ सुतमीरयंतीं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥४॥

लक्ष्मीस्वप्नदर्शनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(लक्ष्मी स्वप्न दिखाने हेतु फल और पुष्प बदलकर रखें)

मंदारमाल्ययुगम्बरलंबमान । मामोदलोलमिलितोल्लसितालिमालम् ॥

सद्धर्मतीर्थकरनंदनलाभलिंगम् । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥५॥

मंदारमालायुगलस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(माला स्वप्न दिखाने हेतु फल और पुष्प बदलकर रखें)

दुग्धाब्धिपूरशतनिर्मलसांद्ररुद्र । चंद्रातपप्रसरबंधुरचंद्रबिंबम् ॥

आल्हादितत्रिभुवनं तनयं वंदतं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥६॥

चंद्रबिंबस्वप्नप्रदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(चन्द्र स्वप्न दिखाने हेतु फल और पुष्प बदलकर रखें)

उद्यंतमस्तमितसर्वतमोन्यतेजः - स्फारप्रभाप्रसरभासुरभानुबिंबम् ॥

कोट्यर्कदीधिततनोर्गमकं सुतस्य । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥७॥

सूर्यस्वप्नदर्शनप्रदर्शनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(सूर्य स्वप्न दिखाने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

सत्पीनमीनमिथुनं सरसि प्रगाढं । क्रीडत्परस्परसमाश्रयरागवेगम् ॥

आनन्दमेदुरतमात्मजबोधनांगं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥८॥

मीनयुग्मस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(मछलीयुगल स्वप्न दिखाने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

श्री शातकुंभयकुंभयुगं सुधाभि-राकंठपूर्णमतिरम्यपयोजवक्त्रम् ॥

संसूचिताखिलनिधीश्वरपुत्रलाभं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥९॥

पूर्णकुंभयुग्मस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(पूर्ण कुंभद्वय स्वप्न दिखाने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

पद्माकरं विकचपद्मसहस्रकीर्णं । पूर्णं पयोभिरमलैरवबोधयन्तम् ॥

संव्यंजनाष्टशतलक्षणगात्रपुत्रं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१०॥

पद्माकरस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(सरोवर स्वप्न दिखाने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

अभ्रंलिहाखिलदिगाक्रमणातिलोल-कल्लोलजाललुलितामलरत्नमब्धिं ॥

श्री केवलावगमवत्सुतसूचनोत्कम् । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥११॥

सागरस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(समुद्र स्वप्न दर्शन स्थापित करने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

प्रोद्यत्प्रभापटलसंघटितेंद्रचाप-कोटीद्धरत्नतटहाटकसिंहपीठम् ॥

त्रैलोक्यराज्यपतिसूनुफलं ब्रुवंतम् । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१२॥

सिंहासनस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(सिंहासन स्वप्न देखने का फल स्थापित करने के लिये फल-पुष्प बदलकर रखें)

अत्युन्मिषन्मणिगणोज्ज्वलिताखिलाशं । वैमानिकाभिमतमप्रतिमं विमानम् ।

स्वर्गावतारमहितं सुतमाब्रुवन्तम् । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१३॥

देवविमानस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(देवविमान स्वप्न दर्शन स्थापित करने के लिये फल-पुष्प बदलकर रखें)

उन्मूलितांधतमसं सुरसद्विमान-शोभाविशेषनिलयं निलयं फणीशाम् ॥

संसूचितावधि सुबोधनिदानसूनुम् । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१४॥

नागविमानस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(धरणेन्द्र विमान स्वप्न दर्शन स्थापना हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

उद्भासितामरपथाखिलदिग्विभाग-भाभारभासुरमहामणिरत्नराशिम् ॥

बोधाद्यनन्तगुणराशिसुतं वदन्तम् । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१५॥

रत्नराशिस्वप्नदर्शनफलस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(रत्नों की राशि स्वप्न फल को स्थापित करने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

दूरापहस्तिततमोभिरपास्तशीतै-ज्वालाकलापविभवैरनलं ज्वलन्तम् ॥

शंसंतमात्मजमधौघवनोग्रदावं । जैनी निशांतसमये जननी निदध्यौ ॥१६॥

अनलस्वप्नदर्शनस्थापनार्थं फलं पुष्पं परिवर्त्य स्थापयामि स्वाहा ।

(अग्नि का स्वप्न दर्शन स्थापित करने हेतु फल-पुष्प बदलकर रखें)

दृष्ट्वा द्व्यष्टस्वप्नरत्नानि रात्रे-स्तुर्ये यामे तूर्यनादास्तनिद्रा ।

पत्युर्ज्ञात्वा तत्फलानि क्रमेण, प्रीता देवी या हि साक्षादियं सा ॥१७॥

षोडश सत्पुष्पाणि तावन्त्येव फलानि च परिवर्त्य पीठाग्रतः स्थापयेत् ।

(सोलह पुष्प और सोलह फल को परिवर्तित करके भद्रपीठ के सामने स्थापित करें ।)

इति स्वप्नानुबन्धनम् ।

अथ प्रतिष्ठेयप्रतिमाया जलाधिवासनम् ॥

शार्दूलविक्रीडित—स्वप्नांते प्रविवेश मातृवदनं, शुभ्रेभरूपेण यः । सद्यः स्वर्गपरिच्युतोऽयबलतो, देवासनं कंपयन् ॥

सद्यो जातजिनः स एष भगवान्देवो महानित्यतः । संकल्पात्सलिलाधिवासनविधिं, कुर्वे जिनार्चोचितम् ॥

तामेव महीयसीं पुरा निरूपितप्रतिष्ठेयार्हप्रतिमां नूतनसितसद्वस्त्रप्रच्छादितां पुरश्चरदृष्टिकाकरविश्वकर्मा सौधर्मद्रो महोत्सवेनानीय सुविशुद्धभद्रकुंभजले प्लावयेत् ॥

(जिनकी प्रतिष्ठा करना है, ऐसी विधिनायक प्रतिमा भगवान ऋषभदेव आदि जिनकी हों, उनमें चंदन आदि लगाकर नूतन श्वेत वस्त्र से लपेटकर टांकी हाथ में लिये हुये शिल्पी को साथ लेकर सौधर्म इन्द्र वैभव के साथ आवें और जलाधिवासन विधि करके जल से भरे हुये भद्रकुंभ में प्रतिमा को प्लावित करें—नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर घड़े में प्रतिमा को विराजमान करें और जो अचल या बड़ी जिनप्रतिमायें हैं, उनके ऊपर गर्भशोधन विधि से पवित्र जल से भरे हुए छिद्रसहित ऐसे घड़े को प्रतिमा के ऊपर लटकाकर जलाधिवासन विधि करें ।)

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं णमो अरिहंताणं दिगंबराय क्षेमंकराय क्षीराब्धिजलाभिषिक्ताय अष्टविधकर्मनिर्मूलनकराय नमः स्वाहा ॥ जलाधिवासनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ॥

अथ पुष्पमंडपस्य पूर्वादिदिक्षु दिक्पालार्चनविधानम् ॥

श्रीमत्सर्वजनीनजैनसवन - प्रत्यूहविध्वंसन - प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहित - प्रख्यातिपूजांचितान् ॥

स्वस्वातुच्छपरिच्छदानिह दशा-मन्याप्रधृष्यामितान् ॥ दिक्पालाञ्जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याव्हये ॥

गद्य—ॐ विमलकलधौतखचितमणिमयाभरणभूषितैरावतच्छागरक्ताक्षऋक्षकरिमकरतुरंगपुष्पकपुष्पांग-शाक्कराकारवाहनारूढानां ॥ नितांतचारुचामीकरातिबालभास्करांजनपुंजतमस्तोमसुधाकरसुवर्णस्वर्णशशांकसंकाशशरीरप्रभाभिरामाणाम् ॥ कुलिशजाज्वलज्ज्वाल-प्रचंडदंडमुद्गराहिपाशपादपशक्तित्रिशूलाप्रतिहतप्रभावप्रहरणानां । कमनीयकामिनीकुलललामभूतशचीस्वाहाच्छायानैऋतीवायुवेगीधनदेवी पार्वतीनाममहादेवीमुखांबुजदत्तदृष्टीनाम् ॥ पाकशासनपावककृतांतकोणपपाशपाणिपवनपार्वतीशसखपार्वतीप्रियाभिधानलोकपालानां ॥ कूर्मगतसितांगांसांकुशपद्मावतीप्रियफणीशकंठीरवारूढपांडुरतनुकुंतकरोहिणीजीवितेश्वरसहितानां । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायाग-प्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ।

आवाहनादिपुरः सरप्रत्येकपूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येकपूजा

वसंततिलकाछंद— देहप्रभाद्विगुणभूषणदिव्यदीप्ति-व्यालिप्तदिग्विवरमंतरितांतरायम् ॥

वज्रायुधं निजवधूवदनाब्जनेत्रं, व्याह्वानये नुतजिनेंद्रमहे महेन्द्रम् ॥११॥

ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं इंद्राय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

स्रग्धराछंद—शोणभ्रूश्मश्रुकेशांबकमरुणरुचं जाज्वलज्वालशक्तिम् ॥ कुंडीं वामेक्षमालामितरकरतले बिभ्रतं सोपवीतम् ।

स्वाहायुक्तं नियुक्तं जिनयजनविधेर्दीपधूपाधिकारे ॥ सद्देवाघोषिसभ्यावृतमनलमलंकारसारं यजेऽहम् ॥२॥

ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अग्नये इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडित— भृंगांगासितभूरिभंगुरजटाजूटं शिखाडंबरो-द्रभिद्दंडोड्डमरं प्रचंडफणभृत्सन्मंडनैर्मंडितम् ॥

च्छायातुच्छमुखेंदुसुच्छविकृतानंदं सकालच्छविम् । कालं कालजकालधर्मरहिताधीशाध्वरे व्याव्ये ॥३॥

ॐ ह्रीं यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं यम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं यमाय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

मालिनीछंद— कटकमुकुटमुद्राहारकेयूरमुख्या-भरणकिरणभारोद्भासिताशांतरालम् ॥

असितलसितकांतिं मुद्गरास्त्रं च रात्रिं, चरपरिवृतमेतं व्याव्ये नैऋतीशम् ॥४॥

ॐ ह्रीं नैऋत्य ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं नैऋत्य ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं नैऋत्याय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

मुक्ताफलात्युज्ज्वलविद्रुमानु-स्यूतप्रभूताभरणाभिरामम् ॥

भीमाहिपाशं वरुणान्यधीशं, यागेऽत्र यादःपतिमाव्हयामि ॥५॥

ॐ ह्रीं वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वरुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं वरुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वरुणाय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

पृथ्वीछंद— चलद्विपुलभूरुहं कलितविस्फुरद्भूषणं ॥ लसन्मधुकरच्छविं चलितगात्रयंत्रोत्करम् ॥

जगत्त्रितयजीवनं विरचिताखिलार्थैतरम् ॥ समीरणमिहाव्ये समदवायुवेगीयुतम् ॥६॥

ॐ ह्रीं पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पवन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पवन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं पवनाय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

मालिनीछंद—

निधनरहितमुक्ताभूषणप्रौढवेषम्, निधननिपुणशक्तिं विद्विषामुद्वहन्तम् ॥

धनमुखनिजदेवीसन्मुखाम्भोजभृङ्गं, धनदमिह धनद्धर्यै सेव्यमाव्हानयेऽहम् ॥७॥

ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं कुबेराय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडित—

कंकेलीद्रुमपल्लवच्छविजटा-जूटार्धचंद्रप्रभा । सांद्रीभूतभुजंगभूषणफणा-रत्नप्रभाभासुरम् ॥

भालाभीलविलोचनानलशिखा-तीक्ष्णत्रिशूलायुधम् । पार्वत्या धवमाव्हये गणवृतं, दक्षाध्वरध्वंसिनम् ॥८॥

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं ईशान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं ईशानाय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

पृथ्वीछंद—

स्फटापरिगतारुणद्युमणिबिंबशुभन्मणि- प्रभापटलपाटलीकृतसितांगविभ्राजितम् ॥

धृताकुशमनकुशं सुगुणपद्मपद्मायुतम्, फणाधरगणावृतं फणिमहीन्द्रमाव्हानये ॥ ९॥

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

मालिनीछंद—

जिनगुणमणिमालां मौक्तिकानां च मालां । कुमुदकुसुममालां रोहिणीदृष्टिमालाम् ॥

चिरमुरसि धरन्तं कुंदभासं सकुन्तम् । कविनुतगुणरुद्रं चंद्रमाव्हानयेऽहम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सोमाय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

जलहोम विधि

(जलहोम विधि से संक्षिप्त जलहोम करके निम्नलिखित श्लोक बोलकर दश दिक्पाल के मंत्रों से सप्तधान्य से सात-सात आहुती जलकुंड में देवें।)

वसंततिलकाछंद—

दिक्पालकानिति समर्च्य यवान्विता ये । गोधूममुद्गचणकाढकशालिमाषाः ॥

तत्सप्तधान्यकृतमुष्टिभिरंबुकुंडे । सप्ताहुतीरिह दधे पृथगेव तेभ्यः ॥ १ ॥

दशदिक्पालमंत्र

१. ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्राय स्वाहा ।

(सात बार इसी मंत्र से सप्तधान्य से आहुति देवें, ऐसे ही ७-७ बार प्रत्येक मंत्रों से आहुति देना है)

२. ॐ आं क्रों ह्रीं अग्नये स्वाहा । ३. ॐ आं क्रों ह्रीं यमाय स्वाहा ।
 ४. ॐ आं क्रों ह्रीं नैऋत्याय स्वाहा । ५. ॐ आं क्रों ह्रीं वरुणाय स्वाहा ।
 ६. ॐ आं क्रों ह्रीं पवनाय स्वाहा । ७. ॐ आं क्रों ह्रीं कुबेराय स्वाहा ।
 ८. ॐ आं क्रों ह्रीं ईशानाय स्वाहा । ९. ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय स्वाहा ।
 १०. ॐ आं क्रों ह्रीं सोमाय स्वाहा ।

पूर्णाहुति

शार्दूलविक्रीडित—इत्थं सारसपर्यायाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्थिताः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वर विघ्नमाघ्नत दृतं, सर्वेऽपि दिक्पालका । पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥

ॐ दशदिक्पालकाः पूर्णार्घ्यं गृणीत गृणीत स्वाहा ।

इष्टप्रार्थनापुरः सम्पूर्णाहुतिः

वसंततिलकाच्छंद— इत्थं जिनप्रतिकृतेः सलिलाधिवासं, कृत्वा जिनस्य वरगर्भसमागमाभम् ।

श्रीपुष्पमंडपमिमं परितो विशुद्ध-मिद्धामिमां यवनिकां परिकल्पयामि ॥ ३ ॥

पुष्पमंडपस्य पुरतो यवनिकास्थापनं । (पुष्पमंडप के सामने पर्दा लगा दे ।)

एवं तीर्थोदकादानविधिना आनीतजलेनास्याः जलाधिवासनं विधाय अचाल्यजिनप्रतिमानामुपरि तज्जलपूर्ण- सरंभ्रष्टं लंबयित्वा जलाधिवासनविधिं विदध्यात् ।

इति जलाधिवासनविधानं

(इस प्रकार तीर्थोदक आदानविधि से लाये हुये जल में प्रतिमा की अधिवासन विधि करके स्थिर प्रतिमा के ऊपरजल से भरे छिद्रसहित घड़े को बांधकर जलाधिवासन विधि करें ।)

इस प्रकार जलाधिवासन विधि पूर्ण हुई ।

अथ धामसंप्रोक्षणम् (मंदिर शुद्धि विधि)

श्रीविमानस्याष्टदिक्षु प्रत्येकं नवकलशान्सर्वौषधिमिश्रतीर्थजलपरिपूर्णान्विधिना संस्थाप्य समंत्रं श्रीजिनालयं त्रैविवासितकलशैरभिषिच्य पुण्याहमंत्रेण कुशोद्धृतजलेन चैत्यालयमन्तर्बाहिश्च परिषिच्य दर्भमालयाभिवेष्ट्याभ्यर्च्य तदग्रे स्थित्वाशिषं पठित्वा जिनधामसंप्रोक्षणमेवं विधातुमिमे वयमुत्सहामहे ।

शार्दूलविक्रीडित—स्वर्मुक्त्योरधिरोहिणीपदमितो, योऽगण्यपुण्यावहः । पापापायहरः सतां च शरणं, लोकोत्तमो मंगलम् ॥

पूज्यो नित्यमहादिसाधनतया, धर्मस्य मूलं हितम् । रम्यं जैनविमानमेनमधुना, तत्कल्पतः शोधये ॥ पुष्पांजलिः ।

ततः क्षेत्रपालबल्यादिभूम्यर्चनांतां भूमिशुद्धिं विदध्यात् ।

भूशोधनादिं विधिमाविधाय, पूर्वादिदिक्षु प्रतिदिग् नवैव ।

कुंभान्विशुद्धाम्बुभृतः प्रसिद्धान्, संस्थाप्य सर्वान्परिपूजयामः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ॥

श्रीखंडकपूर्वररादिगंध-द्रव्यप्रसूनोत्तमरिक्थरत्नम् ।

क्षिपामि मध्यस्थमहाघटेऽस्मिन्, गलस्थवस्त्रादिविराजमाने ॥ ३ ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः नमोऽहंते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिपुंडरीकमहापुंडरीकगंगासिंधुरोहिद्रोहिता-
स्याहरिश्चरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतास्वर्णकूलारुख्यकूलारक्तारक्तोदाक्षीरांभोनिधिजलं स्वर्णघटप्रक्षिप्तं सर्वगंध-
पुष्पाढ्यं आमोदकं पवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं मं हं सं तं पं असि आउसा नमः स्वाहा ।

अनेन मध्यमहाकुंभे रैरत्नादिनिक्षेपणम् ।।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः कुंभान्समभ्यर्चये ।।

ॐ हीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनम् ।

(जिनालय पूजा)

शार्दूलविक्रीडित—स्वर्मुक्त्योरधिरुहिणीपदमिते, योग्यपुण्यावहः, पापापायहरः सतश्च शरणं, लोकोत्तमो मंगलम् ।।

पूज्यो नित्यमहादिसाधनतया, धर्मस्य मूलं हितम् । त्रैलोक्यस्थजिनालयं तमखिलं, भक्त्या समाव्हानये ।।४।।

ॐ हीं सर्वजिनालया! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ हीं सर्वजिनालया! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ हीं सर्वजिनालया! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

उद्धृत्य कुंभान्परया विभूत्या, तदीयवार्भिर्बहिरंतरश्च ।

मंत्रातिपूतैरभिषेचयामि, श्रीजैनगेहं विभवैकगेहम् ।।५।।

ॐ हीं सर्वजिनालया जलाद्यभिषेकं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमो जिनालयेभ्यः स्वाहा ।

इत्यनेन मंत्रेण जिनालयं तैरधिवासितकलशैरभिषेचयेत् ।

(इस मंत्र से उन चार दिशा में स्थापित ६-६ कलशों से जिनालय का अभिषेक करें या मंदिर के सामने बड़ा दर्पण रखकर
शिखरसमेत प्रतिबिंबित मंदिर का दर्पण में अभिषेक करें ।)

(ॐ) भवनभवनजानां, ज्योतिषां कल्पजानाम् । मणिमयनिलयस्था, येऽहमिन्द्रालयस्था ।।

बहुविभवयुता ये, ये च मध्ये त्रिलोके । जिनपतिनिलयास्तांस्तांश्च सर्वान्महामि ।।६।।

गद्य— ॐ रजतमहारजतेन्द्रनीलमरकतमाणिक्यमयमहामानभासुरभित्तिस्तंभशालिशिखरमंडपमहामानस्तंभाद्यंगोपांग-
संगताकीर्णपंचवर्णप्रभाजालप्रभावाहितविचित्रांबरविलासांबरगणाम् । संततानादिसंसिद्धहटद्धाटकीयधूपघटपेटकास्यनिर्यद्धिश्चत्वतोवि-
सर्पिधूमलेखाजालबहलपरिमलप्रसरसुरभीकृतसकलदिङ्मुखानाम् ।। वंदारुसुरासुरवृंदारकजयजयारावसुरनर्तकीकरकणझंकारद्वि-
गुणीकृतानादिघटितघंटाजालझणझणध्वानबधिरिकृतनिखिलदिङ्मंडलानाम् ।। तमःसमूलसमुत्पाटनपटुतावलेपलिप्सागतगस्तिमालिमंडलायमान-
हटद्धाटकीयघटपेटकीयघटपेटकोपघटितचित्तचमत्काराणाम् । चकचकायमाननानाविधोपकरणनिचितनीलतरनिर्जितज्योतिर्गङ्गातगगनांगणानाम् ।।
समुत्तुंगसुवर्णभित्तिभागावलंबमानमणिमालामुषितमेरुगिरिपार्श्वशोभातिशयानाम् ।। विचित्रविनिर्माणपणवदनाभ्येकनर्तनसंगीतावलोकनादि-
मंडपाभिर्भंडितचैत्यमहीमहितानाम् ।। कुंजरासुरातिकुंजरादिदशविधध्वजारजिसभाजिताद्यद्वितीयशालांतरध्वजधराविराजितानाम् ।। चतुर्दिग्गताशोक-
सप्तच्छदचंपकाग्रचतुर्वर्णाचिततृतीयबहिःशालांतरावनीविनूतानाम् ।। चतुर्वीथिपर्यंतगतमहामानस्तंभाहितप्रतितीर्थजनप्रसन्नानाम् ।। सहजसकल-
परिष्काराणामकृत्रिमाणामहार्यविधालंकाराणामपि कृत्रिमाणानां । मंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् ।। भगवज्जिनचैत्यालयाणामष्टतयीमिष्टिं
करोमि स्वाहा ।।

ॐ हीं सर्वजिनचैत्यालया जलं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः । एवं गंधादि । (इसी प्रकार से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः चैत्यालयाणान्संयजे ।।

ॐ हीं सर्वजिनचैत्यालयाः अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

इत्यर्चनां विधाय तदग्रे स्थित्वा ।।

शिवमस्तु सर्वजगतां, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।

दोषाः प्रयांतु नाशं, तिष्ठतु जिनशासनं सुचिरम् ॥ ७ ॥ इममाशीर्वादमुद्घोषयेत् ॥

स जयतु जिनधर्मो, यावदाचंद्रतारं। यमनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः।

अहरहरभिवृद्धिं, यांतु चैत्यालयास्ते। तदधिकृतजनानां, क्षेममारोग्यमस्तु ॥

अथ शांतिशुद्धयभिधानं होमविधेः प्रयोगः (शांतिशुद्धि होमविधि)

(चैत्यालय की चारों दिशाओं में चौकोन १-१ कुंड बनवाकर होम मंडप बनावे पुनः पुण्याहवाचन आदि विधिकरें, उसे ही दिखाते हैं-)

गद्य—अथ चैत्यालयस्य चतुर्दिक्षु विधिविहितचतुरस्रचतुःकुंडविराजमानसमुचितालंकारोपेतहोममंडपे संकल्पपूर्वकपुण्याहवाचनां, भूमिशोधनविधानं, होमकुंडपश्चिमपार्श्वे सिद्धपूजनमासनस्थापनादिविक्रपालपूजापर्यंतं अग्निमुखविधिं, तदनंतरमज्याहुतिं, पुनरप्याज्येन पूर्णाहुतिं, पुण्याहवाचनानामग्नेरर्चनं, स्तवनादिविधिं, होमार्थमाहूतदेवताविसर्जनं, विधातुमिमे वयमुत्सहामहे ॥ (पुष्पांजलिः)

पूर्ववत् संकल्पपूर्वकं पुण्याहवाचनं कुर्यात्।

(पूर्ववत् संकल्प करके पुण्याहवाचन करें)

तदनंतरं पूर्ववद्भूमिशोधनविधानं विधाय होमकुंडपश्चिमपार्श्वे सिद्धपूजां कुर्यात्।

(इसके बाद भूमिशोधन विधि करके होमकुंड के पश्चिम तरफ सिद्ध पूजा करें।)

शार्दूलविक्रीडित—वेद्यां मूर्ध्नि निधाय पीठमुचितं, प्रक्षाल्य तीर्थाम्बुभिः। प्रत्यग्रेण महाधनेन परितः, प्रच्छाद्य दर्भैरपि ॥

अभ्यर्च्योपरि तस्य सिद्धनिकर-स्यार्चां सतामर्चिताम्। यस्यार्चामि समर्च्य सप्तविधसन्मंत्रैः समाराधये ॥१॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः। (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

पूर्ववद्पीठस्थापनाद्यर्चनांतानि। (पूर्ववत् पीठ स्थापना आदि करके सिद्ध पूजा करें।)

सिद्ध पूजा

आहूता इव सिद्धमुक्तिवनितां, मुक्तान्यसंगा ययु-स्तिष्ठंत्यष्टमभूमिसौधशिखरे, सानंतसौख्याः सदा ॥

साक्षात्कुर्वत एव सर्वमनिशं, सालोकलोकं समं-तानखेद्विशुद्धसिद्धनिकरा-नावाहनाद्यैर्भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा। (ऐसे ही चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः। सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्भूपकैः। धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, सिद्धान् समभ्यर्चये ॥२॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गद्य—एवं सिद्धभट्टारकान् अभ्यर्च्य शरच्चन्द्रमरीचिरोचिषोन्तश्चेतसि चिंतयन् सप्तविधपीठिकामंत्रैरभिमतत्रितकपूरहस्त्रिभद्रवालुलित-सुरभिभुषणपुष्पैरावाह्य पूर्णार्घ्यदानेन बहुमानयामहे।

(इस प्रकार सिद्धपरमेष्ठी की अर्चना करके शरद् ऋतु के चंद्रमा की किरणों के समान ऐसे सिद्धों का हृदय में चिंतन करते हुये कपूर मिश्र घिसे हुये चंदन से सहित ऐसे सुरभित श्वेत पुष्पों से सातविध पीठिकामंत्रों को पढ़कर अर्थात् पीठिकामंत्रों को बोलते हुये पुष्प चढ़ाकर आराधना करें पुनः पूर्णार्घ्य चढ़ावें। ये पीठिकामंत्र पृष्ठ ७० से ७१ तक हैं।)

पूर्णार्घ्य

मालिनीछंद—

विविधदुरितशुद्धान् सर्वतत्त्वार्थबुद्धान्। परमसुखसमृद्धान्युक्तिशास्त्राविरुद्धान्॥
बहुविधगुणवृद्धान्सर्वलोकप्रसिद्धान्। प्रमितसुनयसिद्धान् संस्तुवे सर्वसिद्धान्॥३॥

इति अर्घ्यं दद्यात् ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं.....

(पुनः पृष्ठ ७० से हवन करें। अंतर इसमें इतना ही है कि मध्य के गार्हपत्य अग्नि की स्थापना करना है और चौकोन कुंड की ही पूजा करना है, त्रिकोण या गोलकुंडों की नहीं।)

गद्य—तत आसनस्थापनादिचतुरस्रकुंडार्चनपर्यंतविधिं विधाय क्षिपामि कुंडे इत्यादिना परिधिपरस्तरणकल्पनं। आम्नायेत्यादिना गार्हपत्याग्नेः स्थापनं संधुक्षणं सन्निधीकरणैकसमिधाहुत्यर्चनानि परिसमाप्य गुणाब्धिभूतमानेत्यदिना दिक्पक्षपूजापर्यंतमावरणदेवतापूजा-विधिं विदध्यात्॥ नव्येन गव्येनेत्यादिनाष्टादशवारोच्चारितषड्भिर्मंत्रैरष्टोत्तरशतमाज्याहुतिं, लवंगलाजेत्स्नां त्रिवारोच्चारितपीठिकामंत्रैर्लाजाहुतिं, तैर्मंत्रैस्तर्पणं समिधाहुतिं, पीठिकादिसप्तविधमंत्रैरन्नाहुतिं, जिनेश्वराणामित्यादिना पूर्ववत्पुनराज्येन पूर्णाहुतिं पुण्याहवाचनं, तीर्थेश्वरस्यात्येत्यादिनाग्नेरर्चनं, सर्वाभ्युदयेत्यादिना तस्य स्तवनं, अर्हन्निर्भर्षीत्यादिना जिनेश्वरस्तवनं, जय जय जिन शश्वदित्यादिना इष्टप्रार्थना, स जयतु जिनधर्म इत्यादिना शुभानुध्यानं, प्रमादादित्यादिना क्षमापणं, प्रक्षीणेत्यादिना सिद्धपरमेष्ठिविसर्जनं, इष्टास्तेमीत्यादिना होमार्थमाहूतदेवतानां विसर्जनं, मोहध्वांतविदारणमित्यादिना गमनाप्रच्छन्नं विधिवद्विदध्यात्॥ इति शांतिशुद्धिभिधानहोमविधिः॥

(यहाँ तक मंदिर शुद्धि और चारों दिशा के हवन की विधि हुई। अब पुनः मंदिर शुद्धि के अनंतर गर्भकल्याण की शेष क्रियाएं करें।)

अथातो दर्भशयनविधानम्

(दर्भशयनविधि)

तावद्गर्भगृहे दर्भशय्योचितभूमौ पूर्ववद्भूमिशोधनविधिं दर्भन्यासं भूम्यर्चनं च विदध्यात् ।

(गर्भगृह में दर्भशय्या के लिये उचित भूमि में पूर्ववत् भूमिशोधन क्रिया, दर्भन्यास और भूमि अर्चन क्रियायें पृष्ठ ११४ से करें।)

(भद्रपीठ स्थापना)

उपजातिछंद—

हेमादिना चंदनदारुणा वा, पयोद्रुमैर्वा रचितं सुरम्यम्।

भद्रासनं भद्रकरार्हदम्बां, संकल्पतोऽस्मिन् विनिवेशयामि॥१॥

ॐ ह्रीं जिनमातृभावस्थापनार्थं भद्रपीठमिह स्थापयामि स्वाहा ।

(यहां सोना, चांदी, चंदन या क्षीरवृक्षों की लकड़ी से बनी हुई चौकी स्थापित करें।)

(मिट्टी, चंदन आदि लेपन)

वल्मीकशैलाब्धिनदीहृदनां, मृद्भिः ससर्वौषधिचंदनाभिः।

जिनाम्बिकागर्भविशुद्धिबुद्ध्या, भद्रासनाग्रं परिलेपयामि॥२॥

ॐ ह्रीं पंचमृत्तिकाचंदनसर्वौषधीभिः भद्रपीठाग्रं परिलेपयामि स्वाहा ।

(वामी, पर्वत, समुद्र, नदी और सरोवर इन पांच स्थानों की मिट्टी को पंचमृत्तिका कहते हैं। इन पंचमृत्तिका, चंदन और सर्वौषधि के लेप से भद्रपीठ के अग्रभाग का लेपन करें।)

(पुनः नदी, सरोवर, समुद्र, कुआ और बावड़ी इन पांच प्रकार के तीर्थजल से भद्रपीठ का प्रक्षालन करें।)

भद्रपीठ प्रक्षालन

नदीसरः सागरकूपवापी - स्वानीततीर्थोदकपंचकेन ।

दिक्कन्यकाकल्पितगर्भशुद्धिं, मत्वात्र पीठं परिक्षालयामि॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं तीर्थोदकपंचकेन भद्रपीठाग्रं प्रक्षालयामि स्वाहा ।

अष्टदल कमल रचना

(धुले हुये अक्षत से भद्रपीठ पर अष्टदल कमल बनावें।)

विश्वेश्वरागर्भगृहे विशुद्धे, यस्मिन् जिनेन्द्रोऽजनि दिव्यपद्मे ।

संकल्पतस्तस्य दलाष्टकाब्जं, पीठोपरिष्ठात्स्फुटमालिखामि ॥४॥

ॐ ह्रीं भद्रपीठाग्रे अष्टदलकमलं लिखामि स्वाहा । धवलाक्षतैरष्टदलकमलविरचनम् । (धवल अक्षतों से कमल बनावें।)

(पुनः निम्नलिखित श्लोक और मंत्र बोलकर जलाधिवासित प्रतिमा को लाकर इस अष्टदल कमल पर स्थापित करें।)

जलाधिवासितप्रतिमा स्थापना

शार्दूलविक्रीडित— संलग्ने वदनं प्रविश्य भगवान्, मातुः सितेभाकृति-गर्भे श्रयादिविशोधिते शुभतर-द्रव्यैस्तु नाकाहृतैः ।
दिव्यांभोरुहविष्टरे हि परमो, हंसोऽधिशेते स्म यः, तं मत्वात्र विशुद्धबुद्धकमले, बिंबोयमास्थाप्यते ॥५॥

वृषनाथप्रतिष्ठायां तु सितेभाकृतिरित्यत्र सितोक्षाकृतिरिति पठनीयम् ।

(अर्थात् ऋषभदेव की प्रतिष्ठा में इस श्लोक में 'सितेभाकृति' के स्थान में 'सितोक्षाकृति' पढ़ना चाहिये।)

ॐ ह्रीं गर्भाशयमलकलंकरहिताय कपिलगोक्षीरशुद्धरुधिराय दर्भशयनाय स्वाहा ।

गद्य—शंखकाहलादिनिःस्वने भव्यजनकोलाहलोपबृंहिते नभःस्थलमाक्रामति जलाधिवासितप्रतिमामानीय भद्रासनकमलमध्ये निवेशयेत् ।

(शंख, काहल आदि बाजे बजाते हुये और भव्यजनों के जय जयकार के होते हुये जलाधिवासित प्रतिमा को लक्ष्मर भद्रासन के कमल पर स्थापित करें।)

(आगे के श्लोक और मंत्र को बोलकर सुगन्धित और पीले चावल ऐसे पुष्पाक्षत् विधिनायक प्रतिमा पर और अन्य सभी प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं पर क्षेपण करें।)

स्रग्धराछन्द—भूसंस्कारे प्रजाते प्रथितसुरसरिद्वारिरत्नप्रसूनैः । सानंदे सर्वलोके निजमहिमभरात्कंपयन्निन्द्रपीठम् ।

मातुर्गर्भं प्रविश्याखिलहृगिव रविः प्राग्दिशं रंजयंस्तां, गर्भे संवर्धते स्म त्रिजगदधिपतिर्यः स एवैष बिम्बः ॥६॥

ॐ नमोऽर्हते केवलिते परमयोगिने शुक्लध्यानाग्नि-निर्दग्धकर्मन्धनाय सोमाय शांताय वरदाय अष्टादशदोषवर्जिताय स्वाहा ।

जात्यकुंकुमपिंजरित-पुष्पाक्षतं तस्या अन्यासां च प्रतिष्ठेयप्रतिमानामुपरि क्षिपेत् । (सभी प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

प्रतिमाओं पर दर्भक्षेपण

शार्दूलवि.—स्वोपादाननिमित्तकारणकला-पाविर्भवच्छक्तिके । पुण्ये तीर्थकराव्हये सृजति यः, स्वौदारिकांगं परम् ॥

शेते स्फाटिकदर्पणप्रतिमसद्-गर्भे त्रिबोधोज्ज्वल-स्तत्संकल्पनतः करोमि विधिना-स्मिन्दर्भशय्याविधिम् ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं नमो अरिहंताणं असि आउसा गर्भाशयमलकर्मकलंकरहिताय कपिलापंचगव्यशुद्धीकृताय दर्भशयनाय नमः स्वाहा ।

अनेन सांगसर्गक्रमस्थापनार्थं तस्याः प्रतिष्ठेयप्रतिमाया उपरि दर्भान् क्षिपेत् । अचाल्यसौधबिंबानां पीठे दर्भान् क्षिपेत् ।

(उपर्युक्त श्लोक और मंत्र बोलकर प्रतिमा के अंगोपांग-अवयवों की स्थापना के लिये विधिनायक प्रतिमा और सभी प्रतिमा पर दर्भक्षेपण करे। अचल प्रतिमा के आसन पर भी दर्भ स्थापित करें।)

दूध से अभिषेक

(गाय के दूध से सभी प्रतिमा का अभिषेक आगे के श्लोक व मंत्र पढ़कर करें।)

इन्द्रवज्राछन्द— स्यात्क्षीरगौरं रुधिरं यदंगे, निःस्वेदताद्युद्धगुणाभिरामे ।

तद्बुद्धितोहं कपिलाविशुद्धं, गोक्षीरसेकं विदधेऽत्र बिम्बे ॥८॥

ॐ ह्रीं कपिलागोक्षीररुधिराय स्वाहा । लघ्वभिषेकः । (लघु अभिषेक करें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गन्धिगन्धैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गन्धोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्भूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥

(आगे का श्लोक बोलकर प्रतिमा के ऊपर से आच्छादित वस्त्र निकालकर दूसरे श्वेत वस्त्र से प्रतिमा को पुनः आच्छादित करें ।)

इन्द्रवज्राच्छन्द—

मासान्नवास्तेस्म विभूर्जनन्या, गर्भालयेम्भोरुह विष्टरे यः ।

मत्वा तमेनं नवसूक्ष्मधौत-वस्त्रावृतं बिंबमिमं तनोमि ॥६॥

अनेन पूर्वप्रच्छादितवस्त्रमपनीय अपरवस्त्रेणाच्छादयेत् ।

(इससे पूर्व प्रच्छादित वस्त्र हटाकर दूसरे वस्त्र से ढक देंगे ।)

श्रीमत्सर्वजनीनेत्यादिना पूर्ववद्विष्णुपूजां विदध्यात् । दिक्पालस्थापनं । (पुनः पृष्ठ ४७ से दिक्पाल की पूजा करें ।)

अथ दर्भहोमः

(दर्भशय्या पर स्थापित जिनप्रतिमा के सामने एक हाथ चौकोन और एक अंगुल ऊंचा स्थंडिल बनाकर भूमिशोभा और भूमि- अर्चन आदि विधि करके अग्निस्थापना आदि विधि करें पुनः आगे के मंत्र से २७ बार दर्भ से होम करें ।)

उपजातिच्छन्द—

गर्भस्थितस्यापि सतोऽस्ति यस्य, मत्यादिबोधत्रितयं तदस्य ।

संकल्पतः शुद्धिकृते च दर्भैः, पुरोऽस्य बिम्बस्य करोमि होमम् ॥७॥

दर्भहोम का मंत्र

ॐ ऋक्षवृषभशांत्यर्हद् रोहिणि अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ।

गद्य—इति दर्भशयनस्थितजिनेन्द्रप्रतिकृतेः पुरतः तद्विशुद्ध्यर्थं चतुरस्रहस्तविस्तारांगुलोत्सेधवालुका-स्थंडिले संशोधितेऽभ्यर्चिते सप्तविंशतिकृत्वः कुशैरग्निं जुहुयात् ।

उपजातिच्छन्द—

नाहं सपक्षोऽस्मि भवद्विपक्ष-दृष्ट्यावृतेर्वष्टि तथा जनो माम् ।

इत्यर्हतोऽग्रे वसतीव वक्तं, प्रसारये पांडुरकांडवस्त्रम् ॥८॥

ॐ ह्रीं कांडपटस्थापनां करोमि स्वाहा ।

(प्रतिमा के सामने पर्दा लगावें ।)

इन्द्रवज्राच्छन्द—

त्रैलोक्यदीपस्य जिनेश्वरस्य, बिंबं निवेश्योचितदर्भतल्पे ।

तस्याग्रतोऽहं प्रतिबोधयामि, द्वौ जाज्वलज्ज्वालयुतौ प्रदीपौ ॥९॥

दीपद्वयस्थापनम् । (सामने दो दीपक स्थापित करें ।)

अथ जिनमातृपूजनम्

इन्द्रवज्राच्छन्द—

भर्त्रा सहैकासनसन्निविष्टां, संस्नाप्य यां तीर्थजलैः सुरेन्द्राः ।

दिव्यैर्विभूषांबरमाल्यमुख्यै-रानचुरेनां वयमर्चयामः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जगदम्बिके ! स्नानवस्त्राभरणाद्यर्चनं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

(यह मंत्र बोलकर जिनमाता के सामने वस्त्र-अलंकार आदि स्थापित करें । जिन्हें माता बनाया है, उन्हें भी वस्त्र आदि भेंट करें ।)

अथ जिनमातृस्तवनम्

मातस्त्वमेव धन्यासि सद्योजातं दधासि यत् । सद्यः स्वतीर्थकृत्पाक-संक्षोभितजगत्त्रयम् ॥ १ ॥
 स्वपुण्योद्भूतरत्नौघ-वृष्टिर्पितभूतलम् । हिरण्यगर्भं गर्भं त्वां, दधानां को न वंदते ॥ २ ॥
 स्वगर्भकमलासीन-जिनहंसोद्धजीवना । सरसीव विभासित्वं-अपूर्वा पंकहारिणी ॥ ३ ॥
 अग्निगर्भा शमीवत्त्व-मर्कगर्भेव पूर्वदिक् । रत्नगर्भा महीवाम्बा, जिनगर्भा विभासि नः ॥ ४ ॥
 जगद्गर्भो जिनाधीशो भवद्गर्भे वसत्यहो । अहो त्वत्पुत्रतामेति देवो लोकपितामहः ॥ ५ ॥
 समस्तसुखसंपादि-जिनपुण्यफलोद्भवा । अपूर्वा कल्पलतिका स्वामिनी त्वमसि स्फुटम् ॥ ६ ॥
 जगन्मात्रे नमस्तुभ्यं जगद्दृष्ट्यै नमोस्तु ते । जगद्गत्यै नमस्तुभ्यं जगल्लक्ष्म्यै नमोस्तु ते ॥ ७ ॥
 विश्वेश्वरे जगन्मातर्महादेवि महासति । पूज्ये सुमंगले तुभ्यं भूयो भूयो नमो नमः ॥ ८ ॥
 इत्थं स्तुत्वा यामशेषाः सुरेन्द्रा, वंदन्तेऽस्मानंदतः श्रयाख्यदेव्यः ।

स्थानाख्याद्यैः साधु निर्दिश्यमानास्तां सर्वेऽमी श्रीजिनांवां नमामः ॥ ९ ॥

सर्वोऽपि संघो जिनमातृसंघेन तां पीठं स्तुत्वा वंदते ।

(सभी संघ मिलकर जिनमाता के पीठ—भद्रपीठ के सामने स्तुति करके वंदना करें।)

स्मरधराछंद—स्तुत्वा नत्वाप्यतृप्तः स्वयममरपतिस्तांडवं संवितेने । लास्यं तद्दोःसहस्रोपरिचटितसुरस्त्रीजनश्चाबबन्ध ।
 गीतं वाद्यं युयोज प्रणुतसुरगणो यत्पुरोर्हज्जनन्याः । संकल्पातस्य तौर्यत्रिकमिदमधिद्बिंबमालक्ष्य योक्ष्ये ॥ ११ ॥

इन्द्रपरिकल्पितानंदनाटकसंकल्पेन तदग्रे तौर्यत्रिकं प्रयुंजीत ।

(इन्द्र के द्वारा किये गये आनंदनाटक की कल्पना करके भद्रपीठ के आगे इन्द्र-इंद्राणी आदि गीत, नृत्य करके बाजे बजावें।)

पिता से आज्ञा लेना

उपजातिछंद—

लोकत्रयस्यापि पितुः पिता त्वं, धन्योऽसि मान्योऽसि महेश्वरेति ।

स्तुत्वा समापृच्छ्य च सप्रमोदाः, प्रपेदिरे स्वस्वपदं सुरेन्द्राः ॥ ११ ॥

जिनजनकस्य सुरैस्तवनपूर्वकं गमनापृच्छनम् ।

(जिनजनक की स्तुति करके इन्द्रगण का उनसे आज्ञा लेकर स्व-स्वस्थान जाना।)

गर्भकल्याणक की क्रियाहेतु भक्तिपाठ

आवेद्यासनतः क्रिया प्रणमनं, पश्चाद्विधेया स्थिति-स्त्र्यावर्तैकशिरोनतिः प्रथमतः, साम्यं तदन्तेपि च ॥

कार्योत्सर्गविधिर्नतिः स्तवनमायोज्यं च तत्साम्यवत् । कार्याभक्तिरभीप्सिताप्यवसिता-वालोचनप्यासनात् ॥ ११ ॥

अनुष्टुप्—इत्थं वै सिद्धचारित्रशांतिभक्तीः ससंघकाः । गर्भावतारकल्याणक्रियां कुर्वन्तु याजकाः ॥ १२ ॥

अथ कृत्यप्रतिज्ञापना - भगवन् ! नमोऽस्तु ते एषोऽहं जिनेन्द्रगर्भावतरणकल्याणकक्रियां कुर्याम् ।

अथ जिनेन्द्रगर्भावतरणकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं सिद्धभक्तिकाङ्क्षेत्सर्वं करोम्यहं ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्जायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं, सिद्धमंगलं, साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्धलोगुत्तमा, साहुलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

जाव अरिहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

(६ बार णमोकार मंत्र)

(तीन आवर्त और एक शिरोनति करके थोस्सामि स्तव पढ़ें)

थोस्सामि स्तव—थोस्सामि हं जिणवरे, तित्थयरे केवली अणंतजिणे । णरपवरलोएमहिए, विहुयरयमले महप्पण्णे ॥१॥
 लोयस्सुज्जोययरे, धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे । अरहंते कित्तिस्से, चउवीसं चैव केवलिणो ॥२॥

(तीन आवर्त, एक शिरोनति करके सिद्धभक्ति पढ़ें ।)

सिद्धभक्ति

सम्मत्तणाणदंसण, वीरियसुहुमं तहेव अवगहणं । अगुरुलघुमव्वावाहं, अट्ठगुणा होति सिद्धाणं ॥ १ ॥

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य । णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ २ ॥

इच्छामि भंते ! सिद्धभक्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्तजुत्ताणं, अट्ठविह-
 कम्मविप्पमुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं, उड्ढलोयमत्थयम्मि पयिट्ठियाणं, तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं,
 चरित्तसिद्धाणं, अतीताणागदवट्ठमाणकालत्तयसिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं, णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि
 दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेंद्रगर्भावतरणकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं
 चारित्रभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(पूर्ववत् णमोकार मंत्र, चत्तारिमंगल आदि पढ़कर ६ बार जाप्य करके “थोस्सामिस्तव” पढ़कर लघु चारित्रभक्ति पढ़ें ।)

चारित्र भक्ति

तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनो-भाषानिमित्तोदयाः । पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः, पंचव्रतानीत्यपि ॥

चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं, पूर्वं न दृष्टं परै-राचारं परमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयं ॥

इच्छामि भंते ! चारित्तभक्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचेउं । सम्मण्णाणुजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठिस्स सव्वपहाणस्स
 णिव्वाणमग्गस्स कम्मणिज्जरफलस्स खमाहारस्स पंचमहव्वयसंपुण्णस्स तिगुत्तिगुत्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्स
 णाणज्झाणसाहणस्स समयाइव पवेसयस्स सम्मचारित्तस्स, णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ,
 कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेंद्रगर्भावतरणकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं
 शांतिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(पूर्ववत् ‘णमो अरिहंताणं से कायोत्सर्गविधिपूर्वक ६ जाप्य करके थोस्सामिस्तव पढ़कर लघु शांतिभक्ति पढ़ें ।)

शांति भक्ति

श्रीमत्पंचमसार्वभौमपदवीं, प्रद्युम्नरूपश्रियम् । प्राप्तः षोडश तीर्थकृत्वमखिलं, त्रैलोक्यपूजास्पदम् ॥ १ ॥

यस्तापत्रयशांतिः स्वयमित्, शांतिं प्रशान्तात्मनाम् । शांतिं यच्छति तं नमामि परमं शांतिं जिनं शांतये ॥ २ ॥

इच्छामि भंते ! संतिभक्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं,
 चउतीसातिसयविशेषसंजुत्ताणं, बत्तीसदेवेदमणिमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहरिसिमुणिजइअणगारोबूढाणं,
 थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि,
 दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

अथ जिनेंद्रगर्भावतरणकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं
 सिद्धचारित्रशांतिभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकदोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(पूर्ववत् सर्वविधि करके लघु समाधिभक्ति पढ़ें ।)

समाधिभक्ति

स्वात्माभिमुखसंवित्ति-लक्षणं श्रुतचक्षुषा । पश्यन्पश्यामि देव त्वां, केवलज्ञानचक्षुषा ॥१॥

इच्छामि भक्ते ! समाहिभक्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं रयणत्तयसखवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभक्तीये णिच्चक्कां अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

विसर्जन विधि

सर्वे देवाः समाहूताः, शिष्टार्हत्प्रभुपूजने ॥ इष्टमस्माकमापाद्य, तुष्टा यांतु यथायथम् ॥ १॥

ॐ जिनपूजार्थं समाहूताः देवाः सर्वे विहितमहामहाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत इति ।

विसर्जन मंत्रोच्चारणेन यागमंडले पुष्पांजलिं विकीर्य देवान् विसर्जयेत् ।

(मंत्रोच्चारण करके यागमंडल पर पुष्पांजलि क्षेपण करते हुये देवों का विसर्जन करें।)

परमब्रह्म का ध्यान

वसंततिलकाछंद— प्रक्षीणदोषमलमिद्धनिजप्रकाशं, लोकैकभूषणमहो निजदिव्यरत्नम् ॥

मुक्तिश्रियः सपदि संवदनं विधातुं, पूज्यं प्रपूज्य हृदये निदधे भवन्तम् । R ॥

अनेन परब्रह्माध्यात्ममध्यासयेत् ॥ (परमब्रह्मस्वरूप भगवान का ध्यान करें)

शांतिधारा

शार्दूलविक्रीडित—यो लोकैकशिखामणिर्यमनिशं, ध्यायंति योगीश्वराः । येनादर्शि समस्ततत्त्वममरा, यस्मै नमस्कुरुते ॥

यस्मान्नास्त्यपरो हितस्त्रिजगते, यस्यैव युक्तात्ता ॥ यस्मिन्केवलबोधभानुरुदितः, सोऽय्याजिनोऽयं जगत्त्र ॥

ॐ श्रीं ह्रीं हूं श्रीं नमः परमशांताय सर्वलोकशांतिर्भवतु स्वाहा ॥ शांतिधारा ।

(आगे का श्लोक पढ़कर तीन प्रदक्षिणा देवें)

अर्चामग्रे प्रनृत्यत्कलशयुतवधूमग्रभृंगारनिर्यद् ॥ वार्धारापूतधार्त्री बहुतरविभवामादरेणानुयांतः ॥

सर्वाशाः पूरयंतो बलिमनुमुखराः संधानैश्च लाजैः ॥ सत्पुष्पैरक्षतौघैर्जिननिलयमिमे त्रिःपरीयाम शान्त्यै ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः ।

इत्थं सौधर्मशक्रप्रभृतिपुरवरा यां जिनेंद्रस्य साक्षात् ॥ चक्रुः स्वर्गावतारोत्सवविषयमहाश्चर्यकल्याणपूजाम् ॥

तामारोप्यात्र बिंबे विधिवदिह कृता शक्तितो भूरिभक्त्या ॥ भक्त्यै मुक्त्यै च यष्ट्रप्रभृतिनुभृतामस्तु ॥

प्रमादाऽज्ञानदर्पाद्यैर्विहितं विहितं न यत् ॥ जिनेंद्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलं च तत् ॥ [क्षमापणम्] ॥

मोहध्वांतविदारणं विशदविश्वोद्भासिदीप्तिश्रियम् ॥ सन्मार्गप्रतिभासकं विबुधसंदोहामृतापादकम् ॥

श्रीपादं जिनचंद्रशांतिशरणं सद्भक्तिमानेमिमे ॥ भूयस्तापहरस्य देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥ ८ ॥

इत्थं विधत्ते जिनपुंगवस्य, गर्भावतारोत्सवसंविधिं यः ॥ गर्भावतारोत्सवमाशु यास्यत्यमुत्र भूत्वा स हि क्षेमिः ॥ ९ ॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलकनाम्नि

गर्भावतारकल्याण-विधिर्नामाष्टमः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप

ग्रंथ में गर्भावतार कल्याणक विधि को कहने वाला यह आठवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।



अथ नवमः परिच्छेदः

अथ जन्माभिषेककल्याणम्

अंकुरार्पणतः पश्चात्सप्तमे दिवसे दिवा । जन्माभिषेककल्याणपूजां कुर्याद्यथाक्रमम् ॥ १ ॥
 मूलवेद्यां समाराध्य पूर्ववद्यागमंडलम् । वेदीं गत्वोत्तरां तत्र वक्ष्यमाणविधानतः ॥ २ ॥
 पुष्पांजल्यादिकलशस्थापनांतविधिं चरेत् । ततः स्नपनवेद्यां तु पंचमंडलवर्तनम् ॥ ३ ॥
 तत्र स्नपनपीठस्य स्थापनं तद्विधानतः । दर्भशय्यास्थिते बिंबे ततः शक्रैर्विधीयते ॥ ४ ॥
 जिनजन्मोत्सवारोपो वस्त्रापनयनं ततः । जिनजन्मस्थापनं तन्मात्रादिस्तुतिपूर्वकम् ॥ ५ ॥
 निःस्वेदत्वाद्यतिशयारोपणं विजयादिभिः । उपासना जिनांबाया जातकर्म च तत्कृतम् ॥ ६ ॥
 प्रतिज्ञाकारसंशुद्धेरिंद्रादित्रिदशागमः । शय्याहृतोऽर्पणं पत्युः सुमेरौ प्रापणं सुरैः ॥ ७ ॥
 पूर्वस्थापितपीठाग्रे प्रतिमाविनिवेशनम् । अभिषेकोपकरणसज्जीकरणमन्वतः ॥ ८ ॥
 प्रतिमांगपरामर्शः सकलीकरणं ततः । प्रधानपूजया पंचमंडलस्य समर्चनम् ॥ ९ ॥
 जिनमंत्रेण बिंबस्य सप्तवाराभिमंत्रणम् । कुंभे पुष्पादिनिक्षेपो बिंबाग्रे कुसुमांजलिः ॥ १० ॥
 सुलग्ने प्रतिमानेत्रोल्लेखनं विश्वकर्मणः । पटापसरणं सर्पिर्वत्सवद्गोप्रदर्शनम् ॥ ११ ॥
 यष्टा सम्माननं तस्य तेनेद्रानुमतेन तु । पीठाग्रन्यस्तसद्भूलिकुंभेनार्चाभिषेचनम् ॥ १२ ॥
 जीवत्पितृश्वशुरपत्यात्मजस्त्रीकरेभुभिः । संप्रोक्षणं चाष्टसम्मार्जनकुंभाभिषेचनम् ॥ १३ ॥
 नीराजनं चाष्टभेदं भवेत् पुष्पजपस्ततः । आव्हाणाद्यवशिष्टैस्तु कलशैरभिषेचनम् ॥ १४ ॥
 चतुर्विधावतरणं चतुःकुंभाभिषेचनम् । पुष्पवृष्टिर्मध्यकुंभेनाभिषेकोऽष्टार्चनम् ॥ १५ ॥
 वज्रे कर्णवेधोथ स्त्रीभिश्चंदनचर्चनम् । भूषासन्नामकरणमानंदस्तवनं क्रिया ॥ १६ ॥
 आनंदनर्तनं पश्चात् नगर्यानयनं विभोः । राजांगणे स्थापनं स्यादंबायै सन्निधानम् ॥ १७ ॥
 तस्याः स्तुतिः प्राभूतं च नृत्यं रक्षादिसंविधिः । गुरुपूजोपलंभोऽथ तत्तत्तीर्थकरोचितम् ॥ १८ ॥
 राज्यभोगानुभवनसमं देवैर्द्रसेवया । शांत्यर्थबलिरिष्टार्थप्रार्थना चेत्ययं क्रमः ॥ १९ ॥
 जन्माभिषेककल्याणविधानस्यावगम्यताम् । तत्तत्कर्मविशेषस्तु प्रयोगे प्रतिपाद्यते ॥ २० ॥

श्रीमत्पंचमवार्धिनर्मलपयः-पूरैः सुधासंनिभैः ॥ यज्जन्माभिषवं सुराद्रिशिखरे, सर्वे सुराश्चक्रिरे ॥

त्रैलोक्यैकमहापतेर्जिनपतेस्तस्याभिषेकोत्सवं । कर्तुं भव्यमलोपलेपविलयं, प्राज्ञैः स्तुतं प्रस्तुवे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ॥ प्रस्तावना पुष्पांजलिः ।

अंकुरार्पण विधि होने के बाद उससे सातवें दिन जन्माभिषेक कल्याणक पूजाविधि क्रम के अनुसार संपन्न करें। मूलवेदी पर पूर्व में कहे अनुसार यागमंडल विधि करें। अनंतर उत्तरवेदी के पास आगे कहे अनुसार पुष्पांजलि क्षेपण से लेकर कलश स्थापनापर्यंत सर्वविधि करें पुनः स्नपनवेदी पर—अभिषेक वेदी पर पंचमंडल बनावें ॥ १-२-३ ॥

वहां अभिषेक पात्र शास्त्रोक्त विधि से स्थापित करें। इस विधि के बाद दर्भशय्या पर स्थित जिनबिंब पर प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा जिनजन्मोत्सव आरोपण किया जाता है। इस विधि के बाद जिनप्रतिमा पर लपेटे हुये वस्त्र को हटा देवें और जिनेन्द्रदेव के जन्म की स्थापना करके स्तुति करें। पसीना नहीं आना, शरीर सुगंधित रहना आदि जन्म के दश अतिशयों की स्थापना करें। 'विजया' आदि देवियों द्वारा जिनमाता की आराधना व उनके द्वारा की जाने वाली जातकर्म विधि करावें। आकारशुद्धि करें, इन्द्रादि देवों का आगमन, इंद्राणी द्वारा जिनबालक को लेना, इंद्र को सौपना और उन जिनबालक को मेरु पर्वत पर ले जाना ये सब विधि करावें ॥ ४ से ७ ॥

पूर्व में स्थापित सिंहासन पर जिनप्रतिमा को विराजमान करके अभिषेक के उपकरण आदि एकत्रित करने की विधि करें। प्रतिमा के सर्वांग का स्पर्श करके सकलीकरण करें अनंतर पंचमंडल के देव-देवियों की पूजा करें। जिनमंत्रों से जिनप्रतिमा को सात बार अभिमंत्रित करें पुनः कुंभ में फूल डालें, प्रतिमा के सामने कुसुमांजलि अर्पण करें। उत्तम लग्न में शिल्पकार द्वारा नेत्रोद्घाटन करावें। अनंतर सामने

डले हुये पर्दे को हटा कर घी के पात्र व बछड़े सहित गाय को दिखावें। प्रतिष्ठाकार शिल्पी का सन्मान करें पुनः प्रतिष्ठाचार्य ऐसे शिल्पी द्वारा जिनप्रतिमा पर धूली कलशाभिषेक करावें ॥ ८ से १२ ॥

अनंतर जिनके माता-पिता, सास-ससुर पति और पुत्र जीवित हैं ऐसी सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा प्रेक्षणविधि करावें। पुनः आठ संमार्जन कुंभों से अभिषेक करावें, आठ प्रकार की नीराजनविधि करावें, पुष्पजप करावें, पुनः आह्वान आदि करके कलशों से अभिषेक करावें। अष्ट द्रव्यों से पूजन करके वज्र से कर्णवेधन क्रिया संपन्न करें।

सौभाग्यवती स्त्रियां प्रतिमा को चंदन लगावें, आभूषण पहनावें, वस्त्राभरण से अलंकृत करें। इन्द्र भगवान का नामकरण करें। स्तुति व आनन्दनृत्य करके जिनप्रतिमा को वापस लाकर राजांगण में स्थापित करें, पुनः माता को देवें। माता की स्तुति करके उन्हें भेंट अर्पित करें। नृत्यादि करके जिनबालक की रक्षा के लिये देव-देवियों को वहां रखकर गुरुपूजा विधि करें। अनंतर उन-उन तीर्थकरों के लिये उचित ऐसी राज्यभोगानुभवन विधि करें। देवेन्द्र द्वारा सेवा विधि करावें।

इसके बाद शांतिबलि, इष्ट प्रार्थना करें। इस प्रकार जन्माभिषेक कल्याणक विधि करावें।

अब हम जन्माभिषेक कल्याणक की प्रयोग विधि कहेंगे ॥ १३ से २० ॥

अथ जन्माभिषेककल्याणविधेः प्रयोगमभिधास्यामः

(जन्माभिषेक कल्याणक प्रयोगविधि)

गद्य—तत्रादौ तावन्मूलवेद्यां प्रतिष्ठायंत्राराधनां पूर्ववन्निष्ठाय उत्तरवेद्यां पुष्पांजल्यादिपीठस्थापनांतं विधिं विदध्यात् ॥ तद्यथा—
(प्रथम ही मूलवेदी में प्रतिष्ठा यंत्र की आराधना पूर्ववत् करके पुनः उत्तर वेदी में पुष्पांजलि आदि से लेकर पीठ स्थापनापर्यंत विधि करें।)

ॐ परमब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद इत्यादि सोदकानि पुष्पाणि क्षिपेत् ।

पूर्ववत्क्षेत्रपालवास्तुदेवबलिं वायुमेघाग्निदेवैः भूमिशोधनं नागतर्पणं दर्भन्यासं भूम्यर्चनं मंडपप्रतिष्ठादिका प्रतिष्ठां च क्रमेण विदध्यात् ।
घटाटंकारवीणा....लतांतांजलिं प्रोत्क्षिपामि । (पृष्ठ ६४ से क्षेत्रपाल, वास्तुदेव पूजा, वायुकुमार आदि की पूजा द्वारा भूमिशोधन, नागतर्पण, दर्भन्यास, भूमि अर्चन, मंडपप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा विधि क्रम से संपन्न करें।)

अथ कलशस्थापनविधानम्

गद्य—ॐ विशोधितभूभागपरिकल्पितप्रतिष्ठितमंडपमंडनीयांतः प्रतिष्ठामहितहावेदिकायां। पूर्वाग्निः षोडशभिरुत्तराग्नैस्तावदिभः सूत्रैः पंचविंशत्युत्तरशतद्वयपदानि कलशप्रमाणेन परिकल्प्य तत्र बहुमध्यभागे महाकुंभं विन्यस्य सर्वतस्तन्मध्यवीथीं परित्यज्य । मध्यकुंभाद्विधेर्वीथीं परित्यज्य, प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थावरणेषु क्रमेण चतुरो, विंशतिं, षट्त्रिंशतं, द्विपंचाशतं, घटान् यथस्तिथिं ब्रीह्यासने विरचितयंत्रे विन्यस्य तेषु वक्ष्यमाणमंत्रोदिततत्तद्द्रव्याणि यथोचितमापूर्य कोणेषु द्रोणांभः संभृतकुंभान्समवस्थाय तेषुरैरत्नसर्वगंधकुशकूर्चमंगलद्रव्यसुरभिपुष्पाणि विनिक्षिप्यछेदभेदाद्यष्टदोषवर्जितानमलसितसूत्रसमावृतानं भोजबीजपूरपिहिताननान् । चंदनपंकपरिलग्नवलक्षाक्षतपुंजोपलक्षितान्, प्रसूनमालांबरफलपल्लवदूर्वादपणादिपरिष्कृतानिमान्सर्वान्कुंभान्संपूजयामहे । पुष्पांजलिः ॥

(कलश स्थापित करने का स्थान शुद्ध हो। प्रतिष्ठा मंडप को शोभित करने वाली वेदी पर कलशाभिषेक यंत्र बनावें (उसमें आड़ी सोलह और खड़ी सोलह, ऐसी रेखा समांतर से कुंभ रखते जावें, ऐसी व्यवस्थित बनावें। जिसमें २२५ कुंभ आ सकते हों, ऐसा कोष्ठक तैयार करें। अर्थात् कुंभ तो ११३ हैं उनके लिये कोष्ठक दूने होना चाहिये।

ठीक मध्य में महाकुंभ को स्थापित करें। सभी के मध्यभाग में जो मार्ग है, उसे छोड़ देवें। पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे आवरण में क्रम से चार, बीस, छत्तीस और बावन कुंभों की विधिवत् रचना करें। ये कलश स्थापना के चित्र पृष्ठ २०६ से २१३ तक हैं।

सर्वप्रथम जमीन में तंदुल फैलाकर कलश स्थापन का यंत्र बनाकर उन पर कुंभ रखें। आगे कथित रीति से उन कलशों में वस्तुएं डालें, चारों कोनों के कुंभों में पानी भरकर दर्भ, रत्न आदि सुगंधित द्रव्य डालें। ये कुंभ फूटे न हों, चिटके न हों, इत्यादि आठ दोषों से रहित हों। सफेद सूत से चारों तरफ वेष्टित हों, मुख पर कमल अथवा विजौरा आदि फल रखे हुये हों, चमैं गंध-अक्षत लगे हों। ये कुंभ फूलों की माला, वस्त्र, पान, दूब आदि से सुशोभित हों। ऐसी रचना करके पूजन के लिये प्रथम ही पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

कलशस्थापना

कल्याणावसरे विभोरर्हतः शक्रेण ये स्थापिताः । तेऽमी इत्यभिकल्पनां स्फुटयतः श्रीशातकुंभादिभिः ॥

निर्वृत्तानथवा मृदाभिघटितान्कालादिदोषोज्झितां-स्तत्तद्द्रव्यसुपूरितानिह घटान्यत्रोपरि स्थापयेत् ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा । (कलशों पर पुष्पांजलि छोड़ें)।

श्रीखंडकर्पूरवरादिगंध-द्रव्यप्रसूनोत्तमरिक्थरत्नम् । क्षिपामि मध्यस्थमहाघटेऽस्मिन्, गलस्थवस्त्रादिविराजमाने ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः नमोर्हते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकगंगासिंधु-रोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिषु शुद्धजलं स्वर्णघट-प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्नगंधपुष्पाक्षताद्यर्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं ह्रीं असि आउसा नमः ।

अनेन मध्यमहाकुंभे रैरत्नादिनिक्षेपणम् ।

(इस मंत्र से मध्य के महाकुंभ में धन-रुपये, रत्नादि छोड़ें)।

सर्वेषु कुंभेषु च सर्वगंधं, क्षिपामि वारा परिपूरितेषु ।

शेषेषु योग्यार्थसुपूरितेषु, न्यसामि सर्वेषु कुशस्य कूर्चम् ॥

(जल कुंभों में सर्वौषधि डालें और सभी कुंभों में कुश डालें)।

जलकुंभेषु सर्वौषधिस्थापनं सर्वकुंभेषु कूर्चस्थापनं च ॥ (दर्भ डालें)

यन्मंगलद्रव्यमिति प्रतीतं, बिसं च बोधिद्रुमपल्लवं च ।

क्षिपाम्यपामार्गदलं च पूतं, तत्कोणकुंभेषु विभूषितेषु ॥

कोणकुंभेषु मंगलद्रव्यनिक्षेपणम् ।

(कलशों में आम्र, अशोक आदि के पत्ते लगावें और कोण कुंभों में मंगल द्रव्य डालें)।

अर्घ्य— स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, कुंभान्समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा । (अर्घ्य चढ़ावें)

इति कलशस्थापनविधिः ॥

अथ चूर्णपंचकस्थापनं

(यहां पीठयंत्राराधना यंत्र या मंडल बनावे । पृष्ठ २८ से मंत्रों से संक्षिप्त पूजन करें । यह यंत्र 'पीठयंत्र' नाम से परिशिष्ट में है)।

शार्दूलविक्रीडित— वेद्यां मंडलमालिखार्चितसितैश्चूर्णैः सिताकल्पभू-नागाधीशधनेशपीतवसना-लंकारपीतैश्च तैः ॥

नीलैर्नीलभनीलवेषसुरभो, रक्ताभ रक्तैस्ततो-रक्ताकल्पककृष्णवेषविलसन्कृष्णैश्च कृष्णप्रभ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतपीतहरितारुणकृष्णमणिचूर्णं स्थापयामि स्वाहा । चूर्णपंचकस्थापनं । (पांच प्रकार की रंगोली स्थापित करें)।

गद्य— तदेवं चूर्णानि संस्थाप्य वेदिकामध्ये पीतचूर्णेन कर्णिकां तद्बहिर्लोहितचूर्णैरष्टदलानि, तद्बहिः श्वेतपीतहरितारुणकृष्णचूर्णैः

क्रमेण चतुः कोणयुतपंचमंडलानि विरच्य सुवर्णशलाकया अपामार्गलेखन्या वा दर्भेण वा कर्णिकायां ।

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा इत्यर्हन्मंत्रम् । पूर्वादिदिग्दलेषु ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यः स्वाहा । इति सिद्धादिमंत्रान् । आग्नेयादिविदिग्दलेषु ॐ ह्रीं जिनधर्मभ्यः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा । इति धर्मादिमंत्रान् ।

पंचमंडलेषु क्रमेण ॐ ह्रीं पूर्वकस्वाहांतचतुर्थ्यंतनामरूपान् तिथिग्रहयक्षयक्षीदिक्पालमंत्रान् । पूर्वादिद्वारे ॐ ह्रीं राक्षसदौवारिकाय स्वाहा इति मंत्रद्वयम् । दक्षिणद्वारे ॐ ह्रीं असुरदौवारिकाय स्वाहा इति मंत्रद्वयम् । उत्तरद्वारे ॐ ह्रीं गरुडदौवारिकाय स्वाहा । इति मंत्रद्वयम् । पश्चिमद्वारे नागदौवारिकाय स्वाहा । प्रादक्षिण्येन लिखेत् ।

इति अष्टाशीतिपरिवारदेवताधिष्ठितपंचमंडलवर्तनम् ।

(इस प्रकार अठासी परिवार देवताओं से सहित नवदेवताओं की पूजारूप पंचमंडल वर्तन पूर्ण हुआ ।)

अथ पंचमंडलयंत्रोपरि पीठस्थापनविधानम्

(इस पंचमंडल यंत्र के ऊपर पीठ—अभिषेक हेतु पात्र स्थापित करना है ।)

पार्श्वप्रोतमणिप्रभाभिरभितः क्लृप्तेन्द्रचापोत्करम् । पार्श्वद्वंद्वनिवेशितोचितलसद्देवेंद्रपीठद्वयम् ।

अर्धेन्द्रूपमपांडुकोपलतलानादिस्थपीठोपमम् । पीठं भासुरभर्मनिर्मितमिदं यंत्रोपरि स्थापये ॥१॥

ॐ ह्रीं हूं क्षं ठ ठ स्वाहा । पीठस्थापनम् ॥

हाटकीय घटपूर्णपयोभिः पाटलातृटि-पटीरविमिश्रैः ।

क्षालयामि निजमानसपंक-क्षालनाय जिनमज्जनपीठम् ॥२॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा । पीठप्रक्षालनं ।

(अभिषेक पात्र धोवें)

स्याद्वादविद्वज्जनशेमुषीव, नितांतमेतन्निशिताग्रभागान् ।

हिरण्मयेऽस्मिन्भिषेकपीठे, हरिन्मणिच्छायकुशान्यसामि ॥३॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय स्वाहा । पीठदर्भः । (अभिषेक पात्र में दर्भ रखें ।)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्द्रूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, पीठं समभ्यर्चये ॥४॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । पीठार्चनम् । (अर्घ्य चढ़ावें)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघ-श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।

श्रीर्वर्तते चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयंतीं श्रियमालिखामि ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं हूं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा । श्रीलेखनं । (श्रीः लिखें ।)

॥ इति पीठस्थापनविधानम् ॥

अथ दर्भशय्यास्थितप्रतिमाया वस्त्रापनयनविधानम् ॥

(अब दर्भशय्या पर स्थित प्रतिमा के वस्त्र दूर करने की विधि कहते हैं)

(आगे के चार श्लोकों को पढ़ते हुये चारों तरफ पुष्पांजलि क्षेपण करें)

दिशः प्रसेदुर्ववुरात्तशैत्याः सुगंधयो मंदतराः समीराः ।

प्रदक्षिणार्चिर्हविराददेऽग्नि-र्यज्जन्मनि ख्यात जिनः स एषः ॥ १ ॥

व्योमप्रदेशः प्रससाद तद्व-ज्जलाशयोऽपि प्रससाद सर्वः ।

मनो जनानां प्रससाद सद्यो, यज्जन्मनि ख्यात जिनः स एषः ॥ २ ॥

कल्पेषु घंटा भवनेषु शंखो, ज्योतिर्विमानेषु च सिंहनादः ।

दध्वान भेरी वनजालयेषु, यज्जन्मनि ख्यात जिनः स एषः ॥ ३ ॥

आलेन किं सर्वचराचरेषु, लोकत्रये स्वस्वभवोरुचिन्हैः

क्षोभो बभूव प्रबलप्रमादाद्, यज्जन्मनि ख्यात जिनः स एषः ॥ ४ ॥

एतच्चतुष्टयं पठित्वा जिनजन्मोत्सवस्थापनाय सर्वतः पुष्पांजलिं विकिरेत् ।

स्रग्धराछंद—

यस्मिन्नुत्पद्यमाने, सकल-मघवता-मुत्तमांगानि नेमुः ।

चेलुश्चित्तानि पीठान्यपि चलदचला भूतधात्री चकपे ॥

अंभोधिश्चोज्ज्वलंभे सुरकुजनिकरः संववर्ष प्रसूनम् ।

मत्वारहन्तं तमेनां प्रतिकृतिमधुना वस्त्रमुत्सारयामि ॥ ५ ॥

जिनजन्मसूचकत्रैलोक्यभवचिन्हसंकल्पेन पुष्पांजलिं विधाय प्रतिमाच्छादितवस्त्रमपनयेत् ।

(जिनजन्मसूचक त्रैलोक्य में हुये चिन्हों की कल्पना करते हुये पुष्पांजलि क्षेपण करके आगे लिखे हुये मंत्र को पढ़कर प्रतिमा के वस्त्र को निकाल देंगे।)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते त्रिभुवनतिलकोत्तमांगाय दिगंबराय ज्योतिर्मंडलाय देवेन्द्रवरमुकुटमणिगणकिरण-सलिलधाराकृतपादाभिषेकाय । द्वादशगणसमन्वितसमग्रसमवसरणसंपत्सहिताय वृषभादिवर्द्धमानपर्यंततीर्थकराय ऊर्ध्वमुखमोक्षनायकाय नमः । वस्त्रापनयनमंत्रः ।

(इस मंत्र को बोलकर सभी प्रतिमाओं के वस्त्र हटा देंगे।)

जन्मस्थान को अर्घ्य

मातेयं त्रिजगत्प्रभोर्जिनपतेस्तज्जन्मकालो ह्ययम् । तज्जन्मास्पदमेतदित्यहमियद्वक्तुं प्रभुर्नाधिकम् ॥

इत्थं वर्णयति स्म यां यममरा-धीशो यदेवादरात् । सेयं सोयमिदं तदित्यहमिह, स्वारोप्य तानर्घ्ये ॥ ६ ॥

जिनमातृजिनजन्मस्थानप्रशंसनाय तेभ्योऽर्घ्यं दद्यात् । (जिनमाता और जिनजन्मस्थान की प्रशंसा के लिये अर्घ्य चढ़ावें।)

जिनजन्म की स्थापना हेतु पुष्पांजलि

देव! त्वय्यद्य जाते त्रिभुवनमखिलं चाद्य जातं सनाथं । जातो मूर्तोऽद्य धर्मः, कुमतबहुतमो ध्वस्तमद्यैव जातम् ॥
स्वर्मोक्षद्व्याः कवाटं स्फुटमिह निवृतं चाद्य पुण्याहमाशी-जातं लोकाग्रचक्षुर्जय जय भगवज्जीव वर्धस्व नंद ॥ ७ ॥

जिनजन्मस्थापनार्थं तस्य अन्यासां च प्रतिष्ठेयप्रतिमानामुपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(जिन जन्म स्थापना की सूचना के लिये विधिनायक प्रतिमा एवं अन्य सभी प्रतिमाओं के ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण करें एवं जय-जयकार करते हुए भगवान का जन्म हो गया है, ऐसी घोषणा करें।)

जन्म के दश अतिशय की स्थापना

शार्दूलविक्रीडित—निःस्वेदामलदुग्धगौररुधिर-स्वाद्याकृतित्वानि च । स्वाद्यं संहननं स्फुरत्सुरभिता-सौरूयसल्लक्ष्मताः ॥

वीर्यं चाप्रतिमं जगत्रयहिता-भाषित्वमत्यूर्जितम् । प्राप्तं यद्वशसद्गुणं जिनवपु-र्दिव्यं तदेतद्भुवम् ॥ ८ ॥

आर्याछंद— अष्टशतलक्षणैस्तैर्नवशतसद्व्यंजनैश्चकास्ति तराम् । परमौदारिकमर्हद्व्यांगं यत्तदेवेदम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं सर्वलक्षणसंपूर्णविग्रहाय स्वाहा । सहजदशातिशयस्थापनार्थं प्रतिमोपरि दशपुष्पीमावसेत् ।

(सहज दश अतिशय की स्थापना के लिये सभी प्रतिमाओं पर दश-दश पुष्प क्षेपण करें)

जन्म के दश अतिशय के १० मंत्र

(इन मंत्रों से भी पुष्प, लवंग या पीले तंदुल क्षेपण कर सकते हैं)

[१. ॐ अस्मिन् जिने निःस्वेदत्वगुणो विलसतु स्वाहा । २. ॐ अस्मिन् जिने मलरहितत्वगुणो विलसतु स्वाहा ।

३. ॐ अस्मिन् जिने क्षीरगौररुधिरत्वगुणो विलसतु स्वाहा । ४. ॐ अस्मिन् जिने समचतुरस्रसंस्थानगुणो विलसतु स्वाहा ।

५. ॐ अस्मिन् जिने वज्रवृषभनाराचसंहननगुणो विलसतु स्वाहा । ६. ॐ अस्मिन् जिने सौरूयगुणो विलसतु स्वाहा ।

७. ॐ अस्मिन् जिने सौगंध्यगुणो विलसतु स्वाहा ।

८. ॐ अस्मिन् जिने सहस्राष्टलक्षणगुणो विलसतु स्वाहा ।

९. ॐ अस्मिन् जिने अप्रमितवीर्यगुणो विलसतु स्वाहा ।

१०. ॐ अस्मिन् जिने प्रियहितवादित्वगुणो विलसतु स्वाहा ।]

अथ विजयादिदेवतोपास्तिस्थापनम्

(अब विजया आदि देवताओं की उपासना विधि कहते हैं । आठ देवियाँ झारी लेवें)

उपजातिछंद —

समेत्य सद्यो रुचकालयेभ्यो, जिनोदयेऽम्बां समुपासमानाः ।

वहंति भृंगारकमष्टदेव्यो, यास्ता इमाः स्युर्विजयादयोऽत्र ॥१॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रपूर्वशिखरवासिन्यो विजयादिदेव्यो भृंगारकं धृत्वाहर्त्त्रभूमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा ।

पीठस्थप्रतिमां सर्वतः समलंकृताष्टकन्याः स्थापयित्वा तासां करेषु भृंगारकं दत्वा विजयादिदेवीसंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(सिंहासन पर स्थित प्रतिमा के चारों तरफ वस्त्राभरण से अलंकृत आठ कन्याओं को खड़ी करके उनके हाथ में झारी देवें और विजया आदि देवी की कल्पना करके उनके ऊपर चंदन मिश्रित पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

आठ देवियां दर्पण लेवें

समेत्य सद्यो रुचकालयेभ्यो, जिनोदयेऽम्बां समुपासमानाः ।

वहंति देव्यो मुकुरुंदमष्टौ, याः सुस्थिताद्या इह ता इमाः स्युः ॥२॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रदक्षिणशिखरवासिन्यः सुस्थितादिदेव्यो दर्पणं धृत्वाहर्त्त्रभूमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा ।

पूर्ववत्स्थापिताष्टकन्यानां करेषु दर्पणं दत्वा सुस्थितादिदेवीसंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(पूर्व के समान आठ कन्याओं के हाथ में दर्पण देकर उनमें सुस्थिता आदि देवियों की कल्पना करके पुष्पांजलि छोड़ें ।)

आठ देवियां छत्रत्रय लेवें

समेत्य सद्यो रुचकालयेभ्यो, जिनोदयेऽम्बां समुपासमानाः ।

वहंति छत्रत्रयमष्टदेव्यो, यास्ता इलाद्या इह संतु चैताः ॥३॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रपश्चिमशिखरवासिन्यः इलादिदेव्यः छत्रत्रयं धृत्वाहर्त्त्रभूमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा ।

पूर्ववत्स्थापिताष्टकन्यानां करेषु छत्रत्रयं दत्वा इलादिदेवीसंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(पूर्ववत् आठ कन्याओं के हाथ में छत्रत्रय देकर इलादिदेवी के संकल्प से उन कन्याओं पर पुष्पांजलि छोड़ें ।)

आठ देवियां चंवर लेवें

समेत्य सद्यो रुचकालयेभ्यो, जिनोदयेऽम्बां समुपासमानाः ।

वहंति याश्चामरमष्टदेव्यो, लंबूषिकाद्या इह ता इमाः स्युः ॥४॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रोत्तरशिखरवासिन्यो लंबूषिकादिदेव्यश्चामरं धृत्वाहर्त्त्रभूमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा ।

पूर्ववत्स्थापिताष्टकन्यानां करेषु चामराणि दत्वा लंबूषिकादिदेवीसंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(आठ कन्याओं के हाथ में चंवर देकर उन्हें लंबूषिका आदि देवी मानकर उन पर पुष्पांजलि छोड़ें ।)

चार कन्याओं को दीपक देवें

समेत्य सद्यो रुचकालयेभ्यो, जिनोदयेऽम्बां समुपासमानाः ।

उद्योतयन्ते च गृहं चतस्रश्चित्रादिदेव्यः खलु या इमास्ताः ॥५॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रशिखरवासिन्यश्चित्रादिदेव्यः सर्वाशोद्योतप्रासादं कृत्वाहर्त्त्रभुं इहेदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा ।

महादिक्षु पूर्ववत्स्थापितचतुःकन्यानां करेषु प्रदीपपात्राणि दत्वा चित्रादिदेवीसंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(चार महादिशाओं में चार कन्याओं को खड़ी करके उनके हाथ में दीपक देकर चित्रा आदि देवी की कल्पना से उन पर पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

अथ जातकर्मस्थापनम्

(अब जातकर्म की विधि दिखलाते हैं-)

(चार दिशाओं में चार कन्याओं के हाथ में वेत्रदंड देकर खड़ी करें।)

चतस्रो दिक्कुमारीणां, या महत्तरिकाः प्रभोः।

जातकर्म वितन्वन्ति, ता एता रुचकादयः॥६॥

ॐ रुचकगिरीन्द्रपूर्वादि-अभ्यंतरशिखरवासिन्यो रुचकादिदेव्यो जातकर्म कृत्वार्हत्प्रभुमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा॥

महादिक्षु पूर्ववत्स्थापितचतुःकन्यानां करेषु वेत्रदंडं दत्वा दिक्कुमारीमहत्तरिकासंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(चार महादिशा में पूर्ववत् चार कन्याओं के हाथ में वेत्रदंड को देकर दिक्कुमारी महत्तरिका का संकल्प करके उन पर कुंकुम से रंगे पीले चावल छोड़ें।)

तासां विद्युत्कुमारीणां, या महत्तरिकाः प्रभोः।

जातकर्म वितन्वन्ति, ता एता विजयादयः॥७॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रशिखरवासिन्यः विजयादिदेव्यो जातकर्म कृत्वा अर्हत्प्रभुमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा।

विदिक्षु पूर्ववत्स्थापितचतुःकन्यानां करेषु वेत्रदंडं दत्वा विद्युत्कुमारीमहत्तरिकासंकल्पेन तासु कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(विदिशाओं में खड़ी हुई चार कन्याओं के हाथों में वेत्रदंड देकर विद्युत्कुमारी देवियों की प्रधानमानकर उन पर पीले चावल छोड़ें।)

४४ देवियों के ऊपर पुष्पांजलि

द्वात्रिंशदेव रुचकाश्रयदिक्कुमार्यो, विद्युत्कुमार्य इह तत्स्थितयश्चतस्रः।

तासां च विश्रुतमहत्तरिकास्तथाष्टौ, यज्जन्मनि प्रतिभजन्ति स एष देवः॥८॥

ॐ रुचकवरगिरीन्द्रशिखरवासिन्यो विजयादिदेव्यो यथास्वं अर्हत्प्रभुमिह इदानीं परिचरन्त्विति स्वाहा।

पीठस्थप्रतिमां सर्वतः कुंकुमरंजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(पीठ पर विराजमान प्रतिमाओं के चारों तरफ पीतपुष्पांजलि क्षेपण करें।)

इति विजयादिदेवतोपास्ति विधानम्

विशेष - रुचकगिरि की ४४ देवियों को लिया है और पूर्व की श्री, ह्री आदि आठ देवियां मिलाकर ५२ होती हैं। पहले से ही जाति कुल से शुद्ध ५२ बालिकायें निश्चित करके उपर्युक्त देवियां बनानी चाहिये। (व्यवहार में ५६ कुमारी कर्षियाँ बनाने की परम्परा है किन्तु हमें इस प्रतिष्ठातिलक में ५२ की संख्या ही प्राप्त हुई है।)

अथ आकारशुद्धिः

(अब आकारशुद्धि विधि कहते हैं-)

(प्रतिमाओं की शुद्धि की विधि और जन्माभिषेक की विधि को यहां आकारशुद्धि कहा है।)

स्रग्धराछंद—

देवीभिः श्रूयादिभिस्तैरमलतरगुणैर्भूषिताया जनन्या।

दिव्यद्रव्यौघसंशोधितमणिगृहसंकाशगर्भे प्रसूतः॥

अस्पृष्टो गार्भदोषैर्जलजमिव जलैर्यस्त्रिबोधादिशुद्धः।

तस्यांतर्बाह्यशुद्धेर्विधिरिति विदधे शुद्धिमद्याकरस्य॥९॥

नामापि यस्यातनुते विशुद्धिं, ध्यायन्ति यं शुद्धिकृते मुनीन्द्राः।

किं तस्य शुद्धेर्विधिना तथापि, तमेष आचार इतीह कुर्वे॥१०॥

आकारशुद्धिविधानस्थापनार्थं तीर्थोदकाप्लुतपुष्पाणि प्रतिमोपरि निदध्यात्। (प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

इंद्राणी स्थापना

भवनवनजकल्प-ज्योतिरिन्द्राः स्वशंखा-नकपटुरवधंटा-स्फारभेरीनिनादैः ।

जिनजनिमवगम्यागम्य कल्याणपूजां, व्यधुरिति विभवाद्ये याजकाः सन्तु तेऽमी ॥३॥

इन्द्रभार्यायां इंद्राणीभावस्थापनार्थं सौधर्मः पुष्पाक्षतं क्षिपेत् । इन्द्रयजमानादिषु तत्तदिन्द्रादिभावस्थापनाय सौधर्मः पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(इन्द्र की पत्नी में इंद्राणी भाव की स्थापना के लिये पुष्पांजलि छोड़े तथा इन्द्र और यजमान आदि के मस्तक पर भी उन-उन इंद्रादि के भावों की स्थापना हेतु पुष्पांजलि छोड़ें।)

इंद्राणी द्वारा इन्द्र को प्रतिमा देने पर पुष्पांजलि

स्रग्धराछंद—

मायानिद्रां जनन्याः सपदि विदधती स्थापयित्वा तदग्रे ।

मायाबालं कराभ्यां जिनममलमुपादाय भक्त्या दधाना ॥

अग्रे यांतीषु च श्रयादिषु विधृतलसन्मंगला स्वागमय्य ।

प्रीतेन्द्राणीन्द्रहस्ते निधिमिव निदधौ यं स एवैष देवः ॥४॥

इन्द्राण्यां भद्रासनादुद्धृत्य समर्प्यमाणायां प्रतिमायां पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(इंद्राणी ने भद्रासन से प्रतिमा को लिया है, उन प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

इंद्राणी से इन्द्र ने भगवान को लिया

वसंततिलकाछंद—

या गाढभक्तिरतिगूढतनुःप्रविश्य, शिष्टामरिष्टवसतिं जिनमुज्ज्वलांगं ।

प्राचीतटे रविरिव स्थितमंबिकांके, दृष्ट्वा प्रणम्य च तुतोष शची तु सेयम् ॥५॥

यस्तोरणप्रणिधिदेशमभीत्य शच्या, दत्तं ससंभ्रममवेक्ष्य दधौ कराभ्याम् ।

स्तुत्वा ननाम च मुहुर्जिनबालकं स्वं, मेने कृतार्थममरप्रवरोऽस्मि सोऽहम् ॥६॥

इन्द्राण्यां समर्प्यमाणां प्रतिमां जय-जयेति वदन् प्रणतशिराः करकमलाभ्यां इन्द्रो गृणीयात् ।

(इंद्राणी के द्वारा दी गई प्रतिमा को जय-जय बोलते हुये मस्तक झुकाकर नमस्कार करके पुनः अपने दोनों हाथों से इन्द्र ग्रहण करें)

इन्द्र भगवान को लेकर हाथी पर बैठें

शार्दूलवि.— द्वात्रिंशन्मुखतच्चतुर्गुणमहा-दंतांतपद्माकर-द्वात्रिंशत्कमलोल्लसद्दलशिखा-नृत्यत्सुरस्त्रीजनम् ॥

नृत्यंतं रजताचलाभमुचिता-लंकारमैरावणम् । स्वारूढस्य शतक्रतोर्जिनविभु-र्योऽके स्थितः सोस्त्वयम् ॥७॥

ऐरावणभावस्थापनाय समलंकृतगजे पुस्तगजे वा पुष्पांजलिं प्रयुज्य सौधर्मस्तमारुह्य स्वांके प्रतिमां सुदृढं निवेशयेत् ।

(ऐरावत हाथी की स्थापना के लिये अलंकृत हाथी पर या लकड़ी आदि के हाथी पर पुष्पांजलि क्षेपण करके सौधर्मइंद्र प्रतिमा को गोद में लेकर हाथी पर बैठें।)

ईशान इन्द्र छत्र लेवें

उपजातिछंद—

ईशानशक्रः शरदिंदुबिंब-शोभाविशेषास्पदमातपत्रम् ।

यस्योपरिष्टाद्विभरांबभूव, स एव देवो जिनबिम्ब एषः ॥८॥

ईशानशक्रस्थापनायच्छत्रधारिणि प्रतीन्द्रे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(ईशान इन्द्र की स्थापना के लिये छत्रधारी द्वितीय इंद्र पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

सनत्कुमार-माहेन्द्र इन्द्र चंवर लेवें

पार्श्वस्थितौ यस्य सनत्कुमार-माहेन्द्रशक्रौ चमरीरुहे द्वे ।

संवीजयामासतुरिंदुशुभ्रे, स एव देवो जिनबिम्ब एषः ॥६॥

सनत्कुमारमाहेन्द्रशक्रस्थापनाय चमरधारिप्रतीन्द्रोपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(सानत्कुमार-माहेन्द्र इन्द्रों की स्थापना के लिये चंवरधारी इन्द्रों पर पुष्पांजलि छोड़ें ।)

इंद्राणी शची, श्रीआदि की स्थापना

शच्यादयः श्रीप्रमुखाश्चदेव्यो, नानाविधं मंगलमुद्रहन्त्यः ।

यस्याग्रतो जग्मुरुदारवेषाः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१०॥

शच्यादिश्र्यादिदेवीभावस्थापनाय इन्द्रयजमानप्रभृतिमत्काशिनीषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(शची आदि, श्री आदि की स्थापना के लिये इंद्राणी, देवी आदि पर पुष्पांजलि छोड़ें । ये देवियां हाथों में मंगलद्रव्य लिये हों ।)

अत्याहितं नृत्यमदृष्टपूर्वं, विचित्रभावैः करणांगहारैः ।

यस्याग्रतश्चाप्सरसो बबंधुः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥११॥

अप्सरोजनभावस्थापनाय नटद्वारवधूषु पुष्पाणि क्षिपेत् ।

(नृत्य करती हुई महिलाओं और बालिकाओं पर पुष्पांजलि छोड़ें ।)

वर्धस्व नित्यं विजयस्व जीव, नंदेति घोषोन्मुखशेषशक्राः ।

पुष्पोपहारं विदधुर्यदग्रे, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१२॥

ब्रह्मेन्द्रादिशेषशक्रस्थापनाय स्तवनोन्मुखा विद्वद्विशिष्टेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(ब्रह्मेन्द्र आदि शेष इन्द्रों की स्थापना हेतु स्तवन करते हुये इन्द्रों पर पुष्पांजलि छोड़ें ।)

जगुर्जगर्जुर्नृतुर्ननुदु - रास्फोटयांचक्रुरलं ववल्गुः ।

यस्याग्रतः सर्वसुराः प्रमोदात्, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१३॥

आस्फोटितगीतनृत्यवादित्रहास्योत्सुत-वल्गितमंगलाशी-ध्वलस्तुतिविधायिसुरजनभावस्थापनाय आस्फोटितादि - विघ्नयि भव्यजनेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(गीत नृत्य करने वाले, बाजे बजाने वाले, जय-जय करने वाले आदि जनों पर, ये सब देवगण हैं, ऐसा संकल्प कर पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

विद्याधर मनुष्यों की कल्पना

जगु-र्जगर्जु-र्नृतु-र्ननुदु-रास्फोटयांचक्रुरलं ववल्गुः ।

विद्याधरा यस्य पुरः प्रमोदात्, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१४॥

आस्फोटितगीतादिविधायि-विद्याधरभावस्थापनाय तद्विधायिभव्यजनेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(गीत नृत्य आदि करते हुये मनुष्यों पर विद्याधर की कल्पना से पुष्पांजलि छोड़ें ।)

मुनियों के सामने पुष्पांजलि

अभ्यागतान्यंबरचारणानां, युग्मानि दृष्ट्वा यमतीव तुष्ट्या ।

संतुष्टवुः स्पष्टसुमृष्टवाक्यैः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१५॥

अंबरचारणभावस्थापनाय मुनिजनपादाग्रतः पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(आकाशगामी मुनियों की कल्पना से मुनियों के चरणों के आगे पुष्पांजलि छोड़ें । इससे यह स्पष्ट है कि जन्म कल्याणक में मुनि सम्मिलित होते हैं । जन्मकल्याणक के जुलूस में भी चलते हैं ।)

सभी जनों पर पुष्पांजलि

तदातनीं यस्य महाविभूतिं, दृष्ट्वा सुराः केचन खेचराश्च ।

इन्द्रप्रमाणाः सुदृशो बभूवुः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१६॥

सुरजनभावस्थापनाय निरीक्षकजनेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(‘ये सभी देवगण हैं’ ऐसी कल्पना से सभी दर्शकों पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

पांडुकशिला पर पुष्पांजलि

(जहाँ जन्माभिषेक के लिये पांडुकशिला बनाई है, वहाँ पहुँचकर प्रतिमा को उस मंडप में लेवें।)

स्रग्धराच्छंद—

इत्थं नीत्वा सुमेरो-रुपरितनवने, पांडुके पांडुकाख्यां । प्रादक्षिण्येन पूर्वो-त्तरविदिशि शिलां, स्थापितं मध्यपीठे ॥
क्षीरोदस्यांबुभिर्यं, पृथुकलशशतैः, स्थापयन्ति स्म शक्राः । तं मत्वा देवमेनं, त्रिदशशतघटैः, स्नापयामोत्र बिंबम् ॥१७॥

इति महोत्सवेन जिनप्रतिष्ठेयप्रतिमामुत्तरवेदीमंडपं नीत्वा तत्र पुष्पाक्षतं विकिरेत् ।

(महामहोत्सव से प्रतिष्ठेय प्रतिमा को वेदीमंडप में ले जाकर पुष्पांजलि छोड़ें।)

श्रीभद्राशालकं सौमनसमुरुवनं नंदनं पांडुकाख्यम् । यस्योच्चैरंतरीयं परिवृतरशना-मुत्तरीयं क्रमेण ॥

उष्णीषं चानुकुर्यान्नवनवतिसहस्रोन्नतिर्योजनानां । ख्यातो मेरुः स साक्षान्मणिकनकमयो-स्त्वेतदेवोच्चपीठम् ॥१८॥

महामेरुभावस्थापनाय तन्मंडपे सर्वतः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(महामेरु की कल्पना से सर्वत्र पुष्पांजलि छोड़ें।)

श्रीकार पर प्रतिमा स्थापना

वसंततिलकाच्छंद— यो योजनानि शतमायतिमेतदर्ध-व्यासं बिभर्ति विशदाष्टतदुच्छ्रयं च ।

अर्धेन्दुबिंबसदृशी सुरभिः सुरम्या, सा पांडुकाव्हयशिलेयमिहास्तु वेदी ॥१९॥

नीत्वा भूरिविभूतितः सुरगिरिं, श्रीपांडुकाग्रासने । पूर्वास्यं विनिवेश्य ते सुरवराः, संस्नापयन्ति स्म यम् ॥

तं देवं स्नपनार्थमंडपमिमं-नीत्वा विभूत्या समम् । पीठेऽत्र श्रुतबीजभासुरतले, पूर्वाननं स्थापये ॥२०॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन् ! इह पांडुकशिलापीठे तिष्ठ तिष्ठ इति स्वाहा । श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनम् ।

(श्लोक व मंत्र बोलकर श्रीकार वर्ण पर प्रतिमा स्थापित करें।)

अथ अभिषेकोपकरणसज्जीकरणम्

(अभिषेक की सभी वस्तुयें एकत्रित करना)

शार्दूलवि.—एषा मेरुतटे जिनालयपुरो-भूः पांडुकाग्रस्थितं । पीठं पीठमिदं त्वियं प्रतिकृतिः, साक्षाच्च सोऽर्हत्प्रभुः ॥

सौधर्मामरनायकोऽहममराः, सर्वे च भव्या अमी । यज्ञांगानि च तान्यमूनि सकलं, तत्सिद्धमिष्टं हि नः ॥२१॥

अभिषेकोपकरणसज्जीकरणाय समंतात्पुष्पाक्षतं विकिरेत् ।

(अभिषेक की वस्तुयें एकत्रित कर सब तरफ पुष्पांजलि छोड़ें।)

अथ प्रतिमास्पर्शनम्

(अब श्लोक और मंत्र बोलकर प्रतिमा का स्पर्श करें।)

उपजातिछंद—

अनन्यसाधारणसद्गुणानां, तव स्मरन्नस्तमित-स्मरार्तेः।

जिनेंद्र ! साक्षात्कृत्सर्वतत्त्व ! त्वामात्मनः सन्निहितं करोमि॥२२॥

ॐ उसहाय दिव्यदेहाय सज्जोजादाय महप्पण्णाय अणंतचउट्ठयाय परमसुहपइड्डयाय णिम्मलाय सयंभुवे
अज्जरामर-परमपदपत्ताय परमपदाय मम इत्थवि सण्णिहिदाय स्वाहा ।

इदं उच्चारयन् प्रतिमां परामृशेत् । (इस मंत्रपूर्वक प्रतिमा का स्पर्श करें।)

ततः सकलीं पूर्ववत्कुर्यात् (इसके बाद सकलीकरण पूर्ववत् करे।)

ततः पीठाधःस्थितपंचमंडलयंत्राराधनम्।

(इसके बाद पीठ—अभिषेक पात्र के नीचे स्थित पंचमंडलयंत्र की आराधना करें। यहां पर परिशिष्ट में से बने हुये नवदेव समेत ८८ देवों का मंडल बनाकर नीचे रखें।

अष्टाधिकाशीतिसुरावृताना-मिष्टार्थदानां नवदेवतानाम्।

आराधनां जैनमहांगभूतां, श्रीपीठयंत्रे विधिना विधास्ये॥ २३॥

पुष्पांजलिः । (पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

अथ पूजा—पूर्ववद् भूमिशोधनम्, भूम्यर्चनानि कृत्वा, कर्णिकाभ्यंतरेऽर्हत् परमेष्ठिनः पूर्वादिदिग्दलेषु सिद्धादिपरमेष्ठिनां विदिग्दलेषु
धर्मादीनां पूर्ववत्पूजां विधाय। पंचमंडलेषु तिथिग्रहयक्षयक्षीदिकपालद्वारपालानां प्रागुक्तपदैः प्रधानपूजां कृत्वा, कलशान् परितो दिक्पालानां
प्रत्येकपूजां जलहोमं च विदध्यात्।

(पृ. ११४ से भूमिशोधन आदि विधि करके पृ. २८ से पीठयंत्राराधना विधि करें। पुनः कलशों के चारों तरफ दिक्पाल पूजा करके जलहोम करें। पीठयंत्राराधना का मंडल बनाने की विधि एवं जलहोम परिशिष्ट में है।)

शिल्प्यादिसंस्पर्शनदोषशुद्ध्यै, साक्षात्परब्रह्म च सन्निधातुं।

जिनादिमंत्रेण जिनेंद्रबिंबं, सप्तैव वारानभिमंत्रयामि॥२४॥

अथ पुनस्तामेव प्रतिमां जिनमंत्रेण सप्तवारानभिमंत्रय आकारशुद्धिं विदध्यात् ।

आगे के मंत्रों को सात बार बोलकर प्रतिमा को स्पर्श कर मंत्रित कर आकार शुद्धि करें।

जिनमंत्रा यथा—

ॐ अर्हद्भ्यो नमः, केवललब्धिभ्यो नमः, क्षीरस्वादुलब्धिभ्यो नमः, मधुरस्वादुलब्धिभ्यो नमः, संभिन्नश्रोतृभ्यो नमः,
पदानुसारिभ्यो नमः, कोष्ठबुद्धिभ्यो नमः, बीजबुद्धिभ्यो नमः, सर्वावधिभ्यो नमः, परमावधिभ्यो नमः,
ॐ ह्रीं वल्गु वल्गु निवल्गु निवल्गु सुश्रवणे महाश्रवणे ॐ ऋषभादिवर्धमानांतेभ्यो वषट् संवौषट् स्वाहा ।

(कुंभों को स्थापित करें।)

वसंततिलकाछंद—

कुंदेंदुहारधवलोत्तमदुग्धपूर-तत्पंचमांबुनिधि भूरिपयः प्रपूर्णाः।

ये योजनास्यततयोष्ट च तानि निम्ना-स्तेमी भवन्तु कलशाः कलधौतजाताः॥२५॥

शार्दूलवि.—ये क्षीराब्धितटादितः प्रसरता-मामेरुकूटादवि—च्छेदेनैव दिवौकसामतिरसाद्वेगेन पंक्यार्पिताः ।

हस्ताहस्तिकया दधौ सुरपति-दोष्णां सहस्रेण यान् यैरहन्नभिषिच्यते स्म जनने, ते संतु कुंभा अमी ॥२६॥

एतद्द्वयं पठित्वा कुंभेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् । (ये दोनों श्लोक पढ़कर कुंभों पर पुष्पांजलि छोड़ें)

शार्दूलवि.—कुंभैरष्टसहस्रमानकलितै-रंभोभरैरुंभितैः । क्षीराब्धेः सुरगानतूर्यनिनदे, दिक्षु प्रसर्पत्यलम् ॥

पीठे पार्श्वगतेन्द्रपीठयुगले, श्रीपांडुकाग्रस्थितेः । पूर्वास्यं विनिवेश्य यं सुरवरा, जन्मन्यसिंचजिनम् ॥२७॥

तं मत्वा जिनबिंबमेनमधुना, तत्कल्पभूत्यानया । स्वस्वौक्तौषधवत्त्रयोदशशतन्यस्तार्चितश्रीघटैः ॥

एतत्संघसमन्विता वयमिमे, जन्माभिषेकोत्सव-स्थानीयाकरशोधनाभिषवणं, कुर्मोऽस्य शर्माप्तये ॥२८॥

एतद्द्वयं पठित्वा जिनबिंबाग्रे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(ये दोनों श्लोक पढ़कर जिनप्रतिमा के सामने पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

अथ शिल्पिविधेयनयनमंडलोल्लेखविधानम्

(नेत्रों में गोलाकार मंडल बनाना)

गद्य—अथ तद्रात्रौ उपोषितः पीतपयाः शिल्पी प्रातः स्नात्वा श्वेतमाल्यांबरधरः सन् आकारशुद्ध्यादौ बिंबाग्रे यवनिकां धृत्वा सुवर्णशलाकया नयनमध्यमंडलं शुभलग्ने समुल्लिख्य, यवनिकां अपसार्य पूर्वमाज्यपात्रं ततः सवत्सधेनुं प्रदर्श्य धूलिकलशाभिषेकं कुर्यात् ।

धूलि कलशाभिषेक

(इसमें तीर्थों की मिट्टी, नदी-सरोवर के तट की, पर्वत आदि की मिट्टी लेकर तीर्थजल में घोलकर उससे धूलि अभिषेक करावें।)

शार्दूलवि.—तीर्थेभ्यः सरितः सरोवरतटाद्रेः समुद्रान्ननृप-द्वाराद्दंतिवराहदंतयुगलाच्छ्रंगाद्गवेन्द्रस्य च ।

मृत्स्नाभिः समुपाहृताभिरुचितोपस्कारसंशुद्धिभि- स्तीर्थाद्भिः परिपूरितेन कलशेनार्चामिह स्नापये ॥२९॥

एतत्पठित्वा स्थापकः शिल्यादीन् संमान्य जिनपीठाग्रभूमौ स्थापितधूलिकलशेन स्थपतिना जिनार्चा स्नापयेत् ।

अथ संप्रोक्षणम्

(जिस महिला के सास-ससुर, माता-पिता, पुत्र और पति मौजूद हैं ऐसी सौभाग्यवती महिला से आगे के श्लोक व मंत्र बोलकर प्रोक्षण विधि करावें।)

शार्दूलवि.—जीवेतौ श्वसुरौ तथैव पितरौ, यासां सपुत्राश्च याः । कुल्याः शल्यविवर्जिताश्च शुचयो, भर्त्रान्विता योषिताः

ताभिः काण्डमुखोद्धृतेन सनिशासिद्धार्थदूर्वाक्षतैर् दध्नान्यैः कृतकल्फकेन विधिना, संप्रोक्षयामि प्रभुम् ॥३०॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं हं सः परमपवित्रदेहाय नमः स्वाहा । प्रोक्षणमंत्रः ।

गद्य—इंद्रो हि गुडधानादीनि दत्त्वा तादृक् पुरंध्रीभिः प्रोक्षणकर्म कारयेत् । तास्तु तत्कल्फचूर्णेन प्रतिमामालेप्य स्वहस्तधृतकांडमुखेन प्रतिमां चतुरस्रं परिमाय मंगलपात्रारोपितदधि उद्धृत्य चंदनवर्धनविधिना तां तेन सिंचतु । इति संप्रोक्षणविधानं ।

(प्रतिष्ठाचार्य सौभाग्यवती महिला को गुड़, धानी (लावा) आदि देकर उनसे प्रोक्षण क्रिया करावें। वे महिलायें कल्फ चूर्ण से प्रतिमा का लेपन करें। पुनः प्रतिष्ठाचार्य अपने हाथ में दर्भकांड या सूत लेकर प्रतिमा को समचतुरस्र माप करके मंगलपात्र में रखे हुये दधि को लेकर चंदनवर्धन विधि से सिंचित करे। सफेद सरसों, दूर्वा, अक्षत, हल्दी और दही मिलाकर कल्फचूर्ण बनता है।)

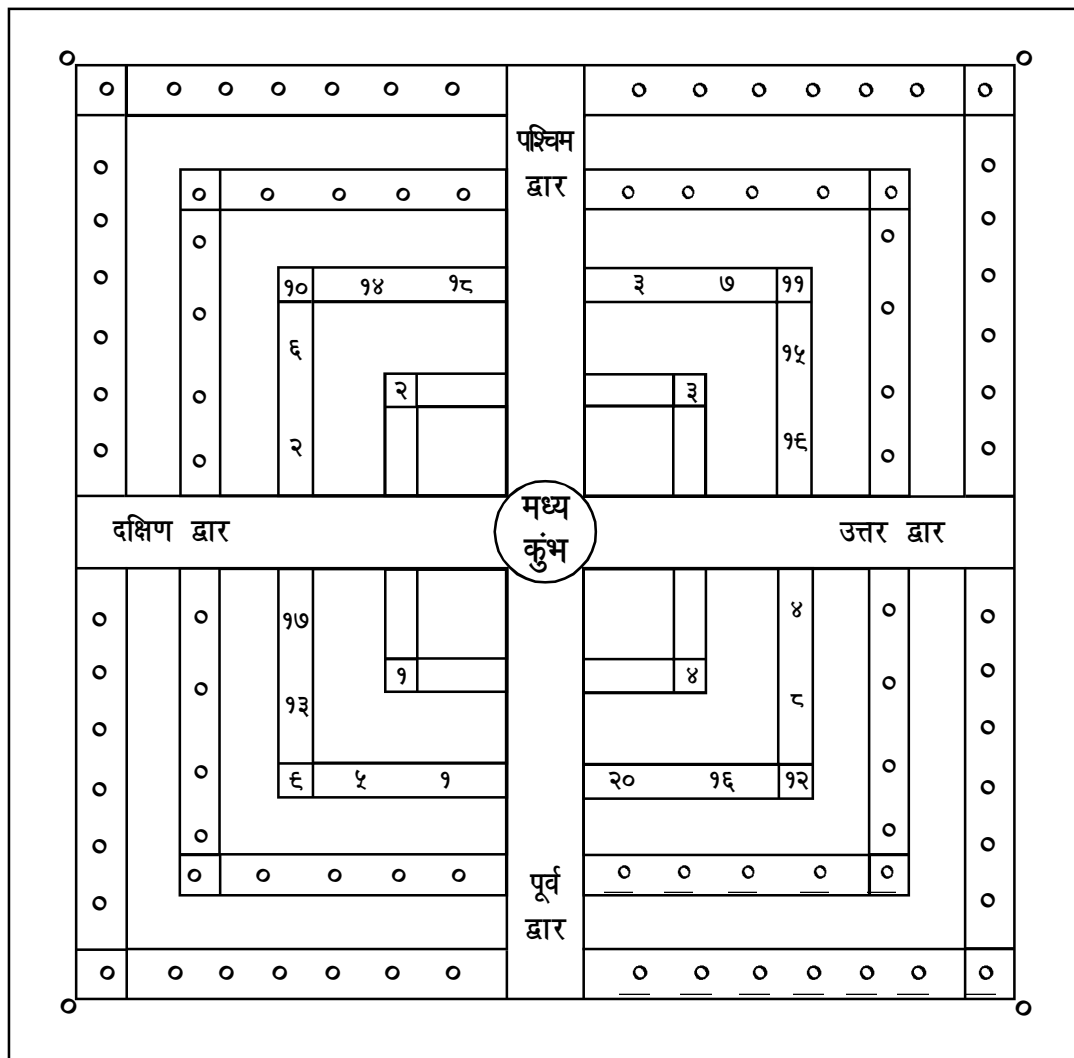
(इस जन्माभिषेक में आकारशुद्धि विधि से अभिषेक करना है। इसमें ११७ कलश स्थापित किये जाते हैं। उनको आगे दिये हुए नक्शे के अनुसार स्थापित करें।)

जन्मकल्याणक की आकारशुद्धि का नक्शा

जन्माभिषेक कुंभ रचना में ११३ कलश स्थापना की विधि

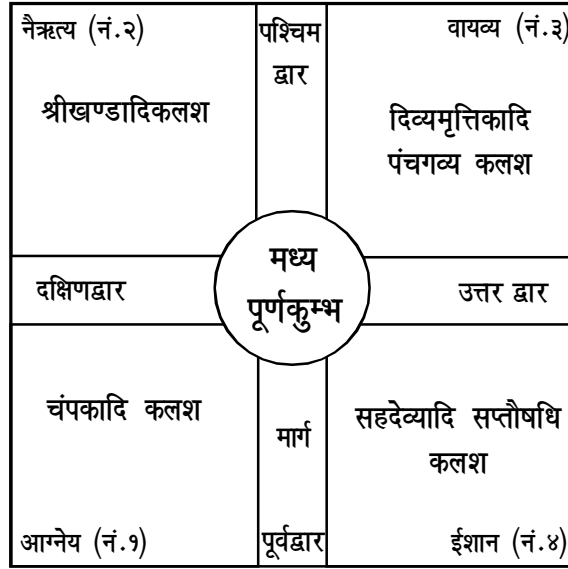
(११३ ४ ११७)

(चौथे आवरण में बाहर के चार कोणों पर चार कुंभ स्थापित किये जाते हैं अतः ११७ कुंभ हो जाते हैं)



जो चार आवरण—कोष्ठक हैं। उसमें से प्रथम आवरण में पाँच कुंभ स्थापित करने की विधि

प्रथम आवरण में पाँच कलश हैं



१. चंपकादि कलश

—चंपा, अशोक, पीपल, वकुल, बड़, कदंब, उदुंबर, आम, पिप्पली, बेल, अर्जुन के पत्तों का चूर्ण तथा इनके पत्ते कलश पर भी हों एवं तीर्थों की मिट्टी मिश्रित हो। (चंपक कुंभ नाम है)।

२. श्रीखण्डादिकलश

—श्रीखंड (सफेद चंदन), गोरोचन, अगुरु, लालचंदन, दूब, पद्मक, सरसों, कुंद, नंद्यावर्त, मालती पुष्प, तिल, जौ, तंदुल, समुद्र और नदी के तट की मिट्टी आदि।

३. दिव्यमृत्तिकादि पंचगव्य कलश

—पंचमृत्तिका आदि घी, दूध, दधि, इक्षुरस मिश्रित आदि।

४. सहदेव्यादि सप्तौषधि कलश

—सहदेवी, गिलोय, शमी, शतावरी, माका, प्रियंगु, विष्णुकांता (सप्त औषधि)।

द्वितीय आवरण में २० कलश हैं

(चार्ट—प्रथम आवरण सहित)

० १०	० १४	० १८		० नं.३	० ७	० ११
० ५						० १५
० नं.२						० १६
			२		३	
			पूर्ण.			
			१		४	
० १७						० नं.४
० १३						० ८
० ६	० ५	० नं.१	पूर्वद्वार	० २०	० १६	० १२

१. बिल्वफलादिपंचक — बेल, भिलावा, आम, लवंग, जायफल चूर्ण
२. पलाशादित्वक्कषाय — पलाश, बड़, पीपल, उबर, आम, जामुन, खजूर, शमी इनकी छाल का चूर्ण
३. शतावर्यादिमूलाष्टक — शतावरी कुमारी, सहदेवी, दूब, अमृत-गिलोय, अडूसा व्याघ्री और बला (८ वस्तु) इनकी जड़ों का चूर्ण
४. सिद्धार्थादिकलश — सफेद सरसों, चंदन, वच, कोष्ठ, कंकोल, इलायची, लवंग, जायफल, कपूर आदि का चूर्ण
५. रक्तचंदनमिश्रित — लाल चंदन मिश्रित
६. गंधमिश्रित — श्रीगंध मिश्रित
७. नालिकेररसमिश्रित — नारियल जल
८. आम्रादिरसमिश्रित — आम, नारंगी, चोच, केला, आंवला रस
९. इक्षुरसपूरित — इक्षु रस
१०. शर्करापूरित — शक्कर रस
११. समूलसिद्धार्थादिमि. — कमलमूल, सरसों, दूब, अक्षत आदि
१२. धातकीकुसुमादि — धाय के फूल, कपूर, जायफल, लवंगादि
१३. दुग्धदर्भादिमि. — दूध, पानी, दर्भ, वाव्य (खस), तिल, अक्षत, जौ सहित जल
१४. घृतपरिपूरित — घी
१५. दूधपूरित — दूध
१६. दधिपूरित — दही
१७. लाजाचूर्णमि. — लाजा का चूर्ण (धान का लावा)
१८. लाजा का चूर्ण — मूंग, चना आदि का चूर्ण (लाजा का चूर्ण)
१९. कल्कद्रव्यमि. — सहदेवी, अपामार्ग, मार्कंद लक्ष्मी, पंचपत्र (बेलपत्रादि)
२०. सरित्समुद्रादिमिष्टिमिश्रित — समुद्र तटादि की दिव्य मिट्टी

तृतीय आवरण में ३६ कलश हैं

(चार्ट—प्रथम-द्वितीय आवरण सहित)

○	○ ○ ○ ○ ○		○ ○ ○ ○ ○	○
○				○
○				○
○				○
○				○
○				○
○				○
○				○
○				○
○				○
○	○ ○ ○ ○ ○	पूर्वद्वार	○ ○ ○ ○ ○	○

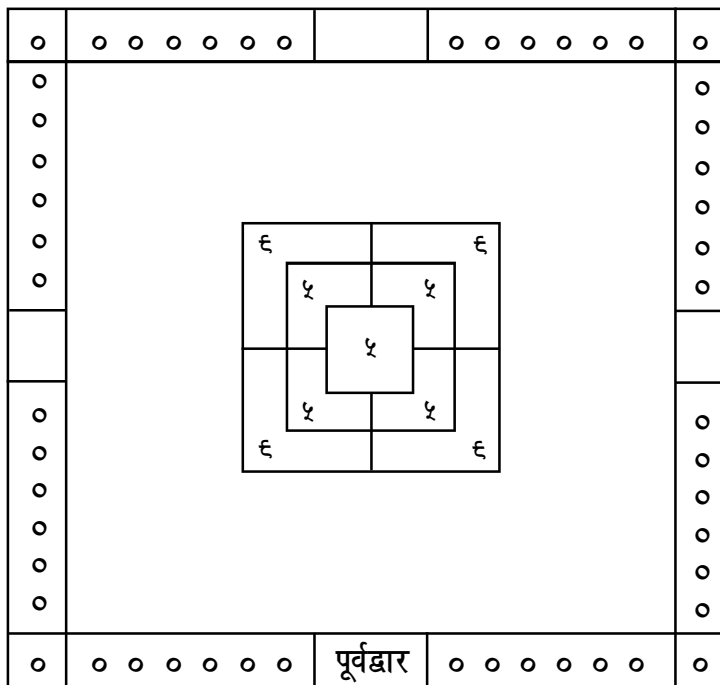
पूर्वद्वार के दक्षिण से ३-३ कलशों को लेकर अभिषेक करें। उन ३-३ कलशों में निम्नलिखित वस्तुएं होवें—

१. कषायद्रव्यमिश्रित ३ कलश —पंच उदुबंर, जामुन, आम, गुडपुष्प, शमी इनकी छाल का काढ़ा तीन कुंभ में डालें
२. सत्तूमिश्रित ३ कलश —जौ आदि सत्तू का चूर्ण
३. दर्भमिश्रित ३ कलश —डाभ मिश्रित जल
४. तिलमिश्रित ३ कलश —तिल मिश्रित जल
५. पलासादिशालिचूर्णमिश्रित ३ कलश —पलाश, खदिर, आम, सहदेवी, हल्दी, दर्भ, बड़, बेल, कुंद, अहिनेत्र पाषाणभित, शमी, बालुक उंबर आदि साली के चूर्ण
६. कमलादि मंगलद्रव्य मिश्रित ३ कलश—पद्म, इन्द्रबलि, अपामार्ग, बड़, पलाश, लौंग, तिल, प्रियंगु, मूंग, सरसों, जौ आदि मिश्रित जल
७. सुगंधित फूल मिश्रित ३ कलश —मालती, मोगरा, जाई, केवड़ा, पालडी आदि पुष्प सहित जल
८. सर्वौषधिमिश्रित ३ कलश —लवंगादिसर्वौषधि मिश्रित जल
९. अष्टलोहरजमिश्रित ३ कलश —लोहा, सोना, चांदी, पीतल, पारा, शीशक आदि रज-भस्म से मिश्रित जल
१०. वैडूर्यादिनवरत्नमिश्रित ३ कलश —वज्र वैडूर्य आदि नवरत्न मिश्रित जल
११. सर्वगंधमिश्रित ३ कलश —सुगंधित द्रव्य, सर्वगंध मिश्रित जल
१२. कश्मीरादि सुगंधिचूर्ण मिश्रित ३ कलश—केशर, अगुरु, कपूर, हल्दी, चंदन, बालछड़ मिश्रित जल

नोट—इन बारह नंबर में तीन-तीन कुंभ में एक-एक प्रकार की वस्तु डालें क्योंकि ये ३६ कुंभ हैं। ऐसे १२ X ३=३६ कलश हुए।

चौथे आवरण में ५२ कलश हैं

(चार्ट—प्रथम-द्वितीय-तृतीय आवरण सहित)



सर्वोषधि मिश्रित जल से १-१ कलशों से अभिषेक

चतुष्कोण कुंभों द्वारा अभिषेक

मध्य के पूर्ण कुंभ द्वारा अभिषेक

प्रत्येक पदों में १३-१३ कलश हैं। इन सबमें सर्वोषधि भरी है।

इसमें पूर्वद्वार के दक्षिण भाग से कलश उठावें।

पुनः चार प्रकार के नीराजन करें।

अथ अष्टसम्मर्जनकलशैरभिषेचनम्

(पहले आठ कलशों से अभिषेक करना है। उसमें प्रथम पंक्ति के चार कलशों से पुनः द्वितीय पंक्ति के चार कलश लेना है। उसमें भी इस द्वितीय पंक्ति में चार भागों में से एक-एक कलश क्रम से लेना है। इस विधि में कलशों पर नंबर डाल देना चाहिये।)

पुष्पांजलि

प्रथमावरणे पूर्वद्वारदक्षिणतोंऽशकात्। आरभ्य चतुरः कुंभा-नुद्धरामि यथाक्रमम्॥

कलशोद्धरणक्रमविध्यवधानाय प्रथमावरणे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(कलशों की प्रथम पंक्ति में पुष्पांजलि छोड़ें।)

(१) आग्नेयदिशिस्थापित चंपकादिकलशाभिषेक

(इस कलश में चंपक, अशोक, पीपल, वकुल, बड़, कदंब, उदुंबर, आम, पिप्पली, बेल, अर्जुन इन सभी के पत्ते कलश पर रखें और जिसमें अनेक नद-नदी, बावड़ी, कुंआ, तालाब, सरोवर, समुद्र आदि तीर्थों का जल भरा हो, ऐसे कलश से आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर अभिषेक करें। सभी कलशों के जल से विधिनायक प्रतिमा व सभी प्रतिमाओं का अभिषेक होना चाहिये।)

उपजातिछंद— अग्नेर्दिशि स्थापितकुंभमेनं, सच्चंपकाद्यौषधपूर्यमाणम्।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः॥१॥

ॐ चंपकाशोककिंशुकाश्वत्थबकुलप्लक्षकदंबौदुंबराग्रन्यग्रोधबिल्वार्जुनाभिनवपल्लवोपशोभितास्येन अनेकनदनदी-वापीकूपतटाकसरोवरसमुद्रादित्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अनंतज्ञानाय अस्नानशुद्धाय, झ्रौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । चंपकादिकलशाभिषेकः ।

(२) नैऋत्यदिशि स्थापित श्रीखंडादिकलशाभिषेक

(इस कुंभ में श्रीखंड—श्वेत चंदन, गोरचन, अगरु, लालचंदन, दूब, पद्मक, सरसों, कुंद, नंदावर्त, मालतीपुष्प, तिल, जौ, तंदुल, समुद्र और नदी के तट की मिट्टी, गाय का अधर लिया हुआ गोबर और नदी आदि तीर्थों का जल भरा हो, ऐसे कलश से आगे का श्लोक और मंत्र बोलकर अभिषेक करें।)

रक्षोदिशि स्थापितकुंभमेनं, श्रीचंदनाद्यौषधिपूर्यमाणम्।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः॥२॥

ॐ श्रीखंडगोरोचनागरुक्तचंदनदूर्वापद्मकसिद्धार्थकुंदनंदावर्तमालतीकुसुमतिलयवब्रीहि-रूप्यकांचनसमुद्रनद्युभय-तटमृत्तिका-भूम्यपतितपवित्रगोमयोपेत-समस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अनंतदर्शनाय पवित्रांगाय झ्रौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । श्रीखंडादिकलशाभिषेकः ।

(३) वायव्यदिशि स्थापितदिव्यमृत्तिकादि अभिषेक

(इस कुंभ में समुद्र, नदी के तट की मिट्टी, पर्वत की मिट्टी, वामी की मिट्टी, सरोवर आदि की मिट्टी, घी, दूध, दही और इक्षुरस मिश्रित समस्ततीर्थ जल भरा हो, ऐसे कुंभ से आगे के श्लोक व मंत्र पढ़कर अभिषेक करें।)

वायोर्दिशि स्थापितचारुकुंभं, स्वपंचगव्योत्तममृत्प्रपूर्णम् ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः॥ ३ ॥

ॐ समुद्रनदी-उभयतटगिरिवल्मीकपद्मसरोवरमृद्वृषभकरिशूकरशृंगदंष्ट्राक्षीर्णमृत्तिका-भूम्यपतितपवित्रगोमयमूत्र-घृतक्षीरदधिइक्षुरसमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अनंतवीर्याय परमपवित्राय झ्रौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । दिव्यमृत्तिकादि पंचगव्यकलशाभिषेकः ।

(४) ईशानदिशि स्थापितसहदेव्यादिकलशाभिषेकः

(इस कुंभ में सहदेवी, गिलोय, शमी, शतावरी, माका, प्रियंगु, विष्णुकांता इन सप्तौषधि को मिलाकर तीर्थजल से भरे कलश से अभिषेक करें।)

ईशानकाष्ठास्थितपूर्णकुंभं, प्रपूर्यमाणं सहदेविकाद्यैः ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ४ ॥

ॐ सहदेवीगलूचीशमीशतावरीप्रियंगुभृंगराजविष्णुक्रान्त्यभिधानसप्तौषधिमिश्रिततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमय-मंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अनंतसुखाय उत्तमसंहननाय झ्रौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । सहदेव्यादिसप्तौषधिकलशाभिषेकः ।

द्वितीय आवरण में स्थापित बीस कुंभों से अभिषेक

(इन बीस कुंभों में से पहले चार कलशों से अभिषेक करना है। इसमें भी एक-एक भाग के १-१ कुंभ उठाना है। बाद में आठ प्रकार के नीराजन द्रव्यों से नीराजन विधि करें। अनंतर शेष १६ कलशों से अभिषेक करें।)

पुष्पांजलि

द्वितीयावरणे पूर्व-द्वारदक्षिणतोऽशकात् । आरभ्य विंशतिघटा-नुद्धरामो यथाक्रमम् ॥

कलशोद्धरणक्रमविध्यवधानाय द्वितीयावरणे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(द्वितीय पंक्ति में पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

विल्वादि फलपंचक कलशाभिषेक

(बेल, भिलावा, आम, लवंग और जायफल चूर्ण से मिश्रित जलयुक्त द्वितीय आवरण के पूर्वद्वार के दक्षिण भाग से एक कलश लेकर अभिषेक करें।)

अत्रादिमांशे परिवर्तमानं, बिल्वादिसंपूरितचारुकुंभं ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ १ ॥

ॐ बिल्वभल्लातकम्रलवंगजातिफलपंचकोपेत-समस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं घातिक्षयकराय झ्रौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । बिल्वादिफलपंचककलशाभिषेकः ।

(आगे का पद्य व मंत्र बोलकर द्वितीय आवरण के द्वितीयभाग से प्रथम कलश लेवें)

पदे द्वितीये परिवर्तमानं, पलासकाद्यौषधपूर्णकुंभम् ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ २ ॥

ॐ पलाशान्यग्रोधाश्वत्थौदुंबराग्र-जंबूखर्जूरशमीत्वग्मिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं सर्वसत्त्वहितंकराय वीतरागाय झ्रौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । पलाशादित्वक्कायकलशाभिषेकः ।

(आगे का पद्य व मंत्र बोलकर द्वितीय आवरण के तृतीय भाग से एक कलश लेकर अभिषेक करें)

पदे तृतीये स्थितहेमकुंभं, शतावरी मुख्यमहौषधाद्यम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ३ ॥

ॐ शतावरीकुमारीसहदेवीदूर्वामृतसिंहिव्याघ्रीबलामूलाष्टकोपेतसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञाय तीर्थकराय झौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । शतावर्यादिमूलाष्टकलशाभिषेकः ।

(आगे का पद्य व मंत्र बोलकर द्वितीय आवरण के चतुर्थ भाग से प्रथमकलश लेकर अभिषेक करें।)

पदे चतुर्थे स्थितहेमकुंभं, सिद्धार्थकाद्यौषधिपूर्वमाणम् ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ४ ॥

ॐ सिद्धार्थचंदनवचाकोष्ठकर्कौलैला-लवंगजातिफलकर्पूराद्यनेकसुगंधद्रव्यसंदोहमोदसुरभीकृताशेषदिग्-वधूवदनया सर्वौषध्या विमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं सर्वनसुरासुरपूजिताय परमार्हन्त्यमहिम्ने झौं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा । सिद्धार्थादिकलशाभिषेकः ।

एवं प्रतिमाशुद्धिं विधाय वक्ष्यमाणष्टविधनीराजनं कुर्यात् ।

(इस प्रकार प्रतिमाओं की शुद्धि करके आगे कही विधि से नीराजन करें—आगे लिखी वस्तुओं को लेकर भगवान के सामने अवतरण विधि से ३ बार उतारकर आगे लिखित दिशाओं में रखते जावें।)

अष्टविधनीराजना विधि

उपजातिछंद— त्रैलोक्यरक्षामणिमहर्दीश-मष्टप्रकारैरवतारयेऽर्थैः ॥

त्रिवारमामस्तकमापदाब्ज-मन्वीदृशोऽस्य स्नपनक्रमः स्यात् ॥

प्रकृतक्रमविधि-अवधानाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् । (प्रतिमाओं के सामने पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

(आगे के श्लोक व मंत्र से अक्षत अवतरण करके पूर्वदिशा में रखें।)

उपजातिछंद— वीतक्षतार्द्रक्षतसौरभाढ्य - प्रसूनपूर्णांजलिनांजसार्धम् ।

पतिं जिनानामवतारयामि, रत्नत्रयं निक्षितमाप्तुकामः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं बहुविधपुष्पाक्षतपरिपूर्णपाणिपात्रेण भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि अस्माकमक्षतानि विदधातु भगवान् स्वाहा । पुनरप्यक्षतावतरणम् । इदं पूर्वदिशि क्षिपेत् ।

(आगे के श्लोक व मंत्र से गोमयपिंड अवतरित करके आग्नेय दिशा में रखें।)

भूतलापतितगोमयपिंडै - दीर्घगुच्छसितसर्षपयुक्तैः ।

अर्हतोऽवतरणं विदधे यं, कर्तुमात्मदुरितौघविलोपम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं दूर्वाकुरसितसर्षपयुक्तै-हर्षितगोमयपिंडकै-र्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि दुरितमस्माकमपनयतु भगवान् स्वाहा ।

गोमयपिंडावतारणम् । इदमग्नेर्दिशि क्षिपेत् । (आग्नेयदिशा में रखें।)

(आगे के श्लोक व मंत्र को पढ़कर भस्म के पिंड का अवतरण करके दक्षिण दिशा में रखें।)

शुद्धगोमयज-भस्मकपिंडै-र्गंधवारिलुलितै-र्जिनप्रभोः ।

अग्रतोऽवतरणं वितन्महे, दग्धुमात्मदुरितेन्धनोत्करम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं भस्मकपिंडैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि अस्माकमष्टविधकर्मणि भस्मीकरोतु भगवान् स्वाहा ।

भस्मपिंडावतरणं । इदं दक्षिणदिशि क्षिपेत् । (दक्षिण दिशा में रखें।)

(आगे के श्लोक-मंत्र से भात के पिंड का अवतरण कर नैऋत दिशा में रख दें)

उपजातिछंद—

पीयूषपिंडोपमपांडुराभ-स्वादिष्टशाल्योदनवृत्तपिंडैः ।

विदांवर ! त्वामवतारयामि, क्षेमं सुभिक्षं जगतां विधित्सुः ॥४॥

ॐ ह्रीं क्रों कुंदेदुधवलवर्तुलौदनपिंडकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि क्षेमसुभिक्षमस्माकं करोतु भगवान् स्वाहा ।
शाल्यन्नपिंडावतरणं । इदं नैऋतेर्दिशि क्षिपेत् । (नैऋत्य दिशा में रखें)

(पुनः छोटी-छोटी मिट्टी की कलशी श्वेत, कृष्ण, हरित, पीली, लाल रंग से रंग कर आगे के श्लोक से भगवान के सामने अवतरण करके पश्चिम दिशा में रख दें)

रूपाग्निवार्ध्वगुलवक्त्रभूमि-समुच्छ्रयैः सच्चतुरस्रकैस्तैः ।

सपंचवर्णैरवतारये त्वां, श्रीवर्द्धनार्थं जिनवर्द्धमानैः ॥५॥

ॐ ह्रीं क्रों सितासितहरितपीतलोहितवर्द्धमानकैर्-भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि, श्रियमस्माकं वर्द्धयतु भगवान् स्वाहा
पंचवर्णवर्द्धमानावतरणं । इदं पश्चिमदिशि क्षिपेत् । (पश्चिम दिशा में रखें)

(आगे के श्लोक व मंत्र पढ़कर दोनों तरफ जलती हुई बत्ती वाले दीपों से अवतरण करें)

अनंतनिर्भासनिजावबोधं, प्रध्वस्तदुर्मोहमहांधकारं ।

सद्धर्मदीप्त्यै जिनभानुमंतं, माणिक्यदीपैरवतारयामि ॥६॥

ॐ ह्रीं क्रों पद्मरागमणिभिरिव देदीप्यमानकर्पूरपारिदीपैरिवोभयपार्श्वप्रज्ज्वलितोत्कया भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि अस्माकं धर्मं उज्ज्वलं करोतु भगवान् स्वाहा ।

दीपावल्यावतरणं । इदं वायोर्दिशि निक्षिपेत् । (वायव्य दिशा में रखें)

(आगे के श्लोक-मंत्र से जल की अंजलि लेकर उसमें कपूर मिलाकर अवतरण करके उत्तर दिशा में रखें)

शीताम्भसा पाणिपुटस्थितेन, युक्तेन कर्पूरसुगंधिपुष्पैः ।

नीराजनं नीरजसो जिनस्य, निर्वर्तये शीतसमाधिसिद्धयै ॥७॥

ॐ ह्रीं क्रों सुरभिशिशिरनिर्मलसलिलपूर्णेनांजलिना भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि विमलशीतलध्यानमस्माकं उत्पादयतु भगवान् स्वाहा ।

सलिलांजल्यावतरणं । इदं उत्तरदिशि निक्षिपेत् । (उत्तर दिशा में छोड़ें)

(आगे के श्लोक व मंत्र पढ़कर थाल में फलों को लेकर अवतरण करके उत्तर दिशा में रखें)

जंबीरजंबूकदलीकपित्थ-फलोत्तमाग्रादिफलोत्तमाद्यैः ।

निर्वर्तये नित्यफलं जिनेंद्रं, नित्यामृतानंदफलोपलब्धयै ॥८॥

ॐ ह्रीं क्रों पवित्रतरसमुत्पन्नक्रमुकनालिकेरमातुलुंगपनसदाडिमजम्बाग्रफलैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि अस्माकमाशाफलं संपादयतु भगवान् स्वाहा ।

फलावतरणं । इदमैशान्यां दिशि निक्षिपेत् । (ईशान दिशा में रखें)

॥ इत्यष्टविधनीराजनम् ॥

शुभप्रसूनैर्मणिभिर्विशुद्धै-स्तथा समंत्रैरथवांगुलीभिः ।

आराधयाम्यष्टशतं सुरेन्द्रै-राराध्यपादं भगवज्जिनेंद्रम् ॥९॥

(आगे के मंत्र से १०८ बार या २७ बार पुष्पों से जप करें)

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा श्रीं नमः ॥ इति मंत्रं सपुष्पकं अष्टोत्तरशतवारं वा जपेत् ।

अथावाहनादिविधिः

(अब आवाहनन आदि विधि करें)

शार्दूलविक्रीडित—वेधश्चेतसि मे स्फुरंतमपि च, त्वामाव्हयामि प्रभो! शुद्धस्वात्मकृतप्रतिष्ठमपि च, त्वामत्र संस्थापये ॥
 आसन्नं वितनोमि सर्वगमपि, त्वां निर्विकारं सदा । पाद्याद्यैश्च पुनामि केवलमिदं, सर्वं हि पूजाक्रमः ॥
 प्रकृतक्रमविध्यवधानाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् । (प्रतिमा के आगे पुष्पांजलि क्षेपण करें)

स्थापना

आहूता भवनामरैरनुगता, यं सर्वदेवास्तथा । तस्थौ यस्त्रिजगत्सभांतरमही-पीठाग्रसिंहासने ॥

यं हृद्यं हृदि सन्निधाय सततं, ध्यायंति योगीश्वराः । तं देवं जिनमर्चितं कृतधिया-मावाहनाद्यैर्भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं एहि एहि संवौषट् नमोऽर्हते स्वाहा । आवाहनमंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः नमोऽर्हते स्वाहा ॥ स्थापना मंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् नमोऽर्हते स्वाहा । सन्निधापनमंत्रः ।

तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथगिमान् मंत्रानुच्चारयन् पुष्पांजलिं प्रयुंजीत ।

(जल से भगवान के चरणों का प्रक्षालन करके उपर्युक्त मंत्रों से स्थापना आदि करें- पंचगुरु मुद्रा बनाकर आगे लिखे श्लोक व मंत्र से पंचगुरुमुद्रा लिखे।)

वसंततिलकाछंद—

आराधितौ सुरवरैर्बहुभक्तियुक्तै-र्योसंस्तुतौ मुनिवरैर्विविधर्द्धियुक्तैः ।

श्रीपादयोजिनवरस्य तयोः पुरस्ताद्-बध्नामि विघ्नहरपंचजिनेन्द्रमुद्राम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं असि आ उसा नमः स्वाहा । पंचगुरुमुद्राबंधनम् ।

(आगे के श्लोक व मंत्र पढ़कर जिनप्रतिमाओं का स्पर्श करें)

उपजातिछंद—

अनन्यसाधारणसद्गुणान्तां, तव स्मरन्नस्तमितस्मरार्तेः ।

जिनेन्द्र ! साक्षात्कृतसर्वतत्त्व ! त्वामात्मनः सन्निहितं करोमि ॥३॥

ॐ उसहाय, दिव्यदेहाय, सज्जोजादाय, महप्पण्णाय, अणंतचउट्ठाय, परमसुहपइट्ठाय, णिम्मलाय, सयंभुवे, अजरायरपदपत्ताय, परमपदाय, मम इत्थवि सण्णिहिदाय स्वाहा ।

इदमुच्चारयन् प्रतिमां परामृशेत् । इत्यावाहनादिविधानम् ।

(जिन प्रतिमा के चरणों में जलधारा छोड़ें - आगे के श्लोक व मंत्र पढ़कर)

मालिनी छंद—

विजयविभवविद्या-वीर्यमौदार्यमाज्ञां, श्रुतिमतिधृतिनीतीः, शांतिकांती प्रसादात् ।

दृगवगमचरित्रं सिद्धिवृद्धिप्रसिद्धी-र्वितरतु जगतोऽत्र स्थापितः श्रीजिनेन्द्रः ॥४॥

उपजातिछंद—

सुरेश्वरो यस्य सुराचलाग्रे, पाद्यक्रियामातनुते स्म भक्त्या ।

तस्य प्रभोः पाद्यविधिं विधास्ये, निपात्य पादे वरवारिधाराम् ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं नमोऽर्हते स्वाहा । पाद्यमंत्रः ।

(आगे के श्लोक व मंत्र को बोलकर भगवान के मुख के पास जलधारा डालें, यह आचमन क्रिया है-)

अनुष्टुप्छंद—

श्रीतीर्थक्षेत्रियस्यास्य, मेरुमूर्ध्निव देवराट् ।

हस्ते निपात्य वार्धारां, करोम्याचमनक्रियाम् ॥६॥

ॐ ह्रीं इवीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा । आचमनमंत्रः ।

इतिपाद्याचमनविधानम् (पाद्य व आचमन विधि हुई ।)

अष्टद्रव्य से पूजा

ॐ ह्रीं परब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ एवं गंधादि ॥ (इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावे)
 स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥
 हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥७॥
 ॐ ह्रीं परब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ततः शेषकलशाभिषेक : (आगे शेष कलशों से अभिषेक करें)

इसमें भी द्वितीय आवरण में से प्रथमपद का द्वितीय कलश लेवें पुनः द्वितीय पद का द्वितीय कलश, पुनः तृतीय पद का द्वितीयकलश पुनः चतुर्थ पद का द्वितीय कलश लेवें ।)

ऐसे ही द्वितीय आवरण के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थपद के तीसरे-तीसरे कलश लेवें पुनः चौथे-चौथे कलश लेवें, अनंतर पांचवें-पांचवें कलश क्रम से उठावें । इस प्रकार आगे के सोलह कलशों से अभिषेक करें ।)

पदे स्थितं पंचमकेऽत्र कुम्भं, प्रपूरितं लोहितचंदनेन ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥१॥

ॐ रक्तचंदनविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

अनेन मंत्रेणावशिष्टसर्वकलशैरभिषेचयेत् । (इस मंत्र से शेष सर्व कलशों से अभिषेक करें)

अधिष्ठितं षष्ठपदं करीरं, श्रीखंडतीर्थोदकपूर्वमाणं ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥२॥

ॐ श्रीगंधमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

संस्नापितं सप्तमके पदेऽस्मिन्, विशिष्टचोचोदकपूर्णकुंभम् ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥३॥

ॐ नालिकेरफलसलिलपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

पदेऽष्टमे स्थापितमाग्नमुख्य-फलोत्करोद्यद्रसपूर्णकुंभम् ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥४॥

ॐ आग्ननारिङ्गचोचकदल्यामलक्रीफलरसपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ॥

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

पदे निषण्णं नवमे करीरं, पुण्ड्रेक्षुजातस्वरसप्रमाणम् ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥५॥

ॐ इक्षुरसपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

संस्थाप्यमानं दशमे पदेऽस्मिन्, सौवर्णकुंभं सितचूर्णपूर्णम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥६॥

ॐ शर्करापूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

एकादशे स्थापितकुंभमेनं, पदेऽत्र पाद्यार्थविशेषपूर्णम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥७॥

ॐ समूलपद्मसिद्धार्यदूर्वामत्ततृणाक्षतपाद्यद्रव्यमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

समाश्रितद्वादशमंशमेतं, कुटं प्रतीताचमनार्थपूर्णं ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥८॥

ॐ धातकीकुसुमकर्पूरजातीफल-लवंगाद्याचमनद्रव्यमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

त्रयोदशांशस्थितमर्घ्यकुंभ-मनर्घ्यमर्घ्यार्थविशेषपूर्णम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥९॥

ॐ पयःक्षीरकुशोशीर-तिलाक्षतयवार्घ्यद्रव्यमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

चतुर्दशांशे रचितप्रतिष्ठं, हय्यंगवीनान्वितहेमकुंभं ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ १० ॥

ॐ घृतपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

संस्थापितं पंचदशांशमध्ये, सक्षीरपूरोदरचारुकुंभं ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ११ ॥

ॐ क्षीरपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

न्यस्तं घटं षोडशपूरणांशे, भृशं शशांकोज्ज्वलशुद्धदध्ना ।

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥१२॥

ॐ दधिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

हटद्घटं सप्तदशांशलब्ध-प्रतिष्ठमत्युज्ज्वललाजपूर्णम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥३९॥

ॐ लाजपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

अष्टादशांशस्थितलाजचूर्ण-मुद्गादि चूर्णोत्कर पूर्णकुंभम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ४ ॥

ॐ लाजाचूर्णमुद्गादिचूर्णपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

एकोनविंशांशकृतप्रतिष्ठं, कल्कार्थपूर्णं कलधौतकुंभम् ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ५ ॥

ॐ सहदेव्यपामार्ग-माकंदलक्ष्मीसंपंचपत्राख्य-कल्कद्रव्यविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

निवेशितं विंशतिपूरणांशे, कुंभं भृशं तत्परिमार्जनार्थैः ॥

उद्धृत्य तेनोद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥६॥

ॐ सरित्समुद्रतीरादिदिव्यमृत्स्वरूपपरिमार्जनद्रव्यविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन मणिमयमंगलकलशेन भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

अनंतर तृतीय लाइन के ३६ कलशों से अभिषेक

तृतीयावरणे पूर्व-द्वारदक्षिणतोंऽशकात् । समारभ्यैव षट्त्रिंशद्-घटानुद्धर्तुमुत्सहे ॥

ॐ कलशोद्धरणक्रमविध्यवधानाय तृतीयावरणे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(आगे के श्लोक व मंत्र बोलकर तीन-तीन कलशों से अभिषेक करें)

(तीन कलशों में पंच उदुंबर, जामुन, आम, गुडपुष्प—महुवा, शमी आदि की छाल के चूर्ण से मिश्रित जल लेवें)

उपजातिछंद—

कषायसंसिद्धजलप्रपूर्णांस् ततस्त्रिकोष्ठ-स्थितहेमकुंभान् ।

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥१॥

ॐ पंचोदुंबरजम्बाम्रगुडपुष्पशमीत्वग्रूपकषायद्रव्यविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(आगे के तीन कुंभों में जौ का चूर्ण मिश्रित करके आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर अभिषेक करें)

यवैकलोलीभवदम्बुपूर्णांस्-ततस्त्रिकोष्ठ-स्थितहेमकुंभान् ।

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ २ ॥

ॐ यवमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्हत्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में दर्भचूर्ण मिश्रित कर आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर तीन कलशों से अभिषेक करें)

सद्दर्भगर्भोत्तमवारिगर्भास्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ३ ॥

ॐ दर्भविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में तिलमिश्रित करके आगे के श्लोक व मंत्रों से अभिषेक करें)

तिलावलीलोलजलानुलीनांस्-ततस्त्रिकोष्ठ स्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ४ ॥

ॐ तिलविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में पलास, खैर, आम्र, सहदेवी, हल्दी, दाभ, बड़, बेल, कुंद, अहिनेत्र, पाषाणभित्, शमी (सौंदड़) बालुक, उंबर, कांतलक्ष्मी, एकदल, पद्मक, पंचपत्र आदि मार्जन—स्वच्छता करने वाले द्रव्यों से मिश्रित जल भरें)

अभ्यंतरावर्जितमार्जनार्थास्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ५ ॥

ॐ पलाशखदिराम्रशीसहदेवीनिशाकुशान्यग्रोधबिल्वकुंदाहिनेत्रपाषाणभित्शमीवालुकोदुंबराक्रान्तलक्ष्मी-
एकदलपद्मकपंचपत्रात्मकमार्जनद्रव्यविमिश्रितसमस्तवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में कमल, इन्द्रवल्ली, अपामार्ग, पीपल, पलाश, लौंग, (लवंगपत्र) तिल, प्रियंगु, मूंग, श्वेत सरसों, जौ आदि मंगल द्रव्यों से मिश्रित जल भरें)

अंतर्मिलन्मंगलवस्तुवारींस्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ६ ॥

ॐ पद्मेन्द्रवल्क्यपामार्ग-अश्वत्थपलाशलवंगपत्र-तिलप्रियंगुमुद्गासिद्धार्थ्यवात्मकमंगलद्रव्यविमिश्रितसमस्त-
तीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में मालती, मोगरा, जाई, केवड़ा, नवमल्लिका, पाटली, करवीर आदि सुगंधित पुष्पों से मिश्रित जल भरें)

सपुष्पसंश्लेषणमेघपुष्पांस्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ७ ॥

ॐ मालतीमल्लिकाजातीकेतकी-नवमल्लिकापाटलीकरवीरादिसुगंधिपुष्पविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणि-
मयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में लौंग आदि सर्वौषधि मिश्रित जल भरें)

सर्वौषधोपस्कृतसारवारींस्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ८ ॥

ॐ लवंगादिसर्वौषधिविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में लोहा, तांबा, चांदी, सोना, कसीस, सीसा, पारा और पीतल इनकी भस्म से मिश्रित जल भरें)

लोहाष्टकक्षोदपयः प्रपूर्णास्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ६ ॥

ॐ अयस्ताम्राजुनस्वर्णत्रपसौराष्ट्रसीसपारदात्मकाष्टलोहरजोविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमय-
मंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं हूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में हीरा, वैडूर्य, पद्मराग, प्रवाल, पुष्पराग, गोमेद, इन्द्रनील, मरकत, मोती इन नव रत्नों से मिश्रित जल भरें)

रत्नप्रभापिंजरितांबुपूर्णास्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ १० ॥

ॐ वज्रवैडूर्यपद्मरागप्रवालपुष्परागगोमेदकेन्द्रनीलमरकतमौक्तिकात्मकनवरत्नविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरि-
पूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं हूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में गंध द्रव्य और पुष्प आदि मिला हुआ जल भरें)

ससर्वगंधांबुभृताहतालींस्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ ११ ॥

ॐ ससर्वगंधद्रव्यप्रसूनमिलितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं हूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(तीन कुंभों में केशर, अगरु, कर्पूर, रक्तचंदन, श्वेतचंदन, हल्दी, खस आदि सुगंधित द्रव्यों से मिश्रित जल भरें)

निशारजोमंजुलपुंजपूर्णास्-ततस्त्रिकोष्ठस्थितहेमकुंभान् ॥

उद्धृत्य तैरुद्धृतलोकमीशं, संस्नापयामि स्नपितं सुरेन्द्रैः ॥ १२ ॥

ॐ काश्मीरागुरुकर्पूरचंदनोशीरवालसर्वगंधप्रसूनरजःस्वरूपनिशाचूर्णविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमय-
मंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं हूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा ।

(इस प्रकार इन बारह श्लोक व मंत्रों से तीन-तीन कलशों द्वारा छत्तीस कलशों से अभिषेक किया गया है।)

चतुर्थपंक्ति के ५२ कलशों द्वारा अभिषेक

चतुर्थावरणे पूर्व-द्वारदक्षिणतोऽशकात् । उद्धरामि द्विपंचाशद्-घटान् गंधांबुपूरितान् ॥

ॐ कलशोद्धरणक्रमविध्यवधानाय बाह्यावरणेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(बाहर वाली चौथी लाइन में पुष्पांजलि छोड़ें)

पुनः आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर सर्वोपधि आदि सुगंधित द्रव्य मिश्रित बावन कलशों से अभिषेक करें-

तत्सर्वगंधांचितपुण्यतीर्थ-वाःपूर्णबाह्यावरणस्थकुंभान् ।

उद्धृत्य तैरुद्धृतसर्वलोकं, संस्नापये स्नापकमर्हदीशम् ॥ ११ ॥

ॐ लवंगागरुकर्पूरवालोशीरचंदनकाश्मीरमुस्तनिर्यासकुष्ठैलापत्रिकामुराजातीफलनिशामांसीकर्कोलपंचपत्रमुकुल-
गंधद्रव्यचूर्णविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितैर्मणिमयमंगलकलशैर्भगवदहर्त्प्रतिकृतिं स्नापयामः ।

ॐ श्रीं ह्रीं हूं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः नमोऽर्हते स्वाहा । (यहाँ तक ५२ कलशों से अभिषेक हुआ।)

अथ चतुर्विधावतरणम्

(अब चार प्रकार की अवतरणविधि है- पंचरंगी भात के पिंड से अवतरण करें)

मालिनीछंद—

जिनतनुगतमेवं स्नेहलेपं व्यपोह्य, प्रवरकनकपात्रे स्थापितैरानुपूर्व्या ।

अरुणहरितकृष्णश्वेतपीतान्नपिंडैः, पृथगिह गतदोषं देवमावर्तयामि ॥१॥

ॐ ह्रीं क्रों पंचवर्णवर्तुलौदनपिंडकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि क्षेमं सुभिक्षमस्माकं करोतु भगवान् स्वाहा ।
वर्णान्नावतरणं ।

(पुष्प और अक्षत अंजुली में भरकर अवतरण करें)

वीताक्षताद्राक्षतसौरभाढ्य-प्रसूनपूर्णाजलिनांजसार्थम् ।

पतिं जिनानामवतारयामि, रत्नत्रयं निःक्षतमाप्तुकामः ॥२॥

ॐ ह्रीं क्रों बहुविधपुष्पाक्षतपरिपूर्णपाणिपात्रेण भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि
अस्माकं अक्षतानि विदधातु भगवान् स्वाहा ॥ पुष्पाक्षतावतरणम् ।

(पांच मिट्टी की छोटी-छोटी कलशी पांच रंगों से रंग कर अवतरण करें)

रूपाग्निवार्ध्यागुलवक्रभूमि-समुच्छ्रयैः सच्चतुरस्रकस्तैः ।

संपंचवर्णैरवतारये त्वां, श्रीवर्धनार्थं जिनवर्धमानैः ॥३॥

ॐ ह्रीं क्रों सितासितहरितपीतलोहितवर्धमानकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि श्रियमस्माकं वर्धयतु भगवान्
स्वाहा । पंचवर्णवर्धमानावतरणं ।

(जंभीरी, नींबू, जामुन, कैथा, केला, आम आदि फल थाल में लेकर उतारें)

जंबीरजंबूकदलीकपित्थ-फलोत्तमाप्रादिफलोत्तमौघैः ।

निर्वर्तये नित्यफलं जिनेंद्रं, नित्यामृतानंदफलोपलब्धैः ॥४॥

ॐ ह्रीं क्रों पवित्रतरसमुत्पन्नैः क्रमुकनालिकेरमातुलिंगपनसदाडिमजंब्याम्रफलैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि
अस्माकं आशाफलं संपादयतु भगवान् स्वाहा । फलावतरणं ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥

अथ चतुष्कोणकुंभाभिषेकः

(अब चतुष्कोण कुंभों से अभिषेक करें)

गद्य—ॐ सकलभुवनजनादेयगुणजातजातरूपमयैरपि निजांगसितातिबद्धनूतनवसनसमालंकृतैः बहुधान्यप्रतिष्ठितैरपि निजविशालोद्ग-
विवरप्रतिष्ठितापरिमितभुवनैः निजनिखिलांगन्यस्तप्रशस्तसूत्रैरपि सूत्रन्यासबहिर्भूतैः महीनीयमहत्त्वप्रसिद्धैरपि सजातीयध्वगणनावर्जितैः
विशिष्टतमसुवृत्तजुष्टैरपि सुवृत्तस्वकीयसभाबहिष्कृतैः । स्वतः प्रसिद्धमंगलैरपि परमप्रसिद्धमंगलभावैः । अनवद्यजीवनैरपि मणिकनका-
सक्तजीवनैः । परित्यक्तमहाशयैरपि कमलोन्मुखैः । आकंठपरिपूर्णमृतैः वदनगतफलैः । विरुद्धविविधधर्माध्यासैरपि विबुधजनसमर्चितैः
चतुर्भिर्महीभिः ।

स्रग्धराछंद— चत्वारः सारतोयां-बुधय उत घनाः पुष्करावर्तकाद्याः । निर्यद्गुग्धाः स्तना वा किमु सुरसुरभेरित्यमाशंक्यमैना ।

अच्छाच्छस्वाददिव्यत्परिमलविलसत्तीर्थवारिप्रवाहैः । कुंभैरेभिश्चतुर्भि-र्युगपदभिषवं कुर्महे भव्यबंधोः ॥ १ ॥

चत्वारिमंगलं—अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्वारि लोगुत्तमा—अरिहंत
लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्वारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत

सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।
त्रिभुवनदंडकमंत्रेण^१ चतुःकुंभाभिषेकं विदध्यात् ।

शार्दूलविक्रीडित — आहार्यस्फुटसौरभामलजलैः, संसिद्धिकामोदिभिः ॥ श्रीखंडाक्षतपुष्पहव्यहिमरुग्-दीपैः सुधूपैः फलैः ॥

अर्घ्यैर्घातिविघातजातपरमा-नंदावबोधास्पदं । त्रैलोक्यार्चितमर्चयामि चरण-द्वंद्वं जिनेन्द्रप्रभोः ॥२॥

ॐ नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । अर्चना ।

यो नैर्मल्यगुणादिभूषिततनु-दीप्त्या बलेनोर्जसा । युक्तश्चानपवर्त्यकायुरनिशं, सक्तश्च मुक्तिश्रिया ॥

नार्थस्तस्य जगत्प्रभोः स्नपनतः, किं त्वाप्तुमेतान्गुणान्-इन्द्राद्यैरभिषिक्त एष भगवान्, पायादपायाज्जिनः ॥३॥

इंद्रवज्राछंद —

शांतिं च कांतिं विजयं विभूतिं, तुष्टिं च पुष्टिं सकलस्य जंतोः ।

दीर्घायुरारोग्यमभीष्टसिद्धिं, कुर्याज्जिनस्नानजलप्रवाहः ॥४॥ आशीर्वादः ।

(आगे के श्लोक से पुष्पवृष्टि करें)

मालिनीछंद —

कमलवकुलवालोट्फुल्लकल्हारमल्ली-कुमुदकुरुवकोद्यद्-यूथिकाकेतकीनाम् ।

मरुवकदवनानां, मालतीचंपकाना-मिह जिनपतिशीर्षे, वृष्टिमुच्चैस्तनोमि ॥५॥

इति पुष्पवृष्टिः ।

अथ मध्यकुंभाभिषेकः (अब मध्य के पूर्णकुंभ से अभिषेक करें)

गद्य — निजांगसंगतनिखिलनिरतिशयगंधद्रव्यामोद-प्रसरसमाकृष्टमंजुगुंजन्मधुकरमधुराराव-बधिरितदिगंतरालेन । विविधमालालंकार-विशेषविराजमानमहामूर्तिनिर्वर्तितसर्वजननयनानंदेन । सर्वतोभवभासमानमाननीयविशदगुणकलाप-समुत्पादितसकलजनचित्तचमत्कारेण । अनन्यसाधारणमहत्त्वमहोन्नतिमहालक्ष्मीसमालक्षितेन । शिष्टजनसमुदयसमीहितसंपादन समुपपन्नशिष्टप्रतिपालनेन । दुस्सहबुरितव्रात-विध्वंसनारूपदुष्टनिग्रहनिरगलेन । चतुर्भद्रोपायशक्तिरत्नत्रयसाधनभावसमासाधितसकलविबुधजनपूजनेन । मणिकनकादिस्मस्तसारवस्तुविशेषनिवासेन । जिनमहासाधनप्रधानभावकृतार्थीकृतनिजजीवनेन । समलंकृताखिलसुवृत्तकलशशभामध्यमध्यासीनेन । सकलकलशराज-श्रियातिशुभतानेन मध्यकुंभेन ।

मालिनीछंद —

सकलभुवननाथं, तं जिनेंद्रं सुरेन्द्रैः । अभिषवविधिमाप्तं, स्नातकं स्नापयामि ।

यदभिषवणवारां, बिंदुरेकोऽपि नृणाम् । प्रभवति हि विधातुं, भुक्तिः सन्मुक्तिः लक्ष्मीः ॥ १ ॥

(गंधोदकवंदन करके नेत्र, ललाट आदि उत्तम अंगों में गंधोदक लगावें)

शार्दूलविक्रीडित —

धातिव्रातविघातजातविपुल-श्रीकेवलज्योतिषो । देवस्यास्य पवित्रगात्रकलनात्, पूतं हितं मंगलम् ॥

कुर्याद्भव्यभवार्तिदावशमनं, स्वमोक्षलक्ष्मीफल-प्रोद्यद्धर्मलताभिवर्धनमिदं, सद्गंधगंधोदकम् ॥१॥

यस्योदारदयस्य जन्म हरतो, जन्माभिषेकोत्सवं । चारौ मेरुमहीधरस्य शिखरे, दुग्धैस्तु दुग्धोदधेः ॥

चक्रे शक्रगणो महागुणनिधेः, श्रीपादपद्मद्वयम् । तस्यैकादशधा महेन महता-माराध्यमाराधये ॥२॥

अथ एकादशमहामहः (पूजा)

(अब ग्यारह प्रकारी पूजा करें अर्थात् अष्टद्रव्य चढ़ाना, अर्घ्य चढ़ाना, शांतिधारा करना और पुष्पांजलि चढ़ाना ये ग्यारह प्रकारी पूजा है)

शार्दूलविक्रीडित — यत्रागाधविशालनिर्मलगुणे, लोकत्रयं सर्वदा । सालोकं प्रतिबिंबितां प्रविशतां, नित्यामृतानंदनम् ॥

सर्वाब्जानिमिषास्पदं स्मृतिगतं, तापापहं धीमता-मर्हत्तीर्थमपूर्वमक्षयमिदं, वार्धारया धारये ॥१॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

१. 'त्रिभुवनदण्डकमंत्रेण' पद से चत्तारिमंगल पाठ लिया जाता है ।

गंधश्चंदनगंधबंधुरतरो, यद्विव्यदेहोद्भवो । गंधर्वाद्यमरस्तुतो विजयते, गंधान्तरं सर्वतः ॥

गंधादीनखिलानवैति विशदं, गंधादिमुक्तोऽपि यस्-तं गंधाद्यघगंधमात्रहतये, गंधेन संपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे परमसहजसौगंध्यबंधुराय गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

इंद्राहीन्द्रसमर्चितैरनुपमैर्दिव्यैर्वलक्षाक्षतैः । यस्य श्रीपदसन्नखेदुसविधे, नक्षत्रजालायितम् ॥

ज्ञानं यस्य समक्षमक्षतमभूद्, वीर्यं सुखं दर्शनम् । यायज्यक्षतसंपदे जिनमिमं, सूक्ष्माक्षतैरक्षतैः ॥३॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अक्षयफलप्रदाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्य द्वादशयोजने सदसि सद्-गंधादिभिः स्वोपमा- न्यर्थान् सुमनोगणान् सुमनसो, वर्षन्ति विष्वक् सदा ॥

यः सिद्धिं सुमनः सुखं सुमनसां, स्वं ध्यायतामावहेत् । तं देवं सुमनोमुखैश्च सुमनो-भेदैः समभ्यर्चये ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे सुमनःसुखप्रदाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्व्याबाधविवर्जितं निरुपमं, स्वात्मोत्थमत्यूर्जितम् । नित्यानंदसुखेन तेन लभते, यस्तृप्तिमात्यंतिकीम् ॥

यं चाराध्य सुधाशिनो ननु सुधा-स्वादं लभन्ते चिरम् । तस्योद्यद् रसचारुणैव चरुणा, श्रीपादमाराधये ॥५॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतसुखसंतृप्ताय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्यान्यस्य सहप्रकाशनविधौ, दीपोपमोऽप्यन्वहं । यः सर्वं ज्वलयन्ननंतकिरणै-स्त्रैलोक्यदीपोऽस्त्यतः ॥

येनोद्दीपितधर्मतीर्थमभवत्, सत्यं विभोस्तस्य सद्-दीप्त्या दीपितदिङ्मुखस्य चरणौ, दीपैः समुद्दीपये ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतदर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

येनेदं भुवनत्रयं चिरमभूद् - उद्धूषितं सोऽप्यहो । मोहो येन सुधूपितो निजमहो-ध्यानाग्निना निर्दयम् ॥

यस्यास्थानपदस्थधूपघटजै-र्धूमैर्जगद् धूपितम् । धूपैस्तस्य जगद् वशीकरणसद्-धूपैः पदं धूपये ॥७॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे वशीकृतत्रिलोकनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्भक्त्या फलदायि पुण्यमुदितं, पुण्यं नवं बध्यते । पापं नैव फलप्रदं किमपि नो, पापं नवं प्राप्यते ॥

आर्हन्त्यं फलमद्भुतं शिवसुखं, नित्यं फलं लभ्यते । पादौ तस्य फलोत्तमादिसुफलैः, श्रेयःपदायार्चये ॥८॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अभीष्टफलप्रदाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंगं लाति मलं च गालयति यन्-मुख्यं ततो मंगलम् । देवोऽहं नृ वृषमंगलोऽभिविनुतै-स्तैर्मंगलैः साधुभिः ।

चंचच्चा मरतालवृंतमुकुर- मुख्येतरैर्मंगलैः । मुख्यं मंगलमिद्धसिद्धसुगुणान्, संप्राप्तुमारार्चये ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अरहंत इदं सकलमंगलद्रव्यार्चनं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः परममंगलेभ्यः स्वाहा । अर्घ्यं ।

मालिनीछंद — ज्वलितसकललोका-लोकलोकोत्तरश्री- कलितललितमूर्ते, कीर्तितेन्द्रैर्मुनीन्द्रैः ॥

जिनवर ! तव पादो-पान्ततः पातयामः । भवदवशमनार्था-मर्थतः शांतिधाराम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अरहंत इदं शांतिधारां गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं अहं नमः भद्रं भवतु जगतां, शांतिधारां

निःपातयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा । (शांतिधारा)

पुष्पेषोरिषवो वयं पुनरिदं, पुष्पेषु निःशेषकम् । निष्पीतानि मधुव्रतैर्वयमिदं, निष्पापसंसेवितम् ॥

इत्यालोच्य नमन्त्यपास्य मदमि-याशंकयन्तीशते । निष्पीताखिलतत्त्वपादकमले, पुष्पाणि निःपातये ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अरहंत इदं पुष्पांजलिप्रार्चनं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमोऽहंद्भ्यो ध्यातृभिरभीप्सितफल्देभ्यः

स्वाहा । (पुष्पांजलिः) इत्येकादशमहः ।

अथ कर्णवेधनम्

(कर्णवेधनक्रिया में आगे का श्लोक पढ़कर भगवान्—प्रतिमा के कानों में हीरे की कलम से स्पर्श करें)

निर्माणाह्वयनामकर्मकुशल-श्रीशिल्पिना कल्पिते । रन्ध्रे यस्य विशालकर्णयुगले, सूक्ष्माजिनाच्छादिते ॥

वज्रेण स्वकरस्थितेन मधवा - नाविशचकारैव ते । तद् बिंबस्य करोमि कर्णयुगले, वज्रेण तत्स्थापनं ॥१॥

(कर्णवेधन में वज्र की कलम से लेखन करें)

अथ चंदनचर्चनं

(आगे के श्लोक से प्रतिमा को चंदन लगावें)

कृत्वा यस्य पुरंदरोऽतिविभवाज्जन्माभिषेकोत्सवं । शय्यापादयति स्म दिव्यवपुषि, श्रीचंदनोद्धर्तनम् ॥

बिंबे तस्य च कारयामि कुलज-स्त्रीभिः समालंबनम् । श्रीखंडागरुजात्यकुंकुमलसत्कपूरकल्कद्रवैः ॥२॥

प्रोक्षणाधिकृतनारीभिर्जात्यकुंकुमश्रीखंडागरुकपूरलुलितचंदनचर्चनम् ।

(पति-पुत्र वाली सौभाग्यवती महिलाओं से केशर, चंदन, कपूर, अगुरु आदि सुगंधित वस्तुओं से बने हुये कल्कचूर्ण—चंदन का लेप करावें)

अथ कंकणबंधनम्

(श्वेत कच्चे सूत्र से प्रतिमाओं की दाहिनी भुजा में कंकणबंधन करें)

नाकानीतजिनैकभोग्यविविधा-लंकारमाल्यांबरैः । भक्त्या शक्रनियोगतश्च समलं-चक्रे शची यद्वपुः ॥

तन्मत्वा वरयोषिताप्रतिकृते-हस्ते त्रिवर्णोज्ज्वलम् । सूत्रं संप्रति बंधयामि यवसत्सिद्धार्थरत्नान्वितम् ॥३॥

दक्षिणभुजे षोडशाभरणात्मकं कंकणबंधनम् ।

अथ नामकरणविधानम्

सद्यः कोटिभवार्जिताघविलयो यन्नाममात्राद् भवेत् । यन्नाम्नामृषयः स्वदोषहतये, गृण्हन्ति कोटिं स्फुटम् ॥

मेरौ संव्यवहारनाम तनुते, यस्य प्रभोर्देवराट् । तद्बिंबस्य च यष्ट्रसम्मतमिदं, नामार्पणं कुर्महे ॥४॥

नामकरणार्थं प्रतिमोपरि कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधेयालंकृताय सौम्याय वरदाय झ्रौं श्रीं ह्रीं नमः स्वाहा ।

इति नामकरणं कृत्वा तन्नाम प्रकाशयेत् । तद्यथा-

आगे के सूत्रों को पढ़कर विधिनायक प्रतिमा के नाम को घोषित करें पुनः सर्व श्रावक भी प्रतिष्ठाचार्य केहे अनुसार वही नाम बोलें-

ॐ अयं महानुभावः परमेश्वरो यजमानाभिमतैन नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ १ ॥

इद्रेण वक्तव्यं । वृषभेश्वरो भवतु इति सर्वैः प्रतिवक्तव्यम् ।

(उपर्युक्त मंत्र प्रतिष्ठाचार्य बोले पुनः “वृषभेश्वरो भवतु “ऐसा सभी बोलें। यदि शांतिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी आदि कोई भी तीर्थंकर विधिनायक हों तो ‘शांतिनाथो भवतु, पार्श्वनाथो भवतु, महावीर स्वामी भवतु आदि नाम बोलें)

एवं यथाविवक्षमजितादिनाम्नापि प्रकाशनीयं एवमुत्तरत्रापि ।

ॐ अयं महानुभावः परमेश्वरो भव्यसंघाभिमतैन नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ २ ॥

ॐ अयं महानुभावः परमेश्वरो राजाभिमतैन नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ ३ ॥

ॐ संभ्रमसंभूतदेवाप्सरोविहितगर्भावतरणकल्याणारंभोऽयं परमेश्वरो नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ ४ ॥

ॐ अदृष्टचेष्टापरिज्ञातजननोत्सवनिर्माणदत्तचित्तभवनवास्यादिचतुर्भेदसर्वगीर्वाणनायकसंवातसमानीत पंचममहा-
पारावारवारिधाराकल्पितजन्माभिषेकमहोत्सवोऽयं परमेश्वरो नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ ५ ॥

ॐ प्रवृद्धमोहनीयोपशमसंजातपरमसमरसीभावानुभावभावित-विशिष्टवैराग्यभावनाविर्भूतपरिनिष्क्रमणकल्याण-
वैभवोऽयं परमेश्वरो नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ ६ ॥

ॐ परमनिर्मलनिरातंकनिश्चलध्यानबलशिथिलीकृतदुरंतदुरितसंघातविघटनसमनंतरसमुद्भूतसकलविमलकेवलज्ञानवि-
लोकितसमस्तलोकालोकोऽयं परमेश्वरो नाम्ना वृषभेश्वरो भवतु ॥ ७ ॥

ॐ परिगृहीत पाकशासनसुवैश्रवणसमुत्पादितसमवसरणनिरतिशयविभूतिसहितोऽयं परमेश्वरो नाम्ना वृषभेश्वरो
भवतु ॥ ८ ॥

ॐ समदिवाकरनिशाकरप्रभाजालतिरस्कारिभामंडलपरीतपरमौदारिकशरीरविभ्राजमानोऽयं परमेश्वरो नाम्ना
वृषभेश्वरो भवतु ॥ ९ ॥

अयं वृषभेश्वरः परमोत्कर्षेण प्रवर्तताम् ॥ इति नामकरणविधानम् ।

अथ आनंदस्तवः

जय जय जिनराज, ध्वस्तदुर्मोहराज, प्रहतमदनराज, प्रवृत्तदेवराज ।
रुचिरतरविराज, स्तुत्यशक्ताहिराज, प्रचुरसुगुणराजन्नच्युताधीशराज ॥ १ ॥
जय जय जिनधीर-प्राप्तजन्माब्धिपार, प्रथितविभवसार, प्रौढतीर्थावतार ।
प्रहतहतकमार, प्रोद्गतानंदपूर, प्रहसितशतशूर, प्रप्रकृष्टांशुभार ॥ २ ॥
जय जय जिनमित्र, ध्वांतविध्वंसमित्र, स्वतिशयगुणगात्र, ज्ञानविस्फूर्तिपात्र ।
परमपदपवित्र, प्रोल्लसद्देवयात्र, प्रवरशरणचात्र, प्राणिनामप्यमुत्र ॥ ३ ॥
जय जय जिन जैत्र, क्षमात्रयारामचैत्र, त्रिदशविधृतवेत्र, श्वेतचित्रातपत्र ॥
निरतिशयचरित्र-श्रीमदर्थोक्तसूत्र, स्वदुरघतरुदात्र, श्रायसश्रीकलत्र ॥ ४ ॥
जय जय जिनतात-त्रातरत्यंतपूत, स्थिरतरसुखदातः, कर्मसंघातघात ॥
कुमत जलदवात, ज्ञेयजातप्रमातः, प्रवचनरथसूत-ख्यातदेवाभिन्नूत ॥ ५ ॥
जय जय जिनचंद्र-च्छिन्नदुर्मोहतंद्र, प्रणतसुरनरेन्द्र-स्वात्मलक्ष्मन्मुनीन्द्र ।
स्वतिशयगुणरुंद्र, प्रीणितप्राणिमंद्र, प्रवचनसरिदिंद्र-स्फीतभासांद्र चंद्र ॥ ६ ॥
जय जय जिनसेव्य, त्रातसुप्रीतभव्य, त्रिभुवनमहितव्य-स्वाप्तिसंभावितव्य ॥
वरद नमसितव्य-प्रत्यहं कीर्तितव्य, स्मृतिपथनिहितव्य-श्रेयसे भावितव्य ॥ ७ ॥
जय जय जिननाथ-ज्ञानसंपत्सनाथ, प्रतिहतरतिनाथ-प्राप्तमोहाप्तनाथ ॥
नतसुरनरनाथ-श्रीदलोकाधिनाथ, श्रुतिकजदिननाथ-श्रीवधूप्राणनाथ ॥ ८ ॥
नमदनिमिषबंधं खण्डितानंगकांडं, हसितलसिततुंडं-ध्यानधीराग्निकुंडं ।
सुगुणमणिकरंडं, जन्मवार्धौ तरंडं, विनमितचिदखंडं श्रायसानंदपिंडम् ॥ ९ ॥ इत्यानंदस्तवः

जन्मकल्याणकक्रियाविधि

आवेद्यासनतः क्रियाप्रणमनं, पश्चाद्विधेयास्थितिः । स्त्र्यावर्त्यैकशिरोनतिः प्रथमतः, साम्यं तदंतेऽपि च ॥
कायोत्सर्गविधिर्नतिस्तवनमा-योज्यं च तत्साम्यवत् । कार्या भक्तिरभीप्सिताप्यवसिता-वालोचनाप्यासनात् ॥ १० ॥

इत्थं वै सिद्धचारित्रशांतिभक्तीः ससंधकाः । जन्माभिषेककल्याण-क्रियां कुर्वन्तु याजकाः ॥२॥

जन्मकल्याणक क्रिया में मुनि-आर्यिका, श्रावक-श्राविका—चतुर्विधसंघ मिलकर सिद्ध, चारित्र और शांति भक्ति करें। उसकी प्रयोग विधि इस प्रकार है। यहाँ जो भगवान विधिनायक हों उनका नाम लेवें यथा—

नमोऽस्तु ऋषभदेवजन्मकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(णमोकार मंत्र, चत्वारिमंगल आदि पढ़कर ६ बार महामंत्र जपकर थोस्सामिस्तव पढ़कर लघु सिद्धभक्ति १६५ पृष्ठ से पढ़ें। पुनः—)

नमोऽस्तु ऋषभदेवजन्मकल्याणकक्रियायां . . . चारित्रभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(पूर्ववत् सर्वक्रिया करके लघु चारित्रभक्ति १६५ पृष्ठ से पढ़ें।)

नमोऽस्तु ऋषभदेवजन्मकल्याणकक्रियायां . . . शांतिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(सामायिक दण्डक, ६ जाप्य, थोस्सामिस्तव पढ़कर लघु शांतिभक्ति १६५ पृष्ठ से पढ़ें।)

नमोऽस्तु ऋषभदेवजन्मकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं सिद्धचारित्रशांतिभक्तीः कृत्वा तद्द्वीनाधिकदोषशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(पूर्ववत् कायोत्सर्ग विधि करके लघु समाधिभक्ति १६६ पृष्ठ से पढ़ें।)

इति जन्मकल्याणक्रिया

अथ आनन्दनर्तनम्

(सौधर्म इन्द्र आदि नृत्य करें, नानाविध बाजे बजावें)

स्मरधरा— स्तुत्या नत्वाप्यतृप्तः स्वयममरपतिस्तांडवं संवितेने । लास्यं तद्दोः सहस्रोपरिचरितसुर-स्त्रीजनश्चाबबंध ॥

गीतं वाद्यं युयोज, प्रणुतसुरगणो यत्पुरस्ताज्जिनानाम् । संकल्पात्तस्य तौर्यत्रिकमिदमघभिद् बिंबमालक्ष्य योक्षे ॥

इन्द्रपरिकल्पितानन्दनाटकसंकल्पेन तदग्रे तौर्यत्रिकं प्रयुंजीत ।

(इन्द्र द्वारा किये गये आनन्द नाटक की कल्पना से प्रतिमा के सामने वाद्य आदि बजावें।)

(आगे का श्लोक पढ़कर इन्द्र तीन प्रदक्षिणा दें)

शार्दूलविक्रीडित— नीत्वा पूर्ववदेव भूरिविभवात्, तद्राजधानीं महा- सौधाग्रांगणमंडपे शतमखः, पीठे यमस्थापयत् ॥

तं मत्वाहमपीह तत्प्रतिकृतिं, श्रीमूलवेदीमिमाम् । नीत्वा रत्नकुशांचिते पटवृते, पीठेऽत्र संस्थापये ॥२॥

एतत्पद्यं मूलवेदी-अग्रे स्थितः शक्रः पठित्वा तां त्रिवारं प्रदक्षिणीकुर्यात् ।

आगे वेदी में भद्रासन पर प्रतिमा को विराजमान करें—

उपजातिच्छंद— यं देवमैरावणतोऽवतार्य, धृत्वा स्वयं राजगृहं निनाय ।

सौधर्मशक्रः परमोत्सवेन, ततोऽयमैन्द्रः परमोत्सवोऽभूत् ॥ ३ ॥

देवं तमद्याहमपि प्रमोदात्, स्कंधे समारोप्य महाविभूत्या ।

परीत्य संघेन समं त्रिवारं, श्रीमूलवेद्यां विनिवेशयामि ॥ ४ ॥

ॐ नमोऽर्हते केवलिते परमयोगिने अनंतविशुद्धिपरिणामपरिस्फुरत्-शुक्ल-ध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मबीजाय, प्राप्तानंत-चतुष्टयाय, सौम्याय, शांताय, मंगलाय, वरदाय अष्टादशदोषरहिताय स्वाहा ।

(मूलवेदीमध्यस्थापितभद्रासने प्रतिमानिवेशनमंत्रः)

(मंडप में चारों तरफ पुष्पांजलि क्षेपण करें)

उपजातिछंद—

श्रीदेन राजांगणनिर्मितो यो, रत्नप्रभापादितशक्रचापः।

वितानमाल्यादिविराजमानः, स एव साक्षान्मखमंडपोऽयम्॥५॥

मंडपे समन्तात् पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

संघ पर पुष्पांजलि क्षेपण करें—

यः सेवमानो जिनमिन्द्रलोकः, शच्यादिदेवीनिवहः प्रतीतः।

स एव साक्षादयमस्तु संघो, जिनेन्द्रसेवाप्रसितान्तरंगः॥६॥

चतुर्गिकायामरभावस्थापनाय संघे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

प्रातिहार्य आदि पर पुष्पांजलि क्षेपण करें—

यदेव देवाहितहेमपीठं, तदेतदस्तु ध्रुवभद्रपीठम्।

दिव्यातपत्रादिपरिच्छदो यः, स एव देवोऽस्तु परिच्छदोऽयम्॥७॥

इन्द्रकृतपरिच्छदस्थापनाय भद्रपीठे छत्रादिपरिच्छदेऽपि पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(जिनमाता की स्थापना के लिये भद्रपीठ पर पुष्पांजलि छोड़ें—)

प्रबोध्य शच्या विभवेन नीत्वा, सिंहासनाग्रे विनिवेशितायाः।

सैवास्तु साक्षादियमेव पीठी, लोकत्रयांबा भगवज्जिनांबा॥८॥

जिनमातृभावस्थापनाय भद्रपीठे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(आगे के श्लोक से अन्य सभी प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि छोड़ें—)

यः क्षीरनीरैरभिषिच्य मेरौ, सुरैः समानीय जिनांबिकांके।

निवेशितः श्रीजिनचंद्रबालः, स एव साक्षादयमस्तु बिंबः॥९॥

जिनकुमारस्थापनाय प्रतिबिंबेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

अथ जिनमातृस्तवनम्

वसंततिलकाछंद—

निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं, न्यक्षेण सर्वजगदुज्ज्वलनैकतानम्।

सूते जगत्त्रयरविं भवती जिनेन्द्रं, प्राचीमतो जयसि देवि ! तदल्पसूतिम्॥१॥

आभवादपि दुरासदमेव, श्रायसं सुखमनंतमचिन्त्यम्।

जायतेऽद्य सुलभं खलु पुंसां, त्वत्प्रसादत इहाम्ब ! नमस्ते॥२॥

उपजातिछंद—

चेतश्चमत्कारकरी जनानां, महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः।

हस्तीकृताः शस्तजनैः प्रसादात्, तवैव लोकांब ! नमोऽस्तु तुभ्यम्॥३॥

एकप्रसूरप्यसि विश्वमाता, त्वं मानुषी चाप्यधिदेवतासि।

स्त्रैणं दधानापि निरस्तदोषा, चित्रं चरित्रं तव लोकमातः॥४॥

मालिनीछंद—

सकलयुवतिसृष्टे-रंब! चूड़ामणिस्त्वम्। त्वमसि सुगुणपुष्टे-धर्मसृष्टेश्च मूलम्॥

त्वमसि च जिनमातः! सर्वमुक्त्यंगमुख्या। तदिह तव पदाब्जं भूरिभक्त्या नमामः॥५॥

इति देवीं जनाभ्यर्णां स्तुत्वा पीठिकायां कुंकुमाक्तकुसुमानि क्षिपेत् ।

(भद्रपीठ पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

(आगे का श्लोक पढ़कर सभी जिनमाता के ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण कर नमस्कार करें—)

सौधर्ममुख्येषु पुरंदरेषु, सानंदमग्रे सममानमत्सु ।

या सुप्रसन्नां निदधे स्वदृष्टिं, तामर्हदम्बां वयमानमामः ॥६॥

इन्द्रयजमानप्रभृतयः सर्वेऽपि श्रावका जिनमातरं पुष्पांजलिपूर्वकमानमन्तु ।

(इन्द्र-यजमान आदि सभी श्रावकगण जिनमाता को पुष्पांजलि क्षेपण कर नमस्कार करें।)

पीठाग्रभूषष्टललाटपट्टाः, शच्यादिदेवीर्बहुभक्तियुक्ताः ।

स्मितेन संभावयति स्म यासौ, तामर्हदम्बां वयमानमामः ॥७॥

इदमुक्त्वा यजमानवधूप्रभृतयः सर्वाः श्राविका जिनमातरं पुष्पांजलिपूर्वकमानमन्तु ।

(उपर्युक्त श्लोक को पढ़कर यजमान की महिलायें—इन्द्राणियां, सभी श्राविकायें पुष्पांजलि क्षेपण कर जिनमाता को नमस्कार करें।)

(पुनः आगे का श्लोक पढ़कर नाना वस्त्र-आभूषण से भरे थाल को प्रतिमा के सामने रखें)

विभूषयामास जगत्त्रयस्य, विभूषणं दिव्यविभूषणाद्यैः ।

पुरंदरोऽयं जिनचन्द्रबालं, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥८॥

एतत्पठित्वा विविधवस्त्राभरणपूरितमंगलपात्रं जिनपीठाग्रे विन्यसेत् ।

पुनः इच्छे द्वारा किये गये आनंदनाटक की कल्पना हेतु प्रतिमा के आगे अनेक बाजे बजवावें और नृत्य आदि भी करावें।

स्तुत्वा नत्वाप्यतृप्तः स्वयममरपतिस्तांडवं संवितेने । लास्यं तद्वोः सहस्रोपरिचरित-सुरस्त्रीजनश्चाबबंध ॥

गीतं वाद्यं युयोज प्रणुतसुरगणो, यत्पुरोऽर्हज्जनन्याः । संकल्पात्तस्य तौर्यत्रिकमिदमघभिद् बिम्बमालक्ष्य योक्ष्ये ॥

इन्द्रपरिकल्पितानंदनाटकसंकल्पेन तदग्रे तौर्यत्रिकं प्रयुञ्जीत ।

(एक स्वर्णपात्र में घी, दूध और शक्कर मिलाकर निम्नलिखित श्लोक पढ़कर प्रतिमा के दाहिने हाथ के अंगूठे में कुश—दाभ

से लगा दें।)

यस्यांगुष्ठे स्थापयामास शक्रः, पीयूषौघं स्तन्यलौल्यक्षयाय ।

तस्याधीशो दुग्धसर्पिःसितौघं, बिंबांगुष्ठे स्थापयेऽहं कुशाग्रैः ॥९०॥

पात्रार्पितं मधुरत्रयं कुशैरुद्धृत्य प्रतिबिम्बस्य दक्षिणहस्तांगुष्ठे स्थापयेत् ।

(पुनः इन्द्र के द्वारा निर्धारित दिक्पाल के लिए धनुष, दंड, पाश और गदा धारण करने वाले चार लोगों को चार दिशा में खड़े

करके आगे के लोक को पढ़कर उन पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

जिनस्य लोकत्रयरक्षिणोऽपि, रक्षार्थमिन्द्रश्चतुरो दिगिन्द्राः ।

भक्त्या नियुक्ते स्म शरासनादी-नाभिभ्रतो यानिह संतुतेऽमी ॥९१॥

इन्द्रनियोजितदिक्पालस्थापनाय धनुर्वण्डपाशगदाधरेषु समुचितभव्येषु चतुर्षु जिनबिंबस्य चतुर्विंशु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(श्री आदि देवी बनी हुई आठ कन्याओं को उबटन आदि द्रव्य हाथ में देकर प्रतिमा के दाहिने तरफ खड़ी करके आगे का श्लोक

पढ़कर उन पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

उद्धर्तनस्नपनलेपनधूपनानि, भक्त्यान्यदप्यभिमतं परिकर्म चक्रुः ।

याः श्रयादयो जिनपतेर्जिनमातृकल्पा-स्ता एव सांप्रतमिमाः कुलजाष्टकन्याः ॥९२॥

ॐ श्रयादिदेवीस्थापनाय जिनबिंबदक्षिणपार्श्वे स्थापितासु उद्धर्तनद्रव्यादिपूर्णपात्रकरासु अष्टकन्यासु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(यहां पर पालना झुलाने का कार्य संपन्न करें।)

कुमार क्रीडा

(भगवान के साथ क्रीडा करने वाले ८ बालकों के हाथों में गेंद, खिलौने आदि वस्तुयें देकर प्रतिमा के बायीं तरफ खड़े करके आगे का लोक बोलकर उन पर पुष्पांजलि छोड़ें)।

मनोज्ञुकूलं च वयोज्ञुकूलं, नानाविधं क्रीडनमाचरन्ति ।

ये शक्रपुत्रा जिनबालकेन, ते सन्तु चामी कुलजाः कुमाराः ॥११॥

त्रायस्त्रिंशदेवभावस्थापनार्थं प्रतिबिम्बवामपार्श्वस्थापितेषु कन्दुकजलक्रीडायन्त्रफलपल्लवप्रसूनादिहस्तेषु चतुर्षु अष्टसु वा कुमारेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

अथ भोग्यवस्तुस्थापना

कई एक थाल में सुंदर वस्त्र, आभूषण, दूध, दही, फल, भोजन सामग्री, पकवान आदि रखकर सामने थाल रखें, कुबेर की कल्पना से यजमान के पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

भोगोपभोगोचित वस्तु सर्वं, दिव्यं च संपादयति स्म काले ।

काले धनेशो भगवज्जिनेशो, यः सोऽयमेवास्तु विशिष्टयष्टा ॥२॥

भोगोपभोगार्थसंपादकधनेशस्थापनाय तत्संपादनीययजमाने पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

स च दिव्यवस्त्रगंधभूषणस्वस्तिकशाल्यन्नक्षीरान्नविचित्रभक्ष्यपक्वान्नदुग्धदधिघृत शर्कराचारुपुष्पफलप्रदीपधूपपादि भोग्यवस्तुजातं कांचनभाजने विरचय्य शिलायां विनिवेशयेत् ।

तीथकर के िष्पभाव नहीं है, ऐसी भावना से प्रतिमा के आगे पुष्पांजलि क्षेपण करें।

यः सर्वविद्यानिकरोपदेशे, स्वातंत्र्यतः शिष्यतया विमुक्तः ।

अशिक्षत त्रयंबकसम्मतोसी-त्यानेमुरिन्द्रा यमहो स एषः ॥३॥

गुरुपूजोपलंभनाय प्रतिमाग्रे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

अथ पट्टाभिषेकः

युवराजपद की स्थापना के लिए छत्र, चंवर, ध्वजा आदि राज्यचिन्हों की स्थापना करके प्रतिमा के ऊपर पुष्पांजलि छोड़ें।

कुमारकाले किल यस्य पट्ट-बंधाभिषेकांचितयौवराज्यम् ।

वितेनिरे स्वीयनृपाः सुरेन्द्राः, स एव साक्षादयमस्तु बिम्बः ॥४॥

यौवराज्यपदस्थापनाय सर्वभव्योद्धृतछत्रचामरध्वजादि विविधराज्यचिन्ह शालिन्याः-प्रतिमाया उपरि शंखकाहलादि विविध-मंगलवाद्यघोषपूर्वकं कुंकुमरांजितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् । यौवराज्यस्थापनम् ।

वासुपूज्यमल्लिनेमिपार्श्ववर्धमानतीर्थकराणां कुमारदीक्षितानां यौवराज्यस्थापनपर्यंतं जन्माभिषेकक्रियां कुर्यात् ।

अथ राज्यलीला

(स्वराज्य स्थापना हेतु प्रतिमा पर पुष्पांजलि)

यस्याधिराज्याभिषवं वितेनु, भूत्या सुरेन्द्राः सकला नरेन्द्राः ।

यः सागरान्तं पृथिवीं शशास, क्षात्रेण धर्मेण स एष देवः ॥५॥

स्वराज्यस्थापनाय प्रतिमोपरि पूर्ववत् पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

शेषषोडशतीर्थकराणां स्वराज्यपर्यंतं जन्माभिषेकविधिं विदध्यात् । (पाँच वालयति तीर्थकरों की युवराजपर्यंत क्रिया करें तथा सोलह तीर्थकरों के राज्याभिषेक आदि क्रिया करें)।

चक्रवर्ती हुए शांति, कुंथु, अर तीर्थकरों की प्रतिमाओं के ऊपर 'चक्रलाभ, दिग्विजय, राज्याभिषेक और राज्य करना' इन चार लाभ की स्थापना के लिए चार पुष्प रखें।

पुनः १०८ कल गों से प्रतिमा का राज्याभिषेक करें।

अथ चक्रवर्तिराज्याभिषेकः

शार्दूलविक्रीडित— उद्यद्रत्ननिधीश्वरः स्वजनतो, यश्चक्रलाभक्रियां। लेभे सर्वदिशां जयं नृपवरैश्चक्राभिषेकोत्सवम् ॥
पंचक्षत्रियवृत्तदेशनपरः, साम्राज्यरूढक्रियां। षट्खण्डक्षितिशासनेद्धविभवः, साक्षात् स एवास्त्वयम् ॥
चक्रलाभादिचतुष्टयस्थापनाय प्रतिमोपरि पूर्ववच्चतुः पुष्पीमावहेत्। तानि कुण्ड्वरतीथकराणां चक्रलाभादिचतुष्टयपयतं जन्माभिषेक-
विधिं विदध्यात्।

अथ भोगोपभोगस्थापनम्

आगे का श्लोक पढ़कर देवों द्वारा लाये गये भोग-उपभोग वस्तुओं का अनुभव भगवान कर रहे हैं, ऐसी कल्पना से प्रतिमा के पर पुष्पांजलि छोड़ें।

यहीं पर राज्यसभा लगाकर ३२ राजाओं द्वारा भेंट लाने की प्रार्थना संपन्न करें।

स्वभूगोचरभूरिभोग्यभवसद् - भोगोरुसौख्याकरो। यः स्वाज्ञार्थिसुरासुराधिपनृपैः, संसेव्यपादाम्बुजः ॥

नित्यश्रीनिहितादरोऽप्युचिततत्, कालागमं पालयन्। साम्राज्यं नृसुरासुरार्थितसुखं, भेजे स साक्षादयम् ॥

देवोपनीतभोगोपभोगानुभवनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इत्थं सौधर्मशक्रप्रभृतिसुरवरा यां जिनेन्द्रस्य साक्षात्। चक्रुर्जन्माभिषेकोत्सवविषयमहाश्चर्यकल्याणपूजाम् ॥

तामारोप्यात्र बिंबे विधिवदिह कृता शक्तितो भूरिभक्त्या। भुक्त्यै मुक्त्यै च यष्ट्रप्रभृतितनुभृतामस्तु कल्याणपूजा ॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः।

इत्थं विधत्ते जिनपुंगवस्य, जन्माभिषेकोत्सवसंविधिं यः।

जन्माभिषेकोत्सवमाशु यास्य-त्यमुत्र सोऽयं खलु धर्मनेमिः ॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचन्द्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलक-

नाम्नि जन्माभिषेककल्याणविधिर्नाम

नवमः परिच्छेदः ॥६॥

इस प्रकार प्रतिष्ठासार संग्रहरूप नेमिचन्द्रदेव द्वारा विरचित 'प्रतिष्ठातिलक'

नामक ग्रंथ में जन्माभिषेककल्याणकविधि को कहने वाला

यह नवमाँ परिच्छेद हुआ है।



अथ दशमः परिच्छेदः

(अथ निष्क्रमणकल्याणम्)

अथांकुरार्पणदिनादष्टमे दिवसे दिवा । दीक्षाग्रहणकल्याणं यथाविधि विधीयते ॥१॥
तत्रादौ कार्यमार्येण, यागमंडलपूजनम् । तदग्रन्यस्तपीठस्थ-जिनबिंबेऽधिरोष्यते ॥२॥
भावतः प्रशमोदारसुखैकरसिकात्मता । लौकांतिकागमस्तत्संस्तुतिनिष्क्रमणोद्यमः ॥३॥
दीक्षामंडपवेद्यां तु दीक्षावृक्षनिवेशनम् । स्नपनं पूजनं चानुलेपनं भूषणं विभोः ॥४॥
श्रीवर्धमानमंत्रेण सप्तवाराभिमंत्रणम् । योषिद्भ्यां सप्तभिर्वर्णपूरैरावर्तनं क्रमात् ॥५॥
दानं जिनेन तद्विव्यशिविकारोहणं ततः । तदा तेनोत्सवारोपः शिबिकानयनं क्रमात् ॥६॥
नृपैर्विद्याधरैर्देवैर्विभूत्या त्रिःपरीतितः । दीक्षामंडपसंप्राप्तिः सत्पुण्याश्रमभावनाः ॥७॥
इंद्रकल्पासनारोपस्तद्बिंबस्य निवेशनम् । जिनदीक्षोचितद्रव्य-क्षेत्रादेः स्निधापनम् ॥८॥
जिनस्य दीक्षाग्रहणं, सहदीक्षितसंगतिः । समर्चनं सुरेंद्रेण, केशसंपूजनादिकम् ॥९॥
त्यक्तवस्त्रादिपूजादिः, सत्सामायिकनिष्ठता । मनःपर्ययसंभूत्या, चतुर्ज्ञानविभासिता ॥१०॥
भव्यैः सर्वैश्चतुर्वर्ति-दीपावतरणार्चनम् । तत्कल्याणक्रियोत्कृष्टतपोनुष्ठाननिष्ठता ॥११॥
विसर्जनं निर्जराणाम-ध्यात्मध्यासनं विभोः । शान्तिधारा ततः शान्ति-बलिकर्मक्षमापणम् ॥१२॥
गमनाप्रच्छन्नं पश्चात्कृतकर्मफलार्थना । अयं निष्क्रान्तिकल्याण-क्रियाक्रम इतीष्यताम् ॥१३॥

तत्रादौ मूलवेद्यां प्रतिष्ठायंत्राराधनां निष्ठाय निष्क्रमणकल्याणमेवं विदध्यात् । तद्यथाः॥

अंकुरारोपण दिवस से आठवें दिन दिवस में दीक्षा कल्याणक विधि करें । उसमें दीक्षा कल्याणक के प्रारंभ में “यागमंडल” पूजन करें । उस यागमंडल के सामने सिंहासन के ऊपर जिनबिंब में “भावरूप शमभावना” विपुल आत्मा के आनंद में अनुरक्तपना की स्थापना करें । पुनः लौकांतिक देवों का आगमन, उनके द्वारा की गई स्तुति, दीक्षा के लिए तीर्थंकर भगवान के निकलने का उद्यम, ये सब विधि करें ॥१-३॥

पुनः दीक्षा मंडप में दीक्षा वृक्ष की स्थापना, भगवान का स्नपन, पूजन व अनुलेपन विधि करें । “श्रीवर्धमान मंत्र” से सात बार अभिमंत्रित करके दो सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा सात वर्णपूर से आवर्तन विधि करें । अनंतर जिन भगवान द्वारा दानविधि कराकर जिनप्रतिमा को पालकी में विराजमान करें । तत्पश्चात् राजा, विद्याधर और देवों के द्वारा वैभवपूर्वक तीन प्रदक्षिणा देकर वह पालकी दीक्षावन में ले जाई जावे । पुण्यमयी बारह भावनाओं का चिंतन, दीक्षावन में इन्द्र द्वारा बनाये हुए आसन पर प्रतिमा की स्थापना, जिनदीक्षा के योग्य ऐसे द्रव्य-क्षेत्र आदि की स्थापना, जिनेन्द्रदेव की दीक्षाविधि व उसी समय अन्य राजाओं की दीक्षा, इन्द्रों द्वारा जिनदेव की पूजा, लोच किये हुए केशों की पूजा, उनको रत्नपिटारे में रखकर क्षीरसमुद्र में ले जाकर डालना इत्यादि विधि करें । पुनः भगवान् द्वारा छोड़े गये वस्त्र-आभरण आदि की पूजा करें । अनंतर भगवान दीक्षा लेकर “सामायिक संयम” में अर्थात् ध्यान में लीन हैं, तत्क्षण ही उन्हें चौथा मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो गया है, ऐसा दिखलाने हेतु भव्यों से चार बत्ती वाले दीपों से अवतरण विधि करावें । अनंतर भगवान उत्कृष्ट तपश्चरण में निमग्न हो गये हैं, ऐसी सूचना करके देवों का विसर्जन, भगवान को आत्मा में अधिवासित करके शान्तिधारा, क्षमापण आदि विधि, जाने की आज्ञा मांगना, पश्चात् किये गये अनुष्ठान के फल की प्रार्थना करना इस प्रकार निष्क्रमणकल्याण क्रिया का क्रम कहा गया है ॥ ४-१३ ॥

अब सर्वप्रथम मूलवेदी में प्रतिष्ठायंत्र की आराधना पूर्ण करके इस प्रकार निष्क्रमण कल्याण विधि करें । तद्यथा- इसे ही दिखाते हैं॥

प्रामसुखरसिकत्व की स्थापना के लिए प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें॥

प्रत्याख्यानावृत्तीनां भवति हि तनुता स्वात्मदेहादिभेद-ज्ञानं व्याजृभते यत्तदिह किमपि निध्याय बाह्यं निमित्तं ।

संसारंगोपभोगत्रितयविषयनिर्वेगपुंजायमानः, सोत्कंठो भोक्तुमासीच्छमरसममृतं यः स एवैष देवः ॥१॥

प्रशमसुखरसिकत्वस्थापनार्थं जिनोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

आगे का लोक बोलकर लौकांतिक देवों की स्थापना हेतु प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें।
 लौकांतिकाः प्रवचनांबुधिपूर्णचंद्राः । चंद्रातपप्रसरभासुरदिव्यकायाः ॥
 कायादिगोचरविरक्तिमथैधयन्तः । यंतोयमीशमिति तुष्टुवुरानमंतः ॥२॥

लौकांतिकदेवागमनस्थापनाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ लौकांतिकदेवकृता स्तुतिः

वसंततिलकाछंद—

वर्द्धस्व जीव विजयस्व जिनेंद्र नंद । लोकत्रयोधरणधर्मधुरीण धीर ॥
 अद्यैव नस्त्वमसि देव मतः स्वयंभू-निर्वाणमार्गकृतनिष्प्रतिघप्रयाण ॥१॥
 अद्यातिदुर्लभविरक्त्यरुणोदयोऽभूत्, तेन त्वयि ध्रुवमुदेष्यति केवलार्कः ।
 मिथ्यांधकारमिह नक्ष्यति मंक्षु सर्वं, भव्यांबुजाकरमुपैष्यति पुण्यलक्ष्मीः ॥२॥
 त्रैलोक्यदुर्जयतरं जय कर्मशत्रुं, त्वं दुश्चरं कुरु तपोमयमात्मयज्ञम् ।
 वाक्यामृतेन परितर्पय सर्वलोकं, उत्साह एष सदृशो हि भवादृशानाम् ॥३॥
 नित्यामृते सरसि निर्मलमुक्तिहंसी-संगोत्सवैः परमहंस सुखी भव त्वं ।
 पंकाविले सविलये भवपल्लवेऽत्र, दुर्जीवनं क्व च भवान्क्व च शुभ्ररूपः ॥४॥
 समुदयजिनचंद्रा-हंत्यपूर्वाचलाग्रे, त्रिभुवनजनतारा-स्त्वां समावृत्य भान्तु ।
 धवलज निजवाक्य-ज्योत्स्नया सर्वलोकं, परिहर निजपादात्-पापतापं जनानाम् ॥५॥
 कुवलयमिह शीती-भूतमस्तु प्रसादा-त्तव नय बहुना, किं धर्मवार्द्धिं समृद्धिं ।
 अथ तव स निसर्ग प्रार्थनेनात्र नः किं । वयमिति हि नियोगादेव विज्ञापयामः ॥६॥
 इत्थं सुरर्षिनुतमुक्तिपथप्रयाणे, देवासुरैर्विहितनिष्क्रमणोत्सवे यः ।
 वैराग्यतस्तृणकणावमतोद्धराज्यः, साक्षात्स एव जिनपुंगव एष बिंबः ॥७॥

मालिनीछंद—

वसंततिलकाछंद—

निष्क्रमणकल्याणोपक्रमस्थापनाय चंदनलुलितपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

दीक्षाकल्याणक की प्रारंभ की स्थापना में प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें।

अथ दीक्षावृक्ष स्थापनम्

शाखाच्छायेन योऽसौ, हरति खलु सतां कर्मधर्मांशुतापम् ।
 यः सौख्योदारसारं, फलति शुभफलं मोक्षनाकादिभेदम् ॥८॥
 सेवन्ते यं तदर्थं, विबुधजनखगा यस्य चैवं प्रभावः ।
 संगज्जातोऽर्हतोऽस्य, त्रिभुवनमहितः सोऽस्तु दीक्षाद्रुमोऽयम् ॥९॥

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं वृषभजिनस्य वटाख्यदीक्षावृक्ष! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं वृषभजिनस्य वटाख्यदीक्षावृक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं वृषभजिनस्य वटाख्यदीक्षावृक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

(इस मंत्र को पढ़कर दीक्षावृक्ष के ऊपर पुष्पांजलि छोड़ें। यहाँ जो विधिनायक हों उन तीर्थंकर का दीक्षा वृक्ष लावें और वही मंत्र में बोलें।)

एवमजितादीनां तत्तद्दीक्षावृक्षाः योजनीयाः ।

(इसी प्रकार अजितनाथ आदि तीर्थंकरों के लिए उन-उनके दीक्षावृक्षों का मंत्र बोलना चाहिए।)

अनेन विवक्षितजिनोचितदीक्षावृक्षस्थापनाय मूलवेद्याः पश्चाद्भागपरिकल्पितदीक्षाग्रहणमंडपस्थापितचित्रार्पितवृक्षे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(उपर्युक्त मंत्र से ही जिन भगवान को विधिनायक बनाया है, उनका जो दीक्षावृक्ष है, उसकी स्थापना के लिए मूलेदी के पीछे कल्पित किए गए दीक्षा ग्रहण मंडप में स्थापित चित्र में अर्पित वृक्ष में या उसी वृक्ष की शाखा को लेकर बनाए गए वृक्ष पर पुष्पांजलि छोड़ें।)

चौबीस तीर्थंकरों के दीक्षावृक्ष एवं केवलज्ञान वृक्षों के नाम

अनुष्टुप्छंद —

वटः सप्तच्छदः सर्जो-ऽसनो महिला छसा-शिरीषो नागसर्जोऽथ, प्लक्षतिन्दुकपाटलाः॥१॥
जंब्वश्वत्थकपित्थाश्च, नंदिकस्तिलकाम्रकौ। अशोकश्चंपकश्चापि, बकुलो वांसिको धवः॥२॥
सालश्चैते जिनेन्द्राणां, दीक्षावृक्षाः प्रकीर्तिताः। एत एव बुधैर्ज्ञेयाः, केवलोत्पत्तिशाखिनः॥३॥

राज्यत्यागस्थापना

उपजातिछंद —

दृढोरुवैराग्यभरः स्वराज्यं, पुत्राय वा भूपतिसाक्षि दत्वा।
यः क्षात्रधर्मं श्रितपंचभेदं, दिदेश साक्षाच्च स एष बिम्बः॥४॥

स्वराज्यत्यागस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(अपने राज्य के त्याग की स्थापना के लिए प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ना)

१०८ कलशों से अभिषेक

उपजातिछंद —

दीक्षोद्यमं मोक्षसुखैकसक्तं, यं स्नापयांश्चक्रुरशेषशक्राः।
समेत्य सद्यः परया विभूत्या, तं स्नापयाम्यष्टशतेन कुंभैः॥५॥

प्रस्तावनाय पुष्पांजलिः

नांदीमंगलादिनोक्तनित्यमहविधिना भूमिशोधनाद्याचमनान्तं विधिं विधाय जन्माभिषेकोक्ताष्टविधनीराजनाकिं कृत्वाभ्यर्च्य उत्तुंगेत्यादिना दिक्पालानाहूय स्नपनविधिं विधाय एकादशमहामहं विदध्यात्।

नांदीमंगल आदि में कथित नित्य अभिषेक विधि से भूमिशोधन विधि से लेकर आचमन अंत तक विधि करके पुनः जन्माभिषेक में कथित आठ प्रकार की नीराजनविधि को करके, पूजा करके पृष्ठ ४५ से “उत्तुंग” इत्यादि पाठ से दिक्पालों की आह्वानन-विधि करें, इस प्रकार स्नपनविधि करके एकाद प्रकारी पूजा करें।

जल से लेकर अर्घ्य तक नव एवं शांतिधारा- पुष्पांजलि तक एकादश प्रकारी पूजा कहलाती है।

प्रतिमा के सर्वांग में गंधलेपन

इन्द्रवज्राछंद —

इंद्रो जिनेंद्रस्नपनावसाने, दिव्यांगरागेण यमालिलेप।
कर्पूरकालागुरुकुमाद्वय-श्रीचंदनेनास्य समालभेऽगम्॥६॥

ॐ ह्रीं सहजसौगंध्यबंधुरांगस्य गंधलेपनं करोमि स्वाहा।

(प्रतिमा के सर्वांग में गंधलेपन करना)

वस्त्राभरण सहित थाल रखना

उपेन्द्रवज्राछंद —

विभूषयामास जगत्त्रयस्य, विभूषणं दिव्यविभूषणाद्यैः।
पुरंदरोऽयं भगवज्जिनेंद्रं, स एव देवो जिनबिंब एषः॥७॥

एतत्पठित्वा विविधवस्त्राभरणपूरितमंगलपात्रं जिनपीठाग्रे स्थापयेत्।

(प्रतिमा के सामने वस्त्राभरण का थाल रखना)

श्रीवर्धमानाढ्यदिव्यमंत्र - संजप्तपुष्पैर्जिनराजबिम्बं।

निःशेषविघ्नप्रतिघातनार्थं, सप्तैव वारानभ्वासयामि॥८॥

ॐ णमो भयवदो वडूढमाणस्स रिसिस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ, आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूये वा (जये वा) विवादे वा रणंगणे वा रायंगणे वा थंब्भणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवतु मे रक्ख रक्ख स्वाहा । इति श्री वर्धमानमंत्रः ।

अथ 'वर्णपूरारात्रिक सप्तकम्

(वर्णपूर तथा सात आरती अवतरणविधि)

(आगे के एक-एक श्लोक बोलकर दो-दो सौभाग्यवती स्त्रियाँ एक-एक थाल में सात-सात दीपक लेकर भगवान की अवतरणविधि करें तथा प्रतिमा के सामने अवतरणविधि से उतारकर रखती जावें)

सुदुर्गमं मुक्तिपुरं त्रिलोकी-सारं सुखांभोधिमनन्यसाध्यम् ।

सद्यः ऽभो साधयितुं ऽवपे तीथकर त्वं विजयस्व देव ॥१॥

आत्यन्तिकीं दुःखनिवृत्तिरुच्चै-रनन्तमात्मोत्थसुखं च यत्र ।

तां दुर्लभा मुक्तिपुरीं प्रयातो, पन्थाः शिवस्ते जिननाथ भूयात् ॥२॥

यस्यामुपाधेः परिहार सिद्धि-श्चैतन्यमात्रानुभवप्रवृद्धेः ।

प्रतिक्षणं सा मनसो विशुद्धि-रामुक्तिलाभादभिवर्द्धतां ते ॥३॥

यैर्भूषितस्यैव हि मुक्तिलक्ष्मी-र्वशं प्रयाति प्रणयेन देवम् ।

सम्यक्त्वमुख्याष्ट गुणाश्च तेऽमी, भवन्तु तेऽद्याभिमुखाः प्रसन्नाः ॥४॥

जिनप्रभो द्वादशभिस्तपोभिः, स्वमोघशस्त्रैरथ यं क्षतानाम् ।

कषायनान्मां द्विषतां जयस्ते, भूयाच्च भूयो जितकर्मशत्रोः ॥५॥

मुमुक्षवो ये सहदीक्षितास्ते, क्षमामया रक्षितजीवलोकाः ।

अपेक्ष्यमाणा भवदीयलक्ष्मी, मुपासतां त्वामुचितोपचारैः ॥६॥

स्रग्धराछंद—

गुप्तिं गुप्तित्रयं तज्जिन तव तनुतां शर्म तन्वन्तु धर्माः ।

कर्मारतिप्रघातं दधतु समितयस्तुभ्यमभ्यर्हितास्ताः ॥

देवानुप्रेक्षणान्यक्षयपद-पथिका-भीक्ष्ण-रक्षां विदद्यु- ।

र्माभूत्पारीषहार्तिः सपदि भवतु ते मोक्षलक्ष्मी-विवाहः ॥७॥

गद्य—एतत्सप्तकं पठित्वा पृथक् पृथगेव कुल्ययोषिद्भ्यां वर्णपूरारात्रिकसप्तकमावर्त्य प्रतिमाग्रे निवेशयेत् ॥

इति वर्णपूरावर्तनम् ।

अथ दीक्षोन्मुखम्

तीर्थकरकृत महादान स्थापना

आगे का श्लोक व मंत्र बोलकर प्रतिमा के सामने पुष्पांजलि छोड़ें तथा भगवान ने दीक्षा के समय महादान किया था, ऐसी कल्पना करके एक थाल में रत्न भरकर प्रतिमा का स्पर्श कराके लोगों को बांट दें ।

उपजातिछंद—

दीक्षोन्मुखस्तीर्थकरो जनेभ्यः, किमिच्छकं दानमहो ददौ यः ।

दानं च मुक्त्यंगमितीव वक्तुं, स एव देवो जिनबिम्ब एषः ॥१॥

निष्क्रमणादौ तीर्थकरकृतमहादानस्थापनाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

१. यहाँ रंग-बिरंगे सजाये थाल में आरती लेना, ऐसा वर्णपूर आरात्रिक—आरती शब्द का अर्थ समझ में आता है ।

(आगे का श्लोक व मंत्र बोलकर पालकी पर पुष्पांजलि छोड़ें)

उपजाति छंद—

महीतलायातदिनेशबिंब-शंकावहादीप्रमणिप्रभादया ।

जिनेन या श्रीशिविकाधिरूढा, दिव्यात्र साक्षादियमस्तु सैव ॥२॥

दिव्यशिविकास्थापनायात्र शिविकायां पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

आगे का श्लोक व मंत्र पढ़कर प्रतिमाजी को पालकी में विराजमान करना ।

आपृच्छ्य बंधूनुचितं महेच्छः । किमिच्छकं दानविधिं विधाय ।

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥३॥

ॐ ह्रीं अहं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ-भगवन्निह शिविकायां तिष्ठ तिष्ठेति स्वाहा ।

शिविकायां जिनप्रतिमां स्थापयेत् ।

आगे के लोक पढ़ते हुए प्रत्येक लोक में पुष्पांजलि क्षेपण करें।

अनुव्रजत्सु क्षितिपालकेषु, समं समुत्थाय ससंभ्रमेषु ।

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१॥

महीमभिव्याप्य मरुद्विलोल-ध्वजव्रजेनुव्रजति स्वसैन्ये ।

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥२॥

निरुध्दनिःशेषनभोगणेषु, सुरासुरौघेषु पुरःसरेषु ॥

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥३॥

अंभोधरव्रातगभीरनाद-दिव्येषु तूर्येषु पुरः ध्वनत्सु ॥

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥४॥

अत्याहितं तन्वति चारु नृत्यं, आनंदयत्यप्सरसां समूहे ॥

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥५॥

कलक्कणं गायति किंनराणां, गणे पुरस्तादपि मंगलानि ॥

निष्क्रामति स्मावसथाध्वनो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥६॥

एवं पद्यषट्क पठित्वा जिननिष्क्रमणावसरमहोत्सवस्थापनाय प्रतिमाग्रे पृथक् पृथक् पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

आगे का लोक बोलकर राजागण पालकी को सात पैड तक ले जावें।

उपजातिछंद—

यदाश्रितां श्रीशिविकां धुरीणाः, स्कंधे समारोप्य पदानि सप्त ।

जग्मुः पृथिव्यां प्रथमं नरेन्द्राः, स एव देवो जिनबिम्ब एषः ॥१॥

नरेन्द्रोऽशिविकास्थितजिनस्थापनाय प्रतिमाग्रे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

आगे का श्लोक बोलकर विद्याधरगण सात पैड तक पालकी लेकर चलें—

यदाश्रितां श्रीशिविकां धुरीणाः, स्कंधे समारोप्य पदानि सप्त ।

जग्मुः पृथिव्यामथ खेचरेन्द्राः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥२॥

विद्याधरराजोऽशिविकास्थितजिनस्थापनाय प्रतिमाग्रे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ अपरेऽपि केचिद्भव्याः शिविकां धृत्वा सप्तपदानि गच्छेयुः ॥

आगे का श्लोक बोलकर इन्द्रगण पालकी लेकर तपोवन में पहुँचें—

यस्य प्रभोः श्रीशिविकां प्रमोदात्, स्कंधे समारोप्य वियत्पथेन ।

तपोवनं निन्युरथामरेंद्राः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥३॥

सुरेंद्रोऽशिविकास्थितजिनस्थापनाय प्रतिमाग्रे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥ इंद्राः स्वयमेव शिविकां धृत्वा दीक्षामंडपं गच्छेयुः ।

एवं विनिष्क्रम्य यमाससाद, पुण्याश्रमं तीर्थकरः प्रशान्तः ।
स एव चायं जिनमंडपोस्तु, श्रीमूलवेद्यां विहितप्रतीच्यां ॥४॥

तपोवनपुण्याश्रमस्थापनाय दीक्षाग्रहणमंडपे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

तपोवन के पुण्याश्रम की स्थापना के लिए दीक्षामंडप में पुष्पांजलि क्षेपण करें।

स्वचित्तकल्पे विपुले विशुद्धे, शिलातले यत्र तु चंद्रकान्ते ।

सुरेन्द्रकल्पे भगवान्निविष्टस्तदेव पीठं दृढमेतदस्तु ॥५॥

सुरेन्द्रविरचितचंद्रकांतशिलास्थापनाय तन्मंडपमध्यस्थापितपीठेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

इन्द्र द्वारा बनाई गई चन्द्रकान्त शिला की स्थापना के लिए मंडप में स्थापित आसन पर पुष्पांजलि छोड़ें।

आगे का लोक व मंत्र पढ़कर संगमरमर पत्थर की शिला पर प्रतिमा को स्थापित करें ॥

उदङ्मुखः पूर्वमुखोथवा यो, निविष्टवान्पूतशिलोपरिष्ठात् ।

प्रज्ज्यया निर्वृतिसाधनोक्तः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह सुरेन्द्रविरचितचंद्रकांतशिलातले तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

इति प्रतिमास्थापनम् ॥

आगे का लोक पढ़कर दीक्षोचित ऋक्ष, क्षेत्र, काल, भाव की सामग्री की स्थापना के लिए मंडप में चारों तरफ पुष्पांजलि छोड़ें ॥

तपोवनं यत्तदिहास्तु दीक्षा-वृक्षोऽपि सोयं च शिलापि सेयं ।

स पुण्यकालोऽप्ययमेव यद्यद्-दीक्षोचितं तत्तदिहास्तु सर्वं ॥७॥

दीक्षोचितद्रव्यक्षेत्रकालभावसामग्रीस्थापनाय समंतात्पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

(प्रतिमा के मस्तक पर गीली घिसी हुई केशर लगाकर कुछ सूखी केशर लगा देते हैं पुनः उन्हें क्रम से मध्य में, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर की केशर निकाल देते हैं, यही प्रतिमा की केशलोच क्रिया है। अनंतर प्रतिष्ठाचार्य प्रतिमा के वस्त्र-आभूषण निकाल कर सामने रखे हुए स्वर्ण या चांदी के थाल में रख देते हैं। केश भी स्वर्ण डिब्बी में रख देते हैं पुनः प्रतिमाजी के पास पिच्छी और कमंडलु रख देते हैं, यही परंपरा है।)

यहाँ श्लोक में भगवान के दाहिने हाथ में बंधे हुए कंकण को खोलने का मंत्र दिया है अतः आगे का श्लोक पढ़कर सारी विधि करना है—

यः सर्वसिद्धान्प्रणिपत्य केशा-नुत्पाद्य दिव्यांबरमात्यभूषाः ।

त्यक्त्वा प्रवव्राज निजात्मलब्धै, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥८॥

ॐ नमो भगवतेऽर्हते सद्यःसामायिकप्रपन्नाय कंकणमपनयामि स्वाहा । कंकणमपनीय दीक्षास्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

प्रतिमा के कंकण को खोलकर दीक्षा की स्थापना के लिए प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें।

आगे का श्लोक बोलकर अन्य प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि छोड़ें—

ये क्षत्रिया मोक्षमपेक्ष्य दीक्षा-मक्षार्थकांक्षाक्षपणां क्षमाढ्यां ।

दीक्षाक्षणे ते जगृहुर्जिनस्य, मुमुक्षवोऽमी स्युरिह प्रतीक्ष्याः ॥९॥

तीर्थकृता सह दीक्षितमुमुक्षुगणस्थापनाय तत्समीपस्थापितासु अन्यासु प्रतिष्ठेयप्रतिमासु पुष्पाणि क्षिपेत् ।

अथासिधाराव्रतमद्वितीयं, निर्वाणदीक्षाग्रहणं दधानम् ।

यमर्चयामासुरशेषशक्रास्तमर्चयामो जगदर्चनीयम् ॥१०॥

पूजावसरप्रार्थनापूर्वक पुष्पांजलिः ।

पूजा में जो विधिनायक प्रतिमा हैं, उनके नाम से जलादि चढ़ावें- जैसे-ऋषभदेव मुनीन्द्राय जलं इत्यादि ।

अथ पूजा

सारशांतरसनिर्जितात्मवत्त्वत्पदाग्रप्रति तेन वारिणा ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सद्गुणप्रणुतचंदनेन ते, कीर्तिवत्सकलतोषपोषिणा ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्वन्मुखेन्दुभजनार्थमागतै-र्भत्रजैरिव वलक्षकाक्षतैः ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुप्रसादसुकुमारतादिभिस्-त्वद्वचोभिरिव नव्यपुष्पकैः ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारुणार्थचरुणामृतांशुवद्-व्यंजनैरपि तदंकशंकिभिः ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्मदीपक न ते वयं समा, भक्तुमित्थमितवत्प्रदीपकैः ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सेव्यपाद नपथेध्दभंगवत्-स्यान्मतोपमसुधूपधूमकैः ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नम्रभव्यसुकृतानुकारिभिः, सारभूतसहकारकादिभिः ।

तीर्थकृन्मुनिललाम तावकं, यायजीमि पदपंकजद्वयम् ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

मालिनी छंद—

गुणमणिगणसिंधून्, भव्यलोकैकबन्धून् । प्रकटितजिनमार्गान्-ध्वस्तमिथ्यात्वमार्गान् ॥

परिचितनिजतत्त्वान्-पालिताशेषसत्त्वान् ॥ शमरसजितचंद्रा-नर्घ्ययामो मुनीन्द्रान् ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर ऋषभदेव मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः ।

नमस्कार करना

स्रग्धरा छंद—

श्रीमद्बोधत्रयाद्भ्यः! प्रविमलचरित! स्वात्मसद्भयाननिष्ठ! । स्याद्वादांभोजभानो! त्रिजगदुपकृतिव्यग्रयोगीश्वर! त्वाम् ॥
अर्घ्यं चानर्घ्यनानाविधविधिविहितं द्रव्यमुद्धार्य वर्यं । प्रेक्षिष्योदारपुष्पांजलिमलिकलितं भूरिभक्त्या नमामः ॥१०॥

भगवान को साष्टांग नमस्कार करना ।

केशों पर पुष्पांजलि

उपजातिछंद—

यस्य प्रभोः केशकलापमिंद्रः, संपूज्य निक्षिप्य च रत्नपात्रम् ।

निक्षेपयामास पयःपयोधौ, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥११॥

भगवत्केशकलापस्यैद्रकृतार्चनरत्नपात्रस्थापनक्षीराब्धिनिक्षेपणस्थापनाय प्रतिमाग्रप्रदेशे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

भगवान के केशलोच के केशों पर पुष्पांजलि क्षेपण करना ।

भगवान के वस्त्रादि पर पुष्पांजलि

येनामरेन्द्रो गुणभूषणेन, त्यक्तानि दिव्यांबरभूषणानि ।

इयाज चिक्षेप च नंदनादौ, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१२॥

जिनपरित्यक्तवस्त्रभूषणानामिंद्रकृतार्चननंदनादिविव्यस्थानस्थापनरूपसंकल्पेन विमुक्तकंकणेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

भगवान के उतारे गये वस्त्र-आभरण, कंकण पर पुष्पांजलि छोड़ना ।

प्रतिमा पर पुष्पांजलि

उपजातिछंद—

यः सर्वसावधनिवृत्तिरूपं, चारित्रमाद्यं विगतप्रमादम् ।

आसेदिवान्सिद्धगुणानुरक्तः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१३॥

सामायिकचारित्रातिशयस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

सामायिकचारित्र अतिशय स्थापना के लिए प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ना ।

चार बत्ती वाला दीप उतारना

यदा तु सामायिकमाप वृत्तं, तदा मनःपर्ययतुर्यबोधम् ।

अतश्चतुर्ज्ञानविराजितो यः, स एव देवो जिनबिंब एषः ॥१४॥

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययाख्यज्ञानचतुष्टयस्थापनाय चतुर्वर्तिदीपावतरणं विदध्यात् ।

भगवान चार ज्ञान सहित हैं, ऐसा प्रगट करते हुए चार बत्ती वाले दीपक से अवतरण विधि करना ।

नमस्कार करना

नमोस्तु ते स्वानुभवैकतान! नमोस्तु सामायिकवृत्त तुभ्यम् ।

नमोस्तु ते बोधचतुष्टयाद्भ्यः! नमोस्तु ते कायममत्वमुक्त! ॥१५॥

इदमुक्त्वा इंद्रः पंचांगप्रणामं कुर्यात् । ततो यष्टप्रभृतिभयजनास्तां प्रतिमां विविधाचर्चनैरभ्यर्च्य चतुर्वर्तिक्षतरणं कृत्वा पंचांगप्रणामं कुर्यात् ।

सभी लोग भगवान को पंचांग नमस्कार करें ।

सभी साधुवर्ग भक्तिपाठ करें

सिद्धचारित्रयोगीश-शांतिभक्तीः ससंधकाः ।

दीक्षाग्रहणकल्याण-क्रियाः कुर्वन्तु याजकाः ॥६॥

सभी साधुवर्ग भगवान के तपकल्याणक में सिद्ध, चारित्र, योगि, शांति और समाधिभक्तियां पढ़ें। उसकी विधि

नमोस्तु भगवद्गुरुभदेवदीक्षाकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं
सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

णमोकार मंत्र, चत्वारि मंगल आदि सामायिक दंडक पढ़कर ६ बार महामंत्र का २७ उच्छ्वास में जाप्य, पुनः थोड़ासि स्तव पढ़कर लघु सिद्धभक्ति पढ़ें। ऐसे ही सिद्धभक्ति आदि सभी भक्तियाँ पृष्ठ १६५-१६६ से पढ़ें तथा योगिभक्ति इस प्रकार है—

योगिभक्ति

योगीश्वरान् जिनान् सर्वान्, योगनिर्धूतकल्मषान् ।

योगैस्त्रिभिरहं वंदे, योगस्कन्ध-प्रतिष्ठितान् ॥

इच्छामि भंते ! योगिभक्तिकाउत्सर्गो कओ तस्सालोचेउं । अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु
आदावण-रूक्खमूल-अब्भोवास-ठाणमोणवीरासणेक्कपास-कुक्कुडासण-चउत्थ-पक्ख-खवणादिजोगजुत्ताणं
सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं,
समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

प्रतिमा पर पुष्पांजलि

यः स्वं परं साधु तथैव जानन्-नुग्रैस्तपोभिस्तु हठाद्विपाकम् ।

नीत्वांशतः शातयति स्म पापं, तस्मै नमो घोरतपोजुषेऽस्मै ॥१॥

आमुक्ति वर्धेत यथा तथैव, पपौ विशुद्धिप्रभवं प्रभूतं ।

स्वसंविदानंदसुधारसं यः, तस्मै नमो घोरतपोजुषेऽस्मै ॥२॥

एतद्द्वयं पठित्वा विशिष्टतपोनुष्ठाननिष्ठाप्रतिष्ठार्थं प्रतिमोपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

उपर्युक्त दो श्लोक पढ़कर भगवान ने विशिष्ट तप का अनुष्ठान किया है, ऐसी स्थापना करते हुए प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें ।

विसर्जन विधिः

सर्वे देवाः समाहूताः, शिष्टार्हत्प्रभुपूजने । इष्टमस्माकमापाद्य, तुष्टा यांतु यथाक्रमम् ॥३॥

ॐ जिनपूजनार्थं समाहूता देवाः सर्वे विहितमहामहाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः ।

इति विसर्जनमंत्रोच्चारणेन यागमंडले पुष्पांजलिं विकीर्य देवान्विसर्जयेत् ।

पुष्पांजलि क्षेपण करते हुए विसर्जन करना ।

परमात्मा का ध्यान

प्रक्षीणदोषमलमिद्धनिजप्रकाशं । लोकैकभूषणमहो निजदिव्यरत्नम् ।

मुक्तिश्रियः सपदि संवदनं विधातुं । पूज्यं प्रपूज्य हृदये निदधे भवन्तं ॥४॥

अनेन परब्रह्माध्यात्ममध्यासयेत् । (परमात्मा का ध्यान करना या ६ बार महामंत्र पढ़ना)

शांतिधारा

यो लौकैकशिखामणिर्यमनिशं, ध्यायन्ति योगीश्वराः । येनादर्शि समस्ततत्त्वममरा, यस्मै नमस्कृर्वते ॥
 यस्मान्नास्त्यपरो हितस्त्रिजगते, यस्यैव युक्ताप्तता । यस्मिन्केवलबोधभानुरुदितः, सोव्याज्जिनोयं जगत् ॥१५॥
 ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं नमः परमशांताय सर्वलोकैकशांतिर्भवतु स्वाहा । शांतिधारा ॥

(शांतिधारापूर्वक शांतिपाठ करना ॥)

मंडप या मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देना

अर्चामग्रे प्रनृत्यत्कलशयुतवधूमग्रभृंगारनिर्यद् - वार्धारापूतधार्त्री बहुतरविभवामादरेणानुयाताः ।
 सर्वाशाः पूरयंतो बलिमनुमुखराः सर्वधान्यैश्च लाजैः । सत्पुष्पैरक्षतौघैर्जिननिलयमिमै त्रिः परीयाम शान्त्यै ॥१६॥
 ॐ अर्हद्भ्यो नमः ।

क्षमायाचना व नमस्कार

प्रमादाज्ज्ञानदर्पाद्यैर्विहितं विहितं न यत् ।
 जिनेद्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलं च तत् ॥१७॥

क्षमापण पूर्वकं पंचांगप्रणामः ॥

मोहध्वान्तविदारणं ० । भूयात्पुनर्दर्शनम् । इति गमनापृच्छनम् ॥

इत्थं सौधर्मशक्रप्रभृति सुरवरा यां जिनेन्द्रस्य साक्षात् । चक्रुर्दीक्षाग्रहाख्योत्सवविषयमहाश्चर्यकल्याणपूजाम् ।
 तामारोप्यात्र बिम्बे विधिवदिहकृता शक्तितो भूरि भक्त्या । भुक्त्यै मुक्त्यै च यष्ट्रप्रभृति तनुभृतामस्तु कल्याणपूजा ॥१८॥
 इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः ॥

इत्थं निधत्ते जिनपुंगवस्य, निष्क्रान्तिकर्मोत्सव संविधिं यः ।
 निष्क्रान्तिकर्मोत्सवमाशु यास्यत्, यमुत्र नूनं स हि धर्मनेमिः ॥१९॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि निष्क्रमणकल्याण-

विधिर्नाम दशमः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप
 ग्रंथ में दीक्षाकल्याणकविधि को कहने वाला
 यह दशवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।



अथ एकादशः परिच्छेदः

अथ केवलज्ञानकल्याणम्

अथांकुरार्पणदिनान्नवमे दिवसे दिवा। केवलज्ञानकल्याणं विदधीत यथाविधि॥१॥
 तत्रादौ व्यासतो याग-मंडलस्य समर्चनम्। तदग्रस्थापिते पीठे, प्रतिमास्थापनं ततः॥२॥
 आह्वानादिविधिः स्वर्ण-शलाकाविनिवेशनम्। कल्याणपंचकारोपः, संस्कारारोपणं ततः॥३॥
 मंत्रन्यासविधिः पश्चात्, प्रतिष्ठाहोमसंविधिः। तत्काले गंधयंत्रस्या-राधनं कुसुमैर्जपः॥४॥
 प्रतिष्ठातिलकन्यासस्ततः स्यादधिवासना। अथ स्वस्त्ययनं चाशी-दानं वृक्षनिवेशनम्॥५॥
 नयनोन्मीलनं गंध-लेपनं गुणरोपणम्। न्यासो दशातिशीतीनां, समवादिसृतेरपि॥६॥
 दिव्यातिशयसंकल्पः, प्रातिहार्यप्रकल्पनम्। लांछनस्थापनं यक्ष-यक्षीस्थापनमन्वतः॥७॥
 कल्याणपंचकारोपः, कंकणस्य विमोचनम्। साक्षात्कृतिर्जिनेन्द्रस्य, श्रीमुखोद्घाटनं ततः॥८॥
 अर्घ्यपुष्पांजलिश्चाशीः, शांतिधारास्तुतिर्मुदा। अर्थन्यासादिकं यष्ट्रा, सहस्राख्यादिभिः स्तुतिः॥९॥
 संगीतं केवलज्ञान-कल्याणस्योचितक्रिया। पूजा मुनीनां गंधा-धैर्भव्यसंघस्य तर्पणम्॥१०॥
 समासविधिना याग-मंडलस्य समर्चनम्। द्वारपालबलिर्ब्रह्म-बलिर्दिकपालसद्बलिः॥११॥
 ग्रामसंबंधिनां ब्रह्म-दिकपालानां बलिस्ततः। विहारघोषणापूर्व, विहारस्त्रिजगत्प्रभोः॥१२॥
 कुंभैरष्टशतेनाभि-षेकश्चैकादशार्चनम्। विसर्जनं निर्जराणाम-ध्यात्माध्यासनं विभोः॥१३॥
 शांतिधारा ततः शान्ति-बलिकर्म क्षमापणम्। गमनाप्रच्छन्नं पश्चात्कृतकर्मफलार्थना॥१४॥
 इति प्रतिष्ठादिवस-क्रियाक्रम उदीरितः। तत्तत्कर्मविशेषस्तु, प्रयोगे प्रतिपाद्यते॥१५॥

अंकुरारोपण दिवस से लेकर नवमें दिन दिवस में प्रतिष्ठा शास्त्र में कथित विधि से केवलज्ञान कल्याणक की विधि करना है। उसमें सर्वप्रथम विस्तार से यागमंडल की पूजा करके मंडल के सामने सिंहासन पर प्रतिमा की स्थापना करें। आह्वानन आदि विधि करके स्वर्णशलाका की स्थापना करना, पंचकल्याणक का आरोपण करना, अनंतर संस्कारों का आरोपण करना तत्पश्चात् मंत्रन्यास विधि करना, तदनु रूप प्रतिष्ठाहोम की विधि करना है। उसी समय गंधयंत्र की आराधना करके पुष्पों से जप करना है॥ १-४॥

तदनंतर प्रतिष्ठातिलक न्यासविधि व अधिवासनविधि करना चाहिये। स्वस्ति अयन विधि, आशीर्वाद दानविधि और वृक्षस्थापन विधि करना है॥५॥

अनंतर नयनोन्मीलन, गंधलेपन, गुणारोपण, दश अतिशयों की स्थापना और समवसरण रचना करें। दिव्य अतिशयों का संकल्प, प्रातिहार्यों की स्थापना, चिन्ह स्थापना पुनः यक्षयक्षी की स्थापना करना। पश्चात् कल्याणपंचक आरोपण, कंकण मोचन, जिनेन्द्रदेव का साक्षात्कार और मुखोद्घाटन विधि करना। पुनः अर्घ्य, पुष्पांजलि, आशीर्वाद, शांतिधारा, स्तुति, अर्थन्यासादि व इन्द्रों द्वारा सहस्र नाम स्तुति करना॥६-९॥

अनंतर संगीत-गीत, नृत्य आदि करके केवलज्ञान कल्याणक की उचित क्रियायें करना, ग्राम संबंधी ब्रह्म-दिकपालों की बलि पूजा विधि करना। अनंतर विहार घोषणापूर्वक भगवान का विहार अर्थात् रथयात्रा महोत्सव करना। तत्पश्चात् १०८ कलशों से भगवान का अभिषेक व एकादशप्रकारी पूजन करना। अनंतर देवों का विसर्जन व भगवान का अध्यात्म अध्यासन—ध्यान करना। पुनश्च शांतिधारा, शांतिबलिक्रिया- शांतिपाठ और क्षमापण विधि करना, पुनः भगवान से हाथ जोड़कर जाने की पृच्छना, पश्चात् की गई क्रियाओं के फल की याचना करना। इस प्रकार प्रतिष्ठा दिवस—केवलज्ञान कल्याणक दिवस की क्रियाओं का क्रम कहा गया है। उन-उन क्रियाओं की विशेषविधि तो आगे प्रयोगविधि में बतलाते हैं॥१०-१५॥

अथ केवलज्ञानकल्याणविधानमनुवर्णयिष्यामः ।

तत्रादौ पूर्ववन्मूलवेद्यां प्रतिष्ठायंत्राराधनां निष्ठाप्य तत्कल्याणमेवं विदध्यात् ॥

अब केवलज्ञान कल्याणक की विधि को ॐ से कहेंगे ॥

सर्वप्रथम पूर्ववत् मूलवेदी पर प्रतिष्ठायंत्र आराधना की विधि पूर्ण करके केवलज्ञान कल्याणक विधि करें ॥

पीठत्रयाग्रविलसद्धरिपीठकल्पं, सद्देदिकोपरि तटे निदधामि पीठं ।

प्रक्षालयामि शुचिभिः सलिलैः पटेन, प्रच्छादितेन निदधेक्षतपुष्पदर्भान् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अहं क्षं ठः ठः श्रीपीठस्थापनम् करोमि स्वाहा ॥ श्रीपीठस्थापनं ॥ (अभिषेक पीठ—जलोत् स्थापित करना) ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥ पीठप्रक्षालनं ॥

(यह मंत्र पढ़कर पीठ—अभिषेक का पात्र प्रक्षालित करना) ॥

तत्पीठोपरि प्रागग्रवस्त्राच्छादनम् (अनंतर पीठ के ऊपर वस्त्र आच्छादित करना) ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः । सकुसुमाक्षतरत्नहेमदर्भस्थापनं । (पीठ पर पुष्प, अक्षत, रत्न, दर्भ स्थापित करना) ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, पीठं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा ॥ पीठार्चनम् ॥ पीठार्चनं ॥ (पीठ को अर्घ्य चढ़ावें) ॥

आगे का श्लोक पढ़कर दीक्षा ग्रहण मंडप में स्थित जिनबिंब के आगे पुष्पांजलि बिखेरकर प्रतिमाजी को लाकर मूलवेदी के यंत्र

पर स्थापित पीठ—आसन पर विराजमान करें ॥

मालिनी छंद— अथ जिनपतिबिंबे, कर्म निष्क्रांतियोग्यं । विधिवदिह विधाया-शेषमानीय भूयः ॥

तमितरजिनबिंबै-रंचितां मूलवेदीं । तदुपरि निहतेऽस्मिन्विष्टरे स्थापयामः ॥ २ ॥

इदमुक्त्वा दीक्षाग्रहणमंडपस्थितजिनबिंबाग्रे पुष्पांजलिं विकीर्य तान्बिंबान्नीत्वा मूलवेदीयंत्रोपरिस्थापितपीठे स्थापयेत् ।

इमं मंत्रं पठेत् ।

ॐ यस्य भक्तिवशतस्त्रिदशैः समस्त-कल्याणपूजनविधिर्विदधे समस्तैः ।

तं वेदिकोपरिमपीठतले सुवस्त्र-प्रच्छादिते जिनपतिं विनिवेशयामि ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं असि आ उसा! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीं अहं असि आ उसा! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीं अहं असि आ उसा! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं असि आ उसा इदं जलादिकं अर्चनं गृहाण-गृहाण नमोऽर्हते स्वाहा ।

इत्यावाहनादिमंत्रः । (सिंहासन के नीचे स्वर्ण-सलाई रखना)

स्वर्णशलाका स्थापन विधि

आरोप्य बिंबेऽस्य चले समस्तं, गर्भावतारादिविधिं पुरोक्तम् ।

क्षिपामि सिंहासनपादपीठ-द्वयान्तरे हेममयीं शलाकाम् ॥ ४ ॥

इदमुक्त्वा अचाल्यजिनबिंबानां श्रीपादपीठसिंहपीठयोर्मध्ये सुवर्णशलाकां स्थापयित्वा यस्य भक्तिवशत इत्यादिमंत्रैरावाहनादिकं पूर्ववद्विदध्यात् ॥

अचल जिनप्रतिमाओं के श्रीचरण और सिंहासन के बीच में स्वर्णशलाका स्थापित करना, पुनः “ॐ यस्य भक्ति” आदि उपर्युक्त

श्लोक-मंत्र बोलकर स्थापना आदि करके अर्घ्य चढ़ाना।

आगे के लोकों को बोलकर यथाविधि सभी प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करते हुए “पंचकल्याणक माला” का आरोपण करना॥

अथ कल्याणमालारोपणम्

मगधराछन्द—योत्र स्वर्गावतीर्णः, सुरगिरिशिखरे दुग्धवार्द्धः पयोभिः। लब्ध्वा जन्माभिषेकं, शतमखविहितं त्यक्तसाम्राज्यभोगं
प्रव्रज्येग्रैस्तपोभिस्त्रिजगदपचितार्हन्त्यमेयोपदेष्टा। कर्मध्वंसात्तश्मार्, त्रिभुवनशिखरे भातु सिद्धोस्तु सोऽयम्॥११॥

कल्याणपंचकारोपणप्रतिज्ञापनाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ गर्भावतरणकल्याणमालारोपणम्

शार्दूलविक्रीडित—बद्ध्वा षोडशभावनाभिरनघः, श्रीतीर्थकृन्नाम तत्। भुक्त्वा स्वर्गमितोऽमरेन्द्रविभवं, योऽत्रावतारोन्मुखः॥
मासान्यंचदशापि वर्षति मणि-स्वर्णौघमिन्द्राज्ञया। श्रीदेऽर्हत्पितृमंदिरे सुरसरिन्-नीरोक्षिते क्ष्मातले॥१२॥

उपजातिछंद—

मुंचत्सु मंदारमनोज्ञमाला-मस्तानिकां गुह्यकनिजरिषु। सुगंधिवायौ विहिते सुरैस्तै-र्वाद्यानि देवेष्वपि वादयत्सु॥१३॥
श्रीमुख्यदेवीषु जगत्रयांबा-मुपासमानासु सदा द्विरष्ट-स्वप्नावसानेऽत्र दिवोवतीर्णः, स एव देवो जिनबिंब एषः॥१४॥

गर्भावतरणकल्याणस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ जन्माभिषेककल्याणमालारोपणम्

मगधराछंद—ज्ञात्वा घंटादिनादैर्य-मुदितममराः कल्पजाद्याः समीयुः। शच्यानीयार्पितं यं, सुररदनिगतः स्वांकमारोप्य नीत्वा।
मेरौ संस्नाप्य दुग्धांबुधि-विमलजलैर्भूषयित्वा जनन्याः। संयोज्येद्रः सिषेवे, सुरजनविनियोगोपभोस्रैः॥१५॥

जन्माभिषेककल्याणस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ निष्क्रमणकल्याणमालारोपणम्

शार्दूलविक्रीडित—स्वर्भूगोचरयोग्यभोग्यसुलभं, संत्यज्य राज्यं वशी। यो लौकांतिकसंस्तुतः सुरकृत-स्नानोत्सवालांक्रियः।
आरूढः शिबिकां नरांबरचरा-मर्त्येश्वरोढां वनं। गत्वादाय तपस्तदा स्म लभते, तुर्यां धियं सोस्त्वयं॥१६॥

निष्क्रमणकल्याणस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ केवलज्ञानकल्याणमालारोपणम्

उपजातिछंद—

तिष्ठन्गुणस्थानचतुष्टये संदृष्ट्यादिकेतोऽपि च धर्म्ययोगात्।

अयत्नवीतामनुजत्रयायु-र्यो मोहसप्तप्रकृतीर्निहन्ति॥१७॥

अनुष्टुपछंद—

ततः क्षायिकसद्द्रष्टिः, क्षपकश्रेणिमाश्रयन्। गुणस्थाने सप्तमेऽधः-प्रवृत्तकरणं भजन्॥१८॥

अष्टमेऽपूर्वकरणं अनिवृत्त्यादिकं पुनः। नवमे लभते स्थाने, स्थानेऽत्रैवाद्यभागके॥१९॥

उपजातिछंद—

साधारणस्थावरसूक्ष्मतिर्यगायुर्द्वयोद्योतननारकायुः।

द्वयातपानादिमशुक्लकेन, निद्रात्रयं जातिचतुष्टयं च॥११०॥

अष्टौ कषायानथ तद्द्वितीये, तृतीयके क्लैब्यमथो तुरीये।

स्त्रीवेदमग्रे तु हसादिषट्कं, प्रक्षिप्य पुंवेद उदीचि तद्वत्॥१११॥

क्रोधं च मानं निकृतिं च लोभं, षट्कादिके संज्वलनस्वरूपम्।

लोभं च तं बादरकिट्टिक्लप्या, स्थाने तु सूक्ष्मादिकसांपराये॥११२॥

लोभं ततः क्षीणकषायसंज्ञे, पदे सनिद्रां प्रचलामुपान्ते।

अंते तु घातित्रितयं परेण, शुक्लेन योर्हन्क्षपयेत्स एषः॥११३॥

शार्दूलविक्रीडितछंद—द्रव्याणां निजमर्थपर्ययमयं, भावाणुकं वा नयैः। ध्यायन्नेव चिराद्वितर्कबलतो, स्थित्या पृथक्त्वेन यः।

अर्थव्यंजनयोगसंक्रमवता, चित्तेन मोहं क्षिपे-द्वालः कुंठकुठारकेन कुटमुच्छिंदन्निवैषोऽस्तु सः॥१४॥

स्रग्धराछंद—निर्जित्याजेयमोहं, समधिगतयथाख्यातचारित्रराज्यः। स्वात्मैकालंबिपूर्वं, श्रुतमयगतवीचारसद्भ्याननिष्ठः।

शुद्धस्वात्मानुभूति-प्रभवबहुतरानंदसांद्रः स साक्षात्। ज्ञानावृत्यादिघाति-त्रितयबलहरोऽत्रास्तु निर्ग्रंथराजः॥१५॥

प्रक्षीणे घातिजाते, निरवधिकमहाबोधदृग्वीर्यसौख्याम्। जीवन्मुक्तिं प्रपन्नो, नृसुरमुनिमहास्थानसिंहासनस्था।

यश्चाष्टप्रातिहार्यो, निरतिशयचतुस्त्रिशुद्धातिशेषः। कुर्वाणो धर्मतीर्थं, विहरति स भवान् योगवत्केवलींद्रः॥१६॥

उपजाति छंद—

तीर्थंकरव्यक्तिविशेषसवित्-प्रवृत्तिमुख्यव्यवहार सिद्ध्यै। यल्लक्षणं ते मतमिंद्रमुख्यै-स्त्वद्गौरवात्सादरमर्च्यत्वेत्।

निःश्रेयसार्थैकनिदानभूत, त्वत्पादसेवासु सदा नियुक्ते। यक्षेशयक्षीषु कृतेन येन, शक्रादयस्तद्बहु मानयति॥१७॥

केवलज्ञानकल्याणस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथ निर्वाणकल्याणमालारोपणम्

इन्द्रवज्राछंद—

अंतर्मुहूर्तायुषि चावशिष्टे, सूक्ष्मक्रियाद्यप्रतिपातियोगात्।

सूक्ष्मीकरोतु स्वशरीरयोगं, यः केवली योगयुतः स एषः॥१८॥

वसंततिलकाछंद—

संघातबंधनरसास्तनवश्च वर्णाः, पंचाथ सुस्वरशुभस्थिरगंधवद्वै।

द्वेधाभ्रयानममरायुरिहानुपूर्व्यं, संस्थानसंहननकानि तु षट् षडेव॥१९॥

स्पर्शाष्टकागुरुलघुच्छ्रवसितोपघाता-नादेयनिर्मितिनिर्गन्धयशोन्यघाताः।

प्रत्येकनीचकुलयुग्ममपूर्णमंगो - पांगत्रयान्यतरवेद्यकदुर्भगानि ॥२०॥

एतद्द्विसप्ततिविधाः प्रकृतीरयोग-केवल्युपांतसमये चरमेण शुक्ल-

ध्यानेन संक्षपयति क्षपकाधिपो यः, साक्षात्स एव भगवानयमस्तु बिंबः॥२१॥

शार्दूलविक्रीडितछंद—

मर्त्यायुः सुभगं मनुष्यगतिमानुष्यानुपूर्वायशः-कीर्तीः पंचखजातिरन्यतरवेद्यं च त्रसं बादरम्॥

पर्याप्तोच्चकुले च तीर्थकरता-देयं च तिस्रो दश। क्षिप्तैताः प्रकृतीस्तदन्तसमये, यः सिद्ध्यतीहास्तु सः॥२२॥

चित्कायं निरपायमाप्य सहजा-नंदं च येनोज्झितं। विद्युद्दामवदस्तसंहतिवपुस्-तल्लज्जयैव स्वयम्।

कृत्वा विक्रिययोद्धचंदनमुखै-रग्नौद्रमौल्यग्निना। संस्कृत्यानुधरंति भस्म भवना-मर्त्याः स जीयाज्जिनः॥२३॥

मालिनी छंद—

विजितसकलकर्मा, निर्मलध्यानयोगात्। अधिगतजगदग्रः, सोर्ध्वयानः स्वभावात्।

गुणनिधिरथ लब्ध्वा, लोकचूडामणित्वं। सहजसुखसुतृप्तो, भाति योऽयं स नोऽव्यात्॥२४॥

निर्वाणकल्याणस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इति कल्याणपंचकस्थापनम्।

अथ संस्कारमालारोपणम्

सद्दृष्टिलाभाद्यपवर्गलक्ष्मी, पर्यंततत्तत्पदसंभवन्तीम्।

संस्कारमालां निदधेष्टचत्वा-रिंशन्मितामत्र जिनेन्द्रबिंबे॥१॥

संस्कारमालारोपणप्रतिज्ञापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्। (सभी प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

४८ लवंग से संस्कार

(विधिनायक प्रतिमा पर एक-एक मंत्र पर एक-एक लवंग डालें, शेष प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि करते रहें।)

प्रवर्द्धमानामलदर्शनस्य, निर्बाधबोधस्य सदा समीचः ।

पवित्रचारित्रविधेः क्रमेण, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥

ॐ ह्रीं अयं सम्यग्दर्शनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

एतदर्थारोपणपरायणान्तःकरणः पठित्वा प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् । एवं उत्तरत्र सर्वत्र संस्कारारोपणमंत्रान्ते पृथक्-पृथक् पुष्पांजलिं कुर्यात् ।

ॐ ह्रीं अयं सम्यग्ज्ञानसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं सम्यक्चारित्रसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

द्विषट्प्रकारोग्रतपोभरस्य, चतुर्विधाराधनगोचरत्वात् ।

विशिष्टवीर्यस्य चतुर्विधस्य, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥३॥

ॐ ह्रीं अयं बाह्याभ्यन्तरतपःसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं चतुरंगवीर्यसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

गुप्तित्रयस्याथ संपंचभेद, समित्युपेतस्य विशुद्धिहेतोः ।

मतेत्र मात्राष्टकसंज्ञितस्य, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥४॥

ॐ ह्रीं अयं अष्टमातृमंडलप्रवेशसंस्कारः इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

भैक्षैर्यकावान् शयनासनांग, व्युत्सर्गचेतोविनयेषु सम्यक् ।

शुद्धे विशुद्धयष्टकसंचितायाः, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥५॥

ॐ ह्रीं अयं शुद्धयष्टकावष्टंभसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

परीषहाघोजितनिर्जयस्य, त्रियोगजासंयमवर्जनस्य ।

कृतादिजा संयम संहतेश्च, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥६॥

ॐ ह्रीं अयं अशेषपरीषहजयसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं त्रियोगासंयमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं त्रिकरणासंयमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

प्राणेन्द्रियाः संयमशीलनस्य, दशप्रकारस्य तु शीलनस्य ।

पंचेन्द्रियाणां दृढनिश्चयस्य, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥७॥

ॐ ह्रीं अयं दशसंयमत्रिशीलतासंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं पंचेन्द्रियजयशीलतासंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

अनादिसंवृत्तदुरंतसंज्ञा, चतुष्टयस्यातिविनिग्रहस्य ।

दशप्रभेदोत्तमधर्मवृत्त्या, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥८॥

ॐ ह्रीं अयं चतुःसंज्ञानिग्रहशीलतासंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं दशधर्मधारणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

अष्टादशाश्लिष्टसहस्रमान, शीलावलेर्लक्षचतुष्कभाजां ।

अशीतिलक्षामितसद्गुणानां, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥९॥

ॐ ह्रीं अयं अष्टादशशीलसहस्रसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं चतुरशीतिलक्षगुणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ध्यानस्य धर्म्यस्य सतोऽप्रमत्त-वृत्तस्य चैकांततया युतस्य ।

श्रुतोपयोगस्य दृढस्य बाढं, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥१०॥

ॐ ह्रीं अयं विशिष्टधर्म्यध्यानसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं एकांताप्रमत्तचारित्रसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं अतिदृढश्रुतोपयोगसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

अथास्खलितसत्परिणामजाल-समुल्लसच्छ्रेण्यधिरोहणस्य ।

शुद्धेस्तथानन्तगुणात्मिकायाः, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥११॥

ॐ ह्रीं अयं अस्खलितपरिणामश्रेणिसमधिरोहणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं अनंतगुणशुद्धिसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

अधः प्रवृत्तादिकृतेः पृथक्त्व-वितर्कवीचारमहासमाधेः ।

अपूर्वसम्यक्करणस्य तस्य, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥१२॥

ॐ ह्रीं अयं अधः प्रवृत्तकरणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं पृथक्त्ववितर्कवीचारध्यानसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं अपूर्वकरणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ततोऽनिवृत्त्याधिकृतेश्च तस्याः, कषायकाणामथ बादराणां ।

निःसारिताकिट्टिकृतेश्च तस्याः, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥१३॥

ॐ ह्रीं अयं अनिवृत्तिकरणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं बादरकषायकिट्टिकारणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ततः परं सूक्ष्मकषायकिट्टि-कृतेश्च तेषामथ बादराणां ।

तत्किट्टिनिर्लेपनसंविधेश्च, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥१४॥

ॐ ह्रीं अयं सूक्ष्मकषायकिट्टिकारणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं बादरकषायकिट्टिकानिर्लेपनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ततः क्रमात्सूक्ष्मकषायकिट्टि-निर्लेपनं सूक्ष्मकषायवृत्तम् ।

इत्येतयोः क्षीणकषायतायाः, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥१५॥

ॐ ह्रीं अयं सूक्ष्मकषायकिट्टिकानिर्लेपनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं सूक्ष्मकषायचारित्रसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं क्षीणकषायचारित्रसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

क्रमाद्यथाख्यातचरित्रमैक्य-श्रुताद्यवीचारकशुक्लयोगः ।

निःशेषघातिक्षय इत्यमीषां, संस्कार एषोऽत्र चक्रास्तु बिंबे ॥१६॥

ॐ ह्रीं अयं यथाख्यातचारित्रसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं एकत्ववितर्कवीचारध्यानसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अयं घातिकर्मनिर्मूलनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा ।

श्रीकेवलज्ञानदृग्दुर्भवस्य, तीर्थप्रवृत्त्याख्यविधेः समाधेः।

सूक्ष्मक्रियाद्यप्रतिपातिनश्च, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥१७॥

ॐ ह्रीं अयं केवलज्ञानदर्शनोद्भवसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं धर्मतीर्थप्रवर्तनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

शैलेश्यनुख्यातकृतेः प्रकर्ष-कृत्संवरस्यापि च योगकिट्टेः।

कृतेश्चनिर्लेपनसद्विधेश्च, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥१८॥

ॐ ह्रीं अयं शैलेशीकरणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं परमसंवरसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं योगकिट्टिकाकरणसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं योगकिट्टिकानिर्लेपनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ततः समुच्छिन्नमुखक्रियानि-वृत्त्याख्ययोगस्य सुनिर्जरायाः।

निःशेषकर्मप्रकरक्षयस्य, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥१९॥

ॐ ह्रीं अयं समुच्छिन्नक्रियानिवृत्तिध्यानसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं परमनिर्जरासंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं सकलकर्मनिर्मूलनसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

अनंतदुर्वारदुरन्तदुःख-संसारपर्यायपरक्षयस्य।

अनंतसिद्धत्वसुपर्याप्तेः, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥२०॥

ॐ ह्रीं अयं अनादिसंसारपर्यायविनाशसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं अनंतसिद्धपर्यायोपलब्धिसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

अदेहसम्यक्सहजा द्वितीय-ज्ञानोपयोगैश्वर्योपलब्धेः।

तद्वत्सुदृष्टैश्वर्यस्य साक्षात्, संस्कार एषोऽत्र चकास्तु बिंबे ॥२१॥

ॐ ह्रीं अयं अशरीरसहजज्ञानोपयोगैश्वर्यसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अयं अशरीरसहजदर्शनोपयोगैश्वर्यसंस्कार इहार्हति स्फुरतु स्वाहा।

सुदृष्टिलाभादपवर्गलक्ष्मी, पर्यन्ततत्तत्पदसंभवन्तीम्।

संस्कारमालां त्वमितोऽष्टचत्वारिंशन्मितां देव विदेहि नस्ताम् ॥२२॥

इष्टप्रार्थनाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् (सभी प्रतिमाओं के सामने पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

इति अष्टचत्वारिंशत्संस्कारमालारोपणविधानम् ॥

अथ मंत्रन्यासविधानम्

इन्द्रवज्राच्छंद —

सालोकलोकत्रितयैकनित्य-ज्योतिः परब्रह्ममहोदयस्य।

साक्षादभिव्यंजनमेव शब्द-ब्रह्मेति मंत्रानिह तान्यसामि ॥१॥

अलोकाकाश सहित तीन लोक को प्रगट करने वाला, नित्यज्ञानरूपी ज्योति को धारण करने वाला और परमात्मा के वैभव को स्पष्ट करने वाला यह शब्दब्रह्म है। इसलिए उस शब्दब्रह्म के मंत्रों को जिनप्रतिमा के अवयवों पर मैं न्यास करता हूँ।

मंत्रन्यासप्रतिज्ञापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्। (मंत्रन्यास की प्रतिज्ञा हेतु प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

ललाट पर मंत्र लिखें॥

अ आ इति च वर्णौ द्वौ, भाले बिम्बे न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं अ आ ललाटे। दक्षिणतः प्रभृति करेण न्यसेत्।

अ आ बीजाक्षर सहित मंत्रों को प्रतिमा के ललाट में दाहिनी तरफ से हाथ से स्वर्णलेखनी से कर्पूर मिश्रित केशर से लिखे। ऐसे ही आगे के मंत्रों को लिखें।

यदि प्रतिमायें छोटी हैं, इतने बीजाक्षर नहीं लिखे जा सकते हैं या प्रतिमायें अधिक हैं तो भी “ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं” ये मंत्र मन में बोलकर ‘अ आ’ ये बीजाक्षर लिखे। मंत्र न्यास में प्रमाद न करें॥

दोनों नेत्रों पर ॐ ऋ ऌ लिखें॥

इ ई च दक्षिणे वामे, नेत्रे बिंबे न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥३॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं इ ई दक्षिणेतरेनेत्रयोः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं इ (दाहिने नेत्र पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं ई (बायें नेत्र पर)।

दोनों कानों पर—

उ ऊ च दक्षिणे वामे, कर्णे बिम्बे न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥४॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं उ ऊ कर्णयोः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं उ (दाहिने कान पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं ऊ (बायें कान पर)।

दोनों नाक पुट पर—

ऋ ॠ च दक्षिणे वामे, बिंबे घ्राणे न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥५॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं ऋ ॠ च नासापुटयोः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं ऋ (दाहिनी नाक पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं ॠ (बायीं नाक पर)।

दोनों गाल पर—

लृ लृ च दक्षिणे वामे, गंडदेशे न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥६॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं लृ लृ गंडयोः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं लृ (दाहिने गाल पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं लृ (बाएँ गाल पर)।

ऊपर-नीचे की दंतपंक्ति पर—

ए ऐ इति द्वावूर्ध्वाधो, दन्तपंक्त्योर्न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥७॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं ए ऐ ऊर्ध्वाधोदन्तपंक्त्योः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं ए (ऊर्ध्व दंतपंक्ति पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं ऐ (नीचे की दंत पंक्ति पर)।

दायें-बायें कंधे पर लिखें—

ओ औ च दक्षिणे वामे, स्कंधे बिंबे न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥८॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ओ औ स्कंधयोः।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ओ (दायें कंधे पर)। 'ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं औ' (बायें कंधे पर)।

मस्तक और जिह्वा के अग्रभाग पर लिखें—

अं अश्च मस्तके बिंबे, जिह्वग्रे विन्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वो मायार्ह रमादिकौ ॥९॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अं मस्तके अः जिह्वग्रे।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अं (मस्तक पर)। 'ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं अः' (जिह्व के अग्रभाग पर)।

दाहिनी और बाईं भुजा पर लिखें—

कचवर्गौ दक्षिणेऽथ, वामे बाहौ न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा - वों मायार्ह रमादिकौ ॥१०॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क ख ग घ ङ दक्षिणभुजे, च छ ज झ ञ वामभुजे।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क ख ग घ ङ (दाहिनी भुजा पर)। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं च छ ज झ ञ (बायीं भुजा पर)।

दाई-बाईं कुक्षि पर लिखें—

टतवर्गौ दक्षिणेऽथ, वामे कुक्षौ न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥११॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न क्रमेण दक्षिणवामकुक्ष्योः।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ट ठ ड ढ ण (दाहिनी कुक्षि पर)। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं त थ द ध न (बाईं कुक्षि पर)।

दाई-बाईं जंघा पर लिखें—

पफौ च दक्षिणे वामेऽप्युरौ बिंबे न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥१२॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं प दक्षिणोरौ फ वामोरौ।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं प (दाहिनी जंघा पर)। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं फ (बाईं जंघा पर)।

गुह्यभाग और नाभि में लिखें—

बभौ च गुह्ये नाभौ च, बिंबस्यास्य न्यसाम्यहं।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥१३॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ब गुह्ये भ नाभिमंडले।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ब (गुह्य भाग में लिखें)। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं भ (नाभि में लिखें)।

दोनों नितंब पर लिखें—

मकारौ दक्षिणे वामे, स्फिकप्रदेशे न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्ह रमादिकौ ॥१४॥

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं मस्फिचोः।

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं म (दायें नितंब पर)। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं म (बायें नितंब पर)।

रोम भाग में लिखें—

यरौ कुक्षे क्रमादूर्ध्व-रोमांचे च न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्हं रमादिकौ॥१५॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं य शरीरस्थाने र ऊर्ध्वरोमांचे।

ॐ ह्रीं हं श्रीं य (शरीरस्थान अर्थात् पेडू के नीचे लिखें)। ॐ ह्रीं हं श्रीं र (ऊर्ध्व के केशों में लिखें)।

पीठ और गले में और कांख में लिखें—

लवौ पृष्ठे च कक्षादि-संधिदेशे न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्हं रमादिकौ॥१६॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं ल पृष्ठे व ग्रीवाकक्षादिसंधिषु।

ॐ ह्रीं हं श्रीं ल (पीठ पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं व (गले में और कांख आदि में)।

दोनों घुटनों पर लिखें—

शकारो दक्षिणे वामे, जानुनीह न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्हं रमादिकौ॥१७॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं श जानुयुग्मे।

ॐ ह्रीं हं श्रीं श (दायें घुटने पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं श (बायें घुटने पर)।

दोनों एड़ी पर लिखें—

षकारौ गुल्फयुग्मे च, बिंबस्यास्य न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्हं रमादिकौ॥१८॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं षगुल्फमूलयोः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं ष (दायीं एड़ी पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं ष (बायीं एड़ी पर)।

दोनों पैरों पर लिखें—

सकारौ पादयुगले, बिंबस्यास्य न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्हं रमादिकौ॥१९॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं स पादयोः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं स (दाहिने पैर पर)। ॐ ह्रीं हं श्रीं स (बायें पैर पर)।

हृदय पर लिखें—

हकारं हृदयस्थाने, बिंबस्यास्य न्यसाम्यहम्।

ध्यात्वा शशांकविशदा-वों मायार्हं रमादिकौ॥२०॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं ह सर्वप्राणस्थाने हृदये। ('हृदय' यह सर्वप्राणों का स्थान है)।

ॐ ह्रीं हं श्रीं ह हृदय पर लिखे।

उपजाति छंद—

अनन्तशक्त्यात्मकवर्णजातं, इहार्हति न्यस्तमिदं प्रकृष्टम्।

भावश्रुतं तच्च तनोतु लोके, ज्योतिर्मयं केवलबोधमुद्भूतम्॥२१॥

पुष्पांजलिः। सभी प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि छोड़ें।

इति मन्त्रन्यासविधानम्।

नोट—जिन छोटी-छोटी प्रतिमाओं पर उपर्युक्त पूरा अंकन्यास नहीं हो पाता है, उनके लिए परिशिष्ट में चार्ट दिया जा रहा है। इन अंकों को यथास्थान लिखते हुए “ॐ ह्रीं हं श्रीं” यह मंत्र मन में बोल लेना चाहिए।

अथ प्रतिष्ठाहोमः

जैसे मंदिर और वेदीशुद्धि में मंदिर के चारों तरफ होमविधि संपन्न की है, वैसे ही प्रतिष्ठेय जिनप्रतिमाओं की वेदी के चारों तरफ होम करना है। इसमें पूर्व के समान ही संपूर्ण होमविधि करना है। बस क्रम से चारों कुण्डों में एक-एक मंत्रों से एक-एक समिधा से आहुति देना है।

अनुष्टुप्छंद—

विमानस्य चतुर्दिक्षु, यथा होमविधिः कृतः।

तथा वेद्याश्चतुर्दिक्षु, प्रतिष्ठाहोममारभे ॥१॥ पुष्पांजलिः

सम एव विधिः सर्वः, केवलं समिधाहुतौ।

मंत्राणां विद्यते भेदस्तन्मंत्रान् ब्रूमहेऽधुना ॥२॥

पूर्व दिशा के कुंड में आगे के मंत्र से समिधा से होम करें

ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा हँ सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा स्वधा वषट्। इति पूर्वकुंडे समिधा होममंत्रः।

दक्षिण दिशा के कुंड में आगे के मंत्र से समिधा से होम करें

ॐ णमो भगवदो महदिमहावीर वड्ढमाणबुद्धरिसीणं हँ हीं झौं झौं स्वाहा। दक्षिणकुंडे समिधाहोममंत्रः।

पश्चिम दिशा के कुंड में आगे के मंत्र से समिधा से होम करें

ॐ नमोऽर्हते भगवते उपरिधरणेन्द्रसहिताय सहस्रफणालंकृताय हूं फट् स्वाहा। पश्चिमकुंडे समिधाहोममंत्रः।

उत्तर दि ॥ के कुंड में आगे के मंत्र से समिधा की आहुति देंगे।

ॐ नमोऽर्हते भगवते वृषभशांत्यर्हद्गोहिणि अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा। उत्तरकुंडे समिधाहोममंत्रः।

एवं चत्वारः प्रतीन्द्राः वेद्याश्चतुर्दिक्षु होमविधिं पूर्ववत्सर्वं विदध्नुः।

इस प्रकार चार सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य वेदी के चारों दिशाओं में होमविधि पूर्व के समान करें।

अथ प्रतिष्ठाहोमकाल एव गंधयंत्राराधनमेकः प्रतींष्ट कुर्यात् ॥ तद्यथा॥

इसी प्रतिष्ठाहोम के समय ही एक सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य गंधयंत्र की आराधना विधि करें॥

मध्ये तत्तदनाहतं परिवृतं, झं ठं स्वरैः क्लींयुतम्। इवीं क्ष्वीं हं स सुबीजकैर्बहिरतो, वार्मडलेनावृतम्।

श्रीखंडादिविलिप्तहेममयसत्पात्रे लिखित्वादरा॥द्व॥द्वैः करवीररक्तकुसुमै-राराधये मंत्रतः॥ पुष्पांजलिः॥

परिशिष्ट में बने हुए गंधयंत्र को एक पात्र में बनाकर आगे दिये हुए मंत्र से १०८ बार लाल कनेर के पुष्पों से इस गंधयंत्र में रखे हुए चंदन को मंत्रित करें पुनः इस मंत्रित चंदन से गंधयंत्र की आराधना का मंत्र॥

ॐ श्रीं हीं हँ श्रीं नमः।

इत्यनेन मंत्रेण प्रतिष्ठाहोमकाल एव अष्टोत्तरशतवारं संजय निक्षिप्य तद्यंत्रगंधं सर्वगंधसंमिश्रं स्वर्णपात्राग्रे निक्षिप्य तद्गंधद्रव्यैर्वक्ष्यमाणमंत्रेण श्रीनयनोन्मीलनं सर्वांगविलेपनं च चलाचलप्रतिमयोर्युगपदेव कुर्यात्। इति गंधयंत्रमंत्राराधनाविधिः।

पुनः स्वयं प्रतिष्ठाचार्य आगे लिखे हुए मंत्र से वेत और लाल पुष्पों से एक मुहूर्तपयत जाय करें॥

शुभप्रसूनैर्मणिभिर्विशुद्धै-स्तथा समंत्रैरथवांगुलीभिः।

आराधयाम्यष्टशतं सुरेन्द्रै-राराध्यपादं भगवज्जिनेन्द्रम्॥

ॐ श्रीं हीं हँ श्रीं मम सन्निहितो भव भव वषट् नमः।

इत्यनेन मंत्रेण सितरक्तसुगंधपुष्पैरामुहूर्तं तत्पुष्पजपं स्वयमिन्द्रः कुर्यात्॥

अथ प्रतिष्ठातिलकविधानम्

अब जिनमूर्तियों की प्रतिष्ठाविधि में प्रतिमाओं के नाभि में तिलक लगाने की विधि कहते हैं।

एक स्थान पर चंदोवा लगाकर रंगावली से चौकोन चौक पूरकर उस पर िला स्थापित करना है॥

वितानमाल्यांबरपूर्णकुंभ-रंगावलीचारुचतुष्कमध्ये ।

संस्थापयाम्यत्र शिलां विशालां, जिनप्रतिष्ठातिलकार्थपिष्ट्यै ॥१॥

ॐ ह्रीं ह्रीं क्षं ठ ठ शिलास्थापनं करोमि स्वाहा ।

चौक के चारों कोनों पर दीपक जलाना चाहिए और मध्य में स्थापित िला को पूर्णकुंभ के जल से प्रक्षालित करना है॥

कोणोज्ज्वलद्दीपचतुष्कदीप्रां, चतुष्कमध्यस्थशिलां विशालाम् ।

जांबूनदोच्चैः कलशप्रपूर्णेः, प्रक्षालयाम्युत्तमतीर्थवार्भिः ॥२॥ शिलाप्रक्षालनम् ॥

(पुनः आगे का श्लोक बोलकर अर्घ्य चढ़ावें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्भूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलै-रेनां शिलामर्चये ॥ शिलार्चनम् ॥

एनां शिलां अर्चयामि स्वाहा । (शिला को अर्घ्य चढ़ावें)

तिलकदान के लिए जो वस्तुयें पीसनी हैं, उनके नाम गिनाकर साथ ही उनका फल भी बताते हैं। हल्दी, इलायची, कंकोल, जायफल ये फलदायक हैं। दही मंगलकारी है। श्वेत सरसों इच्छित कार्यसिद्धि करने वाली है। जाति आदि पुष्प मन को प्रसन्न करते हैं। कर्पूर शांति प्रदान करता है। दूब दीर्घायु करती है। अक्षत कीर्ति बढ़ाता है। चंदन, कृष्णागरु, जायपत्री, पद्मक आदि सुरभि प्रदान करते हैं। ये सब तिलक के लिए उचित ॐ हल्दी, इलायची, कंकोल, जायफल, दही, वेत सरसों, जातिपुष्प, कर्पूर, दूब, अक्षत, चंदन, कृष्णागरु, जायपत्री पद्मक आदि द्रव्य सुख के लिए होंवें। इन उपर्युक्त द्रव्यों को शिला पर रखकर आगे लिखे श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें॥

प्रीतिं प्रियंगूरजनीत्यथैला-कर्कोलजात्यादिफलं सुगंधि ।

सद्यः फलौघं दधि मंगलार्थं, सिद्धार्थसार्थोभिमतार्थसिद्धिम् ॥३॥

जात्यादिपुष्पं मनसः प्रसादं, वृद्धिः समृद्धिं स्वसमृद्धिवृद्धिः ।

ददाति सीतीभवनं तुषारो, दूर्वा चिरायुः सुयशोऽक्षतौघः ॥४॥

श्रीखंडकालागरुजातिपत्र-सद्ग्रन्थिपर्णोत्तमपद्मकादिः ।

सौरभ्यमर्थः सुरभिः सुखाय, भूयासुरेते तिलकोचितार्थाः ॥५॥

इदमुक्त्वा शिलास्थापिततिलकार्थपुंजे पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

आगे का श्लोक बोलकर प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र-इंद्राणी के वस्त्र की गांठ लगवाकर उन पर पुष्पांजलि क्षेपण करें। पुनः उनसे इन वस्तुओं को उपर्युक्त िला पर पिसवावें॥

स्वभर्तृवस्त्रांचलबंधितांत-कौसुंभवस्त्रान्वितयष्टपत्न्या ।

शोणांगरागाभरणास्रजैतान्, सपेयामस्तिलकोचितार्थान् ॥६॥

तिलकार्थपेषणनियुक्तयष्टमिथुने कुंकुमरंजिताक्षतं क्षिपेत् ।

पुनः पीसे हुए कल्कचूर्ण को सुवर्णकटोरी में रखकर आगे के श्लोक को पढ़कर चत्तारिमंगल... आदि मंत्र को छह-छह बार पढ़कर इस तिलक हेतु कल्क ॐ को मंत्रित करें। मंत्र निम्न प्रकार है॥

ॐ चत्तारिमंगलं—अरिहंत मंगलं, सिद्धमंगलं, साहु मंगलं, केवलपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—

अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पव्वज्जमि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि स्वाहा।

स्वाहांतकोमादिकमंगलादि-मंत्रेण जप्त्वा तिलकार्थकल्कम्।

सौवर्णपात्रे विनिधाय तेन, लग्नोदयेऽस्मिस्तिलकं विधास्ये ॥७॥

ॐ चत्तारि मंगलं स्वाहेति मंत्रेणैकविंशतिवारान् तिलकार्थकल्कमभिमंत्रयेत्। (तिलकद्रव्य को मंत्रित करना)

तिलकद्रव्यसज्जीकरणम्।

आगे लिखे लोक व मंत्र से स्थापना विधि करके प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

स्त्रीभ्यः पुरा कंकणबंधनाभ्यो, नियोजिताभ्यः कुलकामिनीभ्यः।

धानागुडाढ्यलवणानि पृथग्दधेऽहं, जिनप्रतिष्ठातिलकोत्सवेऽस्मिन् ॥८॥ गुडादिव्यायनकदानम् ॥

आहूता भवनामरैरनुगता, यं सर्वदेवास्तथा। तस्थौ यस्त्रिजगत्सभांतरमहा-पीठाग्र सिंहासने ॥

यं हृद्यं हृदि सन्निधाय सततं, ध्यायति योगीश्वराः। तं देवं जिनमर्चितं कृतधिया-मावाहनाद्यैर्भजे ॥९॥

अत्र स्थापनानिक्षेपनयमाश्रित्याह्वानादिमंत्राः कथ्यन्ते।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उ सा! अत्र एहि एहि संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उ सा! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उ सा! ममात्र सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

इत्थं पूर्वविधिं विधाय विधिना-व्हानादिकं स्थापना- न्यासात्कुंभनियोगतः प्रतिकृतौ, कृत्वा जिनेंद्रं स्मरन्।

लग्नादौ सति रेचकेण विधिवन्-नाभौ प्रियंग्वादिना। तन्मंत्रं निदधामि वाद्यनिनदे, दिक्षु प्रसर्पत्यलम् ॥१०॥

तिलकविधिप्रतिज्ञापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

आगे लिखे हुए श्लोक को पढ़कर शुभ लग्न में बाजे बजवाते हुए सभी प्रतिमाओं की नाभि में आगे का मंत्र पढ़ते हुए तिलकन्यास विधि सुवर्ण लेखनी से करें।

तेजस्त्रिमूर्तीश्वरदेशकानु - जनिप्रियास्नातकबीजपूर्वम्।

सास्यादिको सार्हत्तनामनाम-मंत्रेण बिंबे तिलकं न्यसामि ॥११॥

मंत्रोद्धारः—ॐ हीं श्रीं हौं हः असि आ उ सार्हत्तां वृषभनाथस्य नाभौ तिलकं न्यसामि जगदेकरंजनार्थं वषट्^१।

अनेन तिलकन्यासं विदध्यात्।

आजकल कुछ प्रतिष्ठाचार्य इस तिलक विधि में यजमानों से अपने तिलक लगवाकर भेंट लेते रहते हैं। जबकि यहां प्रतिमाओं की नाभि में तिलक करने का विधान है।

॥ इति तिलकविधानम् ॥

अथ अधिवासनविधानम्

आगे का लोक व मंत्र बोलकर वेदी के सामने वेत पर्दा लगा देंगे।

जिनमतमिव सूक्ष्मं, यत्सुखस्पर्शदक्षं। क्षपितविविधबाधं, साध्वलंकारमुख्यम् ॥

शुचितरमपदोषं, सद्गुणं तद्दधेऽहं। जिनपतिवदनाग्रे, विस्तृतं कांडवस्त्रं ॥११॥

ॐ श्रीं हीं हौं हः श्रीं नमो अरहंताणं झ्रौं नमः स्वाहा। (वेदी के सामने पर्दा लगावें)

मुखवस्त्रमंत्रः। मुखवस्त्रमेवं कुर्यात्। वेदिकायामंतगृहे च।

आगे का लोक बोलकर प्रतिमाओं के गले में जौ की माला पहनाना॥

यवमालारोपणमंत्रः— मदनफललसन्त्या, मालयेषां यवानां। सुखफलगुणमाला-मार्हतीं सूचयन्त्या।

विगलदखिलदोषं, प्रार्चयामो जिनैन्द्रं। जनयतु जनतानां, क्षेमवृद्धिं सुभिक्षम्॥२॥ यवमालारोपणम्।

आगे का लोक बोलकर प्रतिमाओं के सामने सात धान के ७ पुंज रखें॥ इसका अभिप्राय यह है कि भगवान की दिव्यध्वनि सात भंगरूप है-

जिनेश्वरश्रीचरणांबुजाग्रे, सप्तोद्धधान्यानि समुच्चितानि।

अनंतधर्मेष्वापि संभवन्तीं, अर्हन्तु दिव्यध्वनिसप्तभंगीम्॥३॥

मुखवस्त्रप्रदानपूर्वकं यवमालामारोप्य जिनपदाग्रतः सप्तधान्यानुपाहरतु।

आगे का श्लोक बोलकर भगवान के पदों के सामने पांच बाण रखें-इसका अभिप्राय यह है कि भगवान ने कामदेव के पाँचों बाण विफल कर दिये हैं॥

उन्मादनं मोहनतापने च, यः शोषणं मारणमुच्छिनत्ति।

स्मारानिषूनस्य सुयोगकल्पान्, क्षिपामि कांडान्मुखवस्त्रपाश्वरे॥४॥

ॐ ह्रीं कांडस्थापनम्॥

अथाष्टकम्

(अब अष्टद्वय से पूजा करना॥)

अनुष्टुपछंद— सुगंधिशीतलैः स्वच्छैः, साधुभिर्विमलैर्जलैः। अनंतज्ञानदृग्वीर्य-सुखरूपं जिनं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। जलम्॥

कंकोलकैलागरुसत्प्रियंगू-लवंगकर्पूरकरजितेन। श्रीखंडपंकेन निरस्तपंकं, जिनक्रमाब्जं परिलेपयामि॥ २॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वशरीरावस्थिताय पृथु पृथु गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा। गंधं॥

जिनैन्द्रपादौ नखचन्द्रबिंबे, सेवार्थमभ्यागततारकाणां। पुंजायमानैर्विशदाक्षतानां, पुंजैर्जिनांध्रिं परिपूजयामि॥३॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वशरीरावस्थिताय पृथु पृथु अक्षतान् गृहाण गृहाण स्वाहा। अक्षतान्॥

यत्सौरभास्थास्तिमितालिमाला, नीलोत्पलानामिव भाति माला।

सा पंचकल्याणविमर्शपंच-सरात्ममालास्तु जिनेश्वरांध्रौ॥४॥

ॐ नमोऽर्हते ययय सर्वतो मेदिनीपुष्पवरपुष्पाणि गृहाण-गृहाण स्वाहा। पुष्पं॥ इति पंचशरमालारोपणम्।

शार्दूलविक्रीडित— क्षैरेयं बहुशर्कराज्यकलितं, पक्वान्मुच्चावचं। भक्ष्यानिंदुवलक्षतानपि खरा-न्नानोपदंशं पयः॥

पूर्वं पेयमपूर्वपाकसुरसं, सद्गंधशाल्यौदनं। सान्नाय्यं निजनित्यसारसुखसं-तृप्ताय तेऽर्हन्ददे॥५॥

ॐ नमोऽर्हते सह भूतायानंतसुखसंतृप्तायाग्रे चरुं विस्तारयामि स्वाहा॥ चरुं॥

स्वान्यप्रकाशनगुणाल्पतरोऽस्मदीयो। जैनस्त्रिकालविषयोयमितीव हर्षात्॥

ये कंपयन्ति बहुशः स्वशिरांसिदीपा। स्तैर्दीपिताखिलजगज्जिनमर्चयामि॥६॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वतः प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल अमिततेजसे नमः दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा॥ दीपं॥

गंधार्थयोगबहुसौरभधूपधूम-लेखाशतातिसुरभीकृतसर्वकाष्ठान्।

अष्टौ त्रिविष्टपपतेः परितोष्टदिक्षु, निष्टप्तहेममयधूपघटान्यसामि॥७॥

नमो र्हते सर्वतो दह दह तेजोधिपतये सहभूताय धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा। धूपं॥ अष्टसुदिक्षु

धूपघटाष्टकनिवेशनम्।

जंबीरजंबूकदलीकपित्थ-फलोत्तमाम्रादिफलोत्तमौधैः ।

समर्चये नित्यफलं जिनेंद्रं, नित्यामृतानंदफलोपलब्धये ॥८॥

ॐ नमोऽर्हते सहभूताय फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा ॥ फलं ॥

(आगे का श्लोक पढ़कर सिंहासन के पास में गन्ना चढ़ावें)

स्वध्यानतीव्रानलकांदिशीक, कामेन निर्भुक्तमिवेक्षुचापम् ।

पुंद्रेक्षुदंडप्रकरं क्षिपामि, पीठोपकंठे तव देवदेव ॥९॥ इक्षुस्थापनम् ।

(आगे के श्लोक को पढ़कर वर्णपूर की स्थापना करें। वर्णपूर^१ अर्थात् भिन्न-भिन्न रंग)

शार्दूलविक्रीडित— प्रक्षीणे स्वमले समुद्भवति यः, स्वार्थप्रकाशोत्पकः । सोस्मासु त्रिजगत्त्रिकालविषयः, साक्षान्महानर्हति ।

मत्तैवं मणिभिर्जितैः प्रहितसद्-वर्णोत्करप्राभृता-शंकापादकवर्णपूरमर्हत्पादाग्रतः स्थापये ॥१०॥

॥ इति वर्णपूरस्थापनम् ॥

(आगे का श्लोक पढ़कर विरूढक—द्विदल—मूंग, उड़द आदि अन्न के अंकुरे स्थापित करें।)

मुद्गादिरूढद्विदलप्रसूढै-र्विरूढकौधैः सुकृतांकुराभैः ।

प्रौढावबोधस्य तव प्रगाढ-दृष्टेर्जिन श्रीचरणौ यजामि ॥११॥ विरूढकस्थापनम् ॥

आगे का लोक पढ़कर यवारक अर्थात् जौ, धान्य, गेहूँ आदि के अंकुरों को स्थापित करें।

त्रैलोक्यसाम्राज्यसमग्रलक्ष्मी-विवाहवेदीं भवतो जिनेंद्र ।

यवादिधान्यप्रभवांकुरौधै-र्यवारकाख्यैः समलंकरोमि ॥१२॥ यवारकस्थापनम् ॥

(आगे का श्लोक पढ़कर बलिवर्तिका अर्थात् फल, पुष्प आदि भेंट करें-)

फलकिसलयपुष्पाण्यामपिष्टैः कृतानि । स्फुटरुचिबलिवर्त्या-ख्यानि नानाविधानि ।

त्रिदिवभवनजश्री-प्रेषितप्राभृताभा । न्यमरविजयहेतू-न्यर्हतोऽग्रे न्यसामि ॥१३॥ इति बलिवर्तिकास्थापनम् ॥

(आगे का श्लोक पढ़कर खीर, दहीभात, तिलकाभात, उड़द का पक्वान्न और अनेक प्रकार की चटनी आदि व्यंजन चढ़ावें)

जिनेश्वरश्रीचरणांबुजाग्रे, सर्वाणि धान्यानि विमिश्रितानि ।

अनंतधर्मेष्वपि संभवन्ती-मर्हन्तु दिव्यध्वनिसप्तभंगीम् ॥१४॥

क्षीरान्नदधन्नतिलान्नमाष-सिद्धान्नशाल्यन्नमयैस्तु हव्यैः ।

पंचप्रकारैर्विविधोपदंश-पक्वान्नयुक्तैर्जिनमर्चयामि ॥१५॥

ॐ नमोऽर्हते सहभूतायानंतसुखसंतृप्ताय चरुं विस्तारयामि स्वाहा ।

(आगे का श्लोक एवं मंत्र बोलकर मंगलद्रव्य स्थापित करें)

मंगं लाति मलं च गालयति यन्-मुख्यं ततो मंगलं । देवोर्हन्वृषमंगलोभिविनुतै-स्तैर्मंगलैः साधुभिः ।

चंचच्चामरतालवन्तमुकुरै-र्मुख्येतरैर्मंगलैः । मुख्यं मंगलमिद्धसिद्धसुगुणान्-संप्राप्तुमाराध्यते ॥१६॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा अर्हत्परमेष्ठिन् मंगलद्रव्यार्चनं गृहाण गृहाण नमः स्वाहा ।

(आगे का श्लोक बोलकर भगवान के सामने झारी स्थापित करें)

विमलसलिलपूण, वेतभंगारकुंभं । कु कसिलयदूर्वा-बीजपूरांचितास्यम् ।

दधिसदकचयाढ्यं, श्वेतसूत्रावृतांगं । जिनपति चरणाग्रे, स्थापये पूर्णसिद्धयै ॥१७॥ शृंगारकस्थापनम् ॥

(आगे का श्लोक बोलकर अर्घ्य चढ़ावे)

इत्थं जिनेन्द्रे निजशुद्धशुक्ल-ध्यानाग्निदग्धाधवने सतीह ।

कृत्वाधिवासं विविधैः शुभार्थै-रभ्युद्धराम्यर्घ्यमनर्घ्यमस्य ॥१८॥ पूर्णार्घ्यम् ॥

(आगे के मंत्र को सात बार पढ़कर प्रतिमाओं का स्पर्श करें)

प्रागुक्तपुष्पजपमंत्रेण—ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं नमः । इत्यनेन मंत्रेण सप्तवारान्प्रतिमां स्पृशन्नेवाभिमन्त्रयेत् ।

(आगे के श्लोक बोलते हुए स्वस्ति-पाठ पढ़ें)

अथस्वस्त्ययनविधानम्

स्वस्त्यस्तु नोसौ पुरुषः पुराणः, स्वस्त्यस्तु मोहाद्यजितोऽजितार्हन् ।

स्वस्त्यस्तु नः शंभवशंभवेशः, स्वस्त्यस्तु चानंद्यभिनन्दनोऽर्हन् ॥१॥

स्वस्त्यस्तु नः श्रीसुमतिर्मतर्द्धिः, स्वस्त्यस्तु पद्माभजिनः सपद्मः ।

स्वस्त्यस्तु सत्पाश्वर्यसुपाश्वर्यदेवः, स्वस्त्यस्तु चंद्राभजिनेंद्रचंद्रः ॥२॥

स्वस्त्यस्तु पुष्पायुधपुष्पदन्तः, स्वस्त्यस्तु नः शीतलशीतलार्हन् ।

श्रेयान् जिनः स्वस्ति जनाय भूयात्, स्वस्तींद्रपूज्यक्रमवासुपूज्यः ॥३॥

स्वस्त्यस्तु नः श्रीविमलोऽमलात्मा, स्वस्त्यस्तु वै नित्यमनंतजिन्नः ।

स्वस्त्यस्तु शर्मावहधर्मनाथः, स्वस्त्यस्तु शांतिर्भवदुःखशान्तिः ॥४॥

स्वस्त्यस्तु सानंदशुक्लशुनाथः, स्वस्त्यस्तु नः शश्वदरोऽमरार्च्यः ।

स्वस्त्यस्तु नः सल्लयमल्लिनाथः, स्वस्त्यस्तु नः श्रीमुनिसुव्रतेशः ॥५॥

स्वस्त्यस्तु नः श्रीनमिनाथदेवः, स्वस्त्यस्तु नः स्पष्टमरिष्टनेमिः ।

स्वस्त्यस्तु नः पार्श्वगतेंद्रपार्श्वः, स्वस्त्यस्तु धीवर्द्धनवर्धमानः ॥६॥

धीदृग्वीर्यसुखाद्यनंतसुगुणै-र्ये क्षायिकैरंचिताः । सर्वे श्रीजिनपुंगवा भगवतां, तेषां गुणस्तोत्रतः ।

एतत्स्वस्त्ययनादपैति सकलः, संक्लेशभावः शुभो । भावः स्यात्सुकृतं च तच्छुभविधे-रादाविदं श्रेयसे ॥७॥

॥ इति देवस्वस्त्ययनविधानम् ॥

आगे के लोक ऋषिस्वस्तिपाठ पढ़ें ॥ पृष्ठ ११२ से

श्रीपंचकल्याणमहार्हणार्हा इत्यादिऋषिस्वस्त्ययनरूपैकादशपद्यानि पठेत् ।

आगे के २२ लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें ॥ पृष्ठ ६६ से

अथ आशीर्वादविधिः

श्रीमज्जिनेन्द्रा हतमोहतंत्राः, सुरेंद्रसंपादितदिव्यपूजाः ।

फणींद्रयोगींद्रनुतप्रभावास्ते सुप्रसन्ना वरदा भवन्तु ॥१॥

तत्र 'स्वागत्य ते' इत्यत्र स्थले 'ते सुप्रसन्ना वरदा भवन्तु' ॥

इति द्वाविंशत्याशीर्वाद पद्यानि पठेत् ॥ ऐसा पाठ बोलना है ।

ततः पूर्वोक्तमंत्रेण 'ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं नमः' इत्यनेन जपमंत्रेण नववारानेक विंशतिवारान्वा प्रतिमां स्पृशन्नेव परमात्मान-मधिवासयेत् ।।

(इसके बाद नीचे लिखे मंत्र से नव बार या इक्कीस बार बोलकर प्रतिमाओं का स्पर्श करते हुए परमात्मा को अधिवासित करे—प्रतिमाओं में परमात्मा की स्थापना करे।)

मंत्र—ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं नमः । (६ बार या २१ बार)

अब केवलज्ञान वृक्ष की स्थापना करें।

(केवलज्ञानवृक्षों के नाम पहले दीक्षाकल्याणक में दिये गये हैं)

अथ केवलज्ञानवृक्षस्थापनम्

शाखाच्छायेन योसौ, हरति खलु सतां कर्मधर्मांशुतापम् ।

यः सौख्योदारसारं, फलति शुभफलं मोक्षनाकादिभेदम् ।।

सेवन्ते यं तदर्थं, विबुधजनखगा यस्य चैवं प्रभावः ।

संगाज्जातो हि तस्य, त्रिभुवनमहितः सोस्तु बोधिद्रुमोऽयम् ।।११।।

इति तत्तत्तीर्थकरोचितकेवलज्ञानवृक्षस्थापनम् । तद्वृक्षाः प्रागेवोक्ताः ।।

इस प्रकार उन-उन तीर्थकरों के केवलज्ञान के वृक्ष स्थापित करें।

अथ नयनोन्मीलनम्

स्वर्णपात्रनिहितेन हिमपयः शर्कराभियुतेन पूर्वाराधितचंदनेन नयनोन्मीलनं रेचकेण सर्वासां प्रतिमानां युगपदेव कुर्यात् ।

(स्वर्ण कटोरी में दूध, शक्कर और कपूर मिलाकर रखें और पूर्व में आराधित मंत्रित चंदन मिलाकर रेचकयोग से स्वर्णशलाका से आगे लिखित श्लोक पढ़कर मंत्र पढ़ते हुए एक साथ सभी प्रतिमाओं की नेत्रोन्मीलन विधि करें।)

इत्येवं विविधार्चनोपकरण, द्रव्याणि वेदीभुवः । पर्यतेषु निधाय सम्यगथ लग्ने वर्तमाने शुभे ।

आशीर्मंगलतूर्यसंस्तवरवै-व्याप्ते दिशा मंडले । नेत्रोन्मीलनहेतवे जिनपतेः, सन्मंत्रमेवं पठेत् ।।११।।

ॐ कैवल्यावबोधा-द्यनुपमगुणधामार्हदीशो महात्मा । साक्षादत्रावतीर्णो, ध्रुवमिति हृदये सन्निधायातिरागात् ।

निर्णिक्तस्वर्णपात्रे, निहितहिमपयः शर्कराभिः शलाका-रत्नोपात्ताभिरर्हत्प्रतिकृतिनयनोन्मीलनं संविदध्मः ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं णमो अरिहंताणं असि आ उसा श्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिकालत्रिलोकपूजितसर्वज्ञसितरक्तनीलकांचनकृष्ण नेत्रोन्मीलनानंतज्ञान-अनंतदर्शन-अनंतवीर्य-अनंतसुखात्मकाय नयनोन्मीलनं विदधामि संवौषट् । इति नयनोन्मीलनमंत्रः ।

(पुनः पूर्व में मंत्रित किये चंदन को आगे का श्लोक- मंत्र पढ़कर सभी प्रतिमाओं के सर्वांग में विलेपित कर दें-)

श्रीखंडपद्मोपमदिव्यगंध-जुष्टांगयष्टेर्जिनपुंगवस्य ।

पूर्वं समाराधितचंदनेन, सर्वांगलेपं विदधामि भक्त्या ।।३।।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं सकलकर्मलेपनरहिताय पवित्रांगाय नमः इति गंधलेपनम् ।।

(आगे के श्लोक को बोलकर सभी प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करें-)

अथ गुणाधारोपणम्

प्रध्वंसतो घातिचतुष्टयस्य, प्रजायतेऽनंतचतुष्टयं यत् ।
प्रमाणसिद्धं त्रिजगत्सुसारं, प्रादुर्भवत्वत्र जिने स्फुटं तत् ॥१॥

अनंतचतुष्टयस्थापनप्रतिज्ञापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे के एक-एक श्लोक बोलकर एक-एक अनंतज्ञानादि के आरोपण हेतु प्रतिमाओं पर चार बार पुष्प क्षेपण करें)

जानाति नित्यं युगपत्स्वतोऽन्य-सर्वार्थसामान्यविशेषसर्वम् ।
निर्बाधकं स्पष्टतरं यदेत-दनंतविज्ञानमिहास्तु बिंबे ॥२॥
स्वात्मोत्थसामान्यविशेषसर्वं, साक्षात्करोत्येव समं सदा यत् ।
सुनिश्चितासंभवबाधकं तद-नंतसद्दर्शनमत्र भातु ॥३॥
अनंतविज्ञानमनंतदृष्टिं, द्रव्येषु सर्वेषु च पर्ययेषु ।
व्यापारयन्नित्यमसंकरादिस्तादत्र बिंबे तदनंतवीर्यम् ॥४॥
आत्मैकजातं गतबाधजातं, व्यपेतमानं विगतोपमानं ।
अचिंत्यसारं जगदेकसारं, बिंबेत्र भूयात्तमनंतसौख्यम् ॥५॥

अनंतज्ञानादिचतुष्टयप्रतिष्ठार्थं प्रतिमोत्तमांगे चतुःपुष्पीमारोपयेत् ॥

अनंत चतुष्टय के ४ मंत्र^१

- [१. ॐ अस्मिन् जिने अनंतज्ञानगुणो विलसतु स्वाहा । २. ॐ अस्मिन् जिने अनंतदर्शनगुणो विलसतु स्वाहा ।
३. ॐ अस्मिन् जिने अनंतवीर्यगुणो विलसतु स्वाहा । ४. ॐ अस्मिन् जिने अनंतसौख्यगुणो विलसतु स्वाहा ।]

(आगे के श्लोक बोलकर दश केवलज्ञान के अतिशयों के आरोपण हेतु नीचे टिप्पण में दिये मंत्रों को पढ़कर प्रतिमाओं के मस्तक पर क्रमशः दश बार लवंग या पीले तंदुल स्थापित करें—क्षेपण करें।)

सुभिक्षता वै शतयोजनेषु, नभोगतिः प्राण्यवधः क्रियाभिः ।
भुक्तेरभावोऽप्युपसर्गहानि - स्तेजःप्रभावेन चतुर्मुखत्वम् ॥६॥
समस्तविद्यापरमेश्वरत्व - मच्छायता निश्चलपक्ष्मता च ।
समत्वभावकेशनखत्वमेते, घातिक्षयात्संतु गुणा दशास्मिन् ॥७॥
घातिक्षयोद्यद्दशसद्गुणस्त्वं, त्वं मानुषाणां प्रकृतिं व्यतीतः ।
त्वं देवतानामधिदेवतासि, बिंबेत्र साक्षाद्भव विश्वनाथ ॥८॥

घातिक्षयजदशातिशयस्थापनार्थं दशपुष्पीं क्षिपेत् ॥

केवलज्ञान के दश अतिशय के १० मंत्र^२

- [१. ॐ अस्मिन् जिने गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
२. ॐ अस्मिन् जिने गगनगमनत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
३. ॐ अस्मिन् जिने अप्राणिवधत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
४. ॐ अस्मिन् जिने भुक्त्यभावातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
५. ॐ अस्मिन् जिने उपसर्गाभावातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
६. ॐ अस्मिन् जिने चतुर्मुखत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।]

७. ॐ अस्मिन् जिने सर्वविद्येश्वरतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ८. ॐ अस्मिन् जिने अच्छायत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ९. ॐ अस्मिन् जिने अपक्ष्मस्पन्दत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 १०. ॐ अस्मिन् जिने समाननरवकेशत्वातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।]

(आगे के श्लोक बोलकर समवसरण की स्थापना हेतु प्रतिमाओं के चारों तरफ पुष्पांजलि क्षेपण करें)

शक्रादेशेन भक्त्या, धनदविरचिता या सभा योजनानां ।
 द्वीषट्कायामवृत्ता, सितरुचिरशिला दिक्षु सोपानपङ्क्तेः ॥
 खे सार्धक्रोशयुग्मे, भुव उपरि चरन्त्यां तु तस्यां सधूली-
 सालप्रासादचैत्य-क्षितिपथिषु चतुर्दिक्षु सन्नाट्यशालाः ॥६॥
 मानस्तंभाः सरस्यो, द्वितटगतलसद्वेदिकाखातिकातो ।
 वल्यःसालो वनाली-नटनगृहयुता वेदिकाबद्धजालिः ॥
 सालः कल्पद्रुमौघो, नटनसदनवान् स्तूपिका वेदिसौधाः ।
 सालः सन्नाट्यशाला-स्त्रिभुवनजनताकीर्णसंसत्त्रिपीठी ॥१०॥
 तदग्रभागे स्थितगंधकुट्यां, मध्यस्थसिंहासनसंनिविष्टः ।
 योऽनंतबोधादिचतुष्टयोऽर्हन्-कोट्यर्कचंद्रद्युतिरस्तु सोयम् ॥११॥

समवसरणस्थापनार्थं प्रतिमायाः समंतात्पुष्पाक्षतं क्षिपेत् । इति समवसरणस्थापनम् ॥

(आगे के श्लोक पढ़कर चौदह देवकृत अतिशय स्थापना हेतु प्रतिमाओं के आसन पर चारों तरफ चौदह पुष्प या चौदह बार पुष्पांजलि क्षेपण करें-)

जिनस्य ब्रुवतोऽर्धार्धसर्वांगमगधोक्तिकां । मगधेरन्वकार्यन्त सभ्या यां सास्तु वागिह ॥१२॥
 मैत्रीं प्रीतिकरां कुर्यु-जातिकारणवैरिणः । सर्वर्तुसंपद्वृक्षास्तु, रत्नमय्यब्दवन्मही ॥१३॥
 अनुवातु जिनं वातो, विहरंतं तु विस्मसा । इहास्तु परमानंदः, सर्वेषां च तनूभृताम् ॥१४॥
 जिनाग्रे योजनं भूमिं, मार्जयन्त्वनिलामराः । तत्र गंधोदवृष्टिं च, कुर्वन्तु जलदामराः ॥१५॥
 पद्मयानं भवेत्पञ्च-विंशतिद्विशतीकजैः । फलभारानतब्रीही-निचिता भवतु क्षितिः ॥१६॥
 प्रसीदन्तु दिशः सर्वाः, प्रसीदतु नभःस्थलम् । एतैतेत्याव्हयन्त्वद्य, भावनाः सकलामरान् ॥१७॥
 धर्मचक्रं पुरो यातु, प्रभाचक्रजितार्ककम् । ध्वजव्यजनभृंगार-कुंभांश्छत्रं च चामरम् ॥१८॥
 सुप्रतिष्ठं च मुकुरं, तनोत्विन्द्रो जिनाग्रतः । देवोपनीतद्विःसप्तातिशयाः संत्वमी जिने ॥१९॥

चतुर्दशदेवोपनीतातिशयस्थापनार्थं पीठिकायां चतुर्दशपुष्पाणि क्षिपेत् ।

देवकृत चौदह अतिशय के १४ मंत्र १

- [१. ॐ अस्मिन् जिने सर्वार्धमागधीयभाषादेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 २. ॐ अस्मिन् जिने सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ३. ॐ अस्मिन् जिने सर्वर्तुफलादिशोभिततरूपरिणामदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ४. ॐ अस्मिन् जिने आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।

५. ॐ अस्मिन् जिने विहरणमनुगतवायुत्वादेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ६. ॐ अस्मिन् जिने सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ७. ॐ अस्मिन् जिने वायुकुमारोपशमितधूलीकंटकादिदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ८. ॐ अस्मिन् जिने मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ९. ॐ अस्मिन् जिने पादन्यासेकृतपद्मरचनादेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 १०. ॐ अस्मिन् जिने फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 ११. ॐ अस्मिन् जिने शरदकालवन्निर्मलगनत्वदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 १२. ॐ अस्मिन् जिने शरन्मेघवन्निर्मलदिग्भागत्वदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 १३. ॐ अस्मिन् जिने एतैतेतिचतुर्णिकायामरपरापराहवानदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।
 १४. ॐ अस्मिन् जिने धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयगुणो विलसतु स्वाहा ।]

इति दिव्यातिशयस्थापनम्

(आगे के श्लोक पढ़कर आठमहाप्रातिहार्य की स्थापना हेतु एक-एक प्रातिहार्य पर पुष्पांजलि छोड़ें। उनमें से सर्वप्रथम सिंहासन पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

अथाष्टमहाप्रातिहार्यस्थापनम्

जिनानां जगदीशत्व-व्यंजकानि जनापदां । हंतूणि प्रातिहार्याणि, यानि तानि न्यसाम्यहं ॥१॥

अष्टमहाप्रातिहार्यस्थापनाय पीठिकायामष्टपुष्पीं क्षिपेत् ।

सुमेरुकुटाभतटाल्लुठच्छ्रीमणिप्रभाविच्छुरितेंद्रचापम् । व्यात्तास्यसिंहोद्धृतसिंहपीठं, यदत्र बिंबेद्य तदेतदस्तु ॥२॥

ॐ सिंहासनश्रियै स्वाहा । सिंहासने पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ (सिंहासन पर पुष्पांजलि करें)

(आगे का श्लोक बोलकर जिनवाणी पर पुष्पांजलि छोड़ें)

मिथ्यांधकारक्षपणैकदक्ष-ज्योतिः परंज्योतिरवाप्तहेतु । गंभीरताद्यातिशयैरुपेता, या दिव्यभाषात्र विभातु सैष ॥

ॐ दिव्यध्वनिश्रियै स्वाहा । सरस्वत्यां पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे का श्लोक बोलकर चंवर सहित इंद्रों पर पुष्पांजलि छोड़ें)

शरच्छांकांशुनितांतगौरा, चलच्चतुःषष्टिसुचामरालिः ।

विलक्ष्यक्षामरवीज्यमाना, या सात्र साक्षादियमस्तु बिंबे ॥४॥

ॐ चतुःषष्टिचामरश्रियै स्वाहा । चामरधारियक्षयोः पुष्पांजलिः ।

(आगे का श्लोक बोलकर भामंडल पर पुष्पांजलि छोड़ना)

जिनार्कसम्यक्परिवेषरूप-कोट्यर्कतेजोविजयप्रकाशम् । यत्पश्यतां सप्तभवोपदर्शि, भामंडलं चारु तदेतदस्तु ॥५॥

ॐ भामंडलश्रियै स्वाहा । भामंडले पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(आगे का श्लोक बोलकर अशोकवृक्ष पर पुष्पांजलि छोड़ना। यहाँ अशोकवृक्ष की शाखा लाकर स्थापित करना है।)

वैडूर्यभास्वद्विटपोऽश्मगर्भ-च्छविच्छदो विद्रुमरुक्प्रवालः ।

अशोकताकृज्जगतामशोको, नाम्नोऽर्थतो योस्तु स एष साक्षात् ॥६॥

ॐ रक्ताशोकश्रियै स्वाहा । रक्ताशोके पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

वैडूर्यदण्डं परिलंबिमुक्ता, लंबूषकं भूत्रयनाथचिन्हं । छत्रत्रयं यच्छरदिन्दुबिंब-त्रयोपमं नूनमिदं तदस्तु ॥७॥

ॐ छत्रत्रयश्रियै स्वाहा । छत्रत्रये पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे का श्लोक बोलकर दुंदुभि आदि वाद्यों पर पुष्पांजलि छोड़ना)

अर्धाधिकद्वादशकोटिदिव्य-वाद्यानि गंभीरमरं ध्वनन्ति । प्रत्यर्थिसंत्रासपटूनि यानि, वाद्यानि दिव्यानि भवन्तु तानि ।। ८ ।।

ॐ दुंदुभिश्चित्रै स्वाहा । दुंदुभौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे का श्लोक बोलकर माला और पुष्प हाथों में लिये विद्याधर की कल्पना जिनमें की गई है, ऐसे इन्द्रों पर पुष्पांजलि छोड़ना-)

गंगाप्रवाहप्रतिमानुगुंजद्-भृंगावलीमंगलगानरम्या । दिव्यप्रसूनोत्करवृष्टिरहत्-सभांतरे यात्र च सेयमस्तु ।। ९ ।।

ॐ पुष्पवृष्टिश्चित्रै स्वाहा । मालाविद्याधरयोः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इत्यष्टमहाप्रातिहार्यस्थापनम्

अथ लांछनस्थापनम्

(आगे का श्लोक बोलकर प्रतिमाओं के चिन्हों पर पुष्पांजलि छोड़ना)

तीर्थकराणां निजवंशखड्गं, पृथग्विधं संयवहारहेतुः । यत्लांछनं तत्र कृतार्हदीश-बिंबस्य योग्यं विलिखामि पीठे ।। १० ।।

पादपीठलिखितलांछने पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

एतानि वृषभादितीर्थकराणां पृथग्विधानि लांछनानि—

गौर्गजोश्वः कपिः कोकः, कमलं स्वस्तिकः शशी ।। मकरः श्रीद्रुमो गंडो, महिषः कोलसेरिकौ ।। १२ ।।

वज्रं मृगोऽजष्टगरः, कलशः कूर्म उत्पलः । शंखो नागाधिपः सिंहो, लांछनान्यर्हतां क्रमात् ।। १३ ।।

अथ यक्षयक्षीस्थापनम्

(आगे का श्लोक बोलकर प्रतिमाओं के दायीं तरफ स्थित शासनदेवों के ऊपर पुष्पांजलि छोड़ना)

इन्द्रो जिनेन्द्रोत्तमशासनस्य, त्राणे प्रवीणं प्रतिशासनार्हम् । न्युंक्त सत्कृत्य यमादरात्तं, न्यसामि यक्षं जिनसव्यभागे ।। १४ ।।

यक्षोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(आगे का श्लोक बोलकर प्रतिमाओं के बायीं ओर स्थापित शासन देवियों के ऊपर पुष्पांजलि छोड़ना) ।

लब्धाधिकारां जिनशासनस्य, त्राणे ततः शासनदेवतेति । खड्गं भुवि प्रौढतरप्रभावां, न्यसामि यक्षीं जिनवामभौ ।। १५ ।।

शासनदेवतोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(आगे के श्लोक पढ़-पढ़कर प्रतिमाओं में पंचकल्याणकों का आरोपण करें । इसमें भी सर्वप्रथम पंचकल्याणक सामान्य की स्थापना हेतु पुष्पांजलि छोड़ें)

अथ पंचकल्याणस्थापनम्

योत्र स्वर्गावतीर्णः, सुरगिरिशिखरे दुग्धवार्द्धः पयोभिः । लब्ध्वा जन्माभिषेकं, शतमखविहितं व्यक्तसाम्राज्यभोगः ।।

प्रव्रज्योग्रैस्तपोभिस्त्रिजगदपचितार्हत्यमेत्योपदेष्टा । कर्मध्वंसात्तशर्मा, त्रिभुवनशिखरे भाति सिद्धोऽस्तु सोऽयम् ।

पंचकल्याणाभिव्यक्तिप्रतिज्ञापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(आगे का श्लोक बोलकर गर्भकल्याणक हेतु प्रतिमा पर पुष्पांजलि छोड़ें)

अनुष्टुपछंद—स्वर्गावतारकल्याणे, सुरैरेकृतवैभवे । सद्योजाततयारूढो, यः स एव जिनोस्त्वयम् ।। १६ ।।

गर्भावतारकल्याणाभिव्यक्तये पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे का श्लोक बोलकर जन्मकल्याणक की स्थापना करें)

जन्माभिषेककल्याणे, सुरैरेकृतवैभवे । वामदेवतयारूढो, यः स एव जिनोस्त्वयम् ।। १७ ।।

जन्माभिषेकस्थापनाभिव्यक्तये पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे का श्लोक बोलकर तपकल्याणक की स्थापना करें।)

दीक्षाग्रहणकल्याणे, सुरेंद्रकृतवैभवे। अघोरात्मतयारूढो, यः स एव जिनोस्त्वयम्॥३॥

निष्क्रमणकल्याणाभिव्यक्तये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(आगे का श्लोक बोलकर ज्ञानकल्याणक की स्थापना करें।)

केवलज्ञानकल्याणे, सुरेंद्रकृतवैभवे। ईशानात्मतयारूढो, यः स एव जिनोस्त्वयम्॥४॥

केवलज्ञानकल्याणाभिव्यक्तये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(आगे का श्लोक बोलकर मोक्षकल्याणक की स्थापना करें।)

भावितपुरुषावस्था-मद्य यस्माद्बिभर्त्यतः। रूढस्तत्पुरुषत्वेन, यः स एव जिनोऽस्त्वयं॥५॥

निर्वाणकल्याणाभिव्यक्तये पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

आगे का लोक बोलकर, जो प्रतिमाओं के दाहिने हाथ में कंकण बांधे थे, वे खोल देंगे॥

अथ कंकणमोक्षणम्

सिद्धामराधीश्वरसाक्षिजीवन्-मुक्तिश्रियं सद्गुणभूरिभूतिम्।

भजेत्स्वसात्कृत्य जिनेश्वरो यस्तत्कंकणं त्वद्य विमोचयामि॥९॥

ॐ सत्तत्त्वरसज्ज्ञाणं, अरहंताणं नमोति भावेण।

जो कुणइ अणणमणो, सो गच्छइ उत्तमं ठाणं॥२॥ कंकणमोक्षणम्।

आगे का मंत्र बोलकर सात अक्षर वाले मंत्र का ध्यान करें॥

अरहंताणं नमः। इति सप्ताक्षरध्यानम्।

आगे के लोक बोलकर प्रतिमाओं में अहतदेव का साक्षात्करण करें॥

अथाहर्देवसाक्षात्करणध्यानम्

ॐ केवलमाणदिवायर-किरणकलावप्पयासियट्ठाणे। णवकेवललद्धुग्गम-सुजणियपरमपयवएसो॥९॥

असहायणाणदंसण-सहिओ इदि केवली हु जोगेण। जुत्तोत्ति सजोगिजिणो, अणाइणिहणरिसे उत्तो॥२॥

इत्येषोर्हन्साक्षादत्रावतीर्णो विश्वं पाति इति स्वाहा।

प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इत्यहर्देवसाक्षात्करणविधानम्

(आगे का श्लोक और बृहत्मंत्र बोलकर, जो पहले प्रतिमाओं के सामने वस्त्र का परदा लगाया था, उसे हटा दें। यहाँ पदों हटाने से पूर्व प्राणप्रतिष्ठा मंत्रों से प्रतिमाओं के ऊपर लवंग और पीले चावल क्षेपण करते रहें पुनः सूरिमंत्र पढ़कर प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि छोड़ें। ये प्राण प्रतिष्ठा मंत्र व सूरिमंत्र परिशिष्ट में पृष्ठ ३५७ पर दिये गये हैं।)

घंटाटंकारवीणाक्वणितमुरजधान्धाक्रियाकाहलाच्छं - च्छंकारोदारभेरी - पटहधलधलंकारसंभूतघोषे।

आक्रम्याशेषकाष्ठा-तटमथ झटिति प्रोच्छटत्युद्भटेऽभ्रं। शिष्टाभीष्टार्हदिष्ट्यै, जिनमुखपुद्गघाटये मंत्रपूर्वम्॥

ॐ उसहाइवड्डमाणानं पंचकल्लाणसंपण्णानं महइमहावीरवड्डमाणसामीणं। सिज्झउ मे महइ महाविज्झा। अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं। सयलकलाधराणं। सज्जोजादरूवाणं। चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं। बत्तीसदेविंदमणिम-उडमत्थयमहिदाणं। सयललोयस्स संतिपुट्ठिबुद्धिकल्लाणाउआरोग्गकराणं। बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदि-अणगारोवगूढाणं। उहयलोयसुहफलयरारणं। थुइसयसहस्सणिलयाणं। परापरपरमप्पाणं। अणाइणिहणाणं बलि

बाहुबलिसहिदाणं । वीरे वीरे ॐ हां क्षां सेणवीरे वड्ढमाणवीरे हं सं जयंत वराइये वज्जसिलत्थंभमयाणं सदा भव्वपइट्ठियाणं । यत्थ सण्णिहिदा मे भवदु मे भवदु ठ ठ क्ष क्ष स्वाहा । श्रीमुखोद्घाटनमंत्रः ।

(आगे के श्लोक बोलकर थाली में नारियल आदि अर्घ्य लेकर महार्घ्य चढ़ावें ।)

घातिव्रातप्रघात-प्रकटनिरवधिज्ञानदृग्वीर्यरूपः । कल्याणैः पंचभेदैः, प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषैः ॥

यश्चाष्टप्रातिहार्यै-स्त्रिभुवनपतितालांछनैस्तं यजामि । स्याद्वादामोघवाक्यं, विधिरचितमहार्घ्येण देवाधिदेवम् ॥ १ ॥

ॐ खवियघणघाइकम्मा, चउतीसातिसयपंचकल्लाणा । अट्ठवरपाडिहेरा, अरहंता मंगलं मज्झं ॥ २ ॥

भूयासुरिति स्वाहा । परमोत्सवेन महार्घ्यमवतारयेत् ॥ (ॐ ह्रीं तीर्थकरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।)

(आगे का श्लोक बोलकर प्रतिमाओं के सामने पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

शार्दूलविक्रीडित — पुष्पेषोरिषवो वयं पुनरिदं, पुष्पेषु निःशेषकम् । निष्पीतानि मधुद्रजैर्वयमिदं, निष्पापसंसेवितम् ॥

इत्यालोच्य नमंत्यपास्य मदमित्याशंकयंतीश ते । निष्पीताखिलतत्त्वपादकमले, पुष्पाणि निःपातये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहंत इदं पुष्पांजलिप्रार्चनं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमोर्हद्भ्यो ध्यातृभिरभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा । पुष्पांजलिः ॥

(आगे के श्लोकों को बोलकर प्रतिमा के सामने पुष्पांजलि क्षेपण करें)

कोटीकोटीरवींदु-ज्वलनसमधिकोद्योतवीतक्रमादि-ज्ञानज्योतिः समंतो-ज्ज्वलितसकलसालोकलोकोदरोयम् ।

देवो विध्वस्तनाना-वृजिनजिनपतिः प्राप्तकल्याणपूजः । श्रेयः संपादनैक-क्षमपदकमलो वर्द्धतामद्वितीयम् ॥ ४ ॥

भगवदाशीर्वादः ॥

विजयविभवविद्या-वीर्यमौदार्यमाज्ञां । श्रुतिमतिधृतिनीतिः, शांतिकांतिप्रसादान् ।

दृगवगमचरित्रं, सिद्धिवृद्धिप्रसिद्धी-वर्तितरतु जगतोऽत्र, स्थापितश्रीजिनेन्द्रः ॥ ५ ॥

कर्तृणां कार्यकाणां, जिनयजनविधेर्भूभृतां चापरेषां । भूद्भूमूयांश्च भोगः, स्वजनपरिजनैः स्तात्सदारोग्यम्भ्रम् ।

शौर्यं धैर्यं च वीर्यं, भवतु बहुतरं जायतां दीर्घमायुः । स्वामिन्भो! त्वत्प्रसादात्-प्रवरसुखकरो वर्द्धतां सुधर्मः ॥ ६ ॥

अनुष्टुपछंद — सद्धर्मश्रीबलायुष्यारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयः । संतु सर्वस्य लोकस्य, जिनेन्द्र! त्वत्प्रसादतः ॥ ७ ॥ इत्याशीर्वादः ।

(आगे का श्लोक बोलकर शान्तिधारा करें)

ज्वलितसकललोका-लोकलोकोत्तरश्री-कलितललितमूर्ते! कीर्तितेन्द्रैर्मुनीन्द्रैः ।

जिनवर! तव पादो-पांततः पातयामो, भवदवशमनार्था-मर्थतः शान्तिधाराम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अहंत इमां शांतिधारां गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं ह्रीं नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निःपातयामि । शांतिकृद्भ्यः स्वाहा शान्तिधारा ॥

जयजयेत्यानंदस्तवनं पठेत् ॥ (पृष्ठ २२८ से पढ़ें)

यष्टा समभ्यर्च्य जिनं तदग्रे, शक्त्या धनं नित्यमहाय दत्त्वा ।

स्वमुक्तिकन्यावरणाय शुल्क-माजन्म किंचिद्ब्रतमाददीत ॥ ९ ॥

एवं यष्टा जिनेन्द्रमभ्यर्च्य नित्यमहार्थं अहंतः कोशेऽर्थं निधाय व्रतमाजन्म किंचिदादाय विपुलारात्रिकमवतार्य धूपघटमुत्क्षिप्य पंचांगप्रणामं कुर्यात् ।

(अनंतर यजमान जिनेन्द्र भगवान की पूजा करके, आगे हमेशा भगवान की पूजा चलती रहे, इस भावना से शक्ति के अनुसार

मंदिर में दानराशि देकर कोई न कोई व्रत जन्मपर्यंत के लिए ग्रहण करें पुनः महाआरती को करके धूपघट्टे मधूप खेकर भगवान को पंचांग प्रणाम करें।)

केवलज्ञानकल्याणक भक्तिपाठ

ततः सहस्रनामादि-नानाविधमहास्तवैः। गीतैर्नृत्यैश्च वाद्यैश्च, जिनमाराधये मुदा।।१०।।

सिद्धश्रुतचरित्रर्षि-शांतिभक्तीः ससंधकाः। केवलज्ञानकल्याण-क्रियां कुर्वन्तु याजकाः।।११।।

इसके बाद 'सहस्रनाम स्तोत्र' पढ़कर अन्य और भी अनेक प्रकार के स्तोत्रों से गीत, नृत्य, वाद्य आदिपूर्वक भगवान की आराधना करें पुनः मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका ऐसे चतुर्विध संघ सहित सभी इंद्रगण मिलकर सिद्ध, चारित्र, योगि, श्रुत एवं शांतिभक्ति पढ़कर भगवान की केवलज्ञान कल्याणक की क्रिया करें।

यदि विधिनायक भगवान ऋषभदेव हैं तो उनका नाम लेवें या शांतिनाथ, महावीरस्वामी आदि जो भी हों, उनका नाम लेवें। यथा-
नमोऽस्तु श्री ऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं
सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।

अनंतर 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिकदण्डक पढ़कर ६ बार णमोकारमंत्र जपकर 'थोस्सामि हं' पढ़कर पृष्ठ १६५ से लघुसिद्धभक्ति पढ़ें।

नमोऽस्तु श्री ऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणकक्रियायां.....चारित्रभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।
पुनः 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिकदण्डक पढ़कर ६ बार णमोकारमंत्र जपकर 'थोस्सामि हं' पढ़कर पृष्ठ १६५ से चारित्रभक्ति पढ़ें।

नमोऽस्तु श्री ऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणकक्रियायां.....योगिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।
पूर्ववत् 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिकदण्डक पढ़कर ६ बार णमोकारमंत्र जपकर 'थोस्सामि हं' पढ़कर पृष्ठ २४२ से योगिभक्ति पढ़ें।

नमोऽस्तु श्री ऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणकक्रियायां.....श्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।
पूर्ववत् 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिकदण्डक पढ़कर ६ बार णमोकारमंत्र जपकर 'थोस्सामि हं' पढ़कर निम्नलिखित श्रुतभक्ति पढ़ें।

श्रुतभक्ति

श्रुतमपि जिनवरविहितं, गणधररचितं द्वयनेकभेदस्थम्।

अंगांगबाह्यभावित-मनंतविषयं नमस्यामि ।।१।।

इच्छामि भन्ते ! सुदभक्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचेउं। अंगोवंगपइण्णए पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणि-ओग-पुव्वगय-चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ-धम्म-कहाइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंस्यामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

नमोऽस्तु श्री ऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणकक्रियायां.....शांतिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।
पूर्ववत् 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिकदण्डक पढ़कर ६ बार णमोकारमंत्र जपकर 'थोस्सामि हं' पढ़कर पृष्ठ १६५ से शांतिभक्ति पढ़ें।

नमोऽस्तु श्री ऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं
सिद्धचारित्रयोगिश्रुतभक्ती कृत्वा तद्दहीनाधिकदोष विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।
पूर्व की भांति 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिकदण्डक पढ़कर ६ बार णमोकारमंत्र जपकर 'थोस्सामि हं' पढ़कर पृष्ठ १६६ से समाधिभक्ति पढ़ें।

सुगंधिशीतलैः स्वच्छैः, स्वादुभिर्विमलैर्जलैः। सार्धद्वीपद्वयातीत-भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१२॥

इत्यादिभिर्मुनिवृंदारकानभ्यर्चयेत् 'श्रीमज्जिनैद्रा हतमोहतंद्रा' इत्यादिद्वाविंशत्याशिर्वाद-पद्यानां विजयविभव-विद्येत्यादिपद्यत्रयस्य च पाठेन शेषगंधाक्षताभिः भव्यसंघं संतर्पयेत्।

अथ यागमंडलाराधनोक्तप्रथमगद्यपद्याभ्यां प्रथमपद्यमात्रेण वा, प्रधानपूजया वेदिका निवासिसर्वपरिवारदेवानभ्यर्चयेत्॥

शिलामध्येथ नासाया इत्यादिमंत्रैर्गर्भगृहद्वारे क्षेत्रपालादिद्वारपालकान्। श्रीविमानस्य मध्ये ब्रह्माणं, तत्प्रादक्षिण्ये स्थितदिक्पालकान्, 'मध्येगृहं विधातरम्' इत्यादि मंत्रैः संतर्प्य। सर्वाण्यक्षछत्रत्रयाभ्यां सह गत्वा ग्राममध्ये ब्रह्माणं, ग्रामस्य पूर्वोक्ते दिक्पालान्प्रागुक्तमंत्रैरेवाभ्यर्चयेत्। ततो वेदिकास्थितचलजिनबिंबाग्रे श्रीविहारघोषणामुद्घोष्य गंधकुटिसंकल्पे चतुष्के तद्बिंबं निवेश्य महत्त्वा श्रीविमानं परीत्य ग्रामप्रदक्षिणमपि कृत्वा पूर्वस्थाने जिनबिंबं निवेश्य शान्तिबलिमिष्टप्रार्थनां क्षमापणं सर्वदेवताविसर्जनं कृत्वा अष्टोत्तरशतकत्सौर्वक्ष्यमाणविधिना महाभिषेकं एकादशमहामहं च विधाय प्रतिष्ठादिवसक्रियां निष्ठापयेत्। तद्यथाः—तावदियं विहारघोषणा॥

'अथ' इसके अनंतर पृष्ठ १०७ पर यागमंडलाराधना प्रकरण में लिखे हुए पहले गद्य-पद्य से अथवा प्रथम पद्य से प्रथम पूजापूर्वक 'वेदिकानिवासी' सर्व परिवार देवों की आराधना करें। पुनः पृष्ठ ३७ से "शिलामध्येऽथ नासाया" इत्यादि मंत्रों से गर्भगृह के दरवाजे पर क्षेत्रपाल आदि द्वारपालों की, श्रीविमान के मध्य में ब्रह्मदेव की, पुनः प्रदक्षिणा के क्रम से स्थित दिक्पालों की, 'मध्ये गृहं विधातारं' इत्यादि मंत्रों से बलिविधि करके उन्हें संतर्पित करें।

सर्वाण्यक्ष और तीन छत्र को लेकर जाकर गाँव के मध्य में ब्रह्मदेव की, ग्राम के पूर्व आदि दिशाओं में दिक्पालों की पूर्वकथित मंत्रों से बलिविधिपूर्वक अर्चना करें। पुनः वेदिका में विराजमान चल जिनबिंब के आगे श्रीविहार की घोषणा-भगवान के श्रीविहार-रथयात्रा को घोषित करके 'गंधकुटी' का जिसमें संकल्प किया है ऐसे चतुष्क—चौकोन स्थान में चतुर्मुखीस्वरूप चार जिनबिंबों को विराजमान करके महाविभूति से 'श्रीविमान'—रचित समवसरण की प्रदक्षिणा करके ग्राम की प्रदक्षिणा—शहर या ग्राम में रथ को घुमाकर वापस लाकर पूर्व स्थान में जिनप्रतिमा को विराजमान करके 'शान्तिबलिविधि' इष्ट प्रार्थना, क्षमायाचना एवं सर्वदेवता विसर्जन विधि करके एक सौ आठ—१०८ कलशों से आगे कही विधि के अनुसार 'महाभिषेक' एवं एकादशमहामह—ग्यारह प्रकारी पूजा करके प्रतिष्ठादिवस की क्रिया का समापन करें।

अष्टद्रव्य, अर्घ्य, शान्तिधारा एवं पुष्पांजलि क्षेपण करना इसे ही 'एकादशमहामह' कहते हैं।

यह सर्वविधि इस प्रकार है—

(अब श्रीविहार की घोषणा करें)

श्रीविहारघोषणा

शार्दूलविक्रीडितछंद—विन्यस्तांजलिना विहारसमये, शक्रेण विज्ञापिते। लोकानां हितमिच्छताथ जगतां, नाथे विहारोन्मुखे।

रोधः क्रोडविसर्पिणीं सुरवरा, यां चक्रुराघोषणा-मस्मिञ्जैनविहारमंगलमुखे, सेयं मया घुष्यते॥११॥

स्वस्तिं समस्तसुरासुराधीशमणिमुकुटमकरिकाशोणकोणकषणमसृणितचरणपीठपृष्ठः प्रादुर्भूतानंतचतुष्टयविभूतिभूतहितैकतानप्रवृत्तिः संजीवनौषधमाजंजवसंज्वरमूर्च्छितानाम्। प्रथमतरमंगलं मंगलानां। अद्वितीयशरणं शरणार्थिनां। आविष्कृतपरमाहृत्यमहिमा भगवानपेक्ष्यमाणः किल लोकहितापादनौत्सुक्यतरलितचेतसः प्राचीनबर्हिषो विहारसमयासत्तिविज्ञापनाम्। अचिंतनीयप्रवृत्तिवैभवः सकलजसुकृतसामग्रीमनुमन्यमान इव स्वयमसावलंकरोति नभोभागपथे परार्धं पद्मयानकम्।

अमी चानंदनिर्भरैरापूर्यन्ते सुरशांखिकैः शंखाः। अधरितांभोधरनिर्घोषाणि वाद्यन्ते चातोद्यानि उपस्वि सेवते समुन्मिषन्मणिमरीचिनि-चयमुषितविरोचनरुचिप्रतानं लोकत्रयाधिपत्यैकलांछनं छत्रत्रयम्। विधूयन्ते चोच्चलितदुग्धोदवीचिनिचयापहासिनश्चामरनिवहाः। वर्षति बहलामोदसंमोहितालिकुलानि सुरवारिदाः सुरकुसुमानि। अयं च समुच्चलितवीचिहस्तविकीर्यमाणविचित्ररत्नमुक्ताफलजालजटिलपुरोभागः प्रणमति वेलामूर्ध्ना भगवन्तमभसां निधिः। तदानीं देदीप्यमानदेहप्रभाव्यतिकरविचित्रितवियत्पथाः समासीदंतु स्त्रोवसरप्रतिपालिनः त्रैविष्टपाः। आगच्छंतु गृहीतोज्ज्वलनेपथ्याः कौतुकवेषानुगमसत्वरपरिजनाः। सभ्रांताजन्मपद्मपरिवृता बद्धांजलयो मध्यमलोकपालाः। आयांतु विश्वेश्वरविहारोत्सवविस्मरेलोचनसहस्राक्षसमर्चितं परीत्य परमेश्वरपादारविंदं। सकलजनस्तुत्यजन्मानः सारस्वत्या-दित्यवन्ध्वरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टा लौकांतिकाः। गायंतु श्रुतिसुखानि गेयानि किन्नरीभिः सह किन्नराः। स्पृशस्तु

वीणाविपंचीप्रमुखतवाद्यजातममर्त्याः। वादयंतु घनगंभीरघनजातस्तनितातिवार्तान्निरवघनिनादगंधर्ववाद्यानि। नृत्यंतु सलीलविरचित-
करणांगहारहारिण्यो गगनांगणरंगेषु सुरयोषितः। पालयंतु स्वां स्वां दिशमिन्द्राग्निमनिकर्द्धतिवरुणवायुकुबेरैशानशेषशीतांशवो दशापि
लोकपालाः। वारयंतु समुद्यद्बृहद्धानाः कृटिलदंष्ट्राः करालमुखाकाराः समुत्सारितहिंसाः पूजनं परितो राक्षसारक्षकाः। प्रतिष्ठतामग्रतः
परिचारकामरपरिवारपरिवृता परीत्य परमेष्ठिनं पद्महस्तया सह पद्मया देवी सरस्वती। अग्रतो भर्तृप्रकटितप्रतीहाराधिकारः प्रसादयतु
उदग्रपदं राजराजः। प्रचुरामोदमोदितरोधोभागाः परिमार्जयंतु मरुतः परितः। अभ्युक्षंतु समंततः सुखशीतलामोदिभिरंबुभिरम्बुदामराः।
मंडयंतु मत्तभ्रमद्भ्रमरनिकरझंकारिभिर्मदारकुसुमैर्मरुतः परितः पुष्पमेघविक्रियाः। विचित्रयंतु च विचित्रपत्रविन्यासैर्भगवद्विहारपदवीं।
आक्रीडंतु नानानर्च्यरत्ननिर्माणस्थलेषु क्रीडापथेषु पुरःसराः सहैव सुरपुरंध्रीभिः सुरैः। गृह्णन्तु यथाकांक्षामितार्थप्रदानपरेभ्यः कल्पशाखिभ्य
कामितार्थं कामिनो जनाः। उत्तंभितसमुत्तुंगमणितोरणप्रभाप्रतानवितानितेषु मार्गोभयपाश्वर्येषु संस्पृष्टगगनतलाः परिकल्प्यतामनल्पप्रसून
निष्पदिमकरंदगंधाधीकृतमधुकरनिकराः भगवदास्थानमंडपसन्निभाः सुमनोवर्षिभिः सुरैः सुमनोमंडपाः। पश्यंतु परापरसंबन्धिनः
सप्तभवान्भास्वत्सहस्रप्रभातिशायिनि प्रभोः प्रभामंडले भव्याः। अनुयांतु च भगवंतमधिगतसप्तर्द्धयो भगवंतो मुनिपुंगवाः। परिपूरयंतु
चाखिललोकमनोरथांस्तदभीष्टार्थप्रदानेन हेमरत्नादिसार वस्तुवर्षिणो नवनिधयः। उत्कृष्टफणामणिकिरणरंजितव्योमसीमानः परिपठन्तु
भगवद्गुणगणं फणाभृतः। समुद्यद्बहलकालागरुधूमधूमव्याप्तनभोभागं धूपघटपटलं बिभ्राणो ब्रजंतु सखो वैशवासितरोचिषो विरोचनाः।
दादयंतु समंततो भगवद्विहारस्याध्वानं विबुधाः किंकराः। सौवर्णेश्वीनपट्टमयैश्चातपत्रैर्विभ्रंतु विभ्राजमानध्वजप्रकरमनुकूलपवन-
विधूयमानमदभ्रमभ्रंलिहचूलिकम्।

प्रतन्यतां चाग्रतः चराचरगुरुमंजुलोत्सवशंसीनि त्रिजगद्विलोचनानि सम्मार्जयज्वाज्वल्यमानारसहस्रकिरणमरीचिजितारिशासनम्।
परिवृण्वन्तु पुरोयायिधर्मचक्रं सुधाभुजः। गच्छन्तु जयध्वानमुखरमुखा वल्गु वलंतः प्रकीर्णकाभियोग्यामराः पलायंतां भगवद्विहार-
मंत्रप्रभावप्रतिहतशक्तयो जगति विश्वे व्याधयः। चिकित्संतु भगवत्सान्निध्यरसायनास्वादेन सांगवैकल्यमूकबधिरपंगवः। विलोलयतु
त्रिभुवननाथवैभवं गाधानुवमुदंचत्सस्यरोमांचप्रपंचंकुकिता वसुधावधूः। भवंतु क्रमापेक्षबिलंबसहमानाः सेतविहारोत्सवसंभावनोत्सुकजनाः।
प्रसूतां च प्राप्तसमया भूत-धात्री परार्घ्यानि रत्नधान्यवृंदानि च। मुंचंतु चातिशैत्यं रात्रयः। त्यजंतु चात्युष्णं वासराः। परिहरंतु च कामं
किरणा दुर्विभवं वैवस्वतः। विदंतु सुखानि विश्वजनीने विश्वेश्वरविहारेत्र सर्वप्राणिनः। विसृजंतु वैरजन्मानुबंधमपि वैरमहिनकुलादयः।
रजस्तैमिरिकापायवैमल्यप्रसादिताः पूरयंतु पुष्पलार्जैर्दिशः शांतिकन्यकाः। भवंतु राजानः प्रशमितापदः परमधार्मिकः। संघस्य भद्रं भूयात्।
भद्रमस्तु जिनशासनाय।

भगवान के विहार के समय

इन्द्र ने हाथ जोड़कर लोक के जीवों के हित की इच्छा से जब भगवान से विहार की प्रार्थना की, तब तीनलोक के नाथ भगवान के विहार के सन्मुख होने पर जिनेंद्रदेव के विहार के मंगल अवसर पर देवगणों ने जो घोषणा की थी, वही घोषणा इस समय मुझ सौधर्मैत्र के द्वारा की जा रही है।

संपूर्ण सुर-असुरों के, इन्द्रों के मणि मुकुटों में लगे हुए नाना प्रकार के रंग-बिरंगे रत्नों की किरणों के स्पर्श से जिनके चरण कमल शोभायमान हैं, जिनके चतुष्टय का वैभव प्रगट हो गया है, प्राणिमात्र के हित के लिए ही जिनकी प्रवृत्ति है, संसार के दुःखरूपी चक्र से मूर्च्छित हुए जनों के लिए जो संजीवनौषधि हैं।

सभी मंगलों में प्रथमतर मंगल हैं, शरण में आये हुए जनों के लिए जो अद्वितीयशरण हैं, परम आर्हन्त्य की महिमा जिनके प्रगट हो चुकी है, लोकहित को करने की उत्सुकता से चित्त आर्द्र है जिनका, ऐसे भगवान विहार के समय की विज्ञापना—प्रार्थना की मानों अपेक्षा ही कर रहे हों।

अचिन्त्य है प्रवृत्ति और वैभव जिनका, सकलजगत के प्राणियों की पुण्यसामग्री को स्वीकार करते हुए के समान है मानों स्वयमेव भगवान आकाशमार्ग में अतिशय श्रेष्ठ पद्मयान से कमलों को अलंकृत कर रहे थे।

उस समय-शंख बजाने वाले देवों ने आनन्द से विभोर होकर शंख बजाना शुरू कर दिया। ऐसे बाजे बजने लगे कि जिन्होंने अपने गंभीरनाद से मेघ के गंभीरनाद को भी मंद कर दिया।

तीनलोक के आधिपत्य को सूचित करने वाले तीन छत्र भगवान के सिर पर फिरते हैं, जिनमें मणि-रत्नों की किरणों से शोभा

बढ़ रही है। जिसमें चंचल तरंगें उठ रही हैं, ऐसे क्षीरसमुद्र को हंसने वाले श्वेत चंवर दुराये जा रहे हैं। मेघकुमार देव सुरपुष्पों को वर्षाते हैं, जिनकी बढ़ती हुई सुगंधि से भंवरे आकृष्ट हो रहे हैं। अपनी उठती हुई लहरोंरूपी हाथों से चित्र-विचित्र रत्न-मोती आदि समूह को सामने बिखेरता हुआ समुद्र मानों अपने तटरूपी मस्तक से भगवान को प्रणाम ही कर रहा है।

इच्छा करते हैं।

हे देवगण! इस समय सेवा के अवसर का प्रतिपालन करो। वे देवगण देदीप्यमान अपने देह की प्रभा से आकाशमार्गको चित्र-विचित्र कर रहे थे।

उज्ज्वल वस्त्रालंकार से विभूषित, कौतुक करने वाले ऐसे वेष से सहित परिजन आवो!

मध्यम लोकपाल हाथ जोड़ो!

भगवान के विहारोत्सव में हजार नेत्र बनाकर जिनके चरणों की पूजा की गई है, ऐसे परमेश्वर के चरण-कमलों के निकट लौकांतिक देव आवो! सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अब्याबाध और अरिष्ट नाम के लौकांतिक देव ये सकलजन से स्तुति को प्राप्त हुआ करते हैं।

किन्नरियों के साथ किन्नर देव कर्णप्रिय मधुर गीत गावो! देवगण वीणा-वांसुरी आदि वाद्यों को हाथ में उठावो! गंधर्वदेव मेघ के समान गंभीर अनेक प्रकार के बाजे बजावो! सुरललनायें आकाशरूपी आंगन में लीला सहित हाव-भावपूर्वक नृत्य करें।

इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, धरणेन्द्र और चंद्र दश दिक्पालों! आप अपनी-अपनी दिग्गों का पालन करो। रक्षकगण! कुटिलढाड़ वाले, विकरालमुखाकृति ऐसे हिंसक पशुओं को रोक दो।

हे सरस्वती देवी! कमल को हाथ में लिये ऐसी लक्ष्मीदेवी के साथ तथा परिचारक देव परिवारों से घिरी हुई आप भगवान की प्रदक्षिणा देकर आगे-आगे रहो।

हे राजाधिराज! अपने परिकरों के साथ आगे-आगे चलो।

हे वायुकुमार देव! आप अतीव सुगंधि से सुगंध फैलाते हुए मार्ग को स्वच्छ करो।

हे मेघकुमार देव! सुखद, शीतल और सुगंधित ऐसे जलकणों से चारों तरफ हल्की-हल्की फुहार बरसाओ।

पुष्पों को वर्षाने वाले देवगण! भ्रमरों के शब्दों से मुखरित ऐसे मन्दार कल्पवृक्षों के पुष्पों से चारों तरफ पुष्पों को बिखेरते हुए सुंदर मार्ग बना दो।

भगवान के विहार के मार्ग को चित्र-विचित्र रांगोली आदि से चित्रित करो।

देवगण! अपनी-अपनी देवांगनाओं के साथ-साथ अनेक अमूल्य रत्नों से निर्मित ऐसे क्रीडामार्ग में क्रीड़ा करो।

इच्छित वस्तु के इच्छुकजनों! इच्छित फल को देने में तत्पर ऐसे कल्पवृक्षों से इच्छित फलों को इच्छानुसार ग्रहण करो।

पुष्पवृष्टि करने वाले देवगणों! भगवान के विहार में अनेक पुष्पमंडप बना दो, जिसमें फूलों की सुगंधि से भंवरे मंडरा रहे हों, जिनमें खूब मणियों के तोरण, चंदोवे आदि बंधे हुए हों और जो आकाश का स्पर्श करने वाले ऊंचे-ऊंचे हों, ऐसे मंडप मार्ग के दोनों तरफ बना दो।

हे भव्यों! तुम सभी भगवान के भामंडल में अपने-अपने आगे-पीछे के सात-सात भवों को देखो, ये भामंडल हजारों सूर्यों से अधिक प्रभा से प्रभाशाली हैं।

सत्तन्त्रद्वियों से समन्वित ऐसे महामुनिगण! आप लोग भगवान के पीछे-पीछे चलो।

ये नवनिधियाँ सबके लिए अभीष्ट फल प्रदान करती हुई सुवर्ण-रत्न आदि सार वस्तुओं को बरसाती हुई सभी लोगों के मनोरथों को पूर्ण करें।

नागकुमार देव! अपने उत्कृष्ट फणों में लगी हुई मणियों की किरणों से आकाशपटल को शोभित करते हुए भगवान के गुणों का बखान करो।

अग्निकुमार देव! जिनमें कालागरु आदि सुगंधित धूप देने से सुगंधित धुआँ निकलता हुआ आकाश को व्याप्त कर रहा है, ऐसे धूपघड़ों को धारण करते हुए गमन करो।

किंकर देवगण! आप सभी भगवान के विहार के मार्ग में चारों तरफ चलो।

सुवर्ण से निर्मित, चीनपट्टमय से शोभायमान ध्वजाओं को धारण करो जो कि अनुकूल पवन से हिल रही हों और आकाश का स्पर्श कर रही हों।

धर्मचक्र आगे आगे चले, जो कि चर-अचर प्राणियों के लिये मंजुल उत्सव को सूचित कर रहा है। तीनों जगत के लिए मंगल कर रहा है और जाज्वल्यमान हजार आरों की किरणों से शोभित हुआ, शत्रुओं के शासन को जीतने वाला है।

देवगण! आगे चलने वाले धर्मचक्र के चारों तरफ चलो।

प्रकीर्णक और अभियोग्य जाति के देवगण 'जय जय जय' बोलते हुए मार्ग में चले।

सभी व्याधियां भगवान के विहार के प्रभाव से शक्तिहीन होती हुई पलायन कर जावें।

लूले, लंगड़े, गूगे, बहरे और पंगु मनुष्य भगवान के सान्निध्यरूपी रसायन के आस्वादन से स्वस्थ हो जावें और पूर्ण अंगोपांग को प्राप्त कर लें।

पृथिवीरूपी स्त्रियाँ चारों तरफ से धान आदि से फलित होने से मानों रोमांच को ही धारण कर रही हैं, ऐसे वे त्रिभुवननाथ के वैभव को विस्तारित करें।

भगवान के विहार के उत्सव में उत्सुक हुए जन भगवान के आगमन के विलंब को न सहते हुए विहार के उत्सव में सम्मिलित होवें।

अपने-अपने समय पर यह पृथ्वी अमूल्यरत्न और धान्य को उत्पन्न करे।

रात्रियां अतिशीत को छोड़ दें। दिवस अतिउष्णता को छोड़ दें। सूर्य भी अपनी कठोर किरणों को न बिखेरें।

यहाँ पर सभी प्राणी विश्वहितकर भगवान के विहार के समय सुख का अनुभव करें।

सर्प, नेवला आदि जन्मजात विरोधी पशुगण भी जन्मजात वैर को छोड़ दें।

शांति कन्यायें पुष्प और लावा आदि को बिखेरते हुए धूलि, अंधकार आदि को दूरकर निर्मल, स्वच्छ दिशाओं को प्रसन्न करें।

राजागण आपत्तियों को दूरकर परम धार्मिक होवें।

संघ का कल्याण हो। जिनशासन कल्याणकारी हो।

इति जगति समस्ते, स्वस्वमेवं नियोगं। स्वयमपि निदधाने, भतुरिव प्रभावात्॥

व्यरचि विभुविहार-रंभ एवं प्रसत्यै-रगणितपुनरुक्तै-घोषणाख्यातिरेषा॥२॥

यूयं समस्तविबुधाः सह वासवेन, विश्वे सवित्तपतयः सह मर्त्यलोकैः।

आगच्छत त्वरितमेव विधिस्तिस्तेऽस्मिन्-सामन्विधौ जिनमहे जगते हिताय॥३॥

इति विश्वविहारघोषणमुक्त्वा देवं पुरि विहार्य प्रागुक्तनित्यमहविधिना अष्टोत्तरशतकलशैरभिषिच्यैकादश महामहेनाभ्यर्चयेत्॥

सर्वे देवाः समाहूताः, शिष्टार्हत्प्रभुपूजने। इष्टमस्माकमापाद्य, तुष्टा यांतु यथायथम्॥१॥

ॐ जिनपूजार्थं समाहूताः देवाः सर्वे विहितमहामहाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः इति विसर्जनमंत्रोच्चारणेन यागमंडले पुष्पांजलिं विकीर्य देवान्विसर्जयेत्। (पुनः पूजा आदि करके विसर्जन करें।)

प्रक्षीणदोषमलमिद्धनिजप्रकाशं, लोकैकभूषणमहो निजदिव्यरत्नम्।

मुक्तिश्रियः सपदि संवदनं विधातुं, पूज्यं प्रपूज्य हृदये निदधे भवन्तं॥२॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा अर्हत्परमेष्ठिन् अनेन परमब्रह्माध्यात्ममध्यासयेत्॥

यो लौकैकशिखामणिर्यमनिशं, ध्यायन्ति योगीश्वराः। येनादर्शि समस्ततत्त्वममरा, यस्मै नमः कुर्वते॥

यस्मान्नास्त्यपरो हितस्त्रिजगते, यस्यैव युक्ताप्तता। यस्मिन्केवलबोधभानुरुदितः, सोव्याज्जिनोऽयं जगत्॥३॥

ॐ श्रीं हीं ह्रीं श्रीं नमः परमशांताय सर्वलोकशांतिर्भवतु स्वाहा। शांतिधारा॥

अर्चामग्रे प्रनृत्यत्कलशयुतवधूमग्रभृंगारनिर्यद् । वार्धारापूतधात्रीं, बहुतरविभवामादरेणानुयांतः ।
 सर्वाशाः पूरयंतो, बलिमनुमुखराः सर्वधान्यैश्चलाजैः । सत्पुष्पैरक्षतौघैर्जिननिलयमिमं त्रिःपरीयाम शान्त्यै ॥४॥
 ॐ अर्हद्भ्यो नमः ।

प्रमादाज्ज्ञानदपधैरित्यादिना क्षमापणपूर्वकं पंचांगप्रणामः । मोहध्वांतविदारणमित्यादिना गमनाप्रच्छनम् ।

इत्थं सौधर्मशक्र-प्रभृतिसुरवराः यां जिनेन्द्रस्य साक्षाद् ।
 चक्रुः कैवल्यबोधोत्सव - विषयमहाश्चर्यकल्याणपूजां ।
 तामारोप्यात्र बिंबे, विधिवदिह कृता शक्तितो भूरिभक्त्या ।
 भुक्त्यै मुक्त्यै च यष्ट-प्रभृतितनुभृतामस्तु कल्याणपूजा ॥५॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः ॥

इत्थं विधत्ते जिनपुंगवस्य, कैवल्यबोधोत्सवसंविधिं यः ।
 कैवल्यकर्मोत्सवमाशु यास्यत्यमुत्र नूनं स हि धर्मनेमिः ॥६॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते
 प्रतिष्ठातिलकनाम्नि केवलज्ञानकल्याण-
 विधिर्नामैकादशः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के
 ग्रंथ में केवलज्ञानकल्याणकविधि को कहने वाला
 यह ग्यारहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।

जिनप्रतिमा का लक्षण

(यक्ष-यक्षी समेत)

शान्तप्रसन्नमध्यस्थनासाग्रस्थाविकारकृत् ।
 सम्पूर्णभावरूपानुविद्धांगं लक्षणान्वितम् ॥
 रौद्रादिदोषनिर्मुक्तप्रातिहार्याकयक्षयुक् ।
 निर्माप्य विधिना पीठे जिनबिम्बं निवेशयेत् ॥

-प्रतिष्ठासारोद्धार

अर्थ—जिसके मुख की आकृति शांत हो, प्रसन्न हो, मध्यस्थ हो, नेत्र विकार रहित हो, दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर हो, जो केवलज्ञान के सम्पूर्ण भावों से सुशोभित हो, जिसके अंग उपांग सब सुन्दर हों, रौद्र आदि भावों से रहित हों, आठों प्रातिहार्यों से विभूषित हों, चिन्ह से सुशोभित हों, यक्ष-यक्षी सहित हों और ध्यानस्थ हों, इस प्रकार के शुभ लक्षणों से सुशोभित जिनप्रतिमा बनवाना चाहिए और प्रतिष्ठा कराकर पूजा करनी चाहिए ।

अथ द्वादशः परिच्छेदः

अथ निर्वाणकल्याणम्

प्रतिष्ठादिवसात्पश्चाद्द्वितीयेऽहनि याजकः। यागमंडलमारभ्य, समासात्तत्र विष्टरे ॥१॥
 जिनबिंबं निवेश्यास्य, विदध्यादधिवासनम्। धर्मोपदेशसंकल्पात्तत्त्वार्थं साधु घोषयेत् ॥२॥
 त्रिसंध्यमेवं कुर्वीत, प्रतिष्ठोक्ताधिवासनम्। मध्याह्नेऽस्ति विशेषस्तद्यथा कृत्वाधिवासनाम् ॥३॥
 जिनपादार्चितैर्गंध-पुष्पतांबूलसत्फलैः। संतर्प्य भव्यसंदोहं, प्रागुक्तविधिनाशिषा ॥४॥
 द्वारपालबलिं ब्रह्म-बलिं दिक्पालसद्बलिं। श्रीबलिं च ध्वजबलिं, ग्रामसंबंधिनां पुनः ॥५॥
 ब्रह्मादिक्पालकानां च, बलिं कृत्वा क्रमात्ततः। पीतैः सुगंधिभिश्चूर्णैः, पुंजितैरर्चयेज्जिनम् ॥६॥
 तच्चूर्णं बिभ्र्युः सर्वे, भव्याः शिरसि भक्तितः। विहारघोषमुक्त्वा च, सर्वसंधेन सेवितम् ॥७॥
 पद्मयानं समारोप्य, देवं पुरि विहारयेत्। कुंभैरष्टशतेनाभि-षिच्य देवं समर्पयेत् ॥८॥
 प्रतिष्ठातस्तृतीयेऽहनि, चैवमेव क्रियाक्रमः। किंतु कुंकुमपंकाद्वय-तीर्थवारिभिरुभितैः ॥९॥
 कुंभैरलंकृतैर्देव-मभिषिच्य समर्च्य च। तज्जलं बिभ्र्युर्भव्याः, पापपंकापहारकम् ॥१०॥

तद्यथा॥ प्रतिष्ठादिवसाद्द्वितीये हनि यागमंडलस्य प्रागुक्तगद्यपद्याभ्यां प्रथमपद्यमात्रेण वा समासतः समाराधनां समापयेत् ॥

अब इसी को कहते हैं॥ प्रतिष्ठादिवस के दूसरे दिन पूर्वकथित गद्य-पद्य से या प्रथम पद्य से संक्षेप में यागमंडलकी आराधना करें ॥
 प्रतिष्ठा दिवस के अनंतर दूसरे दिन प्रतिष्ठाचार्य यागमंडल विधि करें, उस पर सिंहासन पर जिनबिंब को विराजमान करके, 'अधिवासन' विधि करें। धर्मोपदेश के संकल्परूप से—जिनेन्द्रदेव उपदेश दे रहे हैं, ऐसी घोषणा कर दें। इस प्रकार से प्रतिष्ठाविधि में कथित अधिवासन तीनों संध्या में करें। मध्याह्न में विधि कुछ भिन्न है। वह ऐसी है—अधिवासनविधि करके, जिन्होंने जिनेन्द्रदेव की पूजा की है, ऐसे भव्यजनों को गंध, पुष्प, तांबूल, फलों को देकर पूर्वोक्त विधि से आशीर्वाद देकर संतुष्ट करें ॥१० से ४॥

अनंतर द्वारपालबलि—पूजा, दिक्पालों की बलि—पूजा, श्रीबलि और ध्वजबलि ये बलि अर्थात् पूजा कराके तदनंतर ग्राम संबंधी ब्रह्मबलि और दिक्पालबलि करावें।

अनंतर क्रम से पीले सुगंधित, चूर्णों के पुंजों से श्रीजिनेन्द्रदेव की अर्चना करें पुनः उस चूर्ण को सभी भव्यजन भक्तिपूर्वक मस्तक पर लगावें। पश्चात् विहार की घोषणा करके सर्वसंध से सेवित ऐसे भगवान को 'पद्मयान' पालकी या रथ में विराजमान करके गांव या शहर में भगवान का श्रीविहार करावें—रथयात्रा निकालें। अनंतर एक सौ आठ कलशों से भगवान का अभिषेक करें ॥५-८॥

प्रतिष्ठा से तीसरे दिन भी यही क्रिया है, किंतु केशर-चंदनमिश्रित जल से भरे कुंभों से भगवान का अभिषेक करके पुनः पूजा करके पापपंकाशक ऐसे गंधोदक को भव्यजन ग्रहण करें ॥ ९-१० ॥

अथ यागमंडलमध्ये पीठस्थापनम्

यागमंडल पर सिंहासन की स्थापना करें

श्रीपांडुकाव्यशिलाग्रिमपीठकल्पं। तद्वेदिकोपरि तटे निदधे भवन्तम्।

प्रक्षालयामि शुचिभिः सलिलैः पटेन। प्रच्छादितेऽत्र निदधेऽक्षतपुष्पदर्भान् ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठस्थापनं करोमि स्वाहा। पीठस्थापनम्।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(जल से पीठ अर्थात् भगवान को विराजमान करने का पात्र या सिंहासन को प्रक्षालित करें) पीठप्रक्षालनम् ॥ तत्पीठोपरि प्रागग्रवस्त्राच्छादनम् ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः। सकुसुमाक्षतदर्भस्थापनम्। (दर्भ की स्थापना करें)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्भूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, पीठं समभ्यर्चये ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । पीठार्चनम् ॥

संस्थापयाम्युपरि तस्य जिनेश्वरार्चां, चक्रत्रयं जिनपतेरपसव्यभागे ।

छत्रत्रयं तदनु तस्य तु सव्यभागे । वादित्रजालजटिले सति सर्वलोके ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं स्वाहा प्रतिमास्थापनम् ॥

गद्य । जिनमतमिव सूक्ष्ममित्यादिना मुखवस्त्रप्रदानादध्योद्धरणं तांमधिवासनां विदध्यात् । जिनदिव्यध्वनिसंकल्पेन प्रतिमाग्रे भव्यसंघस्तत्त्वार्थं घोषशुद्ध्या पठेत् । एवं त्रिसंध्यमधिवासनां कुर्यात् । “श्रीमज्जिनेन्द्रा हतमोहतन्द्रा” इत्याशीवदिर्भव्यसंघं जिनपार्दार्चित-गंधमाल्यतांबूलफलैः संतर्पयेत् । प्रागुक्ततन्मंत्रैर्द्वारपालादिबलिं विदध्यात् ।

अनंतर पूर्वकथित मंत्रों से द्वारपालादि की बलि विधि-पूजा करें ।

उत्सवविधौ वक्ष्यमाणविधिना पीतसुरभिचूर्णं कृत्वा तच्चूर्णपुंजैर्जिनमभ्यर्चयेत् ॥

(पुनः उत्सवविधि में आगे कथित विधि से पीत-सुगंधित चूर्ण बनाकर उन चूर्णपुंजों से जिनेन्द्रदेव की अर्चना करें ।)

यागमंडल पर सिंहासन पर जिनप्रतिमा स्थापित करके प्रतिमा के दाहिने भाग में तीन चक्र और बायें भाग में तीन छत्र स्थापित करें । पुनः ‘जिनमतमिव सूक्ष्म....’ इस श्लोक से प्रारंभ करके पृष्ठ २५७ से मुखवस्त्र प्रदान से लेकर अर्घ्य चढ़ाते तक की अधिवासना-विधि पूरी करें ।

पुनः जिनेन्द्रदेव की दिव्यध्वनि खिर रही है, ऐसा संकल्प करके प्रतिमा के सामने सभी भव्यजन या साधुगण तत्त्वार्थसूत्र का शुद्ध रीति से पाठ करें । इस प्रकार तीनों संध्या में अधिवासना विधि करें ।

भगवान की दिव्यध्वनि तीनों संध्या कालों में छह-छह घड़ी अर्थात् तीन-तीन मुहूर्त तक खिरती है । एक घड़ी २४ मिनट की एवं एक मुहूर्त ४८ मिनट का होता है । इस प्रकार तीनों कालों में यह दिव्यध्वनि एक काल में दो घंटे चौबीस मिनट तक खिरती है । यह दिव्यध्वनि श्रोताओं के कान में पहुंचकर सात सौ अठारह भाषा में परिणत हो जाती है या सर्वभाषामय हो जाती है । गणधरदेव इस ध्वनि को सुनकर द्वादशांग की रचना करते हैं ।

अनंतर पृष्ठ ६६ से ‘श्रीमज्जिनेन्द्राहतमोहतन्द्रा....’ आदि श्लोकों द्वारा जिनपार्दार्चित गंध, पुष्प, फल आदि से ष्णों को संतुष्ट करें ।

अथ चूर्णार्चनम् (पीत चूर्ण पुंज चढ़ाना)

शार्दूलविक्रीडित — भव्यानुग्रहराग एष किमयं, भव्यैकबंधोर्विभो-र्भव्यानां बहुभक्तिरागविसरः, किं वा जिनाग्निद्वये ॥

इत्याशंकितपीतचूर्णनिकरैः, श्रीवश्यचूर्णोपमैः । संचूर्णीकृतकर्मणो जिनपतेः, श्रीपादमाराधये ॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म चूर्णीकरोतु भगवान् स्वाहा । चूर्णार्चनम् । हल्दी, चंदन आदि का पीत चूर्ण बनाना उस चूर्ण के पुंज चढ़ाना ।

तच्चूर्णं शिरसि सर्वे भव्या धारयंतु । उस चूर्ण को सभी भव्य मस्तक पर चढ़ावें ।

ततो जिनाग्रे विहारघोषणमुक्त्वा श्रीविहारसंकल्पेन जिनं पुरि विहारयेत् । प्रागुक्तनित्यमहविधिनाष्टोत्तरशकलशैरभिषिच्यैकादशमहेन जिनमभ्यर्चयेत् । (पुनः जिनेन्द्र देव के समक्ष श्रीविहार की घोषणा करके रथयात्रा निकालें अनंतर ‘नित्यमह’ की विधि से १०८ कलशों से महाभिषेक करके पूजा करें ।)

विसर्जनं

सर्वे देवाः समाहूताः, शिष्टार्हत्प्रभुपूजने । इष्टमस्माकमापाद्य, तुष्टा यांतु यथायथम् ॥

ॐ जिनपूजासमाहूता देवाः सर्वे विहितमहामहाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः इति सर्वदेवविसर्जनम् ।

परब्रह्मात्माध्यासनं शांतिधारां शांतिबलिक्षमापणगमनाप्रच्छन्नं विदध्यात् ॥ इति प्रतिष्ठा द्वितीय दिन विधानम् ॥

परब्रह्म परमात्मा का ध्यान, शांतिधारा, शांतिबलि, क्षमापण और जाने की आज्ञा लेना, ये सर्वविधि करें ।

इस प्रकार प्रतिष्ठा अर्थात् केवलज्ञानकल्याणक के द्वितीय दिन की विधि हुई ।

तृतीयदिनेऽपि पीतचूर्णार्चनं वर्जयित्वा इदमेव विधानमवसेयम् । तत्र कुंकुमोदकपरिपूरितकलशैः प्रागुक्तमध्यकुंभाभिषेक-
गद्यपद्यमंत्रैर्जिनमभ्यर्चयेत् । इति प्रतिष्ठातृतीयदिनविधानम् ॥

तृतीय दिन भी पीतचूर्णार्चन विधि को छोड़कर यही विधि समझना चाहिए । उसमें कुंकुमोदक—केशरमिश्रित जल से भरे कलशों से पूर्वकथित मध्यकुंभाभिषेक के गद्य-पद्य मंत्रों से जिनेन्द्रदेव की अभिषेकपूर्वक पूजा करें ।

इस प्रकार से प्रतिष्ठा के तृतीय दिन की विधि हुई ।

प्रतिष्ठादिवसात्पश्चाच्चतुर्थेऽहनि याजकः । प्रातरेव हि कुर्वीत, यागमंडलपूजनम् ॥१॥
तत्पुरो भूतले पंच-चूर्णैरष्टदलांबुजम् । विरच्य भूमिं संशोध्य, न्यस्य दर्भान्समर्च्य ताम् ॥२॥
कर्णिकायां न्यसेत्सिद्धान्-दलेष्वष्टसु तद्गुणान् । तदग्रे विधिना न्यस्य, पीठे संस्थापयेज्जिनम् ॥३॥
कल्याणमालामारोप्य, कृत्वा तामधिवासनाम् । मुखवस्त्रं समुत्सार्य, प्रोक्षिष्यार्घ्यमनर्घ्यकम् ॥४॥
सम्यक्त्वादिगुणांस्तत्र, समारोप्य समर्थं च । आराध्य पीठिकामंत्रैः, सप्तधा कुसुमैः सितैः ॥५॥
मंत्रैस्तैर्गार्हपत्याग्नौ, हुत्वा न्नाहुतिमन्वतः । स्तुत्वा शिवक्रियां कृत्वा, माल्यैः कुसुमचंदनैः ॥६॥
अक्षताद्यैर्जिनानिष्ठा, तानि विभ्रतु भाक्तिकाः । प्रागुक्तविधिना तीर्थ-जलमानीय तज्जलैः ॥७॥
भृतैरष्टसहस्रेण, कुंभैरवभृथाह्वयम् । अभिषेकं प्रभोः कुर्या-देकादशविधं महम् ॥८॥
अभिषेकक्रियां कृत्वा, समभ्यर्च्य श्रुतं गुरुम् । गंधोदकभृतं यष्टे, कुंभं दद्यान्मुदाशिषा ॥९॥
शेषां च सर्वभ्येभ्यो, दद्यात्प्रागुदिताशिषा । यष्टा संपूजयेत्संघं, यथाशक्ति यथोचितम् ॥१०॥
अथावरोह्य तद्रात्रौ, प्रासादे स्थापयेद्ध्वजम् । पूर्ववत्तेन भाल्येष, सर्वेषां तच्छुभाय च ॥११॥
विसर्जनं निर्जराणामध्यात्ममध्यासनं विभोः । शांतिधारां ततः शांति-बलिकर्मक्षमापणं ॥१२॥
गमनाप्रच्छन्नं पश्चात्कृतकर्मफलार्थिनाम् । आशीर्दानविधिं दीक्षा-मोचनं गुरुसाक्षिकम् ॥१३॥
शांतिभक्तिं च कृत्वेन्द्रः, प्रतिष्ठां तां समापयेत् । निष्ठापितप्रतिष्ठं तं, यष्टेन्द्रं बहु मानयेत् ॥१४॥
सत्कृत्य शक्त्या भव्यास्तं सर्वे यांतु यथायथम् । प्रतिष्ठादिवसे कुर्यादुत्सवं मासि मासि च ॥१५॥
आवर्षादत ऊर्ध्वं तु, वर्षे वर्षे च शक्तितः । उत्सवानां विधिर्भेदो-प्युत्तरत्राभिधीयते ॥१६॥
इति व्यासप्रतिष्ठाया, विधिः सर्वो निरूपितः । अनुक्तमन्यतो ग्राह्य-मुचितं लक्षणादिकम् ॥१७॥

अब प्रतिष्ठा दिवस के पश्चात् चतुर्थ दिवस याजक प्रातः ही यागमंडल पूजन करें । प्रथम ही भूमि पर पांच प्रकार के चूर्णों से आठ दल का कमल बनावें । पुनः भूमिशोधन विधि, दर्भन्यास विधि करके भूमिदेवता की पूजा करके कमल की कर्णिका में सिद्ध भगवान की स्थापना करें और आठ पंखुड़ियों पर क्रम से सिद्धों के आठ गुणों की स्थापना करें । उस कमल के सामने पीठ पर—सिंहासन पर जिनेन्द्र भगवान को विराजमान करके कल्याणमाला का आरोपण कर अधिवासन क्रिया करके मुखवस्त्र उत्सारित करके अर्घ्य चढ़ाकर सम्यक्त्वादि गुणों का आरोपण करके पूजा करें । पुनः श्वेत पुष्पों से सप्तविध पीठिकामंत्रों से आराधना करें । अनंतर गार्हपत्य अग्नि में—चतुष्कोण कुंड में उन्हीं सप्तविध मंत्रों से अन्न की आहुति दें । फिर निर्वाणकल्याणक क्रिया करके माला, कुसुम, चंदन, अक्षत आदि से जिनेन्द्रदेव की पूजा करके उन माला आदि को भाक्तिकजन ग्रहण करें । पुनः पूर्वोक्त विधि से तीर्थजल को लाकर उस जल से भरे हुए एक हजार आठ (१००८) कलशों से जिनप्रतिमा का ‘अवभृत्’ नाम का महाभिषेक करें । एकादशविध पूजा करके अभिषेक क्रिया पूर्ण कर सरस्वती की और गुरु की पूजा करके गंधोदक से भरे हुए कुंभ को यजमान को आशीर्वादपूर्वक दें और पूर्वकथित आशीर्वादात्मक श्लोकों को पढ़ते हुए सभी भव्यों को ‘शेषा’ दें । पुनः प्रतिष्ठाचार्य और यजमान आचार्यसंघ या मुनिसंघ की यथोचित और यथाशक्ति पूजा करें ।

अनंतर उसी दिन रात्रि में ध्वजा की अवतरणविधि कर—ध्वजा उतारकर मंदिर के ऊपर ध्वजा चढ़ा दें । वह ध्वज जिनमंदिर के ऊपर चढ़कर अतिशय शोभता हुआ फहरे । सभी के शुभ के लिए शांतिधारा, शांतिबलि क्रिया, क्षमापण, जाने की आज्ञा मांगना आदि क्रियायें करके पूजन के फल की याचना करें । पश्चात् आशीर्वाद देने की विधि करके गुरु के समक्ष गुरुसाक्षीपूर्वक दीक्षामोचन विधि करके शांतिभक्ति करके प्रतिष्ठाचार्य प्रतिष्ठा को पूर्ण करें । उस समय यजमान प्रतिष्ठाचार्य का बहुत ही सम्मान करे । सभी भव्य

प्रतिष्ठाचार्य का सत्कार करके अपने-अपने स्थान जावें।

पुनः प्रत्येक महीने में उसी प्रतिष्ठादिवस के दिन उत्सव मनावें। यह विधि एक वर्ष तक करें। अनंतर वर्ष-वर्ष में प्रतिष्ठा के दिन उत्सव करें। उत्सव के प्रकार तो बहुत हैं, उन्हें मैं आगे कहूँगा। इस प्रकार से सभी विस्तृत प्रतिष्ठा की विधि यहाँ मैंने कही है। जो कुछ यहाँ कही गई है, वह विधि यथा उचित अन्यत्र ग्रंथों से भी ग्रहण की जा सकती है।। १ से १७।।

गद्य—तद्यथा-प्रतिष्ठादिवसाच्चतुर्थेहनि प्रत्युषसि पूर्ववद्यागमंडलमारभ्य तत्पुरस्तादुचितोद्देशे प्रागुक्तविधिना भूमिशोधनं दर्भन्यासं भूम्यर्चनं च कृत्वा वेद्यां मंडलमालिखाचितमित्यनेन पद्येन चूर्णस्थापनं कृत्वाष्टदलकमलं विरचय्य कर्णिकायां।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा। इति विलिख्य पूर्वादिषु दलेषु प्रादक्षिण्येन ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धसूक्ष्मत्वगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धावगाहनगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धागुरुलघुगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धाव्याबाधगुणाय स्वाहा। इत्यष्टौ मंत्रान्विलिखेत्। इति लेखनविधानम्।

अब उन सभी विधि को कहते हैं—

प्रतिष्ठा दिवस से चतुर्थ दिन प्रातः काल में पूर्ववत् यागमंडल प्रारंभ करके उसके आगे उचित स्थान पर पूर्वकथित विधि से भूमिशोधन, दर्भन्यास, भूम्यर्चन करके पृष्ठ ११८ पर 'वेद्यामंडलमालिखाचित...' इस पद्य से चूर्ण स्थापन करके आठ दल का कमल बनाकर कर्णिका में “ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा” इस मंत्र को लिखकर पूर्व आदि के दलों में प्रदक्षिणा के क्रम से ‘ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वगुणाय स्वाहा।’ ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धसूक्ष्मत्वगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धावगाहनगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धागुरुलघुगुणाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धाव्याबाधगुणाय स्वाहा।

इन आठों मंत्रों को लिखे। यह लेखनविधि हुई।

देवस्य देवेंद्रकृतोत्सवस्य, संप्राप्तकल्याणचतुष्टयस्य।

निर्वाणकल्याणचिकीर्षयाह-मग्रेऽस्य पुष्पांजलिमुत्क्षिपामि।।११।। पुष्पांजलिः।।

ॐ स्वस्ति-स्वस्ति जीव-जीव इत्यादि पुष्पांजलिः।

कमल के सामने पुष्पांजलि क्षेपण करें

बाह्याभ्यंतरहेतुजातसुदृशः, पूर्वश्रुतैरादिमा—च्छुक्लध्यानयुगाद्विजित्य दुरितं, लब्ध्वा सयोगिश्रियम्।

प्राप्यायोगिपदं परेण सकलं, निर्जित्य कर्मोत्करं। शुक्लध्यानयुगेन सिद्धसुगुणान्सिद्धान्समाराधये।। २।।

गद्य—ॐ ह्रीं अशेषभोग्यद्रव्यकर्मनिरपेक्षस्वात्मोपादानमात्रसंजातसातिशयसकलात्मप्रदेशनित्यव्यापकस्य। सर्वदा सर्वबाधा-वृद्धिक्षयप्रतिपक्षदुःखोदयमानोपमानरिक्तस्य सकलचक्रिकुरुभवार्यफणींद्रसुरेंद्राहमिंद्रत्रिकालसंभवितसुखानंत गुणितक्षणपर्यायस्य। सम्यक्सकलशास्त्रविद्वृष्टांतसाधितसंसारनाटकावलोकनसंभावितसर्वकालशाश्वतपरमोत्कृष्टसुखस्यैकनिवासानाम्। निरवशेषावरण-विश्लेषविशेषाविष्कृतचरमानंतानंतनिर्भासजाज्वलत्रिकालविषयलोकालोकवर्तिसर्वद्रव्यपर्ययक्रमकरणव्यवधानातिक्रमसाक्षात्करण-दक्षाक्षूणकेवलाख्यपरंज्योतिः प्रमुखस्वाभाविकानंतगुणविशेषविभूषितानाम्। नैगमनयातिरुद्धतपोनयसंयमचारित्रज्ञानदर्शनसिद्धप्रसिद्ध-व्यवहाराणां। सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानां सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानां भगवत्सिद्धपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा।

(बाह्य और अभ्यंतर कारणों से सम्यग्दर्शन प्राप्तकर, श्रुतज्ञान के बल से और शुक्लध्यान के द्वारा जिन्होंने केवलज्ञान प्राप्त करके पुनः आठों कर्मों का नाश करके जिन्होंने सिद्धपद प्राप्त कर लिया है, ऐसे सिद्धों की मैं पूजा करता हूँ। संपूर्ण कर्मों के नाश से सिद्धात्मा के प्रदेश शुद्ध हो जाते हैं, अनंत सुख प्राप्त कर लेते हैं। सर्व चक्रवर्ती, उत्तम भोगभूमिज, देवेंद्र, अहमिन्द्र की अपेक्षा भी अनंत गुणा सुख सिद्धों को एक क्षण में प्राप्त हो जाता है। उनका ज्ञान अतीन्द्रिय होता है। ये १७० कर्मभूमि में ही जीव सिद्ध होते हैं। इसीलिए उन सिद्धों की मैं पूजा करता हूँ।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। आम्हाननादिमंत्रः॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्भूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीसिद्धनाथान्यजे॥३॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा । एवं गंधादि । (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें) पुनः

एक-एक दल में स्थापना करके जल, चंदन आदि आठों द्रव्य पृथक्-पृथक् चढ़ाकर अर्घ्य चढ़ावें।)

अथ प्रत्येकपूजा

पूर्वदलाभ्यंतरे (पूर्वदल के अभ्यंतर में)

जानाति बोधो यदनुग्रहेण, द्रव्याणि सर्वाणि सपर्ययाणि ।

दुराग्रहत्यक्तनिजात्मरूपं, तं सिद्धसम्यक्त्वगुणं यजामि॥ १॥

ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा । (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

आग्नेयदलाभ्यंतरे (आग्नेयदल के अभ्यंतर में)

जानाति नित्यं युगपत्स्वतोऽन्य-सर्वार्थसामान्यविशेषपूर्वम् ।

निर्बाधकं स्पष्टतरं च यस्तं, सिद्धात्मविज्ञानगुणं यजामि॥ २॥

ॐ ह्रीं सिद्धात्मविज्ञानगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धात्मविज्ञानगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धात्मविज्ञानगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धात्मविज्ञानगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा । (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

दक्षिणदलाभ्यंतरे (दक्षिण दल में)

स्वात्मस्थसामान्यविशेषसर्वं, साक्षात्करोत्येव समं सदा यः ।

सुनिश्चितासंभवबाधकं तं, सिद्धात्मनो दृष्टिगुणं यजामि॥ ३॥

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा । (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

नैऋत्यदलाभ्यंतरे (नैऋत्य दल में)

अनंतविज्ञानमनंतदृष्टिं, द्रव्येषु सर्वेषु च पर्ययेषु ।

व्यापारयंतं हतसंकरादि, सिद्धात्मवीर्याख्यगुणं यजामि॥ ४॥

ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

पश्चिमदलाभ्यंतरे (पश्चिम दल में)

अबाधकं मानमबाध्यमेव, निष्पीतसर्वार्थमसंगसंगम्।

सर्वज्ञवेद्यं तदवाच्यमेव, सिद्धात्मसूक्ष्माख्यगुणं यजामि॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धसूक्ष्मगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धसूक्ष्मगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धसूक्ष्मगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धसूक्ष्मगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

वायव्यदलाभ्यंतरे (वायव्य दल में)

एकत्र सिद्धात्मनि चान्यसिद्धा, वसंत्यसंबाधमनंतसंख्याः।

यस्य प्रभावात्सुनयस्थितं तं, सिद्धावगाहाख्यगुणं यजामि॥६॥

ॐ ह्रीं सिद्धावगाहगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धावगाहगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धावगाहगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धावगाहगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

उत्तरदलाभ्यंतरे (उत्तर दल में)

अधो न पातोस्ति यथा शिलादे-र्न तूलवद्वायुकृतेरणं च।

सिद्धात्मनां तेन सुयुक्तिसिद्धिं, गुणं यजामोऽगुरुलघ्वभिख्यम्॥७॥

ॐ ह्रीं सिद्धागुरुलघुगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धागुरुलघुगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धागुरुलघुगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धागुरुलघुगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

ईशानदलाभ्यंतरे च (ईशान दल में)

भवाग्निशात्तै विहितश्रमोऽव्या-बाधात्मना यं परिणाममेति।

स्वात्मोत्थसौख्यैकनिबंधनं तं, सिद्धात्मनिर्बाधगुणं यजामि॥८॥

ॐ ह्रीं सिद्धाव्याबाधगुण! अत्र एहि एहि संवौषट्। ॐ ह्रीं सिद्धाव्याबाधगुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सिद्धाव्याबाधगुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धाव्याबाधगुणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

एवं सिद्धपरमेष्ठिनं तद्गुणानभ्यर्च्य शरच्चंद्रमरीचिरोचिर्षोतश्चेतसि चिंतयन्ननादिसिद्धमंत्राभिर्मन्त्रितकर्पूरहरिचंदन-
द्रवालुलितसुरभिभुग्गुणजलिभिरेकविंशतिवारानधिवास्य पूर्णार्घ्यदानेन बहु मानयेत्। **अयमिहानादीसिद्धमंत्रः-**

(इस प्रकार सिद्धपरमेष्ठी की और उनके गुणों की पूजा करके उनके गुणों का चिंतन करते हुए अनादिसिद्ध मंत्र से अभिमन्त्रित कर्पूर, चंदन आदि से सुगंधित, ऐसे श्वेत सुरभि त पुष्पों से इक्कीस बार मंत्र जपकर पूर्णार्घ्य चढ़ाकर सिद्धपरमेष्ठी का बहुमान—विशेष पूजा करें।)

ॐ णमो सिद्धाणं, सिद्धा मंगलं, सिद्धा लोगुत्तमा, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि। ह्रीं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
इत्यनादिसिद्धमंत्रः। यह अनादिसिद्ध मंत्र है।

इत्थं समभ्यर्चितसिद्धनाथ-सम्यक्त्वमुख्याश्च गुणास्तदीयाः।

सर्वार्चिताः सर्वजनार्चनीयाः, स्वात्मोपलब्धै मम संतु तेऽमी ॥ पूर्णार्घ्यः ॥६॥ पूर्णार्घ्यं चढ़ावें।

अथ तन्मंडलस्योपरि पीठस्थापनम्

(अब मंडल पर पीठ—सिंहासन की स्थापना करें।)

वेद्या मूर्ध्नि निधाय पीठमुचितं, प्रक्षाल्य तीर्थाबुभिः। प्रत्यग्रेण महाघनेन परितः, प्रच्छाद्य दर्भैरपि।

अभ्यर्च्योपरि तस्य सिद्धनिकरस्यार्चां सतामर्चिताम्। न्यस्यार्चामि समर्च्य सप्तविधिसन्मन्त्रैः समाराधये ॥९॥

ॐ ह्रीं हं क्षं ठ ठ श्रीपीठस्थापनं करोमि स्वाहा।

ॐ हां हीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥ पीठप्रक्षालनम् ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः। सकुसुमाक्षतदर्भस्थापनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गर्गधिगंधैः सितैः। सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः। धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, पीठं समभ्यर्चये ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय नमः स्वाहा। पीठार्चनम्। (श्रीपीठ को अर्घ्य चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं आहूता तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। प्रतिमास्थापनं ॥

आहूता इव सिद्धमुक्तिवनितां, मुक्तान्यसंगा ययुः। तिष्ठन्त्यष्टमभूमिसौधशिखरे, सानंतसौख्याः सदा।

साक्षात्कुर्वत एव सर्वमनिशं, सालोकलोकं समं। तान्द्वेष्टविशुद्धसिद्धनिकरा-नावाहनाद्यैर्भजे ॥३॥

ॐ ह्रीं हं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ ह्रीं हं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं हं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथ कल्याणपंचकारोपणम्

“योत्र स्वर्गावतीर्णः सुरगिरिशिखरे दुग्धवार्द्धः पयोभिः” इत्यादि कल्याणमालारोपणविधिं निर्वाणकल्याणस्थापनाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्पर्यंतं कुर्यात्।

योऽत्र स्वर्गावतीर्ण इत्यादि पृष्ठ २६५ से पढ़कर पंचकल्याणमाला का आरोपण करते हुए प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

पूर्ववत् पृष्ठ २५७ से अधिवासनविधि पूर्ण करें।

अथाधिवासनविधानम्

जिनमतमिव सूक्ष्ममित्यादिरभ्युद्धराम्यर्घ्यमनर्घ्यमस्य। पूर्णार्घ्यपर्यन्तं विधिं कुर्यात्। प्रागुक्तानादिसिद्धमंत्रेण सप्तवारान्प्रतिमां स्पृशन्नेवाभिमन्त्रयेत्। इत्यधिवासनम्।

(पूर्व में कथित पृष्ठ २७८ से अनादिसिद्ध मंत्र से सात बार प्रतिमा का स्पर्श करें।)

घंटाटंकारवीणाक्वणितमुरजधांथाक्रियां काहलाच्छें - च्छेंकारोदारभेरीपटहधलधलंकारसंभूतघोषे।

आक्रम्याशेषकाष्ठातटमथ झटिति प्रोच्छटत्युद्भतेऽभ्रं। शिष्टाभीष्टार्हदिष्ट्यै जिनमुखपट्स्फाटये मंत्रपूर्वम् ॥४॥

ॐ उसहाइवड्डमाणानं, पंचकल्लाणसंपण्णाणं, महइमहावीरवड्डमाणानं सामीणं, सिज्झउ मे महइमहाविज्जा, अट्टमहापाडिहेरसहियाणं, सयलकलाधराणं, सज्जोजादरूवाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंद-

मणिमण्डमत्थयमहिदाणं, सयललोयस्य संतिपुट्टिबुद्धिकल्लाणाउआरोग्गकराणं बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणि-
जदिअणगारोवगूढाणं, उहयलोयसुहफलयरारणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, परापरपरमप्पाणं, अणाइणिहणाणं
बलिबाहुबलिसहिदाणं, वीरे वीरे, ओं हां क्षां सेणवीरे वड्ढमाणवीरे हसं जयंतवराइये वज्जसिलत्थंभमयाणं,
सदभव्वपइट्टियाणं। यत्थ सण्णिहिदा मे भवंतु, मे भवंतु ठः ठः क्ष क्ष स्वाहा।

मुखवस्त्रोद्घाटनम्। (इस मंत्र से प्रतिमा के सामने का वस्त्र हटा दें।)

वार्गधतंडुललतांतहविः प्रदीपै-धूपैः फलैः कनकपात्रगतैर्जिनाग्रे।

नंद्यादिवर्तदधिस्वस्तिकदर्भदूर्वा-सिद्धार्थकैश्च कृतमर्घ्यमिहोद्धरामः॥५॥

ॐ अट्टविहकम्मवियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।

अट्टगुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥६॥

भूयासुरिति स्वाहा। महोत्सवेन महार्घ्यमवतारयेत्। (महार्घ्य चढ़ावें।)

अथ गुणारोपणम्

जानाति बोधो यदनुग्रहेण, द्रव्याणि सर्वाणि सपर्ययाणि।

दुराग्रहत्यक्तनिजात्मरूपं, सिद्धेऽत्र सम्यक्त्वगुणं न्यसामि॥१॥

ॐ ह्रीं परमावगाढसम्यक्त्वगुणभूषिताय नमः।

इति प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिप्त्वा तद्गुणमारोपयेदेवमुत्तरत्रापि विधेयम्।

(मंत्रों से प्रतिमा के ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण कर उन-उन गुणों का आरोपण करें, ऐसे ही आगे करना है।)

जानाति नित्यं युगपत्स्वतोऽन्यत्-सर्वार्थसामान्यविशेषसर्वम्।

निर्बाधकं स्पष्टतरं च यस्तं, सिद्धेऽत्र विज्ञानगुणं न्यसामि॥२॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानभूषिताय नमः।

स्वात्मस्थसामान्यविशेषसर्वं, साक्षात्करोत्येव समं सदा यः।

सुनिश्चितासंभवबाधकं तं, सिद्धेऽत्र दृष्ट्याख्यगुणं न्यसामि॥३॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनभूषिताय नमः।

अनंतविज्ञानमनंतदृष्टिं, द्रव्येषु सर्वेषु च पर्ययेषु।

व्यापारयंतं हतसंकरादिं, सिद्धेऽत्र वीर्याख्यगुणं न्यसामि॥४॥

ॐ ह्रीं वीर्यगुणभूषिताय नमः।

अबाधकं मानमबाध्यमेव, निष्पीतसर्वार्थमसंगसंगम्।

सर्वज्ञवेद्यं तदवाच्यमेव, सिद्धेऽत्र सूक्ष्माख्यगुणं न्यसामि॥५॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणभूषिताय नमः।

एकत्र सिद्धात्मनि चान्यसिद्धा, वसंत्यसंबाधमनंतसंख्याः।

यस्य प्रभावात्सुनयस्थितं तं, सिद्धेऽवगाहाख्यगुणं न्यसामि॥६॥

ॐ ह्रीं अवगाहनगुणभूषिताय नमः।

अधो न पातोऽस्ति यथा शिलादे-र्न तूलवद्वायुकृतेरणं च ।

सिद्धात्मना तेन सुयुक्तिसिद्धं, गुणं न्यसामोऽगुरुलघ्वभिख्यम् ॥७॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणभूषिताय नमः ।

भवग्निशान्त्यै विहितश्रमोव्या-बाधात्मना यं परिणाममेति ।

स्वात्मोत्थसौख्यैकनिबन्धनं तं, सिद्धेऽत्र निर्बाधगुणं न्यसामि ॥८॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणभूषिताय नमः । इति गुणारोपणम् ।

अथ अष्टद्रव्य से पूजा

गंगादितित्थप्पहवप्पएहिं, सग्गंधदा णिम्मलदापएहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

गंधेहिं धाणाण सुहप्पएहिं, समच्चयाणांपि सुहप्पएहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

परंतछोणीसयकारणेहिं, वरक्खएहिं सियकारणेहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुप्फेहिं दिव्वेहिं सुवण्णएहिं, कव्वे कऊसेहिं सुवण्णएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

बब्भेहि णाणासुरसप्पएहिं, भव्वाण णाणाइरसप्पएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

देदिव्वमाणप्पहदीवएहिं, संऊयआणं सिरिदीवएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कालाअरुं भूयसुहूवएहिं, जीयाण पावाण सुहूवएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अणग्घभूएहिं फलव्वएहिं, भव्वस्स संदिण्णफलव्वएहिं ॥

अच्चेमि णिच्चं परमट्ठसिद्धे, सव्वट्ठसंपादयसव्वसिद्धे ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

णयेण णाणेण य दंसणेण, तवेण उट्टेण य संजमेण।

सिद्धे तिकालेसु विसुद्धबुद्धे, समग्धयामो सयलेवि सिद्धे ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। जलादियज्ञांगदूर्वादर्भदधिसिद्धार्थादिमंगलद्रव्यविनिर्मितमहार्घ्यवतारयेत्।
(थाल में अर्घ्य—जलादि आठद्रव्य, दूब, दर्भ, दधि, सरसों आदि मंगल द्रव्य रखकर महार्घ्य चढ़ावें।)

अथ सप्तविधपीठिकामंत्रैः सिद्धाराधनम्

(श्वेत सुगंधित पुष्पों में कर्पूरमिश्रित चंदन के छीटे देकर उन पुष्पों से पृष्ठ ७० से सप्तविधपीठिका मंत्रों से सिद्धों की आराधना करें।)

सिद्धार्चायां ये क्रियामंत्रसंज्ञा, जैने वेदे साधनाद्याश्च मंत्राः।

त्रेताहोमे होममंत्रास्तदेतैः, जप्तैः पुष्पैः सिद्धमाराधयामि ॥७॥

ॐ सत्यजाताय नमः। (पृष्ठ ७० से ये मंत्र लेना है।)

इत्यादिसप्तविधपीठिकामंत्रैरभिमतैः कर्पूरहरिचंदनद्रवालुलितसुरभिभुशुकुसुमैः सिद्धपरमेष्ठिनमाराधयेत्।

विविधदुरितशुद्धान्सर्वतत्त्वार्थसिद्धान्। परमसुखसमृद्धान्युक्तिशास्त्राविरुद्धान्।

बहुविधगुणवृद्धान्सर्वलोकप्रसिद्धान्। प्रमितसुनयसिद्धानर्घये सर्वसिद्धान् ॥८॥

पूर्णाध्यः / पूर्णाध्य चढ़ावें। (यहाँ पर भगवान को मोक्ष हो गया है ऐसी घोषणा करें)

गद्य—अथ तद्गोपकल्पितचतुरस्रकुंडे गार्हपत्याग्नौ होमविधानम्। तद्यथा प्रागुक्तविधिना आसनस्थापनादि चतुरस्रकुंडार्चन-विधिं विधाय, क्षिपामि कुंडस्येत्यादिना परिधिपरिस्तरणकल्पनं आम्नायेत्यादिना गार्हपत्याग्नेः स्थापनं संशुक्षणं सन्निधीकरणैक-समिधाहुत्यर्चनानि परिसमाप्य होमविधौ प्रागुक्तान्नाहुतिविधिं विस्तरेण विदध्यात्। इति होमविधानम्।

सिद्धप्रतिमा के आगे चौकोन कुंड बनाकर उसमें 'गार्हपत्य' अग्नि स्थापित कर हवन करें। उसे ही कहते हैं प्रागुक्तविधि से आसन स्थापन आदि से लेकर चतुष्कोण कुंडार्चन विधि करके "क्षिपामि कुंडस्य" इत्यादि श्लोक से समिधा स्थापित करना, 'आम्नाय' इत्यादि श्लोक बोलकर गार्हपत्य अग्नि की स्थापना, अग्नि को संशुद्धित करना, सन्निधिकरण विधि करके 'एक समिधा' की आहुति देकर अर्चना विधि समाप्त करके होमविधि में पूर्वकथित अन्नाहुति की विधि को विस्तार से करें। यह होम विधि हुई।

सिद्धश्रुतचरित्रर्षिशिवशांतीशभक्तिभिः। भक्त्या निर्वाणकल्याण-क्रियां कुर्वतु याजकाः ॥९॥

इति निर्वाणकल्याणक्रियां विधिवद्विधाय सर्वोऽपि संघस्ततो बहुतरमाल्यचंदनाक्षतराशिभिर्जिनमभ्यर्च्य तन्माल्यादिकमुत्सवेन धृत्या प्रागुक्तविधिना तीर्थोदकमानीय। तज्जलपरिपूरिताष्टोत्तरशतकलशैर्वक्ष्यमाणमहाभिषेकविधिना महाभिषेकं विदध्यात्।

अनंतर निर्वाणकल्याणक क्रिया को सभी संघ विधिवत् करें।

निर्वाणकल्याणक भक्तिपाठ

नमोऽस्तु श्रीऋषभदेव निर्वाणकल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थभावपूजावंदनास्तवसमेतं सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

अनंतर 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सामायिक दण्डक पढ़कर ६ बार णमोकार मंत्र जपकर "थोस्सामि हं" पढ़कर पृष्ठ १६५ से लघुसिद्धभक्ति पढ़ें।

ऐसे ही चारित्रभक्ति (पृष्ठ १६५), योगिभक्ति (पृष्ठ २४२), श्रुतभक्ति (पृष्ठ २६७), निर्वाणभक्ति, शांतिभक्ति (पृष्ठ १६५) और समाधिभक्ति (पृष्ठ १६६) से पढ़कर निर्वाण क्रियाविधि पूर्ण करें।

लघु निर्वाणभक्ति इस प्रकार है—

लघु निर्वाणभक्ति

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिरिह भारतवर्षजानाम्।

तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतु-मुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या ॥

इच्छामि भन्ते! परिणिव्वाणभक्ति काउस्सगो कओ तस्सालोचेउं। इमम्मि अवसप्पिणीये चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाये। आउट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि। पावाये गयरीए कत्तियमासस्स किण्हचद्दसिए रत्तीए सादीए गक्खत्ते पच्चूसे भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोयिसियकप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंच्वंति, पूजंति, वंदंति, गमंसंति परिणिव्वाणमहाकल्लाणपुज्जं करेति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, गमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

अथाभिषेक क्रियाप्रयोगविधानम्

अब अभिषेक क्रिया की प्रयोगविधि कहते हैं—

अथ चलजिनेन्द्रप्रतिबिंबप्रतिष्ठाचतुर्थदिनस्नपनक्रिया। तत्रेयं कृत्यप्रतिज्ञा—

चल जिनबिंब प्रतिष्ठा के अभिषेक में यह विधि की जाती है।

भगवन्नमोस्तु ते एषोहं चलजिनेन्द्रप्रतिबिंबप्रतिष्ठाचतुर्थदिनस्नपनक्रियां कुर्यामिति। शेषं समानम्।

(यह बोलकर अभिषेक क्रिया का संकल्प करें।)

अथ चलजिनेन्द्रप्रतिबिंबप्रतिष्ठाचतुर्थदिनस्नपनक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तवदंष्टनास्मैसिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्। इत्युच्चार्य सामायिकदंडकचतुर्विंशतिस्तवौ पठित्वा सिद्धभक्तिं प्रयुंजीत। एवं चैत्यपंचगुरुशांतिसमाधिभक्तीरपि विदध्यात्॥

इस प्रकार उच्चारण करके सामायिक दण्डक पढ़कर, ६ बार णमोकार मंत्र जपकर, थोस्सामिस्तव पढ़कर (पृष्ठ १७ से) सिद्धभक्ति पढ़ें। इसी विधि से (पृष्ठ ३४ से ३६ तक) चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति और समाधिभक्ति पढ़ें।

अथ स्थिरे कृत्यप्रतिज्ञा

(स्थिर जिनबिंबप्रतिष्ठा के अभिषेक में यह विधि करना है।)

भगवन्नमोस्तु ते एषोहं स्थिरजिनेन्द्रप्रतिबिंबप्रतिष्ठाचतुर्थदिनस्नपनक्रियां कुर्यामिति। शेषं समानम्। अथ स्थिरजिनेन्द्र-प्रतिबिंबप्रतिष्ठाचतुर्थदिनस्नपनक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तवदंष्टनास्तवसमेतं सिद्धभक्तिकोत्सर्गं करोम्यहं। इत्युच्चार्य सामायिकादिविधिं विधाय सिद्धचारित्रशांतिसमाधिभक्तीरपि प्रयुंजीत।

नमोऽस्तु अभिषेकवदंष्टनाक्रियायां.....सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(ऐसा उच्चारण कर सामायिक दंडक पढ़कर, ६ बार महामंत्र जपकर, थोस्सामि पढ़कर (पृष्ठ १६५ से) सिद्धभक्ति पढ़ें। पुनः (पृष्ठ १६५-१६६ से) चारित्रभक्ति, शांतिभक्ति, समाधिभक्ति पढ़ें।

इसके बाद बहुत से माला, चंदन, अक्षत आदि से जिनदेव की पूजा करके उन मालादिक को उत्सवपूर्वक धारण कर पूर्वकथित विधि से घटयात्रा विधि से तीर्थजल लाकर एक सौ आठ कलशों से उस पवित्र जल को भरकर आगे कही जाने वाली महाभिषेक विधि से प्रतिमा का महाभिषेक संपन्न करें।

इति अभिषेकक्रियाप्रयोगविधानम् (यह अभिषेक क्रिया की विधि पूर्ण हुई।)

सरस्वती पूजा

अपौरुषेयानखिलानदोषानशेषविद्भिर्विहितप्रकाशान्।

प्रकाशितार्थान्प्रयजे प्रमाणं, प्रवेदयद्द्वादशदिव्यवेदान्॥१॥

इत्यादिना श्रुतपूजां विदध्यात्। इत्यादि विधि से सरस्वती पूजा करें।

गुरुपूजा

ये येऽनगारा ऋषयो यतीन्द्रा, मुनीश्वरा भव्यभवद्व्यतीताः।

तेषां समेषां पदपंकजानि, संपूजयामो गुणशीलसिंधून्॥२॥

इत्यादिना गुरुपूजां विदध्यात्। (इत्यादि प्रकार से गुरुपूजा करें)

ज्ञानादिसर्वगुणपूर्णजिनेश्वरांग-संगातिमंगलसुगंधिजलेन पूर्णः।

दत्तः स एष समलंकृतपूर्णकुंभः, संपूर्णमावहतु सर्वमनोरथं वः॥३॥

जिनगंधांबुपूर्णकुंभप्रदानम्॥ (यह श्लोक बोलकर गंधोदक के कलश को या सभी को गंधोदक देवें पृष्ठ ६३ से।)

ॐ अथ निरतिशयनिजमहिमभरसमसमानमितात्मीय इत्यादिना सकलाभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिं करोतु। वृद्धिं करोतु। इवीं क्षवीं हं सः स्वाहा। पर्वतं पठित्वा जिनगंधोदकेन यजमानशिरसि सिंचेत्॥

(उपर्युक्त मंत्रों को पढ़ते हुए यजमान के मस्तक पर गंधोदक छिड़कें।)

श्रीमज्जिनेन्द्रा हतमोहतत्रा, इत्यादिद्वाविंशत्याशीवदिः गंधोदकं शेषभव्येभ्यो दद्यात्।

पृष्ठ ६६ से श्रीमज्जिनेन्द्रा..... इत्यादि बत्तीस आशीवाद श्लोक बोलते हुए सभी श्रावकों को गंधोदक देवें।

देवर्षिद्विजपूजनं च विहितं, श्रेयोर्थिनां ते मता। रागद्वेषविमोहमूलविलयात्सारंभसंगोज्झनात्।

स्थूलप्राणिवधादिवर्जनविधे-देवानृषींस्तादृशान्। संपूज्य द्विजपुंगवांश्च धिनुयां, तांबूलदानादिभिः॥४॥

इत्युक्त्वा संघपूजां कुर्यात्। (यह श्लोक बोलकर सभी को तांबूल फल आदि देकर सम्मानित करें।)

गद्य—अथ तदर्धरात्रे त्रिःपरीत्य ध्वजमवरोह्य प्रासादोर्ध्वतूर्यांशवेदिकायां विदिकपरिकल्पिताधारे हिरण्यपायसाकीर्णे गर्भगेहाया-मार्धतत्त्रिभागचतुर्भागमितशुभदारुदंडमवस्थाप्य, तत्र महाध्वजमलंकृतमवरोह्य, परिवारध्वजानपि तत्र प्रासादं परितोऽवस्थाप्य, सप्तधान्यविस्फुटफलोत्करैः प्रासादमभिषिच्यार्घ्यं नूतनसद्वस्त्रैः परिधापयेत्॥

उसी दिन अर्धरात्रि में ध्वजा की तीन प्रदक्षिणा देकर पुनः ध्वजा को उतारकर मंदिर के ऊपर—चतुर्थांश वेदिका के ऊपर विदिशा में ध्वजदण्ड को स्थित करने का आधार—स्थान बनावें, उस स्थल में सुवर्ण और खीर फैला दें, उस गर्त में गर्भगृह के आयाम के आधे और उसके त्रिभाग या चतुर्भाग प्रमाण शुभ दारु—काष्ठ के दण्ड को स्थापित करें। उस ध्वजदण्ड में 'महाध्वज' को चढ़ावें, उसी मंदिर के ऊपर महाध्वजा के चारों तरफ परिवारध्वजाओं को अर्थात् लघु ध्वजाओं को लगाकर सप्तधान्य के अंकुरोंसे और फलों के समूह से जिनमंदिर की पूजा करके जिनमंदिर का अभिषेक करके नूतन अच्छे-अच्छे वस्त्रों से चंदोवा, तोरण, वंदनवार अङ्ग से मंदिर को सजावें।

विसर्जन

सर्वे देवाः समाहूताः शिष्टार्हत्रभुपूजने।

इष्टमस्माकमापाद्य, तुष्टा यांतु यथायथम्॥१॥

जिनपूजार्थं समाहूताः देवाः सर्वे विहितमहामहाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः।

इति विसर्जनमंत्रोच्चारणेन यागमंडले पुष्पांजलिं विकीर्य देवान्विसर्जयेत्॥

(इस विसर्जन मंत्र का उच्चारण करके यागमंडल में पुष्पांजलि क्षेपण करते हुए देवों का विसर्जन करें।)

प्रक्षीणदोषमलमिद्धनिजप्रकाशं। लोकैकभूषणमहो निजदिव्यरत्नम्।

मुक्तिश्रियः सपदि संवदनं विधातुं। पूज्यं प्रपूज्य हृदये निदधे भवन्तम्॥२॥

अनेन परब्रह्ममध्यात्ममध्यासयेत्। (इस श्लोक को पढ़कर परमात्मा का ध्यान करें।)

यो लोकैकशिखामणिर्यमनिशं, ध्यायति योगीश्वराः। येनादर्शि समस्ततत्त्वममरा, यस्मै नमः कुर्वते।

यस्मान्नास्त्यपरो हितस्त्रिजगते, यस्यैव युक्ताप्तता॥ यस्मिन्केवलबोधभानुरुदितः, सोव्याज्जिनोयं जगत्॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं हूं श्रीं नमः परमशांताय सर्वलोकशांतिर्भवतु स्वाहा। (शांतिधारा करें)

अर्चामग्रे प्रनृत्यत्कलशयुतवधूमग्रभृंगारनिर्य-द्वार्धारापूतधार्त्रीं बहुतरविभवामादरेणानुयांतः ।

सर्वाशाः पूरयंतो बलिमनुमुखराः सर्वधान्यैश्च लाजैः । सत्पुष्पैरक्षतौघैर्जिननिलयमिमे त्रिःपरीयाम शान्त्यै ॥१॥

ॐ अर्हद्भ्यो नमः शांतिबलिः^१ ॥ (शांतिबलि समर्पण करें)

प्रमादाज्ञानदर्पाधैर्विहितमित्यादिना क्षमापणम् । (प्रमादाज्ञानदर्पाधैः श्लोक पढ़कर क्षमापण करावें ।)

मोहध्वान्तविदारणमित्यादिना गमनाप्रच्छनम् । (मोहध्वान्तविदारणं इत्यादि पढ़कर जाने की आज्ञा मांगे ।)

इत्थं सौधर्मशक्रप्रभृतिसुरवरा यां जिनेन्द्रस्य साक्षात् । चक्रुर्निर्वाणलाभोत्सवविषयमहाश्चर्यकल्याणपूजाम् ।

तामारोप्यात्र बिंबे विधिवदिह कृता शक्तितो भूरिभक्त्या । भुक्त्यै मुक्त्यै च यस्त्रप्रभृतितनुभृतामस्तु कल्याणपूजा । ॥५॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः (श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें ।)

श्रीमज्जिनेन्द्रा हतमोहतन्द्रा “इत्यादिद्वाविंशत्याशीर्वादान् विजयविभवेत्यादिआशीर्वादांश्च चैत्यालयाग्रतः स्थित्व पृथक्पुष्पांजलिपूर्वकं पठेत् । इत्याशीर्दानविधानम् ॥

(पृष्ठ ६६ से आशीर्वाद के २२ श्लोक पढ़कर तथा “विजयविभव” इत्यादि श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

यज्ञ दीक्षा में धारण किए चिन्ह त्याग करना

आपूर्य कर्मविधिना प्रकृतं कृतार्थ-स्त्यक्त्वा तदर्थनियमं स्वयमे दृढोऽहम् ।

चिन्हानि तस्य नियमस्य पुरो निधाय । वंदे गुरोर्गुरुगुणौघगुरोः पदाब्जम् ॥

एतत्पठित्वा यज्ञदीक्षाचिन्हानि गुरुपादमूले विन्यस्य नमस्येत् ॥

इस पद्य को पढ़कर यजमान के दीक्षा चिन्ह—कंकण व नियम आदि का गुरु के सामने समापन करा दें।

अथ प्रतिष्ठानिष्ठापनक्रिया (तत्रेयं कृत्यप्रतिज्ञा)

भगवन्नमोस्तु ते एषोहं प्रतिष्ठानिष्ठापनक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तववन्दनासमेतं शांतिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

इत्युच्चार्य सामायिकदण्डकचतुर्विंशतिस्तवौ पठित्वा शांतिभक्तिं प्रयुंजीत ॥

इस प्रकार प्रतिज्ञा करके सामायिक दण्डक आदि पढ़कर (पृष्ठ १६५ से) शांतिभक्ति का पाठ करें।

इत्थं विधत्ते जिनपुंगवस्य, निर्वाणलाभोत्सवसंविधिं यः ।

निर्वाणलाभोत्सवमाशु यास्यत्यमुत्र नूनं स हि धर्मनेमिः ॥७॥

इस प्रकार जो भव्यजीव जिनेन्द्रदेव का निर्वाणकल्याणक महोत्सव करते हैं, वे अगले जन्म में निर्वाणलाभ प्राप्त करेंगे और धर्मचक्र के प्रवर्तक होंगे, ऐसा समझना ।

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि निर्वाणकल्याण-

विधिर्नाम द्वादशः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रह स्वरूप ‘प्रतिष्ठातिलक’ नाम के

ग्रंथ में निर्वाणकल्याणकविधि को कहने वाला

यह बारहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।

१. पुष्प, अक्षत आदि बिखेरते हुए मंदिर की तीन प्रदक्षिणा दें, यही शांति बलि है ।

ॐ ह्रीं सुमनःसुखप्रदाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्ब्याबाधविवर्जितं निरुपमं, स्वात्मोत्थमत्यूर्जितम् । नित्यानंदसुखेन तेन लभते, यस्तृप्तिमात्यन्तिकीम् ॥
यं चाराध्य सुधाशिनो ननु सुधा-स्वादं लभन्ते चिरम् । तस्योद्यद्ग्रासचारुणैव चरुणा, श्रीपादमाराधये ॥५॥
ॐ ह्रीं अनंतानंतसुखसंतृप्ताय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्यान्यस्य सहप्रकाशनविधौ, दीपोपमोप्यन्वहम् । यः सर्वं ज्वलयन्ननंतकिरणै-स्त्रैलोक्यदीपोऽस्त्यतः ॥

येनोद्दीपितधर्मतीर्थमभवत्-सत्यं विभो स्वस्यसद्दीप्त्या दीपितदिङ्मुखस्य चरणौ, दीपैः समुद्दीपये ॥६॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

येनेदं भुवनत्रयं चिरमभू-दुद्धूषितं सोप्यहो-मोहो येन सुधूपितो निजमहा-ध्यानान्निना निर्दयम् ।

यस्यास्थानपदस्थधूपघटजै-र्धूमैर्जगद्धूपितम् । धूपैस्तस्य जगद्वशीकरणसद्भूपैः पदं धूपये ॥७॥

ॐ ह्रीं वशीकृतत्रिलोकनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्भक्त्या फलदायि पुण्यमुदितं, पुण्यं नवं बध्यते । पापं नैव फलप्रदं किमपि नो, पापं नवं प्राप्यते ।

आर्हन्त्यं फलमद्भुतं शिवसुखं, नित्यं फलं लभ्यते । पादौ तस्य फलोत्तमादिसुफलैः, श्रेयःफलायार्च्यते ॥८॥

ॐ ह्रीं अभीष्टफलप्रदाय फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

वार्गधतंडुललतांतहविःप्रदीपै-र्धूपैः फलैः कनकपात्रगतैर्जिनाग्रे ।

नंदादिवर्तदधिस्वस्तिकदर्भदूर्वा, सिद्धार्थकैश्च कृतमहार्घ्यमिहोद्धरामः ॥९॥

ॐ ह्रीं विनष्टाष्टकर्मणे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । (शांतिधारा, पुष्पांजलिः)।

अथ स्तुतिः

तुभ्यं नमो दशगुणोर्जितदिव्यगात्र । कोटिप्रभाकरनिशाकरजैत्रतेजः ।

तुभ्यं नमोऽतिचिरदुर्जयघातिजात । घातोपजातदशसारगुणाभिराम ॥१॥

तुभ्यं नमः सुरनिकायकृतैर्विहारे । दिव्यैश्चतुर्दशविधातिशयैरुपेत ।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनाधिपतित्वलक्ष्म- श्रीप्रातिहार्याष्टकलक्षितार्हन् ॥२॥

तुभ्यं नमो निरुपमान अनंतवीर्य । तुभ्यं नमो निजनिरंजननित्यसौख्य ।

तुभ्यं नमः परमकेवलबोधवार्धे । तुभ्यं नमः समसमस्तपदावलोक ॥३॥

तुभ्यं नमः सकलमंगलवस्तुमुख्य । तुभ्यं नमः शिवसुखप्रद पापहारिन् ।

तुभ्यं नमस्त्रिजगदुत्तमलोकपूज्य । तुभ्यं नमः शरणभूत्रय रक्ष रक्ष ॥४॥

तुभ्यं नमोस्तु नवकेवलपूर्वलब्धे । तुभ्यं नमोस्तु परमैश्वर्योपलब्धे ।

तुभ्यं नमोस्तु मुनिकुंजरयूथनाथ । तुभ्यं नमोस्तु भुवनत्रितयैकनाथ ॥५॥

इति जिनयज्ञविधानम्

अथातः सिद्धार्चनविधानम्

आहूता इव सिद्धमुक्तिवनितां, मुक्तान्यसंगा ययुः । तिष्ठन्त्यष्टमभूमिसौधशिखरे, सानंतसौख्याः सदा ।

साक्षात्कुर्वत एव सर्वमनिशं, सालोकलोकं समं । तानच्छेद्विशुद्धसिद्धनिकरा-नावाहनाद्यैर्भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गंगादितित्थप्पवहप्पएहिं, सग्गंधदाणिम्मलदापएहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥१॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

गंधेहिं घाणाण सुहप्पएहिं, समच्चयाणं पि सुहप्पएहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥२॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेरंत छोणीसिय कारणे हिं, वरक्खएहिं सियकारणेहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥३॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुप्फेहिं दिव्वेहिं सुवण्णएहिं, कब्बे कऊसेहिं सुवण्णएहिम् ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥४॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

बब्भेहिं णाणसुरसप्पएहिं, भव्वाणणाणायिरसप्पएहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥५॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

देदिव्वमाणप्पहदीवएहिं, संऊयआणं सिरिदीवएहिं ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥६॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कालाअरुब्भूयसुहूवएहिं, जीयाण पावाण सुहूवएहिम् ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥७॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अणग्घभूएहिं फलव्वएहिं, भव्वस्स संदिण्णफलव्वएहिम् ।

अच्चेमि णिच्चं परमट्टसिद्धे, सव्वट्टसंपादय सव्वसिद्धे ॥८॥

ॐ ह्रीं हं श्रीसिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

णयेण णाणेण य दंसणेण, तवेण उट्टेण य संजमेण ।

सिद्धे तिकाले सुविसुद्धबुद्धे, समग्घयामो सयले वि सिद्धे ॥९॥

ॐ ह्रीं हं श्रीं सिद्धाधिपतये जलादियज्ञांगदूर्वादर्भदधिसिद्धार्थादिमंगल-द्रव्यविनिर्मितमहार्घ्यं निर्वपामीति

स्वाहा । एवमर्हत्प्रतिमाग्रे सिद्धानभ्यर्च्य भक्त्या स्तुवीत । (शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।)

अथ स्तुतिः

नमस्ते पुरुषार्थानां, परां काष्ठामधिष्ठित । सिद्धभट्टारकस्तोम, निष्ठितार्थ निरंजन ॥१॥

स्वःप्रदाय नमस्तुभ्यं, अचलाय नमोस्तु ते । अक्षयाय नमस्तुभ्यं, अव्याबाधाय ते नमः ॥२॥

नमस्तेऽनंतविज्ञान-दृष्टिवीर्यसुखास्पद । नमो नीरजसे तुभ्यं, निर्मलायास्तु ते नमः ॥३॥

अच्छेद्याय नमस्तुभ्यं, अभेद्याय नमो नमः । अक्षताय नमस्तुभ्यं, अप्रमेय नमोस्तु ते ॥४॥

नमोस्त्वगर्भवासाय, नमोऽगौरवलाघव । अक्षोभ्याय नमस्तुभ्य-मविलीनाय ते नमः ॥५॥
 नमः परमकाष्ठात्म-योगरूपत्वमीयुषे । लोकाग्रवासिने तुभ्यं, नमोऽनंतगुणाश्रय ॥६॥
 निःशेषपुरुषार्थानां, निष्ठां सिद्धिमधिष्ठित । सिद्धभट्टारकव्रात, भूयो भूयो नमोस्तु ते ॥७॥
 विविधदुरितशुद्धान्सर्वतत्त्वार्थबुद्धान् । परमसुखसमृद्धान्युक्तिशास्त्राविरुद्धान् ।
 बहुविधगुणवृद्धान्सर्वलोकप्रसिद्धान् । प्रमितसुनयसिद्धान्संस्तुवे सर्वसिद्धान् ॥८॥

इति सिद्धभक्तिविधानम्

अथातो महर्षिपर्युपासनविधानम्

ये येऽनगारा ऋषयो यतीन्द्रा, मुनीश्वरा भव्यभवद्व्यतीताः ।

तेषां समेषां पदपंकजानि, संपूजयामो गुणशीलसिद्ध्यै ॥९॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षगुणगणधरचरणा! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।
 ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षगुणगणधरचरणा! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षगुणगणधरचरणा! अत्र मम रत्नत्रयशुद्धिं कुरुत
 कुरुत वषट् ।

सुगंधिशीतलैः स्वच्छैः, स्वादुभिर्विमलैर्जलैः । सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥९॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सारकपूरकाश्मीर-कलितैश्चंदनद्रवैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१०॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षतैरक्षतैः सूक्ष्मै-र्वलक्षैरुक्षसन्निभैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥११॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पैः प्रसरदामोदा-हृत पुष्पंधयावृतैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१२॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हव्यैर्नव्यघृतापूप-पायसैर्व्यजनान्वितैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१३॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूरप्रभवैर्दीपै-र्दीप्या दीपितदिङ्मुखैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१४॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशांगधूपसद्भूमै-र्दशाशापूर्णसौरभैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१५॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चोचमोचाम्रजंबीर-फलपूगादिसत्फलैः ॥ सार्धद्वीपद्वयातीत, भवद्भव्ययतीन्यजे ॥१६॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुणमणिगणसिंधून्भव्यलोकैकबंधून्, प्रकटितनिजमार्गान्ध्वस्तमिथ्यात्वमार्गान् ।

परिचितनिजतत्त्वान्पालिताशेषसत्त्वान् । शमरसजितचंद्रानर्घ्ययामो मुनीन्द्रान् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं गणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । (शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।)

अथ स्तुतिः

ये सर्वतीर्थप्रभवा गणेंद्राः, सप्तर्षयो ज्ञानचतुष्टयाद्याः ।
 तेषां पदाब्जानि जगद्धितानां, वचोमनोमूर्धसु धारयामः ॥१॥
 तपोबलाक्षीणरसौषधर्द्धीन्, विज्ञानऋद्धीनपि विक्रियर्द्धीन् ।
 सप्तर्द्धियुक्तानखिलानृषीन्द्रान्स्मरामि वंदे प्रणमामि नित्यम् ॥२॥
 सर्वेषु तीर्थेषु तदंतरेषु, सप्तर्षयो ये महिता बभूवुः ।
 भवांबुधेः पारमिताः कृतार्थाः, भवंतु नस्ते मुनयः प्रसिद्धाः ॥३॥
 ये केवलीन्द्राः श्रुतकेवलीन्द्रा, ये शिक्षकास्तूर्यतृतीयबोधाः ।
 सविक्रिया ये वरवादिनश्च, सप्तर्षिसंज्ञानिह तान्प्रवंदे ॥४॥
 प्रमत्तमुख्येषु पदेषु सार्ध-द्वीपद्वये ये युगपद्भवन्ति ।
 उत्कर्षतस्तान्नवकोटिसंख्यान्, वंदे त्रिसंख्यारहितान्मुनीन्द्रान् ॥५॥

इति महर्षिपर्युपासनविधानम्

अथातः स्वस्त्ययनविधानम्

श्रीपंचकल्याणमहार्हणार्हा, वागात्मभाग्यातिशयैरुपेताः । तीर्थकराः केवलिनश्च शेषाः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमवहंतु ॥१॥
 ये शुद्धमूलोत्तरसद्गुणाना-माधारभावादनगारसंज्ञाः । निर्ग्रथवर्या निरवद्यचर्याः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥२॥
 ये चाणिमाद्यष्टसुविक्रियाद्या-स्तथाक्षयावासमहानसाश्च । राजर्षयस्ते सुरराजपूज्याः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥३॥
 ये कोष्ठबुध्यादिचतुर्विधर्द्धी-रवापुरामर्शमुखौषधर्द्धीः । ब्रह्मर्षयो ब्रह्मणि तत्परास्ते, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥४॥
 जलादिनानाविधचारणा ये, ये चारणाग्न्यांबरचारणाश्च । देवर्षयस्ते नतदेववृंदाः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥५॥
 सालोकलोकोज्ज्वलनैकतानं, प्राप्ताः परं ज्योतिरनंतबोधम् । सर्वर्षिवंदाः परमर्षयस्ते, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥६॥
 श्रेणीद्वयारोहणसावधानाः, कर्मोपशान्तिक्षपणप्रवीणाः । एते समस्ता यतयो महान्तः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥७॥
 समग्रमध्यक्षमिताक्षदेश-प्रत्यक्षमत्यक्षसुखानुरक्ताः । मुनीश्वरास्ते जगदेकमान्याः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥८॥
 उग्रं च दीप्तं च तपोभित्तं, महच्च घोरं च तरां चरन्तः । तपोधना निर्वृत्तिसाधनोत्काः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥९॥
 मनोवचः कायबलप्रकृष्टाः, स्पष्टीकृताष्टांगमहानिमित्ताः । क्षीरामृतस्राविमुखा मुनीन्द्राः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥१०॥
 प्रत्येकबुद्धप्रमुखा मुनीन्द्रा, शेषाश्च ये ये विविधर्द्धियुक्ताः । सर्वेऽपि ते सर्वजनीनयुक्ताः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु ॥११॥
 शापानुग्रहशक्तताद्यतिशयै - रुच्चावचैरचिताः । ये सर्वे परमर्षयो भगवतां, तेषां गुणस्तोत्रतः ।
 एतत्स्वस्त्ययनादपैति सकलः, संक्लेशभावः शुभो । भावः स्यात्सुकृतं च तच्छुभविधे-रादाविदं श्रेयसे ॥१२॥

इति स्वस्त्ययनविधानम् । मनः प्रसादनविधानम् ॥

अथातो यज्ञदीक्षाविधानम्

न्यस्यार्हद्विष्टरे धृत्वा-नादिमंत्राभिमंत्रितम् । प्रसाधनं गुरोरग्रे, यज्ञदीक्षामुपादधे ॥१॥

ॐ णमो अरिहंताणमित्यादि चत्तारि मंगलं अरिहंतं मंगलं... इत्यादि । केवलपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ हौं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा । अनादिसिद्धमंत्रः । वस्त्रादिप्रसाधनाभिमंत्रणम् । (तिलक की केशर, मुकुट आदि पर पुष्पांजलि ।)

जिनमतमिव सूक्ष्मं, यत्सुखस्पर्शदक्षं, क्षपितविविधबाधं, साध्वलंकारमुख्यं ।

शुचितरमपदोषं, सद्गुणं तद्वधेऽहं, परमजिनमखेऽस्मिन्सांतरीयोत्तरीयम् ॥२॥

ॐ श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनमनोरंजिनि परिधानोत्तरीयधारिणि हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं पं पं
परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा । वस्त्रावरणं ।

पवित्रभूमिप्रभवैः पवित्रैः, पवित्रमुद्रासहितं सुदृढं ।

पवित्रताकृन्मम सव्यहस्ते, त्वनामिकायां निदधे पवित्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं पवित्रं धारयामि स्वाहा । (डाभ का छल्ला या लोहे-तांबे का छल्ला पहनें)

सुशीतलेनोक्तवदहर्दीशो, यशोवदुच्चैर्विशदेन तस्य ।

तदंगवन्मंगलगंधभाजा, समालभेगं मम चंदनेन ॥४॥

श्रीचंदनानुलेपनम् । (अपने ललाट आदि में चंदन लगावें)

चेतश्चमत्कारकरी जनानां, गंधादिना या विदुषां विशेषात् ।

स्वर्भोगमालावहदिव्यशक्त्या, मालां दधे मूर्ध्नि जिनार्चितां ताम् ॥५॥

सृग्धारणम् । (माला पहनें)

दृग्बोधचारित्रगुणत्रयेण, धृत्वा त्रिधौपासकभावसूत्रम् ।

द्रव्यं च सूत्रं त्रिगुणं समुक्ताफलं तदारोपणमुद्रहामि ॥६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । इति ब्रह्मसूत्रं विभृयात् । (यज्ञोपवीत धारण करें)

जिनेश्वराज्ञाभरवद्विशिष्टै-र्धार्यं महाहार्यगुणौघरत्नम् ।

मूर्ध्ना वहेयं मुकुटं महान्तं, चंचत्प्रभामंडितकुंडलाभ्याम् ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा । कुंडलविशिष्टमुकुटोपयोगः । (मुकुट बांधें)

आसन्नभव्ये जिनभक्तिमुख्या, गुणा यथायोग्यमुपप्रजन्ति ।

तथैव तस्मिन्मणयो महान्तः, करे ममैवत्कटकं करोमि ॥८॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा । कंकणप्रणयनम् । (कंकण आदि पहनें)

उन्मुद्रिताशेषविनेयपद्म, श्रीकेवलाकौदयपूर्वशैलम् ।

यष्टुं जिनं जीवदयासमुद्रं, मुद्रां दधे चारुमनामिकायाम् ॥९॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा । मुद्रिकास्वीकारः ॥ (अंगूठी पहनें)

दृग्बोधदेशव्रतरूपरत्न-त्रयं भवन्मे कलितोपवासम् ।

आकर्मिकब्रह्मनिवृत्तियुक्तं, सद्यज्ञदीक्षाविधिना विशिष्टम् ॥१०॥

अर्हद्देवयज्ञदीक्षांगीकारः ॥ (यज्ञपूर्तिपर्यंत नियमादि लेवें)

रत्नत्रयांगमुपवीतमुरस्यथांगं, देशव्रतस्य वसुकंकणमत्र हस्ते ।

ब्रह्मव्रतांगमधुना स्वकटौ च मौंजीं, धृत्वारभे जिनमखं मखदीक्षितोहम् ॥११॥

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं हां व्हः हूः श्रूं हूं क्षः इंद्राय संवौषट् ।

अनेनैकविंशतिवारानात्मानमधिवासयेत् ॥ इति यज्ञदीक्षा विन्होद्वहनम् ॥

अथातो भूमिशोधनम्

शार्दूलविक्रीडित—श्रीमत्पंचमवार्षिनिर्मलपयः-पूरैः सुधासन्निभैः । यज्जन्माभिषवं सुरात्रिशिखरे, सर्वे सुराश्चक्रिरे ।

त्रैलोक्यैकमहापतेर्जिनपतेस्तस्याभिषेकोत्सवं । कर्तुं भव्यमलोपलेपविलयं, प्राज्ञः स्तुतं प्रस्तुवे ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । प्रस्तावनापुष्पांजलिः ॥

गद्यम्—ॐ समस्ताभ्युदयसुखसंघातलंघनघंतालसमुल्लाधानंतसुखनिवासनिःश्रेयसनिर्गमार्गप्रवचनप्रकाशनस्य । सहजात्मगुणसमेष्टात-
प्रसिद्धानादिसंबद्धपतिनिचयानिर्मूलकाषंकषणस्य । त्रिकालगोचरानंतपर्यायचितचराचरद्रव्य विषयकेवलज्ञानार्ककिरण परिष्कृतसकललोकालोकस्य ।
परमाप्तपदप्रतिष्ठाधिष्ठितभगवदहंभट्टारकस्य । नागयक्षामरद्वय त्रिंशन्मिथुनकरकलितचतुःषष्टिचामराद्यष्टमहाप्रातिहार्यविशिष्टस्य ।
विनीलकुंतल कुलिशदशनप्रवालाधरपल्लवोपमानकरचरणतलसमुल्लसितस्य । श्रीश्रुतदेवीसर्वाण्हसनत्कुमारयक्षप्रतिमोपलक्षितपिठोपकंठस्य ।
प्रत्येकाष्टशतभृंगारादिमंगलद्रव्याष्टकगर्भावासमध्यमध्यासीनस्य । प्रेक्षमाणवदाभाषमाणवदालक्ष्यमाणमणिमयप्रतिबिंबकदंबस्य ।
निवासीभूतताजातभूत्रयसमाराधनीय भावमापनीपद्यमानस्य । तमःसमूलसमुत्पाटनपटुतावलेपलिप्सागभस्तिमालिमंडलायमानहट्वाटकीय-
घटपेटकोपघटित चित्तचमत्कारस्य । चकचकायमाननानाविधोपकरणनिचितनीलतलनिर्जित ज्योतिर्गणांकिगगनांगणस्य । समुत्तुंगसुवर्ण-
भित्ति भागावलंबमानमणिमाला-मुषितमेरुगिरिपार्श्वशोभातिशयस्य । विचित्रविनिर्माणवदनाभिषेकनर्तनसंगीतावलोकनादिमंडपाभिर्मंडित-
चैत्यमहीमहितस्य । कुंजरातरिकुंजरादिदशविधध्वजराजिसभाजिताद्यद्वितीयसालांतरध्वजाधराविराजितस्य । चतुर्दिग्गताशोकसप्तच्छद-
चंपकाम्रचतुर्वनांचिततृतीयबहिः सालांतरवनावनीविनूतस्य । चतुर्वीथिपर्यंतगतमहामानस्तंभाहितप्रतितीर्थ्यजनमानस्तंभस्य । साक्षादकृत्रिम-
चैत्यालयस्य लक्ष्मीमात्मसात्कुर्वतश्चैत्यालयस्य विस्तारविशेषशालितया तदीयांगणोपमाने ।

घंटाटंकारवीणाक्वणितमुरज धां-धां क्रियाकाहलाच्छे च्छेकारोदारभेरीपटहधलधलंकारसंभूतघोषैः ।

आक्रम्याशेषकाष्ठातटमटझटिति प्रोच्छटत्युद्भटेभ्रम् । शिष्टाभीष्टार्हदिष्ट्यै प्रमुख इह लतांतांजलिं प्रोत्क्षिामि ॥२॥

ॐ परमब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व
अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः । सोदकानि पुष्पाणि क्षिपेत् ।

क्षेत्रं मखेऽस्मिन्परिपालयंतं, विघ्नानशेषानपसारयन्तम् ।

अग्नेर्दिशायां गुणदानपूर्वं, श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि ॥३॥

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च
यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं ।

प्रागेव वास्तुमिह कल्पितयज्ञभागस्येशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं वास्तुदेवाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च.... ।

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ।

हुत्वार्चितो वायुकुमारदेव! त्वं वायुना शोधय यागभूमिम् ॥५॥

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं..... ।

महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा । षड्दभ्रपूलेन भूमिं संमार्जयेत् ।

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान ।

हुत्वार्चितो मेघकुमारदेव! त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम् ॥६॥

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं..... ।

धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा । षड्दभ्रपूलोपात् जलेन भूमिं सिंचेत् ।

गर्भान्वयादौ महितद्विजेत्रै-निर्वाणसेवासु कृतापदान ।

हुत्वार्चितो वन्हिकुमार देव! त्वं ज्वालय शोधय यागभूमिम् ॥७॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं..... ।

भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा । ज्वलद्दभ्रपूलानलेन भूमिं ज्वालेत् ॥

प्राचीमैशानीं चांतरा वातकुमारादिस्थापनम् ॥

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवंत्ववार्या भुवि कामचाराः ।

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त - सुधोपमानांजलिपूर्णवार्भिः ॥८॥

ॐ ह्रीं क्रौं षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यजभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । नागसंतर्पणार्थं ऐशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् ॥

अथातो दर्भन्यासविधानम्

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण ।

दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञे, विघ्नौघविध्वंसकृते समंत्रम् ॥९॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः ॥

ॐ परमब्रह्मभूयात्, परमाप्तजिनक्रतौ । ब्रह्मस्थाने स्थितं कुर्वे, दर्भं विघ्नोपशांतये ॥२॥

ॐ दर्पमथनाय नमः स्वाहा । ब्रह्मदर्भः ॥

ॐ सर्वज्ञस्य यज्ञेशो, यज्ञेऽस्मिन् निदधे कुशम् । शतयज्ञहरिद्भागे, यज्ञविघ्नविदारणम् ॥३॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय अनंतदर्शनाय अनंतसुखाय पूर्वदिग्मुखे दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । इंद्रदर्भः ॥

ॐ विश्वदोषसंजुष्टा-द्यागे वैश्वानरात्मनः । वैश्वानरहरिद्भागे, कुशखंडं निवेशयेत् ॥४॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । जिनाय स्वाहा । जिनोत्तमाय स्वाहा । धवाय स्वाहा । धवोत्तमाय स्वाहा । शुचिष्ठाशुचिष्ठेषु कोणाकोणेषु आग्नेय्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । अग्निदर्भः ॥

ॐ वैवस्वतमहामूर्ते-र्विवस्वत्कोटिदीधितेः । यागे वैवस्वताशायां, दर्भखंडं निदध्महे ॥५॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्याय जितेंद्रियाय दक्षिणस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । यमदर्भः ॥

ॐ क्षमामयक्षमामूर्तेः, पुण्यराशेर्महामहे । पुण्ये पुण्यजनाशायां, दर्भन्यासं वितन्महे ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नैऋत्यदिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । नैऋत्यदर्भः ॥

ॐ विघ्नशांतये शांतेरपांमूर्तिमतः क्रतौ । अपांपत्युस्तनोम्याशां, पवित्रेण पवित्रिताम् ॥७॥

ॐ परममंगलाय परमपवित्रिताय परमनिर्वाणकारणाय अपरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । वरुणदर्भः ॥

ॐ निःसंगस्वरूपस्य, यागेऽस्मिन्मारुतान्मनः । मारुतस्य ककुद्भागे, कुशमास्थापयामहे ॥८॥

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणसंपूर्णाय वायव्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । वायुदर्भः ॥

ॐ सर्वसौम्यरूपस्य, सोममूर्तेर्महामखे । सौममौलिसुहृत्काष्ठां, कुशोयमधितिष्ठतु ॥९॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय त्रिलोकमहिताय शुचिरत्नत्रयदेशकाय उत्तरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । यक्षदर्भः ॥

ॐ निर्लेपस्य जिनेन्द्रस्य, व्योममूर्तेर्महाध्वरे । व्योमकेशस्य दिग्भागं, कुर्महे दर्भगर्भितम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिसमन्विताय देवाधिदेवाय ऐशान्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । ईशानदर्भः ॥

॥ इति दर्भस्थापनम् ॥

वार्दभर्गंधैः सुमनोऽक्षतौघैः, धूपप्रदीपैरमृतोपमानैः ।

क्रमान्महामो महितां महद्भिर्महीं महादेवमहामहस्य ॥११॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतं । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । भूमिदेवतायै नमः अर्घ्यं ।

अथातो मंडपप्रतिष्ठाविधानम्

गद्यम्—ॐ मणिमयमहास्तंभसंभृतसप्तादिद्वात्रिंशदंतकरान्यतमायामसमुत्तुंगसमचतुरस्रचतुर्द्धा रोत्तंभितधंटादर्पणाद्यलंकृतकलाविशुद्ध-
गोमयपयोद्रुमकषायसंमार्जनमहितमहीतलविहितविचित्ररंगवलिविराजितं । समसमुत्पन्नसुरचापशतशंकावह-विचित्रवितानसंपादितचित्त-
चमत्कारं सौरभासक्तमधुकरमालाकरंबितकमनीयकुसुममालाकलापनिरंतरितांतरालम् । दशविधानेकध्वजदंडकोटिविघट्यमान-
घनाघनगलन्मुक्तासारसंकाशमुक्ताफललंबूषतारकादिभूषणविभूषितम् । विविधाकारकल्पिताल्पकेतनमालालंबमानधवल-
कलशाष्टकदर्भमालावरणविभ्राजितम् । धूपघटपटलनिर्यङ्गमलेखासौरभप्रसरसुरभीकृतसकलदिङ्मुखम् । दर्शनविशुद्ध्यादिषोडश-
भावनीयभवबीजयवसिद्धार्थादिद्रव्यबीजकृतपुंजनिकुसुंबंरंजितम् । मणिकनकचंदनमलयानेकयज्ञांग भाजनभावद्रव्यरत्नफलपल्लवदूर्वादि-
पूजापरिकरपरिपूर्णम् । घोषविशुद्धप्रवचनपाठस्तवनाशीर्वादवाद्यप्रमुखनिनादमुखरितदिगंतरविविधविनेयजनपरिपूर्तिम् । जन्माभिषवणसमय-
पांडुकशिलातटघटितमहामंडपलक्ष्मीमात्मशोभातिशयभयजनसंकल्पाभ्यासादात्मसात्कुर्वाणम् । निर्वाणकारणदयायागसाधनतया
महनीयमखिलमंगलमंडितमहामंडपमिमं बहुमानयामहे । मंडपांतःसमंताद्भूषणादिवस्तुषु च पृथक् कुंकुमाक्तपुष्पक्षतं क्षिपेत् ॥

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्वाभमनेकमेकम् । तेन त्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागत्रयमंडपेन्द्रम् ॥१॥

मंडपमिमं बहिः पंचवर्णसूत्रेण त्रीनारान्वेष्टेत् ॥ (मंडप को बाहर से कलावा से तीन बार वेष्टित करें)

श्रीमंडपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितं पंडितपुंडरीकम् । श्रीमंडपं खंडितपापतापं, तमेनमर्घ्येण च मंडयामः ॥२॥

मंडपायार्घ्यं दद्यात् । (मंडप को अर्घ्य चढ़ावें)

अथ कुमुदादिद्वारपालानुकूलनम्

रक्षार्थमस्य पूर्वादि-द्वारदक्षिणभागके । कुमुदं चांजनं यक्ष्ये, वामनं पुष्पदंतकम् ॥

तोरणोपांतापसव्यदेशेषु कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वसस्यांकुराद्वयैः । पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं, सततमभिमुखं लीलया लोकम् ॥

बिभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं कांतियुक्तं कदल्याः । पूर्वद्वाराधिकारं, कुमुदमतिमुदं कुर्महे पूजनेन ॥१॥

ॐ ह्रीं कुमुदप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । (इत्यादि मंत्रों से पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य समर्पित करें ॥)

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वसस्यांकुराद्वयैः । पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं, सततमभिमुखं लीलया लोकम् ॥

बिभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं कांतियुक्तं कदल्याः । कुर्वेऽपागद्वारपालं, बलिविहितमुदं सांजनाभाजन त्वाम् ॥२॥

ॐ ह्रीं अंजनप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । (इत्यादि मंत्रों से पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य समर्पित करें ॥)

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वसस्यांकुराद्वयैः । पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं, सततमभिमुखं लीलया लोकम् ॥

बिभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं कांतियुक्तं कदल्याः । प्रत्यग्द्वाराधिकारं, विधुधवलरुचं वामनं मानयामि ॥३॥

ॐ ह्रीं वामनप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । (इत्यादि मंत्रों से पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य समर्पित करें ॥)

कुंभं शुभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वसस्यांकुराद्वयैः । पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं, सततमभिमुखं लीलया लोकम् ॥

बिभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं कांतियुक्तं कदल्याः । लब्धोदगद्वाररक्षं, विधिविहितबलिं पुष्पदंतं तनोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतप्रतीहार निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । (इत्यादि मंत्रों से पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य समर्पित करें ॥)

इति मंडपप्रतिष्ठाविधानम्

अथातो वेदीप्रतिष्ठाविधानम्

गद्यम्—ॐ तदेतन्महामंडपस्य परितः किंचिदंशमपहाय परिगृहीतभूमिभागसमविस्तारायाम् समुचितोत्सेधचतुरस्रविनिर्मितबहिः-
परिकल्पिताल्पदिक्पालपीठिकाधिष्ठितवेदिकापरीताम् । चंद्रोपकंठ्रस्तंभस्रांश्चछायचामरादि परिच्छदविशेषपरिष्कृतां । मंगललोकोत्तमशरण-
वदुपर्युपरिव्यवस्थितभांडोच्चयमंडिताम् । दर्शनविशुद्धिवर्द्धनार्थमीशानादिसुरेंद्रपरीतसौधमैत्रविनिर्मापितजिन्महामहवेदी साक्षादियमेवेति

संकल्प्यमानाम् । प्रोक्षणसमालंभनसमर्चननीराजनलवणकलशाष्टकावतरणैरिमां वेदीमतल्लिकां बहुमानयामहे । वेद्यां चंद्रोपकादिषु च कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

भव्यात्मनां दुष्कृतकर्ममौघ-प्रक्षालनार्थं जिनयज्ञवेदीम् ।

कुशोद्धृतैः प्रोक्षणमंत्रपूतैः, संप्रोक्षयामः परितः पयोभिः ॥ १ ॥

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रोक्षणजलाभिमंत्रणम् ।

काश्मीरकालागुरुमिश्रितेन, कर्पूरभाजा हरिचंदनेन । वेदीं समंतादिह चर्चयामो, निजात्मचर्चाचरणप्रसिद्धम् ॥

ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः । इति वेद्यां गंधचर्चनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छमधुरैः स्विच्छंदनैश्चंदनैः । सूक्ष्मत्वायतशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः ।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितदिशैर्दीपैः सुधूमोत्करैः । धूपैः पुण्यफलोत्तमैर्बहुफलैर्वेदीं समर्चामहे ॥३॥

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । ॐ वेदिकायै अर्घ्यं.. । (अर्घ्यं समर्पित करें ।)

दिव्यप्रदीपकलिकोदनवर्णपूरैर्नीराजनार्थविदितैर्वरभाजनस्थैः ।

नीराजयामि भगवज्जिनयज्ञवेदी-मोजोगुणस्य यजतामभिवर्धनाय ॥४॥ दीपकलिकावर्णपूरान्नीराजनम् ।

स्वादिष्टता सर्वरसस्य येन, जायेत सद्भाजनपुंजितेन ।

लावण्यसिद्धयै लवणेन तेन, वेदीं विशिष्टामवतारयामि ॥५॥ लवणावतरणम् ।

कुशकलितजलौघैरुभितैः शातकुंभ-प्रमुखरचितकुंभैरष्टभिः श्रीविशिष्टैः ।

परिवृतसितसूत्रैरुल्लसत्पल्लवास्यैरवतरणममुष्यास्तन्महे सन्महिम्ने ॥६॥ कुंभाष्टकावतरणम् ।

इति वेदीप्रतिष्ठाविधानम्

अथातः कलशस्थापनविधानम्

गद्यम्—ॐ विशोधितभूभागपरिकल्पितप्रतिष्ठितमंडपमंडनीभूतप्रतिष्ठामहितमहावेदिकायाम् । विवक्षितन्यासोदितपूर्वोत्तराग्र-सूत्रैरंशान्कलशप्रमाणेन परिकल्प्य यावत्कलशं तावदंशेषु तत्तन्न्यासानुसारेण प्रस्तीर्णप्रस्थशालीन्द्रस्तीर्थं, तेष्वंशेषशालीयतंडुलैश्चतुर्दल-कमलमुपकल्प्य, कर्णिकायां स्वस्तिकं, कोष्ठेषु श्रियं, दलेषु मायां जलमहिमंडले समालिख्य समभ्यर्च्य तत्र बहुमध्यदेशे सुरभिजल-पूर्णमहाघटमाढकांबुपूरितकलशान् । पूर्वादिक्रमेण तथैव बाह्यावरणे जलादिद्रव्यकलितकरीरान्, कोणेषुद्रोणमंसंभृतकुंभान्समवस्थाप्य, तेषु रैरत्नसर्वगंधकुशकूर्चमंगलद्रव्यसुरभिपुष्पाणि निक्षिप्य, छेदभेदाद्यष्टदोषवर्जितानमलसितसूत्रसमवृतांभोजबीजपूरपिहितानान् । चंदनपंक-परिलग्नबलक्षाक्षतपुंजोपलक्षितान् । प्रसूनमालांबरफलपल्लवदूर्वादपर्पणादिपरिष्कृतानिमान्सर्वानपि कुंभान्संपूजयामहे । पुष्पांजलिः ॥

कल्याणावसरे प्रभोर्जिनपतेः, शक्रेण ये स्थापिताः । तेऽमी इत्यभिकल्पनां स्फुटयतः, श्रीशातकुंभादिभिः ।

निर्वृत्तानथवा मृदाभिघटितान्, कालादिदोषोज्झितान् । सत्पंचामृतपूरितानिह घटान्, यंत्रोपरि स्थापये ॥९॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ।

श्रीखंडकर्पूरवरादिगंध-दिव्यप्रसूनोत्तमरिक्थरत्नम् ।

क्षिपामि मध्यस्थमहाघटेऽस्मिन्, गलस्थवस्त्रादिविराजमाने ॥१२॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः नमोऽहंते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्मतिगिच्छकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकगंगा सिंधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधि शुद्धजलं स्वर्णघट-प्रक्षालितपरिपूरितनवरत्नगंधपुष्पाक्षताद्यर्चितमामोदकपवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं मं हं सं तं पं ह्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा । अनेन मध्यमहाकुंभे रैरत्नादिनिक्षेपणम् । (इससे बीच के कुंभ में रत्न आदि क्षेपण करें ।)

सर्वेषु कुंभेषु च सर्वगंधं, क्षिपामि वारा परिपूरितेषु ।
कुंभेषु पंचामृतपूरितेषु, न्यसामि सर्वेषु कुशस्य कूर्चं ॥३॥

जलकुंभेषु सर्वौषधिस्थापनं सर्वकुंभेषु कूर्चस्थापनम् ॥

यन्मंगलद्रव्यमिति प्रतीतं, बिसं च बोधिद्रुमपल्लवं च ।
क्षिपाम्यपामार्गदलं च पूतं, तत्कोणकुंभेषु विभूषितेषु ॥ ४ ॥

कोणकुंभेषु मंगलद्रव्यनिक्षेपणं ।

यज्ञोचितं वस्तु समस्तमेतत्-फलप्रसूनाक्षतगंधमुख्यम् ।
दर्भोद्धतैर्निर्मलतीर्थवार्षि-र्विशोधयामोघ समंत्रमेव ॥५॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन गंधादिद्रव्यशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

मल्लिकाबकुलजातिकेतकी-पाटलाकमलचंपकादिकम् ।
निक्षिपामि सुमनोगणं शुभं, कोणकुंभपरिपूरिते जले ॥६॥

ॐ हां नेत्राय संवौषट् । इति कोणकुंभेषु पुष्पाणि क्षिपेत् ॥

सपल्लवांभोजसमंचितानि, संस्थापिताशेषघटाननानि ।
सद्बीजपूरस्य फलैः परैर्वा, फलैरिदानीं पिदधे प्रशस्तैः ॥७॥

अनेन पद्मबीजपूरादिभिः कलशमुखानि पिदध्यात् ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥
हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्द्रूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, कुंभान्समभ्यर्चये ॥

ॐ हीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनम् ॥

॥ इति कलशस्थापनविधानम् ॥

अथातः शांतिकविधानम्

गद्य—ॐ सकलमंगलद्रव्यकलापकलितकलशमंडलप्रत्यक्प्रदेशपरिकल्पिते, चतुःस्तंभसंभृतचतुरस्रसमुचितोत्सेधायामविस्तार-विराजिते, जलनिर्गमनद्वारोपलक्षितवेदिकासमावृते, प्रागभेदाहितमंडपवितर्द्धिप्रतिष्ठासमासादितसंस्कारे, चंद्रोपकमुक्तालंबूषादि-विविधमंडनाभिर्मंडित स्तपनमंडपे । मध्ये मंडपं रुचिरतरचूर्णैरष्टदलकमलमुपात्तचतुर्द्वारचतुरस्रमंडलं समालिख्य, तत्र अस्त्ररमेष्टिप्रभृतिदेवताः सर्वविघ्नानामनुत्पत्त्यर्थमुपशमनार्थं च सम्यग्दिदानीमारोधयामहे । पुष्पांजलिः ।

मध्ये जिनेन्द्रानिह कर्णिकायां, क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु सिद्धान् ।

सूरीनुपाध्यायगुरुंश्च साधू-नाराधयामः पृथगेव मंत्रैः ॥९॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उ सा अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

अनेन कर्णिकामध्ये पुष्पांजलिं प्रयुज्यावाहयेत् ॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उ सा अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अनेन तद्वत्प्रतिष्ठापयेत् ।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असि आ उ सा अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अनेन तद्वत्संनिधापयेत् ।

ॐ हां अर्हत्परमेष्ठिन्! इदं जलं गृहाण गृहाण नमः । (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ हीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन्! इदं जलं गृहाण गृहाण नमः। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! इदं जलं गृहाण गृहाण नमः। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! इदं जलं गृहाण गृहाण नमः। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

ॐ हः साधुपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ हः साधुपरमेष्ठिन्! इदं जलं गृहाण गृहाण नमः। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

मंगललोकोत्तमशरणात्मकजिनसिद्धसाधुसद्धर्मान्। बहु मानयेऽहमर्घ्यैराग्नेयाद्यन्तरालेषु ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगलेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्धृत्य सत्वान्भवदुःखवार्धे-निःश्रेयसे नित्यसुखे धरन्तम्।

अयोगिनोऽंते समये स्फुरन्तं, यजामि सिद्धोपरि शुद्धधर्मम् ॥३॥

ॐ हां संपूर्णरत्नत्रयात्मकधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषडित्यादि। (इस प्रकार स्थापना विधि करके अष्टद्रव्य चढ़ावें)

एवमर्हदादीनभ्यर्घ्यं शरच्चन्द्रमरीचिरोचिषोन्तश्चेतसि चिंतयन्नादिसिद्धमंत्राभिमंत्रितकर्पूरहरिचंदनद्रवालुलित
सुरभिभुङ्गपुष्पांजलिभिरेकविंशतिवारानधिव्यास्य पूर्णार्घ्यदानेन बहुमानयामहे ॥

पंच परमेष्ठिनस्ते, मंगललोकोत्तमाश्च शरणानि।

धर्मोऽपि कर्णिकायां, समर्चिताः संतु नः शिवदाः ॥४॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठि-मंगललोकोत्तमशरणधर्मेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

इति कर्णिकार्चनविधानम्।

अथ अष्टपत्रस्थापितजयाद्यर्चनविधानम्

क्रमेण पूर्वादिषु दिग्दलेषु, जयादिदेवीर्जयदाश्चतस्रः।

आग्नेयकोणादिविदिग्दलेषु, जंभादिदेवीः प्रयजे चतस्रः ॥५॥

ॐ ह्रीं जये! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं जये! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं जये! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं विजये! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं विजये! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं विजये! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं अजिते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अजिते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं अजिते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं अपराजिते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अपराजिते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं अपराजिते! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं जंभे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं जंभे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं जंभे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं मोहे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं मोहे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं मोहे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं स्तंभे! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं स्तंभे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं स्तंभे! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं स्तंभिनि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं स्तंभिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं स्तंभिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

प्रभावितश्रीजिननाथमार्गा, दुर्मार्गविध्वंसविधिप्रवीणाः ।

जयादिदेव्योष्टकृतेष्टितुष्टाः, निःशेषविघ्नानपसारयंतु ॥२॥

ॐ ह्रीं सर्वा जयादिदेव्यः! इदं जलादि अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा ।

इति जयादिदेवतार्चनविधानम् ॥

अथ दिक्पालानुकूलनम्

शार्दूलविक्रीडित—एतत्सर्वजनीनजैनसवन-प्रत्यूहविध्वंसन-प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहित-प्रख्यातिपूजांचितान् ।

स्वस्वातुच्छपरिच्छदान्दशदिशा-मन्याप्रधृष्यामितान् । दिक्पालाञ्जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥१॥

ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं यम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं यम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं वरुण! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं वरुण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं पवन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं पवन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं धनद! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं धनद! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
 ॐ ह्रीं धनद! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं ईशान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं धरणींद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं धरणींद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं धरणींद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शतमखशिखिकाला यातुधानाः प्रचेताः, पवनधनदनागाः कल्पनार्गेन्द्रचंद्राः।

मखमुखमहितार्घा, येऽप्रधृष्यप्रभावाः- प्रकृतयजनविघ्नान् घ्नन्तु ते मंत्रनिघ्नाः॥ २॥ पूर्णार्घ्यः॥

इति दिक्पालानुकूलनम्॥

अथ सूर्यादिग्रहान्सोमदिक्पालकोपरितोऽवस्थाप्य विधिवत्पूजयेत्

रक्ताकं धवलेंदुमारमरुणं, पीतं ससौम्यं गुरुं। शुक्रं शुक्लमलिप्रभं शनिमहिं, केतुं सवर्णाक्षतैः॥

पुंजेष्विंदुदिगीश्वरोपरिवृतेष्वास्थाप्य मूलान्वितम्। दर्भं संस्कृतमंत्रसाधु धिनुर्यां, तत्तत्सवर्णार्चनैः॥१॥

ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। आदित्याय स्वाहा। आदित्यपरिजनाय स्वाहा।

आदित्यानुचराय स्वाहा। आदित्यमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा। आदित्याय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यजभागं च यजामहे यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सोमाय स्वाहा। सोमपरिजनाय.....

ॐ ह्रीं अंगारक! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं अंगारक! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं अंगारक! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। अंगारकाय स्वाहा। अंगारकपरिजनाय.....

ॐ ह्रीं बुध! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं बुध! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं बुध! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। बुधाय स्वाहा। बुधपरिजनाय.....

ॐ ह्रीं बृहस्पते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं बृहस्पते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं बृहस्पते! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। बृहस्पतये स्वाहा.....

ॐ ह्रीं शुक्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं शुक्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं शुक्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। शुक्राय स्वाहा.....

ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। शनैश्चराय स्वाहा.....

ॐ ह्रीं राहो! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं राहो! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं राहो! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। राहवे स्वाहा। राहुपरिजनाय स्वाहा.....

ॐ ह्रीं केतो! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं केतो! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं केतो! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। केतवे स्वाहा। केतुपरिजनाय स्वाहा.....

शार्दूलविक्रीडित—

सूर्यः शौर्यगुणं शशी कुशलतां, सन्मंगलं मंगलो । बुद्धिं तत्त्वबुधां बुधो वितरताञ्जीवः शुभोज्जीवनम् ।
शुकः शुक्लतरं यशोऽतिविपुलं मंदोप्यमंदश्रियं ॥ राहुर्बाहुबलं महार्घ्यमहितः, केतुर्महीकेतुताम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं आदित्यादयः नवग्रहदेवाः इदं जलादि अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

श्रीशान्तियंत्रं विधिना समंत्र-माराधितं निःप्रतिमप्रभावं ।

समस्तविघ्नस्य शमं विधेया-दनुद्भवं चेष्टसुखं च देयात् ॥ ३ ॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् (पुष्पांजलिं)

अथ बृहच्छांतिकर्मणि विकीर्षिते बृहच्छांतिकयंत्रं समाराध्य ग्रहपूजानंतरं प्रतिकूलग्रहानुद्दिश्य तन्मंत्रेण तिलशालियवैर्जलहोमं
तत्तत्समिद्धिरग्निहोमं च विदध्यात् ॥ इति शांतिकर्मविधानम् ॥ (यहाँ जलहोम करें)

अथ ऐशान्यां दिशि अनावृतार्चनम्

मेरोरीशानभागे कुरुषु मणिमयस्योत्तरेषु स्थितस्य । श्रीजंबूभूरुहस्य स्थितिजुषमनिशं पूर्वशाखास्थसौधा
शंखं चक्रं च कुंडीं दधतमुरुकरैरक्षमालां च कृष्णं । पक्षींद्रारुढमस्या भवदिशि विधिनानावृतेन्द्रं यजामि ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं अनावृतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव
वषट् ॥ पुष्पांजलिं ॥

ॐ ह्रीं अनावृतेन्द्र! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

अथात्र मंडले स्नपनपीठे जिनबिंबं प्रागुक्तविधिना स्थापयेत् (भगवान का अभिषेक करें)

पार्श्वप्रोतमणिप्रभाभिरभितः, क्लृप्तैर्द्रवापोत्करम् । पार्श्वद्वन्द्वनिवेशितोचितलसहैवेन्द्रपीठद्वयम् ॥

अर्धेन्द्रूपमपांडुकोपलतला-नादिस्थपीठोपमं । पीठं भासुरभर्मनिर्मितमिदं, यंत्रोपरि स्थापये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमं ठः ठः स्वाहा । पीठस्थापनं ॥

हाटकीयघटपूर्णपयोभिः, पाटलातुटिपटीरविमिश्रैः ।

क्षालयामि निजमानसपंक-क्षालनाय जिनमज्जनपीठम् ॥ २ ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः नमोऽहंते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा । पीठप्रक्षालनम् ॥

स्याद्वादविद्वज्जनशेमुषीव, नितांतमेतान्निशिताग्रभागान् ।

हिरण्ययेऽस्मिन्नभिषेकपीठे, हरिन्मणिच्छायकुशान्यसामि ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः । पीठदर्भः ॥ (अभिषेक पात्र पर दर्भ स्थापित करना)

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, पीठं समभ्यर्चये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा । पीठार्चनम् । (अभिषेक पात्र को अर्घ्य चढ़ावें)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघ-श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।

श्रीर्वर्तते चंद्रमसीति वार्ता, सत्यापयंतीं श्रियमालिखामि ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा । श्रीलेखनम् ॥

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलै-रभ्यर्चयामो जिनम् ॥ ६ ॥

स्नपनप्रतिमार्चनम् ॥ (अर्घ्य चढ़ाना)

जैनैर्द्रबिंबं जगदेकपुण्या-लंबं प्रशांत्याजितचंद्रबिंबम् ।

निर्भूषणं भूषितसर्वलोकं, स्पृशामि संस्पर्शयदिष्टसौख्यम् ॥७॥

ॐ ह्रीं धात्रे वषट् प्रतिमास्पर्शनम् ॥ स्नपनमंडपमर्हद्बिम्बं नीत्वा तत्र स्तोत्रमिदं पठेत् ।

जय जय जिनराज, ध्वस्तदुर्मोहराज । प्रहतमदनराज, प्रवृत्तदेवराज ।

रुचिरतरविराज, स्तुत्यशक्ताहिराज । प्रचुरसुगुणराजन्मच्युताधीशराज ॥९॥

जय जय जिनधीर, प्राप्तजन्माब्धिपार । प्रथितविभवसार, प्रौढतीर्थावतार ।

प्रहतहतकमार, प्रोद्धतानंदपूर । प्रहसितशतसूर, प्रप्रकृष्टांशुभार ॥१०॥

जय जय जिनमित्र, ध्वांतविध्वंसिमित्र । स्वतिशयगुणगात्र, ज्ञानविस्फूर्तिपात्र ।

परमपदपवित्र, प्रोल्लसद्देवयात्र । प्रवरशरणगात्र, प्राणिनामप्यमुत्र ॥११॥

जय जय जिनजैत्र, क्षमात्रयारामचैत्र । त्रिदशविधृतवेत्र, श्वेतचित्रातपत्र ॥

निरतिशयचरित्र, श्रीमदर्थोक्तसूत्र । स्वदुरघतरुदात्र, श्रायसश्रीकलत्र ॥१२॥

जय जय जिन तात, त्रातरत्यंतपूत । स्थिरतरसुखदातः, कर्मसंघातघात ॥

कुमतजलदवात, ज्ञेयजातप्रमातः । प्रवचनरथसूत, ख्यातदेवाभिनूत ॥१३॥

जय जय जिनचंद्र, च्छिन्नदुर्मोहतंद्र । प्रणतनरसुरेंद्र, स्वात्मलक्ष्मिन्मुनींद्र ।

स्वतिशयगुणरुद्र, प्रीणितप्राणिमंद्र । प्रवचनसरिदिंद्र, स्फीतभासांद्रचंद्र ॥१४॥

जय जय जिनसेव्य, त्रातसुप्रीतभव्य । त्रिभुवनमहितव्य, स्वाप्तिसंभावितव्य ।

वरद नमसितव्य, प्रत्यहं कीर्तितव्य । स्मृतिपथनिहितव्य, श्रेयसे भावितव्य ॥१५॥

जय जय जिननाथ, ज्ञातसंपत्सनाथ । प्रतिहतरतिनाथ, प्रास्तमोहाघनाथ ॥

नतसुरनरनाथ, श्रीदलोकादिनाथ । श्रुतिकजदिननाथ, श्रीवधूप्राणनाथ ॥१६॥

नमदनिमिषषंडं, खंडितानंगकांडं । हसितलसिततुंडं, ध्यानधीराग्निकुंडम् ॥१७॥

सुगुणमणिकरंडं, जन्मवार्धौ तरंडं । जिनमतचिदखंडं, श्रायसानंदपिंडम् ॥१८॥

॥ इत्यानंदस्तवः ॥

शार्दूलविक्रीडित—

नीत्वा भूरिविभूतितः सुरगिरिं, श्रीपांडुकाग्रासने । पूर्वास्यं विनिवेश्य ते सुरवराः, संस्थापयन्ति स्म यम् ।

तं देवं स्नपनार्थमंडपमिमं, नीत्वा विभूत्या समं, पीठेन श्रुतबीजभासुरतले पूर्वाननं स्थापये ॥१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह पांडुकशिलापीठे तिष्ठ तिष्ठेति स्वाहा । श्रीवर्णं प्रतिमास्थापनम् ।

अनुष्टुप्—देवस्य दक्षिणे भागे, यक्षमुत्तरदिङ्मुखम् । यक्षीमुत्तरभागेऽस्य, दक्षिणस्यां निवेशये ॥२॥ यक्षयक्षीस्थापनम् ॥

शार्दूलविक्रीडित—येषां मेरुतटे जिनालयपुरो-भूः पांडुकाग्रस्थितं । पीठं पीठमिदं त्वयं प्रतिकृतिः, साक्षाच्च सोर्हत्प्रभुः ।

सौधर्माभरनायकोऽहममराः, सर्वे च भव्या अमी । यज्ञांगानि च तान्यमूनि सकलं, तत्सिद्धमिष्टं हि नः ॥३॥

श्रीमंडपादिषु भावस्थापनार्थं स्नपनमंडपाग्रे पाद्यविधिं विदध्यात् ॥ यज्ञांगसन्निधापनम् ॥

वेदाच्चेतसि मे स्फुरंतमपि च, त्वामाव्हयामि प्रभो, शुद्ध स्वात्मकृतप्रतिष्ठमपि च, त्वामत्र संस्थापये ।

आसन्नं वितनोमि सर्वगमपि, त्वां निर्विकारं सदा । पाद्याद्यैश्च पुनामि केवलमिदं, सर्वं हि पूजाक्रमः ॥४॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

आहूता भवनामरैरनुगता, यं सर्वदेवास्तथा, तस्थौ यस्त्रिजगत्सभांतरमहा-पीठाग्रसिंहासने ।

यं हृद्यं हृदि सन्निधाप्य सततं, ध्यायति योगीश्वराः । तं देवं जिनमर्चितं कृतधिया-मावाहनाद्यैर्भजे ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं! अत्र एहि एहि संवौषट् नमोऽर्हते स्वाहा । आवाहनमंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः नमोऽर्हते स्वाहा । स्थापनमंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् नमोऽर्हते स्वाहा । सन्निधापनमंत्रः ।

तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथग्मंत्रानुच्चारयन्पुष्पांजलिं प्रयुंजीत ॥

आराधितौ सुरवरैर्बहुभक्तियुक्तै-र्यौ संस्तुतौ मुनिवरैर्विविधार्द्धियुक्तैः ।

श्रीपादयोजिनवरस्य तयोः पुरस्तात्, बध्नामि विघ्नहरपंचजिनेन्द्रमुद्राम् ॥६॥

पंचगुरुमुद्राबंधनम्

अनन्यसाधारणसद्गुणानां, तव स्मरन्नास्तमितस्मरार्तेः ।

जिनेन्द्र! साक्षात्कृतसर्वतत्त्व! त्वामात्मनः सन्निहितं करोमि ॥७॥

ॐ उसहाय दिव्यदेहाय सज्जोजादाय महष्पण्णाय अणंतचउट्टयाय परमसुहपइट्टयाय णिम्मलाय सयंभुवे
अजरामरपदपत्ताय चउमुहपरमेट्टिणे अरहंताय तिलोयणाणाय तिलोयपूजाय अट्टदिव्यदेहाय देवपरिपूजियाय
परमपदाय ममयत्थसन्निहिदाय स्वाहा । इदमुच्चारयन्प्रतिमां परामृशेत् ॥ आव्धानादिविधानं ॥

विजयविभवविद्या-वीर्यमौदार्यमाज्ञां ॥ श्रुतिमतिधृतिनीतीः, शांतिकातिप्रसादान् ।

दृगवगमचरित्रं, सिद्धिवृद्धिप्रसिद्धी-र्वितरतु जगतोऽत्र, स्थापितः श्रीजिनेन्द्रः ॥८॥ आशीर्वादः ॥

सुरेश्वरो यस्य सुराचलाग्रे, पाद्यक्रियामातनुते स्म भक्त्या ।

तस्य प्रभोः पाद्यविधिं विधास्ये, निपात्य पादे वरवारिधारां ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमोऽर्हते स्वाहा । पाद्यमंत्रः ॥

श्रीतीर्थक्षेत्रियस्यास्य, मेरुमूर्ध्निव देवराट् ।

हस्ते निपात्य वार्धारां, करोम्याचमनक्रियाम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं इवीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा । आचमनमंत्रः ॥

इति पाद्याचमनविधानम्

त्रैलोक्यरक्षामणिमर्हदीशं, द्विषट्प्रकारैरवतारयेऽर्थैः ।

त्रिवारमामस्तकमापदाब्जं, नन्दीदृशोऽस्य स्नपनक्रमः स्यात् ॥११॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

(धुले अक्षत और सुगंधित पुष्प अंजुलि में लेकर, भगवान हमारे रत्नत्रय को निर्दोष करो, इस भावना से आगे का पद्य और मंत्र बोलकर अवतरण विधि करें। मस्तक से लेकर पैरपर्यंत तीन बार उतारना अवतरण विधि है।)

पुष्पाक्षत-अवतरण

वीतक्षतार्द्राक्षतसौरभाद्भ्य-प्रसूनपूर्णांजलिनांजसार्थम् ।

पतिं जिनानामवतारयामि, रत्नत्रयं निक्षतमाप्तुकामः ॥१२॥

ॐ ह्रीं क्रों बहुविधपुष्पाक्षतपरिपूर्णपाणिपात्रेण भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि

अस्माकमक्षतानि विदधातु भगवान् स्वाहा । पुष्पाक्षतावतरणम् ।

(आगे के श्लोक व मंत्र से, हमारे पापसमूह नष्ट हों, इस भावना से दूब, सरसोंयुक्त गोमय से अवतरणविधि करें।)

भूतलापतितगोमय - पिंडैर्दूर्वगुच्छसितसर्षपयुक्तैः ।

अर्हतोऽवतरणं विदधेहं, कर्तुमात्मदुरितौघविलोपम् ॥२॥

ॐ ह्रीं क्रों दूर्वाकुरसितसर्षपयुक्तैर्हरितगोमयपिंडकैर्भगवतोऽवतरणं करोमि दुरितमस्माकमपनयतु स्वाहा । गोमयपिंडावतरणं ॥

(भगवान् हमारे अष्टकर्म भस्म करें, इस भावना से भस्म के पिंड से अवतरणविधि करें।)

शुद्धगोमयजभस्मपिंडकैर्-गंधवारिलुलितैर्जिनप्रभोः ।

अग्रतोवतरणं वितन्महे, दग्धुमात्मदुरितैर्धनोत्करम् ॥३॥

ॐ ह्रीं क्रों भस्मपिंडकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोम्यस्माकं अष्टविधकर्माणि भस्मीकरोतु भगवान्स्वाहा ॥ भस्मपिंडावतरणं ॥

(हमारा कल्याण होवे, इस भावना से शालि के ओदन से (भात से) अवतरणविधि करें।)

पीयूषपिंडोपमपांडुराति-स्वादिष्टशाल्योदनवृत्तपिंडैः ।

विदांवर त्वामवतारयामि, क्षेमं सुभिक्षं जगतां विधिस्तुः ॥४॥

ॐ ह्रीं कुंदेंदुकुमुदधवलवर्तुलौदनपिंडकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि क्षेमसुभिक्षं अस्माकं करोतु भगवांस्वाहा । शाल्यन्पिंडावतरणं ॥

(कर्मों को नष्ट करने की भावना से धूप खेकर अवतरण विधि करें।)

कालागरुक्षोदविमिश्रितेन, कर्कोलमुख्यरजसा बहुवासितेन ।

निर्वर्तनं नित्यसुखार्हदीशो, दुष्कर्मचूर्णीकरणाय कुर्वे ॥५॥

ॐ ह्रीं क्रों सुगंधीभूतदिग्धूपदनकैरंधकारीकृतदिग्विधैः कर्कोलैलादिचूर्णमिश्रित-कालागरुधूपैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोम्यस्माकमष्टविधकर्माणि चूर्णीकरोतु भगवान्स्वाहा । धूपावतरणम् ॥

(श्वेत, काले, हरे, पीले और लाल ऐसे शरावों से (वर्धमानक से) हमारी संपत्ति वृद्धिगत होवे, इस भावना से पंचवर्णी वर्धमानक से अवतरण विधि करें।)

रूपाग्निवार्ध्यागुलवक्रभूमि-समुच्छ्रयैः सच्चतुरस्रकैस्तैः ।

सपंचवर्णैरवतारये त्वां, श्रीवर्धनार्थं जिन वर्द्धमानैः ॥६॥

ॐ ह्रीं क्रों सितासितहरितपीतलोहितैर्वर्द्धमानकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि श्रियमस्माकं वर्धयतु स्वाहा । पंचवर्णवर्धमानावतरणं ॥

(हमारा धर्म आप उज्ज्वल करें, इस भावना से दीपों से अवतरण विधि करें।)

अनंतनिर्भासनिजावबोधं, प्रध्वस्तदुर्मोहमहांधकारम् ।

सद्धर्मदीप्त्या जिनभानुमंतं, माणिक्यदीपैरवतारयामि ॥७॥

ॐ ह्रीं क्रों पद्मरागमणिभिरिव देदीप्यमानकपूरपारिदीपैरिवोभयपार्श्वप्रज्वलितोत्कया भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोम्यस्माकं धर्ममुज्ज्वलं करोतु भगवान् स्वाहा । दीपावल्यावतरणम् ॥

(कर्पूर और सुगंधित पुष्पों से सुवासित जल अंजलि में लेकर, हमारा ध्यान निर्मल होवे, ऐसी भावना से अवतरण विधि करें।)

शीतांभसा पाणिपुटस्थितेन, युक्तेन कर्पूरसुगंधिपुष्पैः।

नीराजनं नीरजसो जिनस्य, निर्वृत्तये शीलसमाधिसिद्ध्यै ॥८॥

ॐ ह्रीं क्रों सुरभिशिशिरविमलसलिलपरिपूर्णनांजलिना भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि विमलशीतल-
ध्यानमस्माकमुत्पादयतु भगवान्स्वाहा ॥ सलिलांजल्यवतरणम् ॥

(जिनेन्द्रदेव हमारी इच्छा पूर्ण करें, ऐसी भावना से नींबू, जामुन, केला, नारियल, आम आदि फलों से अवतरण विधि करें।)

जंबीरजंबूकदलीकपित्थ, फलोत्तमाग्रादिकलोत्तमौधैः।

निर्वृत्तये नित्यफलं जिनेन्द्रं, नित्यामृतानंदफलोपलब्ध्यै ॥९॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरुसमुत्पन्नैः क्रमुकनालिकेरमातुलिंगपनसदाडिमजंब्याग्रादिकलैः भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोम्य-
स्माकमाशाफलं संपादयतु भगवान्स्वाहा ॥ फलावतरणम् ॥

(पृथ्वी सर्वधान्य संपन्न होवे, इस भावना से दूब, सरसोंयुक्त मिट्टी के पिंडों से अवतरणविधि करें।)

सिद्धार्थदूर्वाक्षतलक्षितांगै-र्गंधांबुसिक्तोद्धमृदा कृतैश्च।

सद्वर्धमानैरवतार्यमाणो, जिनो महीं सस्यचितां तनोतु ॥१०॥

ॐ ह्रीं दूर्वाकुराक्षतसितसर्षपयुक्तैर्मृत्पिंडकैर्भगवतोऽर्हतोऽवतरणं करोमि सर्वसस्याढ्यां वसुधां करोतु भगवान्स्वाहा।
मृत्पिंडावतरणम् ॥

(हमारी आत्मा को भगवान् उज्ज्वल करें, इस भावना से दर्भ अग्नि से अवतरणविधि करें।)

निःशेषदोषेधनदाहदक्षै-र्दर्भाग्रलग्नोज्ज्वलकीलजालैः।

निर्वर्तये निर्वृजिनं जिनेन्द्रं, निर्दग्धुमात्माखिलकर्मकक्षम् ॥११॥

ॐ ह्रीं क्रों कनकनककपिशवर्णैर्ग्रावलग्नानिज्वालाज्वलिताखिलदिङ्मुखैः पापारातिकूलोन्मूलनदक्षैर्निबिड-
निबद्धदर्भपूलैर्नीराजनविधिना भगवतोऽवतरणं करोम्यात्मोज्ज्वलनमस्माकं करोतु भगवान्स्वाहा ॥ दर्भदीपांकुरावतरणम् ॥

यहां तक एकादशविध अवतरणविधि पूर्ण हुई।

(पुष्पांजलि)

कमलबकुलवालोत्फुल्लकल्हारमल्ली, कुमुदकुरुवकोद्य-द्यूथिकाकेतकीनाम्।

दवनमरुवकानां, मालतीचंपकानां, जिनचरणपुरस्तादंजलिं प्रोत्क्षिपामः ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अर्हत इदं पुष्पांजलिप्रार्चनं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा।

अनेन विविधकुसुमांजलिः। यहाँ पृष्ठ १०७ से भगवान् की अष्टद्रव्य से पूजा करें।

यत्रागाधविशालगुणेत्यादिना प्रागुक्तेन भगवतोऽष्टविधां इष्टिं विदध्यात्।

शार्दूलविक्रीडित—यः सर्वाभ्युदयप्रदो यममरा-धीशः सदोपासते। यैनैवामृतमाप्यते मुनिवरा, यस्मै नमस्कुर्वते।

यस्मान्नास्त्यपरः सुहृत्सुमहिमा, यस्यैव यस्मिन्सताम्। प्रीतिस्तज्जिननाथ दिव्यचरणं, निःश्रेयसायास्तु नः ॥१३॥

भक्ष्यक्षीरघृताक्षतान्सुमनो-वार्गधदध्यन्वितम्। नानासत्फलपाणितान्वितमिमं, हेमादिपात्रे स्थितम्।

उद्धार्यार्घ्यमनर्घ्यमध्वरविधि-प्रत्यूहविध्वंसकान्, दिक्पालाञ्जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥१४॥

अर्घ्योद्धारणम् ॥

पूर्वस्यां दिशि

गद्यम्—ॐ शारदोदारवारिदातिविशदविशालायतोतुंगांगसंगांगीकृतांगशृंगांगशृंगिहाटकोपघटितघंटिकाकक्ष्यादिलक्ष्यमाण-पक्षभागम् । उदयाचलशिखरोदितदिवाकरबिंबातिशुभज्जांबूनदजहटपट्टबंधातिबंधुरदंतभागम् । दंतांतगतसरोवरसोजदलोपरिमानृत्यदमरांगना-वदनचंद्रशतापादितशतचंद्रनभःस्थलविलासम् । कुथाकलितपृथक्पृष्ठभागाकृष्टविचित्रसंध्याभ्रसमावृतविजयार्धाचलमूर्धपरार्थशोभम् । नीरदनिनादनिकरनिभजभूरिभेरीरवांचित घंटाजालटंकारकृतारातिवारणमैरावण महावारणमारुढम् ॥

देहप्रभाद्विगुणभूषणदिव्यदीप्ति-व्यालिप्तदिग्विवरमंतरितांतरायम् ।

वज्रायुधं निजवधूवदनाब्जनेत्रम्, व्याव्हाणये नुतजिनेंद्रमहे महेंद्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं क्रों सुवर्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ । ममात्र सन्निहितो भव भव वषट् । इंद्राय स्वाहा । इंद्रपरिजनाय स्वाहा इत्यादि । इंद्रायेदमर्घ्यं पाद्यमित्यादि यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

शांतिः सदास्तु तस्यार्हन् देवो यस्य सदाचर्यते । इतीन्द्राव्धानम् ।

पूर्वदक्षिणस्यां दिशि

गद्यम्—ॐ घनागमघनाघनसमुद्भूतविद्युद्विलासानुकारिकलापघनगलाघटितकलधौतघर्घरमाला निर्घोषनिर्जितपर्जन्यगर्जनम् । अप्रत्याख्यानमायास्वरूपप्रख्यापनप्रवीणाप्रगुणविषाणभूषणविशेषज्ञगङ्गात्कारोत्पादनपटुतरचटुलाटनसमुद्भूतम् । पवनसखसमालोकनसमागतपवनकुमारायमाणपृथुप्रोथघुरुघुराघोषनिश्वासनिर्भरम् । सर्वावयवसत्त्वसमुच्चयनिधिन्यासनिर्हातिबहलबलोपलक्षितललाट-पट्टविभ्राजितमदभ्रतरकायमुरभ्रवरमारुढम् ॥

शोणभ्रूश्मश्रुकेशांबकमरुणरुचं जाज्वलज्ज्वालशक्तिम् । कुंडीं वामेक्षमालामितरकरतले बिभ्रतं सोपवीतम् ।

स्वाहायुक्तं नियुक्तं जिनयजनविधेर्दीपधूपाधिकारे । सद्देवाधोषिसभ्यावृतमनलमलंकारसारं यजेऽहम् ॥२॥

ॐ ह्रीं क्रों रक्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । इत्यादि । शांतिः सदा० । इत्यग्नेराव्धानम् ॥

दक्षिणस्यां दिशि

गद्यम्—ॐ स्याद्वादानवद्यविद्याविदग्धनिर्दग्धावलेपसकलसर्वथैकांतवादिदुर्वारदुर्यशोराशिमिवातिनीलस्थूलायतोतुंगमंगमादधानम् । कटुतराभिनवकालकूटजाज्वलज्ज्वालाजटालनिजफणफणाधरत्रिगुणग्रथितघंटाटंकारसमाटिक्यमानयागप्रीतभटाटोपपंचराशैश्वानरांतकसमासति-समायोगसमासादितनितांतदारुणाकारभीकरम् । चरद्गवलशिखाभिघट्यमानमेघपटलपातुकमुक्ताजालसिच्यमाननिजपृष्ठाधिष्ठितदक्षिण-काष्ठाधीशम् । नीलरत्नाधिष्ठानपुष्पकनिष्पादितप्रतिमहिषविभ्रमाविभूतकोपकृशानुकृतरक्ताक्षमिव रक्ताक्षतोपलक्षितरक्ताक्षवरमारुढम् ॥

भृंगांगासितभूरिभंगुरजटा-जूटं शिखाडंबरोद्भिद्दंडोड्डमरं प्रचंडफणिभृत्सान्मंडनैर्मंडितम् ।

छायानुच्छमुखेदुसुच्छविकृता-नंदं सकालच्छविं । कालं कालजकालधर्मरहिता-धीशाध्वरे व्याव्हाये ॥३॥

ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण हे यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । श्रीशांतिरस्तु ॥ इति यमाव्धानम् ॥

दक्षिणपश्चिमायां दिशि

गद्यम्—जिनसवनसमालोकनकुतूहलभल्लाकारपरिणतसमागतांजनमहीधरशंकाकारिणं । जिनभानुविविधनयजिनवचो-भानुशतनिराकृतजनमनोमहामोहतमः संतानसनिभम् । उपाकृतपशुविशसनविधायिजनसमास्रवकौतुकागतदयायागविलोकन-हताशपाश्वर्गतपापांजनखंजपुंजोपमानं । कुनयनिभनिजदर्शनावारकपुरोलंबमानतमालक्ष्यामलशिरोरुहसटाभारम् । रूक्षतोपलक्षित भल्लूकाकारपरिणतकायकृतभीतेर्निर्भरं कर्बुरवरमारुढम् ॥

कटकमुकुटमुद्राहारकेयूरमुख्या-भरणकिरणभारोद्भासिताशांतरालम् ।

असितलसितकांतिं मुद्गरासं च रात्रिं-चरपरिवृतमेतं व्याह्वये नैऋतीशम् ॥४॥

ॐ ह्रीं क्रों श्यामवर्ण हे नैऋते! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदास्तु इति नैऋत्याह्वानम् ।

पश्चिमायां दिशि

गद्य—समुद्रसलिलसंततक्रीडोपगूढबाढक्षीरोदडिंडीरपिंडपांडुराधिककपिलभावातिपशेलं । सर्वांगसंगतमकराकारकरावयवपरिकलित-
करिवराकारम् । मृणालच्छेदसोदरोदारदंतकांतिकलापापसारितनिजवदनविवरांधकारम् । यागभूभागपुष्पोपहाराय पुष्पापचय-
मातन्वानमिवपुष्करकरव्यापारितकरपुष्करम् । अनेकांतमतत्वसमर्थनार्थमिव कथंचित्करिमकरोभयाकारविराजित करिमकरस्त्रिभानमारूढम् ।

मुक्ताफलात्युज्ज्वलविद्रुमानु-स्यूतप्रभूताभरणाभिरामम् ।

भीमाहिपाशं वरुणान्यधीशं, यागेत्र यादःपतिमाह्वयामि ॥५॥

ॐ ह्रीं क्रों सुवर्णवर्ण हे वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदा.. । इति वरुणाह्वानम् ॥

पश्चिमोत्तरस्यां दिशि

गद्य—लघुललितमृदुकोमलातिविमलकलधौतकपिशतरकायकमनीयम् । वदनवदमांसलातिचटुलतरचरणरमणीयम् मांसलसमानपरिणाह-
विशिष्टपृष्ठभागम् । मृगाधिपमध्यप्रदेशशोभाध्यासितमध्योद्देशम् । निशातकुटिलपर्वपटलदंतुरविषाणविराजितम् । वामलोचनालोचनोपमान-
चपलविशालविलोचनम् । समुत्क्षिप्तकर्णतालातिचकितमुहुर्मुहुराशांतरावलोकनम् । स्तोकतरभूभागगतिवेगातिशयपूर्वकायप्रविष्टापरकायम् ।
बहुतराकाशप्लुतगतिरयोभरपरजितमनोवेगमहिमानम् । गर्वारंभाति वल्गुवल्गनविधानसमयश्रृंगारविघट्यमानघनपटलघनगलज्जल-
धारापसारितपथपरिश्रमम् । निजनिशितखरखुरशिखरपरिकषितकुशिखरिनिकरशिरोभागम् । समीहितोद्देशाविलंबित सुखप्रापण-
प्रमुखसकलसारगुंभितसंततसारंगवरमारूढम् ।

चलद्विपुलभूरुहं कलितविस्फुरद्भूषणम् । लसन्मधुकरच्छविं चलितगात्रयंत्रोत्करम् ।

जगत्त्रितयजीवनं विरचिताखिलार्थेतरम् । समीरणमिहाह्वये समदवायुवेगीयुतम् ॥६॥

ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण हे पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदास्तु । इति पवनाह्वानम् ।

उत्तरस्यां दिशि

गद्य—ॐ जिनमहामहमहिमावलोकनकुतूहलगगनागतनीलकुलाचलायमाननीलरत्नमयमहाधिष्ठानमहनीयम् । तत्कुलाचलकूटोपमानमणि-
मयमुकुटोपरिमपद्मरागकलशप्रभापटलपाटलीकृतमध्यदिनातपम् । सीतानदीसितप्रवाहसोदरोदारधवलच्छविच्छदराजद्राजहंसकिरुंबनीयमानम् ।
विचित्रावयवशोभाजितवैमानिकविमानाधःपातसमुत्क्षिप्तकरशतायमानध्वजराजिविराजितम् । विविधमणिविनिर्मितभित्तिभग्नप्रभाप्रसरसुस्वा-
पशतसहस्रनिष्पादकं पुष्पकविमानमारूढम् ।

निधनरहितमुक्ताभूषणप्रौढवेषं । निधननिपुणशक्तिं विद्विषामुद्रहन्तम् ।

घनमुखनिजदेवीसन्मुखांभोजभृंगं । धनदमिह धनद्वयं सेव्यमाह्वानयेहम् ॥७॥

ॐ ह्रीं क्रों सुवर्णवर्ण हे धनद! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदास्तु ॥ इति धनदमाह्वानम् ।

पूर्वोत्तरस्यां दिशि

गद्य—महाहिमवन्महीधरसमानमहामानमाननीयधवलधौरेयतरगात्रम् । स्थूलसमुत्तुंगकठिनककुत्कूटघटिततत्कुलकुत्कीलकूटोदारस्त्रिसम् ।
महीधरमहाकूटविदारणविनोदविलिप्तधातुधूलिविसरविभूषणविषाणविराजितम् । कनकनकखचितचक्रकायमानचलदचलब्रह्मालामनोहरमस्तकम् ।
मंजीरमंजुलारावगलालंबनघंटाध्वानद्विगुणगंभीरनिजनिनादपरिपूरितदिगंतरालम् । सलक्षणपुरुषविशेषविशालाक्षोपमानमहाक्षममतिदक्षं
महोक्षवरमारूढम् ॥

कंकेलीद्रुमपल्लवच्छविजटा-जूटार्धचंद्रप्रभा- सांद्रीभूतभुजंगभूषणफणा-रत्नप्रभाभास्वरम् ।

भालाभीलविलोचनानलशिखा-तीक्ष्णत्रिशूलायुधम् । पार्वत्या धवमाढ्ये गणवृतं, दक्षाध्वरध्वंसिनम् ॥८॥

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्ण हे ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदास्तु ॥ इतीशाव्हानम् ॥

अधरस्यां दिशि

गद्य—ॐ नितांतनिस्तलशुभञ्जंबूद्धीपविपुलनिष्ठुरपृष्ठभागम् । विशिष्टसारविनिर्जितवज्रसारम् । निजनिरतिशयगतिवेगभर-
पराजितपवनगमनवेगावलेपम् । धराधरधरासागरादि सकलजगद्भारधारणधुरीणगुणप्रभावप्रवादप्रतीतम् । तिमितिग्मिलादिसकलजलचर-
विशेषैकपुरोगमपदमासादितवंतम् । सकलसर्वथैकांततत्त्ववदत्यंतासंभाव्यमानरोमांकुरकूर्माकारपरिणतं कूर्मवरमारुढम् ।

पृथ्वीछंद—

स्फटापरिगटारुणद्युमणिबिंबशुभन्मणिप्रभापटलपाटलीकृत सितान्गविभ्राजितम् ।

धृतांकुशमनंकुशं सुगुणसद्म पद्मायुतं फणाधरगणावृतं फणिमहीन्द्रमाव्हानये ॥९॥

ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्ण हे धरणीन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदास्तु ॥

ऊर्ध्वायां दिशि

गद्य—ॐ मदांधसुरसिंधुरसमालोकनसमुज्ज्वलितकोपानलबहिश्चलदुज्ज्वलज्वाला कलापशंकाकारिसरलारुणसटाटोपम् ।
सततसुधाकरकरसृतसुधासारसंजातधवलमानमिवातिधवलदेहमादधानम् । निजोभयपार्श्ववस्थितकरिमकरक्रूरसमशीलक्रव्याक्समालोकन-
समुद्भूतक्रोधानुरागपुंजायमानातिलोहितविलोचनविभूषणम् । मत्तमातंगघटाकोटिकरटतटविपाटनसमासक्तमुक्ताफल्गुप्रखरनखरातिभीकरम् ।
कलाशेष कलाधराकारानुकारिकुटिलदंष्ट्रागभस्तिभरविदारितवदन विवरांधकारम् । कल्पांतानल्पघनाधनध्वानशतसमवायसन्निभनितांत-
निष्ठुरनिजनिर्घोषसंत्रासितसकलदिग्गजेन्द्रम् । मृगैर्ब्रवरमारुढम् ॥

जिनगुणमणिमालां मौक्तिकानां च मालां । कुमुदकुसुममालां रोहिणीदृष्टिमालाम् ।

चिरमुरसि धरंतं, कुंदभासं सकुंतं । कविनुतगुणरुद्रं, चंद्रमाव्हानयेऽहम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं क्रों श्वेतवर्ण हे सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्..... । शांतिः सदास्तु ॥

जल से पूरित कुंभ में सप्तधान्यों से दशदिक्पालों के मंत्रों से पृथक्-पृथक् एक- एक मंत्र सात-सात बार बोलकर आहुति दें।

जल होमकुंड में आहुति

दिक्पालकानिति समर्च्य यवान्विता ये, गोधूममुद्गचणकाढकशालिमुद्गाः ।

तत्सप्तधान्यकृतमुष्टिभिरंबुकुंडे, सप्ताहुतीरिह दधे पृथगेव तेभ्यः ॥११॥

ॐ आं क्रों ह्रीं इंद्राय स्वाहा । अनेन जलपूरितकुंडे सप्तधान्यकरमुष्टिभिरिंद्राहुतिं विदधात् ॥ एवमग्न्यादिभ्योऽपि ॥

(ऐसे ही अग्नि आदि दिक्पालों के मंत्रों से आहुति देना ।)

दिक्पाला यूयमेतैर्बलिभिरतितरां प्राप्नुवन्तः प्रमोदम् । स्थाने स्थाने वसन्तो निजनिजविभवैर्निःप्रतीपप्रभावाः ।

घ्नन्तो विज्जोषमिज्याप्रसिततनुभृतामध्वरं पालयध्वम् । स्वर्गोक्षापादनैकक्षमजिनयजनं वर्द्धतामद्वितीयम् ॥१२॥ अष्टोषणार्घ्यः ॥

अथाभिषेकः (अभिषेक प्रारंभ)

वादित्रव्रातघोषे स्फुटमटति पटौ दिक्ताघाटदेशम् । साटोपं सन्नतंतूद्रभटरसघटनैः साधु गायंतु मंत्रम् ।

आनंदस्तोत्रमाशीर्वचनमतिमुदा मंगलं पाठयंतु । स्वीकुर्वन्त्वद्य भव्या भृशमुदितविधीनुद्धृतः पूर्णकुंभः ॥१३॥

ॐ ह्रीं कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा । कलशोद्धरणम् ।

जल से अभिषेक

गद्य—ॐ सरोवरसरित्ताकवापीकूपप्रभृतिपवित्रतरप्रसिद्धतीर्थनिकरसमानीतैः । स्वयंभूरमणसमुद्रगंगादिनदीपद्मादिसरोवरसंभूत-
जलत्वेन संकल्पमानैः । समंत्रयंत्रार्चनविधिसमासादितात्यंतपवित्रभावैः । परमावगाढसम्यक्त्वैरिव निसर्गनिर्मलत्वनिवासैः । दयामय-

धर्मैरिवजगत्प्रत्यंततापापनोदप्रवीणैः । जिनवदनवनजविनिर्गतपरमागमैरिवात्यंतशीतलैः । शब्दागमैरिव सकलजनजीवनैः कथंचित्पदांचित-
युक्त्यागमैरिव युक्तिविशेषवर्धमानैः । चतुरतरकाव्यरसैरिव मनोहरतमैः । पीयूषरसैरिव नितांततृप्तिनिष्पादकैः । सौजन्यगुणैरिव सर्वलोक-
प्रियतमैः । जाड्यापनोदार्थं सुवृत्तमाकलयद्भिभरिव रजतमहारजतैर्द्वनीलकुंभसंभृतिसंभूतसुवृत्तैरंभोभिरमीभिः ।

शार्दूलवि.—मेरोर्मूर्धनि मूर्ध्नि यस्य पयसां, धारां पयोवारिधेः । सौधर्मः प्रथमं जयेति परया, भक्त्या समापातयत् ।

ईशानादिसुरेश्वरास्तदनु यं, संस्नापयांश्चक्रिरे । तं देवं निजपंकपातनकृते, संस्नापयामो जिनम् ॥ किंच ॥ १२ ॥

यज्ज्ञानादिमहत्त्वनिर्जितमहत्त्वाकाशमेत्यांभसा । व्याजातन्वभिषिंचतीह जिनमित्याविष्कृताशंककैः ।

अच्छाच्छैरपि शीतलैः सुमधुरैस्तीर्थोपनीतैर्जलैः, शांत्यापादितवारिमूर्तिमनघं, देवं जिनं स्नापये ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां
द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । जलस्नपनम् ।

आहार्यस्फुटसौरभामलजलैः, संसिद्धिकामोदिभिः । श्रीखंडाक्षतपुष्पहव्यहिमरुदीपैः सुधूपैः फलैः ।

अर्घ्यैर्घातिविघातजातपरमा-नंदावबोधास्पदं । त्रैलोक्यार्चितमर्चयामि चरण-द्वंद्वं जिनेन्द्रप्रभोः ॥ १४ ॥ अर्चना ॥

यो नैर्मल्यगुणादिभूषिततनु-दीप्त्या जलेनोर्जसा । युक्तश्चानपवर्त्यकायुरनिशं सक्तश्च मुक्तिश्रियाम् ।

नार्थस्तस्य जगत्प्रभोः स्नपनतः, किंत्वाप्तुमेतान्गुणा-निद्राद्यैरभिषिक्त एष भगवान्पायादपायाज्जिनः ॥ १५ ॥

शांतिं च कांतिं विजयं विभूतिं, तुष्टिं च पुष्टिं सकलस्य जन्तोः ।

दीर्घायुरारोग्यमभीष्टसिद्धिं, कुर्याज्जिनस्नानजलप्रवाहः ॥ १६ ॥ आशीर्वादः ॥

नालिकेर रस से अभिषेक

गद्य—ॐ जिनेश्वरशासनानामिव सर्वप्रियतमानाम् पशूनामिव अविदितहृदयानामिव हृदयविदामापादितहृदयाल्हादानाम् । सज्जनानां
सरसहृदयानाम् । विद्याविशेषाणामिव विशिष्टजनदर्शनोपयोगानाम् । प्रत्यासन्ननिष्ठानामिव प्रशस्तरुचिवृत्तोपलभानाम् । परमात्मनामिव
सांसिद्धिकसुखामृतानाम् । निजोदरनिक्षिप्तसुधाकरबिंबसुधापरिपूरितहाटकहरिन्मणिपद्मरागकलशानुकारिणां । सुरलोकाकृतप्यमाण-
सुधापरिपूरितमणिमयकलशकरीरपरिकरितवसुधावधूकरोपमाननालिकेरमहीरुहसद्यः समानीतानाम्! स्निग्धमसृणमहदनतिजरठानुपहत-
प्रतिनवापरिस्तानतादिगुणगणभूषितानाम् नालिकेरफलानाम् ।

वसन्ततिलका— दोषत्रयोपशमशक्तिमुपेत्य सर्व-दोषोपशांतिकरशक्तिमपेक्ष्य जैनीम् ।

आलिङ्ग्य पादपतितैरिव विश्वभर्तुः, संस्नापयामि सलिलैर्विमलैर्जिनेन्द्रम् ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं.....नालिकेररसस्नपनम् ।

इक्षुरस अभिषेक

सर्वश्रेयोपहारी सततमतितरामिक्षुकोदंडदुष्टम् । हत्वा छित्वेक्षुचापं तदमलिनरसैर्यत्रनिष्पीडनोत्थैः ।

स्नातीव प्राप्तलोकत्रितयपतिपदो भाति येनाभिषिक्तः—पुंड्रेक्षूणां रसेन स्मरहरमनघं तेन संस्नापयामः ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं.....इक्षुरसस्नपनम् ।

आम्ररस अभिषेक

कनकमयकरंडन्यस्तपीयूषकल्पैः, परिणतसहकारव्रातजातै रसौधैः ।

कनककुसुममालाचारुतामुद्रहृदिः शमसुखरससांद्रं, स्नापयामो जिनेन्द्रम् ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं.....चूत—आम्ररसस्नपनम् ।

अंगूर, अनार आदि रसों का अभिषेक

खजूरा राजादनसंभवेन, द्राक्षोद्भवादाडिमसंचितेन ।

परेण वा शस्तफलोद्भवेन, संस्नापयामि स्वरसेन देवम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं.....नानाफलरसस्नपनम् ॥

आहार्यस्फुट इत्यर्चना । यो नैर्मल्य० इति ॥ शान्तिं च कांतिं इति च आशीर्वादः ।

घृत से अभिषेक

गद्य — ॐ निजनिरतिशयनित्यज्ञानानन्दमोक्षमार्गानभिज्ञसंसारदुःखदावानलददह्यमानवराकोद्धरणविषयमूर्तीभूतभगवत्परमानुग्रह-
मयानुरागसन्निभैः । अनिमित्तसकलजगदुपकारकरणस्मरणसमुज्जृम्भमाणजिनविषयभव्यजनभक्तिरागरमणीयैः । अविलंबितसमायोग-
कातरपरिनिःश्रेयसलक्ष्मीप्रस्थापितचारुचंपकमालाशंकावहैः । बहिरंतर्मलविलयविहितविशुद्धिसंपन्नतासमानगुणकृतानुरागेण समालिङ्ग्य
सर्वार्थप्रकाशनविशिष्टगुणविमर्शनेन भगवतः पादे पतद्भिरिव कमनीयकलधौतद्रवैः । सुवर्णकुम्भेषु सुवर्णभवेनाविवेचनीयमाकर्णपूर्णस्व-
सद्भावमात्मसौरभ्यविशेषं निवेदयमानैः । स्पर्शनमात्रेण रजतकुंभानु शातकुंभतापादनेन स्पर्शोपलप्रभावमाप्तात्कुर्वाणैः । सुस्वरसुकुमार्यवयो-
विज्ञानप्रजासर्गविषगदापहारसहजवीर्यसंस्कारानुरोधिवीर्यादिगुणविशेषविभूषितैरमीभिः ।

अनलबलविधानैः कांतितेजः प्रधानैः, तडिदुपमितपिंगैः सौरभाकृष्टभृगैः ।

बहुभिरपि नवीनैः, सारहय्यंगवीनैः, स्नपनविधिपरेंद्रं स्नापयायो जिनेंद्रम् ॥११॥ किंच ॥

सौरभ्यं वरमार्द्रता यदि सुवर्णस्येह संपद्यते । तत्तेन ह्युपमीयते घृतमिदं, नान्येन केनापि च ।

धीरैरित्यभिर्वर्णितेन महता, हय्यंगवीनेन वै । सेसिच्ये बलकांतिपुष्टिसुखदं, श्रेयस्करं श्रीजिनम् ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं.....घृतस्नपनम् ॥

आहार्यस्फुट० इत्यर्चना । यो नैर्मल्य० इति, शान्तिं च कांतिं० इति च आशीर्वादः ।

क्षीर (दूध) अभिषेक

गद्य — ॐ शरत्समयसमुदितनिशाकरकरनिकरनितातनिर्मलेन । दूरविलंबायमानायततरशरदभ्रशुभ्रविभ्रमविभ्राजितेन । गंगातरंग-
संघट्टसंजातडिंडीरपिंडपांडुरेण । सुरशुंडालशुंडादंड विपुलधवलधारापातेन । अनन्यसामान्य स्वादानुविद्धविशगुणविजितामृतेश्वरविशद-
वस्तुविस्ताराच्छुरितकेनावच्छिन्नेन । तीर्थकरपरमपुण्यवदसाधारणशुभार्थसार्थसंपादनसमर्थेन । जिनवदनवनज विनिर्गतदिव्यवाणी-
विलासतत्तदभिमतानेकविधपरिणामप्रवीणेन । चतुरकविप्रबंधवत्प्रसादमाधुर्यादिगुणप्रतिपादितसर्वजनचित्तचमत्कारेण । जिनाभिषवण-
विधिब्यापृतभव्यजनसद्यः परिणतागण्यपुण्यसंसिद्धिकामधेनुप्रथमप्रसवप्रवाहसंशयप्रतिपादकेन । संकल्पातीतदानवरोपस्त्रिंसाकुतूहलकल्पद्रुम-
कल्पमानसुधासारशंकावहेन । निजाचिंत्यदानगुणनिर्जित चिंतामणिप्रहितप्राभृतोदारहारलताकारेण । प्रेक्षकजनापेक्षणीयपराक्षयमोक्षलक्ष्मी-
कटाक्षवीक्षणसदक्षेण । जिनस्नानोपयोगिताजातजगत्रयोदरपरिपूरितहारनीहारकुंदेंदुकुमुदाकाशसंकाशविशदयशोलाभातिशयसंतुष्ट-
क्षीरोदजनोपायविकृतक्षीरपूरनिभेन क्षीरपूरेण ।

यज्जन्मस्नानदुग्धप्लवभरकलितो राजते स्माद्रिराजः । क्षीरोदेनोपगूढो दृढमिव बहुशोऽदृष्टपूर्वोद्य दृष्टः ।

सौधमैशानमध्यः स्वमपि धुरधुरायोगवद्यो बभासे । तं देवं स्नातकख्यं त्रिदशपरिवृढैः स्नातकं स्नापयामि ॥१३॥ किंच ॥

आकृष्टैवममर्त्यकैरसदृशं, देवस्य सेवाकृते । मत्वेति स्वयमेत्य तं स्नपयति, क्षीरांबुराशिर्ध्रुवम् ।

इत्युद्भावितशंकनैर्बहुशुभैः, क्षीरैर्जिनं स्नापये । क्षीराभासतनुं सुमेरुशिखरे, क्षीराभिषेकाप्तये ॥१४॥

ॐ ह्रीं.....क्षीरस्नपनम् ॥

आहार्यस्फुट० इत्यर्चना ॥ यो नैर्मल्य इति ॥ शान्तिं च कांतिं० इति च आशीर्वादः ।

दधि अभिषेक

गद्य—ॐ निजसमुद्भिन्निरवकाशीकृतजिनांतरवकाशबहिश्चलदविरलशुक्ललेश्याविसरविलासेन । निरवधिप्रवर्द्धमानशुद्धशुक्लध्यान-
बंधुरेण जिनपतिप्रसादासादितसुरासुरमुख्यमूर्धचूडामणिभावोपलंभसंतुष्टतदंकमालिप्रधानपरतदीयविशदयशोरश्मि संकाशेन । हस्तद्वयोद्धृत-
गलितामरनिजरूपनिराकृतनिर्जराहितसुमनोवर्षशोभातिशयेन । रागद्वेषमोहाक्रांतसर्वथैकांतवादिवाणीस्खलितशतविलोकविभूतसर्वज्ञवीत-
रागस्याद्वादिजिनोपदिष्टवाणीस्फुटाट्टाहासलक्ष्मीजुष्टेन । नितांतघनीभूतहिमखंडपांडुरेण । रजतमहीधरशिलातलकठिनेन स्फुटस्फटिकशिलाभ्यं-
तरेकांतनिर्मलेन । चंद्रकरचंद्रकांतोपलमेदुरेण । द्रप्स्यदधिविषयसोत्प्रासहासेनेव । वलक्षगुवलक्षरूपेणोपलक्षितेन । स्मललौकिकमंगलमुख्यता-
वलेपनेनेव प्रभूतस्तब्धभावेन । स्वकीयबहुलसौरभप्रसरपरराजित परिपक्वदधित्येन दध्ना ।

गुरुमपि गुरुणामन्यं, मंगलं मंगलेन । शुचिमपि शुचिनोच्चैः, शीतलं शीतलेन ।

हितमखिलहितेनात्यंतरुच्येन रुच्यम् । जिनपमवृजिनेन, स्नातकं स्नापयामि ॥ १५ ॥ किं च ॥

लेश्या किं बहिरुद्गता जिनपतेः, शुक्ला समाजृम्भणा । दंतर्मातुमशक्तितः किमथवा, ध्यानं नु शुक्लाद्वह्यम् ।

किंवा केवलनामधीः किमथवा, तीर्थकरं पुण्यमि-त्याशंकेन शशांकदीधितिरुचा, दध्ना जिनं स्नापये ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं.....दधिस्नपनम् ॥

आहार्यस्फुटमित्यर्चना । यो नैर्मल्यामिति, शान्तिं च कांतिं चेति वाशीर्वादः ।

सुगंधितचूर्ण अभिषेक

कर्कोलैलामलयजहिमग्रंथिपर्णागरुश्री-जातीपत्रिप्रभृतिपुरभिद्रव्यसंसिद्धचूर्णैः ।

स्वर्मोक्षश्रीविषयविलसद्वश्यचूर्णैरमीभि-र्देवस्यामुष्य चूर्णीकृतदुरघगिरेरंगमुद्धूलयामः ॥ १७ ॥

गद्य—ॐ कर्कोलैलालवंगप्रियंगवादि सुगंधिद्रव्यश्लक्षसंषिष्टशुष्कचूर्णैर्जिनप्रतिमालग्नघृतक्षीरदधिप्रवहणलेपापनोदं विदधामि । मम

भगवतोऽर्हतः संततानुबद्धदुरितोपलेपनं अपनुदंतु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सुगंधचूर्णेन जिनांगमुद्धर्तयामि स्वाहा । सुगंधचूर्णोद्धर्तनम् ।

(चावल के आटे का लेपन, इसमें कपूर-चंदन आदि मिश्रित हैं ।)

कमलसदकपिष्टैः पुण्यरेणूत्कराभैः, मलयजरससाद्रैरिन्दुधूलीविमिश्रैः ।

जिनतनुमुपलिप्योद्धर्तयामः समंतादखिलमसितुकामा स्नानजस्नेहलेपम् ॥ १८ ॥

ॐ कर्पूरद्रव्यचंदनद्रव्यसंमिश्रजलार्द्रशालेयपिष्टेन जिनांगमुद्धर्तयामि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं पवित्रतरसुगंधशालिपिष्टेन जिनांगमुद्धर्तयामि स्वाहा । शालिपिष्टोद्धर्तनम् ॥

कषायजल—सर्वौषधि से अभिषेक

(आम, बड़, पीपल, खैर, उदुंबर, पिंपली, जामुन आदि वृक्षों की छाल के चूर्ण से या सर्वौषधि से अभिषेक करें । यह अभिषेक संसाररूपी घोर ज्वर का नाश करने वाला है ।)

चूतन्यग्रोधबोधिद्रुमखदिरवरोदुंबरप्लक्षजंबू- मुख्यानां सद्रुमाणां त्वगुपहितजलैः साधुसिद्धैः कषायैः ।

सर्वैस्त्यक्तं कषायैर्निरवधिपरमस्वास्थ्यमाप्तं महाप्तम् । संसारापारघोरज्वरशमनकृते स्नापयामो जिनैन्द्रम् ॥ १९ ॥

ॐ प्लक्षन्यग्रोधाश्वत्थोदुंबराम्रखदिरजंबूप्रभृतिशुभद्रमसमित्वक्कषायपरिपूर्णकलशैरभिषेचयामि विगतकषायविशेषं विदधातु नः स्वाहा । कषायोदकस्नपनम् ॥

अन्नपिंडावतरणविधि

एक थाल में पांच वर्ण के भात लेवें । ओदन के पाँच पिंड पाँच वर्ण के बनावें । लाल, हरे, काले, श्वेत और पीले ऐसे पांच रंग के पिंड लेकर भगवान के सामने उतारकर रख दें ।

जिनतनुगतमेनं स्नेहलेपं व्यपोह्य । प्रवरकनकपात्रे स्थापितैरानुपूर्व्या ।

अरुणहरितकृष्णश्वेतपीतान्नपिंडैः । पृथगिह गतदोषं देवमावर्तयामि ॥ २० ॥ वर्णान्नावतरणम् ॥

नीराजनाविधि

(पुष्प, जल, अक्षत, दही आदि उत्तम पदार्थ और प्रज्वलित दर्भ या कर्पूर, इनसे मंगल आरती उतारें।)

कुसुमसदकमुख्यैर्मंगलार्थैः परोक्तैर्दशभिरिह सहैव स्थापितैः स्वर्णपात्रे ।

जितवृजिनजिनेंद्रं दर्भपूलोभयाग्र-ज्वलदनलशिखाभिः साधु नीराजयामः ॥२१॥ मंगलावतरणम् ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये ॥

इति स्नानोत्तरोपस्कारः ॥ अर्घ्यं ।

गद्य—ॐ सकलभुवनजनादेयगुणजातजातरूपमयैरपि निजांगसितातिसितनूतनवसनसमावृतैः । बहुधान्यप्रतिष्ठितैरपि निज-विशालोदरविवरप्रतिष्ठितापरिमितभुवनैः । निजनिखिलांगन्यस्तप्रशस्तसूत्रैरपि सूत्रन्यासबहिर्भूतैः । महनीयमहत्वप्रसिद्धैरपि सजातीय-मध्यगणनावर्जितैः । विशिष्टतमसुवृत्तजुष्टैरपि परप्रसिद्धमंगलभावैः । अनवद्यजीवनैरपि मणिकनकासक्तजीवनैः । परित्यक्त-महाशयैरपिकमलोन्मुखैः । आकंठपरिपूर्णाभृतैरपि वदनगतफलैः । विरुद्धविविधधर्माध्यासितैरपि विबुधजनसमर्चितैश्चतुर्भिरमीभिः ।

चतुष्कोणकलशाभिषेक

चत्वारः सारतोयांबुधय उत घनाः पुष्करावर्तकाद्याः । निर्यद्गुधाः स्तना वा किमु सुरसुरभेरित्यमाशंक्यमानैः ।

अच्छाच्छस्वाददीव्यत्परिमलविलसत्तीर्थवारिप्रवाहैः । कुंभैरेभिश्चतुर्भिर्युगपदभिषवं कुर्महे भव्यबंधोः ॥२२॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरचतुःकोणकुंभपरिपूर्णजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । चतुःकोणकुंभजलस्नपनम् ।

आहार्यस्फुट० इत्यर्चना । यो नैर्मल्य इति, शांतिं च कांतिं चेति चाशीर्वादः ।

मध्य कुंभाभिषेक

गद्य—ॐ निजांगसंगतनिखिलनिरतिशयगंधद्रव्यनव्यदिव्यामोदप्रसरसमाकृष्टमंजुगुंजन्मधुकरमधुरारावबधिरितदिगंतरालेन । द्विविध-मंगलालंकारविशेषविराजमानमहामूर्तिनिर्वर्तितसर्वजननयनानंदनेन । सर्वतोवभासमानमाननीयविशदगुणकलाप समुत्पादितस्फुरजलनचित-चमत्कारेण । अनन्यसाधारणमहत्वमहोन्नतिमहालक्ष्मीसमालक्षितेन । शिष्टजनसमुदयसमीहितसंपादनसमुत्पन्नशिष्टप्रतिपालनेन । दुःसह-दुरितव्रातविध्वंसनरूपदुष्टनिग्रहनिर्गलेन । चतुर्भद्रोपायशक्तिरत्नत्रयसाधनभावसमासादित सकलविबुधजनपूजनेन । मङ्गलकादिसमस्तसार-वस्तुविशेषनिवासेन । जिनमहामहसाधन प्रधानभावकृतार्थीकृतनिजजीवनेन । समलंकृतखिलसुवृत्तकलशसभामध्यमध्यासनेन । सकलकलश-राजश्रियातिशुभतानेन मध्यकुंभेन ।

सुगंधित जलाभिषेक

सकलभुवननाथं तं जिनेंद्रं सुरेन्द्रै-रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः ।

यदभिषवणवारां बिंदुरेकोऽपि नृणां प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्भुक्तिलक्ष्मीः ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खंड खंड दह दह हन हन पच पच पाचय पाचय हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं व्हः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षौं क्षं क्षः क्षीं हां ह्रीं हूं हैं हैं हों हौं हं हः ह्रीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ मम श्रीरस्तु सिद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु । कल्याणमस्तु । स्वाहा । बृहच्छांतिमंत्रेण गंधोदकाभिषेकं कुर्यात् ।

इस मध्यकलश से उपर्युक्त मंत्र बोलते हुए शांतिधारा करें ।

आहार्यस्फुट० इत्यर्चना । यो नैर्मल्य० इति शांतिं च कांतिमिति च आशीर्वादः ।

शार्दूलवि.—घातिव्रातविधातजातविपुल—श्रीकेवलज्योतिषो । देवस्यास्य पवित्रगात्रकलनात्, पूतं हितं मंगलम् ।

कुर्याद्भव्यभवार्तिदावशमनं, स्वर्मोक्षलक्ष्मीफल-प्रोद्यद्ब्रह्मलताभिवर्धनमिदं, सद्गंधगंधोदकम् ॥१४॥ आशीर्वादः ॥

यस्योदारदयस्य जन्म हरतो, जन्माभिषेकोत्सवम् । चारौ मेरुमहीधरस्य शिखरे, दुग्धैस्तु दुग्धोदधेः ॥

चक्रे शक्रगणो महागुणनिधेः, श्रीपादपद्मद्वयम्, तस्यैकादशधा महेन महता-माराध्यमाराधये ॥२५॥ पुष्पांजलिः ।

यत्रागाधविशाल० इत्येकादशधा महामहः ॥ यहां १०७ पेज से अष्टद्वय से पूजा करें ।

अष्टाधिकाशीतिसुरावृतानां, इष्टार्थदानां नवदेवतानाम् ।

आराधनं चात्र महामहांगं, श्रीपीठयंत्रे विधिना विधास्ये ॥२६॥ पुष्पांजलिः ॥

विहारकाले जगदीश्वराणामित्यादि वायुमेघाग्निनागानभ्यर्चयेत् ॥ यहां ११४ पेज से वायुकुमार आदि की पूजा करें ।

कर्णिकाभ्यंतरे

(आठदल के कमल की कर्णिका में अर्हत पूजा)

शार्दूलवि.—घातिप्रक्षयजाक्षयोर्योर्जितमहा-धीसौख्यदृक्शक्तयः-कल्याणानि महान्ति पंच परम-श्रीप्रातिहार्याष्टकम् ।

प्राप्ता ये भुवनस्तुतैरतिशयै-र्युक्ताश्चतुस्त्रिंशता, तानर्हाम्यहमर्हतस्त्रिजगती, साम्राज्यलक्ष्मीपतीन् ॥१९॥

गद्य— ॐ हं नितांतशुद्धबुद्धस्वभावनिजात्मनिखिलप्रदेशानादिघटितनिराघाटघातिघोराटवीसाटोपशिखापटलदावानलायमन द्वितीय-शुक्लध्याननिःपातितारिहननरजोरहस्यहननसंजातजगत्त्रयविधेयमहार्हणनिवासोद्भूताचिंत्यार्हंत्यपदमधिष्ठितानाम् । स्तुतो विजृम्भमाणसाकार-निराकारकेवलज्ञानदर्शनयुगपत्प्रवृत्तिव्यवस्थितप्रमाण प्रतिपन्नसर्वज्ञत्वानाम् । शक्तिव्यक्तिविभागावस्थित समस्तवस्तुबिधाकारकिर्मीरित-सकलसंसारिमुक्तात्मस्वरूपसंकरव्यतिकरव्यपेतसाक्षात्करणशक्तिरूपपरमाश्चर्याणाम् । व्याबाधव्यपेता चिंत्यसारमानोपमानतीतनित्यनिजात्म-जातानंदमंदिराणाम् । त्रिभुवनैकाधिपतित्वव्यंजकविशिष्टाष्टमहाप्रातिहार्यादिबहिरंगमहालक्ष्मीसमालक्षितानाम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तम-शरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानां भगवदहर्त्परमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः श्रीमज्जिनेद्रान्यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः अर्घ्यं..... ।

पूर्वदलाभ्यंतरे (पूर्वदल में सिद्ध पूजा)

(ॐ) बाह्याभ्यंतरहेतुजातसुदृशः, पूर्वश्रुतैरादिमा-च्छुक्लध्यानयुगाद्विजित्य दुरितं, लब्ध्वा सयोगिश्रियम् ।

प्राप्यायोगिपदं परेण सकलं, निर्जित्य कर्मोत्करम्-शुक्लध्यानयुगेन सिद्धसुगुणान्सिद्धान्समाराधये ॥२॥

गद्य— ॐ ह्रीं निरवशेषावरणविश्लेषाविष्कृतचरमानंतानंतनिर्भासजाज्वलत्त्रिकालविषयलोकालोकवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायक्रम-करणव्यवधानातिक्रमसाक्षात्करणदक्षाक्षूणकेवलाख्यपरंज्योतिः प्रमुखस्वाभाविकानंतगुणविशेषविभूषितानाम् । अशेषभोग्यद्रव्यद्रव्य-कर्मनिरपेक्षस्वात्मोपादानमात्रसंजातातिशयसकलात्मप्रदेशनित्यव्यापकस्य सर्वदा सर्वबाधावृद्धिक्षयप्रतीक्षदुःखोदयमानोपमानपरित्यक्तस्य । सकलचक्रिकुरुभवार्यफणींद्रसुरैद्राहमिन्द्रत्रिकालसंभवसुखानंतगुणितक्षणपर्यायस्य । सम्यक्सकलशास्त्र विदुष्टांतसाधितसंसारनाटकावलोकन-संभावितसर्वकालशाश्वतपरमोत्कृष्टसुखस्यैकनिवासानाम् । नैगमनयातिरूढतपोनयसंयमचारित्रज्ञानदर्शनसिद्धप्रसिद्धव्यवहाराणाम् । सकललोकैकमंगलोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानाम् । भगवत्सिद्धपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीसिद्धनाथान् यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

दक्षिणदलाभ्यंतरे (दक्षिण दल में आचार्यपूजा)

कुमततिमिरसूर्यान्सारगांभीर्यधैर्यान् । परहितनिजकार्यान्पंचभेदोद्धचर्यान् ।

विनयनविधिवीर्यान् पूजयामो धृतार्यान् । मुनिजनपरिवार्यान् श्रीमदाचार्यवर्यान् ॥३॥

गद्य — ॐ हूं निजनिरतिशयतपश्चरणप्रभावोपलब्धबुद्धिर्बुद्धिप्रकृष्टश्रुतज्ञानावरणवीर्यांतरायक्षयोपशमद्वाराविभूतसकल-श्रुतज्ञानस्वपरपक्षदक्षमलक्षणगुणांतरादानोपस्कारदूरापास्तसमस्तविनेयसंशयविपर्ययावसानव्यवसानदुस्तरतमः स्तोमानाम् । संयतजन-मनश्चमत्कारकरणप्रवीणाचारवत्पाद्यष्टकाचेलक्यादिदशकतपोद्धिषट्कावश्यकषट्कलक्षणानन्यसाधारणषट्त्रिंशद्गुणरत्नरत्नाकराणाम् । शुद्धचिदात्मस्वरूपनिजात्मनिर्विकल्पसमाधिजनितसारसुखास्वादनलपटानामपिपरहितापादनैकतानमानसानाम् । निःश्रेयसामोघ-निबंधनज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्याचारानंतचतुष्टयलाभाय स्वयमाचरतामपि परानाचारयताम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानां भगवदाचार्यपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गांघिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्री धर्मसूरीन्यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

पश्चिमदलाभ्यंतरे (पश्चिम दल में उपाध्याय पूजा)

दुःखावर्तसहस्रदुस्तरमहा-संसारघोरांबुधि-क्षिप्रप्रोत्तरणार्थिसार्थजिनवाक्यामोघपोतप्रदान् ।

नित्यानंदनिवासनिश्चलचिदात्मात्मानिशाभ्यासतः-सोभ्यासीभवदक्षयामृतपदान्, श्रीपाठकार्यान्यजे ॥४॥

गद्य — ॐ हौं अनादिविद्याविलासदुस्तरतमः पटलपटावगुठितजगदूर्जितज्योतीरूपजगदेकसाराचाराद्यं सामायिकाद्युपांगसंगताप्त-संतानप्रवृत्तप्रमाणभूतभूतदयैकतानादिप्रपंचप्रवचनपारावारपारंगतानाम् । अक्षयात्यक्षमोक्षसुखैकसाधकतमांतरंगतपः सनाथीकृतपरा-काष्ठाधिष्ठितानेकविधबहिरंगतपस्तप्यमानानाम् । दृष्टेष्टविरोधादिदोषास्युष्टप्रसादमाधुर्यादिगुणाश्लिष्ट विशिष्टातितुष्टिप्रदसूक्तिसुनय-प्रमाणात्मकयुक्तियुक्ताक्षेपणीप्रभृति चतुर्विधधर्मोपदेशामृतवृष्टि सन्तर्पित भव्यसस्यानाम् । शुद्धोपयोगानुविद्धध्यानाधीन शुद्धबुद्ध-स्वभावानुभूतिसमुद्भूतशुद्धसुखाब्धि विवक्षणापि मुमुक्षुजनमोक्षमार्गोपदेशकरणबद्धकक्षाणाम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतसप्तकर्मभूमि भूतभवद्भव्यानां भगवदुपाध्यायपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गांघिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीपाठकेन्द्रान्यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

उत्तरदिग्दले च (उत्तरदिशा के दल में सर्वसाधु पूजा)

त्यक्त्वा संगमशेषमक्षयपदोत्कंठास्तपो दुष्करम् । कुर्वन्तः प्रतिसंहतेन्द्रियमरुत्त्वान्ताः स्फुरच्चेतनाः ॥

ध्यानं धर्म्यमथापि शुक्लमपि ये, कुर्वन्ति सर्वर्द्धयः । सर्वार्च्यानिह सर्वसंयमगुणैस्तान् सर्वसाधून्यजे ॥५॥

गद्य — ॐ हः सर्वज्ञवीतरागप्रकाशितानादिप्रवचनहृदयान्तस्तत्त्वैकलोलोभावनिर्वर्तितनिर्विकल्पशुद्धस्वात्मसंवेदनरूपसमिद्ध-ध्यानैकतानमानसानाम् ॥ इतरयतिदुरासदातिविस्मयकराचिन्त्यप्रभावसत्तर्द्धिसमुत्पादनपवित्रतरचारित्राणाम् । परमोत्तमधर्मध्यानप्रथम-शुक्लध्यानान्यतरशुद्धध्यानसामर्थ्यसंपदमानागण्यपुण्यास्रवसहचरसकलपापकर्म संवरनिर्जराप्रबन्धानाम् । निजान्तःप्रतिफलितसमस्तवस्तु-विस्तारविपुलकेवलज्ञानोदयोपधातधातिसंघातधातनसमर्थसहजचैतन्यशक्तिव्यंजकात्मदेहादिभेदज्ञानसंततिप्रवृत्तिप्रबुद्ध्यानोदीपितनिजानन्द-रसास्वादक्षणावधीरितमोक्षाभिलाषाणाम् । सकललोकैकमंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् । सप्ततिसमेतशतकर्मभूमिभूतभवद्भव्यानाम् भगवत्साधुपरमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गांघिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीसर्वसाधून्यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

आग्नेयदलाभ्यन्तरे च (आग्नेय विदिशा के दल में जिनधर्मपूजा)

संसारोग्रमहाटवीस्फुटमरुत्संवृद्धदावानलं । संपूर्णामरवृत्तधीरुचिमयं, लोकत्रयी दुर्लभम् ॥

लभ्यं नूनमयोगिकेवलगुण-स्थानातिमैकक्षणे । साक्षान्मोक्षनिबन्धनं निरुपमं धर्मं समभ्यर्चये ॥६॥

गद्य—ॐ दर्शनमोहज्ञानावरणवीर्यान्तरायचारित्र मोहप्रमुख प्रतिबंधोपशमादिसंजातोपशमादि स्वरूप प्रादेश सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र भेद रूपस्य । तद्भेद भावना विशेष प्रबन्ध प्रादुर्भावित प्रादेशिका भेदरूपसमिद्ध धर्म्यशुक्ल ध्यानबलेन तदभेद रूपमात्म प्रदेश व्यापकं विधाय कृतकृत्यतया निवृत्त व्यापारस्य । निरवशेषकर्म संघात निर्मूल क्षणानुष्करकर्म कर्मठस्य । समस्त पुरुषार्थ पराकाष्ठाधिष्ठित निःश्रेयसाद्युदय परंपरानिबन्धनस्य । मंगल लोकोत्तमशरणभूतस्य केवलप्रज्ञप्त धर्मस्याष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीजैनधर्मं यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

नैऋत्यदिग्दलाभ्यन्तरे च (नैऋत्य विदिशा के दल में जिनागम पूजा)

अपौरुषेयानखिलानदोषा-नशेषविद्भिर्विहितप्रकाशान् ।

प्रकाशितार्थान्प्रयजे प्रमाणं, प्रवेदयद्वादशदिव्यवेदान् ॥७॥

गद्य—ॐ निखिलजगदेकसार निरतिशय परमगंभीराणाम्, अमोघस्यात्कार लांछितत्वेन परा प्रभृष्याणामपि पर प्रघर्षकाणाम् । स्थानत्रयाविसंवादित्वेन प्रमाणभूतानामखिलबाधाजाललंघनजंघालानाम् । अनादिपरंपरायातत्वेन अपौरुषेयाणाम् । मंगलपूर्ववस्तु प्रभृतिभेद भेदोपलक्षितानाम् । प्रमाण नयनिक्षेप निर्देशादिसदसदादिजीवस्थानगुणस्थानमार्गणा स्थानाधिगमोपाय प्रज्ञाप्ति षड्द्रव्यपंचास्तिकाय सप्त तत्त्वनवपदार्थानाम् । सकलवर्णाश्रमाचार व्यवहार प्रायश्चित्तादि विधि प्रतिपादका नामपरस्पर व्याहत वाक्यार्थानाम् । नित्यमहादिवि-विधयज्ञकर्मनिवेदकानाम् । अखिलभूतदैकतानानामभ्युदयफलावसानानाम् । ब्रह्मलोकविच्छिन्नसंप्रदायानाम् । इहपरपरपरमेष्ठि-संतानप्रकाशितानाम् । अतिविततमिथ्यांधकारवृत्तलोकैकज्योतीरूपाणाम् । राजर्षिदेवर्षिपरमर्षिब्रह्मर्षिर्भावाप्रच्छादिभिरूपासितानाम् । भूतं भवंतं भविष्यंतं सूक्ष्मं व्यवहितं विप्रकृष्टमेवंजातीयकमर्थमशेषमावेदयतामन्वर्थवे दव्यपदेशानाम् । आत्मवृत्तस्थानसमवायव्याख्याप्रज्ञप्ति-ज्ञातृकथोपासकाध्ययनांतकृद्दशौपपादिक दशप्रश्नव्याकरणविपाकसूत्रदृष्टिवादाख्यद्वादशानाम् । मंगललोकोत्तमशरण भूतानामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीजैनवाक्यं यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

वायव्यदिग्दले च (वायव्य विदिशा के दल में जिनचैत्य पूजा)

कोट्योर्हत्प्रतिमाशतानि नवतिः, पंचोत्तरा विंशतिः । पंचाशत्त्रियुता जगत्सु गुणिता, लक्षा सहस्राणि तु ॥

सप्ताग्राणि च विंशतिर्नवशतीद्यूनं शतार्थं मता, स्ता नित्या पुरुतुंगपूर्वमुखसत्पर्यकबंधान्यजे ॥८॥

गद्य—ॐ सर्वज्ञवीतरागपरमाप्तपदप्रतिष्ठाधिष्ठितभगवदहर्द्भट्टारकस्थापनान्यासनिवासतापुण्यगुणप्रायप्रचोदितत्रिजगज्जन-विधीयमानपूजातिशयास्पदानाम् । नागयक्षामरद्वात्रिंशन्मिथुनकरकलितचतुषष्टिचामराद्यष्टप्रातिहार्यविशिष्टानाम् । विनेलकुंतलकुलिशदशन-प्रवालाधरपल्लवोपमानकरचरणतलसमुल्लसितानाम् । श्रीमच्छ्रुतदेवीसर्वाणहसनत्कुमारयक्षप्रतिमोपलक्षितपीठोपकंठानाम् । प्रत्येकाष्ट-शतभृंगारादिमंगलद्रव्याष्टकगर्भगर्भावासमध्यमध्यासीनानाम् । वदंतीनामिव पश्यंतीनामिव हसंतीनामिव निजासेचनरूपातिशयेन सकलजनमनश्चमत्कारमातन्वतीनाम् । आसन्नभव्यताद्यंतरंगसाधनसंपन्नभयजनसम्यक्त्वोत्पत्तिबहिरंगनिमित्तमहिमानमापादयन्तीनाम् । अलव्यशुद्धोपयोगिनामार्चानिर्माण स्थापनार्चनापराणाम् । पुण्यापुण्यास्रवसरतत्साधकवृद्धिक्षयसाक्षात्फलचतुष्टयमापादयंतीनाम् । मंगललोकोत्तमशरणभूतानामहर्द्भट्टारक प्रतिमानामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीजैनबिंबान्यजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

ऐशान्यांतरदिग्दले च (ऐशान्य विदिशा के दल में जिनचैत्यालय पूजा)

भवनजवनजानां ज्योतिषां कल्पजानां, मणिमयनिलयस्था येहमिन्द्रालयस्थाः ।

बहुविभवयुता ये ये च मध्ये त्रिलोके । जिनपतिनिलयास्ताँस्ताँश्च सर्वान्महामि ॥६॥

गद्य — ॐ रजतमहारजतैर्निलमरकतमाणिक्यमयमहामानभासुरभितिस्तंभशालिशिखरमंडपमहामानस्तंभाद्यगोपांगसंगताकीर्ण-पंचवर्णप्रभाजालप्रभाविहितविचित्रांबरविलासांबरानाम् । संततानादिसंसिद्धहटद्धाटकीयधूपघटपेटकास्य निर्यद्विश्वतोविसर्पिधूम-लेखाजालबहलपरिमलप्रकरसुरभी कृतसकलदिङ्मुखानाम् । वंदारुसुरासुरवृंदारकजयजयारावसुरनर्तकीकरकंकणझंकारद्विगुम्फितानादिघटित-घंटाजालझणझणध्वानबधिरी कृतनिखिलदिङ्मंडलानाम् । तमः समूलसमुत्पाटनपटुतरावलोपलिप्सागतगभस्तिमालिमंडलायमनहटद्धाटकीय-घटितपेटकोपघटितचित्तचमत्कारानाम् । चक्रचक्रायमाननानाविधोपकरणनिचितनीलतलनिर्जितज्योतिर्गणाकितगगनांगणानाम् । समुत्तुंग-सुवर्णभित्तिभागालंबमानमणिमालामुषितमेरु गिरिपार्श्वशोभातिशयानाम् । विचित्रनिर्माणवदनाभिषेकनर्तनसंगीतावलोकनादि-मंडपाभिमंडितचैत्यमहीमहितानाम् । कुंजराति कुंजरादि दशविधध्वजराजीसभाजिताद्यद्वितीयशालान्तरध्वजधराविराजितानाम् । चतुर्दिग्गताशोकसप्तच्छदचंपकाप्रचतुर्वर्णांचिततृतीयबहिः शालांतरगतवननावनिविनूतानाम् । चतुर्वीथीपर्यंतगतमहामानस्तंभाहित-प्रतितीर्थजनमानस्तंभानाम् । सहजसकलपरिष्काराणामकृत्रिमाणामहार्यविविधालंकाराणामपि कृत्रिमाणां । मंगललोकोत्तमशरणभूतानां भगवज्जिनचैत्यालयानामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रदोर्गाधिगंधैः सितैः । सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः । धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलै-श्चैत्यालयांसंयजे ॥ (अर्घ्य चढ़ावें)

अथ प्रथममंडलाभ्यंतरे (प्रथम मंडल के अंदर अर्घ्य)

ये सांसिद्धिकदिव्यभूषणलसद्-दिव्यांगदीप्त्युज्ज्वला । ये शिष्टाष्टगुणाश्च येऽवधिमिता, बोधं भवप्रत्यङ्ग ।

ये नंदादितिथिप्रवर्तनविधौ, दक्षाश्च यक्षादयः । तानेताञ्जनयज्ञविघ्नविहतौ, न्यक्षेण यक्ष्ये क्षमान् ॥१॥

ॐ धर्माधर्मानुभोगपरिच्छिन्नपर्यंतासंख्यातप्रदेशलोकाकाशप्रतिप्रदेशैकैकव्यवस्थितरत्नराशिसंकाशवर्तनालक्षणकालाणुमुख्य-कालबलोपबृंहितक्रियारूपक्रियाविशेषपरिच्छिद्यमानसमयादिस्वरूपव्यवहारकालप्रभेदपंचदशतिथिस्वाम्यतन्निबंधनजयापजयला-भालाभादिसकललोकयात्राप्रवर्तनदक्षपक्षादितिथिदेवतानाम् । सकलसंपत्संपादकदयामय महायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमाव्हनादिपुरः सरसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ।

ॐ ह्रीं यक्ष-वैश्वानर-राक्षस-नधृत-पन्नग-असुर-सुकुमार-पितृ-विश्वमालि-चमर-वैरोचन-महाविद्य-मार-विश्वेश्वर-पिंडाशिनामधेयाः तिथिदेवाः सर्वेऽप्यायात सर्वेऽप्यायात यानायुधयुवतिजनैः सार्धं । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इमं सार्धं चरुममृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृणीत गृणीत स्वाहा ।

अथ द्वितीयमंडलाभ्यंतरे (द्वितीय मंडल के अंदर अर्घ्य)

रक्ताकं धवलेंदुमारमरुणं, पीतं ससौम्यं गुरुम् । शुक्रं शुक्लमलिप्रभं शनिमहिं, केतुं सुवर्णार्चनैः ।

पुंजेषूचितमंडलोपरिकृतेष्वास्थाप्य मूलान्वितम् । दर्भं संस्कृतमत्र साधु धिनुयां, तत्तत्सवर्णार्चनैः ॥२॥

गद्य — ॐ महीतलोपरिष्ठादष्टशताशीत्युत्तराष्टशतत्रिंशदशषण्णवत्यूननवशतनवशतिप्रमाणयोजनातिक्रान्ताकाशप्रदेशसंचाराणां । एकषष्टिभागीकृतप्रमाणयोजनाष्टचत्वारिंशद्भागषट्पंशाशद्भागक्रोशार्धार्धक्रोशकिंचिन्न्यूनक्रोशक्रोशतदर्थोपारविस्ताराणां । प्रत्येकं चतुःसहस्र संख्यतत्संख्यद्विद्विसहस्रप्रमाणपूर्वादिदिग्गतसिंहसिंधुरमहोक्षजटिलाश्वाकाराभियोग्यामरनीयमानानिलप्रतिष्ठितविमाना-नधितिष्ठताम् । संवत्सरसहस्रतच्छतसहस्राधिकपल्यपल्यार्थार्धपल्यपल्यशतवत्सरधिकपल्यपल्यार्थार्धमानोत्कृष्टायुषाम् । तापसकापालिक-बौद्धऋषिब्रह्मचारिपरिव्राट्पाशुपतश्रमणमुनिपूजाप्रसादवरदानाम् । आदित्यसोमांगारबुधबृहस्पतिशुक्रशनिश्चराणाम् । अरिष्टच्छायाविष्ट-किंचिन्न्यूनयोजनविस्तारविमानाधिष्ठिततद्भुजग्रन्थिचतुरंगुलचंद्रार्कविमानषट्षण्मासांताच्छादकराहुकेतुसहितानाम् । नागभूतयक्षतृकृत-देहार्तिधनहानिस्थानच्युतिरसादिवैषम्योपशांतिकरपूजाविशेषसानुग्रहनवग्रहाणाम् । सकल संपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूह-

व्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसपर्याक्रमं यथाक्रममुपक्रमामहे ।

ॐ ह्रीं आदित्यसोमांगारक-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु-केतुनामनवगृहदेवाः सर्वेऽप्यायात सर्वेऽप्यायात याना-
युधयुवतिजनैः सार्धं । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इमं सार्धं चरुममृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृणीत गृणीत ।

इत्थं सारसपर्यायाद्य महिता, यूयं प्रसन्नाः स्त नः । सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, सूर्यादिसर्वे ग्रहाः । पूर्णांगान्विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोर्षये ॥ पूर्णार्घः ॥

तृतीयमंडलाभ्यंतरे (तीसरे मंडल के अभ्यंतर में अर्घ्य)

यक्षान्यजामो जिनमार्गरक्षा-दक्षान्सदा भव्यजनैकपक्षान् ।

निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षान्-प्रत्यक्षमत्यक्षसुखे विलक्षान् ॥३॥

गद्य — ॐ कनककलधौतांजनालिघनाभश्यामश्वेतावदातधवलपांडुरपालाशलोहितप्रवालाभकालानिलासितचित्रसितारुण-
कृष्णश्याममुद्गप्रभाणाम् । वृषभकरिशिखावलदंतावलवैनतेयमृगमृगेंद्रकमठकंजाक्षसितपक्षमयूरमकरमत्स्यपोत्रिपतत्रिशंखकुंजर-
वृषवृषभपुष्पककच्छपानेकपसमारुढानाम् । भगवदादिब्रह्मादितीर्थकरापसव्यपार्श्वविहितविन्यासानाम् । अव्युत्पन्नतावच्छिन्नसम्यक्त्व-
सनाथजिनभक्तजनैः शश्वदैहिकफलोपलिप्सया समुपास्यमानानाम् । स्वर्गापवर्गानिसर्गमार्गजिनमार्गप्रतिकूलानुकूलजननिग्रहानुग्रहसमग्र-
विधानदक्षप्रतीक्ष्यगोमुखादिचतुर्विंशतियक्षाणाम् । सकलसंपत्संपादकदयामयमहायागप्रत्यूहव्यूहातिक्रमार्थमावाहनादिपुरःसरसपर्याक्रमं
यथाक्रममुपक्रमामहे ।

ॐ ह्रीं गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबुर-पुष्प-मातंग-श्याम-अजित-ब्रह्म-ईश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-
किन्नर-गरुड-गंधर्व-खेचर-कुबेर-वरुण-भकुटि-सर्वाणह-धरणेन्द्र-मातंगयक्षाः सर्वे प्यायात सर्वे प्यायात
यानायुधयुवतिजनैः सार्धं । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इमं सार्धं चरुममृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृणीत गृणीत ।

इत्थं सारसपर्यायाद्य महिता यूयं प्रसन्नाः स्त नः, सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वर विघ्नमाघ्नत द्रुतं सर्वेऽपि यक्षेश्वराः, पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोर्षये ॥

चतुर्थमंडलाभ्यंतरे (चतुर्थ मंडल के अभ्यंतर में अर्घ्य)

यक्षीः सपक्षीकृतभव्यलोका, लोकाधिकैश्वर्यनिवासभूताः ।

भूतानुकंपादिगुणानुमोदा, मोदांचिताः पूजनया धिनोमि ॥४॥

गद्य — ॐ जातरूपजांबूनदरजतमहारजतकनककार्तस्वरकुंदेंदुकांतिकालपालाशगांगेयगरुत्मताश्मगर्भभर्मप्रवालहेमहिरण्यहाटक-
हरिन्मणितपनीयछायहरितहरित्पद्मरागेंद्रनीलप्रभाणाम् । महोत्पललोहासनशकुंतसितपक्षकरितुरगसौरभेयसैरिभकूर्मकोल-
कुरंगकेसरिकुक्कुटाहिमानसावासवाहनानाम् । वृषभादिभगवदहर्द्भद्वारकसव्यभागाविहितनिवेशनानाम् । तत्तदहर्द्भपूजापूर्वकस्वस्वपूजाविधि-
विधायिनामखिलसमीहितसंपादनोत्तालानाम् । यजमानयाजकजनपदजनेश्वरविघ्नपरिहारद्वारेण सर्वज्ञयज्ञसहकारितामाचरंतीनाम् ।
परमगंभीरामोघस्यात्कारलांछनजिनशासनविद्वेषिविशसनव्याजुंभमाण प्रभावचक्रकेश्वरीप्रभृतिशासनदेवतानाम् । सकलसंपत्संपादक ० ।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरीप्रभृति यक्ष्यः सर्वा अप्यायात अप्यायात ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इमं सार्धं चरुममृतमिव
स्वस्तिकं यज्ञभागं गृणीत गृणीत ।

इत्थं सारपर्यायाः ॥ देव्यश्च यक्ष्योऽखिलाः ॥

पंचमंडलाभ्यंतरे (पांचवें मंडल के अभ्यंतर में अर्घ्य)

श्रीमत्सर्वजनीनजैनसवन-प्रत्यूहविध्वंसन- प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहित-प्रख्यातिपूजांचितान् ।

स्वस्वातुच्छपरिच्छदान्दशदिशा-मन्याप्रधृष्यामितान् । दिक्पालाञ्जगदेकपालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये ॥५॥

गद्य—ॐ विमलकलधौतखचितमणिमयोचिताभरणभूषितैरावतच्छागरक्ताक्षकरिमकरतुरंगपुष्पकपुष्पांगशाक्कराकारवाहना-
रूढानाम् । नितांतचारुचामीकरातिबालभास्करांजनपुंजतमःस्तोमसुधाकरसुवर्णस्वर्णशशांकसंकाशशरीरप्रभाभिरामाम् । कुलिशजाज्वलज्वाला-
जालप्रचंडदंडमुद्गराहिपाशपादपशक्तित्रिशूलाप्रतिहतप्रभावप्रहरणानाम् । कमनीयकामिनीकुलललामभूतशचीस्वाहा-छाया-
नैऋती-वरुणानी-वायुवेगी-धनदेवी-पार्वती-नाम-महादेवीमुखांबुजदत्तदृष्टीनाम् । पाकशासनपावक-कृतांत-कौणप-पाशपाणि-पवन
पार्वतीशसख-पार्वतीप्रियाभिधानानाम् । लोकापालानां कूर्मगतसितांगसांकुशपद्मावतीप्रिय फणीश्वरकंठीरवारूढपांडुरतनुकुंतकररोहिणी
जीवितेश्वरसहितानाम् । सकलसंपत्संपादक० ॥

ॐ ह्रीं इंद्राग्नि प्रभृतिदिक्पालदेवाः सर्वेऽप्यायात सर्वेऽप्यायात । यानायुधयुवतिजनैः सार्धं । ॐ भूर्भुवः स्वः
स्वाहा । इमं सार्धं चरुममृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृणीत गृणीत ॥

इत्थं सारसपर्यया० सर्वेऽपि यक्षेश्वराः ।

चतुर्द्वाराभ्यंतरे च

द्वे रक्षसी द्वावसुरावही द्वौ । द्वौ वैनतेयाविति साष्टसंख्याः ।

दौवारिकानिष्टबलिप्रदानात्, पूर्वादिदिग्द्वारगतान्धिनोमि ॥

ॐ सर्वाभीष्टफलदविशिष्टेष्टजिनेष्टियष्ट्रयाजकराष्ट्र चतुःसंघविघ्नविघातनाखंडितचंडिमाडंबरकोदण्डधरदंडायमान-
दंडकुंडलितपाशप्रचंडगदामंडितभुजादंडपूजामंडलपूर्वादिद्वारपालनप्रयुक्तद्वारपालकानाम् । सकलसंपत्सम्पादक० ।

ॐ ह्रीं रक्षोसुराहिगरुडान्वयोद्भवद्विद्विसंख्याष्टद्वारपालकाः सर्वेऽप्यायात सर्वेऽप्यायात इदमर्घ्यं गृणीत गृणीत ॥

इत्थं सार० ॥ सर्वे प्रतीहारकाः ॥ वोपये ॥ पूर्णार्घ्यः ॥

स्तुतिः

दिग्विन्यस्तक्षिबीजाक्षरलिखितलकारं ठकारावृतांगम् । द्विर्धात्रीमंडलांतर्निहितमुपहितब्रह्मलींकारकोष्ठम् ।
ग्लौं क्षं ठं वेष्टितांतं क्षितितलमहितं ध्यायति प्रत्यहं यो । देवं ह्रस्व्यूंकाररूपं रिपुकुलमखिलं तस्य संस्तंभेति ॥१॥
ऊर्ध्वाधः पाशदत्तांकुशमितरदिशा योजितं क्लीं सुबीजं । जंभामोहातकोष्ठज्वलनपुरपुटाग्रांतरौ ब्लूंसमेतम् ।
ओं ब्लें धात्रे वषट्ठितमवनिपुरांतर्गतं देव यस्त्वाम् ॥ ह्रींकारं ध्यायतीद्धद्युतिमखिलजगद्वश्यतां तस्य याति ॥२॥

भक्तिपाठ विधि

पूर्वकथित विधि से चैत्यभक्ति (पृष्ठ ३४), पंचगुरुभक्ति (पृष्ठ ३५), शांतिभक्ति (पृष्ठ ३५) पढ़ें ।

आवेद्यासनतः क्रियाप्रणमनं, पश्चाद्विधेया स्थितिः । त्र्यावर्तैकशिरोनतिः प्रथमतः, साम्यं तदन्तेपि च ।

कायोत्सर्गविधिर्नतिस्तवनमा-योज्यं च तत्साम्यवत् । कार्याभक्तिरभीप्सिता व्यवसिता-वालोचनाप्यासनात् ॥३॥

इति लक्षणतः कार्या महाभिषवणक्रिया ।

याजकैश्चैत्यसत्पंचगुरुशांतीशभक्तितः ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः असि आ उसा नवदेवताः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः । इति विसर्जनम् ।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः असि आ उसा अष्टाशीतिपरिवारदेवाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः । इति यंत्रदेवताविसर्जनम् ।

तदन्ते चार्चनावेरं स्वस्थाने विनिवेशयेत् । इसके बाद प्रतिमाजी मूलवेदी में विराजमान कर दें ।

द्वारपालबलिः

शिलामध्येऽथ नासाया, मध्ये सव्येतराग्रयोः ।

शिलाया अपि षड्द्वार-देवताभ्यो बलिं ददे ॥४॥

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवाराः हे क्षेत्रपालाः श्रेयोगंधर्वाः किन्नराः प्रेता भूताः सर्वेऽपि भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इमं सार्घ्यं चरुममृतमिव स्वस्तिकं यज्ञभागं गृह्णीत गृह्णीत ।

॥ इति द्वारपालबलिः ॥

दिक्पालबलिः

मध्येगृहं विधातारं, अर्चयेत्सलिलादिभिः । अष्टौ दिक्पालकान्दिक्षु, बलिपीठेऽपदाभरान् ॥५॥

ॐ ह्रीं यानायुधयुवतिजनसहितब्रह्मन् ॐ भूर्भुवः स्वः इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।

॥ इति ब्रह्मबलिः ॥

ॐ ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे इंद्र! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे अग्ने! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे यम! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों श्यामवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे नैऋत्य! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे वरुण! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे पवन! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे कुबेर! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।
 ॐ ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार हे ईशान! एहि एहि । इमं सार्घ्यं गृहाण गृहाण ।

॥ इति दिक्पालबलिः ॥

ॐ ह्रीं क्रों अपदः सर्वे देवा इमं बलिं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं । इत्यपददेवेभ्यो बलिं बलिपीठे दद्यात् । इत्यपददेवताक्षिः ।

अथ श्रीबलिः

गद्य—ॐ समस्ताभ्युदयनिःश्रेयससमुद्भूतदुस्तरसुखनिस्तीरनिजानित्यादिनित्यमहोक्तगद्येन पद्येन च (पृष्ठ ३८) पूर्वोक्तप्रकारेण मंगिणीतालादिना श्रीबलिं दद्यात् । अथ मूलवेराग्रतः स्वेष्टप्रार्थना । जय जय जिन शाश्वत्० । शांतिः शिरोधृतोदिपद्यत्रये कृतस्तुतिपाठाच्छुभ-
 ध्यानम् । प्रक्षीणेत्यादिना जिनेश्वरविसर्जनम् । प्रमादादित्यादिना क्षमापणापूर्वकं पंचांगप्रणामः । मोहध्वांतविक्षणमित्यादिना गमनापृच्छनम् ।

इत्थं विधत्ते जिनपुंगवस्य, महाभिषेकोत्सवसंविधिं यः ।

मेरौ सुरेन्द्रैश्च महाभिषेकं, प्रपद्यतेऽमुत्र स धर्मनेमिः ॥६॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि महाभिषेकविधिर्नाम

त्रयोदशः परिच्छेदः ।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेव विरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के

ग्रंथ में महाभिषेकविधि को कहने वाला

यह तेरहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।



अथ चतुर्दशः परिच्छेदः

अथैकादशविधकुंभन्यासविधिः

उक्तानां वक्ष्यमाणानां घटानां न्याससिद्ध्ये । एकादशविधान्वक्ष्ये, कुंभन्यासान्यथाक्रमम् ॥११॥
 नवानां तत्र कुंभानां न्यासः प्रथम इष्यते । षोडशानां द्वितीयः स्यात्तृतीयः पंचविंशतेः ॥१२॥
 वैकपंचाशतस्तुयै एकाशीतेस्तु पंचमः । षष्ठोऽष्टशतकुंभानां द्विनिघ्नानां तु सप्तमः ॥१३॥
 त्रिनिघ्नानां चतुर्घ्नानामष्टमो नवमः क्रमात् । सचतुः पंचशत्यास्तु दशमः परिकीर्तितः ॥१४॥
 अष्टोत्तरसहस्रस्य न्यास एकादशो मतः । षष्ठादिसर्वन्यासेषु मध्ये वीथिद्वयं त्यजेत् ॥१५॥
 पादेनाधिकमंत्ये तन्न्यूनं षष्ठे च सप्तमे । सूत्राणां वक्ष्यमाणानामर्थं पूर्वाग्रमर्थकम् ॥१६॥
 उत्तराग्रं भवेत्तैस्तु कुर्यात्कुंभप्रमांशकान् । प्रागेव सर्वकुंभानां प्रमाणं प्रतिपादितम् ॥१७॥
 पूर्वपूर्वाग्रसूत्राणि पिष्टलिप्तानि पातयेत् । प्रथमे त्वष्टसूत्राणि सर्वांशेषु घटान्यसेत् ॥१८॥
 न्यासे द्वितीये द्विः सप्तसूत्राण्यत्र घटान्यसेत् । कोणेष्वेकैकमाशासु द्वौ द्वौ च चतुरोत्तरे ॥१९॥
 तृतीये षोडशैव स्युः सूत्राण्यत्र घटा मताः । प्रतिदिक् त्रय एकैको विदिक्षु स्यान्वांतरे ॥११०॥
 चतुर्थे विंशतिसूत्राण्यत्र संस्थापयेद्घटान् । चतुरः प्रतिकोणं स्यात्प्रतिदिक्षण्णवांतरे ॥१११॥
 चतु विंशतिसूत्राणि पंचमे स्थाप्येत् । प्रतिदिक्प्रतिकोणं च मध्ये च कलशान्नवान् ॥११२॥
 षष्ठे सूत्राणि तु तिंशद्वाह्वदंडे चतुर्थके । षष्ठे वृत्तं घटान्सप्त स्थापयेदेकमंतरे ॥११३॥
 सप्तमेऽक्ष्येत्सूत्राणि न्यसेद्वाह्वत्रये घटान् । षष्ठे च नवमे भागे वृत्तं सप्तांतरेकम् ॥११४॥
 अष्टमे खेषु सूत्राणि बाह्यात्षष्ठात्रये युगम् । दशमे तिथिसंख्याः स्युर्वृत्तमेकोत्तरे घटः ॥११५॥
 नवमेष्टसु सूत्राणि बाह्यात्षष्ठात्रये युगे । दशमे द्वादशे वृत्तं तिथिमांस्त्रंतरेकः ॥११६॥
 दशमेष्टसु सूत्राणि बाह्याच्चतुर्षु सप्तमात् । त्रितये द्वादशैकैकावृत्तिमेकोत्तरे घटः ॥११७॥
 वसुगिरिमितिसूत्राण्यतिमे पंचकैत्यादतिपदयुगमांशे तच्चतुष्के त्रिके च ।
 तिथिमितिकलशांश्चाष्टादशांश्च सुवृत्तं पृथुतरघटमेकं स्थापयेत्सर्वमध्ये ॥११८॥
 बाह्यावरणकुंभेषु पूर्वाद्याशाक्रमात्सुधीः । जलादिस्नपनद्रव्यं सर्वं च परिपूरयेत् ॥११९॥
 अंतः कुंभेषु सर्वेषु केवलं विमलं जलम् । मध्यकुंभयुते न्यासे कोणकुंभाश्च संमताः ॥१२०॥
 इत्थं निवेशितघटोदरपूरितैर्यः । पंचामृतैर्जिनपतेः कुरुतेऽभिषेकम् ॥
 सोयं सुरैः सुरगिरावभिषेकमेत्य लोकार्चितः खलु भविष्यति धर्मनेमिः ॥१२१॥

इस अध्याय में ग्यारह प्रकार से कुंभरचना करने की विधि कहेंगे। प्रथम कुंभरचना में नौ कुंभ होते हैं। दूसरे में सोलह कुंभ हैं। तीसरे में पच्चीस कुंभ हैं। चौथे में उनचास कुंभ हैं। पांचवीं रचना में इक्यासी कुंभ हैं। छठी रचना में एक सौ आठ कुंभ हैं। सातवीं रचना में दो सौ सोलह कुंभ हैं। आठवीं रचना में तीन सौ चौबीस कुंभ हैं। नवमीं रचना में चार सौ बत्तीस कुंभ हैं। दशवीं रचना में पांच सौ चार कुंभ हैं एवं ग्यारहवीं रचना में एक हजार आठ कुंभ हैं। (ये चार्ट परिशिष्ट में दिये गये हैं।)

इन कोष्ठकों के बनाने की विधि बताने हैं।

छठी रचना से लेकर ग्यारहवीं रचनापर्यंत मध्यभाग में दो लाइन डालना चाहिए। पहली रचना में आड़ी चार और खड़ी चार रेखा होनी चाहिए। डोरी रंगकर रेखा बना सकते हैं।

पहली रचना में आठ घरों में आठ कुंभ रखें।

दूसरी रचना में आड़ी सात और खड़ी सात ऐसी रेखा बनावे। इसमें छत्तीस घर हैं। इनमें कोनों के घरों में एक-एक कुंभ रखना, मध्य की दिशाओं के घरों में दो-दो कुंभ रखें, मध्य के घरों में चार कुंभ रखें।

तीसरी रचना में आड़ी आठ और खड़ी आठ ऐसी सोलह रेखा होती हैं। प्रत्येक दिशा में तीन-तीन कुंभ, विदिशा में एक-एक कुंभ और मध्यभाग में नौ कुंभ ऐसे पच्चीस कुंभ होते हैं।

चौथी रचना में आड़ी दश व खड़ी दश रेखा होती हैं। प्रत्येक कोनों में चार-चार कुंभ, प्रत्येक दिशा में छह-छह कुंभ और

मध्यभाग में नौ-नौ कुंभ होते हैं।

पांचवीं रचना में आड़ी बारह और खड़ी बारह ऐसी चौबीस रेखा होती हैं। इसमें प्रत्येक दिशा में प्रत्येक कोनों पर और मध्य भाग में सर्वत्र नौ-नौ कुंभ होते हैं। ऐसे इक्कासी कुंभ होते हैं।

छठी रचना में आड़ी पंद्रह और खड़ी पन्द्रह ऐसी तीस रेखा होती हैं। इसमें बाहरी दो-दो घरों में, चौथे घर में और छठे घर में सात-सात कुंभ रहते हैं और मध्य भाग में एक कुंभ रखना चाहिए। इसमें १०८ कुंभ हैं।

सातवीं रचना में खड़ी इक्कीस और आड़ी इक्कीस रेखायें होती हैं। इनमें बाहर की तीन-तीन पंक्तियों में वैसे ही छठी व नवमी पंक्ति में सात-सात कुंभ रखना और मध्यभाग में एक कुंभ स्थापित करना। इसमें दो सौ सोलह (२१६) कुंभ होते हैं।

आठवीं रचना में ३२४ कुंभ होते हैं।

नवमी रचना में ४३२ कुंभ होते हैं।

दशवीं रचना में ५०४ कुंभ होते हैं।

ग्यारहवीं रचना में १००८ कुंभ होते हैं।

छठी रचना से लेकर ग्यारहवीं रचनापर्यंत मध्यभाग में दो लाइन डालें। पहली रचना में आड़ी चार रेखा और खड़ी चार रेखा बनावें। डोरी में रंग लगाकर उसके द्वारा जमीन पर आड़ी और खड़ी रेखायें बनाई जाती हैं। इस प्रकार से कुंभ स्थापित करने के लिए घर बनावें।

पहली रचना में आठ घरों में आठ कुंभ स्थापित करें।

दूसरी रचना में आड़ी सात और खड़ी सात ऐसी रेखा बनावें। इनमें छत्तीस घर बन जाते हैं। इसके कोनों पर घरों में एक-एक कुंभ स्थापित करें। मध्य की दिशाओं के घरों में दो-दो कुंभ रखें, मध्य के घरों में चार कुंभ रखें।

तीसरी रचना में सोलह सूत्र हैं अर्थात् आड़ी आठ और खड़ी आठ ऐसी सोलह रेखा बनावें। प्रत्येक दिशाओं में तीन-तीन कुंभ, विदिशाओं में एक-एक कुंभ और मध्यभाग में नौ ऐसे २५ कुंभ स्थापित करें।

चौथी रचना में २० सूत्र हैं। आड़ी १० और खड़ी १० ऐसी २० रेखायें बनावें। प्रत्येक कोनों पर चार-चार कुंभ होते हैं। प्रत्येक दिशाओं में छह-छह कुंभ होते हैं और मध्यभाग में नौ-नौ कुंभ होते हैं।

पांचवीं रचना में आड़ी १२ और खड़ी १२ ऐसी चौबीस रेखा बनाना है। इसमें प्रत्येक दिशाओं में प्रत्येक कोनों पर और मध्य भाग में नौ-नौ कुंभ स्थापित करते हैं।

छठी रचना में आड़ी १५ एवं खड़ी १५ ऐसी ३० रेखायें होती हैं। बाहर के दो-दो घरों में, चौथे घर में और छठे घर में सात-सात कुंभ रहते हैं तथा मध्य में एक कुंभ रहता है।

सातवीं रचना में आड़ी २१ और खड़ी २१ ऐसी ४२ रेखायें बनाना है। बाहर की तीन-तीन पंक्तियों में, छठी और नवमी पंक्तियों में सात-सात कुंभ स्थापित करना।

(इन सभी कुंभों की रचना कैसे की जाती है इनको परिशिष्ट में छपे हुए चित्रों से समझना चाहिए। यहां कल्पना आवे, इसलिये संक्षेप में यह लिखा गया है।)

सभी रचनाओं में आवरणों के कुंभों में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से जलादि अभिषेक की सामग्री भरकर रखना चाहिए और अंत के कुंभों में शुद्ध जल भरना चाहिए।

इस प्रकार पंचामृतों से भरे हुए इन कुंभों से जो जिनेन्द्रदेव का अभिषेक करते हैं, उनका मेरुपर्वत पर देवों के द्वारा अभिषेक होता है और वे जगत्पूज्य होकर धर्मरूपी चक्र को चलाने वाले हो जाते हैं। १११ से २११।

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचित प्रतिष्ठातिलकनाम्नि

कलशन्यासविधिर्नाम चतुर्दशः परिच्छेदः।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेवविरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के

ग्रंथ में कलशस्थापनाविधि को कहने वाला यह

चौदहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ।



अथ पंचदशः परिच्छेदः

अथ मध्यमप्रतिष्ठाविधिः

मध्यमप्रतिष्ठाविधानमनुवर्णयिष्यामः ॥ तद्यथा ॥

अर्धेन्द्रनदियोगीन्द्र-प्रतिष्ठाविधिलक्ष्मणः । प्रयोगपरिपाटीयमुच्यते संप्रदायतः ॥११॥
 प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं मध्यकल्पविवक्षया । सप्तमे ऽन्हि विधेयोऽङ्कुरार्पणः प्रथमोत्सवः ॥१२॥
 द्वितीयेन्हि ततः कुर्यात्पंचमंडलपूजया । त्रिसंध्यमर्हत्स्नानं च पूजनं श्रीबलिक्रियां ॥१३॥
 शांतिहोमं च तद्वात्रौ सर्वविघ्नप्रशांतये । एवं प्रतिदिनं कार्यं बुधैरवभृतावधेः ॥१४॥
 विघ्नशांतिकरः शांतिहोमो नित्यं मुनेर्मतः । रोगशांत्यर्थिनः शस्तमौषधं केन वार्यते ॥१५॥
 तृतीये ऽन्हि ध्वजारोहं द्वितीयोत्सवसंज्ञकम् । विदध्यादथ तद्वात्रौ भेरीताडनसंविधिम् ॥१६॥
 चतुर्थस्नानपर्यंतं श्रीबलेः समनंतरम् । ध्वजदेवबलिं कुर्यात्पूजादौ घोषणामपि ॥१७॥
 चतुर्थे दिवसे प्राणहे लघुशांतिकपूर्वकम् । मंडपेन्द्रं प्रतिष्ठाप्य भूषयेद्भूषणोत्करैः ॥१८॥
 पंचमेन्हि ततः प्राणहे बृहच्छान्तिकपूर्वकम् । वेदीद्वयं प्रतिष्ठाप्य भूषयेद्भूषणोत्करैः ॥१९॥
 वेदीमंडपनिर्माणं मुनेरस्यापि संमतम् । प्रस्तुतार्थक्रियासिद्धेरन्यथानुपपत्तितः ॥२०॥
 वास्तुपूजान्वितं तच्च निर्माणं शोभनं मतं । शांतिकं वासुपूजात्र भवेद्बलिविहारयुक् ॥२१॥
 अथ तीर्थोदकादानं कार्यं षष्ठे दिने दिवा । अचाल्यसौधबिंबानां प्रतिष्ठा चेद्विधित्सिता ॥२२॥
 चाल्यर्चान्यसने नेष्टं तस्य तत्स्थानयापनात् । त्रिधोपवासं तदनु स्वीकुर्याद्गुरुसाक्षिकम् ॥२३॥
 जलाधिवासनं कुर्यात्तद्वात्रौ होमकर्म च । विमानस्य चतुर्दिक्षु शांतिशुध्यभिधानकम् ॥२४॥
 विमानशुद्धिं कृत्वाथ तद्विंबस्य यथोचितम् । दर्भशय्याविधिं कुर्यात्प्रत्यूषस्यंतरालये ॥२५॥
 सप्तमे ऽन्हि महायंत्रमाराध्य च विभूष्य च । न्यसेत्स्नपनवेद्यग्रे त्रयोदशशतं घटान् ॥२६॥
 तद्वेद्यां स्थापयेत्पीठं पंचमंडलमूर्धनि ॥

॥ इति पूर्वक्रिया ॥

स्नानव्रतादिशुद्धः सन्धृतवस्त्रोपवीतकः ॥ १७ ॥
 चतुःप्रतींद्रसहितः कृतेर्यपथशोधनः । आचार्यानुज्ञया सिद्धभक्तितं च सकलीक्रियाम् ॥१८॥
 कृत्वा समंत्रमिज्यांगपात्रद्वयं विशोध्य च । भूषणैर्बहुभिः स्वं च प्रतींद्रानपि भूषयेत् ॥१९॥
 महाभिषेकविधिना स्थापिते भद्रविष्टरे । दर्भशय्यास्थितं बिंबमानीय स्थापयेत्ततः ॥२०॥
 पंचमंडलमाराध्य स्थापयेदष्टतद्घटैः । नीराज्याष्टविधद्रव्यैर्जप्त्वाष्टशतपुष्पकैः ॥२१॥
 पुनः पंचोपचारेण स्नापयेच्छेषतद्घटैः । चतुर्विधावतरणं चतुःकुंभाभिषेचनम् ॥२२॥
 पुष्पांजलिः सुगंधोदस्नपनं च समर्चनम् । तद्विंबस्थापनं मूलवेदीयंत्राग्रविष्टरे ॥२३॥
 मूलबिंबासने स्वर्णशलाकाविनिवेशनम् । संप्रोक्षणं चतुःकुंडप्रतिष्ठाहोमसंविधिः ॥२४॥
 मुखवस्त्रावृत्तिः कांडस्थापनं चाष्टधार्चनम् । नानासुमंगलद्रव्यार्चनं पुष्पजपस्तपः ॥२५॥
 पुष्पजप्तसुगंधादिद्रव्यैः सौवर्णतालैः । नयनोन्मीलनं तेन गंधेनोद्धतं ततः ॥२६॥
 मुखवस्त्रापसरणं पुष्पांजलिरथाशिषः । आराधनं नृत्यगीतवाद्यैर्नानाविधस्तवैः ॥२७॥
 चैत्यादिभक्तित्रितयस्तवनं संघपूजनम् । वेदिस्थदेवतापूजाधामदिक्पालकार्चनम् ॥२८॥
 षड्द्वारदेवताभ्यर्चा ग्रामदिक्पालपूजनम् । विहारः परया भूत्या तदुघेषणपूर्वकम् ॥२९॥
 विहारानंतरं पंचविंशत्या स्नपनं घटैः । क्षमापणनमस्कारपूर्वं सर्वविसर्जनम् ॥३०॥
 ततस्तिष्ठेषु संध्यासु नित्यं नित्यमहोत्सवः । चतुर्थे ऽन्हि महास्नानविधिश्चावभृतावधेः ॥३१॥

अभिषेकक्रियां कृत्वा समभ्यर्च्य श्रुतं गुरुम्। गंधोदकभृतं कुंभं यष्ट्रे दद्यान्मुदाशिषः॥३२॥
 शेषां च सर्वभक्ष्येभ्यो दद्यात्प्रागुदिताशिषः। यष्टा संपूजयेत्संघं यथाशक्ति यथोचितम्॥३३॥
 अथावरोह्य तद्रात्रौ प्रासादे स्थापयेद् ध्वजम्। पूर्ववत्तेन भात्येष सर्वेषां तच्छुभाय च॥३४॥
 विसर्जनं निर्जराणामध्यात्मध्यासनं विभोः। शांतिधारां ततः शांतिबलिकर्मक्षमापणम्॥३५॥
 गमनापृच्छन् पश्चात्कृतकर्मफलार्थिनाम्। आशीर्दानविधिं दीक्षामोचनं गुरुसाक्षिकम्॥३६॥
 शांतिभक्तिं च कृत्वेन्द्रः प्रतिष्ठां तां समापयेत्। निष्ठापितप्रतिष्ठं तं यष्टेन्द्रं बहु मानयेत्॥३७॥
 सत्कृत्य भक्त्या भव्यास्तं सर्वे यांतु यथायथम्। प्रतिष्ठादिवसे कुर्यादुत्सवं मासि मासि च॥३८॥
 आवर्षादथ ऊर्ध्वं तु वर्षे वर्षे च शक्तितः। उत्सवानां विधिर्भेदोऽप्युत्तरत्राभिधीयते॥३९॥
 इति मध्यप्रतिष्ठाया विधिः सर्वो निरूपितः। अनुक्तमन्यतो ग्राह्यमुचितं लक्षणादिकम्॥४०॥
 प्रागुदीरित एवात्र प्रयोगोऽपि प्रयुज्यताम्। यथोचितं समस्तानां कर्मणां कर्मकोविदैः॥४१॥

उपजाति छंद— इत्थं विधत्ते बहुभक्तियुक्तो, मध्यक्रमेणापि जिनप्रतिष्ठाम्॥

यो देशकालाद्युचितामुपैति, स धर्मनेमिः परमप्रतिष्ठाम्॥४२॥

अब मध्यम प्रतिष्ठा विधि को कहते हैं।

अब इन्द्रनन्दि योगीन्द्र की प्रतिष्ठाविधि का अनुसरण करके प्राचीन प्रतिष्ठा शास्त्रों के अनुसार मध्यम प्रतिष्ठाविधि का वर्णन करते हैं॥११॥

प्रतिष्ठा दिवस— केवलज्ञान कल्याणक से सातवें दिन पूर्व अंकुरारोपण विधि करें। यह सातवें दिन पूर्व से प्रतिष्ठा का प्रारंभिक उत्सव मध्यम प्रतिष्ठाविधि की अपेक्षा है। अंकुरारोपण से दूसरे दिन पंचमंडलपूजा करें, तीनों कालों में अर्हत देव का अभिषेक पूजन और श्रीबलि क्रिया करें॥२-३॥

उसी रात्रि में सर्वविघ्न की शान्ति के लिए शांतिहोम करें। ऐसे ही अवभृत्स्नान—अंतिम महाभिषेक होने तक प्रतिदिन शांतिहोम करने का विधान है। श्री इंद्रनन्दि आचार्य के मतानुसार विघ्नशान्ति को करने वाला शांतिहोम नित्य ही करना चाहिए क्योंकि 'रोगों की शान्ति के लिए उत्तम औषधि लेना नहीं' ऐसा भला कौन कहेगा?

तीसरे दिन 'ध्वजारोहण' नाम से दूसरा उत्सव करना और उसी दिन रात्रि में भेरीताड़न विधि करना। चतुर्थ अभिषेकपर्यंत 'श्रीबलि' के अनंतर 'ध्वजदेव बलि' विधि करें। चतुर्थ दिवस प्रातःकाल लघुशांतिक विधि करके मंडपप्रतिष्ठा करके वस्त्र, भूषण आदि के द्वारा मंडप को सुशोभित करना चाहिए। पांचवें दिवस प्रातःकाल बृहद् शांतिकविधिपूर्वक दोनों वेदी की प्रतिष्ठा करके अनेक भूषणों से मंडप भूषित करें॥४ से ६॥

वेदी और मंडप बनवाना यह इन्द्रनन्दि आचार्य को मान्य है क्योंकि पूर्वोक्त क्रियायें इनके बिना होती नहीं हैं। उन वेदी आदि का निर्माण वास्तु पूजा सहित करना। उत्तम बलिविहार सहित ही शांतिक विधि और वास्तु पूजा है।

इसके बाद छठे दिन दिवस में तीर्थोदकादान—घटयात्रा विधि करना। स्थिर जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा को करने की इच्छा से यह विधि है। चलजिनबिंब प्रतिष्ठा में इस विधि की आवश्यकता नहीं है। अनंतर प्रतिष्ठा तक गुरुसाक्षीपूर्वक अन्न, खाद्य और लेह्य इन तीन प्रकार के आहार का त्याग कराकर त्रिविध उपवास दें। उसी दिन जलाधिवासन विधि करावें, उसी दिन रात्रि में शांतिहोम करें और मंदिर की चारों दिशाओं में शांतिशुद्धि—विमानशुद्धि करावें।

विमानशुद्धि के अनंतर उस प्रतिष्ठेय प्रतिमा की दर्भशय्या विधि करें। यह विधि प्रत्यूष में अर्थात् प्रभात के पहले-पहले ही कर दें। सातवें दिन महामंत्र की आराधना करके स्नानवेदी के सामने एक सौ तेरह (११३) घड़ों की स्थापना करें। पंचमंडल के मध्य में "स्नानपीठ" की स्थापना करें॥१० से १६॥

यह पूर्वक्रिया हुई।

सर्वप्रथम प्रतिष्ठाचार्य स्नान, व्रतादि से शुद्ध होकर शुद्ध वस्त्र और यज्ञोपवीत धारण कर चार सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यों के साथ ईर्ष्यापथशुद्धि करे। पुनः आचार्य देव की आज्ञा लेकर सिद्धभक्ति और सकलीकरण क्रिया करें। अनंतर मंत्रपूर्वक पूजा के पात्र और पूजाद्रव्य की शुद्धि करके बहुत प्रकार के भूषणों से अपने को और सहप्रतिष्ठाचार्यों को भी भूषित करें। महाभिषेकविधिपूर्वक दर्भशय्या

में स्थित जिनबिंब को लाकर भद्रसिंहासन पर स्थापित करें। पंचमंडल की आराधना करके आठ कलशों से प्रतिमका अभिषेक करें। अनंतर आठ प्रकार के द्रव्यों से नीराजना करके १०८ पुष्पों से जाप करें। पुनः शेष कलशों से पंचोपचार विधि से अभिषेक करें। ११७ से २१॥

अनंतर चार प्रकार की अवतरण विधि करके चार कोण कुंभों से अभिषेक करके पुष्पांजलि करें। सुगंधित कलश जल से अभिषेक करके पूजा करें। पुनः मूलवेदी में यंत्र के आगे सिंहासन पर जिनबिंब की स्थापना करें। मूलवेदी के बिंब के आसन के पास सुवर्णशलाका रखें।

संप्रोक्षण विधि करके चार कुंडों में प्रतिष्ठा होम को विधिवत् संपन्न करें। अनंतर मुखवस्त्र दान, कांडस्थापना, अष्टविध अर्चना, नानाविध मंगलद्रव्यों से अर्चना करके पुष्पों से जाप्य करावें। पुष्पों से मंत्रित सुगंधित द्रव्यों से सुवर्णशलाका से नेत्रोन्मीलन विधि करें पुनः गंधलेपन करें। मुखवस्त्र हटाकर पुष्पांजलि, आशीर्वाद, नृत्यगीत वाद्यपूर्वक और नानाविध स्तुतिपूर्वक आराधना करें। चैत्यभक्ति आदि करके संघ की पूजा करें।

वेदी में स्थित जिनबिंब पूजा, धामपूजा, दिक्पाल अर्चना, षड्द्वार देवता की अर्चा, ग्राम, दिक्पालपूजा करके महती विभूतिपूर्वक, विहार घोषणा कर जिनप्रतिमा का विहार- रथयात्रा महोत्सव करें।

अनंतर पचीस घड़ों से अभिषेक करके क्षमापण, नमस्कार विधि कर विसर्जन विधि करें। अनंतर तीनों ही संध्याओं में नित्य ही नित्यमहोत्सव करें। १२२ से ३०॥

पुनः चौथे दिन 'अवभृतस्नान' नाम से महाभिषेक करें। अभिषेकविधि कर जिनपूजा, श्रूतपूजा और गुरुपूजा करें। हर्षपूर्वक आशीर्वाद पद्य पढ़ते हुए गंधोदक से भरित कुंभ यजमान को दें। पूर्वकथित आशीर्वाद पद्य बोलते हुए यजमान को 'शेषा' दें और सभी भव्यों को भी गंधोदक व शेषा दें।

तदनंतर यजमान यथाशक्ति और यथोचित साधुसंघ की पूजा करें। पुनः उसी दिन रात्रि में ध्वजा को अवतरण विधि से उतार कर मंदिर के ऊपर स्थापित कर दें। यह ध्वज पूर्ववत् शोभित होता हुआ सभी के हित के लिए होवे। पुनः देवों की विसर्जन विधि करके भगवान का ध्यान करें। शांतिधारा करके शांतिबलि क्रिया करें। क्षमापण जाने की आज्ञा लेना। अनंतर किये हुए धार्मिक अनुष्ठान के फल की याचना, आशीर्वाद दान, गुरुसाक्षिपूर्वक यज्ञ-दीक्षा त्याग, शांति भक्ति करके प्रतिष्ठाचार्य प्रतिष्ठा को पूर्ण करें।

यजमान भी प्रतिष्ठा को संपन्न करने वाले ऐसे प्रतिष्ठाचार्य का सम्मान करें। सभी श्रावकगण भी उनका सम्मान करके अपने-अपने स्थान के लिए गमन करें।

आगे प्रत्येक माह में प्रतिष्ठा के दिन उत्सव करता रहे। वर्ष पर्यंत तो प्रत्येक महीने उत्सव करें पुनः अपनी शक्ति के अनुसार वर्ष में उसी दिन एक बार ऐसे वर्ष-वर्ष में उत्सव करता रहे। इन उत्सवों की विधि के भेद आगे कहेंगे।

इस प्रकार मध्यम प्रतिष्ठा की सारी विधि यहां बतलाई गई है। जो कुछ यहां नहीं कही गई है, वह सब अन्य ग्रन्थों से लक्षण क्रिया आदि रूप से ग्रहण कर लेनी चाहिए। विद्वान् प्रतिष्ठाचार्य द्वारा पूर्व में विस्तार से कही गई विधि को ही यहां पर करना चाहिए। विधि के ज्ञाता सभी विद्वान् सभी क्रियायें यथोचित-विस्तृतविधि से ले लें। ३१ से ४१॥

इस तरह बहुत भक्ति से युक्त जो भव्य मध्यम विधि से जिनबिंब प्रतिष्ठा करते हैं, वे धर्म धुरंधर देश कालादि से उचित ऐसी श्रेष्ठ प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हैं। ४२॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलकनाम्नि

मध्यमप्रतिष्ठाविधिर्नाम पंचदशः परिच्छेदः।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेवविरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के

ग्रंथ में मध्यमप्रतिष्ठाविधि को कहने वाला

यह पंद्रहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ।



अथ षोडशः परिच्छेदः

अथ संक्षेपप्रतिष्ठाविधिः

अब संक्षिप्त प्रतिष्ठाविधि कहते हैं।

अथ संक्षेपतो वक्ष्ये प्रतिष्ठाविधिलक्षणम् । संक्षेपतोऽपि सा कार्या देशकालानुसारतः ॥११॥

तत्र पूर्वं प्रतिष्ठायाः पंचमेऽन्धंकुरारपणम् । ततः प्राक् क्रियतामिन्द्रप्रतिष्ठात्रापि मध्यवत् ॥१२॥

सर्वविघ्नप्रशान्त्यर्थं शांतिहोमविधिर्बुधैः । ततः प्रभृति कर्तव्यो यावच्चावभृथक्रिया ॥१३॥

अब संक्षेप में प्रतिष्ठा विधि का लक्षण कहेंगे। देश, काल के अनुसार संक्षेप में भी विधि कर सकते हैं। हमें पहले प्रतिष्ठा दिवस से पांचवें दिन पूर्व अंकुरारोपण करें। इसके पहले इन्द्रप्रतिष्ठा प्रतिष्ठाचार्य की प्रतिष्ठा विधि भी मध्यम प्रतिष्ठा विधि के समान करना चाहिए। तभी से लेकर अंतिम 'अवभृत अभिषेक क्रियापर्यंत' सर्वविघ्न की शांति के लिए प्रतिदिन 'शांतिहोम' करते रहन चाहिए ॥११ से ३॥

द्वितीये दिवसे प्राण्हे लघुशांतिकपूर्वकम् । मंडपेन्द्रं प्रतिष्ठाप्य भूषयेद् भूषणोत्करैः ॥१४॥

तृतीये दिवसे प्राण्हे लघुशांतिकपूर्वकम् । वेदीद्वयं प्रतिष्ठाप्य भूषयेद् भूषणोत्करैः ॥१५॥

अथ तीर्थोदकादानं कार्यं तुर्ये दिने दिवा । अचाल्यसौधबिंबानां प्रतिष्ठा चेद्विधीयते ॥१६॥

चाल्यार्चनीयतां पुष्पमंडपाद्यजलाशयम् । त्रिधोपवासं तदनु स्वीकुर्याद् गुरुसाक्षिकम् ॥१७॥

भावार्थ दूसरे दिन प्रातः लघुशांतिकपूर्वक मंडपप्रतिष्ठा करके मंडप को भूषणों से भूषित करें। तीसरे दिन प्रातः लघुशांतिकपूर्वक दोनों वेदी की प्रतिष्ठा करके नाना भूषणों से उन्हें भूषित करें। अनन्तर चौथे दिवस 'तीर्थोदक आदान'—घटयात्रा विधि करना चाहिए। स्थिर जिनबिंबों की प्रतिष्ठा करना है तो यह 'तीर्थोदकादान' विधि है।

चलजिनबिंब को पुष्पमंडल से युक्त जलाशय में ले जाना चाहिए अथवा चलजिनबिंब प्रतिष्ठा के लिए जलाशय से जल लाना चाहिए ॥१४ से ७॥

जलाधिवासनं कुर्यात्प्रत्यूषस्यांतरालये । विधिनाग्नित्रयं प्राच्यं यागमंडलमन्वतः ॥१८॥

समारार्य समासेन पूर्वाण्हे पंचमेऽहनि । न्यस्य स्नपनवेद्याः प्राक् सम्मार्जनघटाष्टकम् ॥१९॥

तद्वेद्यां स्थापयेत्पीठं पंचमंडलमूर्धनि ।

प्रत्यूष के अन्तराल में जलाधिवासन विधि करें। विधिवत् तीन अग्नि की पूजा करके तीन कुंडों में होम करके यागमंडल की आराधना कर पांचवें दिन प्रातः स्नपन अभिषेक वेदी के सामने आठ कलशों को स्थापित करके पंचमंडल के ऊपर वेदी में सिंहासन स्थापित करें ॥१८ से ६॥

इति पूर्वक्रिया (यह पूर्व क्रिया हुई)

स्नानव्रतादिशुद्धः सन् धृतवस्त्रोपवीतकः । चतुःप्रतींद्रसहितः कृत्वैर्यापथशोधनम् ॥११॥

आचार्यानुज्ञया सिद्धभक्तं च सकलीक्रियाम् । कृत्वा समंत्रमिज्यांगपात्रद्वयं विशोध्य च ॥१२॥

स्नान, व्रतादि से शुद्ध होकर शुद्ध वस्त्र और यज्ञोपवतीत धारण कर चार सहप्रतिष्ठाचार्यों से सहित होकर ईर्यापथ शुद्ध करें। आचार्य की आज्ञा लेकर सिद्धभक्ति और सकलीकरण करके मंत्रपूर्वक पूजा पात्र और पूजा द्रव्यों की शुद्ध करें ॥११-२॥

भूषणैर्बहुभिः स्वं च प्रतीन्द्रानपि भूषयेत् । महाभिषेकविधिना स्थापिते भद्रविष्टरे ॥१३॥

दर्भशय्यास्थितं बिंबमानीय स्थापयेत्ततः । पंचमंडलमाराध्य स्नापयेदष्टतद्घटैः ॥१४॥

बहुत प्रकार के भूषणों से अपने को और सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यों को भूषित करें। पश्चात् महाभिषेक से स्थापित भद्रसिंहासन पर दर्भशय्या पर स्थित जिनबिंब को लाकर स्थापित करें। पुनः पंचमंडल की आराधना करके आठ कलशों से जिनबिंब का अभिषेक करें ॥१३-४॥

तत्रिंशत्स्थापनं मूलवेदीयंत्राग्रविष्टरे । संप्रोक्षणविधिः पश्चाच्छुद्धशाल्यादिवस्तुभिः ॥१५॥

मुखवस्त्रकृतिः कांडस्थापनं चाष्टधार्चनम् । नानासुमंगलद्रव्यार्चनं पुष्पजपस्ततः ॥१६॥

पुष्पजपस्तुगंधादिद्रव्यैः सौवर्णतालगैः । नयनोन्मीलनं तेन गंधनोद्धर्तनं ततः ॥१७॥

मूलवेदी में यंत्र के आगे सिंहासन पर उन जिनबिंब की स्थापना करें। अनन्तर शुद्ध शालि आदि वस्तुओं से संप्रोक्षण विधि करें।

मुखवस्त्र प्रदान, वाणस्थापना, अष्टद्रव्यार्चन, नाना मंगलद्रव्यों से अर्चना और पुष्पों से जप करें। अनंतर पुष्पों से मंत्रित सुगंधित द्रव्य लेकर सुवर्णशलाका से जिनप्रतिमाओं की नेत्रोन्मीलन विधि करके प्रतिमा के सर्वांग में गंधलेपन करें। ॥५-७॥

मुखवस्त्रापसरणं पुष्पांजलिरथाशिषः। आराधनं नृत्यगीतवाद्यैर्नानाविधस्तवैः॥८॥
 चैत्यादिभक्तित्रितयस्तवनं संघपूजनम्। वेदीस्थदेवतापूजा धामदिक्पालकार्चनम्॥९॥
 षड्द्वारदेवताभ्यर्चा ग्रामदिक्पालपूजनम्। क्षमापणं जिनेन्द्रादिसर्वदेवविसर्जनम्॥१०॥
 ततः संस्नापयेत्पूर्वरात्रे लोकत्रयीगुरुम्। कलशैः पंचविंशत्या शतेनाष्टाधिकेन वा॥११॥
 अनंतरदिने देवमेकवारं विहारयेत्। ततः सायं घटैरष्टशतेन स्नापयेद्विभुम्॥१२॥
 अभिषेकक्रियां कृत्वा समभ्यर्च्य श्रुतं गुरुम्। गंधोदकभृतं कुंभं यष्ट्रे दद्यान्मुदाशिषः॥१३॥
 शेषां च सर्वभ्येभ्यो दद्यात्प्रागुदिताशिषः। यष्टा संपूजयेत्संघं यथाशक्तियथोचितम्॥१४॥
 विसर्जनं निर्जराणामध्यात्मध्यासनं विभोः। शांतिधारा ततः शांतिबलिकर्मक्षमापणम्॥१५॥
 गमनाप्रच्छन्नं पश्चात्कृतकर्मफलार्थनम्। आशीर्दानविधिं दीक्षामोचनं गुरुसाक्षिकम्॥१६॥
 शांतिभक्तिं च कृत्वेन्द्रः प्रतिष्ठां तां समापयेत्। निष्ठापितप्रतिष्ठं तं यष्टेन्द्रं बहु मानयेत्॥१७॥
 सत्कृत्य भक्त्या भव्यास्तं सर्वे यांतु यथायथम्। प्रतिष्ठादिवसे कुर्यादुत्सवं मासि मासि च॥१८॥
 आवर्षादथ ऊर्ध्वं तु वर्षे वर्षे च शक्तितः। उत्सवानां विधिर्भेदोऽप्युत्तरत्राभिधीयते॥१९॥
 इति संक्षेपतश्चार्हत्प्रतिष्ठा प्रतिपादिता। अनुक्तमन्यतो ग्राह्यमुचितं लक्षणादिकम्॥२०॥
 प्रागुदीरित एवात्र प्रयोगोऽपि प्रयोज्यताम्। यथोचितसमस्तानां कर्मणां कर्मकोविदैः॥२१॥

इत्थं विधत्ते बहुभक्तियुक्तः, संक्षेपतो वापि जिनप्रतिष्ठाम्।

यो देशकालाद्युचितामुपैति, स धर्मनेमिर्निजसत्प्रतिष्ठाम्॥२२॥

मुखवस्त्रापसरण, पुष्पांजलि, आशीर्वाद पद्यपठन, पुनः नृत्य, गीत, वाद्यों से नानाविध स्तुतियों से आराधना करें। चैत्यभक्ति आदि पढ़कर संघ की पूजा, वेदी में विराजमान भगवान की पूजा, धामाश्रित दिक्पालपूजा, षड्द्वार देवताओं की अर्चा, ग्रामाश्रित दिक्पाल पूजा, क्षमापण, जिनेन्द्रादि देवों की विसर्जन विधि करें।

अनंतर पूर्वरात्रि में तीन लोक के नाथ का स्नपन करें। यह अभिषेक पच्चीस कलशों से या १०८ कलशों से करें। अनंतर दिन में एक बार भगवान का विहार करावें। पुनः सायंकाल में १०८ कलशों से भगवान का अभिषेक करें।

अभिषेकविधि पूर्ण करके श्रुतपूजा एवं गुरुपूजा करें। पश्चात् हर्ष से आशीर्वाद पद्य बोलते हुए गंधोदक से भरे घट को यजमान को देवें, शेषा भी देवें। इसी प्रकार सभी भव्यों को भी आशीर्वादपूर्वक, गंधोदक और शेषा प्रदान करें। यजमान यथाशक्ति और यथोचित संघ की पूजा करें। देवों का विसर्जन करके भगवान का ध्यान करें। शांतिधारा करके शांतिबलि क्रिया एवं क्षमापणा करें। गमन के लिए आज्ञा लेना, पश्चात् किये गये अनुष्ठान के फल की याचना, आशीर्वाददानविधि गुरुसाक्षिपूर्वक यज्ञदीक्षा का त्याग करना। शांतिभक्ति करके प्रतिष्ठाचार्य प्रतिष्ठा का समापन करें। जिनने प्रतिष्ठा पूर्ण की है, यजमान उनका बहुमान करें पुनः सभी भव्यलोग उन प्रतिष्ठाचार्य का सत्कार करके अपने-अपने स्थान को चले जावें।

पुनः प्रत्येक माह में प्रतिष्ठा के दिवस उत्सव करते रहें। एक वर्ष तक महीने-महीने में उत्सव करें। पुनः प्रत्येक वर्ष में उसी-उसी दिन उत्सव करें। इन उत्सवों की अनेक विधि आगे कहेंगे।

इस प्रकार संक्षेप में जिनबिंब प्रतिष्ठा विधि प्रतिपादित की है। जो कुछ भी यहां नहीं कही है, उनके लक्षण आदि अन्य ग्रन्थ से लेना चाहिए। तथा च पहले विस्तृत प्रतिष्ठा विधि में जो कहा गया है, उसे ही यहां भी प्रयोग में लेना चाहिए। क्रियाओं के वेत्ता जो विद्वान हैं, उन्हें यथोचित संपूर्ण क्रियाओं की प्रयोग विधि करनी चाहिए॥१६-२१॥

इस प्रकार जो बहुत भक्ति से युक्त होकर संक्षेप से भी देश-कालादि से उचित जिनप्रतिष्ठा कराते हैं, वे धर्मधुरंधर पुरुष अपनी उत्तम प्रतिष्ठा को—सम्मान को प्राप्त करते हैं॥२२॥

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलकनाम्नि

संक्षेपविधिर्नाम षोडशः परिच्छेदः।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेवविरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के ग्रंथ में संक्षेपप्रतिष्ठाविधि को कहने वाला यह सोलहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ।

अथ सप्तदशः परिच्छेदः

अथ सिद्धप्रतिष्ठाविधिः

अथ सिद्धप्रतिमादिप्रतिष्ठाविधानान्यभिधास्यामः ।

(अब सिद्धप्रतिमा, आचार्य प्रतिमा आदि की प्रतिष्ठाविधि कहते हैं।)

संक्षेपार्हत्प्रतिष्ठावत्-प्रतिष्ठाविधिरिष्यते । सिद्धादीनां प्रयोगे तु, विशेषः प्रतिपाद्यते ॥

संक्षेप में अर्हत प्रतिमा की प्रतिष्ठा के समान ही सिद्ध प्रतिमा आदि की प्रतिष्ठाविधि है । इसमें प्रयोगविधि में जो विशेष विधि हैं, उन्हें ही इस परिच्छेद में प्रतिपादित करेंगे । तद्यथा॥

गद्य॥सिद्धप्रतिष्ठादिनात्पूर्व पंचमे दिने कुरार्षणं तर्तीनाद् द्वितीयदिने मंडपप्रतिष्ठां ततस्तृतीयदिने वेदीप्रतिष्ठां च तत चतुर्थदिने रात्रौ उपवासमादाय जलाधिवासनं विमानशुद्धिं दर्भशयनं चानिन्नयार्चनं च पूर्ववद्विधाय वेदिकायां पंचवर्णैः सिद्धचक्रोद्धरणं विदध्यात् ।

सिद्ध प्रतिमा की प्रतिष्ठा के पांचवें दिन पूर्व अंकुरारोपण, इसके बाद दूसरे दिन मंडपप्रतिष्ठा, तीसरे दिन वेदी प्रतिष्ठा और चौथे दिन रात्रि में उपवास ग्रहण कर जलाधिवासन, विमानशुद्धि, दर्भशयन और अग्नित्रय की अर्चना पूर्वकथित विधि से करके वेदी पर पंचवर्णी चूर्ण से सिद्धचक्र का उद्धार करें ।

(ऊपर और नीचे रेफ से युक्त ऐसे हकार को (हँ) बिंदु सहित करके इसके चारों तरफ स्वरो का वलय बनावें । इस वलय के बाहर कमल पत्राकार आठ दल बनावें । प्रत्येक दल में क्रम से स्वर, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यरलव, श ष स ह, ये आठ वर्ग लिखें । इन प्रत्येक दोनों दलों की संधि में तत्त्वाक्षर लिखें 'हँ' इसे तत्त्वाक्षर कहते हैं ।

प्रत्येक दल के अंत में 'अनाहतमंत्र' लिखें । इस अष्टदल कमल को चारों तरफ 'हँ' इस मंत्र से वेष्टित करें, इसको 'मंत्रराज' कहते हैं ।)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् । वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।

अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् । देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥१९॥

इति सिद्धचक्रमुद्धृत्य ।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा अनाहतविद्याधिपते! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा अनाहतविद्याधिपते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा अनाहतविद्याधिपते! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा अनाहतविद्याधिपते! जलं गृहाण गृहाण नमः । (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ावें)

इत्यादिभिर्मंत्रैराह्वानादिपूर्वकमभ्यर्च्य हेमादिपात्रे हेमादिलेखन्या तिलकद्रव्यैः सिद्धचक्रमुद्धृत्य तन्मंडलमध्ये विन्यस्य ।

इस प्रकार सिद्धचक्र बनाकर इसका आह्वानन आदि करके पूजन करें । एक पात्र में सुवर्णादि की लेखनी से केशर आदि से यंत्र लिखकर आराधना करें ।

ॐ ह्रीं असिआउसा अनाहतविद्यायै नमः ।

इति मूलमंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं जात्यादिपुष्पैर्ज्ञानमुद्रया सिद्धपरमेष्ठि ध्यानेन समाराध्य । दर्भशय्यास्थितसिद्धबिंबानीय उत्तरवेद्यां स्थापनपीठे (स्नपन पीठे) निवेश्य पूर्ववद्धूलीकलशेनाभिषिच्यष्टसम्मर्जनकलशैः पूर्वमंत्रैराकारशुद्धिं विधाय प्राक्तनयंत्रोपरि विष्टरे संस्थाप्य प्रतिष्ठेयनिरूपणं कृत्वा 'नमस्ते पुरुषार्थानामित्यादि सिद्धस्तोत्रं पठित्वा प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

मूलमंत्र से, ज्ञानमुद्रा से, जाति आदि सुगंधित पुष्पों से सिद्धभगवान की आराधना करें । पुनः दर्भशय्या से सिद्धबिंब को लाकर उत्तरवैद में स्थापित अभिषेक पात्र में विराजमान करके पृष्ठ २०८ से पूर्वकथित विधि से धूलिकलश से अभिषेक करके (पृष्ठ २१४ से) आठ संमार्जन कलशों से पूर्वमंत्रों से आकारशुद्धि करें । (पूर्व के सिद्धयंत्र पर प्रतिमा स्थापित करके स्तोत्र पढ़ें ।) अनंतरजानाति' इत्यादि पद्य व मंत्रों से सिद्धगुणों का आरोपण करें ।

जानातिबोधं यदनुग्रहेण। द्रव्याणि सर्वाणि चराचराणि॥

दुराग्रहत्यक्तनिजात्मरूपं, सिद्धेत्र सम्यक्त्वगुणं न्यसामि॥

ॐ ह्रीं परमावगाढसम्यक्त्वगुणभूषिताय नमः। इति प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिप्त्वा तद्गुणमारोपयेत्। एवमुत्तरत्रापि विधेयम्। जानाति नित्यमित्यादि (पृष्ठ २८० से आठों गुणों की स्थापना करें) सप्तपद्यानि पठन् अर्चा समंतात्परामृशेत्। इति गुणारोपणम्॥

आहूता इव सिद्धमुक्तिवनितामित्यादि। (पृष्ठ २७६ से पढ़ें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। आम्हाननादिमंत्रः।

तिलकदान मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अहं असि आ उ सा सिद्धाधिपतये नमः।

अनेन मंत्रेण कर्पूरान्वितचंदनेन तिलकं न्यसेत्। (इस मंत्र से नाभि में तिलकन्यास विधि करें।)

ॐ ह्रीं मुखवस्त्रं दधामि स्वाहा। इति मुखवस्त्र मंत्रः।

गंगादितित्यप्प० इत्यादिभिरधिवासनां विदध्यात्। (पृष्ठ २८१ से पूजा करें)

नेत्रोन्मीलन मंत्र

ॐ ह्रीं सिद्धाधिपते प्रबुध्यस्व ध्यातृजनमनांसि पुनीहि पुनीहि स्वाहा। नेत्रोन्मीलनमंत्रः।

ॐ ह्रीं सिद्धाधिपते मुखवस्त्रमपनयामि स्वाहा। इति श्रीमुखोद्घाटनमंत्रः।

पंचामृत अभिषेक

वारिणा स्वच्छशीतेन, हारिणा तापहारिणा। विशुद्धानभिषिंचामि सिद्धानघविशुद्ध्ये॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! तीर्थोदकेनाभिषिंचामीति स्वाहा। तीर्थोदकस्नपनम्। जल से अभिषेक करें।

पुङ्ग्रेक्षुचोचचूतादि-स्वरसोदारधारया। विशुद्धानभिषिंचामि सिद्धानघविशुद्ध्ये॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! पुङ्ग्रेक्षुप्रमुखरसैरभिषिंचामि इति स्वाहा। रसस्नपनम्। इक्षु आदि रसों से अभिषेक करें।

पिंगहय्यंगवीनेन, नवीनेन सुगंधिना। विशुद्धानभिषिंचामि सिद्धानघविशुद्ध्ये॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! हय्यंगवीनघृतेन स्नपयामीति स्वाहा। घृतस्नपनम्॥ घी से अभिषेक करें।

क्षरत्सुधासदृक्षेण, क्षीरपूरेण भूरिणा। विशुद्धानभिषिंचामि सिद्धानघविशुद्ध्ये॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! धारोष्णगव्यक्षीरपूरेणाभिषिणोमीति स्वाहा। दुग्धस्नपनम्॥ दूध से अभिषेक करें।

दध्ना पूर्णशरच्चंद्र-चंद्रिकाधवलत्विषा। विशुद्धानभिषिंचामि सिद्धानघविशुद्ध्ये॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! जगन्मंगलेन दध्ना स्नपयामीति स्वाहा। दधिस्नपनम्॥ दधि से अभिषेक करें।

कषायद्रव्यसत्कल्क-क्वाथचूर्णेः सुगंधिभिः। उपस्करोमि शुद्धात्म-सिद्धानघविशुद्ध्ये॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! दिव्यप्रभूतसुरभिकषायद्रव्यकल्कक्वाथचूर्णैरुपस्करोमि स्वाहा।

उद्धर्तनादिविधानम्। सर्वौषधि से अभिषेक करें।

पवित्रसुपवित्रोरु-मनोरमफलोत्करैः। निर्वर्तयामि शुद्धात्म-सिद्धानघविशुद्ध्ये॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! विचित्रमनोरमफलैरवतारयामि इति स्वाहा। फलावतरणम्। फलों से अवतरण विधि करें।

तीर्थाभःसंभृतैः कुंभै-रष्टभिर्मंगलान्वितैः। निर्वर्तयामि शुद्धात्म-सिद्धानघविशुद्ध्यै ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! परमसुरभिद्रव्यसंदर्भपरिमलगर्भतीर्थाबुसंपूर्णसुवर्णकुंभाष्टतयेन परिषेचयामि स्वाहा ॥ कलशाष्टकाभिषेकः ॥ (आठ कलशों से अभिषेक करें।)

पूतशीतलगंधोदै-र्गंधद्रव्यादिवासितैः। विशुद्धानभिषिंचामि, सिद्धानघविशुद्ध्यै ॥९॥

१ श्रीं अहं सिद्धाधिपते! परमसौमनस्यनिबंधनगंधोदकपूरेणाप्लावयामि स्वाहा। गंधोदकस्नपनम्। चंदन-मिश्रित जल से अभिषेक करें।

ॐ बाह्याभ्यंतरहेतुजात० (पृष्ठ ३१२ से लेवें)। ॐ ह्रीं निरवशेषावरण (पृष्ठ से ३१२ पढ़ें)।

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः। सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै-र्गंधोद्गमैरुद्गमैः ॥

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-र्दीपैर्विपद्धूपकैः। धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, श्रीसिद्धनाथान्यजे ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं सिद्धाधिपते! लोकोत्तरनीरधाराहरिचंदनद्रवकलमाक्षतपुंजाष्टकमंदारप्रमुखकुसुमदामसुधारस-स्पर्द्धिविधिसान्नायघनसारदशामुखप्रदीपितदीपाष्टकसुगंधिद्रव्यसंयोजनाविशेषसंभूतधूमायमानधूपघटाष्टकबंधुगंधवर्ण-रसस्पर्शप्रणीतबहिरंतःकरणमहाफलस्तबकाष्टकजलादियज्ञांगदूर्वादर्भदधिसिद्धार्थादिमंगलद्रव्यविनिर्मितमहार्घ्य-सत्कारोपचारैः परिचरामीति स्वाहा। जलाद्यर्घ्यातसपर्याविधानम् ॥

ततः सिद्धभक्तिं (पृष्ठ १७ से लेवें) कृत्वा अभितप्रार्थनमिदं पठित्वा पुष्पांजलिं प्रकल्पयेत्।

प्राज्यं साम्राज्यमस्तु स्थिरमिह सुतरां जायतां दीर्घमायु-र्भूयाद्भूयांश्च भोगः स्वजनपरिजनैस्तात्सदारोग्यमग्रम् ॥

कीर्तिर्व्याप्ताखिलाशा प्रभवतु भवतान्निःप्रतीपः प्रतापः। क्षिप्रं स्वमोक्षलक्ष्मीर्भवतु तनुभृतां सिद्धनाथप्रसादात् ॥

ततः पूर्ववद्विसर्जनादिकमनुतिष्ठेत्। (पूर्ववत् विसर्जन आदि करें)।

प्रतिष्ठानंतरदिने अवभृत्स्नानमभिषेकक्रियां सर्वदेवताविसर्जनं सिद्धानामध्यात्माध्यासनं शांतिधारां शांतिबलिं क्षमापणादिकं च पूर्वोक्तं कर्म कृत्वा प्रतिष्ठां निष्ठापयेत्। इति सिद्ध प्रतिष्ठाविधानम् ॥

प्रतिष्ठा से ॥ केवलज्ञानकल्याणक से अगले दिन अवभृत्स्नान ॥ महाभिषेक विधि करके देवता विसर्जन, सिद्धों का ध्यान, शांतिधारा, शांतिबलि, क्षमापण आदि करके प्रतिष्ठा को पूर्ण करें।

इस प्रकार सिद्ध प्रतिष्ठाविधि पूर्ण हुई।

अथाचार्यप्रतिष्ठाविधानम्

गद्य ॥ आचार्यादिप्रतिष्ठादिनात्प्राक् पंचमे दिने ऽकुरारपणं कृत्वा, अग्नित्रयाचनपर्यंतं कर्म सिद्धप्रतिष्ठावत्कृत्वा वेद्यांश्चरवलयोद्धरणं विदध्यात्। पूर्वं षट्कोणचक्रमध्ये क्षमाबीजाक्षरं लिखेत्। तदुपरि हं इति न्यसेत् तस्य दक्षिणतो इवीं वामतश्च ह्रीं विन्यसेत्। पीठाधः श्रीं न्यसेत्। ॐ असि आ उसा स्वाहेत्यनेन श्रींकारस्य दक्षिणतः प्रभृत्युत्तरतो यावत्प्रादक्षिण्येन वेष्टयेत्। ततः कोणेषु षट्स्वपि मध्ये अप्रतिहतचक्रे फडिति सव्येन स्थापयेत्। ततः कोणांतरालेषु विचक्राय स्वाहेति षड्बीजानि झ्रौंकारोत्तराणि अपसव्येन स्थापयेत्। ततः कोणाग्रेषु श्री-ही-धृति-कीर्ति बुद्धि-लक्ष्मीति षड्देवताः प्रादक्षिण्येन लिखेत्। तद्बहिर्वलयं कृत्वा अष्टसु पत्रेषु १. नमो जिणाणं। २. नमो ओहिजिणाणं। ३. नमो परमोहिजिणाणं। ४. नमो सव्वोहिजिणाणं। ५. नमो अणंतोहिजिणाणं। ६. नमो कोट्टबुद्धीणं। ७. नमो बीजबुद्धीणं। ८. नमो पदानुसारीणं। इत्यष्टौ पदानि ॐ ह्रीं हं पूर्वाणि पूर्वादिक्रमेण लिखेत्। ततस्तद्बहिस्तद्वत् षोडशपत्रेषु १. नमो संभिण्णसोदाराणं। २. नमो पत्तेयबुद्धाणं। ३. नमो सयंबुद्धाणं। ४. नमो बोहियबुद्धाणं। ५. नमो रुजुमदीणं। ६. नमो विउलमदीणं। ७. नमो दसपुब्बीणं। ८. नमो चउदसपुब्बीणं। ९. नमो अट्ठंगणिमित्तकुसलाणं। १०. नमो विउपइड्ढिपत्ताणं। ११. नमो विज्जाहराणं। १२. नमो चारणाणं। १३. नमो पण्णसमणाणं। १४. नमो आगासगामिणं। १५. नमो आसीविसाणं। १६. नमो दिट्ठिविसाणं। इति षोडशपदानि विलिखेत्। ततस्तद्बहिश्चतुर्विंशतिपत्रेषु १. नमो उगगतवाणं २. नमो दित्ततवाणं ३. नमो तत्ततवाणं ४. नमो महातवाणं ५. नमो घोरतवाणं ६. नमो घोरगुणाणं ७. नमो घोरपरक्कमाणं ८. नमो घोरगुणबह्वचारीणं ९. नमो आमोसहिपत्ताणं १०. नमो खेल्लोसहिपत्ताणं ११. नमो जल्लोसहिपत्ताणं १२. नमो विण्णोसहिपत्ताणं १३. नमो सव्वोसहिपत्ताणं

१४. णमो मणबलीणं १५. णमो वचिबलीणं १६. णमो कायबलीणं १७. णमो खीरसवीणं १८. णमो सप्पिसवीणं १९. णमो महुरसवीणं २०. णमो अमियसवीणं २१. णमो अक्खीणमहाणसाणं २२. णमो वड्डमाणाणं २३. णमो लोए सव्वसिद्धायदणां २४. णमो भयवदो महतिमहावीरवड्डमाणाणं बुद्धरिणीं।

इति चतुर्विंशतिपदान्यालिख्य हींकार मात्रया त्रिगुणं वेष्टयित्वा क्रोकारेण निरुध्य बहिः पृथ्वीमंडलं विलिखेत्।

आचार्य प्रतिष्ठा विधान

आचार्य, उपाध्याय और साधु की प्रतिमा की प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा दिन से पाँचवें दिन पूर्व अंकुरारोपण करके तीन अग्नि की अर्चनापर्यंत (हवन पर्यंत) क्रियाओं को सिद्धप्रतिमा की प्रतिष्ठा के समान करके वेदी में गणधरवलय यंत्र का उद्धार करें अर्थात् गणधरवलय यंत्र बनाकर स्थापित करें। (गणधरवलय यंत्र परिशिष्ट में है।)

गणधर वलय यंत्र बनाने की विधि

पहले षट्कोण चक्र के मध्य में 'क्ष्मा' बीजाक्षर लिखें। इसके ऊपर 'ह्रीं' का न्यास करें, उसके दक्षिण में 'इवीं' और बायीं तरफ 'हीं' बीजाक्षर का न्यास करें। पीठ के नीचे—क्ष्मा इस बीजाक्षर के नीचे 'श्रीं' यह अक्षर लिखें।

'ॐ अ सि आ उ सा स्वाहा' इस मंत्र को 'श्रींकार' के दाहिने से लेकर उत्तरपर्यंत प्रदक्षिणा के क्रम से वेष्टित कर दें। पुनः षट्कोणों के मध्य 'अप्रतिचक्रे फट्' यह मंत्र स्थापित करें। अनंतर कोणों के अन्तरालों में 'विचक्राय स्वाहा' इन छह बीजाक्षरों को बायीं बाजू से स्थापित करें और उनके ऊपर 'झ्रौं' लिखें। पुनः कोनों के अग्रभागों में श्री, ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी इन छह देवियों को प्रदक्षिणा के रूप में लिखें। उसके बाहर वलय करके आठ दलों में 'णमो जिणाणं' आदि उपर्युक्त आठ मंत्रों को ॐ हीं ह्रीं पूर्वक पूर्वादि के क्रम से लिखें।

ॐ हीं ह्रीं णमो जिणाणं, ॐ हीं ह्रीं णमो ओहिजिणाणं आदि।

इन आठ मंत्रों के बाद पूर्व के समान सोलह दलों वाले वलय में 'णमो संभिण्णसोदाराणं' से 'णमो दिट्ठिविसाणं' पर्यंत सोलह पदों को लिखें।

अनंतर इसके वलय के बाहर चौबीस दलों वाले वलय में 'णमो उग्गतवाणं' से लेकर 'बुद्धिरिणीं' पर्यंत चौबीस मंत्र पदों को लिखकर हींकार से तीन बार वेष्टित करके 'क्रोकार' से निरुद्ध करके बाहर पृथ्वीमंडल बनावें।

ॐ हीं इवीं श्रीं अहं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा। अनेन मध्यपूजां विदध्यात्।

ॐ णमो अरहंताणं। णमो जिणाणं इत्यादि हां हीं हूं हीं हः झ्रौं झ्रौं स्वाहा। एते अष्टचत्वारिंशत्पूजामंत्राः।

कर्णिका के मध्य पूजा का मंत्र

आगे के मंत्रों से यंत्र के मध्य में पूजा करें।

ॐ हीं इवीं श्रीं अहं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

अड़तालिस पूजामंत्र

ॐ णमो अरहंताणं। णमो जिणाणं इत्यादि में हां हीं हूं हीं हः अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा लगाकर बोलें। ये ४८ गणधर वलय मंत्र आगे लिखे प्रकार हैं।

१. ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं हां हीं हूं हीं हः असि आ उसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. ॐ णमो ओहिजिणाणं हां हीं हूं हीं हः असिआ उसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३. ॐ णमो परमोहिजिणाणं हां हीं हूं हीं हः असिआ उसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४. ॐ णमो सव्वोहिजिणाणं हां हीं हूं हीं हः असिआ उसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

५. ॐ णमो अणंतोहिजिणाणं हां हीं हूं हीं हः असिआ उसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

६. ॐ नमो कोट्युब्धीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
७. ॐ नमो बीजबुद्धीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
८. ॐ नमो पदानुसारीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
९. ॐ नमो संभिण्णसोदाराणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१०. ॐ नमो सयंबुद्धाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
११. ॐ नमो पत्तेयबुद्धाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१२. ॐ नमो बोहियबुद्धाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१३. ॐ नमो रुजुमदीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१४. ॐ नमो विउलमदीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१५. ॐ नमो दसपुव्वीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१६. ॐ नमो चउददसपुव्वीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१७. ॐ नमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१८. ॐ नमो विउव्वइडिठपत्ताणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
१९. ॐ नमो विज्जाहराणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२०. ॐ नमो चारणाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२१. ॐ नमो पण्णसमणाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२२. ॐ नमो आगासगामिणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२३. ॐ नमो आसीविसाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२४. ॐ नमो दिट्ठिविसाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२५. ॐ नमो उगगतवाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२६. ॐ नमो दित्ततवाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२७. ॐ नमो तत्ततवाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२८. ॐ नमो महातवाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
२९. ॐ नमो घोरतवाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३०. ॐ नमो घोरगुणाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३१. ॐ नमो घोरपरक्कमाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३२. ॐ नमो घोरगुणबह्वचारीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३३. ॐ नमो आमोसहिपत्ताणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३४. ॐ नमो खेल्लोसहिपत्ताणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३५. ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३६. ॐ नमो विण्णोसहिपत्ताणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३७. ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
३८. ॐ नमो मणबलीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।

३६. ॐ नमो वचिबलीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४०. ॐ नमो कायबलीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४१. ॐ नमो खीरसवीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४२. ॐ नमो सप्पिसवीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४३. ॐ नमो महुरसवीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४४. ॐ नमो अमियसवीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४५. ॐ नमो अक्खीणमहाणसाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४६. ॐ नमो वड्ढमाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४७. ॐ नमो लोए सव्वसिद्धायदणाणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।
 ४८. ॐ नमो भयवदो महतिमहावीरवड्ढमाणं बुद्धिरिसीणं हां हीं हूं हौं हः असिआ उसा झौं झौं स्वाहा ।

ततो दर्भशय्यास्थितबिंबमानीय स्नपनवेदीपीठाग्रे निवेश्य धूलीकलशाभिषेकानंतरं सर्वौषधिविमिश्रतीर्थास्त्रभृतैः पंचाचारसंकल्पपंचकुम्भैः, चतुरनुयोगसंकल्पचतुःकुम्भैः, रत्नत्रयसंकल्पेन त्रिभिःकुम्भैः । क्रमादाचार्योपाध्यायसर्वसाधुबिंबानामाकारशुद्धिविधाय मूलवेदीयंत्रोपरि विष्टरे त्रिबानवस्थाप्य ये येऽनगारा इति प्रागुक्तमहर्षिस्तवनं (पृष्ठ ११० से) पठित्वा बिंबान्समंतात्पराभ्युक्ष्य पुष्पांजलिपूर्वकं पंचाचारचतुरनुयोगरत्नत्रयलक्षणगुणान् त्रिभिः क्रमेण समारोपयेत् ।

इसके बाद दर्भशय्या में स्थित आचार्य, उपाध्याय अथवा साधु के बिंब को लाकर अभिषेक वेदी के पीठ अर्थात् सिंहासन पर विराजमान कर धूलीकलश से अभिषेक करें । पश्चात् सर्वौषधि मिश्रित तीर्थजल से भरे हुए एवं जिन में पांच आचार्यों की कल्पना की है, ऐसे पांच कुम्भों से आचार्य के बिंब की आकारशुद्धि करें, जिनमें चार अनुयोगों की कल्पना की है, ऐसे चार कुम्भों से उपाध्याय के बिंब की आकार शुद्धि करें तथा जिनमें रत्नत्रय का संकल्प किया है, ऐसे तीन कुम्भों से साधु के बिंब की आकारशुद्धि करें । अनंतर मूलवेदी में यंत्र के ऊपर स्थापित सिंहासन में उन बिंबों को विराजमान करके—

“ये येऽनगारा” पृष्ठ ११० से पूर्वकथित महर्षिस्तवन को पढ़कर उन-उन बिंबों का सर्वांग स्पर्श करके पुष्पांजलिपूर्वक आचार्य के बिंब में पांच आचार गुणों का, उपाध्याय के बिंब में चार अनुयोग गुणों का एवं साधु के बिंब में रत्नत्रय गुणों का आरोपण करें ।

धूलिकलशाभिषेक (प्रयोगात्मक विधि)

शार्दूलविक्रीडित—तीर्थेभ्यः सरितः सरोवरतटाद्रेः समुद्रान्नुप-द्वाराद् दंतिवराहदंतयुगलाच्छृंगाद् गवेन्द्रस्य च ।

मृत्स्नाभिः समुपाहृताभिरुचितोपस्कारसंशुद्धिभिस्तीर्थाद्भिः परिपूरितेन कलशेनार्चामिह स्नापये ॥१॥

ॐ हीं धूलिकलशेनाचार्यप्रतिकृतिं स्नापयामः स्वाहा । इसी प्रकार ‘उपाध्याय प्रतिकृति’ एवं ‘साधुप्रतिकृति’ बोलें ।

पांच आचार संकल्पित मंत्र^१ निम्न प्रकार से बोलें—

ॐ लवंगागरुकर्पूरवालोशीरचन्दनकाश्मीरमुस्तनिर्यासकुष्ठैलापत्रिकामुराजातीफलनिशामांसीकर्कोलपंचपत्रमुकुलगंध-द्रव्यचूर्णविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन दर्शनाचारकलशेन धर्माचार्यप्रतिकृतिं स्नापयामः स्वाहा ॥१॥

ॐ लवंगागरुकर्पूरवालोशीरचन्दनकाश्मीरमुस्तनिर्यासकुष्ठैलापत्रिकामुराजातीफलनिशामांसीकर्कोलपंचपत्रमुकुलगंध-द्रव्यचूर्णविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन ज्ञानाचारकलशेन धर्माचार्यप्रतिकृतिं स्नापयामः स्वाहा ॥२॥

ॐ लवंगागरुकर्पूरवालोशीरचन्दनकाश्मीरमुस्तनिर्यासकुष्ठैलापत्रिकामुराजातीफलनिशामांसीकर्कोलपंचपत्रमुकुलगंध-द्रव्यचूर्णविमिश्रितसमस्ततीर्थवारिपरिपूरितेन चारित्राचारकलशेन धर्माचार्यप्रतिकृतिं स्नापयामः स्वाहा ॥३॥

१. गद्य में सूचित विधि के अनुसार ये मंत्र दिये जा रहे हैं ।

१. ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनगुणभूषिताय नमः। २. ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानगुणभूषिताय नमः।
३. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र्यगुणभूषिताय नमः।

ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषडित्यादि।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं साधुपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषडित्यादि। इत्याचार्यादीनामाव्धानादिमंत्रः।

ततश्च ॐ हूं णमो आइरियाणं धर्माचार्याधिपतये नमः इत्यादिमंत्रैः सिद्धप्रतिमावतिलकविधिं विदध्यात्। एवमुपाध्यायसाधु-परमेष्ठिनोरपि विकल्प्य कल्पयेत्। ॐ ह्रीं मुखवस्त्रं दधामीति स्वाहा। मुखवस्त्रमंत्रः। ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन्! जलं गृहाण-गृहाण नमः इत्यादिभिर्मन्त्रैराचार्यपरमेष्ठिनमर्चयेत्। एवमुपाध्याय-साधुपरमेष्ठिनोरर्चनामंत्रा नियोजनीयः। आचार्यादीनामांकितेन सिद्धप्रतिष्ठोक्तेन नयनोन्मीलनं आचार्यादिबिंबानां कुर्यात्। ॐ ह्रीं आचार्यादीनां योजितेन मुखवस्त्रोद्घाटनं मुखवस्त्रोद्घाटनम्।

आह्वानन के मंत्र

आचार्य के मंत्र

ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हूं णमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

उपाध्याय के मंत्र

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

साधु के मंत्र

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं साधुपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट्।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं साधुपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं साधुपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

इत्याचार्यादीनामाव्धानादिमंत्राः।

तिलकदानविधि

तत च॥

आचार्य बिंब का तिलकदान मंत्र

ॐ हूं णमो आइरियाणं धर्माचार्याधिपतये नमः।

(उपर्युक्त मंत्र से आचार्यबिंब की नाभि में तिलकन्यास करें।)

इत्यादिमंत्रैः सिद्धप्रतिमावतिलकविधिं विदध्यात्। एवं उपाध्याय-साधुपरमेष्ठिनोरपि विकल्प्य कल्पयेत्।

उपाध्याय परमेष्ठी का तिलकन्यास मंत्र

ॐ हौं नमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिने नमः ।

साधु परमेष्ठी का तिलकन्यास मंत्र

ॐ हः नमो लोए सव्वसाहूणं साधुपरमेष्ठिने नमः ।

मुखवस्त्र प्रदान मंत्र

ॐ ह्रीं मुखवस्त्रं दधामीति स्वाहा । मुखवस्त्रमंत्रः ।

आचार्य परमेष्ठी पूजा

ॐ हूं नमो आइरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन् ! जलं गृहाण गृहाण नमः ।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ाना ।)

उपाध्याय परमेष्ठी की पूजा

ॐ हौं नमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! जलं गृहाण गृहाण नमः ।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ाना ।)

साधु परमेष्ठी की पूजा

ॐ हः नमो लोए सव्वसाहूणं सर्व साधुपरमेष्ठिन् ! जलं गृहाण गृहाण नमः ।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ाना ।)

नयनोन्मीलन विधि

आचार्यादिनामांकितेन सिद्धप्रतिष्ठोक्तेन नयनोन्मीलनं आचार्यादिबिंबानां कुर्यात् ।

(सिद्ध प्रतिमा के समान आचार्य के बिंबों का नेत्रोन्मीलन करें ।)

आचार्यपरमेष्ठी का नेत्रोन्मीलन मंत्र

ॐ हूं धर्माचार्याधिपते! प्रबुध्यस्व ध्यातृजनमनांसि पुनीहि पुनीहि स्वाहा ।

उपाध्यायपरमेष्ठी का नेत्रोन्मीलन मंत्र

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! प्रबुध्यस्व ध्यातृजनमनांसि पुनीहि पुनीहि स्वाहा ।

साधुपरमेष्ठी का नेत्रोन्मीलन मंत्र

ॐ हः सर्वसाधुपरमेष्ठिन्! प्रबुध्यस्व ध्यातृजनमनांसि पुनीहि पुनीहि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं आचार्यादीनां योजितेन मुखवस्त्रोद्घाटनमंत्रेण मुखवस्त्रोद्घाटनम् ।

तीनों परमेष्ठी के मुखवस्त्रोद्घाटन मंत्र

ॐ हूं आचार्यपरमेष्ठिन्! मुखवस्त्रमपनयामि स्वाहा ।

ॐ हौं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! मुखवस्त्रमपनयामि स्वाहा ।

ॐ हः सर्वसाधुपरमेष्ठिन्! मुखवस्त्रमपनयामि स्वाहा ।

आचार्य प्रतिमा की अभिषेक विधि

वारिणा स्वच्छशीतेन हारिणा तापहारिणा ।

विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥१॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! तीर्थोदकेनाभिषिञ्चामीति स्वाहा । तीर्थोदकस्नपनम् ।

पुण्ड्रेक्षुचोचचूतादि स्वरसोदारधारया । विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥२॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! पुण्ड्रेक्षुप्रमुखरसैरभिषिञ्चामीति स्वाहा । रसस्नपनम् ।

पिंगहय्यंगवीनेन नवीनेन सुगंधिना । विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥३॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! हय्यंगवीनघृतेन स्नपयामीति स्वाहा । घृतस्नपनम् ।

क्षरत्सुधासदृक्षेण क्षीरपूरेण भूरिणा । विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥४॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! धारोष्णगव्यक्षीरपूरेणाभिषिञ्चामीति स्वाहा । दुग्धस्नपनम् ।

दध्ना पूर्णशरच्चन्द्रचन्द्रिकाधवलत्विषा । विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥५॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! जगन्मंगलेन दध्ना स्नपयामीति स्वाहा । दधिस्नपनम् ।

कषायद्रव्यसत्कल्कक्वाथचूर्णेः सुगंधिभिः । उपस्करोमि शुद्धात्मसूरीनघविशुद्ध्ये ॥६॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! दिव्यप्रभूतसुरभिकषायद्रव्यकल्कक्वाथचूर्णैरुपस्करोमि स्वाहा । उद्वर्तनादिविधानम् ।

पवित्रसुपवित्ररुमनोरमफलोत्करैः । निर्वर्तयामि शुद्धात्मसूरीनघविशुद्ध्ये ॥७॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! विचित्रमनोरमफलैरवतारयामीति स्वाहा । फलावतरणम् ।

तीर्थाभःसंभृतैः कुंभैश्चतुर्भिर्मंगलान्वितैः । विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥८॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! परमसुरभिद्रव्यसंदर्भ परिमलगर्भतीर्थांबुसंपूर्णसुवर्णमयचतुष्कोणकुम्भैः परिषेचयामीति स्वाहा । चतुष्कोणकलशाभिषेकः ।

सुगंधित जल से अभिषेक

पूतशीतलगंधोदैर्गंधद्रव्यादिवासितैः । विशुद्धानभिषिञ्चामि धर्माचार्यान् स्वशुद्ध्ये ॥९॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिन्! परमसौमनस्यनिबन्धनगंधोदकपूरेणाप्लावयामीति स्वाहा । गंधोदकस्नपनम् ।

उपाध्याय की प्रतिमा का अभिषेक

वारिणा स्वच्छशीतेन हारिणा तापहारिणा । विशुद्धानभिषिञ्चामि पाठकेन्द्रान् स्वशुद्ध्ये ॥१०॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! तीर्थोदकेनाभिषिञ्चामीति स्वाहा । तीर्थोदकस्नपनम् ।

(इसी प्रकार रस आदि के अभिषेक के श्लोक में दूसरी लाइन बदल-बदल कर और मंत्र में ' ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्' लगा-लगाकर पूरा सुगंधित जल तक अभिषेक करें ।)

साधु प्रतिमा की अभिषेक विधि

वारिणा स्वच्छशीतेन हारिणा तापहारिणा, विशुद्धानभिषिञ्चामि सर्वसाधून् स्वशुद्ध्ये ॥११॥

ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिन्! तीर्थोदकेनाभिषिञ्चामीति स्वाहा । तीर्थोदकस्नपनम् ।

(यहां भी आचार्य प्रतिमा के अभिषेक के समान ही पूरा पंचामृत अभिषेक करें । मात्र दूसरी लाइन सभी में बदलना है और मंत्र में ' ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिन्' लगाना है ।)

पुनः यागमंडल में कथित पृष्ठ १२४ से आचार्य, उपाध्याय और साधु के गद्य-पद्य मंत्रों से पूजाविधि संपन्न करें। अनंतर—
ॐ ह्रीं लोकोत्तर.... आदि पढ़कर पूर्णार्घ्य चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं लोकोत्तरनीरधारा हरिचंदनद्रवकलमाक्षतपुंजाष्टकमंदारप्रमुखकुसुमदामसुधारसस्पृष्टिविधिसान्नाय-
धनसारदशमुखप्रदीपितदीपाष्टकसुगंधिद्रव्यसंयोजनाविशेष संभूतधूमायमानधूपघटाष्टकबंधुरगंधवर्णरसस्पर्शप्रणीत-
बहिरन्तःकरणमहाफलस्तबकाष्टकजलादियज्ञांगदूर्वादर्भदधिसिद्धार्थादिमंगलद्रव्यविनिर्मितमहार्घ्यसत्कारोपचारैः
परिचरामीति स्वाहा।

(इस गद्य से महार्घ्य चढ़ावें या जल, चंदन आदि से अष्टद्रव्य चढ़ाकर पूर्णार्घ्य चढ़ावें। पुनः आचार्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा में
विधिवत् आचार्यभक्ति पढ़कर, उपाध्याय की प्रतिमा में विधिवत् श्रुतभक्ति (पृष्ठ २६७ से) एवं साधु प्रतिमा की प्रतिष्ठा में विधिवत्
योगिभक्ति (पृष्ठ २४२ से) पढ़कर नीचे लिखा पद्य बोलकर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

आचार्यभक्ति इस प्रकार है—

आचार्य भक्ति

श्रुतजलधि पारगेभ्यः स्वपरमतिविभावनापटुमतिभ्यः।

सुचरित तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः॥१॥

इच्छामि भंते। आइरियभति काउस्सगो कओ तस्सालोचेउं। सम्मणाणसम्मदंसण सम्मचारित्तजुत्ताणं
पंचविहाचाराणं आइरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं
णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं
जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

आचार्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा में

प्राज्यं साम्राज्यमस्तु स्थिरमिह सुतरां जायतां दीर्घमायु-भूयाद् भूयांश्च भोगः स्वजनपरिजनैस्तात्सदारोग्यमग्रम्॥
कीर्तिर्व्याप्ताखिलाशा प्रभवतु भवतान्निःप्रतीपः प्रतापः। क्षिप्रं स्वमोक्षलक्ष्मी भवतु तनुभृतां धर्मसूरिप्रसादात्॥१॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

(उपाध्याय प्रतिमा की प्रतिष्ठा में इसी पद्य को पढ़ें, मात्र अंत में 'पाठकेन्द्रप्रसादात्' बोलें। इसी तरह साधु प्रतिमा की प्रतिष्ठा
में अंत में 'सर्वसाधुप्रसादात्' ऐसा बोलें।

अनंतर पूर्ववत् विसर्जनादि करें। पुनः प्रतिष्ठा के दूसरे दिन 'अवभृत्स्नानादिक' महाभिषेक विधि करके प्रतिष्ठा को पूर्ण करें।)
यहां तक आचार्य प्रतिष्ठा विधि पूर्ण हुई।

अथ श्रुतदेवताप्रतिष्ठाविधानम्।

(सरस्वती की मूर्ति की प्रतिष्ठा विधि)

श्रुतदेवताप्रतिष्ठादिनात्प्राक्पंचमे दिने अंकुरार्पणं कृत्वा, अग्नित्रयार्चनपर्यंतं कर्म पूर्ववत् कृत्वा, वेद्यां सात्त्वयंत्रोद्धरणं विदध्यात्।
पूर्वकर्णिकायां हींकारमालिख्य तद्बाह्वे हंकारं सविसर्गं सकारं च लिखित्वा, ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः
इत्यनेन मूलमंत्रेण वेष्टयेत् तद्बहिः पूर्वादिदिक्क्रमेण चतुर्षु पत्रेषु ॐ वाग्वादिन्यै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ देव्यै नमः। इति चतुराख्या लिखेत्। तद्बहिरष्टसु पत्रेषु ॐ नंदायै नमः। ॐ भद्रायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै
नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ जंभायै नमः। ॐ मोहायै नमः। ॐ स्तंभिन्यै नमः इति चाष्टौ देवीर्लिखेत्। तद्बहिश्च
षोडशपत्रेषु, ॐ रोहिण्यै नमः, ॐ प्रज्ञायै नमः, इत्यादिमंत्रैः षोडश विद्यादेवीः स्थापयेत्। ततः पूर्वाद्यष्टदिक्षु इन्द्राय स्वाहा इत्यादिमंत्रैरष्ट-

दिक्पालान्विन्यसेत् । पूर्वशानदिशोश्चांतराले, ॐ अधोनागेभ्यः स्वाहा इति नागान्विन्यसेत् । पश्चिमदिक्पालोपरिष्वच्च ॐ ऊर्ध्वब्रह्मणे नमः इति परब्रह्म प्रतिष्ठापयेत् ॥ इंद्रादधश्च ॐ मयूरवाहिन्यै नमः इति नागादिदेवतां स्थापयेत् ॥ ततस्त्रिर्मायामात्रया क्रौंकारेण निरुध्य तदावेष्ट्य बहिः पृथ्वीमंडलं लिखेदिति । ततो दर्भशय्या स्थितबिंबमानीय स्नपनवेदीपीठाग्रे निवेश्य सर्वौषधिविमिश्रतीर्थाभः संभृतैश्चतुरनुयोगसंकल्पचतुः कुंभैः ॐ ह्रीं श्रुतदेव्याः कलशस्नपनं करोमि स्वाहेत्यनेन मंत्रेणाकारं शोधयेत् ।

श्रुतदेवी की प्रतिष्ठा के पाँचवें दिन पूर्व अंकुरारोपण करके पूर्ववत् हवनविधिपर्यंत क्रिया करके वेदी में सारस्वत यंत्र विराजमान करें । पुनः दर्भशय्या में स्थित सरस्वती प्रतिमा को अभिषेक पात्र में विराजमान करके सर्वौषधिमिश्रित चार अनुयोग की कल्पनास्वरूप चारकुंभों से आकारशुद्धि करें । (परिशिष्ट में सरस्वती यंत्र है ।)

आकारशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्रुतदेव्याः कलशस्नपनं करोमि स्वाहा ।

(पुनः आगे के चार पद्य पढ़कर प्रतिमा पर पुष्पांजलि करें) ।

निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं । न्यक्षेण सर्वजगदुज्ज्वलनैकतानम् ।
सोषेस्व चिन्मयमहो जिनवाणि नूनं । प्राचीमतो जयसि देवि तदल्पसूतिम् ॥१॥
आभवादपि दुरासदमेव । श्रायसं सुखमनन्तमचिंत्यम् ।
जायतेद्य सुलभं खलु पुंसां । त्वत्प्रसादत इहांब नमस्ते ॥२॥
चेतश्चमत्कारकरा जनानां । महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः ।
हस्ते कृताः शस्तजनैः प्रसादात् । तवैव लोकांब नमोस्तु तुभ्यम् ॥३॥
सकलयुवतिसृष्टेरंबचूडामणिस्त्वं । त्वमसि गुणसुपुष्टेर्धर्मसृष्टेश्च मूलम् ॥
त्वमसि च जिनवाणि स्वेष्टमुक्त्यंगमुख्या । तदिह तव पदाब्जं भूरिभक्त्या नमामः ॥४॥

इति श्रुतदेवीस्तवनं पठित्वा प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(आगे का स्तोत्र व मंत्र पढ़कर सरस्वती प्रतिमा के अंगों का स्पर्श करें) ।

बारह अंगगिज्जा दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा । चोद्वसपुव्वाहरणा ठावे दव्वाय सुयदेवी ॥१॥
आचारशिरसं सूत्रकृतवक्त्रां सुकंठिकाम् । स्थानेन समवायांगव्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम् ॥२॥
वाग्देवतां ज्ञातृकथोपासकाध्ययनस्तनीम् । अंतकृद्दशसन्नाभिमनुत्तरदशांगतः ॥३॥
सुनितंबां सुजघनां प्रश्नव्याकरणश्रुतात् । विपाकसूत्रदृग्वादचरणां चरणांबराम् ॥४॥
सम्यक्त्वतिलकां पूर्वचतुर्दशविभूषणाम् । तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारुपत्रांकुरश्रियम् ॥५॥
आप्तदृष्टप्रवाहौघद्रव्यभावाधिदेवताम् । परब्रह्मपथादृप्तां स्यादुक्तिं भुक्तिमुक्तिदाम् ॥६॥
सर्वदर्शनपाखंडदेवदैत्यखगार्चिताम् । जगन्मातरमुद्धर्तुं जगदत्रावतारयेत् ॥७॥

ॐ अर्हन्मुखकमलवासिनि पापांधकारक्षयकारिणि श्रुतज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! मम पापं हन हन क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरधवले अमृतसंभवे वं वं मं मं हं स्वाहा । एतत्पठन् प्रतिमायाः अंगप्रत्यंगपरामर्शं कुर्यात् । गुणारोपणम् ।

(इस मंत्र को पढ़ते हुए प्रतिमा के अंगोपांग का स्पर्श करें) ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनि पापांधकारक्षयकारिणि श्रुतज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनि पापांधकारक्षयकारिणि श्रुतज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनि पापांधकारक्षयकारिणि श्रुतज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधीकरणं । आह्वानादि मंत्राः ।

ततो मूलमंत्रेण तिलकं दत्वा मुखवस्त्रमंत्रेण मुखवस्त्रं दत्वा ।

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति! जलं गृहाण गृहाण नमः ।

इत्यादिभिर्मन्त्रैरभ्यर्च्य मूलमंत्रेण नयनोन्मीलनं कृत्वा समंत्रं मुखवस्त्रमुद्घाटयेत् ।

वारिणा स्वच्छशीतेन हारिणा तापहारिणा । विशुद्धामभिषिंचामि जिनवाणीं स्वशुद्धये ॥

इत्यादिभिस्तामभिषिंचेत् । यागमंडलोक्तसरस्वती- गद्यपद्यमंत्रवाक्यैरभ्यर्चयेत् । ततः श्रुतभक्तिं कृत्वा अभिमतप्रार्थार्थमिमं पठित्वा पुष्पांजलिं प्रकल्पयेत् । प्राज्यं साम्राज्यमस्तु० भवतु च जिनदेवतायाः प्रसादात् । प्रतिष्ठानंतरदिनेऽवभृथस्नानादिकं कृत्वा प्रतिष्ठां निष्ठापयेत् । (आगे कथित मंत्रों से प्रतिष्ठा, अभिषेक आदि विधि करें ।)

इति श्रुतदेवताप्रतिष्ठाविधानम्

सरस्वती प्रतिष्ठा (प्रयोगात्मक विधि)

आह्वानन मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनि पापान्धकारक्षयकारिणि श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! अत्र एहि एहि संवौषट् ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनि पापान्धकारक्षयकारिणि श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! अत्र तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनि पापान्धकारक्षयकारिणि श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

तिलकदान विधि

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः ।

मुखवस्त्र देने का मंत्र

ॐ ह्रीं मुखवस्त्रं दधामीति स्वाहा ।

सरस्वती पूजा

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति जलं गृहाण गृहाण नमः ।

(जल चढ़ावें । पुनः इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें ।)

नेत्रोन्मीलन मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः । (नेत्रोन्मीलन विधि करें ।)

मुखवस्त्र अपनयन विधि

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! मुखवस्त्रमपनयामि स्वाहा ।

अभिषेक विधि

वारिणा स्वच्छशीतेन हारिणा तापहारिणा । विशुद्धामभिषिंचामि जिनवाणीं स्वशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! तीर्थोदकेनाभिषिंचामीति स्वाहा । जल से अभिषेक करें ।

पुंद्रेक्षुचोचचूतादिस्वरसोदारधारया । विशुद्धामभिषिंचामि जिनवाणीं स्वशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! पुण्ड्रेक्षुप्रमुखरसैरभिषिंचामीति स्वाहा । नारियल, इक्षु आदि के रसों से अभिषेक करें।

पिंगहय्यंगवीनेन नवीनेन सुगंधिना । विशुद्धामभिषिंचामि जिनवाणीं स्वशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! हय्यंगवीनघृतेन स्नपयामीति स्वाहा । घी से अभिषेक करें।

क्षरत्सुधासदृक्षेण क्षीरपूरेण भूरिणा । विशुद्धामभिषिंचामि जिनवाणीं स्वशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! धारोष्णगव्यक्षीरपूरेणाभिषिंचामीति स्वाहा । दूध से अभिषेक करें।

दध्ना पूर्णशरच्चंद्र चन्द्रिकाधवलत्विषा । विशुद्धामभिषिंचामि जिनवाणीं स्वशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! जगन्मंगलेन दध्ना स्नपयामीति स्वाहा । दही से अभिषेक करें।

कषायद्रव्यसत्कल्कक्वाथचूर्णेः सुगंधिभिः । उपस्करोमि शुद्धात्मसाधनीमघशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! दिव्यप्रभूतसुरभि-कषायद्रव्यकल्कक्वाथ-चूर्णैरुपस्करोमीति स्वाहा । चंदनादि का विलेपन करें।

पुनः यागमंडल में कथित पृष्ठ १२७ से जिनागम पूजा के गद्य, पद्य मंत्र वाक्यों से पूजा करें। पश्चात् पृष्ठ २६७ से श्रुतभक्ति पढ़ें पुनः इष्टप्रार्थना करें।

प्राज्यं साम्राज्यमस्तु स्थिरमिह सुतरां जायतां दीर्घमायु-श्चाद् भूयांश्च भोगः स्वजनपरिजनैस्तात् सदारोग्यग्रयम् ।
कीर्तिर्व्याप्ताखिलाशा प्रभवतु भवतान्निः प्रतीपः प्रतापः । क्षिप्रं स्वर्गोक्षलक्ष्मी भवतु तनुभृतां शारदायप्रसादात् ॥१॥

इस पद्य को पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

अनंतर प्रतिष्ठा के अगले दिन महाभिषेक विधि आदि करके प्रतिष्ठा पूर्ण करें।

अथ श्रुतस्कंध यंत्र आदि प्रतिष्ठाविधानम् ॥

शुभे शिलादौ श्रुतस्कंधमुत्कीर्य सरस्वतीप्रतिष्ठावत्प्रतिष्ठापयेत् । परमागमपुस्तकमालेख्य श्रुतपंचम्यां सुलग्ने वा तद्वत्प्रतिष्ठापयेत् ।
अत्राकारशुद्ध्यादिकं दर्पणप्रतिबिंबितपुस्तकस्य विदध्यात् । ऐदंयुगीनाचार्यादिषु पूर्वाचार्यगुणस्य सत्तां वीक्ष्य तत्पादुकाद्वयं
आचार्यादिप्रतिष्ठावत्प्रतिष्ठापयेत् । प्रसिद्धसंन्यासमरणप्राप्तगुवदिर्निषेधिकां जिनगृहे निर्माय जिनप्रतिष्ठाकोलप्रतिष्ठाप्य क्षपकांगोज्ञानभूमौ
निवेशयेत् । अथवा बहिरेव निर्माय जिनप्रतिष्ठासमये नयनोन्मीलनं तद्द्रव्येण प्रापय्य तत्र गत्वा शेषविधिं स्वयमिंद्रः कृत्वा संघक्रियां
कुर्यात् । अथवा क्षपकांगोज्ञानावनौ आचार्यादिप्रतिष्ठोक्तविधिं सर्व समासतः कृत्वा वर्द्धमानस्वामिनिर्वाणकाले निषेधिकां प्रतिष्ठापयेत् ।

इति श्रुतस्कंधादिप्रतिष्ठाविधानम् ॥

श्रुतस्कंधादि प्रतिष्ठा विधि

उत्तम शिला या तांबे, चांदी आदि के पत्र पर श्रुतस्कंध यंत्र उत्कीर्ण कराकर सरस्वती प्रतिमा की प्रतिष्ठा के समान प्रतिष्ठापित करें। परमागम ग्रन्थ को लिखवाकर या छपवाकर श्रुतपंचमी के दिन या अन्य किसी शुभमुहूर्त में पूर्ववत् प्रतिष्ठा विधि करें। अंतर इतना है कि यहां आकारशुद्धि आदि विधि दर्पण में प्रतिबिंबित पुस्तक में करें।

वर्तमान के आचार्य आदि में पूर्वाचार्यों के गुणों का अस्तित्व देखकर उनके चरणों की प्रतिष्ठा आचार्य अस्त्री की प्रतिष्ठा के समान करें। प्रसिद्ध संन्यास मरण को प्राप्त गुरु आदि की निषद्या—छतरी को जिनमंदिर में बनवाकर जिनप्रतिष्ठा के समय प्रतिष्ठा करके क्षपकमुनि—समाधिप्राप्त मुनि के शरीर त्याग के स्थल पर उन्हें विराजमान कर दें। अथवा बाहर में ही छतरी बनवाकर जिनप्रतिष्ठा के समय नेत्रोन्मीलन विधि उसी द्रव्य से करके वहां जाकर स्वयं प्रतिष्ठाचार्य शेष विधि करें, संघ भी भक्ति पाठ आदि क्रिया संपन्न करें।

अथवा आचार्यों के मरणप्राप्त स्थान में आचार्यादि प्रतिष्ठा में कथित विधि संक्षेप से करके श्रीमहावीर स्वामी के निर्वाण के समय निषेधिका—छतरी में चरणों को प्रतिष्ठापित कर दें।

इस प्रकार श्रुतस्कंध यंत्र, जैन शास्त्र व आचार्य आदि की प्रतिमा तथा गुरुचरण प्रतिष्ठाविधि पूर्ण हुई।

अथ यक्षयक्षीप्रतिष्ठाविधानम् ॥

यक्षप्रतिष्ठादिनात्पूर्वं पंचमे दिनेंकुरारपणं कृत्वा, अग्नित्रयार्चनपर्यंतं कर्म दिनक्रमेण कृत्वा वेद्यां मंडलोद्धरणं विदध्यात् । वेद्यां पंचवर्णचूर्णैः सर्गिकमष्टदलकमलं चतुष्कोणमंडलचतुष्टयं पृथ्वीमंडलं विरचय्य तत्र ॐ ह्रीं क्रौं सुवर्णवर्णवृषभवाहनपरशुफलाक्ष-मालावरदाकितचतुर्भुजवृषभवक्त्रधर्मचक्रालंकृतमस्तकगोमुखयक्षाय संवौषट् स्वाहेति मंत्रं कर्णिकायामालिख्य तद्बहिर्हृत्सुपत्रेषु ॐ ह्रीं क्रौं श्रियै संवौषट् स्वाहेत्यादि दिक्कुमारीमंत्रानष्टौ । तद्बहिर्वलयांतः ॐ ह्रीं क्रौं यक्षवैश्वानर-रक्षो-नधृत-पन्नगसुरसुकुमार-सवितृ-विद्यामालि-चमर-वैरोचन-महाविद्यमारविश्वेश्वरपिंडाभिधानपंचदशतिथिदेवान्संस्थापयामि स्वाहा । इति तिथिदेवान्पंचदश । तद्बहिर्वलयांतः ॐ ह्रीं क्रौं सूर्यसोमांगारकसौम्यगुरुभार्गवशनिराहुकेतून् स्थापयामि इति स्वाहा । इति ग्रहदेवान् । तद्बहिर्मंडलांतः ॐ ह्रीं क्रौं किन्नरैर्द्र, किंपुरुषैर्द्र, महोरगैर्द्र, गंधर्वैर्द्र, यक्षैर्द्र, राक्षसैर्द्र, भूतैर्द्र, पिशाचैर्द्रान्स्थापयामि स्वाहा इति व्यंतरैर्द्रानष्टौ ॥ तद्बहिर्मंडलमध्ये वज्रचक्रखड्गहलमुसलगदाशक्तिभिडिवालाख्यान्यष्टायुधानि च लिखित्वा बहिर्भूमंडलं विलिखेत् । एवं मंडलं वर्तमाना स्वस्वमंत्रैर्यक्षादिदेवान् जलगंधादिभिरभ्यर्च्य कलशाष्टकादिभिर्वेदीं भूषयेत् । अथ स्नपनमंडपे तां प्रतिमामानीय दर्भप्रस्तारे धान्यप्रस्तारे च स्थापयित्वा क्रमेण स्नपयेत् ततस्तत्रैव वेदिकायां नवकलशान्सर्वालंकारोपेतान्सर्वौषधिसंमिश्रशुद्धयंत्रमंत्रान्वितान् तीर्थजलपरिपूर्णान् शालिप्रस्तारोपरि लिखितमायाबीजासनान् निधाय, तत्पश्चिमभागे स्नपनपीठं स्थापयित्वा प्रक्षाल्यालंकृत्वा तदुपरि भुवनाधिपतिं लिखित्वाक्षतपुष्पदर्भान्विरचय्य तत्प्रतिमां तत्र स्थापयित्वा, पंचोपचारविधिनाऽभ्यर्च्य बाह्याष्टककलशैर्मंत्रपूर्वकमभिषिच्य चतुर्नीराजनं कृत्वा पुष्कलिपूर्वकं एकादशमभिषेकं मध्ये कलशेनामृतमंत्रेण कुर्यात् ॥

तेजोमायादिकाख्यानं क्रियमाणक्रियान्वितम् । तत्तत्पल्लवसंयुक्तं करोम्यंतं पदं स्मरेत् ॥१॥

अथैवमाकारशुद्धिं विधाय मूलवेद्यां नवधौतवस्त्रं सदभक्षतपुष्पं प्रस्तीर्य तत्र तत्प्रतिमां निवेश्याभ्यर्च्य कांडाग्रद्रुवाग्रिण प्रोक्षणां विधाय शांतिहोमं यक्षमंत्रेण कृत्वा पुण्याहं घोषयित्वा स्वर्णशलाकोपात्तेन स्वर्णपात्रनिहितेन हिमपयःशर्करेण सुमुहूर्ते नयनोन्मीलनं कुर्यात् । ततोऽधिवासनादिविधिं विधाय वस्त्राभरणमाल्यादिभिरभ्यर्च्य विसर्जनादिकं कुर्यात् । प्रतिष्ठानंतरदिनेऽवभृथस्नानादिकं पूर्ववत्कृत्वा प्रतिष्ठां निष्ठापयेत् । ततः प्रभृति च तां नित्यं पूजयेत् ।

एष एव च शेषाणां यक्षाणां स्थापनाविधिः । यक्षीणां च मतः किंचिद्भेदो मंत्राश्रयो भवेत् ॥१॥

इति गदितविधानैः सिद्धमुख्यप्रतिष्ठाम् । बहुविधजिनभक्त्या यो विधत्तेऽत्र भव्यः ॥२॥

उपचितबहुपुण्यः साधु निर्विश्य भोगान् । स भवति जिनसौख्याभोधिनिक्षत्रनेमिः ॥३॥

अब यक्ष-यक्षी की प्रतिष्ठा विधि कहते हैं—

यक्ष—गोमुखयक्षादि की प्रतिष्ठा के दिवस से पांचवें दिन पूर्व अंकुरारोपण करके, अग्नित्रय—तीन कुंडों में होम करने पर्यंत क्रियाओं को दिन के क्रम से करके वेदी में मंडल बनाने की विधि करें। उसे ही कहते हैं—

वेदी में पंचवर्णचूर्ण से कर्णिका सहित अष्ट दल कमल बनावें। उसके चार चौकोन मंडल बनावें। अनंतर पृथिवीमंडल की रचना करके कर्णिका में “ॐ ह्रीं क्रौं...” गोमुख यक्ष का मंत्र लिखें। उसके बाहर अष्टदल के कमल की एक-एक पांखुड़ी पर क्रम से ‘ॐ ह्रीं क्रौं श्रियै संवौषट् स्वाहा। ऐसे आठों दिक्कुमारियों के मंत्र लिखें। उसके बाहर पहले वलय में ॐ ह्रीं क्रौं... आदि पंद्रह तिथिदेवों का मंत्र लिखें। पुनः दूसरे चौकोन वलय में ॐ ह्रीं क्रौं... इत्यादि नवग्रह देवों का मंत्र लिखें। पुनः तीसरे वलय में ॐ ह्रीं क्रौं किन्नरैर्द्र...’ इत्यादि आठ व्यंतर देवों का मंत्र लिखें। इसके बाद के वलय में ‘वज्र, चक्र’ आदि आठ आयुधों को लिखकर बाहर ‘पृथिवीमंडल’ बनावें।

इस प्रकार मंडल बनाकर उन-उन मंत्रों से यक्ष आदि देवों की जल, चंदन आदि से पूजा करके आठ कलशों से वेदी को—मंडल को भूषित करें।

अनंतर अभिषेक मंडप में उन यक्ष प्रतिमा को लाकर दर्भशय्या पर या धान्य के प्रस्तार में स्थापित करके क्रम से स्नपन—अभिषेक करें। अनंतर वहीं वेदिका में नव कलशों को स्थापित करें। इन कलशों में सर्वौषधि आदि डालें और चावल के पुंजों पर मायाबीज हीं लिखकर इन्हें स्थापित करें। उसके पश्चिम भाग में अभिषेकपात्र स्थापित करके उसे प्रक्षालित कर अलंकृत करके उसके ऊपर ‘भुवनाधिपतिं’ लिखकर अक्षत, पुष्प, दर्भ को विधिवत् रखकर उस यक्ष प्रतिमा को स्थापित कर पंचोपचार विधि से अर्चना करके

बाहर के आठ कलशों से मंत्रपूर्वक अभिषेक करके चार प्रकार के नीराजन करके पुष्पांजलिपूर्वक मध्य के कलश से अम्ना मंत्र से अभिषेक करें।

इस प्रकार से आकारशुद्धि करके मूलवेदी में नवीन धुले हुए वस्त्र पर दर्भ, अक्षत व पुष्प फैलाकर उस पर यक्षप्रतिमा को स्थापित करके पूजा करें। पुनः दर्भ व दूर्वा के अग्रभाग से प्रोक्षण विधि करके यक्षमंत्र से शांतिहोम करें, अनंतर पुण्याहवाचन करके स्वर्णपात्र में दूध, शक्कर, कपूर मिलाकर रखें, उसी से स्वर्णशलाका से शुभ मुहूर्त में नयनोन्मीलन विधि करें।

इसके बाद अधिवासनादि विधि करके वस्त्र, आभरण, माला आदि के द्वारा अर्चना करके विसर्जन विधि करें।

अनंतर प्रतिष्ठा के अगले दिन पूर्ववत् अवभृत्स्नान—महाभिषेक आदि करके प्रतिष्ठा को निष्ठापित करें। प्रतिष्ठा के बाद में हमेशा नित्य ही उन यक्ष प्रतिमा की पूजा करें।

यह एक गोमुख यक्ष की प्रतिष्ठा विधि हुई।

शेष यक्षों की यही स्थापना विधि है। चक्रेश्वरी यक्षी आदि की प्रतिष्ठा में मंत्र के निमित्त से किंचित् भेद है।

इस प्रकार सिद्धप्रतिमा की प्रतिष्ठा को प्रमुख करके आचार्यादि की प्रतिष्ठा विधि बताई गई है। जो भव्यजन बहुविध जिनभक्ति से इस विधि को करते हैं, वे बहुत सा पुण्य संचित करके नाना प्रकार के भोगों का अनुभव करके जिनेन्द्रदेव के सुखसमुद्र की वृद्धि के लिए चन्द्रमा के समान हो जाते हैं।

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते प्रतिष्ठातिलकनाम्नि सिद्धादिप्रतिष्ठाविधिर्नाम सप्तदशः परिच्छेदः।

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेवविरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के ग्रंथ में सिद्ध, आचार्य आदि की प्रतिष्ठाविधि को कहने वाला यह सत्रहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ।

शासन देवी-देवता मान्य हैं

चक्रेश्वर्यादिदिकपाला यक्षाश्च शांतिहेतवे।

सम्यग्दर्शनयुक्तत्वात्ते पूज्या जिनशासने॥४॥

(मन्त्रप्रदीप)

अर्थ—चक्रेश्वरी, दिक्पाल, यक्ष आदि देवता शान्ति प्रदान करने वाले हैं। ऐसे देव सम्यग्दृष्टी होने के कारण पूज्य हैं ऐसा जैन शास्त्रों का आदेश है उनकी पूजा करने में देव मूढ़ता नहीं होती क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव सदा पूज्य होता है।

(उमास्वामी श्रावकाचार-पृष्ठ २६)

गंधोदक, शेषा एवं चंदन ग्रहण करना चाहिए

गंधोदकं च शुद्ध्यर्थं शेषां संततिवृद्धये।

तिलकार्थं च सौगंध्यं गृह्णन् स्यान्नहि दोषभाक्॥१४५॥

अर्थ—अपने शरीर को शुद्ध करने के लिए भगवान का गंधोदक ले लेना चाहिए, संतति की वृद्धि के लिए शेषाक्षत ले लेना चाहिए और तिलक लगाने के लिए चंदन ले लेना चाहिए। इन द्रव्यों के ले लेने में कोई किसी प्रकार का दोष नहीं लगता।

भावार्थ—अभिषेक का गंधोदक यद्यपि मंत्रपूर्वक चढ़ाया जाता है तथापि उसके लेने में कोई दोष नहीं है। पूजा करने के बाद बचे हुए अक्षतों को शेषाक्षत कहते हैं। पूजा करने के बाद शेषाक्षतों को मस्तक पर धारण करना चाहिए। इसी प्रकार चंदन पूजा करने के बाद बचे हुए चंदन से तिलक लगाने में भी कोई दोष नहीं है।

(उमास्वामी श्रावकाचार-पृष्ठ ५७)

अथ अष्टादशः परिच्छेदः (उत्सव-महोत्सव विधिः)

जिनेन्द्रमिंद्रसंदोहसंपादितमहोत्सवम् । नत्वा स्वमोक्षदं वक्ष्ये विविधोत्सवसंविधिम् ॥१॥
उत्कर्षेण महाभूत्या सूयते तीर्थवारिभिः । विहारपूर्वकं देवो यत्रासावुत्सवो मतः ॥२॥
जिनोत्सवविधिं भक्त्या कुर्वन् धर्मप्रभावकः । निर्विश्याभ्युदयं सर्वं निःश्रेयसमवाप्नुयात् ॥३॥
तस्य कारयिता चानुमंता द्रष्टा च भक्तितः । धर्मार्थकाममोक्षार्थानापनीपद्यते ध्रुवम् ॥४॥

सभी इंद्रों ने मिलकर जिनका महोत्सव किया है, ऐसे जिनेन्द्रदेव को नमस्कार करके स्वर्ग, मोक्ष को प्राप्त कराने वाली ऐसी अनेक प्रकार की उत्सवविधि को कहेंगे। महाविभूति से जिनेन्द्रदेव का विहार कराकर तीर्थजल से जो महाभिषेक करना है, उसे ही 'उत्सव' कहते हैं। धर्म की प्रभावना करने वाले भव्यजीव जिनेन्द्रदेव का महामहोत्सव करते हुए सभी प्रकार के अभ्युदयों को भोगकर अंत में मोक्षसुख को प्राप्त कर लेते हैं। उस महोत्सव को भक्तिपूर्वक कराने वाले, अनुमोदना करने वाले और देखने वाले भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को निश्चित ही प्राप्त कर लेते हैं ॥ १ से ४ ॥

वर्णानामाश्रमाणां च विधत्ते विहितोत्सवः । सद्धर्मश्रीबलोद्धायुरारोग्यादिसमीहितम् ॥५॥
राजारारष्ट्रसमृद्धिः स्याज्जायंते जातु नेतयः । वियंति विपदः सर्वाः संपद्यते च संपदः ॥६॥
किमत्र बहुनोक्तेन जिनोत्सवविधायिनः ॥ ध्रुवं यास्यंति ते सप्त परमस्थानसंपदः ॥७॥

जो इन उत्सवों को करते हैं वे वर्णों को, आश्रमों को तथा समीचीन धर्म, श्री, बल, आयु और आरोग्य आदि को प्राप्त कर लेते हैं। राजा की, राष्ट्र की समृद्धि होती है, ईति—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल आदि नहीं होती हैं, विपत्तियाँ विलीन हो जाती हैं और सभी प्रकार की संपत्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। यहाँ बहुत कहने से क्या? जिनेन्द्रदेव के महामहोत्सव को करने वाले सात परमस्थान को निश्चित ही प्राप्त करेंगे ॥५ से ७॥

आष्टान्हिकः पांचदिनः त्रैदिनश्चैकवासरः । इत्युत्सवश्चतुर्द्धा स्यात्कर्तृशक्तिव्यपेक्षया ॥८॥
रथोपेतो रथापेत इत्याद्यो द्विविधो भवेत् । तत्र राजाधिराजाद्या रथोपेतं वितन्वते ॥९॥
महामुकुटबद्धाद्यैः क्रियमाणः स एव हि । चतुर्मुखाभिधानः स्यात्सर्वतोभद्रसंज्ञकः ॥१०॥
किमिच्छकेन दानेन सार्वभौमेन चेत्कृतः । अयमेव रथोपेतः कल्पवृक्षाद्वयो भवेत् ॥११॥
रथोन्मुक्तममात्यादिप्रभवः प्रवितन्वते । सामान्य शक्तितः कुर्युरवशिष्टास्त्रिधोत्सवान् ॥१२॥
देशकालानुसारेण स्वस्वशक्त्यनुरोधतः । सर्वानप्युत्सवान्सर्वे कुर्युः कल्पद्रुमादृते ॥१३॥
षट्सु पौषादिमासेषु तीर्थभानि यथाक्रमम् । पुष्यो मघा चोत्तरा च चित्रा राधा च मूलभम् ॥१४॥
तीर्थभस्य दिने कुर्यात्तीर्थाख्यावभृथक्रियाम् । ततस्तीर्थदिनात्पूर्वं नवमेऽष्टादशेऽथवा ॥१५॥
एकविंशेऽन्हि वा कुर्याद्ध्वजारोहणसंविधिम् । ध्वजारोहदिनात्पूर्वं पंचमेऽन्हि ध्वजांकुरम् ॥१६॥
तीर्थांकुरं तीर्थदिनान्नवमे दिवसे चरेत् । तद्दिने चेद्ध्वजारोहो न प्राक्कुर्याद्ध्वजांकुरम् ॥१७॥

आष्टान्हिक—आठ दिन का, पाँच दिन का, तीन दिन का और एक दिन का, ऐसे उत्सव काल की अपेक्षा चार प्रकार के होते हैं, ये कर्ता की शक्ति की अपेक्षा से होते हैं। रथयात्रा सहित और रथयात्रा रहित ऐसे उत्सव दो प्रकार के भी होते हैं। महामुकुटबद्ध राजाओं आदि के द्वारा जो महोत्सव किया जाता है वह 'रथोपेत' ही है। 'चतुर्मुख' नामसे जो उत्सव होता है, वह 'सर्वतोभद्र' कहलाता है। 'किमिच्छिक' दान देते हुए जो सार्वभौम—चक्रवर्तियों के द्वारा 'महामहोत्सव' किया जाता है, वह 'कल्पवृक्ष' नाम से 'रथोपेत' कहलाता है।

प्रधान अमात्य आदि के द्वारा किया जाने वाला उत्सव 'रथोन्मुक्त' कहलाता है। सामान्य मनुष्यों को अवशिष्ट—तीन प्रकार के उत्सव करना चाहिए। देश और काल के अनुसार अपनी-अपनी शक्ति के अनुरूप कल्पद्रुम महामहोत्सव के बिना सभी उत्सव कसा चाहिए। पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ यथाक्रम से जो तीर्थनक्षत्र हैं—पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, राधा और मूल ये तीर्थनक्षत्र कहलाते हैं, इन्हीं तीर्थनक्षत्रों के दिनों में तीर्थ नाम से 'महाभिषेक' क्रिया करें। उस तीर्थ महोत्सव के दिन स्नानवर्षे या अठारहवें दिन पहले अथवा इक्कीसवें दिन पहले 'ध्वजारोहण' विधि करें और ध्वजारोहण दिवस से पाँचवें दिन पूर्व 'ध्वजांकुर' विधिकरें। तीर्थदिवस से नवमं दिवस तीर्थांकुर विधि करें। यदि उसी दिन ध्वजारोहण करना हो तो उसके पूर्व ध्वजांकुर विधि न करें ॥८ से १७॥

तद्रात्रौ वा चरेत्प्राज्यदीपैश्चत्वरशोधनम् । तद्रात्रावेव कुर्वीत भेरीताडनसंविधिम् ॥१८॥
 द्वात्रिंशत्करमुख्याष्टशतांतायामविस्तृतीन् । जघन्यमध्यमोत्कृष्टमंडपान्नाहुरुत्सवे ॥१९॥
 तन्मध्ये वेदिकां तत्तन्नवभागसमायतीम् । आयामसमविस्तारां तत्पडंशसमुच्छ्रिताम् ॥२०॥
 चतुर्दिग्गतसोपानां चतुष्कोणां त्रिमेखलाम् । वेदीं निर्वृत्तिविधिना चारु निर्वर्तयेत्सुधीः ॥२१॥
 तेषामन्यतमं स्नानमंडपं प्रकृतोचितम् । निर्माप्य विधिनाचार्यः प्रतिष्ठाय विभूषयेत् ॥२२॥

ध्वजारोहण के दिवस रात्रि में बहुत से दीपकों से आंगनशोधन—मंडपशोधन विधि करें। पुनश्च उसी रात्रि में ही भेरीताडन विधि करें। इस उत्सव में बत्तीस हाथ से लेकर एक सौ आठ हाथपर्यंत लंबा और चौड़ा ऐसा जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट मंडप बनाना चाहिए। इस मंडप में बीच में जो वेदी बनाना है वह अपने मंडप के नवमें भाग लंबी व चौड़ी हो और ऊँचाई छठे भागप्रमाण हो। इस वेदी में चारों तरफ सीढ़ियाँ हों, यह चौकोन हो और तीन कटनी वाली हो। बुद्धिमान ऐसी सुंदर वेदी निर्माण करावें। उन मंडपों में एक अभिषेक मंडप बनवाकर प्रतिष्ठाचार्य उसकी प्रतिष्ठा करके विभूषित करें ॥१८ से २२॥

धामाग्रनिर्मितादस्मान्महास्नपनमंडपात् । पुरस्तादुचितायामविस्तारं नृत्यमंडपम् ॥२३॥
 तोरणध्वजसत्पुष्पदर्भमालावितानकैः । यवारकविरुढाद्यैर्भूषयेद्यागमंडपम् ॥२४॥

मंदिर के आगे निर्मित महाभिषेक मंडप के सामने उचित लंबाई-चौड़ाई वाला ऐसा नृत्यमंडप बनवावें पुनः तोरण, ध्वजा, पुष्प, दर्भ, माला, चंदोवा, यवारक^१ और विरुढक^२ आदि से यागमण्डप को विभूषित करें ॥२३-२४॥

अश्वत्थोदुंबरप्लक्षन्यग्रोधमयतोरणैः । मंडपानां तु पूर्वादिद्वाराणि परिभूषयेत् ॥२५॥
 चतुष्कं चंद्रयानं च नासिका पुष्परंगकम् । पुष्पयानं गजरथो सिंहयानमितिक्रमात् ॥२६॥
 अष्टौ यानानि चैत्यानि विहारे त्रिजगत्प्रभोः । रथो दिवैव शेषं तु दिवा निशि च योज्यताम् ॥२७॥

पीपल, पिंपली, वटवृक्ष आदि से निर्मित तोरणों से इन मंडपों के पूर्वादि द्वारों को विभूषित करें। १. चतुष्क २. चन्द्रयान ३. नासिका ४. पुष्परंगक ५. पुष्पयान ६. गजरथ ७. सिंहयान और ८. रथ ये आठ यान तीन जगत के स्वामी ऐसे जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा के विहार में माने गये हैं। इनमें से रथ को दिन में निकालें और शेष यान को दिवस या रात्रि में निकाल सकते हैं ॥२५ से २७॥

नवमेऽन्धि ध्वजारोहं उद्दिश्याद्य यथाक्रमम् । प्रत्यहं च विधेयानां कर्मणां क्रम उच्यते ॥२८॥
 दशमे दिवसे तीर्थादिंद्रो यष्टा पुरस्कृतः । यज्ञदीक्षां समासाद्य केतुदंडादि सज्जयेत् ॥२९॥
 यष्टा देशांतरात्संधमनयेल्लेखनादिभिः । प्रत्युद्गमेन चायातमाद्रियेत यथोचितम् ॥३०॥
 नवमे दिवसे प्रातराचार्येण प्रयत्नतः । स्नानादिसिद्धभक्त्यंतः कार्यः पूजामुखक्रमः ॥३१॥

नवमें दिवस ध्वजारोहण करके उसे उद्दिश्य कर क्रम से प्रतिदिन करने योग्य क्रियाओं का क्रम कहते हैं। तीर्थांकुरसे दशमें दिवस प्रतिष्ठाचार्य यजमान सहित यज्ञदीक्षा ग्रहण कर ध्वजदण्ड आदि को सुसज्जित करें। यजमान देशांतर—किसी भी देश-ग्रामादि से आचार्यसंघ को लेखनादि—कुंकुमपत्रिका आदि छपाकर बुलावें और आये हुए संघ के सामने जाकर यथोचित व्यवस्थापूर्वक उस संघ का अङ्गरपूर्वक प्रवेश करावें। नवमें दिन प्रातः प्रतिष्ठाचार्य प्रयत्नपूर्वक स्नानानुस्नान आदि से लेकर सिद्धभक्तिपर्यंत पूजामुखविधि सम्पन्न करें ॥२८ से ३१॥

जिनसिद्धमहर्षीणामिष्टिः स्वस्त्ययनं ततः । आत्मांलंकरणं कृत्यसंकल्पः कुसुमांजलिः ॥३२॥
 भूमिसंशोधनं दर्भन्यासो भूयश्चर्चनं ततः । मंडपस्य प्रतिष्ठातो वेदिकायाः प्रतिष्ठितिः ॥३३॥
 चूर्णन्यासोप्यथ बृहद्यागमंडलवर्तनम् । सम्यगाराधनं तस्य व्यासतो वा समासतः ॥३४॥
 जलहोमोऽग्निहोमश्च ग्रहाणां सुप्रसक्तये । ऐशान्यां दिशि तद्देवामनावृतसमर्चनम् ॥३५॥
 मंगलायुधसत्केतुकुंभाष्टकनिवेशनम् । वेदीविभूषणं बाणसिद्धार्थकयवारकैः ॥३६॥
 धूपकुंभाष्टकन्यासो वेदिकायाः समंततः । शांतिमंत्रं च जपतामष्टदिक्षु नियोजनम् ॥३७॥
 धामाभिमुखतो यक्षपटस्य परिलंबनम् । तदग्रे मंगलामत्रगंधादिप्रतिवेशनम् ॥३८॥
 स्थापनं नवकुंभानां प्रोक्षणं तद्घटांबुभिः । प्रतिबिंबितयक्षस्य दर्पणेऽभिमुखस्थिते ॥३९॥
 गंधलेपो यवनिकानेत्रोन्मीलनमर्चनम् । जिनधामबलिः केतुबलिर्वास्तुबलिस्ततः ॥४०॥
 क्रमादेतानि कर्माणि कुर्यादिंद्रो विचक्षणः । शांतिमंत्रैर्जपं होमं कारयेत्तत्र योजितैः ॥४१॥

१. बोए हुए जौ को यवारक कहते हैं। २. द्विदल धान्य के अंकुर को विरुढक कहते हैं।

अर्हतपूजा, सिद्धपूजा, साधुपूजा और स्वस्तिपाठ करें पुनः अपने को अलंकार—मुकुट, हार आदि से अलंकृत कर संकल्प करके पुष्पांजलि, भूमिशोधन, दर्भन्यास, भूम्यर्चन करें पुनः मंडप की प्रतिष्ठा, वेदिका की प्रतिष्ठा, चूर्णन्यास और बृहद् यागमण्डल विधान करें। यह यागमण्डल विधान सम्यक् प्रकार से विस्तार से या संक्षेप से करें। इस विधान के अन्तर्गत ग्रहों को प्रसन्न करने के लिए जलहोम और अग्निहोम करें। ईशान दिशा में अनावृतयक्ष की पूजा करके आठमंगल द्रव्य, आठ आयुध, आठ ध्वजाएं और आठ कुंभों को स्थापित करें। बाण, सिद्धार्थक—श्वेत सरसों या पीली सरसों, यवारक—धान्यांकुर और आठ धूपघट की स्थापना तथा वेदी की आठों दिशाओं में शांतिमंत्र का जाप्य कराना आदि क्रियाएं करावे—ये सर्वविधि बृहद् यागमण्डल में आ जाती हैं।

जिनमंदिर के सामने यक्ष—सर्वाण्हयक्ष का चित्रपट बांधें, उसके आगे मंगलपात्र में गंधादि सामग्री रखें। सामने नौ कुंभों को स्थापित कर दर्पण में प्रतिबिंबित सर्वाण्हयक्ष का उन नौ कुंभों से अभिषेक करें। उसी दर्पण में गंधविलेपन, पर्दे के अंदर नेत्रोन्मीलन विधि करके यक्ष की पूजा करें। अनंतर जिनमंदिर बलि, ध्वजबलि, वास्तुबलि इन सर्वविधि को प्रतिष्ठाचार्य क्रम-क्रम से सम्पन्न करें। यहाँ पर बलि शब्द का अर्थ नैवेद्यप्रमुख वस्तुओं से विधिपूर्वक पूजा करना है। वर्तमान में 'बलि' शब्द गलत है, वैसा यहाँ नहीं समझना। प्रतिष्ठाचार्य प्रतिदिन शांतिमंत्रों से जाप्य और हवन कराते रहें। ॥३२ से ४१॥

तस्मिन्नेव दिने यष्टा प्रातरेव प्रयत्नतः। भूषयेदष्टशोभाभिर्वीथीं वीथीं समततः॥४२॥

मार्जनं तोरणं रंगबलिः पुष्पबलिर्ध्वजम्। गीतं नृत्यं च वाद्यं चेत्यष्टौ शोभाः प्रकीर्तिताः॥४३॥

विहारबेरं विन्यस्य नृत्यमंडपविष्टरे। एकादशविधाभ्यर्च्य तांबूलैर्भव्यतर्पणम्॥४४॥

विहारघोषणा पश्चादानंदस्तवपूर्वकम्। तत्रिंस्थानं चारु श्रीविहारचतुष्के॥४५॥

तच्चतुष्कं दृढं धृत्वा याति वाहकसंचये। तदग्रे दूरतो याति ध्वजदेवाभिमुख्यतः॥४६॥

देवं विहारयेत्युर्यां प्रतिसर्पितार्चनम्। विहारविधिना जैनसंहितोक्तेन तद्यथा॥४७॥

तस्मिन्नेव दिने पूर्वं पूर्वाण्हेति विभूतिमत्। विहारयेद्विशिष्टार्चिं विश्वभूतविभूतये॥४८॥

नवीकृतेषु गेहेषु सर्वेपूद्बद्धकेतुषु। द्वारेष्वलंकृतेषु चैः पूगपूर्णघटादिभिः॥४९॥

रथ्यासु मार्जितास्वद्विः सिक्तासूद्वेत्रदर्शकैः। असंस्पृश्यजने दूरं सार्यमाणे सहुकृतम्॥५०॥

उसी दिन यजमान प्रातः ही प्रयत्नपूर्वक आठ प्रकार की शोभाओं से गली-गली को विभूषित करें। १. मार्ग को झाड़ू आदि से स्वच्छ कराकर जलादि छिड़कना २. तोरण बंधवाना ३. रंगोली बनवाना ४. पुष्पों से सजाना ५. ध्वजाएं लगवाना ६. गीत कराना ७. नृत्य कराना और ८. वाद्य कराना ये आठ शोभा मानी गई हैं। नृत्यमंडप में सिंहासन पर जिनप्रतिमा विराजमान करके ग्यारह प्रकार से—जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल, अर्घ्य, शांतिधारा और पुष्पांजलि ये ग्यारह प्रकार की पूजा है, इस पूजाविधि को करके तांबूलादि^१ से भव्यों को तर्पित करें। पश्चात् भगवान के विहार की घोषणा करके 'आनन्दस्तवन' पढ़ें, पुनः श्रीविहारचतुष्क में—पालकी आदि में जिनप्रतिमा को स्थापित करके उस चतुष्क को पालकी उठाने वाले ठीक से लेकर चलें। आगे-आगे ध्वजदेव को मुख्य करके चलें। सर्वाण्हयक्ष के चित्र सहित ध्वजा को लेकर चलें अथवा अनेक ध्वजाएं लेकर अनेक लोग चलें। जब भगवान का नगर में विहार हो रहा हो—पालकी या रथ निकल रहा हो, उस समय प्रत्येक जैन घर के लोग अपने-अपने द्वार के सामने भगवान की पूजा करें—अर्घ्य चढ़ावें, आरती करें। जैनसंहिता—प्रतिष्ठा आदि ग्रंथों में कथित विधि से यह भगवान का विहार होना चाहिए।

उसी दिन प्रातःकाल बहुत ही वैभव के साथ भगवान का विहार—शोभायात्रा करें। यह भगवान का विहार विश्व के सभी जनों के वैभव के लिए ही होता है। उस समय सभी श्रावक अपने घर स्वच्छ करके उन्हें सजावें, घर-घर में ध्वजा लगावें तोरण बांधें, दरवाजों पर मंगलकलश रखें। सारी सड़कें-गलियाँ साफ कराकर, जल का छिड़काव करा दें। हाथों में बेंत लिए हुए ऐसे लोग—कर्मचारी या स्वयंसेवकजन हुंकार करते हुए अस्पृश्य जनों को दूर करते रहें। ॥४२ से ५०॥

केतनानां शते याति पुरतश्चित्तहारिणि। वाताहताच्चलद्वासःसमुन्मृष्टनभोगणे॥५१॥

सहस्रारस्फुरद्धर्मचक्रं यात्युकेतनम्। यक्षेण संधृते मूर्ध्ना ब्रह्मबिंबानुकारिणि॥५२॥

दुंदुभिध्वनिते कुर्वत्यनुचक्रं विजृम्भणम्। पूरयित्वा नभोऽशेषं क्षुभ्यदब्धिस्वनोपमे॥५३॥

१. आज प्रतिष्ठा या विधान आदि धार्मिक अनुष्ठानों में श्रावकों को तांबूल—पान आदि देने की प्रथा नहीं है प्रत्युत् प्रभावना नाम से फल, मिष्ठान्न आदि बांटने की परम्परा है।

जयकोलाहलं भर्तुरग्रे भव्यमहान्वे। कुर्वाणे व्योमनिःशेषमारुध्य प्रमदोदयात्॥५४॥
 पठत्सु मंगलं पश्चान्मधुरं भव्यबन्धुषु। नांदीतूर्यरवे पश्चाच्छात्रानंदं प्रतन्वति॥५५॥
 गायंतीषु सुकंठीषु गानविज्ञानचंचुषु। स्त्रवत्सुखं विहृद्यं च श्रीविहारमहोत्सवम्॥५६॥
 आतन्वतीषु तन्वीषु सविलासं विनर्तनम्। आसन्नमग्रतश्चित्रैरगहारादिभिर्विभोः॥५७॥
 व्राते चित्रातपत्राणां भूषितैरुद्धृतैर्जनैः। निरुंधति प्रभाजालं निखिलं तिग्मदीधितेः॥५८॥
 सुरवारवधूस्पर्द्धिसुंदरीकरधूनिते। सितचामरसंघाते पार्श्वयोः स्फुरतीशिनः॥५९॥
 गणे संयमिनां पुण्ये कुर्वाणेऽनु निषेवणम्। आर्यिकाश्राविकासंघे सेवमानेऽनुसंयतम्॥६०॥
 चित्रं चित्रवितानेन चामीकराविनिर्मितम्। स्फुरन्मणिविभाजालरचितामरकार्मुकम्॥६१॥
 उचितायामविष्कंभं चित्रस्तंभचतुष्टयम्। परिलंबितसन्मुक्ताफलदामविभूषितम्॥६२॥

भगवान की शोभायात्रा में आगे-आगे सैकड़ों पताकाएं लेकर लोग चल रहे हों, जो कि हवा के झकोरों से हिलती हुई मानों आकाशरूपी आंगन को स्वच्छ कर रही हैं। एक हजार आगे जिसमें हैं, ऐसे धर्मचक्र को मस्तक पर धारण कर यक्षदेव चल रहे हों। दुंदुभि बाजे—अनेक प्रकार के बाजे बज रहे हों, जो कि आकाश को व्याप्त कर रहे हों। भगवान के आगे जय-जयकार का कोलाहल हो रहा हो। सभी भव्यलोग मंगलगान—भजन, गीत, नृत्य आदि कर रहे हों। भगवान के विहारसंबंधी भजन बोलती हुई महिलाएं भी चल रही हों, कोई-कोई महिलाएं देवांगनाओं के समान नृत्य कर रही हों, कुछ भक्तगण हाथों में छत्र लिए हों, कुछ के हाथों में चंवर हों। इस शोभायात्रा में मुनि-आर्यिका और श्रावक-श्राविका यह चतुर्विध संघ चल रहा हो॥५९ से ६२॥

अलंकुर्वन्तमर्हन्तं मंडपं खंडितस्मरम्। पुरं परिगमय्यैवं त्रिवारं जिनधाम च॥६३॥
 न्यसेतं मंडलाग्रस्थस्नपनोचितविष्टरे। पूर्ववन्मंडलस्याग्रे स्थापयेद्यक्षराट्पटम्॥६४॥
 अथातो ध्वजदंडस्य क्षालनं तीर्थवारिभिः। वेष्टनं बोधिकंकेलिलदलवद्भ्रमालया॥६५॥
 धीशक्त्यारोपणं बद्धकुशकूर्चे तदग्रके। पंचामृतैरभिषवः समंत्रं चाष्टधार्वनम्॥६६॥
 बलिपीठाग्रतस्त्यक्त्वा तद्व्यासं कृतगर्तके। हिरण्यपायसक्षेपे दंडस्य स्थापनं दृढम्॥६७॥
 स्वपीठेष्वर्चितक्षुद्रध्वजदंडनिवेशनम्। अनादिसिद्धमंत्रेण पटयक्षाधिवासनम्॥६८॥
 पंचामृताभिषेकोस्य बिंबितस्य च दर्पणे। संपूजनं चार्हदादि-मंत्रस्य परिघोषणम्॥६९॥

इस प्रकार बहुत ही विभूति के साथ भगवान का शहर में विहार कराकर जिनमंदिर की तीन प्रदक्षिणा दें, पुनः अभिषेक मंडप में पहुँचकर, उचित योग्य वेदी पर सिंहासन में भगवान को विराजमान करें तथा मंडल के आगे सर्वाण्यक्ष के चित्रपट को भी स्थापित करें। पुनः तीर्थजल से ध्वजदण्ड को प्रक्षालित कर अशोक आदि के पत्तों से डाभ की कूची से उसे सुसज्जित कर ध्वजा के अग्रभाग में ज्ञानशक्ति का आरोपण करें, पंचामृत अभिषेक करके अष्टद्रव्य से पूजा करें। बलिपीठ के सामने किये हुए गड्ढे में सुवर्ण, खीर डालकर उसमें ध्वजदण्ड को मजबूती से खड़ा कर दें। उसी में यथास्थान लघु ध्वजदण्डों की स्थापना करें। अनादिसिद्धमंत्र से दर्पण में प्रतिबिंबित यक्ष का पंचामृत अभिषेक करके पूजन करें, अर्हतादि के मंत्रों का उद्घोष करें॥६३ से ६९॥

दंडे ध्वजपटारोपः सल्लग्ने पीठबंधनम्। स्वस्वदंडेषु च क्षुद्रध्वजारोपोऽर्घ्यपूजनम्॥७०॥
 दंडस्य परितो द्वारद्वयदारुवृत्तेर्विधिः। व्येकपंचाशता कुंभेः स्नपनं त्रिजगत्प्रभोः॥७१॥
 प्रथमाद्यनुयोगानां संपाठः पुरतः प्रभोः। चैत्यपंचगुरुशांतिभक्तिभिः ससमाधिभिः॥७२॥
 स्तवनं सर्वसंघेन विभोर्नानास्तवैरपि। देवस्य मंडपस्थानां देवानां च विसर्जनम्॥७३॥
 आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानानि सादरम्। चतुःसंघस्य चातीर्थात्कर्तव्यानि विशेषतः॥७४॥
 वदिवृंदारकादीनामिष्टदानं स्वशक्तितः। नित्यमातीर्थदिवसात्कार्यं कर्त्ता विशेषतः॥७५॥

अनंतर सर्वविधि सम्पन्न करके ध्वजदण्ड पर ध्वजा चढ़ावें और उत्तम मुहूर्त पर पीठबंधन^१ करें। अपने-अपने लघु दण्डों में लघुध्वजाओं को भी लगा दें पुनः जिनेन्द्रदेव का इक्यावन कुंभों से अभिषेक करें। भगवान के सामने प्रथमानुयोग का पाठ करें पुनः चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति और समाधिभक्ति का पाठ करें। सर्वसंघ मिलकर भगवान की अनेक स्तवनपाठों से स्तुति

१. ध्वजदण्ड के नीचे का गड्ढा मजबूत कर दें।

करें। अनंतर मंडप में जिनका आह्वान किया है, ऐसे सभी देवों का विसर्जन कर देवें, चतुर्विध संघ को आदरपूर्वक चार प्रकार का दान देवें। यह सारी विधि तीर्थविधि—महोत्सव सम्पन्न होने तक करते रहें। अपनी शक्ति के अनुसार अन्य जनों को भी दान-मानादि से संतुष्ट करें। ७० से ७५ ॥

तस्मिन्हनि सायान्हे त्वंकुरार्पणमंडपे। यक्षेश्वरादिदेवानां स्वस्वस्थानेऽधिवासनम् ॥७६॥
मृत्तिकासंग्रहो भूत्या बीजारोपो यथाविधि। उत्क्रेण प्रदीपानां चत्तरीपरिशोधनम् ॥७७॥
तद्रात्रौ पूर्ववत्पूजामुखं यंत्रसमर्चनम्। जिनधामबलिः पश्चाच्छ्रीबलिध्वजपूजनम् ॥७८॥
ध्वजभूम्यापलेपश्च धामाभिमुखवर्तिनः॥ यक्षबिंबस्य च छत्रत्रयस्य परिपूजनम् ॥७९॥
आतीर्थात्स्वस्वपीठेषु दिक्पालादिनिवेशनम्। ध्वजदंडाभिषेकश्च पूजनं तद्ध्वजद्वारद्वारः ॥८०॥
द्रोणद्वयमितव्रीहिप्रस्तरे सकुशाक्षते। विन्यस्तभेरीशंखादेर्भूम्यर्चाविधिनार्चनम् ॥८१॥
स्नानेनालंकृतेन त्रिर्जिनधाम परीतिना। नमता जिनपादाब्जं किरता कुसुमांजलिम् ॥८२॥
धामाभिमुख्यं भेयादिताडनं ताडकेन वै। जपादिमंत्रमुद्घोष्य याजके कुसुमांजलिम् ॥८३॥
उत्किरत्यमुना भेरीताडनं च पुनः पुनः। ब्रह्मतालस्य दिक्पालतालानामपि ताडनम् ॥८४॥
यक्षच्छत्रत्रयाभ्यां वै गत्वा वास्तुबलिस्ततः। विहारः पूर्ववत्पंचविंशत्या स्नपनं घटैः ॥८५॥
विभोः प्रभूतचरुणा पूजा संगीतकेन च। प्रारंभः शांतिहोमस्य शांतिमंत्रजपस्य च ॥८६॥
शांतिमंत्रजपो नित्यं शांतिहोमोऽर्धरात्रके। प्रभातेऽपि च पुष्ट्यर्थो होमः कैश्चिद्विधीयते ॥८७॥
चतुर्भुक्त्तिक्रियाशांतिमंत्रैर्होमो जपस्तथा। दानं चतुर्विधं कार्यं नित्यमातीर्थवासरात् ॥८८॥

उसी दिन सायंकाल में अंकुरारोपण के मंडप में यक्षादि देवों की अधिवासन विधि करें। बड़े ही वैभव के साथ मृत्तिकानयन करके अंकुरारोपण विधि करें। रात्रि में दीपकों की जगमगाहट से चत्वरशोधन विधि अर्थात् मंडप एवं मंडप के चारों तरफ की शुद्धि करें। उसी रात्रि में पूर्व के समान पूजामुख विधि, यंत्रपूजा, जिनधामबलि, श्रीबलि, ध्वजपूजन करें। ध्वजभूमि स्वच्छ करके यक्षबिंब की और छत्रत्रय की पूजा करें। तीर्थसमाप्ति होने पर्यंत (अनुष्ठानकार्य समाप्त होने तक) अपने-अपने स्थान पर दिक्पालों की स्थापना करें। ध्वजदण्ड का अभिषेक व पूजन करके १ किलो चावल को फैलाकर दर्भ खंड आदि स्थापित कर उस पर भेरी, शंख आदि वाद्यों को रखकर विधिवत् अर्चना करें।

स्नान आदि करके अलंकृत होकर जिनमंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर जिनेन्द्रदेव को नमस्कार करें। पुष्पांजलि बिखेरकर जिनमंदिर के सामने वादकों से भेरी आदि वाद्य बजवावें। पुनरपि मंत्रों का उद्घोष करके भेरीताडन विधि सम्पन्न करावें। अनंतर ब्रह्मताल और दिक्पाल तालों पर भी भेरीताडन करावें। सर्वाण्यक्ष और छत्रत्रय के साथ विहार करके 'वास्तुबलि' यह विधि करावें। बाद में भगवान का पच्चीस कलशों से अभिषेक करके बहुत से नैवेद्य से पूजा करके स्तुति करें। शांतिहोम करके शांतिमंत्र का जाप्य करें, नित्य ही यह जाप्य करते हुए अर्धरात्रि में शांतिहोम करें। प्रभात में भी कोई-कोई पुष्टि के लिए होम करते हैं। तीर्थदिवसपर्यंत चार भक्ति पढ़कर क्रिया, शांतिमंत्र, होम, जप तथा चार प्रकार का दान नित्य ही करते रहना चाहिए। ७६ से ८८ ॥

द्वितीयेन्दि ध्वजारोपात्पूर्वं पूजामुखक्रमः। यागमंडलपूजा च जिनधामबलिस्तथा ॥८९॥
ध्वजदेवबलिः पश्चाद्ग्रामवास्तुबलिस्तथा। देवपादार्चितैर्गंधतांबूलैर्भव्यतर्पणम् ॥९०॥
चंद्रमंडलयानेन विहारस्त्रिजगत्प्रभोः। एकाशीतिघटैर्देवस्नपनं पूर्ववत्स्तुतिः ॥९१॥
तद्रात्रौ च तथा किंतु कलशैरष्टसंख्यकैः। स्नापनं प्राज्यचरुणा पूजा संगीतकेन च ॥९२॥
तृतीयेऽन्दि ततो वास्तुबल्यंता विधयः क्रमात्। याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः ॥९३॥
गंधतांबूलसत्पुष्पैर्भव्यतोषणमर्चितैः। नृत्यमंडपपीठस्थविभोरभ्यर्चनं ततः ॥९४॥
नासिकाबंधयानेन विहारो विश्ववेदिनः। घटैरष्टशतेनाथ स्नपनं पूर्ववत्स्तुतिः ॥९५॥
तद्रात्रौ च तथा किं तु कलशैरष्टसंख्यकैः। स्नपनं प्राज्यचरुणा पूजा संगीतकेन च ॥९६॥

ध्वजारोहण से दूसरे दिन पहले पूजामुखविधि, अनंतर यागमंडलपूजा, जिनधामबलि पुनः ध्वजदेवबलि पश्चात् ग्रामवास्तुबलि करें तथा जिनेन्द्रदेव के चरणकमलों में चढ़ाये गये ऐसे चंदन से तथा तांबूलादि से भव्यों को संतुष्ट करें। 'चन्द्रमंडल' यान से भगवान का विहार कराकर इक्यासी घटों से भगवान का अभिषेक करके पूर्ववत् स्तुति करें। उसी रात्रि में आठ कलशों से भगवान का अभिषेक

करावें। विशेष नैवेद्य से भगवान की संगीतपूर्वक पूजा करें। तीसरे दिन वास्तुबलिपर्यंत सारी विधि पूर्वकथित अनुसार कराना चाहिए तथा पूजा करने के बाद गंध, तांबूल, पुष्पों से भव्यों को संतुष्ट करके नृत्यमंडप में विराजमान भगवान की अर्चना करें। 'नासिका-बंध' नाम के यान से भगवान का विहार कराकर एक सौ आठ कुंभों से भगवान का अभिषेक करें। पूर्ववत्स्तुति करके उस रात्रि में मात्र आठ कलशों से अभिषेक करावें। विशेष नैवेद्य से पूजा करके संगीतपूर्वक स्तुति करें॥८८ से ९६॥

चतुर्थेऽह्नि ततो वास्तुबल्यन्ता विधयः क्रमात्। याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः॥९७॥

प्रभूतैर्गंधतांबूलैः सत्पुष्पैः सुरसैः फलैः। जिनपादार्चितैः सर्वभव्यलोकप्रतर्पणम्॥९८॥

पुष्परंगाख्ययानेन विहारो विश्वदृश्वनः। द्वयष्टद्विशतकुंभैश्च स्नपनं पूर्ववत्स्तुतिः॥९९॥

तद्वात्रौ च तथा किं तु कलशैरष्टसंख्यकैः। स्नपनं प्राज्यचरुणा पूजा संगीतकेन च॥१००॥

इसके बाद चौथे दिन वास्तुबलिपर्यंत विधि करके जिनेन्द्रदेव की पूजा से प्राप्त गंध, पुष्प आदि से व तांबूल से तथा सुंदर सरस फलों से भव्यजन्यों को संतुष्ट करें। 'पुष्परंग' नाम के यान से भगवान का विहार कराकर दो सौ सोलह कुंभों से भगवान का अभिषेक कराके पूर्ववत् स्तुति, उस रात्रि में मात्र आठ कलशों से अभिषेक, संगीतपूर्वक चरु से पूजा सम्पन्न करें॥९७ से १००॥

पंचमेऽह्नि ततो वास्तुबल्यन्ता विधयः क्रमात्। याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः॥१०१॥

अस्मिन्नेव दिने प्राणहे स्थापिते मंडले कृते। प्रक्षिप्योलुखके श्वेततंडुलैश्चूर्णयेत्तिनाः॥१०२॥

ततश्चायेत चूर्णैस्तैश्चूर्णिताशेषकल्मषम्। गेयवाद्यरवे व्योम पूरयत्यग्निविष्टरे॥१०३॥

ततश्चूर्णं तदादाय भव्यौघं परितर्पयेत्। जिनेद्रश्रीपदांभोजस्पशमात्रेण पावनम्॥१०४॥

ललाटादौ प्रकुर्युस्तच्चूर्णं भव्याः प्रशान्तये। ततश्च पुष्पयानेन पुरि देवं विहारयेत्॥१०५॥

त्रयष्टत्रिशतकुंभैस्तं स्नपनं पूर्ववत्स्तुतिः॥ तद्वात्रौ च तथा किं तु कलशैरष्टसंख्यकैः॥१०६॥

स्नपनं प्राज्यचरुणा पूजा संगीतकेन च।

पाँचवें दिन 'वास्तुबलिपर्यंत' पूर्वोक्त विधि करके इसी दिन प्रभात में मंडल स्थापना करके उखल में श्वेततंडुल के साथ हल्दी का चूर्ण बनावें, पुनः चूर्ण से अशेष पापों को चूर्ण करने वाले ऐसे जिनेन्द्रदेव की गीत वाद्य पूर्वक पूजा करें, यह चूर्ण जिनचरणों के स्पर्श से पवित्र हो चुका है अतः ऐसे चूर्ण को भव्यजन्यों को प्रदान कर दें। सभी भव्यलोक उस चूर्ण को शान्ति के लिए अपने ललाट आदि में लगावें। अनंतर 'पुष्पयान' नाम के यान पर विराजमान करके भगवान का विहार करावें पुनः तीन सौ चौबीस कुंभों से अभिषेक करके पूर्ववत् स्तुति करें। रात्रि में मात्र आठ कलशों से अभिषेक करके प्राज्यचरु से पूजा करके संगीतपूर्वक स्तुति करें॥१०१ से १०६॥

षष्ठेऽह्नि ततो वास्तुबल्यन्ता विधयः क्रमात्। याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः॥१०७॥

उचितायामविष्कंभागाधे क्रीडासरोवरे। सुधालिप्ते ससोपाने धामोद्देशविनिर्मिते॥१०८॥

उपरिष्टान्महामानकायमानविभूषिते। वितानध्वजमाल्यादिनामानांमंडनमंडिते॥१०९॥

काश्मीरागरुकपूरगंधद्रव्यविमिश्रितैः। सौरभाकृष्टभृंगौघैः पूरितैस्तीर्थवारिभिः॥११०॥

स्वपश्चिमतटन्यस्तपीठस्थं स्नातकं जिनम्। तीर्थार्णःपूर्णसौवर्णकुंभैरस्याष्टदिगतैः॥१११॥

प्रतिदिङ्मवसंख्यानैः संस्नाप्य च समर्च्य च। तद्गंधोदकसंयोगपूतं क्रीडासरोजलम्॥११२॥

अनन्यहार्यदुष्कर्मकर्मक्षालनक्षमम्। वहंतु भव्याः सर्वेऽपि स्वस्वमूर्धनि सादरम्॥११३॥

ततो विहारयेद्देवं गजयानेन भूतितः। सद्द्वान्त्रिंशच्चतुःशत्या घटैः संस्नाप्य संस्तुयात्॥११४॥

तद्वात्रौ च तथा किं तु कलशैरष्टसंख्यकैः। स्नपनं प्राज्यचरुणा पूजा संगीतकेन च॥११५॥

पुनः छठे दिन वास्तुबलिपर्यंत पूर्वोक्त विधि करके उचित लंबाई, चौड़ाई और गहराई वाले क्रीड़ा सरोवर पर भगवान का अभिषेक करें। इस सरोवर की सीढ़ियाँ चूने से पुती हुई हों, उस सरोवर के पश्चिम तट पर श्रीजिनेन्द्रदेव को सिंहासन पर विराजमान करें। उस मंडप को ध्वजा, चंदोवा, माला आदि से विभूषित कर दें। जिनमें चंदनादि सुगंधित द्रव्य मिश्रित है, ऐसे तीर्थजल से भरे ऐसे कुंभ आठों दिशाओं में नौ-नौ स्थापित कर, ऐसे बहतर कुंभों से भगवान का अभिषेक करावें पुनः पूजन करके भगवान् के गंधोदक से मिश्रित पवित्र क्रीड़ा सरोवर के उस जल को सभी भव्यजन अपने-अपने मस्तक पर धारण करें क्योंकि यह गंधोदक संपूर्ण दुष्कर्मरूपी कीचड़ को क्षालन करने में समर्थ माना गया है। अनंतर महाविभूति से 'गजयान' नाम के वाहन में भगवान को विराजमान कर चार सौ बत्तीस घंटों से भगवान का अभिषेक करके उसी रात्रि में आठ कलशों से अभिषेक, चरु से पूजा व संगीत करें॥१०७ से ११५॥

सप्तमेऽह्नि ततो वास्तुबल्यंता विधयः क्रमात् ।। याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः ।। ११९६ ।।
 तांबूलगंधपुष्पाद्यैरर्चितैर्भव्यतर्पणम् । नानापानकसत्रौघैः सर्वलोकप्रतोषणम् ।। ११९७ ।।
 कलशध्वजमाल्यादिभूषितस्य रथस्य च । संप्रोक्षणं चतुर्दिक्स्थनवकुंभाम्बुसेचनैः ।। ११९८ ।।
 होमस्तस्य चतुर्दिक्स्थदर्भत्रिघनमुष्टिभिः । तद्दशाशासु दिक्पालपूजनं च रथार्घ्यकम् ।। ११९९ ।।
 विहारघोषणानंदस्तुतिपूर्वरथाग्रके । शिबिकानीतजैनार्चास्थापनं तत्समर्चनम् ।। १२०० ।।
 परितोऽर्हत्प्रभोरष्टप्रातिहार्यैरलंकृतिः । शांतेररिष्टनेमेश्च परविद्याच्छिंदेस्तथा ।। १२०१ ।।

शांतिमंत्रः प्रागेवोक्तः । ॐ णमो भगवदो अरिटूठणेमिस्स अरिट्टेण बंधेण बंधामि रक्खसाणं, भूयाणं, खेयराणं, चोराणं, डायिणीणं, सायिणीणं, महोरगाणं, वग्घाणं, अण्णे च के वि दुट्ठा संभवन्ति तेसिं सव्वाणं मणं मुहं कोहं दिट्ठिं गइं बंधामि धणु धणु महाधणु महाधणु स्वाहा ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं कलिकुंडदंडस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रें स्फ्रौं स्फ्रः आत्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद छिंद हूं फट् स्वः ।। परविद्याच्छेदनमंत्रः ।।

यथा कोटिशिला पूर्वं चालिता सर्वविष्णुभिः । चालयामि तथोत्तिष्ठ शीघ्रं चल महारथ ।। १२०२ ।।

रथशीघ्रोच्चालनस्य मंत्रान्संजपतां क्रमात् । स्थापनांते चतुर्दिक्षु वादकादेर्निवेशनम् ।। १२०३ ।। रथशीघ्रोच्चालनमंत्रः ।।

पुनः सातवें दिन 'वास्तुबलिपर्यंत' सारी विधि सम्पन्न करें। जिनेन्द्रदेव के चरणों की पूजा से पवित्र ऐसे गंध, पुष्प आदि से भव्यों को संतर्पित करें तथा अनेक प्रकार की पेय वस्तुओं से भी लोगों को संतुष्ट करें पुनः कलश, ध्वजा, माल्यादि से रथ को खूब अच्छी तरह सजाकर चारों तरफ नौ कलश स्थापित करके रथ का संप्रोक्षण—अभिषेक करें। उसके चारों दिशाओं में दर्भ से—२७ मुष्टि द्वारा हवन विधि करें। रथ की दशों दिशाओं में दिक्पाल पूजन करके रथ को अर्घ्य समर्पित करें।

भगवान के विहार की घोषणा करके 'आनंदस्तव' नाम से स्तुति करें पुनः पालकी से जिनप्रतिमा लाकर रथ में विराजमान करके उनकी पूजा करें, प्रतिमा के चारों ओर आठ प्रातिहार्यों को स्थापित करके शोभा बढ़ावें। अनंतर शांतिमंत्र, अरिष्ट नेमिमंत्र और परविद्याच्छेदन मंत्र तथा रथशीघ्र चलाने के मंत्रों का जाप्य करावें। जैसे पूर्व में नारायणों ने कोटिशिला चलित करके उठाया थी, उसी प्रकार 'हे रथ! मैं तुम्हें चलाता हूँ तुम शीघ्र ही चलो' ऐसे अभिप्राय का मंत्र बोलें पुनः रथ की चारों दिशाओं में वाद्य बजाने वालों को नियुक्त करें ।। ११९६ से १२०३ ।।

ततो रथेन यानेन विहारस्त्रिजगत्प्रभोः । सचतुःपंचशत्याभिषेकः कुंभैस्ततः स्तुतिः ।। १२०४ ।।

तद्वात्रौ च तथा किं तु कलशैरष्टसंख्यकैः । स्नपनं प्राज्यचरुणा पूजा संगीतकेन च ।। १२०५ ।।

तदनंतर रथ से त्रैलोक्यनाथ श्री जिनेन्द्रदेव का विहार कराकर पाँच सौ चार कलशों से महाभिषेक कराकर स्तुति करें। उस रात्रि में पूर्ववत् पूजा, आठ कलशों से अभिषेक तथा संगीत का कार्यक्रम आयोजित करें ।। १२०४-१२०५ ।।

अष्टमेऽह्नि ततो वास्तुबल्यंता विधयः क्रमात् । याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः ।। १२०६ ।।

ततः सिंहकयानेन जलयात्रा विभोस्ततः । घटैरष्टसहस्रेण महाभिषवणोत्सवः ।। १२०७ ।।

विभोः प्रभूतचरुणा पूजा संगीतकेन च । तस्मिन्नेव दिने रात्रौ कुर्यात्कौतुकबंधनम् ।। १२०८ ।।

मंडपे मंडिते मध्ये समभ्यर्चितविष्टरे । संस्थाप्य प्राङ्मुखं यक्षं छत्राणां च त्रयं यजेत् ।। १२०९ ।।

ततः सौवर्णतालस्य बध्नीयादक्षिणे करे । दंडे च रजनीसूत्रं याति तूर्यरे दिशः ।। १२१० ।।

आठवें दिन पूर्ववत् पूजामुख विधि आदि से वास्तुबलिपर्यंत सारी विधि करें। अनंतर 'सिंहक' नाम के यान से भगवान का विहार, जलयात्रा करके भगवान का एक हजार आठ कलशों से महाभिषेक कराके विशेष नैवेद्य से संगीतपूर्वक पूजा करके उसी दिन रात्रि में 'कौतुक-बंधन' नाम की विधि करें। सुंदर सुशोभित मंडप के मध्य पूजित ऐसे सिंहासन पर पूर्वदिशा में मुख कर यक्ष व छत्रत्रय की स्थापना करके पूजा करें पुनः सुवर्णताल को दाहिने हाथ में और हल्दी से रंगे सूत्र को दण्ड में बांधें, उस समय खूब बाजे बजवावें ।। १२०६ से १२१० ।।

नवमेऽन्दि ततो वास्तुबल्यंता विधयः क्रमात् । याजकेन विधातव्याः पूर्वोक्तविधिना ततः ॥१३१॥
 नृत्यमंडलमध्यस्थमहापीठस्थितं विभुम् । पंचोपचारविधिना यजेदेकादशार्चनैः ॥१३२॥
 जिनपादार्चितैर्गंधद्रव्यचूर्णानुलेपनैः । प्रभूतैः पुष्पतांबूलैः सर्वभयान्प्रतोषयेत् ॥१३३॥
 तस्मिन्नन्दि विशेषेण प्राज्यभोज्यप्रदानकैः । चतुर्वर्णोचितैः सत्रैरागताभ्योजयेज्जनान् ॥१३४॥
 ततः परिगम्येशं पुरि पद्माख्यानकम् । मार्जितेन विशुद्धेन संसिक्तेन तथा जलैः ॥१३५॥
 सरोनद्यादिसंप्राप्य शुद्धतोयं जलाशयम् । तत्तीरे षोडशस्तंभे कल्पिते सुंदराकृतौ ॥१३६॥
 नवदशकरव्यासे मंडपादौ सुमंडिते । मध्यांशे स्थापिते प्रत्यक् तीर्थेशं तीर्थदिङ्मुखम् ॥१३७॥
 यक्षं छत्रत्रयं चाग्रे दक्षिणेतरपार्श्वयोः । प्रक्षिप्याथ सुगंधीनि प्रसूनानि तदंभसि ॥१३८॥
 क्षीरोदपद्मगंगादिनीरं मत्वाभिमन्त्रिते । पुरस्तात्स्थापयेद्धीमांस्तद्वारिपरिपूरितान् ॥१३९॥
 नव षोडश वा पंचविंशतिं वा घटान् विभोः । ततोऽवतार्य तद्द्रव्यैः संपूज्य च जगद्गुरुम् ॥१४०॥
 ततश्चक्रं तथा छत्रत्रितयं च समर्च्य च । आहूतदिकपतीन्सर्वानाखंडलपुरःसरान् ॥१४१॥
 समभ्यर्च्य ततो नाथममीभिः स्नापयेद्घटैः । यक्षेश्वरधृतं धर्मचक्रं छत्रत्रयं च तत् ॥१४२॥
 निमज्जयेज्जलाधारे जगतःशांतिरस्त्विति । तदेतत्पुण्यतीर्थाभः कुर्युर्भव्याः स्वमूर्धनि ॥१४३॥
 ततः कौतुकसूत्रं तत्प्रक्षिप्ते तज्जलाशये । ततः समर्च्य लोकेशं जलगंधाक्षतादिभिः ॥१४४॥
 प्रभूतचरुभिश्चाथ चक्रादिद्वितयं यजेत् । ततो विसृज्य दिक्पालान्प्राप्य देवालयं प्रभुम् ॥१४५॥
 कलशैः पंचविंशत्या स्नापयेत्तद्द्वयान्वितम् । संयमार्थोपकरणैर्वस्त्रैराभरणैर्धनैः ॥१४६॥
 संघपूजां प्रकुर्वीत यजमानः स्वशक्तितः । इंद्रस्य च प्रतीद्राणां सत्कारमुचितं कृती ॥१४७॥

पुनः नवमें दिन पूर्ववत् 'वास्तुबलिपर्यंत' सारी विधि सम्पन्न करें। नृत्यमंडप में स्थित महासिंहासन पर विराजमान भगवान की पंचोपचार विधिपूर्वक एकादश प्रकार पूजा करें। पूजा के अनंतर गंधद्रव्य, चूर्ण, पुष्प, तांबूल से सभी भव्यों को संतर्पित करें। उसी दिन विशेषेण उत्तम-उत्तम भोज्य पदार्थों से आगंतुक चातुर्वर्ण्य जनों को भोजन करावें।

अनंतर भगवान को 'पद्म' नाम के यान से शहर में विहार करावें। उस समय सड़कों को साफ कराकर जल का छिड़काव करें पुनः सरोवर नदी आदि शुद्ध-स्वच्छ जल वाले जलाशय को प्राप्त करके उस तीर पर सोलह स्तंभों से एक सुंदर मंडप, जो कि नव अथवा दश हाथ के व्यास वाला हो, ऐसा बनवावें। उसके मध्य के पश्चिम भाग में तीर्थदिशा की तरफ मुख करके तीर्थकर भगवान को विराजमान करें। भगवान के दक्षिण भाग में यक्ष को और बायें भाग में तीन छत्र को स्थापित करें पुनः भगवान के सामने नव, सोलह या पच्चीस घड़ों को स्थापित करें, उन कलशों में जल भरकर सुगंधित पुष्पों को क्षेपण कर क्षीरोदधि, पद्म सरोवर, गंगादि जल का मंत्रपूर्वक संकल्प करें पुनः जगद्गुरु भगवान की पूजा करके चक्र और छत्रों की पूजा करके, दिक्पालादि की स्थापना करके पूजा करें। अनंतर उपर्युक्त घड़ों से भगवान का अभिषेक करें। पश्चात् यक्षेश्वर के मस्तक पर रखे हुए धर्मचक्र को और तीन छत्र को "जगत् में शांति हो" इस भावना से जलाशय में डुबोवें पुनः उस पवित्र जल को अपने-अपने मस्तक पर चढ़ावें, अनंतर कौतुकसूत्र को जलाशय में डाल देवें। जल-चंदन आदि से भगवान की पूजा करके विशेष नैवेद्य आदि से चक्र आदि की पूजा करें। अनंतर दिक्पालादि का विसर्जन करके भगवान को मंदिर में ले जाकर चक्र व छत्रत्रय सहित भगवान का पच्चीस कलशों से अभिषेक करें। संयम के उपकरण पिच्छी, कमण्डलु, शास्त्रों का मुनियों को दान देवें, इसी प्रकार पिच्छी, कमण्डलु, शास्त्र और वस्त्रों का आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं को तथा ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी आदि को यथोचित वस्त्र, धन आदि देवें। इस प्रकार यजमान चतुर्विध संघ की अपनी शक्ति के अनुसार पूजा करें। प्रतिष्ठाचार्य एवं सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यों का भी यथोचित सत्कार करें ॥१३१ से १४७॥

कृत्वा तन्वा च चरणौ दातात्मानं समर्पयेत् । ततः सायं समभ्यर्च्य वैजयंतीं महाध्वजम् ॥१४८॥
 त्रिःपरावर्तयेन्मोहजयशंसिनमीशिनः । तदैवं तक्रिया तस्य राज्यराष्ट्रविवर्धनम् ॥१४९॥
 ततः संचितपुण्यास्ते यांत्वायाता यथायथम् । आयातभव्यलोकस्य तत्कर्म स्याद्विसर्जनम् ॥१५०॥
 केतनारोहणं तेषामाव्हानं भविनां भवेत् । अर्धरात्रे ततः सूरिराहूय स्थापितान्सुरान् ॥१५१॥
 समभ्यर्च्य विसृज्यामूनं ध्वजं समवरोहयेत् । रथान्वितोत्सवस्यैवं कथितः कर्मणां क्रमः ॥१५२॥

अनंतर सायंकाल में महाध्वज की पूजा करके जिनेन्द्रदेव के मोह पर विजय सूचित करने वाली ऐसी उनकी तीन बार प्रदक्षिणा दें। इस क्रिया से राज्य और राष्ट्र की वृद्धि होती है। इसके बाद जिन्होंने इस महान् उत्सव में पुण्यसंचित किया है, ऐसे सभी लोग अपने-अपने स्थान चले जावें, आये हुए भव्य लोगों का स्व-स्वस्थान जाना ही सर्वसंघ विसर्जन विधि है। सर्वभूतों को बुलाकर ध्वजारोहण कराना चाहिए पुनः अर्धरात्रि में प्रतिष्ठाचार्य वहाँ पर स्थापित देवों का आह्वान कर उनकी पूजा करके व विसर्जन करके ध्वजा को उतार लें। रथोत्सव सहित महोत्सव करने का यह क्रम बतलाया गया है। ११४८ से १५२॥

अयमेव क्रमः प्रायो रथोन्मुक्तेऽपि चोत्सवे। किं तु नात्र रथारोहे घटाः स्युः स्वेष्टसंख्यकाः॥१५३॥

चूर्णोत्सवतीर्थदिने तीर्थ एव जलोत्सवः। एवमाष्टान्हिको नाम महोऽन्यस्मिन्महत्रये॥१५४॥

न ध्वजारोहणं तीर्थपूजा विश्वविहारणम्। अष्टान्हिकोत्सवेऽपि स्यान् ध्वजारोहणादिकम्॥१५५॥

यथा सैष महोदकः संविधातु न शक्यते। मंत्राः कर्मविशेषाश्च प्रोक्तानां सर्वकर्मणाम्॥१५६॥

प्रागेव कथितास्तस्मात्प्रयोगो नात्र भण्यते॥१५७॥

इति निगदितमार्गानुत्सवान्येऽत्र भक्त्या। विदधति नियमात्तान्बन्धम् स्वशक्त्या॥

उपचितबहुपुण्याः साधु निर्विशय भोगान्। अपगतसकलाघाः क्षिप्रमेयंति मोक्षम्॥१५८॥

प्रायः यही क्रम रथोत्सव रहित महोत्सवों का समझना चाहिए किन्तु रथोत्सव सहित में जो अभिषेक के कलशों की संख्या निश्चित है, वह यहाँ रथोत्सव रहित में नहीं है। चूर्णोत्सव और तीर्थदिवस इस दिवस ही जलोत्सव विधि करें, इस प्रकार यह आष्टान्हिक उत्सव अर्थात् आठ दिवसीय महोत्सव है। अन्य पंचदिवसीय या त्रिदिवसीय या एकदिवसीय उत्सवों में ध्वजारोहण, तीर्थपूजा और विश्वविहार ये विधियाँ नहीं करते हैं। आठ दिन के उत्सव में भी ध्वजारोहणादि विधि नहीं भी करते हैं क्योंकि इतना बृहत् कार्यक्रम करना कठिन होता है। सभी उत्सवों में क्रिया विशेष और मंत्र जो करने चाहिए उनका कथन पहले किया जा चुका है अतएव यहाँ वह प्रयोगविधि नहीं कही गई है।

इस प्रकार जो भव्यजीव भक्तिपूर्वक अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिवर्ष आगम में कथित विधि के अनुसार नियम से इन उत्सवों को करते हैं, वे बहुत सा पुण्य संचित करके अनेक प्रकार के भोगों का अनुभव करके संपूर्ण कर्मों से रहित होते हुए शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करेंगे। १५३ से १५८॥

यह उत्सवविधि अधिकार पूर्ण हुआ।

इत्यर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहे नेमिचंद्रदेवविरचिते

प्रतिष्ठातिलकनाम्नि उत्सवविधिर्नाम

अष्टादशः परिच्छेदः॥

इस प्रकार श्री नेमिचंद्रदेवविरचित अर्हत्प्रतिष्ठासारसंग्रहस्वरूप 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के

ग्रंथ में अनेक प्रकार के उत्सव-महोत्सव की विधि को कहने वाला

यह अटारहवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ।



कविवंशवर्णनम्

पुराकृतयुगस्यादावादिब्रह्मतनूभवः। अन्त्यब्रह्मा स भरतो यान्ससर्ज द्विजोत्तमान्॥११॥
 तेषु केचिदथात्यक्तजिनमार्गा विवेकिनः। अविच्छिन्नान्वयाचारपरा ववृतिरे द्विजाः॥१२॥
 तदन्वयभवाः केचित्कांचीनाममहापुरे। त्रिपंचाशक्रियानिष्ठास्तस्थुः षट्कर्मकर्मठाः॥१३॥
 तान् किलाद्रियतेऽस्मार्यान्विशाखाचार्यपुंगवः। उपासकमहावेदरहस्याद्युपदेशनैः॥१४॥
 तद्वंशसंभवा बाल्ये स्वभ्यस्तौपासकागमाः। यौवने भुञ्जते भोगान्भूपैलोकैश्च पूजिताः॥१५॥
 जैनीमाददते दीक्षां वार्धके शुद्धबुद्धयः। एवं कुलव्रताः प्रायो व्यतीयुर्बहवः क्रमात्॥१६॥

पूर्व में युग की आदि में आदिब्रह्मा के पुत्र भरत चक्रवर्ती हुये हैं वे अन्त्यब्रह्मा कहलाये हैं उन्होंने ब्राह्मण वर्ण को उत्पन्न किया है। उनमें से कितने ही ब्राह्मणों ने जैनधर्म को छोड़ा नहीं, उन विवेकी जनों ने अपनी वंश परम्परा का आचार उत्तम रीति से पालन किया है। उन्हीं ब्राह्मणों के वंश में उत्पन्न कतिपय ब्राह्मण 'कांची' नाम के शहर में रहते थे, वे त्रेपन क्रियाओं में निष्ठ थे अतः अपने देवपूजा आदि षट्क्रियाओं में तत्पर थे। उन ब्राह्मणों को श्री विशाखाचार्यवर्य गुरुदेव ने उपासकाध्ययन नामक महावेद के रहस्यों का उपदेश देकर निपुण किया था। इस वंश में उत्पन्न हुये ब्राह्मण बचपन में उपासकागम—श्रावकाचार का अभ्यास करते थे, युवावस्था में राजाओं से और सभी लोक से पूजित होते हुए भोगों को अनुभव करते थे, वृद्धावस्था में शुद्धबुद्धि धारक होते हुए जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करते थे, इस प्रकार क्रम से अपने कुलपरम्परा के व्रतों को पालते हुए प्रायः कितने ही ब्राह्मण हो चुके थे॥११ से ६॥

तदन्वयेऽजनिष्ठाकलंकभट्टारको महान्। वाग्वज्रचूर्णिताखर्ववादिगर्वमहीधरः॥१७॥
 ततोऽजनि कुले तस्मिन्निर्न्रनदिमुनीश्वरः। सिद्धांतपारगः सार्वः सर्वशास्त्रोपदेशकः॥१८॥
 तस्मिन्नंतवीर्यार्यवर्योऽजनि कुले ततः। यदुक्तिरकलंकार्यनिधेः स्याद्वीपवर्तिका॥१९॥
 वीरसेनमुनीन्द्रार्कस्तद्वंशोदयभूधरे। उदीयाय चिरं जैनशासनांबरभासनः॥११०॥
 कलानिधिः सुधास्यंदी निजवाङ्मयचंद्रिकः। जिनसेनमुनिश्चंद्रस्तद्वंशाब्धिमवर्धयत्॥१११॥
 वादीभसिंहसूरिश्च वादिराजश्च तार्किकौ। एतावन्वर्थनामानौ वंशे तस्मिन्नुदीयतुः॥११२॥

अनंतर इसी परम्परा में महान् 'भट्टाकलंक' आचार्य हुए हैं जिन्होंने अपने वचनरूपी वज्र से अनेक वादियों के गर्वरूपी पर्वत को चूर्ण किया है। इसके बाद इसी कुल में 'इन्द्रनंदि' नाम के महान् आचार्य हुए हैं, ये सिद्धान्तपारगामी, सर्व के हितकर्ता और सर्व शास्त्रों के उपदेशकर्ता हुए हैं। अनंतर इसी वंश में 'अनन्तवीर्य' महामुनि हुये, जिनके वचन अकलंकदेव के शास्त्ररूपी निधि को दिखलाने में दीपक के समान सिद्ध हुए हैं। इसी वंशरूपी उदयाचल से श्रीवीरसेनाचार्यरूपी सूर्य उदित हुए जिन्होंने चिरकाल तक जिनशासनरूपी आकाश को प्रकाशित किया है। अनंतर जिनसेनाचार्यरूपी चंद्र हुए हैं जिन्होंने अपने वचनरूपी चंद्रिका से अमृतको झरते हुए उस वंशरूपी समुद्र को बढ़ाया है पुनः इसी वंश में 'वादीभसिंहसूरि' और वादिराज महामुनि हुये जो कि तर्क—न्याय शास्त्र में विद्वान् अन्वर्थ नाम के धारक उदित हुए हैं॥१७ से १२॥

प्रवादिहस्तिनां मल्लो हस्तिमल्लसमुद्भवः। गृहाश्रमी बभूवार्हच्छासनातिप्रभावकः॥११३॥
 प्रवादिविजये मल्लः परवाद्यादिमल्लवाक्। मुनिः प्राभावयज्जैनशासनं तत्कुलोद्भवः॥११४॥
 इत्थमन्येपि तद्वंशसंजाता द्विजपुंगवाः। प्रव्रज्य प्रायशो जाता जिनमार्गप्रभावकाः॥११५॥

पुनः इसी वंश में प्रवादीरूपी हस्तिनों के लिए मल्ल के समान 'हस्तिमल्ल' नाम के कवि हुए, ये गृहस्थाश्रम में स्थित हुए भी अर्हत्शासन की अतीव प्रभावना करने वाले थे। प्रवादियों को जीतने में मल्ल ऐसे 'परवादीमल्ल' नाम के मुनि हुये, जिन्होंने जिनशासन की अतिशय प्रभावना की है। इस प्रकार से इस वंश में अनेक ब्राह्मणोत्तम उत्पन्न हुए कि जिन्होंने प्रायः जिनदीक्षा लेकर जिनधर्म की प्रभावना की है॥१३-१४-१५॥

आसीत्तदन्वये लोकपालाचार्य इति द्विजः। गृहस्थाचार्यतारूढो विद्वान्निस्तारकोत्तमः॥११६॥
 चोलेन पूजितो राज्ञा तेन राज्ञा समं स च। प्रतिदेशाख्यकर्नाटदेशं प्राप्य स्वबंधुभिः॥११७॥
 पुत्रःसमयनाथाख्यस्तस्यासीत्तर्ककर्कशः। तत्पुत्रः कविराजादिमल्लः कविशिखामणिः॥११८॥

वादी वाग्मी च तत्पुत्रश्रिंतामणिसमाह्वयः। अनंतवीर्यस्तत्सुनुर्घटवादविशारदः॥१९६॥
 तदात्मजः पार्यनाथः संगीतागमशास्त्रवित्। आदिनाथस्तु तत्सुनुरायुर्वेदविशारदः॥१२०॥
 तस्यात्मजो धनुर्वेदी वेदिकोदंडरामकः। तन्नंदनो ब्रह्मदेवो धीमान् षट्कर्मकर्मठः॥१२१॥
 देवेन्द्रस्तत्सुतो नाम्ना देवेन्द्रोपमवैभवः। संहिताशास्त्रनिष्णातः कलासु कुशलःशुची॥१२२॥
 राजमान्यो वदान्यश्च जिनधामादिकारकः। त्रिवर्गलक्ष्मीसम्पन्नश्चतुरो बंधुवत्सलः॥१२३॥
 सधर्मचारिणी तस्य सैवाभूदादिदेविका। या श्रीविजयपार्यस्य श्रीमत्याश्च सुता सती॥१२४॥
 यस्याः सहोदरा धीराश्चंदपार्यो बुधोत्तमः। महाविद्वान् ब्रह्मसूरिः पार्श्वनाथ इति त्रयः॥१२५॥

इस वंश में एक 'लोकपालाचार्य' नाम के जैन ब्राह्मण हुए, ये भव्यों को संसार से पार करने में सक्षम ऐसे गृहस्थाचार्य थे। 'चोल' राजा ने इनका बहुत सम्मान किया, पुनः ये उन्हीं राजा के साथ कर्नाटक प्रांत में 'प्रतिदेश' नाम के नगर में अपने परिवार के साथ आकर रहने लगे। इन लोकपालाचार्य का 'समयनाथ' नाम का एक पुत्र था, जो तर्कशास्त्र में अतिशय निपुण था। उसका पुत्र 'कविराजमल्ल' नाम का था, जो कि कविशिखामणि था। इसका पुत्र 'चिंतामणि' नाम का था, जो कि वादी और वाग्मी था। इसके पुत्र का नाम 'अनन्तवीर्य' था, वह घटवाद में निपुण था। इसके पुत्र का नाम 'पार्यनाथ' था, वह संगीत शास्त्र में प्रवीण था। इसके पुत्र का नाम 'आदिनाथ' था, जो कि आयुर्वेद विशारद था। इसके पुत्र का नाम 'धनुर्वेदी' था, जो कि रामचंद्र के समान धनुर्विद्या में कुशल था। इसके पुत्र का नाम 'ब्रह्मदेव' था, जो कि बुद्धिमान षट्क्रियाओं में कुशल था। इनके पुत्र का नाम 'देवेन्द्र' था, जो कि देवेन्द्र के समान वैभवशाली, संहिताशास्त्र में निष्णात, सर्वकलाओं में कुशल और पवित्र था। यह देवेन्द्र राजमान्य, दानशूर जिनमंदिर आदि का निर्माण कराने वाला, त्रिवर्गलक्ष्मीसम्पन्न, चतुर और बंधुओं में प्रेम करने वाला था। इसकी पत्नी का नाम 'अग्निदेवी' था। यह श्रीविजयपार्य की पुत्री थी। इसकी माता का नाम श्रीमती था। इस आदिदेवी के तीन भाई थे—चंद्रपार्य, ब्रह्मसूरि और पार्श्वनाथ। ये तीनों महाविद्वान् थे॥१९६ से २५॥

तद्देवेन्द्रादिदेव्याख्यदंपत्योरादिनाथकः। नेमिचंद्रो विजयप इति पुत्रास्त्रयोऽभवन्॥१२६॥
 तत्रादिनाथः सर्वाहर्त्संहिताशास्त्रपारगः। तत्पुत्रास्त्रैलोक्यनाथजिनचंद्रादयो बुधाः॥१२७॥
 धीमान् विजयपाख्यस्तु ज्योतिःशास्त्रादिकोविदः। समंतभद्रस्तत्पुत्रः साहित्यरससांद्रधीः॥१२८॥
 धीमनो नेमिचंद्रस्तु तर्कव्याकरणागमान्। अधीत्याभयचंद्राख्यमहोपाध्यायसन्निधौ॥१२९॥
 पदवाक्यप्रमाणज्ञरुद्धौ बाढमुपागतः। पुत्रौ द्वौ तस्य कल्याणनाथाख्यो धर्मशेखरः॥१३०॥
 इति तत्रादिमः सर्वशास्त्रवाराशिपारगः। द्वितीयस्त्वद्वितीयोऽभूच्छास्येषु सकलेष्वपि॥१३१॥
 अथ यो नेमिचंद्रार्यः शास्त्रं वेत्यखिलं स्फुटम्। व्याख्याति शास्त्रमर्थिभ्यो यः सदा धर्मकाम्यया॥१३२॥
 सत्यशासनपरीक्षामुख्यप्रकरणादिकम्। यस्तु शास्त्रं व्यरचयद्विश्वविद्वज्जनस्तुतम्॥१३३॥
 नृपास्थानेषु तर्केषु कर्कशान्प्रतिवादिनः। निर्जित्य बहुशो यस्तु जैनं प्राभावयन्मतम्॥१३४॥

इन देवेन्द्र और आदिदेवी दंपती के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः आदिनाथ, नेमिचंद्र और विजयप थे। इनमें आदिनाथ संपूर्ण 'अहर्त्संहिताशास्त्र' का पारगामी था। इसके पुत्र त्रैलोक्यनाथ, जिनचंद्र आदि थे। बुद्धिमान विजयप ज्योतिष शास्त्रों में पारंगत था इसके पुत्र का नाम 'समंतभद्र' था, वह साहित्यरस से ओतप्रोत—साहित्य में निपुण था।

बुद्धिमान नेमिचंद्र तर्क, व्याकरण और आगम ग्रंथों को 'अभयचन्द्र' नाम के उपाध्याय के सानिध्य में पढ़कर पद, वाक्य और प्रमाण का अतिशय ज्ञानी था। इसके दो पुत्र हुए, एक का नाम कल्याणनाथ और दूसरे का नाम 'धर्मशेखर' था। इनमें से कल्याणनाथ सर्वशास्त्र समुद्र का पारगामी था और दूसरा भी संपूर्ण शास्त्रों में अद्वितीय था।

पूर्वकथित जो तीन भाइयों में 'नेमिचंद्र' थे। वे सर्वशास्त्रों के स्पष्टतया ज्ञाता थे और धर्म की बुद्धि से हमेशा सभी शास्त्र पढ़ने के इच्छुक जनों को शास्त्र का व्याख्यान करते रहते थे। इन्होंने 'सत्यशासन परीक्षा' नाम के मुख्य प्रकरण ग्रंथ की रचना की जो कि सर्व विद्वज्जनों में मान्य हुआ। राजा की सभाओं में न्याय ग्रंथ में कठोर ऐसे प्रतिवादी—जैनधर्म से बहिर्भूत विद्वानों को बहुत बार इन्होंने पराजित करके जैनधर्म की प्रभावना की थी॥१२६ से ३४॥

यो नृपाद्यर्पितादोलशिबिकाछत्रवैभवः। यो ददात्यर्थमर्थिभ्यो भुङ्क्ते भोगान्स्वबंधुभिः॥३५॥

अकारयच्च यो जैनधाममंडपवीथिकाः। गीतं वाद्यं च नृत्यं च पार्श्वेशाग्रे न्ययोजयत्॥३६॥

एवं च धर्मकामार्थत्रिवर्गश्रीविराजितः। आस्ते स्थिरकदंबाख्ये नगरे राजपूजितः॥३७॥

इन नेमिचंद्र को राजा ने पालकी, छत्र आदि वैभव दिया था। ये नेमिचंद्र याचकों को हमेशा दान देते रहते थे और अपने बंधु वर्गों के साथ सांसारिक सुखों का अनुभव करते थे। इन्होंने जिनमंदिर और मंडप आदि बनवाये जेजहाँ पर हमेशा भगवान पार्श्वनाथ के सामने गीत, वाद्य और नृत्य के आयोजन कराते रहते थे। इस प्रकार धर्म, अर्थ और काम इन तीन वर्ग—पुरुषार्थरूपी लक्ष्मी से शोभित हुए 'स्थिरकदंब' नाम के नगर में रहते थे और राजा द्वारा भी सम्मान को प्राप्त हुए थे॥३५ से ३७॥

श्रीपार्श्वनाथपादाब्जसेवाहेवाकमानसाः। मातुलाः स्वस्य तत्पुत्राः पितृव्याश्च सहोदराः॥३८॥

तत्पुत्राश्च स्वपुत्राश्च बंधवोऽन्ये विपश्चितः। कदाचिद्व्यार्थयतेऽस्मि तमेवं प्रीतमानसाः॥३९॥

आयुष्मन् श्रृणु भो सूर्ये सर्वशास्त्रविशारद। प्रतिष्ठाशास्त्रमेकं सत्पंचकल्याणविस्तरम्॥४०॥

विरच्यतामिति ततो जिनभक्त्या च चोदितः। स चाहं नेमिचंद्राख्यो निर्मिणोमि स्म शक्तितः॥४१॥

प्रतिष्ठातिलकं नाम प्रतिष्ठाशास्त्रमुत्तमम्। शास्त्रेऽत्र स्खलितं यन्मे तद्बुधाः क्षंतुमर्हथ॥४२॥

जिनेज्यासाधनत्वेन स्वर्गोक्षामोघसाधनम्। भव्या व्यवहरन्तेतच्छास्त्रं यज्ञेषु याज्ञिकाः॥४३॥

श्री पार्श्वनाथ भगवान की भक्ति में तत्पर ऐसे इन नेमिचंद्र के मामा, उनके पुत्र, चाचा, भाई, उनके पुत्र तथा स्वयं के पुत्र एवं अन्य बंधुवर्ग इन सभी ने मिलकर एक बार इन 'नेमिचंद्र' विद्वान् से प्रार्थना की—

‘हे आयुष्मन्! हे सर्वशास्त्रपारंगत आचार्य! हम लोगों की प्रार्थना सुनो, आप एक ‘प्रतिष्ठाशास्त्र’ की रचना करो कि जिसमें पंचकल्याणक का विस्तार से वर्णन हो।’

इस प्रकार से निवेदन सुनकर तथा जिनभक्ति से प्रेरित हो मैं 'नेमिचंद्र' विद्वान् ने अपनी शक्ति के अनुसार इस 'प्रतिष्ठातिलक' ग्रंथ का निर्माण किया है। सर्व प्रतिष्ठा शास्त्रों में उत्तम यह 'प्रतिष्ठातिलक' नाम का शास्त्र है। इस शास्त्र में मेरे से जो कहीं खलन हुआ हो, उसे बुद्धिमान लोगों को क्षमा करना उचित है।

यह शास्त्र जिनपूजा का साधन होने से स्वर्ग और मोक्ष का साधन है। इसलिए याज्ञिक—पूजाविधान करने वाले विद्वान पूजा एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में इस शास्त्र का उपयोग करें॥३८ से ४३॥

अनुगतवरसूत्रं चारुकांतिप्रसादं, परिहृतजनतापं वृत्तरत्नौघपूर्णम्।

सुखयदमलदृष्टीन् कंठिकाकल्पमेत-द्वसतु सुकृतिकंठे शास्त्रमाचंद्रतारम्॥४४॥

यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ आगम सूत्रों का अनुसरण करने वाला है, कांति और प्रासाद इन काव्य गुणों से युक्त है, मनुष्यों के संसार ताप को दूर करने वाला है, चारित्ररूपी रत्नसमूह से परिपूर्ण है, सम्यग्दृष्टियों को आल्हादित करने वाला है, इसलिए इस ग्रंथ को भव्यजन इस संसार में जब तक चंद्रमा और तारागण हैं, तब तक अपने कण्ठ में धारण करें॥४४॥

मनोहारि तमोहारि तापहार्यमृतावहम्। शरणं भक्तिमानेमि-चंद्रवज्जिनशासनम्॥४५॥

यह जैनशासन चन्द्र के समान मन को हरण करने वाला है, भव्यों के मन में स्थित अंधकार को दूर करने वाला है, भव्यों के संसार ताप को नष्ट करने वाला है एवं अमृत को देने वाला—मोक्ष को प्रदान करने वाला है इसीलिए मैं जिनशासन की भक्तिपूर्वक शरण लेता हूँ। यहाँ जिनशासन को चंद्रमा की उपमा दी है, चंद्रमा भी मनोहारी होता है, अंधकार को दूर करता है, संताप को नष्ट करता है एवं अमृत को झराने वाला होता है, इन गुणों से विशिष्ट जिनशासन की शरण लेना ही सर्वोत्तम है।

॥ इति कविवंशवर्णनम् ॥



ग्रंथकर्तुः प्रशस्तिः

सद्वर्णी सूत्रयुक्तः प्रकृतिगुणयुतः साधिकारः सलिंगः । सश्रद्धः शुद्धवाक्यः पदगुणसुभगो वृद्धिमान् धातुपूज्यः ॥

सद्रूपः सौम्यनामा व्ययविधिविमलः शब्दसिद्धिप्रगल्भः । सत्कीर्तिर्नेमिचंद्रोऽभवदवनितले रूपमालासदृक्षः ॥११॥

श्रीनेमिचंद्रदेव वर्णी इस भूतल पर रूपमाला—व्याकरण के समान हुये हैं। जैसे व्याकरण में वर्ण, सूत्र, प्रकृति, गुण, अधिकार, पुल्लिङ्गादि लिंग, श्रद्धा संज्ञा (आकारांत स्त्रीलिंग को श्रद्धा संज्ञा है) शुद्ध वाक्य रचना, पदों की गुण व वृद्धि पद व गुणों से सुंदर, धातु-क्रिया से युक्त, अच्छे-अच्छे रूपों से युक्त, नाम, अव्यय और समास विधि रहती है। इसी प्रकार ये नेमिचंद्रभी सद्रूपी—ब्रह्मचारी, आगम सूत्र के ज्ञाता, स्वाभाविक गुणों से युक्त, अधिकारसहित, पुरुषलिंगी, श्रद्धावान्, शुद्ध-अच्छे वाक्य बोलने वाले, अपने पद के गुणों से सुंदर-गृहस्थाचार्य गुणों से युक्त, हमेशा उन्नतिशील, धातुपूज्य—राजादि से पूज्य, रूपवान्, सौम्य नामधारी—चंद्र सौम्य होता है उस नाम से सहित, दान देने में विमल और शब्द सिद्धि में निपुण हुए हैं ॥११॥

विपश्चिदंभोरुहषंडभानुः, स्थिराधिपास्थानमणिप्रदीपः । जिनागमांभोनिधिपूर्णचंद्रो, जयत्वजस्रं भुवि नेमिचंद्रः ॥१२॥

ये नेमिचंद्र विद्वान्रूपी कमलों को प्रफुल्लित करने में सूर्य के समान, राजाओं की सभा में स्थिर ऐसे मणि दीपक के समान और जिनागमरूपी समुद्र को वृद्धिगत करने में चंद्र के समान थे। ऐसे नेमिचंद्रदेव सदा इस पृथिवी तल पर जयशील होते ॥१२॥

पलायध्वं पलायध्वं, रे रे तार्किकदिग्गजाः । नेमिचंद्रः समायातः, स्याद्वादवनकेसरी ॥१३॥

रे, रे तार्किकदिग्गजों! भागो, भागो, स्याद्वादरूपी वन में विचरण करने वाला यह नेमिचंद्ररूपी सिंह आ रहा है। अर्थात् इन नेमिचंद्र से बड़े-बड़े न्याय के प्रकाण्ड विद्वान भी डरते थे ॥१३॥

धर्मेन्द्राढ्यसंयतेन लिखितं, श्रीमज्जिनेंद्रप्रति-ष्ठासारं जिनभाक्तिकेन विलसन्नेमीदुना निर्मितम् ॥

ग्रंथोऽयं त्वधुना मया भुवि चिरं, संतिष्ठते प्राग्भवे । पुण्योपार्जनमुक्तिलोकहृदये, कंठे सदर्थान्वितम् ॥१४॥

श्री नेमिचंद्रदेव द्वारा रचित इस प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ को 'श्रीधर्मचंद्र' नाम के मुनि ने जिनभक्ति से प्रेरित हो लिखा है। यह ग्रंथ पुण्योपार्जन करने वाले जनों के हृदय में और कंठ में अर्थसहित होता हुआ चिरकाल तक निवास करे ॥१४॥

जयति विजयकीर्तिः श्रीमदाचार्यमूर्तिर्भवजलधितरंडः खंडितानंगकांडः ।

गुणमणिगुणसिंधुर्भव्यसंदोहबंधुर्निरतिशयचरित्रः क्षमातलस्तोत्रपात्रः ॥१५॥

श्रीमान् आचार्य विजयकीर्ति सदा जयशील होंगे, ये आचार्य भवसमुद्र से तिरने के लिए नाव के समान थे, इन्होंने कामदेव के वाण को खंडित कर दिया था, गुणरूपी रत्नों के समुद्र थे, भव्य समूह के बंधु थे, इनका चारित्र्य अवर्णनीय—सर्वोत्तम था और ये इस पृथिवी तल पर सभी की स्तुति के पात्र हुए थे ॥१५॥

आनंदाब्दे चैत्रमासे, पंचम्यां परिपूरणात् ॥ मया विलिखितं पुस्तमिदं स्थेयाच्चिरं भुवि ॥१६॥

यह ग्रंथ 'आनन्द' नाम के संवत्सर में चैत्र मास की पंचमी के दिन मैंने लिखकर पूर्ण किया है, यह चिरकाल तक पृथिवी पर स्थिर रहे ॥१६॥

आब्रह्माख्यवर्णीशं, सादरीकृतसंधकम् । मेदिनीपतिपूजार्ह-पादपद्मं नमाम्यहम् ॥१७॥

'आब्रह्म' नाम के मुनि, सर्व संध के आदर के पात्र थे, राजागणों से उनके चरण कमल पूजित थे, ऐसे गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥१७॥

कंद छंदः—सुजनैकसेव्यनमलं वृजिनहर विजयकीर्तिमुनिसुतनेनली । विजयवर्णीशगणं भुजगेंद्रगल्लदुळिदरवे स्तुतिसल ॥१८॥

श्रीमत्पंचगुरुभ्यो नमः । सरस्वत्यै नमः । गणधरादिमहामुनिभ्यो नमः ॥

श्रीमान् पंचपरमगुरु को नमस्कार हो, सरस्वती को नमस्कार हो और गणधर आदि महामुनियों को भी नमस्कार हो ।

॥ इति प्रशस्तिः ॥

॥ वर्द्धतां जिनशासनम् ॥



प्रतिष्ठातिलक भावानुवादक र्याः प्रशस्तिः

श्रीनाभिनन्दनं वन्दे सर्वसिद्धिप्रदायिनम्।

जन्मभूमिमयोध्यां च प्रतिष्ठातिलकं स्तुवे॥१॥

धातुपाषाणमूर्तीनां, भगवन्तं विधायिनम्।

प्रतिष्ठातिलको ग्रन्थः प्रमाणं सर्वसाधुभिः॥२॥

यथास्थलं मया स्पष्टं, लिखितं मातृभाषया।

प्रतिष्ठां कर्तुं विदुषां, सुखसाध्यं भविष्यति॥३॥

मूलसंगे सुविख्याते कुन्दकुन्दान्वयो महान्।

शारदागच्छनाम्यस्मिन्, बलात्कारगणोऽस्ति यः॥४॥

तत्प्रवाहे गणी जातः, प्रथमः शांतिसागरः।

चारित्र्यचक्रवर्ती यस्तं वन्दे शिरसा मुदा॥५॥

श्रीशांतिसिंधु पट्टस्थं, सूरिं श्रीवीरसागरम्।

आर्यिकाव्रतदातारं, गुरुवर्यं स्तुवेऽनिशम्॥६॥

वीराब्दे शून्यद्वयंकेऽस्मिन् पंचद्वि (२५२०) गणनायुते।

श्रीमत् ऋषभदेवस्य मस्तकाभिषवोऽभवत्॥७॥

चैत्रमास्यसिते पक्षे श्रीऋषभजन्मोत्सवे।

अयोध्यातीर्थक्षेत्रेऽत्र ग्रन्थोऽयं पूर्णतामगात्॥८॥

गणिनी ज्ञानमत्यै मे ग्रन्थोऽयं स्वश्रियं दिशेत्।

आचन्द्रतारकं स्थेयात् सर्वस्मै सौख्यदो भवेत्॥९॥

श्री ऋषभदेव को वंदन कर, श्रीतीर्थ अयोध्या नित्य नमू।

श्री अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभू अनंतनाथ प्रणमू॥

स्वर्णादिक पाषाणादिक मूर्ती को, जो भगवान बनाता है।

यह श्रेष्ठ प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ, मुनियों से मान्य कहाता है॥१०॥

श्री ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक उत्सव प्रथम यहाँ।

त्रैकालिक तीर्थकर प्रतिमा का, पंचकल्याणक हुआ यहाँ॥

शुभ माघ सुदी तेरस तिथि में, वीराब्द पच्चिस सौ बीस कहा।

अतिशय प्रभावना पूर्ण कार्य, शाश्वत तीर्थ पर श्रेष्ठ रहा॥१२॥

इस ग्रंथ में स्थल-स्थल पर, हिंदी भाषा में विधी लिखी।

ऋषभेश जयंती चैत्र कृष्ण-नवमी को मैंने पूर्ती की॥

अतएव प्रतिष्ठाचार्यों को, यह ग्रंथ सरल सुखप्रद होगा।

मुझ गणिनी ज्ञानमती को भी, सबको भी स्वात्मिक सुख देगा॥१३॥

दोहा — जब तक नभ में सूर्य शशि, जब तक जग में धर्म।

ग्रंथ प्रतिष्ठातिलक यह, तब तक दे सुख सद्म॥१४॥



पञ्चकाल



रथचालन विधि

रथविहार के समय भगवान की आरती करके सरसों और अक्षत, पुष्प लेकर निम्न मंत्र पढ़कर सरसों मंत्रित कर रथ के आगे क्षेपण करें पुनः रथ चलाने का श्लोक पढ़कर रथ को चलावें।

परविद्याछेदन मंत्र—ॐ श्रीं ह्रीं कलिकुंडदंडस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम स्त्रीं स्त्रीं स्त्रूं स्त्रीं स्त्रः

आत्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद छिंद हूं फट् स्वः।

रथचालन श्लोक—यथा कोटिशिला पूर्व चालिता सर्वविष्णुभिः।

चालयामि तथोत्तिष्ठ शीघ्रं चल महारथ॥

रथशीघ्रोच्चारणमंत्रः

नोट—रथयात्रा के बाद 1008 कलशों से या 108 कलशों से महाभिषेक करना चाहिए।

इस ग्रंथ में अर्घ्य का एक श्लोक (भिन्न-भिन्न प्रकरण में भिन्न-भिन्न प्रकार से)

१. स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज-प्रोद्गाधिगंधै सितैः, सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभैर्दीपैविपद्धूपकैः, धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, देवं समभ्यर्चये॥

यह श्लोक भगवान के लिए अर्घ्य चढ़ाने हेतु है इसी प्रकार कुंभ, पीठ—सिंहासन, वेदी आदि के लिए मात्र अंतिम चरण में परिवर्तन इस प्रकार हैं—

१. पंचपरमेष्ठी के लिए	—स्वच्छै.....पंचापि चाये गुरुन्॥
२. जिनेन्द्र भगवान के लिए	—स्वच्छै.....श्री मज्जिनेन्द्रान्यजे॥
३. सिद्ध भगवान के लिए	—स्वच्छै.....सिद्धान् समभ्यर्चये॥
४. आचार्य परमेष्ठी के लिए	—स्वच्छै.....श्री धर्मसूर्यान्यजे॥
५. उपाध्याय परमेष्ठी के लिए	—स्वच्छै.....श्री पाठकार्यान्यजे॥
६. साधु परमेष्ठी के लिए	—स्वच्छै.....श्री सर्वसाधून्यजे॥
७. जिनधर्म के लिए	—स्वच्छै.....धर्म समभ्यर्चये अथवा श्रीजैनधर्म यजे॥
८. जिनागम के लिए	—स्वच्छै.....श्री जैनवाक्यं यजे॥
९. जिनचैत्य के लिए	—स्वच्छै.....श्री जैनबिम्बान् यजे॥
१०. जिनचैत्यालय के लिए	—स्वच्छै.....चैत्यालयान्संयजे॥
११. जिनेन्द्र भगवान के लिए	—स्वच्छै.....रभ्यर्चयामो जिनम्॥
१२. यक्ष के लिए	—स्वच्छै.....यक्षं समभ्यर्चये॥
१३. यक्षी के लिए	—स्वच्छै.....यक्षीं समभ्यर्चये॥
१४. पीठ अर्थात् सिंहासन के लिए	—स्वच्छै.....पीठं समभ्यर्चये॥
१५. वेदी के लिए	—स्वच्छै.....वेदीं समभ्यर्चये॥
१६. ध्वजदण्ड के लिए	—स्वच्छै.....दण्डं समभ्यर्चये॥
१७. कुंभों के लिए	—स्वच्छै.....कुंभान् समभ्यर्चये॥

अथ वास्तुबलिविधानम् (वास्तु विधान)

अथ पूर्ववद्वायुकुमारादिप्रयोगेण भूमिसंस्कारः । ततः संकल्पः । अथ पुण्याहवाचना विधेया—

(पूर्व के समान वायुकुमार आदि की पूजा करके भूमिशोधन विधि करें पुनः संकल्प करके पुण्याहवाचन विधि करें । अनंतर ब्रह्मस्थाने पद्य पढ़कर दश दिशा में दर्भ स्थापना करें ।)

ब्रह्मस्थाने मधोनः ककुभि हुतभुजो धर्मराजस्य रक्षो-राजस्याहीन्द्रपाणे रवनिर्हभृतः शंभुमित्रस्य शंभोः ॥
नागैर्द्रस्यामृतांशोरपि सदकलसद्गंधपुष्पादिदूर्वा । दर्भान्वेद्या दिशासु न्यसनमिह महे यज्ञनिर्विघ्नसिद्ध्यै ॥१॥
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय स्वाहा । दिग्दर्भस्थापनम् ॥

(इस पद्य को बोलकर भूमिपूजा करें)

(ॐ) आभिः पुण्याभिरद्भिः परिमलबहुलेनामुना चंदनेन । श्रीदृक्पेयैरमीभिः शुचिसदकचयैरुद्गमैरेभिरुद्धः ।
हृदैरेभिर्निवेद्यैर्मखभवनमिमैर्दीपयद्भिः प्रदीपैः ॥ धूपैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरपि फलैरेभिरर्चामि भूमिम् ॥२॥
ॐ ह्रीं नीरजसे नमः । (शीलगंधाय नमः आदि पूरे मंत्रों से पूजा करें) भूम्यर्चनम् ।

वेद्यां मंडलमालिखार्चितसितैश्चूर्णैः सिताकल्पभृत् । नागाधीशधनेशपीतवसना-लंकारपीतैश्च तैः ॥
नीलैर्नीरजनीलवेष सुमनो, रक्ताभरक्तैस्ततो । रक्ताकल्पककृष्णमेघविलसन्-कृष्णैश्च कृष्णप्रभ ॥३॥
पंचचूर्णस्थापनम् ॥ (पंचचूर्ण की स्थापना करें अर्थात् पंचवर्णी चूर्ण से मंडल बनावें)

सन्मंगलस्यास्य कृते कृतस्य, कोणेषु बाह्यक्षितिमंडलस्य ।

वज्राणि चत्वारि च वज्रपाणिन्, वज्रस्य चूर्णेन लिखाद्य वेद्याम् ॥४॥

इति वज्रस्थापनम् ॥ (मंडल के चारों कोनों पर हीरा स्थापित करें)

अथार्हदीशप्रतिमाप्रतिष्ठा-विधाननिर्विघ्नसमाप्तिसिद्ध्यै । ततोऽकुरार्चादिवसाच्च पूर्व-दिने क्षपायां विदधीतांभीम् ॥५॥
तत्रापि पूर्व विदधीत वास्तु-दिवौकमां भेकपदे स्थितानाम् ॥ तथा परे वा विदधत्सपर्यां, क्रमेण सामान्यविशेषार्चाम् ॥६॥
स्नात्वा समाचम्य समेत्य धाम, कृत्वा तथेयापथशोधनं च ॥ स्तुत्वा च सिद्धान्सकलीविधानं, कृत्यैकतानो विजन्मेशो ॥७॥
कृत्वा समासाज्जिनराजपूजां, श्रुत्वा समाराध्य तथा मुनीन्द्रान् । गुरोरनुज्ञां शिरसा गृहीत्वा, दत्त्वा नियोगं क्षीरकाणाम् ॥८॥
प्रत्यग्रथौतोत्तमशुभ्रवाससा कृत्वांतरीयं च तथोत्तरीयम् । हैमोपवातांगदहारमुद्रिका-किरीटकर्णाभरणादिभूषितः ॥९॥
तद्देवपूजासमये समुक्त-मंत्रात्परं वाक्यमभाषमाणः । चतुःपरीचारविधिज्ञयुक्तः, समाहितात्मा यजने प्रवीणः ॥१०॥
इंद्रः प्रतीद्रेण समं विधाय, पदं क्रियार्थं मखमंडपादौ । पदेन दद्यात्पददेवतानां, बलिं सुयोषागणकाक्षिः क्रियात् ॥११॥
बलिश्च सामान्यविशेषभेदात्-पुरोपदिष्टो द्विविधः पदेशाम् । एकस्तु सव्यंजनपूषभक्तं, शेषस्तु तत्तत्पृथक्पृथक् ॥१२॥
ब्रह्माणमिन्द्रादिदिशाधिनाथा-नार्यादिदेवांश्च सविंद्रपूर्वान् । पर्जन्यपर्जन्यदिवौकसाऽपि, विचारिकाद्यांश्च यजेत्क्रमेण ॥१३॥
दधातु पूजां सकलामराणां, उच्चारयन्मानस एव मंत्रम् । तत्र प्रयुक्तं वचनं च यद्यत्-तन्मंत्रतः प्राक्पठनीयमेव ॥१४॥

इति प्रारंभनिरूपणम् ॥

अथ पुष्पांजलिपुरःसरं ब्रह्मादिवास्तुदेवतानां पृथगिष्टिः ।

(अब ब्रह्म आदि वास्तुदेवों की पुष्पांजलिपूर्वक पृथक्-पृथक् पूजा करें)

(जिनपूजा में भव्यों को विघ्न नहीं आवें इसलिए वास्तुदेव पूजन के प्रारंभ में पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्रीमज्जनमहामहोत्सवविधि-व्यापारसंसिद्ध्यै । भव्यानामपि तं नियोगनिचयश्चन्द्रापरीतात्मनाम् ।

क्षेमार्थं क्रियमाणवस्तुदिविषत्-संघातसंपूजन-प्रस्तावे प्रविकीर्यते जयजय-रावेण पुष्पांजलिः ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ॥ पुष्पांजलिः ।

ॐ-ग्रामक्षेत्रगृहादिभेदविविधो-र्वाभागमध्याश्रय-स्तत्तद्भागपरिच्छिदा बहुविध-स्वात्मप्रदेशो विभुः।

ब्रह्मा दिक्पतिपूर्वदेवनिकरै-रात्मोन्मुखैर्वेष्टितो, लाजाज्यान्वितदुग्धभक्तमधुना, गृण्हातु रक्तप्रभः॥१॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मन्! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-ऐरावतस्कंधमधिश्रयन्तं, वज्रायुधं रुच्यशचीसमेतम्।

प्रत्यूहविध्वंसकमर्हदिष्टौ, कुष्टप्रसूनैः प्रयजामि शक्रम्॥२॥

ॐ ह्रीं इंद्र! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-ज्वालाकलापात्मकशक्तिहस्तो, बस्ताधिरूढः सुपरिष्कृतांगः।

स्वाहामहिष्या सममग्निदेवः, प्रीणातु दुग्धैस्तगरैस्तराज्यैः॥३॥

ॐ ह्रीं अग्ने! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-छायासमेतं महिषाधिरूढं, दंडायुधं दंडितवैरिवर्गम्।

वैवस्वतं विघ्नहरं तिलान्नैः, सिंबान्ययुक्तैः परितर्पयामि॥४॥

ॐ ह्रीं यमदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-नैऋत्यदेशो निऋतिः सुरुक्ष-मृक्षांगवाहद्विषदास्यरक्षः।

आरूढवानुद्रतमुद्रास्त्रः, पिण्याकमायच्छतु तैलमिश्रम्॥५॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ करघृतफणिपाशो मंडनोद्योतिताशः, करिमकरकमूर्तिलोकसंक्रांतकीर्तिः।

सुरुचिरवरुणानीप्राणनाथः सयूथो, वरुण इह समेतो लातु दुग्धान्नधान्यम्॥६॥

ॐ ह्रीं वरुणदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-उर्वीरुहोर्वायुधशस्तहस्त-मर्वाधिरूढं परिमंडितांगम्।

तद्वायुवेगीमुखदत्तदृष्टिं, पिष्टैर्निशायाः पवनं यजामि॥७॥

ॐ ह्रीं पवनदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

सद्रत्नरुक्पुष्पितपुष्पकाभ्र-यानाधिरूढस्फुरितोग्रशक्तेः।

सजानियूध्यव्रजयक्षराज, प्रत्तं मया स्वीकुरु पायसान्नम्॥८॥

ॐ ह्रीं कुबेरदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-उमासमेतो वृषभाधिरूढो, जटाकिरीटप्रणिभूषितांगः।

त्रिशूलहस्तः प्रमथाधिनाथो, गृण्हातु दुग्धान्नमिदं ससर्पिः॥९॥

ॐ ह्रीं ईशानदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-वेधःपुरोदेशमवंतमार्यं, ध्वस्तात्मदेशप्रतिरोधिवीर्यम्।

सत्पूरिकामोदकपूरिकादि-र्भक्ष्यैः प्रहृष्टं विदधे फलैश्च॥१०॥

ॐ ह्रीं आर्यदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-ब्रह्मापसव्यं पदमावसानो, भाभासमानो मुकुटादिभाभिः।

स्थामिष्यसंवीतभुजिष्यवर्गो, दीव्येत माषान्नतिलैर्विवस्वान्॥११॥

ॐ ह्रीं विवस्वनदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-शत्रुशक्तिविनिवारणक्षमो, मित्ररक्षणविधानदक्षिणः।

प्रत्यगीश इह मित्रनिर्जरः, स्वीकारोतु दधिदूर्विकामपि॥१२॥

ॐ ह्रीं मित्रदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-प्रजापतेः सव्यसुधाशिभागे, महीमवंतं महिमानमाप्तम्।

महीधरं मंडनमंडितांगं, महामहस्कं महयामि दुग्धैः॥१३॥

ॐ ह्रीं भूधरदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-सविंद्रदेवाय सविक्रमाय, तनूनपात्पक्षमुपाश्रिताय।

वनामरानीकपुरःसराय, ददामि पुंजीकृतधान्यलाजम्॥१४॥

ॐ ह्रीं सविंद्रदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-वैश्वानरादित्यमुपाश्रिताय, साविंद्रदेवाय सविक्रमाय॥

कर्पूरकाशमीरलवंगकुष्ठै-रुपस्कृतं पुण्यजलं ददामि॥१५॥

ॐ ह्रीं साविंद्रदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-इंद्रं वनामर्त्यकदंबकेंद्रं, मंद्रारवं पुण्यजनस्य पक्षम्।

प्रत्यूहजालं विनिपातयंतं, मुद्रस्य चूर्णेः प्रयजे संपूपैः॥१६॥

ॐ ह्रीं इंद्रदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-इंद्रराजगततंद्रनिर्जितारातिवर्गं जिनवर्गपोषकं।

कासराधिपतिपक्षमाश्रिताऽऽदेहि पूपयुतमुद्रचूर्णकम्॥१७॥

ॐ ह्रीं इंद्रराज! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-समीराग्रभूमौ समुद्रासमाज्ञं निजं देशभागं सदा पालयन्तम्।

यजे रुद्रमक्षुद्रवन्यामरेंद्रं, गुडापूपवर्गैरुपस्कारयुक्तैः॥१८॥

ॐ ह्रीं रुद्रदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-रुद्रजयाख्यं परिमितरौद्र-क्षुद्रनिकायं वनसुरमुख्यम्।

मारुतनिघ्नं गुडपरिपुष्टैः, पिष्टकवर्गैरिह महयामि॥१९॥

ॐ ह्रीं रुद्रजयदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-आमोदमाप्नोति गुणाधिकेषु, विद्वेषमुद्रवृत्तजनेषु यश्च।

आपः सदेवो गुडपिष्टयुक्तं, सकैरवं शंखमुपैतु शैव॥२०॥

ॐ ह्रीं आपदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-धर्मानुरक्ताननुमोदमानं, पापानुषक्तानपसारयन्तम्।

महेश्वरायत्तमिहापवत्सं, संपूजयेयं बलिना तथैव॥२१॥

ॐ ह्रीं आपवत्सदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-पर्जन्य पर्जन्यनिनादतुल्य-नादेन दूरीकृतवैरिलोकं।

स्वतर्जनीचालनतर्जितात्म-वाचाटभृत्याज्यमुपैहि रौद्र॥२२॥

ॐ ह्रीं पर्जन्यदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-जयं तनोति प्रतिरोधिरोधा-न्नयं तनोति स्वजनानुवृत्तेः।

योऽसौ जयंतो हरिदक्षिणस्थो, गृण्हातु पूतं नवनीतमेतत् ॥२३॥

ॐ ह्रीं जयंतदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-संक्रंदनापष्टुपदेशितारं, तापप्रकाशप्रतिभासमानम्।

तमोपहं भास्करदेवमेतं, कुर्वे प्रहृष्टं मधुकंददानात् ॥२४॥

ॐ ह्रीं भास्करदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-सत्यामरं नित्यमसत्यदूरं, गोत्रद्विषद्वामपदे वसंतम्।

सद्धर्भनिध्यानकृतप्रमोदं, संपूजये पूर्वसपर्ययैव ॥२५॥

ॐ ह्रीं सत्यकदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-भृशं विवक्षुर्गुणशास्त्रसंघं, भृशं दिदृक्षुर्मुनिमुख्यसंगम्।

भृशामरः संश्रुतवृत्तशत्रू-रातु प्रमोदान्नवनीतपिंडम् ॥२६॥

ॐ ह्रीं भृशदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-अथांतरिक्षो विहरन्विनोदं, वनेषु पश्यन्सुजनोपसर्गम्।

नुदन्बृहद्भानुसख्योतरिक्षश्चूर्णं निशामाषजमाददातु ॥२७॥

ॐ ह्रीं अंतरिक्षदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-पुष्पाति यः सज्जनतोपकारं, मुष्णातु चासज्जनदुर्विलासम्।

कृपीटयोनेः सुहृदेष पूषा, शिबान्नमेतत्सपर्यया) प्रतीच्छेत् ॥२८॥

ॐ ह्रीं पूषन्देव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-वितथाख्यं वितथीकृतारि-शक्तिप्रदं साधुजनोपकारदक्षम्।

प्रथितं दंडधराख्यं वरकटावन्नसमर्चितं करोमि ॥२९॥

ॐ ह्रीं वितथदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-रक्षःपरीवारकसत्वरक्षा-दक्षे सुमार्गे विहितप्रमोदम्।

कलापसव्याश्रयराक्षसेंद्रं, मधुप्रदानात्सुखितो भव त्वम् ॥३०॥

ॐ ह्रीं राक्षसदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ - सगंधगंधर्वसुपर्वहस्त - प्रशस्तवीणानुगगानगीतं।

गंधर्वदेवं घनसारपूर्वं - गंधैः समर्चे यममाश्रयन्तम् ॥३१॥

ॐ ह्रीं गंधर्वदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-यो विक्रमाक्रांतजनप्रसंगस्तपोधनाधीशपदाब्जभृंगः।

स भृंगराजः श्रितधर्मराजः, पवित्रदुग्धान्नमिदं ससर्पिः ॥३२॥

ॐ ह्रीं भृंगराजदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-मृषीकृताधर्मपरप्रभावं, मृषोक्तिदूरं मृषनामधेयम्।

रक्षोधिपायात्तमुदारशक्तिं, माषान्नसंतर्पितमातनोतु ॥३३॥

ॐ ह्रीं मृषदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ-तपोधनाजन्यनिवारणार्थं, वनाश्रमद्वारि सदा निषण्णम् ।

दौवारिकं सेवितयातुधानं, संतर्पयेऽहं वरशालिपिष्ठैः ॥३४॥

ॐ ह्रीं दौवारिकदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-सुग्रीव यातानुतवीणया वै-गायन्नितांतं गुणिनां गुणौघम् ।

सुग्रीवदेवः श्रितपाशहस्तः, प्रमोदवान्मोदकदानतोऽस्तु ॥३५॥

ॐ ह्रीं सुग्रीवदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-विभांति पुंसां गुणसंकथायांपुष्पावदताः खलु यस्य दंताः ।

स पुष्पदंतो वरुणान्तिकस्थः, पुष्पाणि गृण्हातु जलान्वितानि ॥३६॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-असुरः कल्पसुराभविक्रियो, गिरिनद्यादिविहारलोलुपः ।

वरुणोपांतमहीमुपाश्रितो, भजतां लोहितमन्नमुत्तमम् ॥३७॥

ॐ ह्रीं असुरदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-संशुद्धमार्गप्रतिरोधिवाहिनी-शोषं सदा यः कुरुते प्रतापतः ।

शोषः सपक्षीकृतयादसांपति-र्लातु प्रघौतं तिलमक्षतांश्च ॥३८॥

ॐ ह्रीं शोषदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-रोगोपघातांगतपोधनानां, दृष्ट्वा स्थितिं तामनुकंप्यमानाम् ।

रोगं मरुत्पक्षकृतानुरागं, सुखाकरोम्युत्तमकारिकाभिः ॥३९॥

ॐ ह्रीं रोगदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-नागं समाराधितयोगिनागं, नागारिनादेन पलायितारम् ।

वातापसव्याश्रयमाश्रयन्तं, मधुप्रदिग्धैर्महयामि लाजैः ॥४०॥

ॐ ह्रीं नागदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-मुख्यं यजे व्यंतरदेवमुख्यं, यक्षेण सत्रा कृतचारुमुख्यम् ।

विख्यातकांतारविहारसक्तं, संतु प्रवेकैर्वरवस्तुयुक्तैः ॥४१॥

ॐ ह्रीं मुख्यदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-भल्लाटदेवं प्रतिमल्लघट्ट-संघट्टनाविष्कृतसर्वशक्तिम् ।

बीरं कुबेरं प्रबलं प्रतीतं, गुडान्नदानेन सुखाकरोमि ॥४२॥

ॐ ह्रीं भल्लाटदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-मृगगणैस्तपसा वशीकृतैः, मृगयते मुनिपन्नमनाय यः ।

तमहमत्र मृगं धनदाश्रयं, परिचरामि गुडान्वितपूपकैः ॥४३॥

ॐ ह्रीं मृगदेव! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-धनदवामधरातलभागभागदितिनंदनमुख्यसुरादृतः ।

अदितिरद्भवनामरपूजितो मुदितवान्भवतादिह मोदकैः ॥४४॥

ॐ ह्रीं अदिते! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-मोचाफला यद्युदितिर्यदास्या-दधेति वाचा विनिवारणार्थम् ।

मुमुक्षुसाक्षादुदितिः सुभुजां, भक्षं तिरोपेतमुमापतीश ॥४५॥

ॐ ह्रीं उदिते! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-विचारि सत्कृत्यविनोदशक्ते, विचारियुक्ते सुजनानुरक्ते ।

कृशानुबाह्यावनिभागभुक्त्यै, गृहाण भक्ष्यं लवणोपयुक्तम् ॥४६॥

ॐ ह्रीं विचारि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-कायेन वाचा मनसा पवित्र-मावर्जयंती तपसामधीशं ।

रक्षोबहिःस्था तिलपिष्टभुक्त्या, संतुष्यतां संप्रति पूतनाख्या ॥४७॥

ॐ ह्रीं पूतने! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-पापान्महापूरुषकारिणो या, या राक्षसीरूपधरा ह्यतर्जत् ।

सा मारुताशावनिबाह्यसंश्रिता, कुल्माषमायच्छतु पापराक्षसी ॥४८॥

ॐ ह्रीं पापराक्षसि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-यत्र यत्र मुनयो वसन्ति ते, तत्र तत्र तदजन्यवारणे ।

या चरत्यनिशमीशबाह्यतः, सा ददातु चरकी घृतं मधु ॥४९॥

ॐ ह्रीं चरकि! इदं जलाद्यर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

ॐ-एते वास्तुसुराः समस्तधरणी-संवासिनोऽबाधिता-प्रत्यूहस्य विधायिनस्तपचिताः प्रत्यूहसंहारकाः ॥

अद्य प्रापितपूजनेन मुदिताः, सर्वप्रभावान्विताः । यष्टुर्याजकभूपमंत्रिशुभवर्णानां च संतु श्रियै ॥५०॥

ॐ पूर्णार्घ्यः । (ॐ सर्ववास्तुदेवाः पूर्णार्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा ।)

इत्थं प्रार्थनया प्रगृह्य विदितं सामान्यमन्यं बलिम् । सर्वे वास्तुसुराः प्रसीदत भवद्भ्रव्यांतरायास्तु ये ॥

गेहे धाम्नि विधित्सिते च विविधोत्साहेऽथवा विष्टपे । सन्त्येतान्सकलान्निवारयत तत्सर्वं सदा रक्षत ॥५१॥

एवं जिनाधीश्वरयज्ञकाले, संतर्पिताः स्वस्वविभूतियुक्ताः ।

वन्यामराः किन्नरदेवमुख्या, कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम् ॥५२॥

ॐ-संपूजिता इत्यसुरेन्द्रमुख्याः, महामहिम्नि प्रतिभासमानाः ।

दशप्रकारोदितभावनैद्राः, कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम् ॥५३॥

ॐ-मुख्याविभौ चंद्रदिवाकरौ च, शेषग्रहा अश्वयुगादिताराः ।

प्रकीर्णका ज्योतिरमर्त्यवर्गाः, कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम् ॥५४॥

जिनेन्द्रचंद्रस्य महामहेऽस्मिन्, संपूजिताः कल्पनिकायवासाः ।

सौधर्ममुख्यास्त्रिदशाधिनाथाः, कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम् ॥५५॥

ॐ-पृथ्वीविकारात्सलिलप्रवेशा-दग्नेश्च दाहात्पवनप्रकोपात् ।

चौरप्रयोगादपि वास्तुदेवश्चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥५६॥

तिर्यक्प्रचारादशनिप्रघाताद्-बीजप्ररोहाद् द्रुमखंडपातात् ।

कीटप्रवेशादपि वास्तुदेवश्चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥

इष्टप्रार्थनाय पुष्पांजलिः ॥

॥ इति वास्तुबलिविधानम् ॥

जलहोम-विधानम्

जलहोम कुंड भी तीर्थकर कुण्ड के समान चौकोन बनावें या बालू से चौकोन २x२ या 1½ x 1½ फुट का चबूतरा बनाकर उसमें चारों तरफ कटनी बनावें, उसके पश्चिम में दो कुंभ स्थापित करें।

तत्रादौ तावत्संकल्पपूर्वकपुण्याहवाचनं कुर्यात्।

(शांतिहोम विधि से पुण्याहवाचन से लेकर घंटाटंकारवीणा.... से पूर्व तक विधि करके पुनः आगे से विधि करें।)

घण्टाटंकारवीणाक्वणित-मुरजधा-धां-क्रियाकाहलाच्छें। छेंकारोदार - भेरी - पटह - धलधलंकार - सम्भूतघोषे ॥

आक्रम्याशेषकाष्ठातटमथ झटिति प्रोच्छट्युद्भटेऽङ्गं। शिष्टाभीष्टार्हदिष्टिप्रमुख इह लतांतांजलिं प्रोत्क्षिपामः ॥१॥

वाद्यमुद्घोषपूर्वक पुष्पांजलिं क्षिपामि।

क्षेत्रं मखेऽस्मिन् परिपालयन्तं, विघ्नानशेषानपसारयन्तं।

वैश्वानराशापरिकल्पितेन, श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि ॥२॥

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपाल! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं अर्घ्यं इत्यादि।

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसंतमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं।

प्रागेव वास्तुविधिकल्पितयज्ञभागस्येशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि ॥३॥

ॐ ह्रीं वास्तुकुमार देव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं वास्तुकुमार देव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं वास्तुकुमाराय इदं अर्घ्यं इत्यादि।

अनंतर वायुकुमार आदि की पूर्व और ईशान दिशा के मध्य स्थापना करना।

आलेप्याखिलकुंडवेदिजगतीमृत्पञ्चगव्यैर्मरुन्-मेघाग्नीमरान् समर्च्य वसुधामेतैर्विशोध्य त्रिधा।

सन्तर्प्यामृततोष्यहीन् कुशमथो, निक्षिप्य दिक्षु क्रमात्। वार्दभादिभिरर्चयामि महितां, सर्वज्ञयज्ञक्षितिम् ॥४॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय वेद्यां पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विहारकाले जगदीश्वराणां, अवाप्तसेवार्थकृतापदान।

हुत्वार्चितो वायुकुमार देव! त्वं वायुना शोधय यागभूमिम् ॥५॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेव महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।

(षट्दर्भपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत्) वायुकुमार की स्थापना व अर्घ्य।

विहारकाले जगदीश्वराणां, अवाप्तसेवार्थकृतापदान।

हुत्वार्चितो मेघकुमार देव! त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम् ॥६॥

ॐ ह्रीं मेघकुमारदेव! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

(षट्दर्भपूलोपात्तलेन भूमिसिंचेत्) मेघकुमार की स्थापना व अर्घ्य।

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैः, निर्वाणपूजासु कृतापदान।

हुत्वार्चितो वह्निःकुमारदेव! त्वं ज्वालाया शोधय यागभूमिम् ॥७॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव! भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

ज्वलद्दर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालेत्। अग्निकुमार की स्थापना व अर्घ्य।

आगे का मंत्र बोलकर ईशान दिशा में पानी की अँजुली दें।

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवंत्ववार्या भुवि कामचाराः।

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त-सुधोपमानांजलि-पूर्णवार्भिः ॥८॥

ॐ ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा। नागतर्पणार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत्।

दश दिक्षु दर्भन्यासः।

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण।

दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञ-विघ्नौघ-विध्वंसकृते समंत्रम् ॥९॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा। इंद्रदर्भः इसी प्रकार आग्नेयदर्भः, यमदर्भः, नैऋत्यदर्भः, वरुणदर्भः, पवनदर्भः, कुबेरदर्भः, ईशान्यदर्भः, धरणेन्द्रदर्भः सोमदर्भः। (ऐसा बोलते हुए दशों दिशा में दर्भ स्थापना करें।)

भूदेवता का सत्कार करने हेतु आगे के मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ावें।

वार्दभर्गधैः सुमनोऽक्षतौघैः, धूपप्रदीपैरमृतोपमानैः।

क्रमान्महामो महितां महद्भिः, महीं महादेवमहामहस्य ॥१०॥

ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः गंधं। अक्षताय नमः अक्षतान्। विमलाय नमः पुष्पं। परमसिद्धाय नमः चरुं। ज्ञानोद्योताय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। अभीष्टफलदाय नमः फलं।

॥ इति भूम्यर्चनम् ॥

आगे की वेदी के पास आकर विधि करें।

वेद्या मूर्ध्नि विधाय पीठमुचितं प्रक्षाल्य तीर्थांबुभिः, प्रत्यग्रेन महाधनेन परितः प्रच्छाद्य दर्भैरपि।

अभ्यर्च्योपरि तस्य सज्जिनपतेरर्चां सतामर्चितां। न्यस्यार्चामि सयक्ष-यक्ष्युपगतां चक्रातपत्रांचिताम् ॥११॥

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिं क्षिपामि।

श्रीपाण्डुकाव्हय-शिलाग्रिमपीठकल्पं, तद्वेदिकोपरितटे निदधामि पीठम्।

प्रक्षालयामि शुचिभिः सलिलैः पटेन, प्रच्छादितेऽत्र निदधेऽक्षत-पुष्पदर्भान् ॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठस्थापनं करोमि स्वाहा।

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

तत्पीठोपरि प्रागग्रवस्त्राच्छादनं करोमि स्वाहा।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः दर्भस्थापनं करोमि स्वाहा।

(सकुसुमाक्षतदर्भ-स्थापनम्) स्वच्छैस्तीर्थ-पीठं समभ्यर्चये। पीठ—जिसमें भगवान् विराजमान करना है उसे अर्घ्य चढ़ावें।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय पीठार्चनम् करोमि स्वाहा।

संस्थापयाम्युपरि तस्य जिनेश्वरार्चां, चक्रत्रयं जिनपतेरपसव्यभागे।

छत्रत्रयं तदनु तस्य तु सव्यभागे, वादित्रजालजटिले सति सर्वलोके ॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन् इह पाण्डुकशिलापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। प्रतिमा-स्थापनम्।

दक्षिण-पार्श्वे चक्रत्रय-स्थापनम्। वामपार्श्वे छत्रत्रयस्थापनम्।

(श्रीपीठ—सिंहासन पर भगवान् विराजमान करें। प्रतिमा के दायीं तरफ तीन चक्र एवं बायीं तरफ तीन छत्र स्थापित करें)

आहूता भवनामरैरनुगता यं सर्वदेवास्तथा, तस्थौ यस्त्रिजगत्-सभान्तरमहापीठाग्रसिंहासने।

यं हृद्यं हृदि संनिधाय सततं ध्यायन्ति योगीश्वराः, तं देवं जिनमर्चितं कृतधियामाव्हाननाद्यैर्भजे ॥१४॥

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः असिआउसा अर्हं! एहि एहि संवौषट्।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसा अहं! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ हां हीं हूं हौं हः असिआउसा अहं! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

भगवान् के चरणों पर जल छोड़ें पुनः मंत्रोच्चारण कर पुष्पांजलि छोड़ें।

गद्य—तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथग्मंत्रानुचारयन्। वार्गन्धाक्षतार्चितपुष्पांजलिं प्रयुञ्जीत।

पाद्यमंत्र—ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अहं नमोर्हते स्वाहा। (जलधारा छोड़ें)

आचमन मंत्र—ॐ हीं इवीं क्षवीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा। (जलधारा छोड़ें)

भगवान् जिनेन्द्रदेव का अष्ट विधाचर्न

ॐ हीं परब्रह्मणेऽनंतान्तज्ञानशक्तये जलं (चंदन से लेकर अर्घ्य पर्यंत चढ़ावें)

चक्रत्रय एवं छत्रत्रय पूजा

राजेन्द्र-देवेन्द्र-जिनेन्द्र योग्यं, चक्रत्रयं मंगल-वस्तु-मुख्यम्।

निवेशितं श्रीजिनबिम्बपाश्वरे, यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः॥१५॥

ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः गंधं। अक्षताय नमः अक्षतान्। विमलाय नमः पुष्पं। परमसिद्धाय नमः चरुं। ज्ञानोद्योताय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। अभीष्टफलदाय नमः फलं।

लोकत्रयैकाधिपतित्वचिन्हं, छत्र-त्रयं मंगल-वस्तु-मुख्यम्।

निवेशितं श्रीजिनवामभागे, यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः॥१६॥

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि आगे की क्रिया यज्ञकुंड के आगे करें।

कुण्डात् पुरस्तात् परिमृष्टदेशे, सुविष्टरं न्यस्य सुदृष्टमृष्टम्।

तत्रोपविष्टोऽस्यथ पश्चिमस्यः, पर्यक्तो वाम्बुरुहासनाद्वा॥१७॥

ॐ क्षीं भूः उद्धृत्यतु स्वाहा। (यज्ञभूमि शुद्ध करें)

ॐ अहं क्षं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा। (आसन बिछावें)

ॐ हीं अहं हुं हुं णिसिंहिये णिसिंहिये आसने उपविशामि स्वाहा। (आसन पर बैठें)

ॐ हीं अहं मौनस्थिताहं मौनव्रतं गृह्णामि स्वाहा। (पूजापर्यंत मौन रखें)

तीर्थोम्बुपूर्णोज्ज्वलशतकुंभ-कुंभस्य नालाद्गलितेन वारा।

कुण्डं शुभं सर्वममत्रमत्र, द्रव्यं च सिंचामि समंत्रमेव॥१८॥

ॐ हीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थकराय श्रीशान्तिनाथाय, परमपवित्राय, पवित्रतरजलेन होमकुण्डशुद्धिं करोमि स्वाहा। (इस मंत्र से होमकुंड पर पानी छिड़कें)

कुण्डपूजा

तीर्थेशसंबंधसमर्चनीय-श्रीगार्हपत्याश्रयतोर्चनीयम्। चैत्याश्रयत्वादिव चैत्यगेहं, समर्चयामश्चतुरस्रकुण्डम्॥१२॥

ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः गंधं। अक्षताय नमः अक्षतान्। विमलाय नमः पुष्पं। परमसिद्धाय नमः चरुं। ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। दर्पमथनाय नमः दर्भं।

होमकुंड में तंदुल से स्वस्तिक बनावें, उस पर तांबे या पीतल की नयी पतीली रखें, उस पतीली में जलयंत्र बनावें। पुनः होमकुंड के सामने स्थापित दो कुंभों का जल निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए पतीली में डालते हुए उसका जल शुद्ध करें।

ॐ नमोऽर्हते भगवते पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केसरी-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गंगा-सिंधु-रोहिद्-रोहितास्या-हरित्-हरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णकूला-रुप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-अनेक नद-नदीजलप्रवाह-परिपूर्ण-मधुरजलधि-इक्षुरससमुद्र-घृताण्व-क्षीरसागर-प्रभृत्यखिलतीर्थदेवतामणिमयं गलकलशसंश्रुत-नवरत्न-सुगन्ध-चूर्णपुष्पफलकुशाद्यैश्च रचितं तीर्थोदकं पवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं मं हं सं तं पं इवीं हं सः असिआउसा जलशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।

पुनः शंबर नाम के यंत्र की पूजा करें ।

ॐ नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरुं । ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । दर्पमथनाय नमः दर्भं ।

प्रथम-कटनी — मेखला पूजा

नन्द्रां च भद्रां च जयां च रिक्तां, पूर्णां च भूयो भुवि वर्तयन्ति ।

ये ताननेकान्त-सुपक्षपक्षान्, न्यक्षेण यक्षप्रमुखान् प्रयक्ष्ये ॥३॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं पञ्चदशतिथिदेवताः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं पञ्चदशतिथिदेवताः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं पञ्चदशतिथिदेवताः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं क्रों ह्रीं पञ्चदशतिथिदेवताभ्याः इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

द्वितीय-कटनी — मेखला पूजा

मेरुं परीत्यैव चरन्ति नित्यं, ये निग्रहानुग्रहदा नृलोके ।

अवस्थिता ये बहिरर्कमुख्याः, सर्वान् समाहूय समर्चये तान् ॥४॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवाः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं नवग्रहदेवेभ्योः इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

तृतीय-कटनी — मेखला पूजा

चतुर्णिकायप्रभवामरेन्द्रान्, जिनेन्द्रसेवाप्रसितान्तरंगान् ।

प्रभूतभूतद्युतिसौख्यबोधा-नाहूय मंत्रैः पृथगर्चयामि ॥५॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं असुरेन्द्रादिद्वात्रिंशदिन्द्राः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं असुरेन्द्रादिद्वात्रिंशदिन्द्राः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं असुरेन्द्रादिद्वात्रिंशदिन्द्राः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यो इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

दिक्पाल पूजा

एतत्सर्वजनीनजैनसवनप्रत्यूहविध्वंसन-प्रोद्भूताप्रतिमप्रभावविहितप्रख्यातपूजाञ्चितान् ।

स्वस्वातुच्छपरिच्छदान् दशदिशामन्याप्रधृष्यामितान्, दिक्पालाञ्जगदेक-पालकजिनाधीशाध्वरे व्याह्वये ॥६॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवाः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवेभ्यो इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं दधामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ॥

सप्तधान्याहुतिः

दिक्पालकानिति समर्च्य यवान्विता ये, गोधूम-मुद्ग-चण-काढक-शालि-माषाः ।

तत्सप्त-धान्यकृतमुष्टिभिरम्बुकुण्डे, सप्ताहुतीरिह दधे पृथगेव तेभ्यः ॥७॥

सात धान्य—चना, अरहर, उड़द, मूंग, गेंहूँ, शालि और जौ इनको मिलाकर दिक्पाल मंत्रों से जलकुंभ में एक-एक मंत्र की सात-सात बार आहुति दें ।

आहुति मंत्र

१. ॐ आँ क्रों ह्रीं इन्द्राय स्वाहा ।

२. ॐ आँ क्रों ह्रीं अग्नये स्वाहा ।

३. ॐ आँ क्रों ह्रीं यमाय स्वाहा ।

४. ॐ आँ क्रों ह्रीं नैऋत्याय स्वाहा ।

५. ॐ आँ क्रों ह्रीं वरुणाय स्वाहा ।

६. ॐ आँ क्रों ह्रीं पवनाय स्वाहा ।

७. ॐ आँ क्रों ह्रीं धनदाय स्वाहा ।

८. ॐ आँ क्रों ह्रीं ईशानाय स्वाहा ।

९. ॐ आँ क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय स्वाहा ।

१०. ॐ आँ क्रों ह्रीं सोमाय स्वाहा ।

११. ॐ आँ क्रों ह्रीं शंबरनामधेयाय स्वाहा ।

इत्थं सारसपर्यायाद्य महिता यूयं प्रसन्नाः स्थ नः, सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो, युष्मत्प्रसादादियम् ।

सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाघ्नत द्रुतं, सर्वेऽपि दिक्पालकाः, पूर्णांगां विधिपूर्तिपूर्णफलदां, पूर्णाहुतिं वोऽर्पये ॥ ८ ॥

पूर्णार्घ्यम् ॥

त्रिधान्याहुति—तीन धान्य से आहुति देना

तीन धान्य—जौ, तिल और शालि धान्य इन तीनों को मिलाकर आगे लिखे नव मंत्रों से सात-सात बार जलकुंभ में आहुति दें ।

यवैस्तिलैः शालिभिरेव सप्त-सप्तस्वमुष्टि-प्रमितैर्विशुद्धैः ।

होमं विधास्यामि समंत्रमंभः, कुण्डे ग्राहणामिह सुप्रपत्न्यै ॥९॥

ॐ ह्रीं हः फट् आदित्यमहाग्रह (अमुकस्य)^१ शिवं कुरु कुरु स्वाहा । एवं सोमादिष्वपि प्रयुज्जीत ।

ॐ ह्रीं हः फट् सोममहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् मंगलमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् बुधमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् गुरुमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् शुक्रमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हः फट् शनिमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं हः फट् राहुमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।
 ॐ ह्रीं हः फट् केतुमहाग्रह (.....) शिवं कुरु कुरु स्वाहा ।

जलतर्पणानि—जल से तर्पण करना

अंजुलि में दर्भ, गंध, अक्षत, पुष्प लेकर अंजुलि जल हवन कुंभ पर रखकर आगे के तर्पण मंत्र पढ़ते हुए जल डालते जावें।

अन्वतो विमलाम्भोर्भिगन्धपुष्पाक्षतान्वितैः। कुर्महे पीठिकामंत्रैस्तर्पणं परमेष्ठिनाम्॥१०॥

ॐ सत्यजाताय नमः। अर्हज्जाताय नमः। परमजाताय नमः। अनुपमजाताय नमः। स्वप्रदाय नमः।
 अचलाय नमः। अक्षताय नमः। अव्याबाधाय नमः। अनंतज्ञानाय नमः। अनंतदर्शनाय नमः। अनंतवीर्याय
 नमः। अनंतसुखाय नमः। नीरजसे नमः। निर्मलाय नमः। अच्छेद्याय नमः। अभेद्याय नमः। अजराय नमः।
 अमराय नमः। अप्रमेयाय नमः। अगर्भवासाय नमः। अक्षोभ्याय नमः। अविलीनाय नमः। परमघनाय नमः।
 परमकाष्ठयोगरूपाय नमः। लोकाग्रवासिने नमो नमः। परमसिद्धेभ्यो नमः। अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः। केवलसिद्धेभ्यो
 नमो नमः। अंतकृतसिद्धेभ्यो नमो नमः। परंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः। अनादिपरंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः।
 अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्य आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्ह निर्वाणपूजार्ह
 शंबरनामधेयाय स्वाहा ।

(आगे के मंत्रों से पुण्याहमंत्र का पानी तीन बार होमकुंड पर सिंचित करें।)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः स्वाहा ।
 (इमान्मंत्रान् त्रिरुच्चार्य जलं सिञ्चेत्) ।

द्वादशांग स्पर्शमंत्र

ॐ ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं ब्रां द्रीं हं सः स्वाहा ।

प्राणायाम मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः असिआउसा अर्हं प्राणायामं करोमि स्वाहा ।

इमं मंत्रं नासिकामंगुष्ठानामिकाग्रेण धृत्वा त्रिवारान् जपेत् ।

(प्राणायाम मंत्र को अंगूठा और अनामिका से नाक के दोनों भागों पर रखकर तीन बार जपें।)

दिक्पालाः प्रतिसेवनाकुलजगद्दोषार्हदण्डोद्भटाः, सौधर्मः प्रणयेन बद्धभगवत्-सेवानियोगेन वा ।

पूजापात्रकराग्रहः सदमुपेत्योपात्य बालार्चनं, प्रत्यूहान् निखिलान् निरस्यतु जिनस्नानोत्सवोत्साहिनाम्॥११॥

आदेशणार्घ्यं॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण-सर्वलक्षणसंपूर्ण-स्वायुधवाहन-वधूचिन्हसपरिवाराः हे पञ्चदशतिथिदेवाः! नवग्रहदेवाः!
 द्वात्रिंशदिन्द्राः! दश लोकपालाः! शंबरनामधेयादयः सर्वे देवता इदं जलादिकमर्चनं यूयं अत्र गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं
 ॐ भूर्भुवः स्वाहा । पूर्णाहुतिः (यहाँ पूर्णार्घ्य देना) ।

॥ इति जलहोमविधानम् समाप्तम् ॥



लघु यागमण्डल विधानम्

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि
अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)।

प्रभावकसिंह सानिध्य विधानाय समंतात् पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

त्रिभुवन साधर्मिकाध्येषणाय समंतात् पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

शब्दब्रह्मावर्जनाय कर्णिकामध्ये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परब्रह्मयज्ञप्रतिज्ञापनाय कर्णिकान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कर्णिका में अर्हत पूजा

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परब्रह्मन् अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परब्रह्मन् अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परब्रह्मन् अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा। (ऐसे ही चंदन आदि आठों
द्रव्य चढ़ाएँ।)

सिद्ध पूजा

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा। (ऐसे ही चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

आचार्य पूजा

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

उपाध्याय पूजा

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

साधु पूजा

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

तीन चौबीसी अर्घ्य

ॐ ह्रीं निर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं वृषभाजितादिवर्तमानार्हत्परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं महापद्मसुरदेवादिअनागतकालतीर्थकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंतमंगलादि चार अर्घ्य

ॐ ह्रीं हं श्रीं अर्हन्मंगललोकोत्तमशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं हं श्रीं सिद्धमंगललोकोत्तमशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं हं श्रीं साधुमंगललोकोत्तमशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म पूजा

ॐ ह्रीं हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

जिनागम पूजा

ॐ ह्रीं श्री जिनागम! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री जिनागम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री जिनागम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं श्री जिनागमाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

जिनचैत्य पूजा

ॐ ह्रीं हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिम्बसमूहाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

जिनचैत्यालय पूजा

ॐ ह्रीं हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूहाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। (इसी मंत्र से चंदन आदि आठों द्रव्य चढ़ाएँ।)

अनादिसिद्ध मंत्र

ॐ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आइरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा । अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि । हौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा । (इस अनादि सिद्धमंत्र से २१ बार पुष्पों से जप करें।)

ॐ ह्रीं जयादि अष्टदेवीभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं रोहिण्यादि षोडशविद्यादेवताभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं मरूदेव्यादि जिनमातृभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रादिद्वात्रिंशत् इन्द्रेभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं यक्षवैश्वानर आदि पंचदशतिथि देवताभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं गोमुखादि चतुर्विंशतियक्षेभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यादिचतुर्विंशतियक्षीभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं धृति आदि अष्टादिककन्यकाभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सोमयमवरुणकुबेरनाम चतुर्द्वारपालकेभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं विजयवैजयंत जयंतापराजितनामचतुर्दिग्द्वाररक्षकेभ्यः इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं दशदिशाधिनाथ जम्बूद्वीपाधिपति अनावृतयक्षाय इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं लौकांतिकदेवेभ्यः पुष्पांजलिं । इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रदेवेभ्यः पुष्पांजलिं । इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।

मंगलाष्टक स्थापना

(एक-एक मंत्र बोलकर वेदी में एक-एक मंगलद्रव्य स्थापित करें)

१. ॐ श्वेतच्छत्राश्रियै स्वाहा ।

५. ॐ तोरणाश्रियै स्वाहा ।

२. ॐ अब्दश्रियै स्वाहा ।

६. ॐ तालवृंतश्रियै स्वाहा ।

३. ॐ ध्वजाश्रियै स्वाहा ।

७. ॐ नद्यावर्तीश्रियै स्वाहा ।

४. ॐ चामरश्रियै स्वाहा ।

८. ॐ दीपश्रियै स्वाहा ।

अष्ट आयुध स्थापना

१. ॐ इन्द्रायै स्वाहा । (पूर्व में वज्र)

५. ॐ ब्रह्मायै स्वाहा । (आग्नेय में मुद्गर)

२. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा । (दक्षिण में चक्र)

६. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा । (नैऋत्य में गदा)

३. ॐ कौमायै स्वाहा । (पश्चिम में तलवार)

७. ॐ चामुण्ड्यै स्वाहा । (वायव्य में दण्ड)

४. ॐ वाराहिकायै स्वाहा । (उत्तर में हल)

८. ॐ रुद्रायै स्वाहा । (ईशान में भिण्डिमाल)

आठ पताका स्थापना

१. ॐ प्रभावत्यै स्वाहा । (पूर्व में पीली ध्वजा)
२. ॐ पद्मायै स्वाहा । (आग्नेय में लाल ध्वजा)
३. ॐ मेघमालिन्यै स्वाहा । (दक्षिण में काली ध्वजा)
४. ॐ मनोहरायै स्वाहा । (नैऋत में हरी ध्वजा)
५. ॐ चन्द्रमालायै स्वाहा । (पश्चिम में श्वेत ध्वजा)
६. ॐ सुप्रभायै स्वाहा । (वायव्य में नीली ध्वजा)
७. ॐ जयायै स्वाहा । (उत्तर में काली ध्वजा)
८. ॐ विजयायै स्वाहा । (ईशान में पंचवर्णी ध्वजा)

अष्टकलश स्थापना

ॐ इति कलशाष्टकस्थापनं करोमि स्वाहा ।

वाणचतुष्टय स्थापना

आग्नेयादिविदिक्षु वाणान् स्थापयामि स्वाहा । (चारों कोनों पर वाण स्थापित करें)
 ॐ सिद्धार्थपुंज स्थापनं करोमि स्वाहा । (चारों कोनों पर सरसों के पुंज स्थापित करें)
 ॐ यवारक स्थापनं करोमि स्वाहा । (मंडल के ऊपर धान्यांकुरों के कुंडे स्थापित करें)

शिला स्थापना

ॐ सर्वजनानंदकारिणि सौभाग्यवति! तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । (मंडल पर शिला-लोढा सहित रखें।)

पूर्णार्घ्य

ॐ ह्रीं यंत्रस्थापितसर्वदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां यजमानप्रभृतीनां शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

अनादिसिद्ध मंत्र

ॐ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आइरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं ।
 चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलं । साहु मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत
 लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत
 सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहु सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।
 ह्रीं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

॥ इति लघुयागमण्डल विधानम् ॥



उमास्वामी श्रावकाचार ग्रंथ के आधार से ये मूर्ति प्रमाण मात्र गृहचैत्यालय के लिए हैं, मंदिर के लिए नहीं हैं

एकादशांगुलं बिम्बं सर्वकामार्थसाधकम्।

एतत्प्रमाणमाख्यातमत ऊर्ध्वं न कारयेत् ॥१००॥

अर्थ—उस चैत्यालय में ग्यारह अंगुल प्रमाण प्रतिमा होनी चाहिए क्योंकि ग्यारह अंगुल प्रमाण प्रतिमा समस्त मनोरथों को सिद्ध करने वाली है, चैत्यालयों में विराजमान करने के लिए शास्त्रकारों ने ग्यारह अंगुल प्रमाण ही प्रतिमा बतलाई है। उसी से समस्त कार्यों की सिद्धि हो सकती है। चैत्यालयों में इससे अधिक ऊंची प्रतिमा कभी विराजमान नहीं करनी चाहिए।

एकांगुलं भवेच्छ्रेष्ठं द्व्यंगुलं धननाशनम्।

त्र्यंगुले जायते वृद्धिः पीडां स्याच्चतुरंगुले ॥१०१॥

अर्थ—गृहस्थों के चैत्यालय में एक अंगुल प्रमाण जिनप्रतिमा श्रेष्ठ गिनी जाती है। दो अंगुल की प्रतिमा से धन का नाश हो जाता है। तीन अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से वृद्धि होती है और चार अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से पीड़ा होती है।

पंचांगुले तु वृद्धिः स्यादुद्वेगस्तु षडंगुले।

सप्तांगुले गवां वृद्धिर्हानिरष्टांगुले मता ॥१०२॥

अर्थ—पाँच अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से वृद्धि होती है, छह अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से उद्वेग होता है, सात अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से गोधन की वृद्धि होती है और आठ अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से हानि होती है।

नवांगुले पुत्रवृद्धिर्धननाशो दशांगुले।

आरभ्यैकांगुलाद्बिम्बा-द्यावदेकादशांगुलम् ॥१०३॥

अर्थ—नौ अंगुल की प्रतिमा विराजमान करने से संतान की वृद्धि होती है और दश अंगुल की प्रतिमा से धन का नाश होता है। इस प्रकार एक अंगुल से लेकर ग्यारह अंगुल तक की प्रतिमा घर के चैत्यालय में विराजमान करने का वर्णन किया। जिनमंदिर के लिए यह नियम नहीं है, जिनमंदिर में चाहे जितनी ऊंची प्रतिमा विराजमान कर सकते हैं।

विशेषार्थ—यद्यपि जिन प्रतिमा पुण्य-बंध का कारण है तथापि वस्तु का स्वभाव भी भिन्न-भिन्न होता है तथा पूजा करने वालों की कामनाएं भी भिन्न-भिन्न होती हैं और कामनाओं के अनुसार विधि भी भिन्न-भिन्न होती है और कामनाओं के अनुसार विधि भी भिन्न-भिन्न होती है। पूज्य-पूजक मंत्र विधि आदि समस्त सामग्री के अनुसार मनोकामना की सिद्धि होती है। यदि इनमें कोई भी सामग्री विपरीत हो तो उसका फल भी विपरीत ही होता है। पूजन की विधि में प्रतिमा की श्रेष्ठता और उसका प्रमाण मंत्रशास्त्र से संबंध रखता है। मंत्र शास्त्रों में लिखा है कि यदि प्रतिमा कुरूप हो, उसकी दृष्टि वक्र हो या उसका आकार कुत्सित हो तो उससे पूजक की हानि होती है यह बात प्रायः सब लोगों के अनुभव में आ रही है। जिस प्रकार वक्रदृष्टि वाली प्रतिमा से पूजक को हानि होती है उसी प्रकार यदि सम अंगुल वाली प्रतिमा (दो, चार, छह, आठ वा दश अंगुल की प्रतिमा) घर के चैत्यालय में विराजमान की जाये तो उससे हानि होती है यह संख्या की समता और विषमता अनेक स्थानों में शुभ-अशुभ की सूचक होती है। शुभ कार्यों में विषम संख्या ही शुभ मानी जाती है सम संख्या कभी शुभ नहीं मानी जाती। इसीलिए सम अंगुलों की प्रतिमाएं घर के चैत्यालयों में शुभ नहीं होती हैं।

भगवान के सामने के दरवाजे से भगवान की दृष्टि माप की विधि

(१) आयभागे भजेद् द्वारमष्टममूर्ध्वतस्त्यजेत्।

सप्तमे सप्तमे दृष्टि वृषे सिंहे ध्वजे शुभा ॥ १ ॥ (प्रासादमंडन)

द्वार की ऊँचाई के आठ भाग करके ऊपर का आठवाँ भाग छोड़ देना। अनंतर सातवें भाग के फिर आठ भाग करके उसमें गजाय, वृषभाय, ध्वजाय, सिंहाय में अर्थात् सातवें, पाँचवें, तीसरे या पहले भाग में दृष्टि रख सकते हैं।

(२) विभज्य नवधा द्वारं तत् षड् भानधस्त्यजेत् ।

ऊर्ध्वद्वौ सप्तमं तद्वद् विभज्य स्थापयेद् दृशाम् ॥१॥ (श्रीवसुनंदी प्रतिष्ठासार)

द्वार के नव भाग करके नीचे के छः भाग और ऊपर के दो भाग छोड़कर जो सातवाँ भाग है उसके फिर नौ भाग करें और उसमें से सातवें भाग में दृष्टी रखें। यह गजाय है।

(३) द्वार के ६४ भाग करके ५५वें भाग में प्रतिमा की दृष्टी रखी जावे। यह भी एक मत है।

मंदिर की नींव में एवं शिखर की नींव में शिला रखने की विधि

सर्वौषधीपंचरत्नमिश्रतीर्थांबुपूरितान् । पंचताम्रमयान् कुंभान् दधिदूर्वाक्षतांचितान् ॥१॥

तत्रारोप्यैकशोऽनादिसिद्धमंत्रेण मंत्रयेत् । ततस्तन्यासदेशेषु सूतश्रीखंडकुंभम् ॥२॥

क्षिप्त्वा प्रागेकमुत्क्षिप्य क्षेत्रगर्भे न्यसेत्तथा । पृथक्कोणेषु चतुरस्तेतः पंचशिलाः पृथक् ॥३॥

जिनादिमंत्रैरध्यास्य सुलग्ने तेषु विन्यसेत् । ततः प्रतोष्य शिल्प्यादीन् स्वक्षेत्रे भ्रामयेद् बलिम् ॥४॥

पीठबंधेयसावेव विधिः कृत्स्नो विधीयताम् । विकुंभो देहली पद्मशिलयोश्च निवेशने ॥५॥

जिनादि मंत्राः (खरशिलानिवेशनम्)

१. ॐ ह्रां नमोर्हद्भ्यः स्वाहा ।

४. ॐ ह्रौं नमः पाठकेभ्यः स्वाहा ।

२. ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ।

५. ॐ हः नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा ।

३. ॐ हूं नमः सूरिभ्यः स्वाहा ।

खरशिला निवेशनं करोमि स्वाहा ।

जाति और कुल से शुद्ध दम्पति को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में

भगवान के माता-पिता बनाने का प्रमाण

(श्रीजयसेनाचार्य अपरनाम आचार्य वसुविन्दु द्वारा रचित प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत-पृष्ठ २३३)

अंबा सर्वाः सवि यस्त्रिजगदधिपतिप्राप्तपूजाधिकारा ।

अत्रागत्याध्वरोर्व्या यजनकृतमिह स्वादरेण वृणन्तु ॥

अध्वर्यूपत्निका वा धृततनुकुलयोर्दोषहीनां प्रकल्प्य ।

वादित्रोद्धोषपूर्वं विहितयमदमां भूषयेत्पुण्यमूर्तिम् ॥१७८॥

कदाचिदेषा न भवेद्गुणाद्या मंजूषिकां कल्पतु मातृकार्ये ।

एवं चतुर्विंशतिजिनप्रसूनां नामानि पुण्यानि कृती वहेत् ॥१७९॥

इन्द्रों से जिन्होंने पूजा का अधिकार—पात्रता प्राप्त की है, ऐसी तीर्थ करें की जननी सभी अंबा-माताओं!

यहाँ आकर इस प्रतिष्ठायज्ञ की भूमि में आदरपूर्वक पूजा को स्वीकार करो।

जो शरीर से, कुल से दोषहीन हैं—सर्वांगपरिपूर्ण एवं कुल से शुद्ध हैं तथा जो यम और दम—इंद्रिय निग्रह से परिपूर्ण हैं, पुण्य की मूर्तिस्वरूप हैं ऐसी कुलांगना में वाद्य बाजते हुए घोषाणापूर्वक उनमें तीर्थकर माता की कल्पना करो।

कदाचित् ऐसी गुणों से समन्वित महिला नहीं मिलें तो माता के कार्य-विधि को करने के लिए मंजूषा—पेटी में माता की कल्पना करो। इस प्रकार २४ तीर्थकरों की माताओं के नामों का उच्चारण करके विद्वान् पूजा करें।

प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ में वनस्पति, धान्य, फूल आदि के नाम
(संस्कृत और हिन्दी भाषा में)

संस्कृत नाम	हिन्दी	संस्कृत नाम	हिन्दी
१. अर्क	आक	३१. आसुरी	राई
२. पलाश	ढाक	३२. कोद्रव	कोदों
३. खदिर	खैर	३३. यव	जौ
४. मयूर वनस्पति	चिरचिरा	३४. कंगुनि	कांगनी
५. अश्वत्थ	पीपल	३५. बहुदल	नाचनी
६. फल्गु	गूलर	३६. मदनफल	मैनफल
७. शमी	शमी, छोकरा, सफेत कीकर	३७. गोधूम	गेहूं
८. दूर्वा	दूब	३८. त्वच वनस्पति	तज
९. दर्भ	डाभ	३९. तमालपत्र	तेजपात
१०. तुरुष्प	शिलारस	४०. नागकेसर	नागकेसर
११. प्रियंगु	फूलप्रियंगु	४१. शतावरी	छोटी शतावरी
१२. शैलेय	पत्थरफूल	४२. ग्रहकन्या, कुमारी	ग्वारपाठा, कुवरपाठा
१३. विभीतिक	बहेडा	४३. गुडुचि	गिलोय, गुर्च
१४. नागवल्ली	नागरवेल	४४. भद्रमुस्ता	नागरमोथा
१५. मुद्ग	मूंग	४५. मधुवल्लि	मुलहटी भेद
१६. माष	उडद	४६. पुष्करमूल	पोहकरमूल
१७. राजमाष	खेरसारी भेद	४७. बकुल	मौलसरी, बनहुला
१८. चणक	चना, छोले	४८. नागचंपक	नागचंपा
१९. मुकुष्टक	मठ	४९. केतकी	केवराडा, गगनधूल
२०. मसूर	मसूर	५०. जाई	चमेली
२१. कलाय	मटर	५१. मुद्गर	मोहिया
२२. सिद्धार्थ	सफेद सरसों	५२. शतपत्री	शेवती
२३. तीक्ष्णफला	काली राई	५३. पुन्नाग	पुलाक
२४. श्यामाक	सांवा	५४. श्वेतअगस्त्य	हथिया
२५. आढकी	अरहर	५५. पीतागस्त्य	पीलाअगस्तिया
२६. कुलित्थ	कुलथी	५६. रक्तपाटलि	पालपाढरी
२७. क्षव	लोभिया	५७. अशोक	अशोक
२८. निष्पाव	भटमासु, निष्पाप	५८. चंपक	चंपा
२९. तिल	तिल	५९. मल्लिका	वेलमोतिया
३०. अतसि	अलसि	६०. वृत्तमल्लिका	घुघरुमोतिया

संस्कृत नाम	हिन्दी	संस्कृत नाम	हिन्दी
६१. वार्षिकी	वेल	६३. कंकोल	चीनीकबाब
६२. वासंती	माधुमालवी	६४. गुग्गुल	गुगल
६३. यूथिका	जुही	६५. राल	राल
६४. बंधूक	दुपहरिया	६६. मांसि	छड, जडामांसी
६५. जपा	ओडहुल, गुडहर	६७. कुष्ठ	कूठ
६६. दमनक	दवना	६८. सरिवा	गोरीसर
६७. पद्माक्ष	कमलगड्डा	६९. सहदेवी-महाबला	सहदेई
६८. कमल	कमल	१००. गुडुचि	गिलोय, गूर्व
६९. करवीर	कनेर	१०१. वासक (सिंहि)	अडूसा
७०. धत्तुर	धत्तूरा	१०२. बला	रिवरैहि, वरियारी
७१. राजार्क	लालमंदार	१०३. वचा	वच
७२. सुरपुन्नाग	कामल	१०४. कपित्थ	कैथ
७३. वट	बड	१०५. नारंग	नारंगी, सन्तरा
७४. प्लक्ष	पाकरी	१०६. निंबुक	कागजी नींबू
७५. उदुंबर	गूलर	१०७. जंबीर	जंभीरी
७६. बीजपूर	बिजोरा	१०८. घातकी	धावई-धाव
७७. मधुकर्कटी	पपीता	१०९. शालि	शालि-धान
७८. आमलकी	आँवला	११०. यावनाल	ज्वार
७९. काष्ठघात्री	छोटा आँवला	१११. व्याघ्री वनस्पति	कटरी, लघुकटाई
८०. बिल्व	बेलवृक्ष	११२. लक्ष्मणा	सफेत कटरी
८१. अर्जुन	कौहा, कोह	११३. उशीर	खस
८२. कदंब	कदंब, कदम	११४. अपामार्ग	चिरचिरा (ओंगा)
८३. पिप्पलि	पीपर-पीपल	११५. पांडुकली	पाटली
८४. मरिच	मेणस, कालीमिरच	११६. वैडूर्य	वैदूर्य
८५. यवानि	अजवाइन	११७. प्रवाल	मूंगा
८६. गोरोचन	गोरोचन	११८. गारुत्मत् (मरकत)	पन्ना
८७. कुंकुम	केसर	११९. वज्र	हीरा (डायमंड)
८८. प्रियंगु	फूलप्रियंगू	१२०. माणिक (पद्मराग)	माणक-लालरत्न
८९. स्वाद्गरु	अगर	१२१. मौक्तिक	मोती
९०. पद्मक	पद्मक	१२२. इंद्रनील (नील)	नीलम
९१. कुंद	कुंद	१२३. जंबू	जामुन
९२. नंदीवृक्ष	नंदीवृक्ष	१२४. पनस	कटहल

तीर्थंकर, यक्ष-यक्षी-क्षेत्रपाल आदि के नाम

(माता-पिता के नाम उत्तरपुराण एवं यक्ष-यक्षिणी के नाम महाशांतिधारा के आधार से)

अ.नं. तीर्थंकर	चिन्ह	पिता	माता	गणधर संख्या	यक्ष	यक्षिणी	क्षेत्रपाल (प्रतिष्ठातिलक कुंभोज से प्राप्त)
१. वृषभदेव	बैल	नाभिराज	मरुदेवी	८४	गोमुख	चक्रेश्वरी	जय, विजय, अपराजित, मणिभद्र
२. अजितनाथ	हाथी	जितशत्रु	विजया	८०	महायक्ष	रोहिणी	क्षेमभद्र, क्षांतिभद्र, श्रीभद्र, शांतिभद्र
३. संभवनाथ	घोड़ा	दुर्दथ	सुषेणा	१०५	त्रिमुख	प्रज्ञप्ति	वीरभद्र, बलिभद्र, गुणभद्र, चंद्रायभद्र
४. अभिनंदननाथ	बंदर	स्वयंवर	सिद्धार्था	१०३	यक्षेश्वर	वज्रशृंखला	महाभद्र, भद्रभद्र, शतभद्र, दानभद्र
५. सुमतिनाथ	चकवा	मेघरथ	मंगला	११६	तुंबुरु	पुरुषदत्ता	कल्याणचंद्र, महाचंद्र, पद्मचंद्र, नयचंद्र
६. पद्मप्रभनाथ	कमल	धरणराज	सुसीमा	११०	कुसुम	मनोवेणा	कालाचंद्र, कल्पचंद्र, कुमुतचंद्र, कमुदचंद्र
७. सुपाश्वनाथ	स्वस्तिक	सुप्रतिष्ठ	पृथ्वीबेणा	८५	वरनदि	काली	विद्याचंद्र, खेमचंद्र, विनयचंद्र, गुणचंद्र
८. चंद्रप्रभु	चक्रमा	महासेन	लक्ष्मणा	८३	विजय	ज्वालामालिनी	सोमकांती, रविकांती, शुभ्रकांती, हेमकांती
९. पुष्पदंत	मगरमच्छ	सुग्रीव	जयरामा	८८	अजित	महाकाली	वज्रकांती, वीरकांती, विष्णुकांती, चंद्रकांती
(सुविधिनाथ)							
१०. शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	दुर्दथ	सुनंदा	८१	ब्रह्मेश्वर	मानवी	शतवीर्य, महावीर्य, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य
११. श्रेयांसनाथ	गेंडा	विष्णुमित्र	नंदा	७७	कुमार	गौरी	तीर्थरुचि, भावरुचि, भव्यरुचि, शांतिरुचि
१२. वासुपूज्य	भैंसा	वसुपूज्य	जयावती	६६	षण्मुख	गांधारी	लब्धिरुचि, तत्वरुचि, सम्यक्त्वरुचि, तूर्यवाद्यरुचि
१३. विमलनाथ	शूकर	कृतवर्मा	जयश्यामा	५५	पाताल	वैरोटी	विमलभक्ति, आराध्यरुचि, वैद्यरुचि, वैधवाथरुचि
१४. अनंतनाथ	सेही	सिंहसेन	जयश्यामा	५०	किन्नर	अनंतमती	स्वभावनामा, परभावनामा, अनुपम्य, सहजानंद
१५. धर्मनाथ	वज्रदण्ड	भानुराज	सुव्रता	४३	किंपुरुष	मानसी	धर्मकर, धर्मकारी, सांतकर्मा, विनयनाम
१६. शांतिनाथ	हिरण	विश्वसेन	ऐरादेवी	३६	गरुड	महामानसी	सिद्धसेन, महासेन, लोकसेन, विनयकेत
१७. कुंयुनाथ	बकरा	सूरसेन	श्रीकांता	३५	गंधर्व	जया	यक्षनाथ, भूमिनाथ, देशनाथ, अवनिनाथ
१८. अरहनाथ	मछली	सुदर्शन	मित्रसेना	३०	महेन्द्र	विजया	गिरीनाथ, गह्वरनाथ, वरुणनाथ, मैननाथ
१९. मल्लिनाथ	कलश	कुभ	प्रजावती	२८	कुबेर	अपराजिता	क्षितिप, भवय, क्षांतिय, क्षेत्रय
२०. मुनिसुव्रत	कछुआ	सुमित्र	सोमावती	१८	वरुण	बहुरूपिणी	तंदराज, गुणराज, कल्याणराज, भव्यराज
२१. नमिनाथ	नीलकमल	विजय	वर्षिला	१७	विद्युत्प्रभ	चामुण्डी	कपिल, बटुक, भैरवभैरव, मल्लाकाख्य
२२. नेमिनाथ	शंख	समुद्रविजय	शिवादेवी	११	सर्वाण्ड	कूष्माण्डी	कोकल, खगनाम, त्रिनेत्र, कलिंग
२३. पार्श्वनाथ	सर्प	विश्वसेन	ब्राह्मीदेवी	१०	धरणेन्द्र	पद्मावती	कीर्तिधर, स्मृतिधर, विनयधर, अब्जधर
२४. महावीर	सिंह	सिद्धार्थ	प्रियकारिणी	११	मार्ताण	सिद्धाधिनी	कुमुद, अंजन, चामर, पुष्पदंत

वर्तमानकालीन तीर्थंकरों की पंचकल्याणक तिथि (दीक्षावृक्ष ही केवलज्ञान वृक्ष माने हैं) (उत्तरपुराण के आधार से)

अ.नं. तीर्थंकर	गर्भकल्याणक	जन्मकल्याणक	दीक्षाकल्याणक	दीक्षावृक्ष	केवलज्ञान कल्याणक	निर्वाणकल्याणक
१. वृषभदेव	आषाढ़ कृ. २	चैत्र कृ. ६	चैत्र कृ. ६	वटवृक्ष	फाल्गुन कृ. ११	माघ कृ. १४
२. अजितनाथ	ज्येष्ठ कृ. अमा.	माघ शु. १०	माघ शु. ६	सातवण	पौष शु. ११	चैत्र शु. ५
३. संभवनाथ	फाल्गुन शु. ८	कार्तिक शु. १५	मगसिर शु. १५	सर्ज (राळ)	कार्तिक कृ. ४	चैत्र शु. ६
४. अभिनंदननाथ	वैशाख शु. ६	माघ शु. १२	माघ शु. १२	असणा	पौष शु. १४	वैशाख शु. ६
५. सुमतिनाथ	श्रावण शु. २	चैत्र शु. ११	वैशाख शु. ६	वाघाटी	चैत्र शु. ११	चैत्र शु. ११
६. पद्मप्रभनाथ	माघ कृ. ६	कार्तिक कृ. १३	कार्तिक कृ. १३	छसा	चैत्र शु. १५	फाल्गुन कृ. ४
७. सुपाश्वर्धनाथ	भाद्रपद शु. ६	ज्येष्ठ शु. १२	ज्येष्ठ शु. १२	शिरीष	फाल्गुन कृ. ६	फाल्गुन कृ. ७
८. चंद्रप्रभ जी	चैत्र कृ. ५	पौष कृ. ११	पौष कृ. ११	पुन्नाग	फाल्गुन कृ. ७	फाल्गुन कृ. ७
९. पुष्पदंत जी	फाल्गुन कृ. ६	मगसिर शु. १	मगसिर शु. १	सर्ज	कार्तिक शु. २	भाद्रपद शु. ८
१०. शीतलनाथ	चैत्र कृ. ८	माघ कृ. १२	माघ कृ. १२	पिंपळ	पौष कृ. १४	आश्विन शु. ८
११. श्रेयासनाथ	ज्येष्ठ कृ. ६	फाल्गुन कृ. ११	फाल्गुन कृ. ११	देभुर्णी	माघ कृ. अमा.	श्रावण शु. १५
१२. वासुपुत्र्य	आषाढ़ कृ. ६	फाल्गुन कृ. १४	फाल्गुन कृ. १४	पाडली	माघ शु. २	भाद्रपद शु. १४
१३. विमलनाथ	ज्येष्ठ कृ. १०	माघ कृ. ४	माघ शु. ४	जांभळ	माघ शु. ६	आषाढ कृ. ८
१४. अनंतनाथ	कार्तिक कृ. १	ज्येष्ठ कृ. १२	ज्येष्ठ कृ. १२	पिंपळ	चैत्र कृ. अमा.	चैत्र कृ. अमा.
१५. धर्मेनाथ	वैशाख शु. १३	माघ शु. १३	माघ शु. १३	कवठे	पौष शु. १५	ज्येष्ठ शु. ४
१६. शांतिनाथ	भाद्रपद कृ. ७	ज्येष्ठ कृ. १४	ज्येष्ठ कृ. १४	नंदिक	पौष शु. १०	ज्येष्ठ कृ. १४
१७. कुशुनाथ	श्रावण कृ. १०	वैशाख शु. १	वैशाख शु. १	तिलक	चैत्र शु. ३	चैत्र शु. १
१८. अरहनाथ	फाल्गुन कृ. ३	मगसिर शु. १४	मगसिर शु. १०	आंबा	कार्तिक शु. १२	चैत्र कृ. अमा.
१९. मल्लिनाथ	चैत्र शु. १	मगसिर शु. ११	मगसिर शु. ११	अशोक	पौष कृ. २	फाल्गुन शु. ५
२०. मुनिसुव्रत	श्रावण कृ. २	वैशाख कृ. १०	वैशाख कृ. १०	चाफा	वैशाख कृ. ६	फाल्गुन कृ. १२
२१. नमिनाथ	आश्विन कृ. २	आषाढ कृ. १०	आषाढ कृ. १०	बकुल	मार्ग शु. ११	वैशाख कृ. १४
२२. नैमिनाथ	कार्तिक शु. ६	श्रावण शु. ६	श्रावण शु. ६	वेळू	आश्विन शु. १	आषाढ शु. ७
२३. पार्श्वनाथ	वैशाख कृ. २	पौष कृ. ११	पौष कृ. ११	धव	चैत्र कृ. ४ (१४)	श्रावण शु. ७
२४. महावीर	आषाढ शु. ६	चैत्र शु. १३	मगसिर कृ. १०	शाल	वैशाख शु. १०	कार्तिक कृ. अमा.

नवग्रह शांतिकारक नव बृहद् मंत्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थकराय कुसुमयक्ष-मनोवेगायक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
आदित्यमहाग्रह! मम (.....^१) सर्वदुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं कुरु कुरु सर्वशांतिं कुरु कुरु सर्वसमृद्धिं कुरु
कुरु इष्टसंपदां कुरु कुरु अनिष्टनिवारणं कुरु कुरु धनधान्यसमृद्धिं कुरु कुरु काममांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूँ
फट् स्वाहा। (७००० जाप्य)

अथवा—

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थकराय कुसुमयक्ष-मनोवेगायक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
आदित्यमहाग्रह मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (७००० मंत्र)

२. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभतीर्थकराय विजययक्ष-ज्वालामालिनीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
हः सोममहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (११००० मंत्र)

३. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वासुपूज्यतीर्थकराय षण्मुखयक्ष-गांधारीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
कुजमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (१०००० मंत्र)

४. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लिनाथतीर्थकराय कुबेरयक्ष-अपराजितायक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
बुधमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (१४००० मंत्र)

५. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमानतीर्थकराय मातंगयक्ष-सिद्धायिनीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
गुरुमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (१९००० मंत्र)

६. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंतनाथतीर्थकराय अजितयक्ष-महाकालीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
हः शुक्रमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (१६००० मंत्र)

७. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुव्रतनाथतीर्थकराय वरुणयक्ष-बहुरूपिणीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
हः शनिमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (२३००० मंत्र)

८. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमिनाथतीर्थकराय सर्वाणहयक्ष-कूष्माण्डीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
राहुमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (१८००० मंत्र)

९. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वनाथतीर्थकराय धरणेन्द्रयक्ष-पद्मावतीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हः
हः केतुमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (७००० मंत्र)



१. यहाँ जिनके लिए मंत्र जपना है, षष्ठी विभक्ति लगाकर उनका नाम लेना चाहिए। जैसे 'प्रकाशचन्द्रस्य' आदि।

शांतिधारा

(वर्तमान समस्याओं के निवारण हेतु महत्त्वपूर्ण शांतिधारा)

रचयित्री—गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः मम (.....)^१ सर्वज्ञानावरण कर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदर्शनावरण कर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववेदनीयकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमोहनीयकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वायुःकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वनामकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वगोत्रकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वान्तरायकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वक्रोधं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमानं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमायां छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्व लोभं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमोहं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वरागं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वद्वेषं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वगजभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वसिंहभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वाग्निभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वसर्पभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वयुद्धभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वसागरनदीजलभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वनिगडादिबंधनभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वभूकंपदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वभूतपिशाचव्यंतरडाकिनीशाकिन्यादिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वधनहानिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वव्यापारहानिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वराजभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वचौरभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुष्टभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वशत्रुभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वशोकभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववैरं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुर्भिक्षं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमनोव्याधिं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वआतंरौद्रध्यानं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुर्भाग्यं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वायशः छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वपापं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्व अविद्यां छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वप्रत्यवायं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वकुमतिं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वक्रूरग्रहभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुःखं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वापमृत्युं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनताअभयदानदायक- सार्वभौमधर्मसाम्राज्य-

१. जिनके लिए शांतिधारा करा रहे हों, उनका नाम बोलें।

नायकमहति-महावीरसन्मतिवीरातिवीरवर्धमाननामालंकृतश्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवन्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्यो जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे..... प्रदेशे.....नामनगरे वीरसंवत्..... तमे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे*) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य मम च (.....)^१ शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! सुभिक्षं कुरु कुरु मनः समाधिं कुरु कुरु धर्मशुक्लध्यानं कुरु कुरु सुयशः कुरु कुरु सौभाग्यं कुरु कुरु अभिमतं कुरु कुरु पुण्यं कुरु कुरु विद्यां कुरु कुरु आरोग्यं कुरु कुरु श्रेयः कुरु कुरु सौहार्दं कुरु कुरु सर्वाणिष्ट ग्रहादीन् अनुकूलय अनुकूलय कदलीघातमरणं घातय घातय आयुर्द्राघय द्राघय, सौख्यं साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्य मम च (.....) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थकरों के नाम एवं चिन्ह

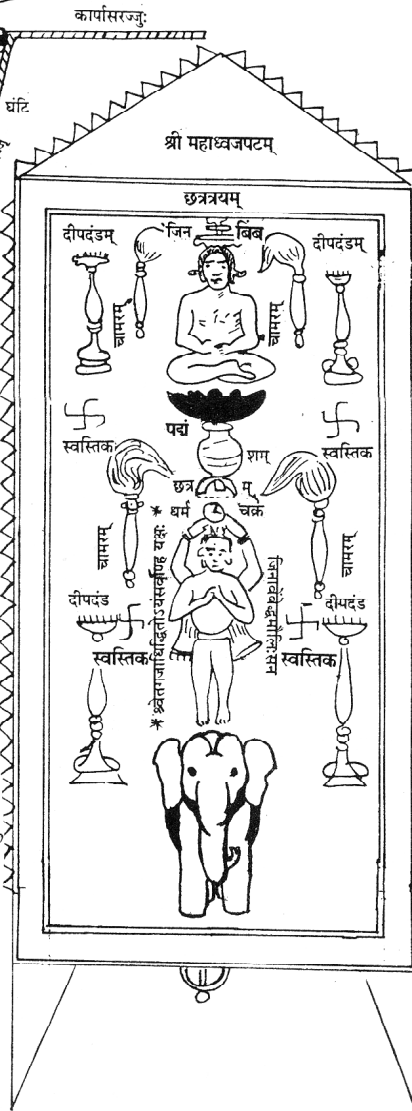
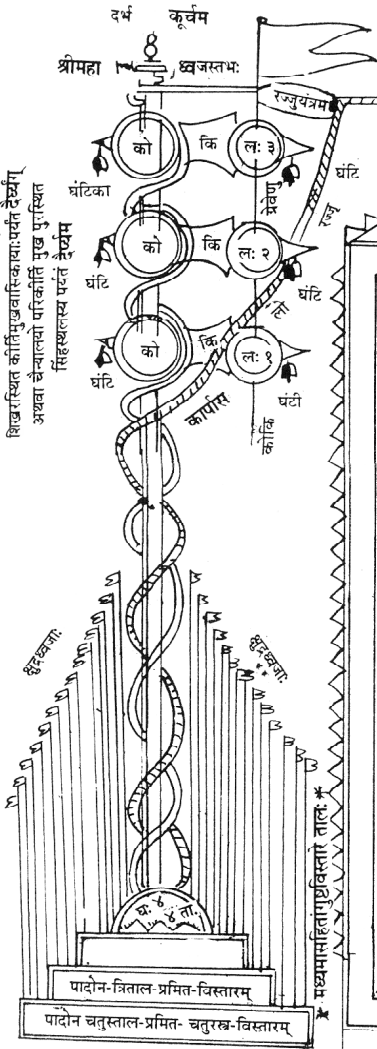
तीर्थकर नाम	चिन्ह	तीर्थकर नाम	चिन्ह
१. सीमंधर जी	बैल	११. वज्रधर जी	शंख
२. युगमंधर जी	हाथी	१२. चन्दानन जी	बैल
३. बाहु जी	बकरा	१३. चन्द्रबाहु जी	कमल
४. सुबाहु जी	बन्दर	१४. भुजंगम जी	चन्द्रमा
५. संजातक जी	सूरज	१५. ईश्वर जी	सूरज
६. स्वयंप्रभ जी	चन्द्रमा	१६. नेमिप्रभ जी	बैल
७. ऋषभानन जी	शेर	१७. वीरसेन जी	हाथी
८. अनन्तवीर्य जी	हाथी	१८. महाभद्र जी	चन्द्रमा
९. सूरप्रभ जी	सूरज	१९. देवयश जी	साथिया
१०. विशालकीर्ति जी	चन्द्रमा	२०. अजितवीर्य जी	कमल



१. प्रतिदिन में 'नित्यपूजावसरे' बोलें और विधान में उसी विधान का नाम बोलें।

२. पूजन या विधान करने वालों का नाम बोलें।

* महाव्यदंजप्रमाणम् *
 शिखरस्थित कीर्तिमुखवास्किपाः पर्वत दैव्यम्
 अथवा चैव्यालयो परिकीर्ति मुख पुरस्थित
 सिंहस्थलस्य पर्वतं दैव्यम्



* महाध्वजपटप्रमाणम् *

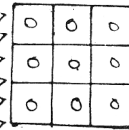
५ वा ६ वा ७ वा ८ वा ९ वा

१० वितस्ति दैर्घ्यम्

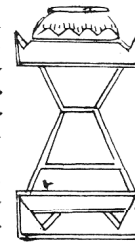
११ वा २० वा २१ वा २२ वा

२३ वा २४ वा मात्रांगुल
विस्तरम्

विमानाभिमुखस्यमहादर्पण
प्रतिबिम्बध्वजपटस्य
नवकलशाभिषेकः



बलिपीठम्



तद्रात्रौधेरीताडनम्



अथोदंडः

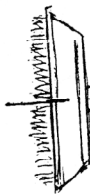
महादर्पणम्

पाणिनादि प्रत्येकं ८-१०-१२
अष्टवार दिनसंख्या वा।



कर्गिकायां श्रीआदिदेवी.
 प्रथम मंडले द्वितीयमंडले -मंगलद्वय-
 तृतीयमंडले -भगवानेश्वर-
 चतुर्थमंडले -व्यतेरु-
 पंचममंडले -व्यतिवर्क-
 षष्ठममंडले -व्यतेरु-

14511a



अंगुड १६ ४ ४ २ २ ४ ५५

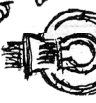
मुरल व्यास
अग्रमथ
देड
ओवर व्यास
दाळ
देड व्यास
पाट व्यास
पाट
पाणिनी-
सर्वी स्थ
५

बडी



सर्वोत्सव

13th



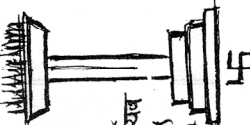
अंगुल
मुखव्यास ३
मंठोत्सैध १
ओषध्यास ४
घटीव्यासोत्सैध १
घटीचिह्नव्यास ७

37.



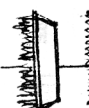
मुरव्यास १०
 औणव्यास २
 उगाधि १
 दंडव्यास २
 कंडापादसह ५
 पादव्यास ५
 सनेत्सिष ७

इति



ॐ धर्मो रक्षति रक्षितः ॐ

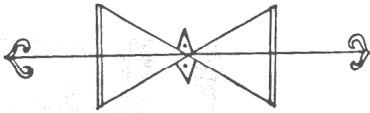
14512h



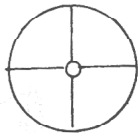
ॐ
कमल ४
पंड ५
इंदव्यास १०

अष्ट आयुध

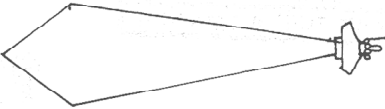
वक्रम्



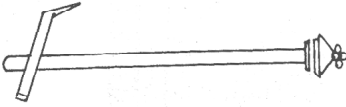
चक्रम्



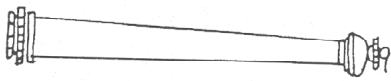
कृपाणः



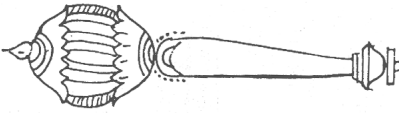
हलः



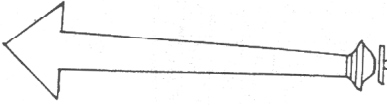
मुसलम्



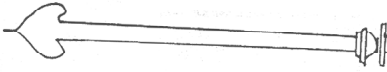
गदा



शक्तिः

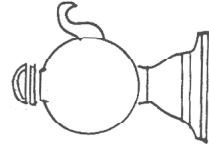


भिडिवालः

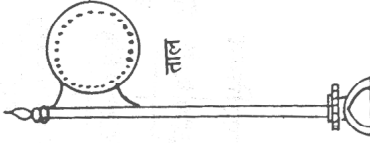


॥ अष्टमंगलानि ॥

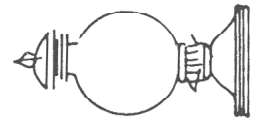
धुंगार



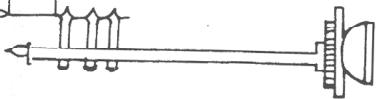
ताल



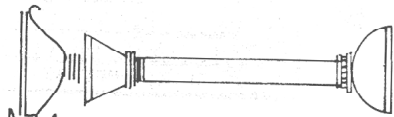
कलश



ध्वज



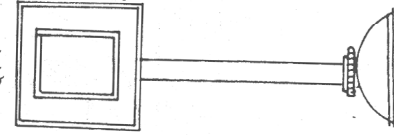
सुप्रतिष्ठ



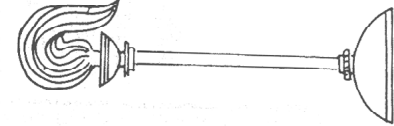
श्वेतातपत्र



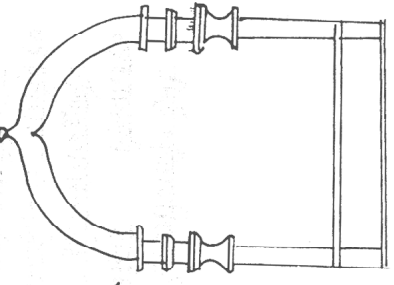
दर्पण

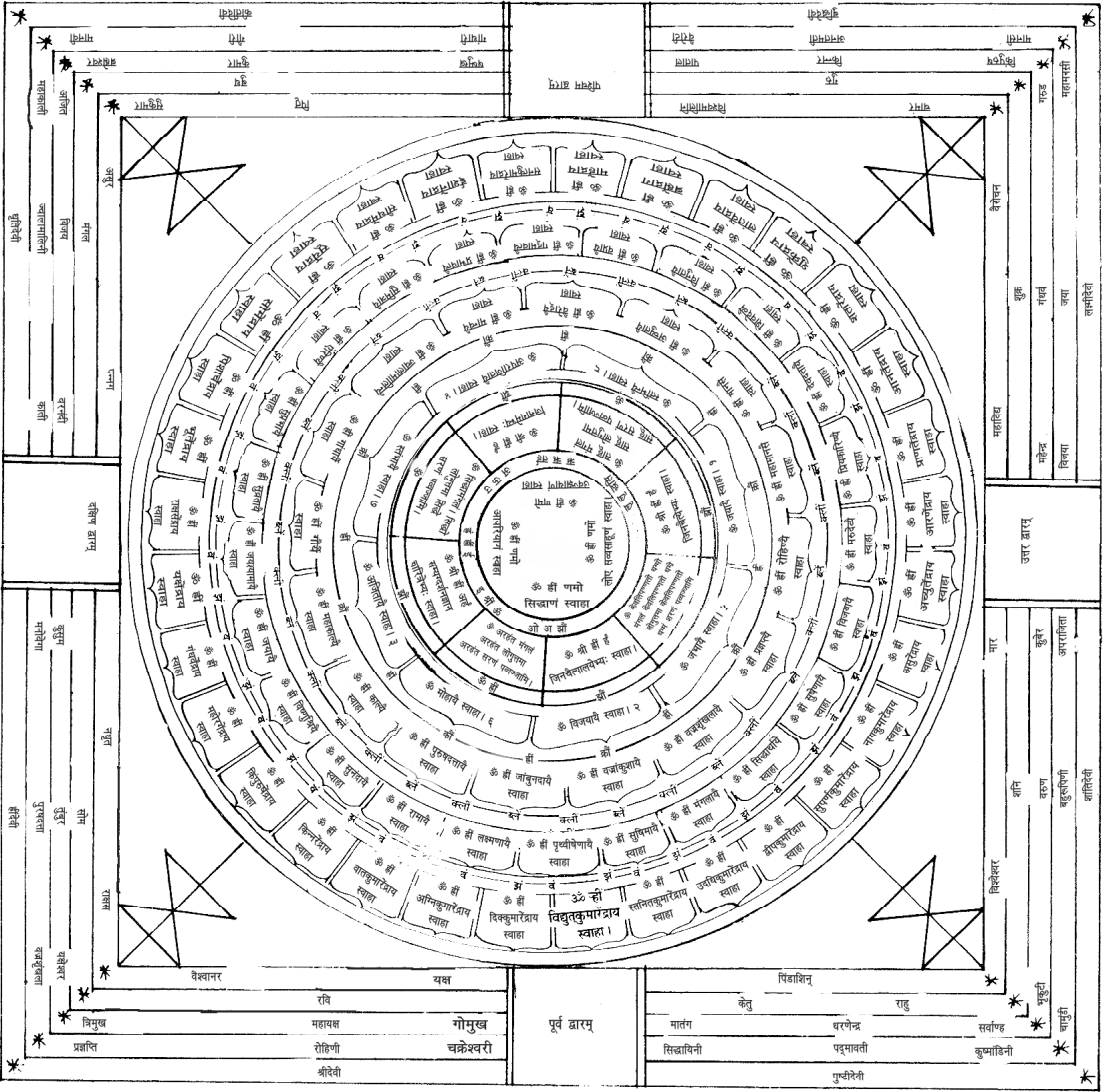


चामराणि

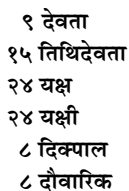


तोरणम्

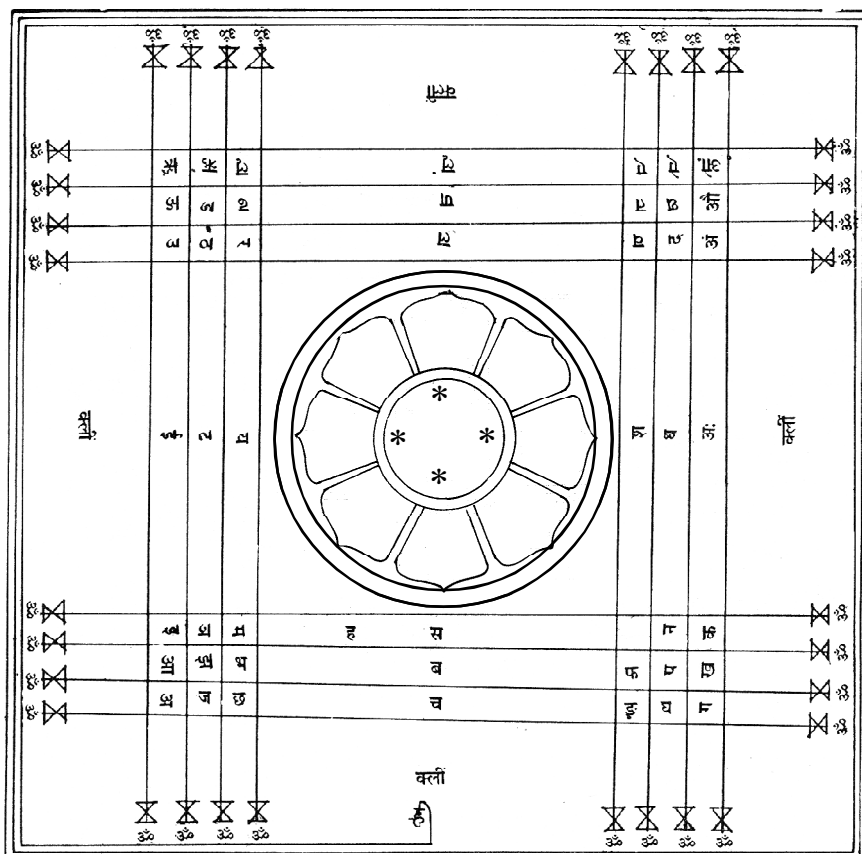
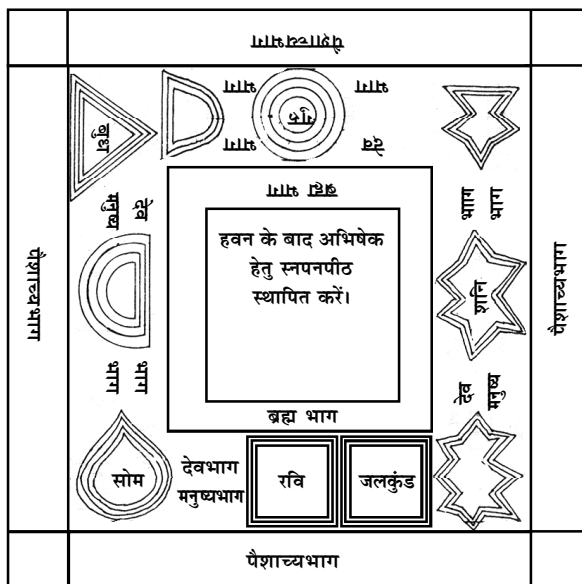


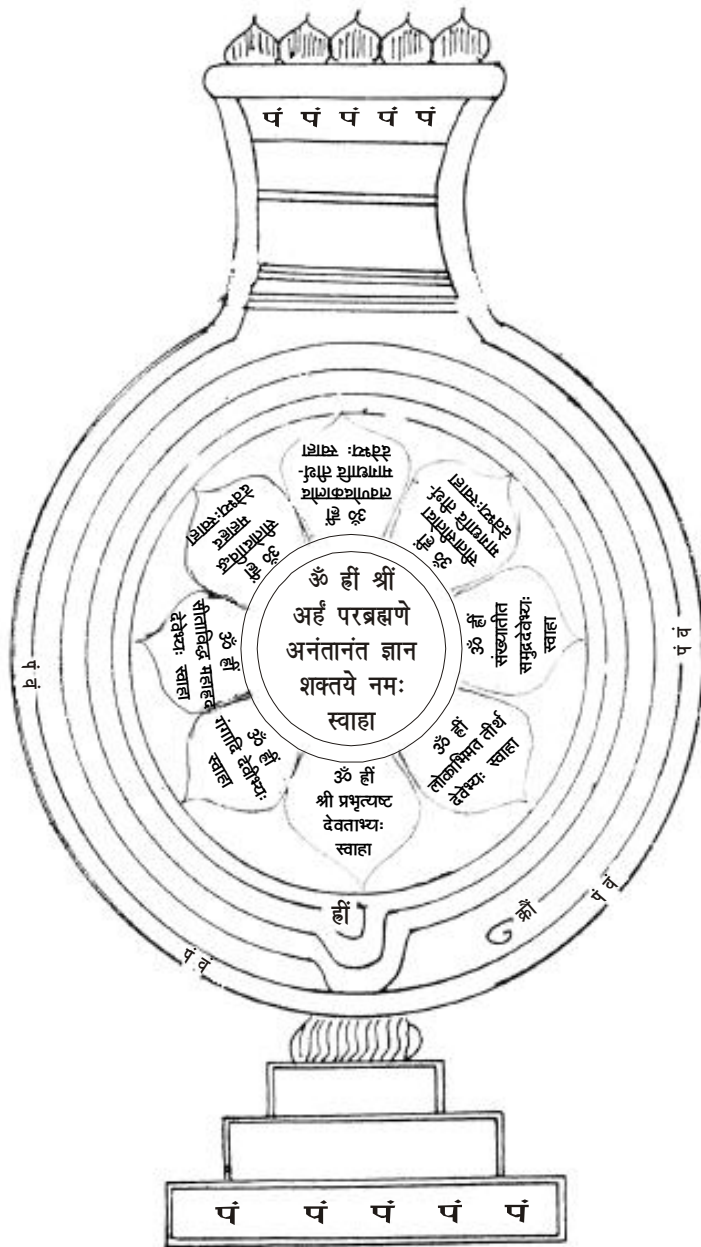


[illegible]

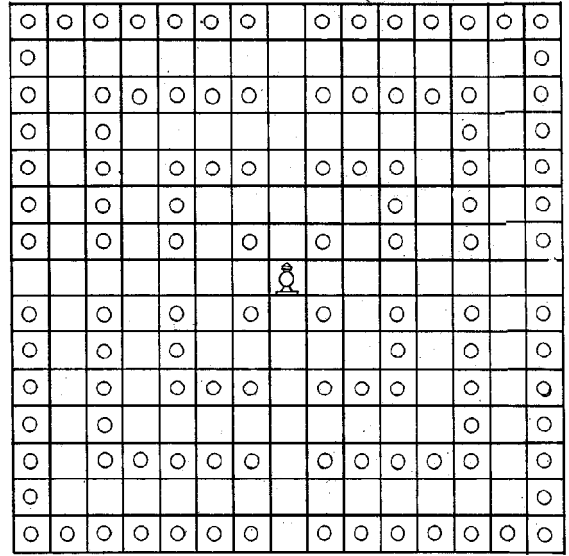


नवग्रह होमकुंड रचना

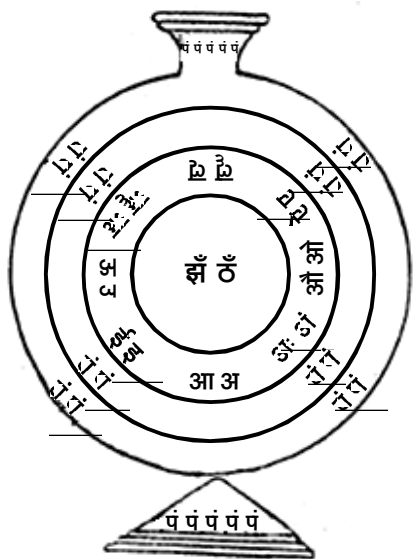
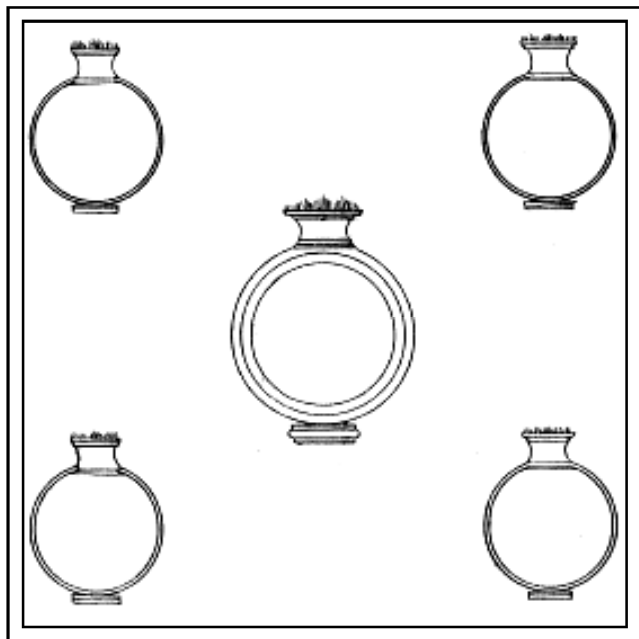




उत्तरेष २२
श्रीताच्छ्या पात्र वोदोपिक मथल्या बोटाचो
माल्ले कांडे (पर्व) म्हणजे मांझगुल (उत्तम होय)
त्या प्रमाणान्त १/४ कमी केले तर माध्यम मांझगुल
य १/२ कमी प्रमाण केल्यास कनिष्ठ मांझगुल होय।



(१) गणधर व मुनी	(५) व्यंतर देवी	(९) ज्योतिषी देव
(२) कल्पवासी देवी	(६) भवनवासी देवी	(१०) कल्पवासी देव
(३) आर्यिका व श्राविका	(७) भवनवासी देव	(११) चक्रवर्ती राजा व मनुष्य
(४) ज्योतिषी देवी	(८) व्यंतर देव	(१२) तिर्यच

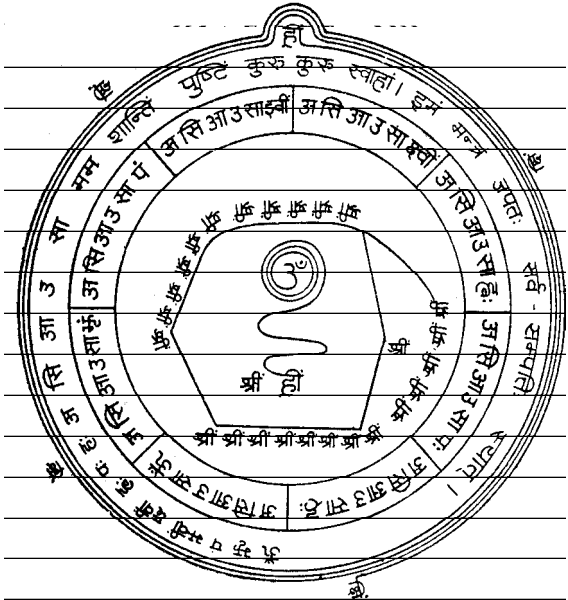
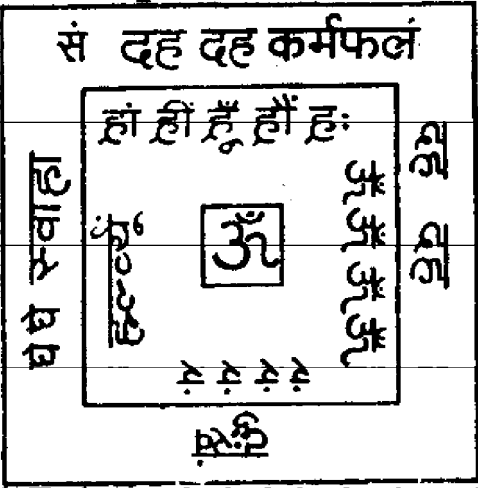
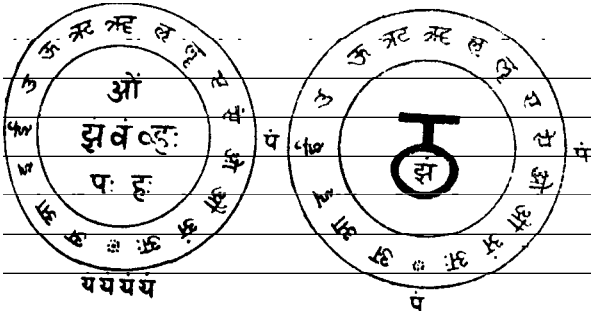
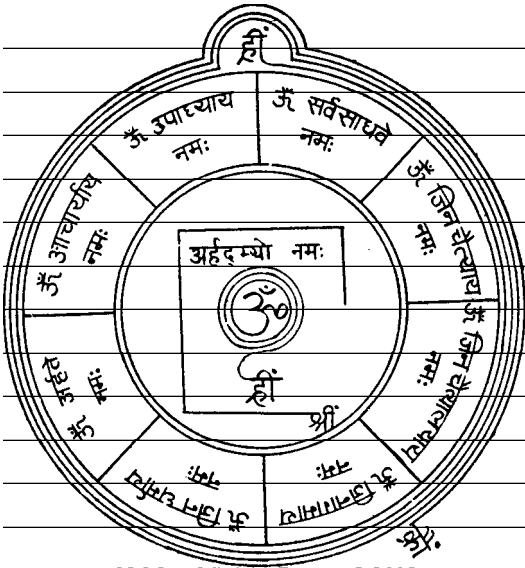
[illegible]

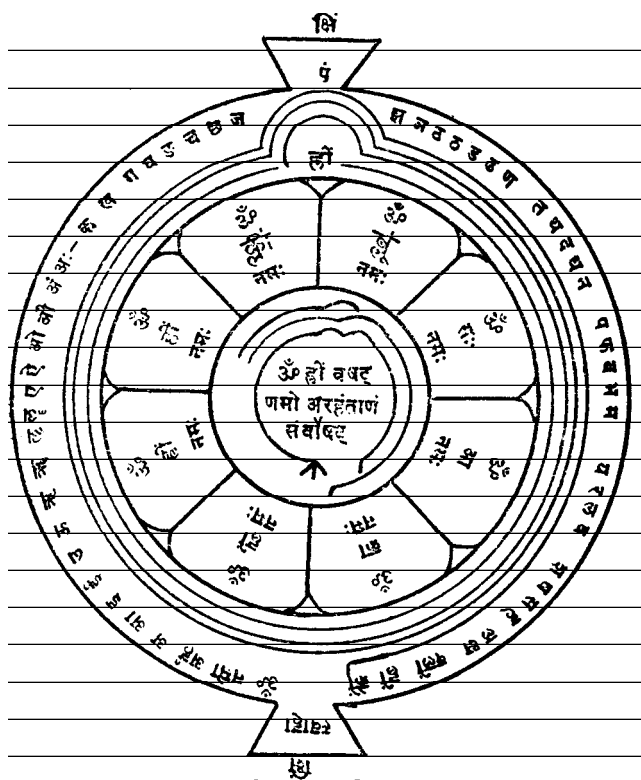
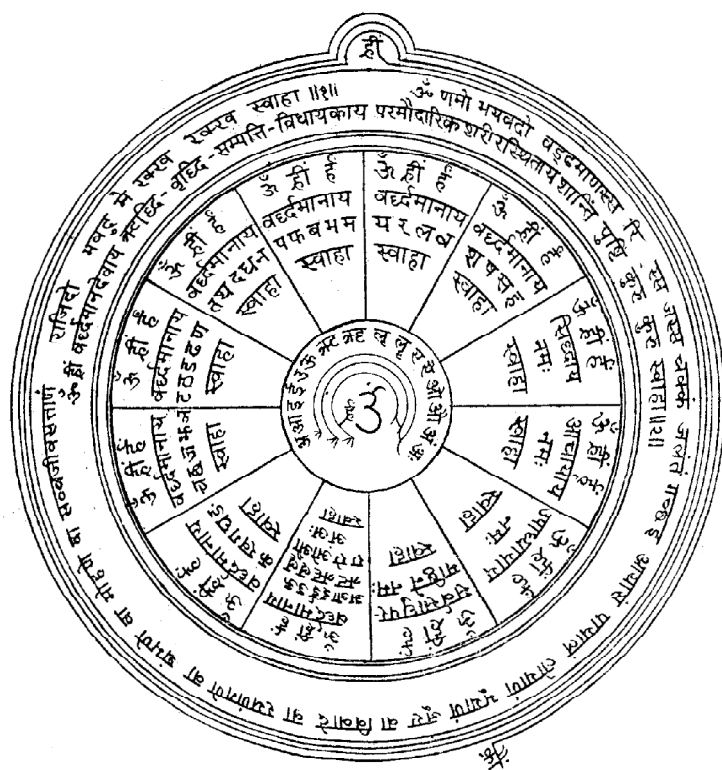
सुव

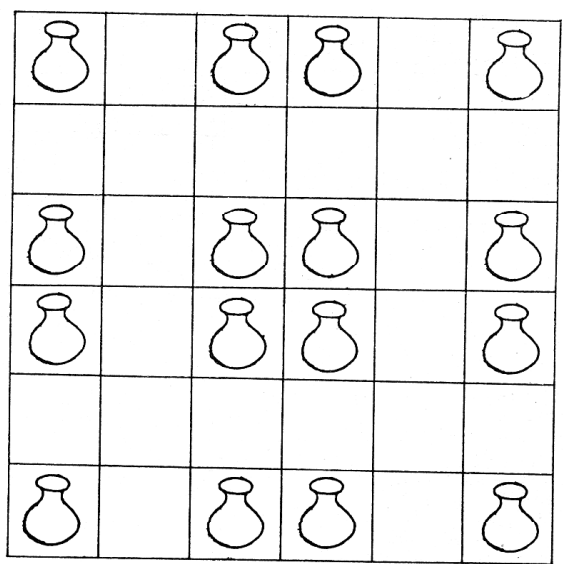
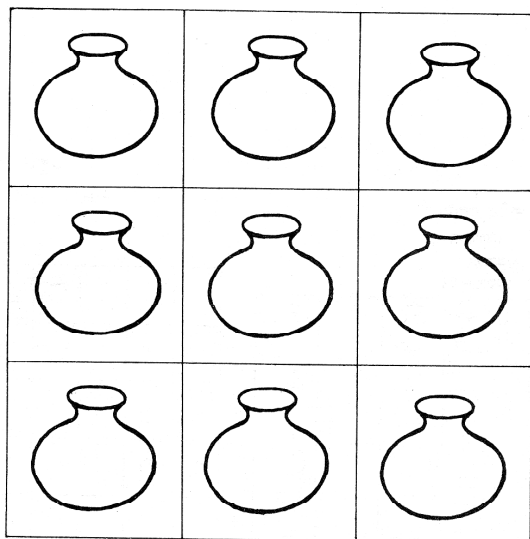


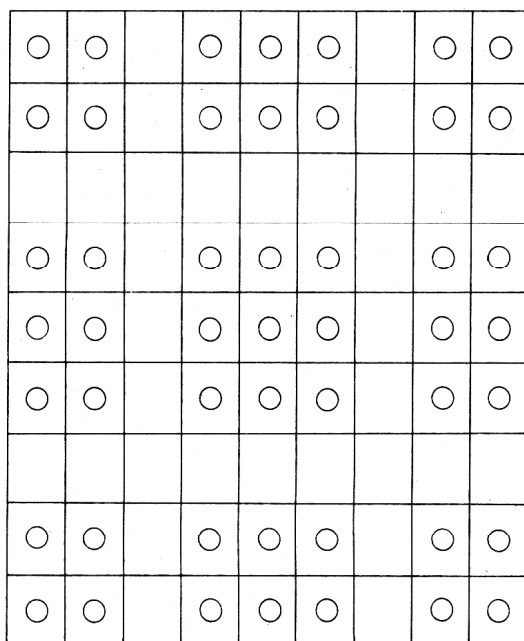
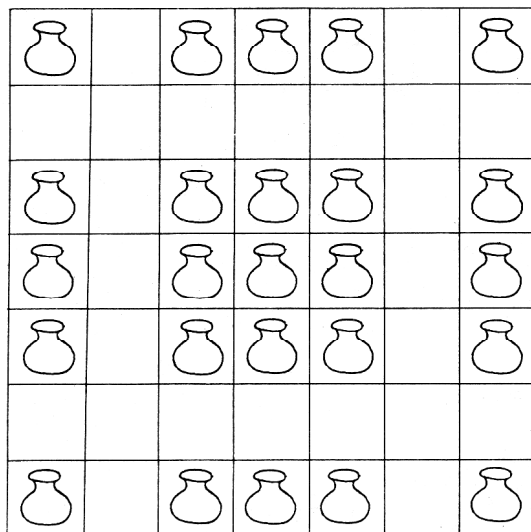
सुवा

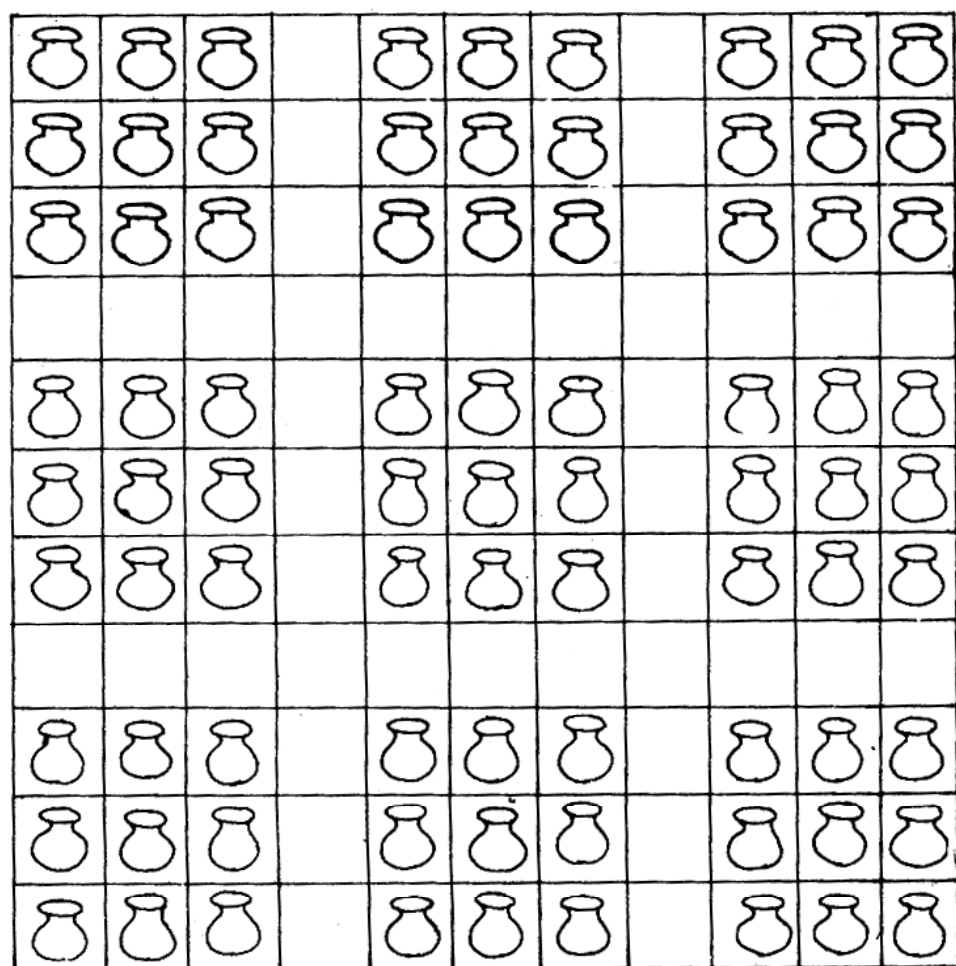


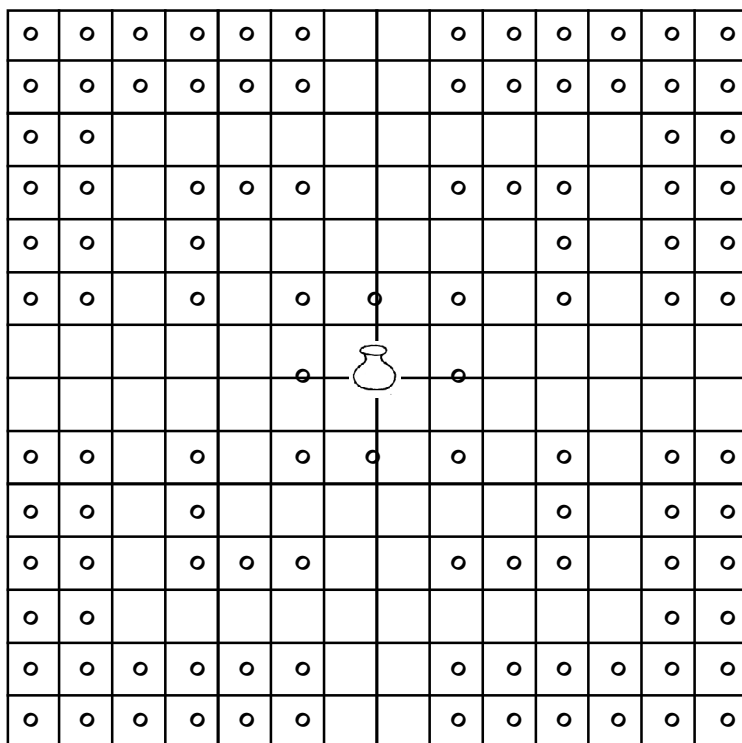


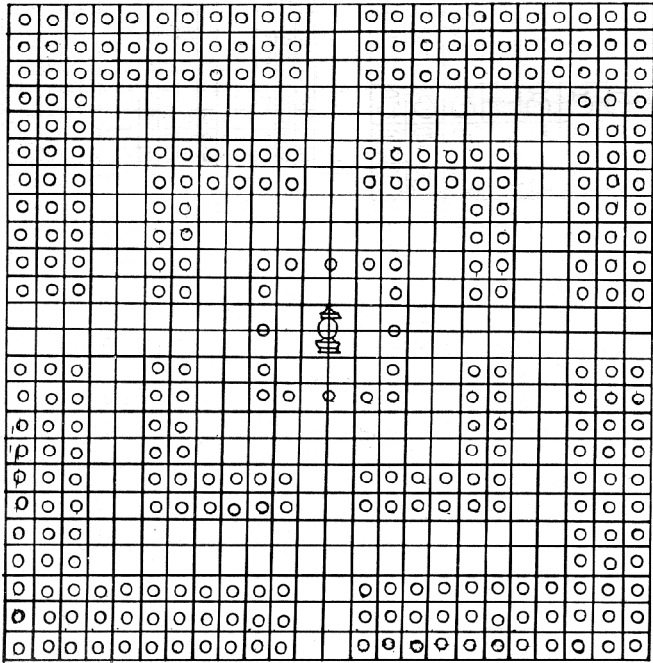
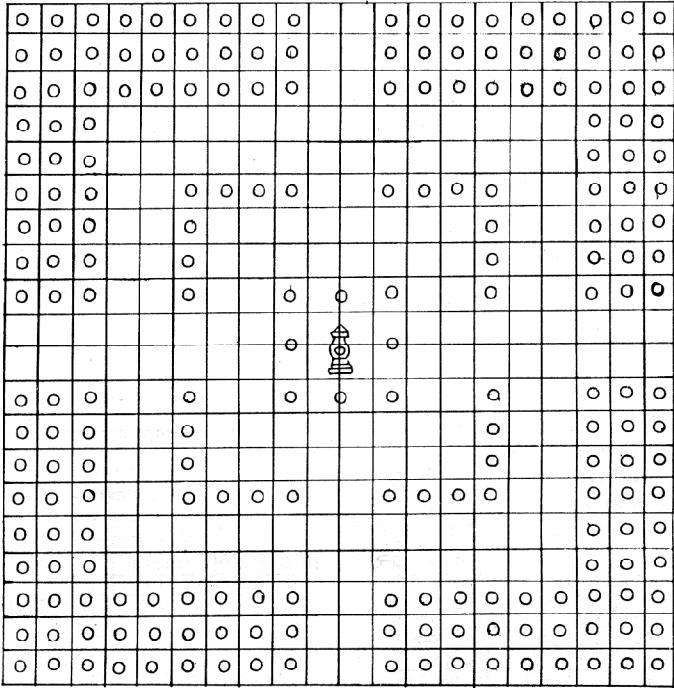


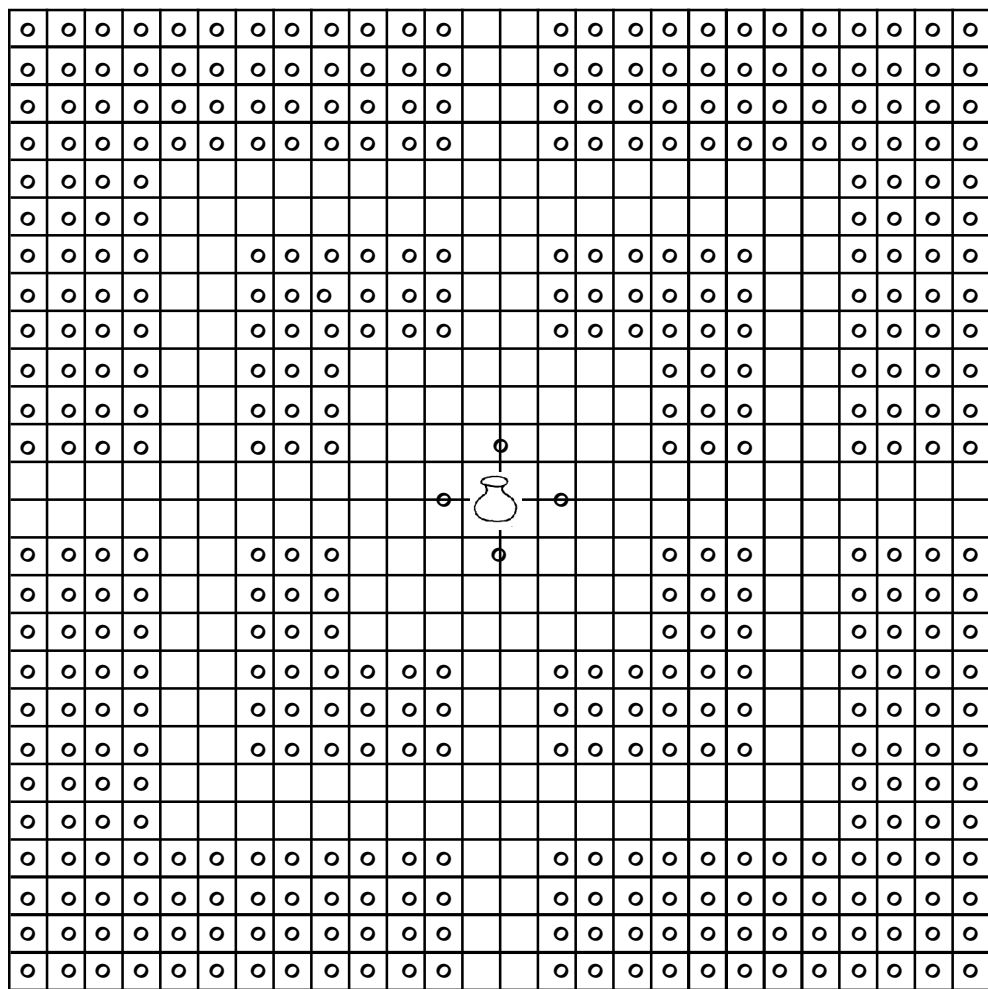


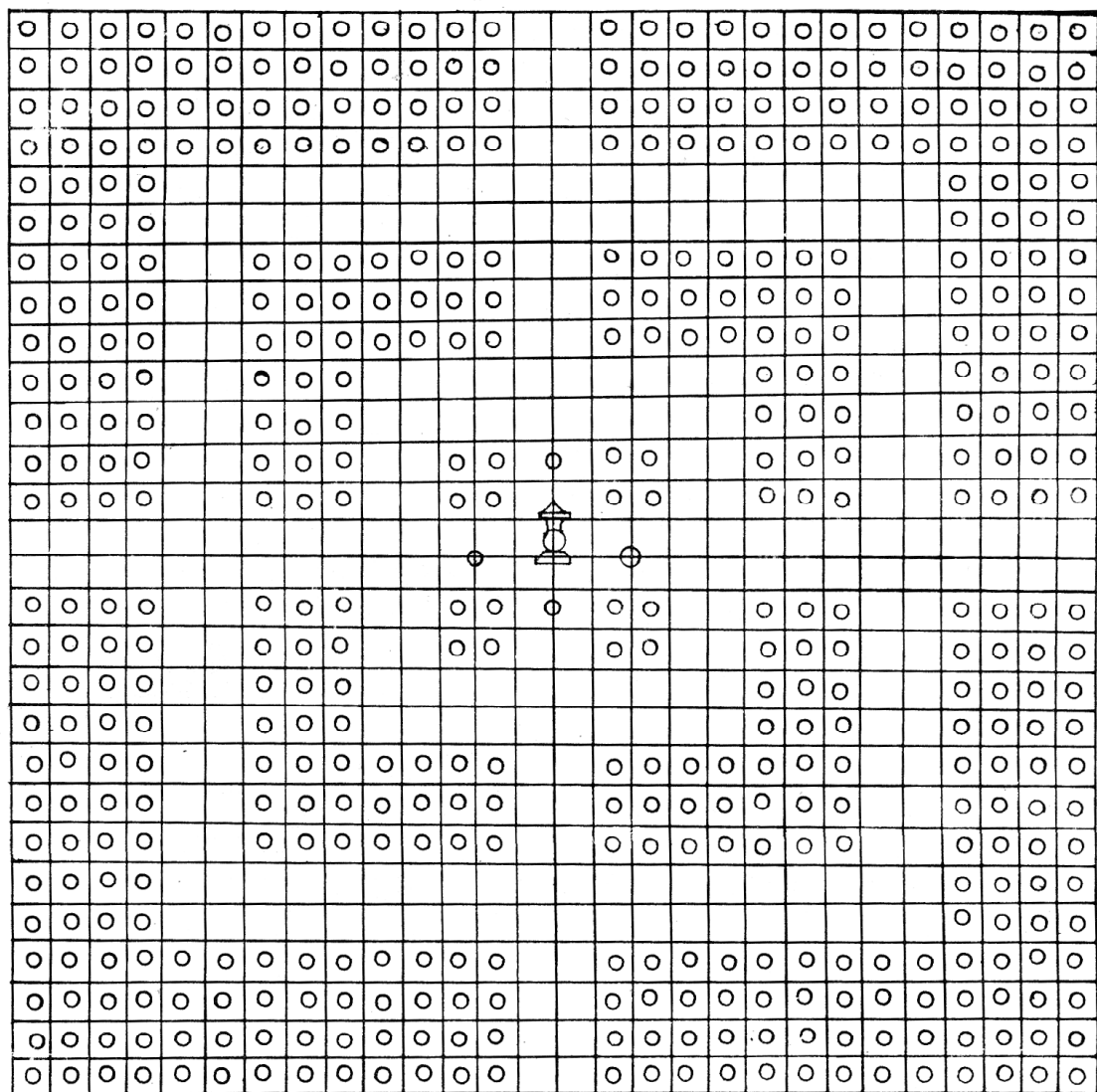


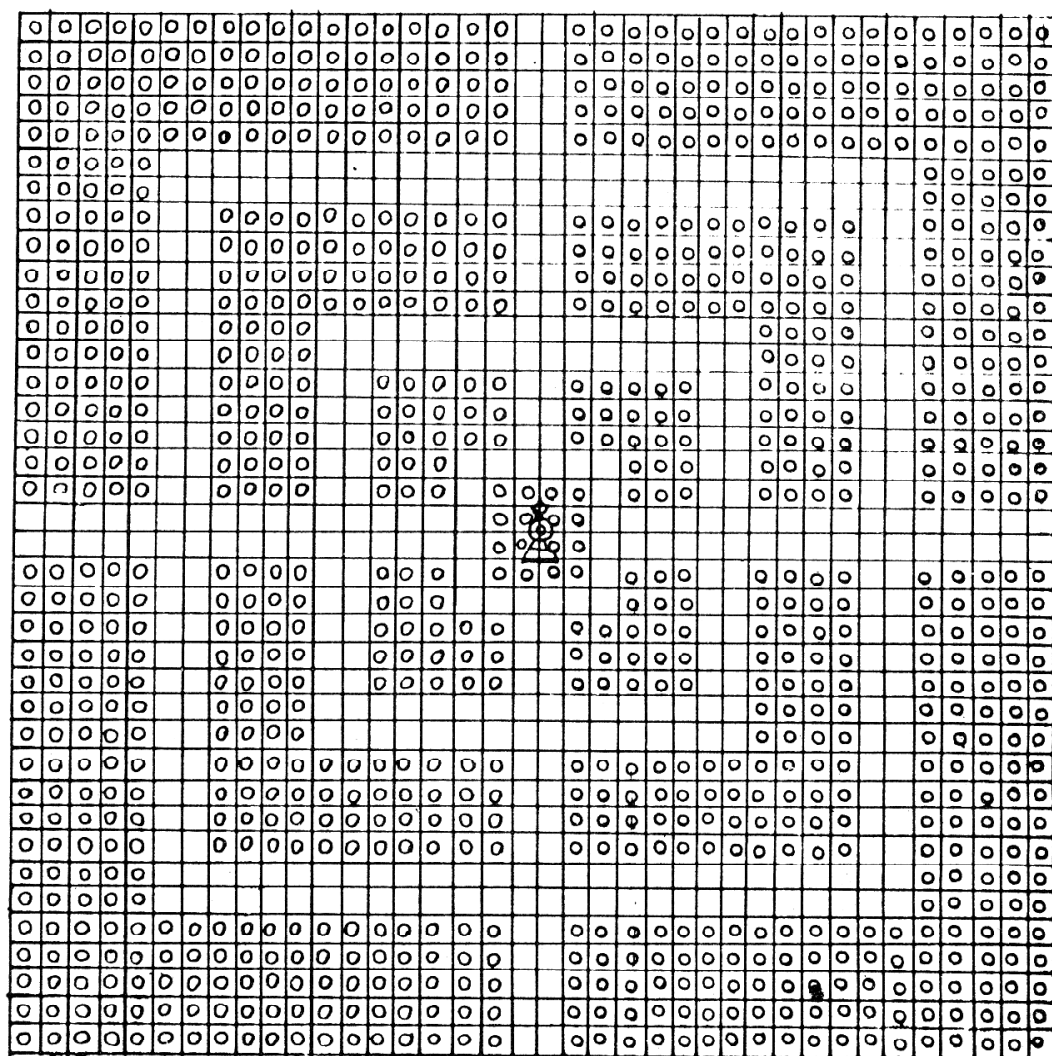


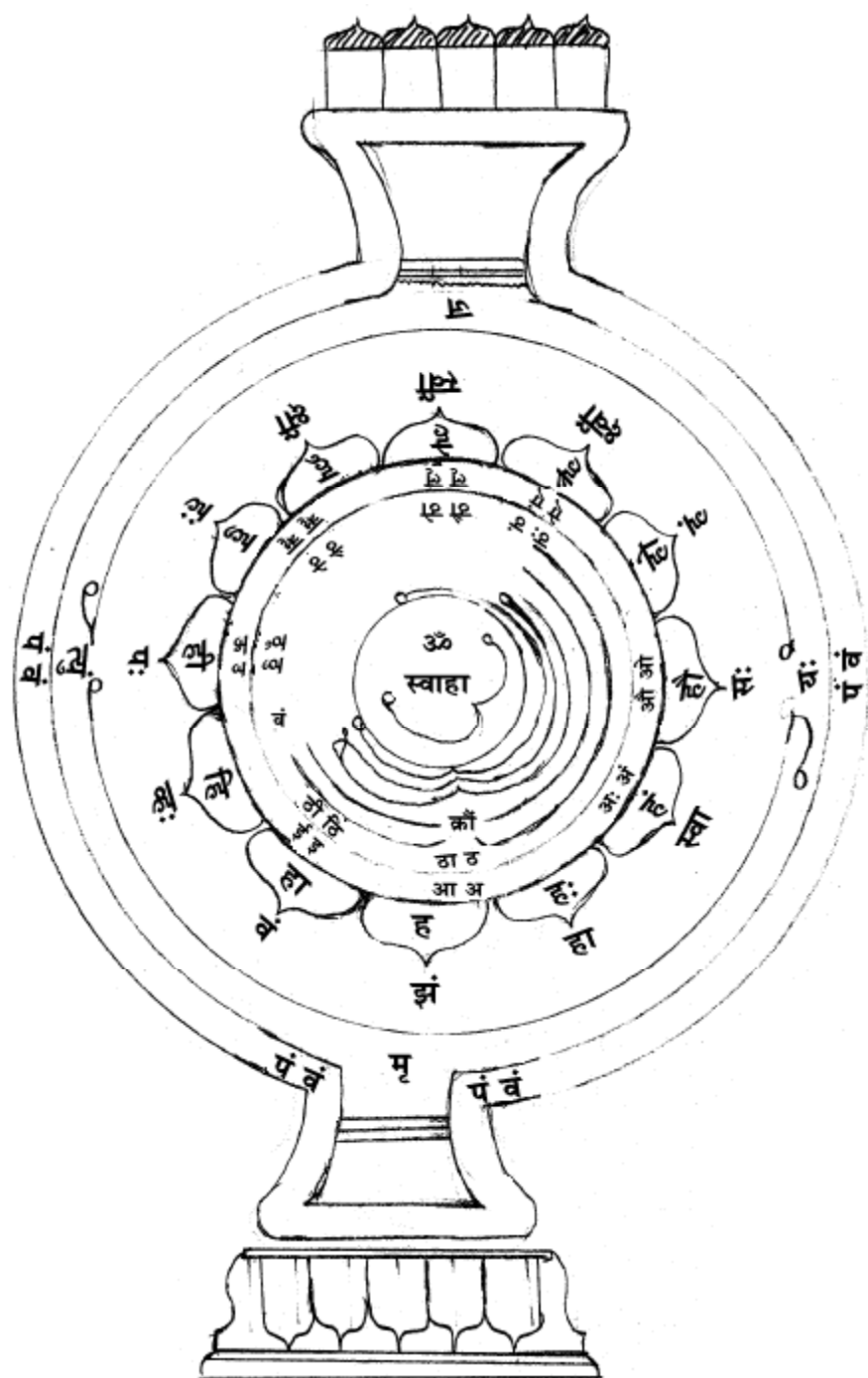




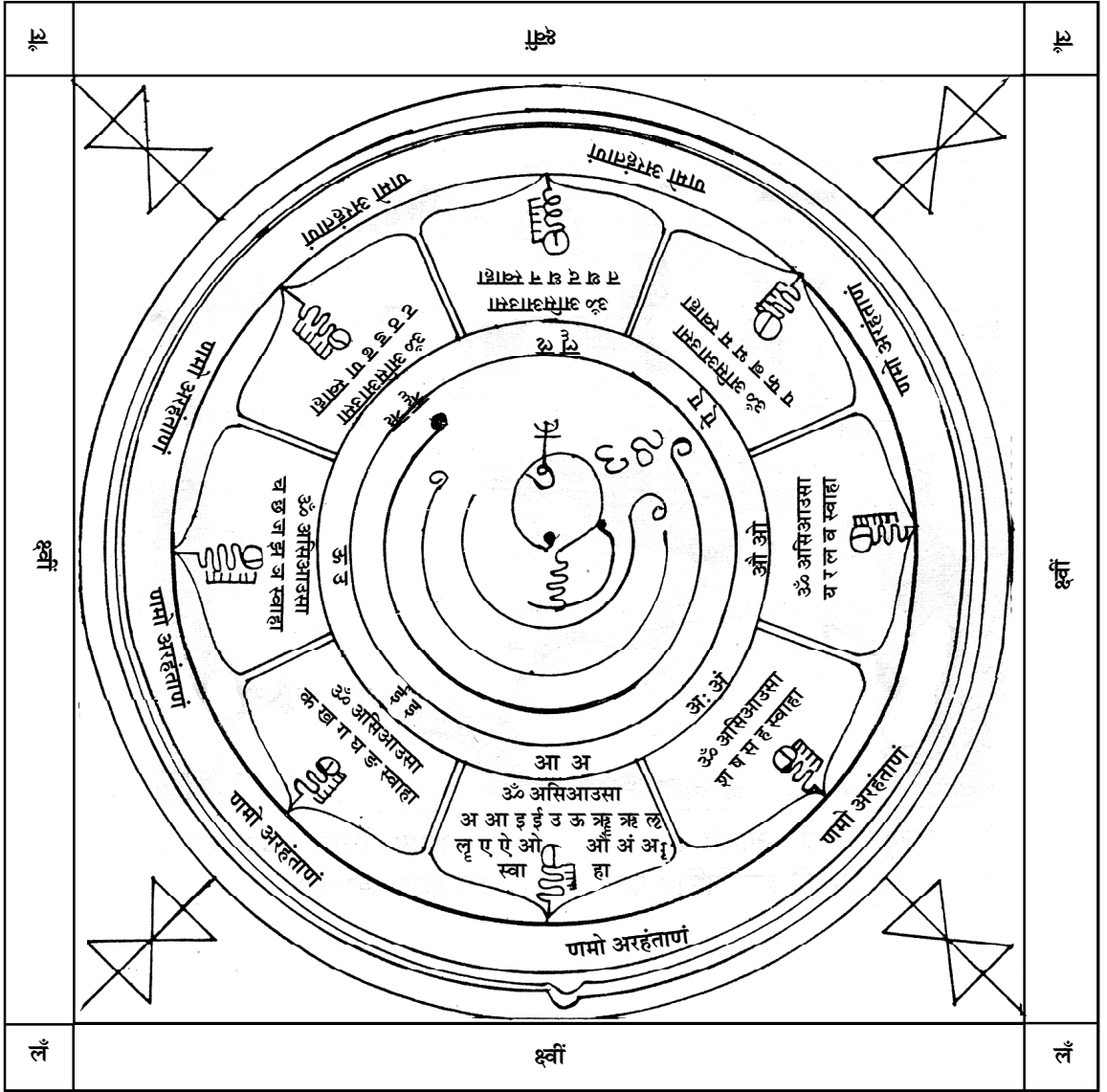




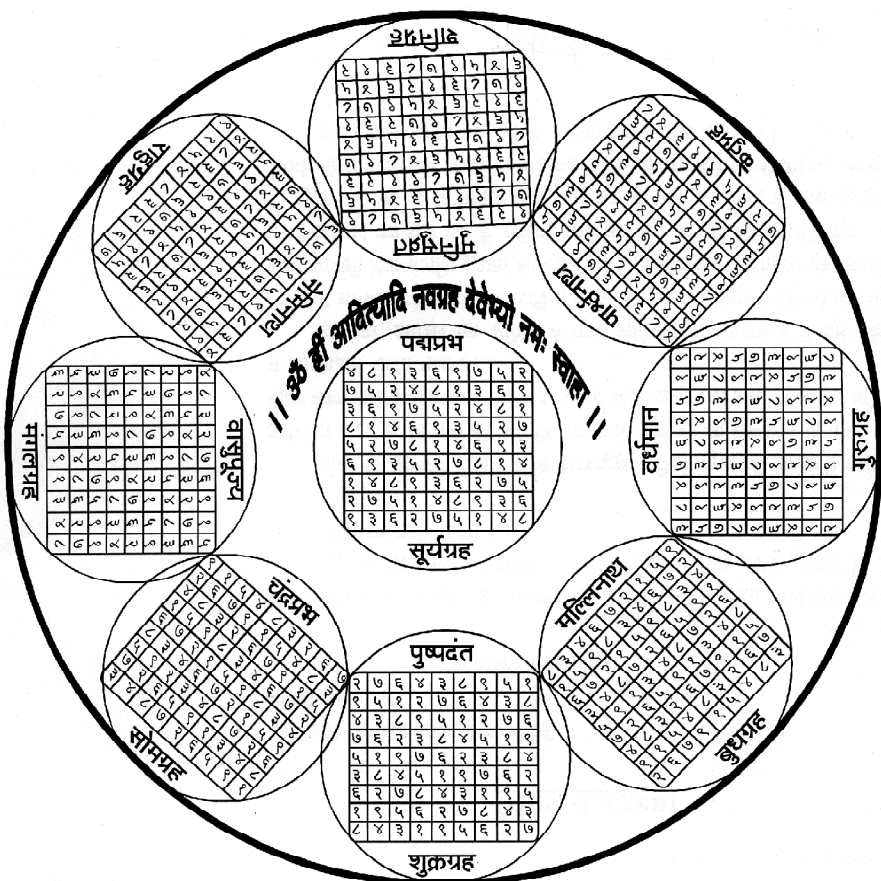




॥ सिद्धचक्र यंत्र ॥



नवग्रह यंत्र



नवग्रह के नौ लघु मंत्र

1. ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं सोमग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं मङ्गलग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।

ऋद्धि वृद्धि यंत्र

वै

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२०	१९	२२	२१	४७	४८
३३	३४	२९	३०	२७	२८	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४५	४६	४३	४४	२३	२४
५६	५५	१२	११	१४	१३	५०	४९
६४	६३	६	५	४	३	५८	५७

मै

ऋद्धि विजय यंत्र

वै

१५	८	१३	८	१	६	१३	६	११
१०	१२	१४	३	५	७	८	१०	१२
११	१६	९	४	९	२	९	१४	७
१०	३	८	१२	५	१०	१४	७	१२
५	७	९	७	९	११	९	११	१३
६	११	४	८	१३	६	१०	१५	८
११	४	९	१६	९	१४	९	२	७
६	८	१०	११	१३	१५	४	६	८
७	१२	५	१२	१७	१०	५	१०	३

मै

